व्रजभक्तिविलासं

पुस्तकं

महामहिम व्रजाचार्य्य-

श्रीलनारायणभट्टगोस्वामीविरचितं

अर्थ सहायकः—

सेठ श्रीरामरिखदासजी परसरामपुरिया,

बम्बई वाले ।

० २००८ बसन्तपंचमी
प्रथमावृत्तिः १०००

प्रकाशकः—
बाबा कृष्णदास,
कुसुमसरोवर ।

सूचना !

श्री प्रभु की पुनीत कृपा से अब तक हम कुछ ब्रज-साहित्य की अप्रकाशित पुस्त… खोज कर सेवा रूप से प्रकाशित कर चुके हैं जो कि सब के आगे उपस्थित हैं। अ… हमारे पास ब्रजभाषा व संस्कृतभाषा के अनेक ग्रंथ प्रकाशनार्थ मौजूद हैं। हाल में ही… श्री रसजानि वैष्णवदास जी कृत समस्त भागवत जी का दोहा, चौपाई, छंद बद्ध अ… सुंदर व सरल एक अनुवाद प्राप्त हुआ है जो कि लगभग २०० वर्ष प्राचीन विशुद्ध ब… भाषा में है। भागवत के एक एक श्लोक के साथ मिला लीजिये। सरल यहाँ तक है… एक साधारण बालक को भी बोध गम्य हो सकता है। समस्त भागवत जी के ऊपर अब तक इस प्रकार का सुंदर अनुवाद उपलब्धि नहीं है। वर्त्तमान समय में इस प्रकार के अनुपम ग्र… का प्रकाशन परम आवश्यक है जन साधारण इसे रामायण की तरह पढ़कर गायन कर स… हैं। यह सप्ताह के लिए भी बड़ी उपयोगी है। प्रभु इच्छा से यह अचानक हमें मिल… है। इसे प्रकाशित करने की प्रबल इच्छा है। आशा रखता हूँ कि यह शीघ्र ही प्रका… होकर सज्जनों के सामने उपस्थित होगा। आगे प्रभु की इच्छा बलवान है।

निवेदक—

कृष्णदास.

।। श्री हरिः ।।

ब्रज भक्ति बिलासम्

महामहिम ब्रजाचार्य

(श्रील नारायण भट्ट गोस्वामी विरचितम्)

पुष्टिमार्गीय पुस्तकें मिलने का पता :

सीताराम पुस्तकालय

विश्राम बाजार, मथुरा ।

मोबा. 09837654007

न्यौछावर : ७५०/-

भज—

निताइ गौर राधे श्याम

भूमिका

जप—

हरे कृष्ण हरे राम

मध्यकाल में समय पाकर ब्रज-मण्डल के ग्राम, नगर, बन, उपवन, कुञ्ज, कुण्ड, तलाव, देवमूर्ति, लीलास्थली समूह जिन्हें श्रीकृष्ण के प्रपौत्र श्रीवज्रनाभ जी ने प्रभु की लीलानुसार यथा रूप से यथा स्थान निर्माण करके निश्चित सब का नाम करण किया था वे पुनः लुप्त होकर केवल अवकाश एकाकार घोर जङ्गल में परिणित हो गये। हम इसका मूल कारण एक मात्र व्रजविहारि श्री हरि की इच्छा ही मान सकते हैं। वाह्य कारण यह है कि धर्म्मभीरू गजनीपति महमूदादिक ने मथुरा मण्डल पर चढ़ाई करके मथुरा नगरी तथा समस्त व्रजमण्डल का ध्वंस किया था। पुजारी लोक म्लेच्छों के भय से कहीं बन के बीच, कहीं कुंआ, नदी या तलाव में कहीं धरती के नीचे देव-मूर्त्तियों को छिपा कर प्राण मात्र लेकर भागे। उस समय म्लेच्छों के प्रलोभन व उत्पीड़न से देशवासी प्रायः हिन्दू धर्म्म से वीतश्रद्ध थे। इस प्रकार कुछ समय बीता। इधर व्रजविहारि श्रीहरि निजल्हादिनी शक्ति श्री राधिका जी के भाव प्रेम का आस्वादन करने के लिये तथा अपने अनर्पित प्रेम महाधन को प्राणी मात्र के लिये प्रदान करने और साथ ही साथ मधुर हरिनाम का जो कि कलियुग का धर्म्म था प्रवर्त्तन करने के लिये नवद्वीप धाम में गौराङ्ग रूप से प्रकट होकर निज पार्षदों के साथ सङ्कीर्त्तना-दिक विविध लीला विनोद कर रहे थे। जब पतितपावन प्रेमावतार प्रभु जीव-उद्धारार्थ सन्यासाश्रम का अवलम्बन कर नीलाचल धाम में विराजित हुए तो आप एक बार व्रज में पधारे। व्रज में आकर प्रभु की जो उत्कट प्रेमोन्मादनी दशा हुई उसे अनन्तदेव भी अनन्तकाल पर्य्यन्त वर्णन नहीं कर सकते। निरन्तर हाय हुतास, क्षण-क्षण में मूर्च्छित। तीर्थों का लुप्त होना देख कर आपका हृदय व्याकुल हो गया। फिर भी सर्व्वज्ञ प्रभु ने व्रज-भ्रमण किया। वे अनेक स्थानों में गये। उनके उत्कट प्रेमोन्माद को देख व्रज आगमन के साथी बलभद्रभट्ट छल बल से नाना बाहनें दिखा कर व्रज से बाहर लाये और प्रभु फिर प्रयाग, काशी होकर नीलाचल के लिये चल दिये। परन्तु व्रज के लुप्ततीर्थों के उद्धार के लिये आपकी तीव्र इच्छा बढ़ने लगी। आपने इस विषय में निज अन्तरङ्ग पार्षद रूप, सनातन को योग्य जान कर तथा दोनों में शक्ति का सञ्चार कर लुप्त तीर्थों का प्राकट्य और भक्ति, रस, सिद्धान्त ग्रन्थों का निर्म्माण करने की आज्ञा देकर व्रज के लिये भेजा। दोनों ने व्रज में आकर वाराह पुराणादि नाना शास्त्रानुसार तीर्थों को खोजा और अनेक ग्रन्थों का निर्म्माण किया। उनके सहयोग के लिये श्री जीवादिक गोस्वामी गण भी आने लगे। वृन्दावन के तीर्थ सब एक-एक उद्धार होने लगे और श्री गोविन्द, श्री गोपीनाथ, श्री मदनमोहनादिक विग्रह सब एक-एक प्राकट्य होकर स्थापित होगये। इधर अचानक प्रभु की अप्रकट लीला हुई। अत्यवधान कुछ समय के पश्चात् प्रभु प्रेरणा से प्रेरित होकर महामहिम श्री नारायणभट्ट गोस्वामी भी व्रज में आये। समस्त इतिहास कारों ने लिखा है कि श्रीचैतन्यमहाप्रभु के शिष्यों ने व्रज के तीर्थों को प्रकट किया और प्रमुख देवालयों की स्थापना की, किंतु इस कार्य्य का अधिकांशश्रेय नारायणभट्ट जी को है। इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। परिशिष्ट देखें। अब हम प्रस्तुत व्रजभक्तिविलास ग्रन्थ के रचनाकार इन्हीं महामहिम गोस्वामी नारायणभट्ट जी के विषय में कुछ कहते हैं जो कि उन्हीं भट्टजी को घराने की शिष्य परम्परा में गोस्वामी जानकी प्रसाद जी के द्वारा

रचित "नारायणभट्ट चरितामृत" के आधार पर है। इन्होंने केवल ब्रजतीर्थों का प्राकट्य ही नहीं किया अपितु ब्रज में रासलीलानुकरण का जो कि आज कल की रीति पर चल रहा है उसे सर्व प्रथम प्राकट्य करा कर उसकी धारा को सर्वत्र फैलाया। आज कल ब्रज में तथा अन्यत्र जो रासलीलानुकरण का प्रचलन हो रहा है वह केवल भट्टजी की कृपा से जानना चाहिये। इन्होंने ब्रज की यात्रविधि जो आज कल की रीति पर चल रही है उसे भी सर्व प्रथम आरम्भ किया। यात्रा दो प्रकार की हैं वनयात्रा और ब्रजयात्रा। वाराहपुराणादिक विधि से यथा पूर्वोक्त तीर्थों में स्नान, दान, पूजा, भजन, परिक्रमा, स्तुति, उपवास, विश्रामादि करते हुए वनों का भ्रमण वनयात्रा तथा उक्त प्रकार ब्रज के गांवों का भ्रमण ब्रजयात्रा है। वैशाख कृष्ण प्रतिपदा से प्रारम्भ कर श्रावण पूर्णिमा पर्य्यन्त समाप्ति ब्रजयात्रा की विधि हैं इसमें परिश्रम नहीं होता है-१७६ पृष्ठ देखिये। भाद्र कृष्णाष्टमी से लेकर भाद्र पूर्णिमा पर्य्यन्त वनयात्रा की विधि है। १७७-१८० पृष्ठ देखिये। भट्टजी ने वैष्णव गणों के साथ इसका शुभ प्रारंभ किया जिस के लिये 'ब्रजभक्तिविलास' और वृहद् ब्रजगुणोत्सव' नामक दोनों ग्रन्थ का निम्मीण भी किया। मुख्य रूप बरसाने में तथा नन्दग्राम में होरि के समय जो होरी अब तक धारावाहिक रूप से प्रतिवर्ष होती चली आ रही है उसका गौरव बढ़ाने वाले व साक्षात् प्रकट करके देखाने वाले श्री नारायणभट्ट गोस्वामी जी हैं। ब्रज में जँहा जँहा रासस्थली है जिनका उल्लेख प्रस्तुत ग्रन्थ ब्रजभक्तिविलास में वनों के अन्तर्गत तीर्थ प्रसङ्ग में स्थान-स्थान पर किया गया है उन सब स्थलों में भट्टजी ने रासमण्डल हिण्डोलादिक निर्म्माण करवाये। अकबर के कोषाध्यक्ष राजा तोडरमल ने इन सब के बनाने में प्रचुर धन लगाया था। भट्टजी के आज्ञानुसार उनके द्वारा उद्धार प्राप्त यावतीय भग्नदेवमन्दिरों के निर्म्माण और उनमें श्री विग्रहों की स्थापना, तथा कुण्ड-तालाबों के खननादि में भी तथा उनमें फिर से सोपान निर्म्माणादि समस्त ब्रजउद्धार के कार्य्य में व्यय का भार बहन किया।

भट्टजी के द्वारा प्राकट्य प्राप्त प्रधान तीर्थ समूह—

गोवर्द्धन में-मानसीगङ्गा, कुसुम-सरोवर, गोविन्द-कुण्ड, चन्द्रसरोवरादि। मथुरा में—कंसकारागार, रङ्गभूमि, कंसवधस्थल, ध्रुवटीला, नारदटीला, सप्तसामुद्रिककूपादिक। गोकुल में—पूतनाखाल, बालक्रीड़ास्थल, ब्रह्माण्डघाट, रमणवनादिक। वृन्दावन में—रासस्थलादिक। बरसाने में—भानुखोर, प्रियाकुण्ड, (पिलूपोखर) दानगढ़, मानगढ़, विलासगढ़, गहवरवन, सांकरीखोरादिक। ऊँचाग्राम में—देहकुण्ड, त्रिवेणी प्रभृति। काम्यवन में—गयाकुण्ड, काशीकुण्ड, विमलसरोवर, कुरुक्षेत्र, पञ्चतीर्थ, धर्म्मकुण्ड, चौरासी खम्भादिक। और भी आदिबद्री, शेषशायी, व्याससिंहासन, नन्दघाट, चीरघाट, कामाई-करेला प्रभृति गोप-गोपियों का यावतीय ग्राम, संकेत, शय्यास्थान, विहारवन, चरणपाहाड़ि, उद्धववनादिक। विस्तर जानना चाहें तो 'नारायणभट्टचरितामृत' देखिये।

रासस्थली समूह—राधाकुण्ड, शेरगढ़, ऊँचाग्राम, मयुरकुटी और गहवरवन, यावट, विहारवन, कोकिलावन, कदम्बवन, स्वर्णवन, प्रेमसरोवर, वृन्दावन, करहेला, पिसाई, परासौलि में रासमण्डल है।

भट्टजी के द्वारा रचित ग्रन्थ समूह—

(१) ब्रजभक्ति-विलास, (२) ब्रजप्रदीपिका, (३) ब्रजोत्सवचन्द्रिका, (४) ब्रज महोदधि, (५) ब्रजोत्सवाल्हादिनी, (६) वृहत ब्रजगुणोत्सव, (७) ब्रजप्रकाश उक्त सात ग्रन्थ आपने श्री राधाकुण्ड में मदनमोहन जी के समक्ष आपने गुरु श्रीकृष्णदास ब्रह्मचारी जी के निकट लिखे थे। ऊँचेग्राम में रहते समय आपने और भी ५२ ग्रन्थों का निर्म्माण किया। श्री मध्वाचार्य्य ने पहिले जो मत प्रचलित किया था जिसे कि श्री कृष्णचैतन्यमहाप्रभु ने पुष्ट किया और श्री गदाधर पण्डित गोस्वामी तथा उनके शिष्य कृष्णदास ब्रह्मचारी ने जिस मत का अनुसरण किया था उस मत को अपने

गुरु इन ब्रह्मचारीजी से सीख कर श्रीनारायणभट्ट जी ने उसका विस्तार पूर्वक अपने उक्त ग्रन्थों में लिखा है। अपने ग्रन्थ भक्तिभूषणसन्दर्भ में जीवतत्व, जगततत्व, ईश्वरतत्व का निर्णय है। भक्तिविवेक नामक ग्रन्थ में आपने भजनीय श्रीकृष्ण का निर्णय किया है।

उसमें भिन्न भिन्न प्रकरण है। नामश्रेष्ठनिर्णय, धामश्रेष्ठनिर्णय, भक्तिश्रेष्ठ निर्णयादिक। नामश्रेष्ठनिर्णय में कृष्णनाम की अधिक महिमा, धामश्रेष्ठनिर्णय में ब्रज का श्रेष्ठत्व, भक्तिश्रेष्ठनिर्णय में ब्रजवासियों का श्रेष्ठत्व प्रतिपादित किया गया है। ब्रजोत्सवचन्द्रिका, ब्रजोत्सवाल्हादिनी नामक दोनों ग्रन्थ की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ मौजूद हैं। उन दोनों की प्रतियाँ मैंने बरसाने के नित्यधाम प्राप्त गोस्वामी कुञ्जीलालजी के यहां देखी है। स्वयं भट्टजी ने प्रस्तुत ब्रजभक्तिविलास में उन दोनों ग्रन्थ के नाम और उसमें जो विषय उसका निर्देश किया है। उक्त दोनों ग्रन्थ बहुत विशाल हैं तथा इनमें तिथी निर्णय के साथ ब्रज में प्रचलित समस्त उत्सवों का सविस्तार वर्णन है। भक्तिरसतरंगिणी में समस्त रसों का सविस्तार वर्णन और अधिकारियों का निर्णय है। रसपद्धति जानने में यह ग्रन्थ बहुत उत्तम है। मैं इस ग्रन्थ को अनुवाद सहित सम्वत २००४ में प्रकाशित कर चुका हूँ। साधनदीपिका में साधन रूपा भक्ति का सविशेष निर्णय, वैष्णवों की विधि निषेध विचार, सविस्तार जन्माष्टमी, रामनवमी, एकादशी प्रभृति व्रतों का वर्णन है। इसकी एक प्राचीन प्रति हमारे पास है। भट्ट जी ने श्री मद्भागवत पर रसिकाल्हदिनी टीका का भी निर्म्माण किया।

इसके बनाने की आज्ञा संकेतवट में रासलीला गाने के समय साक्षात् प्रकट होकर स्वयं श्री राधारमणजी ने दी थीं। रासपञ्चाध्यायी अंश की टीका मेरे पास मौजूद है। गोस्वामी कुञ्जीलाल के यहां दशमस्कन्ध के प्रारम्भ से रासपञ्चाध्यायी पर्य्यन्त की टीका मैंने देखी है। भट्टजी के द्वारा विरचित प्रेमांकुर नामक नाटक का भी उल्लेख पाया जाता है, जिसमें जन्मादिकलीला, दानलीला, मानलीला, मगरोकनी-लीला, परस्पर गाली देने की लीला, भांड़ फोड़नी (मटकी फोड़नी) लीला, हास्य परिहास प्रभृति लीलायों और भी निकुञ्जरचना, निकुञ्जभेद आदिक बहुत बातें वर्णित हैं। बरसाने में भादों में जो बूढ़ी लीला (मटकी फोड़नी) लीला होती है वह इसी ग्रन्थ के आधार पर हैं। उन्होंने बृहत् 'ब्रजगुणोत्सव' नामक विशाल ग्रन्थ की रचना कर जीवजगत का बड़ा भारी उपकार किया। इसके नाम रूप स्वयं आपने ब्रजभक्ति विलास में उल्लेख किया है। १७७ पृष्ठ देखिये। जिस प्रकार ब्रज भक्ति विलास में देवता, तीर्थों के साथ ब्रज के समस्त वनोपवनादिकों के सविस्तार वर्णन हैं ठीक उसी प्रकार ब्रज के समस्त ग्रामों की लीला, देवता, तीर्थों के साथ सविस्तर वर्णन है। इसमें २६ हजार श्लोक हैं। हम प्रेमांकुरनाटक तथा बृहद् ब्रजगुणोत्सव दोनों ग्रन्थों की खोज में हैं। यह दोनों ग्रन्थ मिल जायें तो न जाने जगत् का क्या उपकार हो सकता। 'ब्रजभक्ति-विलास' की संपूर्ति सम्वत् १६०९ में श्री राधाकुण्ड पर हुई थी वह बात उक्त ग्रन्थ के परिशिष्ट में स्वयं ग्रन्थ-कार ने लिखी है। स्वर्गीय, स्वनामधन्य ग्राऊस साहेब ने अपनी मथुरा मिमोरियल नामक पुस्तक में कहा है—

The perambulation is the one ordinary performed and included all the most popular shrines but a few more elaborate enumeration of the holy places of Braj is given in a sanskrit work exist ing only in manuscript entitled Braja-Bhakti Vilas. It is of no great antiquity having been completed in the year 1553 A. D.by Narain Bhatt who has been already mentioned. (Page No. 102 Type)

भट्टजी द्वारा प्राकट्य प्राप्त व स्थापित प्रधान विग्रह समूह—

बरसाना में श्री लाड़िलीजी, ऊँचे ग्राम में बलदेवजी, खायरा में गोपीनाथजी, संकेत में संकेतदेवी और राधारमणजी, शेषशायी में प्रौढ़ानाथशेषशायीभगवानजी, दाऊजी में बलदेवजी, पेठों में-चतुर्भुज

नारायण जी, मथुरा में महाविद्या, दीर्घविष्णु, महाविष्णु, वाराहभगवानादिक। आदिबद्रीजी, कामेश्वर महादेवादिक। ऐसे ही तो उन्होंने बज्रनाभ कर्तृक स्थापित बलदेवादिक मूर्त्ति समूह का उद्धार कर अधिकांश ही स्थापित किया था जो कि बहुत काल से लुप्त हो गये थे। उनमें से कुछ तो कुण्डों में से कुछ कूओं में से व कुछ पृथ्वी के नीचे से निकले थे। तीर्थ उद्धार के समय एक लाड़िलेय स्वरूप आपके सङ्ग में थे। जिसे कि गृहाव-स्थान काल में गोदावरी के तट पर स्वयं श्री कृष्ण ने प्रकट होकर ब्रजउद्धार की आज्ञा देते समय प्रदान किया था। तीर्थ उद्धार के समय जब भट्ट जी तीर्थों का स्मरण करते हुए ध्यान करते थे तब वह स्वरूप साक्षात् होकर बोलि कर सुना देते थे कि यहां अमुकतीर्थ, अमुक देवता, या अमुक कुण्ड है। इस विषय में भक्तमाल के टीकाकार प्रियादासजी कहतेहैं कि—

'भट्ट श्री नारायण जू भये ब्रज परायण जांय जाही गाम, तहां ब्रत करि ध्याये हैं। बोलिके सुनावैं इहां अमुकौ स्वरूप है जू लीला कुण्ड धाम स्याम प्रकट दिखाये हैं।' अब यह लाडिलेय स्वरूप अलवर रियासत के अन्तर्गत नीमराना नामक स्थान पर विराजित है जिसकी सेवा भट्टजी के घराने के शिष्य परम्परा द्वारा हो रही है।

गुरु परम्परा—श्रीमन्महाप्रभु के पार्षद श्री गदाधर पण्डित गोस्वामी, उनके शिष्य श्री कृष्णदास ब्रह्मचारी हुए। इन्हीं ब्रह्मचारी जी के शिष्य श्रीनारायणभट्ट गोस्वामी थे। इस विषय में भक्तमाल के टीकाकार प्रियादास जी कहते हैं कि 'गुसाई' सनातन जू मदन मोहन रूप माथे पधराये कही सेवा नीके कीजिये। जानौ कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारी भयो भट्ट श्री नारायण जू शिष्य किये रीझिये'। इत्यादि। रीवांमहाराज रघुराजसिंह जी रामरसिकावली के ८४७ पृष्ठ में कहते हैं कि—

कृष्णदास की कथा कहैं, अब अति सुख दाई। जाहि सनातन रहे पूजते सन्त सनातन॥
मदन मोहनै नाम मूर्त्ती सो पाय प्रेम धन। पूजन कीन्हों भट्ट नारायण शिष्य भये जिन॥

ब्रजभाषा के श्री चैतन्यचरितामृत में जो कि हाल में प्रकाशित हो चुका है श्री सुबलस्यामजी ने अपनी गुरुपरम्परा उठाते हुए कहा है—

मोहि बल बड़ौ श्रीगुसांई ब्रजपति जू को ब्रज में विराजमान सदा अधिकार है।
श्री गोपाल भट्ट जू के पद सिर छत्र मेरे ताते ही सन्ताप भाजि गयो निरधार है॥
बाल मुकुन्द भट्ट जू के पद हिय में धारि श्री सुत दामोदर जू देहु रससार है।
भट्ट श्री नारायण जू ब्रज के उपासी एक, तिन पर धूरि मेरी जीवनि अधार है॥
प्रणावौं श्री कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारि मदन गुपाल जू के प्यारे रसरास हैं।
महाभाव पगे प्रभु राधिका गदाधर जू दया करो हिये होय चरित प्रकास है॥ इत्यादि॥

श्री नारायणभट्टचरितामृत में—

श्री मन्नारायण, श्री ब्रह्मा, श्री नारद, श्री वेदव्यास, श्री मध्वाचार्य्य, श्री पद्मनाभ, श्री नरहरि, श्री माधव, श्री अक्षोभ, श्री जयतीर्थ, श्री ज्ञानसिन्धु, श्री महानिधि, श्री विद्यानिधि, श्री राजेन्द्र, श्री जयधर्म्म, श्री ब्रह्मण्य, श्री पुरुषोत्तम, श्री व्यासतीर्थ, श्री लक्ष्मीपति, श्री माधवेन्द्र, श्री ईश्वर। आगे—

ईश्वराख्यपुरीं गौर उररी कृत्य गौरवे। जगदाप्लावयामास प्राकृताप्राकृतात्मकम्।
स्वीकृतो राधिकाभावो कान्तिः पूर्वं सुदुष्करः। अन्तर्बहिरसांमोधिः श्री नन्दनन्दनोऽपि सन्॥
गौरः श्री कृष्णचैतन्यः प्रख्यातः पृथिवीतले। श्रीचैतन्यस्य शिष्योऽभूत् पण्डितः श्रीगदाधरः॥
श्रीराधायाः स्वरूपोऽयं कृष्णभक्तेः प्रवर्त्तकः। गदाधरस्य शिष्योऽभूत् कृष्णदासो मुनीश्वरः॥
इन्दुलेखावतारोऽयं ब्रह्मचारीति यं विदुः। तस्य शिष्यो भवन्त्रिमान्नारदो भट्टरूपधृक्॥
श्री नारायणभट्टोऽसौ प्रख्यातो पृथिवीतले॥

विशेष जानने की इच्छा हो तो उक्त नारायणभट्ट चरितामृत देखिये।

शिष्यपरम्परा व वंशज—

मुख्य शाखा—सर्व श्री नारायणभट्ट, दामोदरभट्ट, बालमुकुन्दभट्ट, गोविन्दभट्ट,गोपालभट्ट (महाप्रभु के पार्षद गोपालभट्ट गोस्वामी जी से अन्य) व्रजपतिभट्ट, यदुपतिभट्ट विद्यापतिभट्ट, मुरलीधरभट्ट, नत्थीलालजी, कृष्णगोपालजी तथा हरिगोपालजी (इन्हीं के पास नीमराना में लाडिलेय स्वरूपजी हैं)। भट्ट गोस्वामी जी के और भी अनेक शिष्य प्रशिष्य हुए। शिष्यों में बलभद्री भाटोटिया नारायणदास जी, श्रोत्री श्री स्वामी नारायणदास जी, मथुरादास जी, लोकनाथ जी, दामोदरदास जी प्रभृति मुख्य रहें। श्रीदामोदरभट्ट गोस्वामी जी भट्ट गोस्वामी जी के पुत्र व शिष्य थे और गद्दी के मालिक हुए। नारायणदास श्रोत्री जी श्रीजी के सेवक हुए जिन्ह के वंशज बरसानेके गोस्वामीगण ही अब लाडिलीजी की सेवा के मालिक हैं। यह सब गोस्वामीगण सरल हृदय के भोरे भारे महापुरुष प्रकृति के हैं और श्रीजी तथा अपने संप्रदाय में अनन्यनिष्ठा रखने वाले हैं। अन्यत्र प्रचुर ऐश्वर्य्य वैभव देखने परभी वीतराग (अपने अविचल) हृदयहैं। बलभद्री नारायणदास विरक्त रहें। उनके शिष्य गोविन्ददासजी, श्यामदासजी, कृष्णदास प्रभृति हुए। गंगाबाई नाम्नी एक शिष्या भी थी, जो कि जगन्नाथ जी की मालासेवा करती थी तथा वहाँ प्रसिद्ध रही। उक्त चरितामृतकार के मत में भक्तमाल प्रसिद्ध श्रीमीरा मथुरादास जी की शिष्या थी। इसकी गम्भीर खोज होनी चाहिये। इस प्रकार आप की बहुत शाखा प्रशाखा जगत में छा गई। व्रज के समस्त ग्रामों में ब्राह्मण और व्रजबासीगण इन्हीं भट्ट गोस्वामीजी के शिष्य प्रशिष्यों में हुए। किन्तु समय के अनुसार आज कल अनेक परिवर्त्तन हो रहा है।

स्थितिकाल—जन्म समय संवत् १५८८ वैशाख शुक्ल पक्ष नृसिंहजयन्ती दिवाभाग। बारह वर्ष की वयस में पितृव्य शंकर जी से पाण्डित्य लाभ, १६०२ सम्वत् में व्रजागमन तथा गुरु ब्रह्मचारी जी के पास स्थिति, कुछ दिन उनसे संप्रदाय रहस्य की शिक्षा। १६०६ सम्वत् पहिले ही व्रजतीर्थों का उद्धार। १६०६ सम्वत् में व्रजभक्तिविलास की तथा १६१९ संवत् में व्रजोत्सवचन्द्रिका की संपूर्त्ति। १६२६ संवत् आषाढ़ शुक्ला द्वितीया से श्रीजी का प्राकट्य। अनुमान १७०० संवत् से कुछ पहिले वामनजयन्ती के दिवस तिरोधान का समय है।

पिता माता तथा देश का परिचय—

दक्षिण देश में मदुरापत्तन में भृगुवंशी, श्रीवत्सगोत्रीय, ऋग्वेदी, भैरव नामक महा विद्वान् तैलंग ब्राह्मण रहते थे। वे मध्वमतावलम्बी वैष्णव और बड़े कृष्ण भक्त हुए। उन के रंगनाथ नामक एक पुत्र था, जिनका चरित्र भविष्योत्तर पुराण में मौजूद है। उनके भट्ट भास्कर नाम से प्रसिद्ध पुत्र हुआ था। भट्ट भास्कर जी के दो पुत्र हुए, ज्येष्ठ का नाम गोपाल, कनिष्ठ का नाम नारायण। यह नारायण हमारे चरित्र नायक व्रजाचार्य्य श्री नारायणभट्ट गोस्वामी हैं। आप नारद जी के अवतार माने जाते हैं। रंगदेवी जी का आवेश भी इनमें हैं। आपने प्रस्तुत इस ग्रन्थ की रचना कर जगत् का बड़ा भारी उपकार किया। इसमें मुख्यतया देवता, तीर्थों के साथ बनों की यात्रा विधि है। व्रज की यात्रा करने वाले सज्जनों का यह परम आदरणीय तथा एकान्त अवलम्बन रूप ग्रन्थ है। अधिक क्या कहें सामने रखा है जो कोई चाहें देख ले सकता है।

सम्प्रदाय रहस्य व सिद्धांत—

मन में सदा सर्वदा गोपीभाव का चिन्तन, निरन्तर श्री राधिका के साथ श्रीकृष्ण का भजन

तथा प्रीति पूर्वक उनके नामों का भावानुकूल कीर्त्तन। वृन्दावन में श्रीकृष्ण सर्वदा राधादिक परिकरों के साथ द्विभुज रूप से विराजमान रहते हैं। वे वृन्दावन छोड़कर अन्यत्र क्षण भर भी नहीं जाते हैं। समस्त धर्म्म कर्म्म परित्याग कर केवल श्रीकृष्ण का आश्रय करना ही परम श्रेयः है। श्रीकृष्ण की आज्ञा से श्रीबलदेवजी कृपा वितरण करने में निरन्तर उत्सुक हैं। श्री राधिका के साथ श्रीकृष्ण की उपासना परम कर्त्तव्य है। श्रीकृष्ण सब के सेव्य तथा ब्रह्मादिक उनके सेवक हैं। जो दोनों का ऐक्य करते हैं सो महामुग्ध है। साधन अवस्था में जीव, सिद्धि अवस्था में ब्रह्म ऐसे कहने वाले श्रीकृष्ण माया से मोहित होकर बहिर्मुख समझे जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों का संग नहीं करना चाहिये, क्योंकि उससे बुद्धि नाश हो जाती है। जब शिव, ब्रह्मादिक प्रभु के नित्य सेवक हैं तथा शुक, सनकादिक नित्य प्रभु का भजन करते हैं तब तुच्छ जीव उनके साथ किस प्रकार एक हो सकता है। जीव अणु और अल्पज्ञ है। भगवान् सर्वज्ञ तथा परिपूर्ण हैं। नहीं जीव सर्वज्ञ परिपूर्ण हो सकता है व भगवान् अणु, अल्पज्ञ हो सकते हैं। नहीं दोनों अपने स्वधर्म्म को परित्याग कर सकते हैं। तो किस प्रकार भाग त्याग पूर्वक लक्षणा घट सकती है। जब परस्पर दोनों में नित्य विरुद्ध धर्म है तब किस प्रकार ऐक्य हो सकते हैं। तत्त्वमसि प्रभृति वाक्यों का समन्वय द्वैत में ही घटता है। नारायणादिक और श्रीकृष्ण स्वरूपतः अभिन्न होने पर भी रसाधिक्य के कारण श्रीकृष्ण की उपासना ही सर्वोपरि है। इस प्रकार श्रीकृष्ण के धाम, परिकर, लीलादिक समस्त ही सर्वोपरि जानना। प्रभु के धाम, परिकर, लीलादि समस्त ही नित्य हैं। उनका दिव्यत्व अनुभव केवल दिव्य ज्ञान से ही हो सकता है। चर्म्मचक्षुः से प्रपञ्च अनुभव होने पर भी वे समस्त वास्तविक प्रपञ्च नहीं हैं। जीव प्रभु की तटस्था शक्ति है। शक्ति शक्तिमान् अभेद है, इस अंश में दोनों का अभेद हो सकता है। विशेष जानना चाहें तो "नारायणभट्ट-चरितामृत" देखें।

श्रीगुरु गौरांग की पुनीत कृपा से हम इस ब्रजभक्तिविलास ग्रन्थ का सानुवाद प्रकाशित करने में समर्थ हुए। जिसमें महामना उदार हृदय सेठ (रामरिखदास जी परसराम पुरिया) बम्बई वालों की परिपूर्ण सहानुभूति हमें प्राप्त हुई। कोसी निवासी सेठ चेतराम (चतुर्भुज जी) की हार्दिक चेष्टा से यह महान् से महान् कार्य्य सम्पन्न हुआ है। धर्म्म परायण इन दोनों महानुभावों को हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि आप दोनों सर्वदा प्रभु के निकट में रहें तथा ब्रजयात्रा करने वाले सज्जनों का स्मरण पात्र बनें। इस ग्रन्थ की प्राचीन हस्तलिखित एक प्रति जो कि सम्वत् १८५१ में लिखी गई है बरसाने के निवासी गोस्वामी रेवतीलाल जी से पश्चात् वहाँ के निवासी प्रियवर गोस्वामी प्रियालालजी व गोपाल लाल जी से एक नूतन प्रति, वृन्दावन के निवासी गोलोक गत गोस्वामी राधाचरणजी की लाईब्रेरी से एक प्रति प्राप्त हुई। काशी सरस्वती विद्यापीठ लाईब्रेरी में तथा ब्रज के ब्रजवारीग्राम में पण्डित श्रीधरजी के पास भी एक एक प्रति मौजूद है। प्राचीन होने के कारण इन सब प्रतियों में संस्कृत दृष्टि से यथेष्ट लिपि प्रमाद है। तो भी "यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया" इस न्याय को अवलम्बन कर न जाने क्या पुराणों के प्रयोग होंगे इस कारण से सोधन करने में असमर्थ रहा। अनुवाद सोधन के विषय में मथुरा निवासी प्रियवर रामनारायणजी लोकसाहित्यप्रेस के मैनेजर से संपूर्ण सहायता मिली। इति शम्।

निज अनर्पित चरी प्रेम रस भरि-भरि, कृपा चषक में डारि पिबावत जग जन।
राधा-भाव चाखने को चाह सों चकित मति, पारिषद गण लै कै नाचें निज कीरतन॥
पतित निंदुक भंड अभिमानी रु पाखंड, प्रेम बस गावैं रोवैं ह्वै के सब शुद्ध मन।
तव मन कन्दरा के मन्दिर में राजहु है, शची जू का सरवस श्री हरि के गौर तन॥

विनीत—कृष्णदास।

अध्याय सूची—

कुसुमसरोवर,
(गोवर्द्धन)

प्रकाशक—
बाबा--कृष्णदास.

परिशेष—

इस बात को सब कोई जानता है कि श्रीरूप-सनातन-नारायणभट्टादिक गौडीय आचार्य्यों ने व्रज में आकर उसका पुनरुद्धार किया तथा उसका रहस्य व वैभव सर्वत्र फैलाया। आज कल कुछ ऐसे व्यक्ति हो गये हैं कि वे सब इन बातों को जानते सुनते हुए भी संप्रदाय खींच टान व परश्री कातर के वश में आकर इन सब कार्य्यों को अन्य व्यक्ति में आरोपण करते हुए भ्रममय प्रचार कर रहे हैं। अतः वह सर्वांश में गलत समझा जायेगा। इसलिये ही हम यहाँ पर कुछ प्रमाण उठाते हैं जिसे कि पाठकगण देख लें।

(१) भक्तमाल में श्रीनाभाजी—

व्रजभूमि रहसि राधाकृष्ण भक्त तोष उद्धार किय।
संसार स्वाद सुख वात ज्यों ह्वहु श्रीरूप सनातन त्याग दिय॥

(२) टीकाकार प्रियादासजी—

वृन्दावन व्रजभूमि जानत न कोऊ प्राय दई दरसाई जैसी शुक मुख गाई है।
रीति हू उपासना की भागवत अनुसार लियो रससार सो रसिक सुख दाई है॥
आज्ञा प्रभु पाइ पुनि गोपेश्वर लगे आई किये ग्रन्थ भाइ भक्ति भाँति सब पाई है।
एक एक बात में समात मन बुद्धि जब पुलकित गात दृग झरीसी लगाई है॥ (कवित्त)

(३) श्रीप्रतापसिंहजी महाराज जयपुर नरेश द्वारा विरचित भक्तिकल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में—

"गुरु ने आज्ञा दी कि व्रजभूमि में जाओ वहाँ के वन और स्थान सब श्रीकृष्ण स्वामी के विहार के जो काल पाय के गुप्त हो रहे हैं तिनको प्रकट करो और ग्रन्थ चरित्र व लीलामाधुर्य्य व रस विलास को फैलाओ उसी आज्ञा के अनुसार दोनों भाई आयके व्रजभूमि में पहुँचे"।

(४) रामरसिकावली में रींवा महाराज रघुराजसिंहजी ने कहा है। (पृ० ८४०) लक्ष्मीवेंकटेश्वर में मुद्रित।

सन्त कृष्ण चैतन्यहि केरो। लहि उपदेश मानि मृदु टेरो॥
रूप सनातन दोनों भाई। गृह तजि श्री वृन्दावन जाई॥
जीव गोसाईं साधु महाना। तिन सों तहँ किय संग सुजाना॥
गोप्य तीर्थ वृन्दावन के पुनि। प्रगट किये भाषे जिमि शुकमुनि॥

(५) अयोध्या निवासी महात्मा रूपकलाजी कृत वार्त्तिकतिलक का ४६६ पृष्ठ में—

"श्रीव्रजभूमि वृन्दावन को उस समय प्रायः कोई नहीं जानता था श्रीरूपजी श्रीसनातन जी दोनों भाइयों ने ही श्री चैतन्य महाप्रभु जी के अनुशासन से वहाँ आकर वैसा ही दिखा दी कि जैसी श्रीशुकदेव स्वामि ने वर्णन किया है।"

(६) लाला राधारमणदास अग्रवाल ने "श्रीवृन्दावनमाहात्म्य" नामक ग्रन्थ की भूमिका में लिखा कि—

"श्रीवृन्दावन के तीर्थ, स्थान, क्षेत्र इत्यादि ४०० वर्ष पूर्व में लुप्त हो गये थे [खाली जंगल था] जिनको श्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभु जी की आज्ञानुसार पण्डित लोकनाथगोस्वामी, जीव, रूप, सनातन और गोपालभट्ट आदि महात्माओं ने प्रकट किये थे।"

(७) किशनलाल मथुरा निवासी ने भक्तकल्पतरु में—"तब गुरु ने दया कर इनको व्रज में जाकर श्रीकृष्ण जी के गुप्त स्थानों को ढूंढ़ २ कर प्रकट करने का उपदेश दिया और कहा कि वहाँ जाकर भगवान श्री कृष्ण के चरित्रों का प्रकाश करो। २७८ पृ०।

(८) आनन्दवृन्दावनचम्पूकार श्रीकविकर्णपूर गोस्वामी जी ने स्वरचित चैतन्यचन्द्रोदयनाटक नामक ग्रन्थ का नवमांक १०४ श्लोक में लिखा है –

कालेन: वृन्दावनकेलिवार्त्ता लुप्तेति तां ख्यापयितु' विशिष्य ।
कृपामृतेनाभिषिषेच देवस्तत्रैव रूपञ्च सनातनञ्च ॥

(९) चैतन्यचरितामृत में – प्रथमपरिच्छेद –

दोल यात्रा बइ प्रभु रूपे आज्ञा दिला । अनेक प्रसाद करि शक्ति सञ्चारिला ॥
बृन्दाबने या ओ तुमि रहि ओ वृन्दावने । एक बार इहाँ पाठाई ओ सनातने ॥
ब्रजे जाइ रस शास्त्र कर निरूपण । तीर्थ सब लुप्त तार करि ओ प्रचारण ॥
कृष्ण सेवा रसभक्ति करि ओ प्रचार । आमि ओ देखिते ताहाँ जाव एकबार ॥

(१०) तत्रैव चतुर्थ परिच्छेद में –

दुइ भाइ मिलि वृन्दाबने वास कैल । प्रभुर जे आज्ञा दोहें सब निर्वाहिल ॥
नाना शास्त्र आनि लुप्त तीर्थ उद्धारिला । वृन्दाबने कृष्णसेवा प्रकाश करिला ॥

(११) पुलिनबिहारीदत्त द्वारा रचित बृन्दाबनकथा में –

"चैतन्यदेव १५२६ खीष्टाब्दे जखन बृन्दाबन देखिते जान, तखन एखाने एकटि ओ मन्दिर वा देवमूर्त्ति छिल ना । मथुरा अति प्राचीन नगरी हइले ओ आजिकाल बृन्दावने तदपेक्षा अनेक देवमन्दिर हइयाछे, एइ रूप परिवर्त्तनेर मूल कारण बंगाली चैतन्यदेव ओ ताहाँर शिष्यमण्डली ।" २८१ पृष्ठ ।

(१२) भक्तिरत्नाकर की पञ्चम तरंग में –

मथुरा मण्डले राजा बज्रनाभ हैला । कृष्णलीला नामे बहु ग्राम बसाइला ॥
श्री विग्रह सेवा कैला कुण्डादि प्रकाश । नाना रूपे पूर्ण हैल ताँर अभिलाष ॥
कतदिन परे सब हैल गुप्त पाय । तीर्थ प्रसंगादि केह ना करे कोथाय ॥
श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र ब्रजेन्द्र कुमार । मथुरा आइला हैला कौतुक अपार ॥
करिया भ्रमण किछु दिग् दर्शाइला । सनातन रूप द्वारे सब प्रकाशिला ॥
यद्यपि से सब स्थान बेद्य से दोंहार । तथापि करिला शास्त्र रीत अंगीकार ॥
नाना शास्त्र प्रमाण करिया संकलन । करिलेन ब्रजेते भ्रमण दुइ जन ॥
गुप्ततीर्थ उद्धार करिल यत्न करि । व्यक्त कैल राधा कृष्ण रसेर माधुरी ॥
प्रभु प्रिय रूप सनातनेर कृपाय । मथुरा महिमा एबे सर्वलोके गाय ॥

(१३) पुलिनबिहारीदत्त विरचित माथुरकथा नामक पुस्तक का २७९ पृष्ठ में –

"१५२१ खीं सेकेन्दरलोदीर परलोक प्राप्ति हइले रूप ओ सनातन दुइ भाइ पुनराय मथुरार लुप्ततीर्थ ओ गुप्त विग्रह गुलि उद्धार करिते यान । ईहारा उभयेइ सुदक्ष राजकर्मचारी, सुपण्डित कवि, दृढ़व्रत, ओ धर्मनिष्ठ भक्त छिलेन बलिया ईहादेर दुइजनेर उपरेई चैतन्यदेव वृन्दाबने राधाकृष्णपूजा प्रवर्त्तनेर भार दिया पाठाइया दियाछिलेन । ताँहारा याईया वराहपुराणेर अन्तर्गत मथुरामाहात्म्य देखिया, ब्रजमण्डले श्रीकृष्णेर कोथाय कि लीलास्थल आछे ताहा १४।१५ वत्सर यावत् अन्वेषण करिया छिलेन ।"

(१४) आगे – " मोगल पाठाने युद्ध वाधिल । ईहातेई निपीडित हिन्दुदिगेर पुनराय देवमूर्त्ति स्थापनेर सुविधा हईल" २४० पृ०

(१५) आगे – २११ पृ० "राजनीति विशारद सनातन ओ रूप एई सुवर्ण सुयोग परित्याग करेन नाई। हुमायूनेर राजत्वेर द्वितीय वत्सर हइते ताँहारा वृन्दावने देवमूर्त्तिगुलि स्थापित करिते आरम्भ करिया छिलेन ॥"

(१६) "रसिकमोहनी" ग्रन्थ में भक्तमाल के टीकाकार प्रियादासजी –

श्रीगुपाल राधारमण बिपिन बिहारी प्रान। ऐसे श्रीजुत रूप जू दास सनातन दान ॥२॥
प्रगट करी व्रजभूमि मधि श्रीवृंदाबन धाम। ताकी छबि कबि कहि सके सब जन मन अभिराम॥३॥

(१७) महाप्रभु श्रीकृष्ण के लीलाक्षेत्र एहि वृन्दावन चैतन्य देवंक द्वारा प्रथमे आविष्कृत हेलो। ता पूर्वरु लोके बृन्दाबनर अवस्थिति सठिक जाणि न थिले । श्रीक्षेत्रमोहनमहान्ति कृत तीर्थसाथि – वृन्दावन १०६ पृष्ठा (उत्कलभाषा)

(१८) "और यही कारण था कि श्री चैतन्य ने इन दोनों भाइयों से वृन्दावन में रहकर भक्ति ग्रन्थों की रचना और लुप्त वृन्दाबन का उद्धार करने के लिए कहा इन्होंने अपने प्रभु की आज्ञा के अनुसार" भक्त चरितावली – पृष्ठ १८४ प्रथमभाग अनुवादक लक्ष्मीप्रसादपाण्डेय, प्रकाशक इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

(१९) महाप्रभु के पार्षद श्री मुरारीगुप्त कृत मुरारिगुप्तेरकडचा में—यह प्रभुके समसामयिक पार्षद थे। १४३५ शताब्दी में यह ग्रन्थ बना था।

श्रीसनातन गोस्वामीजी के मिलन में महाप्रभु का वचन –

साधु साध्विति हर्षेण शिक्षयामास तं पुनः॥ १३।१४॥
वृन्दाबनाय गन्तव्यं भक्तिशास्त्रनिरूपणं। लुप्ततीर्थप्रकाशं च तन्माहात्म्यमपिस्फुटम् ॥१३।१५॥
कर्त्तव्यं भवता येन भक्तिरेव स्थिरा भवेत्। यामाश्रित्य सुखेनैव श्रीकृष्णप्रेममाधुरीं ॥१३।१६॥
पिबन्ति रसिकाः नित्यं सारासारविचक्षणाः ॥

(२०) प्रियादासजी की टीका के उपरान्त "भक्तमाल की सब से यह प्राचीन टीका है। जो संस्कृत म. पा में है। लगभग २०० साल की प्राचीन हस्तलिखित पूंथी से –

संसारस्य सुखं रूपसनातनसुनामकौ। तत्यजुस्तृणवद्गौडदेशनाथौ महामती॥
अथ वृन्दाबने रम्ये सर्वत्र कुसुमाकरे। कौपीनं करकं चैव गृहीत्वा वीतरागिणौ॥
निवासं चक्रतुः श्रीशध्यानतत्परमानसौ। व्रजभूमौ रहस्य श्रीराधामाधवयोर्गुणान् ॥२०॥
संगीय प्रेमसंपूर्णौ परमानन्दमापतुः। सर्वे जानंति वैराग्यनिरतौ तौ बभूवतुः॥२१॥
व्रजभूमौ हरिर्यत्र यत्र क्रीडाश्चकार वै। यथा यथा शुकोद्गीतान्तथा वोचतुरुत्तमौ ॥२२॥
श्रीमदापार्जीयतकान्तिबालगणकविः।

(२१) "इन तीनों संप्रदायों में वंगीय वैष्णवों का सब से अधिक प्रभुत्व वृन्दावन में है क्योंकि इस संप्रदाय के जन्मदाता चैतन्य महाप्रभु के शिष्य रूप और सनातन ने ही वृन्दावन को मध्यकाल में पुनरुज्जीवित किया था।" १७० पृष्ठ। (लेखक श्री० मदनमोहननागर एम. ए. क्यूरेटर प्राविंशल म्यूजियम, लखनऊ) व्रजसाहित्यमंडल मथुरा के द्वारा प्रकाशित – "व्रजलोकसंस्कृतिः" में ॥

(२२) श्रीगोवर्द्धनभट्ट गोस्वामीकृत रूपसनातनस्तोत्र में – श्रीगोवर्द्धनभट्टजी – गदाधरभट्टगोस्वामी के वंश में हुए हैं। गदाधरभट्ट गोस्वामीजी की वाणी प्रसिद्ध है –

श्रीवृन्दाविपिनञ्च गोकुलभुवं गोपीगणं राधिकां । गोविन्दं सकलञ्च वैष्णवमतं नानागमेषु स्थितम् ।
मन्दो वेद यदीययैव दयया चैतन्यदेवानुगं । दीनोद्धारविशारदं नमत तं रूपाग्रजं सन्ततम् ॥

(२३) इसकी भूमिका व निवेदन के पहिला पृष्ठ में—प्रकाशकः "याँहारा ताँहादेर प्राणवल्लभेर चिरवांछित सुमधुरसंग त्याग करिया श्रीवृन्दावन आश्रय द्वारा श्रीराधाकृष्णेर लुप्त लीलास्थलीसकलेर उद्धार साधन करिया छिलेन ।

(२४) "श्रीवृन्दाबनदर्पण" नामक ग्रन्थ के परिशेष में आचार्य्य शिरोमणि मधुसूदन गोस्वामी जी—
सावधान ! सावधान ! सावधान ! श्रीवृन्दावन की यात्रा हमारा परमधन है श्रीमहाप्रभु जी की आज्ञानुसार हमारे पूर्वाचार्य्यों ने गुप्ततीर्थ और लीलास्थल प्रकाश किये हैं ।

(२५) स्वर्गीय ग्राऊससाहेब महोदय ने स्वनिर्मित मथुरा के इतिहास में कहा—

The best named community (Bangali or Gouriyas Vaishnawas) has had a more marked influence on Brindaban than any of the others, since it was Chaitanya, the founder of the sect, whose immediate diseiples were its temple builders. (P. 183)

अब हम केवल नारायणभट्ट गोस्वामी जी के बारे में प्रमाण समूह को उठाते हैं ।

(२६) नाभा जी कृत प्रसिद्ध "भक्तमाल" में—(सं १६४२)
गोप्य स्थल मथुरा-मंडल, जिते बाराह बखाने । ते किये नारायण प्रगट, प्रसिद्ध पृथ्वी में जाने ॥

(२७) इस पर प्रियादास जी की टीका (सं० १७६६) देखिये—
भट्ट श्री नारायण जू भये ब्रज परायन, जाँय जाही ग्राम तहाँ व्रत करि ध्याये हैं ।
बोलि कै सुनावैं इहाँ अमुकौ स्वरूप है जू , लीला कुंड धाम स्याम प्रगट दिखाये हैं ॥

(२८) भक्तमाल की अन्य टीका 'भक्तकल्पद्रुम' पृष्ठ ४३ पर भी इनके विषय में निम्नलिखित उल्लेख मिलता है—'ये गोसाईं जी चेले कृष्णदास ब्रह्मचारी चेले सनातन जी पुजारी ठाकुर द्वारे मदनमोहन के सेवक हुए ।........सब स्थान वाराहसंहिता में जैसे लिखे हैं सब दिखलाय दिये । उसी अनुसार नारायणभट्ट जी ने बन, उपवन व गृह व कुंज व विहारस्थान प्रगट किये, सो सबका वर्णन कौन से हो सकता है ।'

(२९) सूरसागर के जीवन चरित्र व भूमिका के ४० पृष्ठ पर जो कि खेमराज कृष्णदास वेंकटेश्वर मुम्बई में छपा है—
"नारायणभट्ट गोसाईं गोकुलस्त ऊँचगाँव व बरसाने के समीप के निवासी संवत् १६२० इनके पद रागसागरोद्भव में है, ये महाराज बड़े भक्त थे वृन्दाबन, मथुरा, गोकुल इत्यादि में जे तीर्थस्थान लुप्त हो गये थे उन सबको प्रगट करि रासलीला की जड़ इन्होंने प्रथम डाली है ।"

(३०) श्रीराधावल्लभी संप्रदायानुयायी महात्मा ध्रुवदासजी की भक्तनामावली में—
भट्ट नारायण अति सरस ब्रजमण्डल सों हेत । ठौर ठौर रचना करी प्रगट कियो संकेत ॥

(३१) श्री लाडिलीदास जी का मंगल में जो बरसाना पर श्रीजी के मन्दिर में उत्सवादिक समय नित्य गाया जाता है—तथा वह लाडिलीदासजी नारायणभट्ट के परिवार में संवत् १८५४ में से पहिले हुए हैं—

जय जय जय श्रीनारायणभट्ट प्रगट जग में भये। फूले नर और नारि मोद उपजत नये ॥१॥
आगे—मुनि नारद को अवतार देह यह नर धरी। मथुरा मण्डल गुप्त रीत प्रगट करी ॥ ५ ॥

(३२) रास के आदि में समाजी वचन—जिसको हर मण्डली रास के प्रारम्भ में गाती है—
श्री नारायण अति सुभट जिनको ब्रज सों हेत। ठौर ठौर लीला रची निकत जानि संकेत ॥
(नवरत्न भाष्य रासविलास पृ० २)

(३३) "रासलीलानुकरण और श्री नारायणभट्ट" नामक प्रबन्ध के ५ पृष्ठ पर—
"श्री रूप सनातन दोनों भैया प्रभु की आज्ञा से वृन्दावन आकर लुप्त तीर्थों का उद्धार तथा खोज करने लगे और दोनों ने भक्तिशास्त्र, रसशास्त्र समूहों की रचना भी की ॥ आगे—ब्रज का उद्धार श्रीरूप, श्री सनातन, श्री नारायणभट्ट से हुआ था इस विषय में हम प्रमाण समूहों को उपस्थित कराते हैं।

(३४) लगभग २०० वर्ष के प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक से—
श्री नारायणभट्टाख्यो ब्रजभूमौ वसन्मुदा। लतागुल्मादिषु सदा हरिध्यानपरायणः ॥
मथुरायां हि गुह्यानि यानि क्षेत्राणि कृत्स्नशः। महावराहप्रोक्तानि चकार प्रगटानि यः ॥
श्रीमदापाजीपंतकारितबालगणकविः।

(३५) "श्रीनारायणभट्ट का नाम बड़े महत्व का नाम है। इन्होंने न केवल रास का आविष्कार किया, अपितु अनेक ग्रन्थों की रचना कर ब्रज के वैभव को भारत में फैलाया, प्राचीन लीलास्थलों की खोज की तथा ब्रज चौरासी कोस यात्रा का आरम्भ किया।" १४० पृष्ठ

(३६) "ब्रजभक्तिविलास" नामक पुस्तक में भट्टजी ने ब्रज चौरासी कोस में स्थित वन, उपवन तथा अन्य दर्शनीय स्थानों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। चैतन्यमहाप्रभु के शिष्यों की तरह उन्होंने भी ब्रज के अनेक प्राचीन तीर्थों की खोज की। इन स्थानों पर अकबर के मन्त्री टोडरमल ने पक्के कुण्ड, तालाब तथा मन्दिर बनवाये" ॥ १४१-१४२ पृष्ठ।

(श्रीकृष्णदत्तवाजपेयी एम० ए० अध्यक्ष पुरातत्वसंग्रहालय मथुरा) ब्रजसाहित्यमंडल मथुरा के द्वारा प्रकाशित "ब्रजलोकसंस्कृतिः" में।

(३७) अलीगढ़ निवासी बाबू तोतारामवर्म्मा वकील हाईकोर्ट के द्वारा रचित "ब्रजविनोद" नामक ग्रन्थ के १-२ पृष्ठ में—
"रूप और सनातन बंगाली गुसांई वृन्दावन में रहते थे, उनके शिष्य नारायणभट्ट ने बनयात्रा और रासलीला की रीति निकाली थी, उन्होंने ब्रजमंडल भर में जितने सर और वन उपवन थे, सब के नाम धरे थे पुराने स्थान तो केवल सात आठ थे। पीछे से देव स्थानों के आस-पास उन्हीं नामों के ग्राम बस गये।"

(३८) राधाकृष्णदासजी के द्वारा रचित भक्तनामावली के ३३-३४ पृष्ठ—
"श्रीनारायणभट्ट—डाक्टर ग्रिअर्सन के मतानुसार इनका जन्म सन् १५६३ ईसवी में हुआ था। इन्होंने पुराणों से पता लगा लगाकर ब्रज के सब स्थानों को प्रकट किया और रासलीला का आरम्भ कराया। इन दिनों लोग जो 'ब्रजयात्रा' करते हैं, वह इन्हीं के प्रदर्शित पथ से और इन्हीं के आविष्कृत स्थान और देवता इस समय पूज्य हैं।"

(३९) ज्वालाप्रसादमिश्र ने हरिभक्तिप्रकाशिका के ६५ पृष्ठ पर कहा है—

"भगवान जहाँ जहाँ जो चरित्र किये थे, बाराहसंहिता के अनुसार सभी दिये। उसी प्रकार गोसांई जी ने बन, उपबन, स्थान, कुञ्ज, विहार आदि सब प्रकट करे" इत्यादि।

(४०) व्रजतीर्थोद्धार—भट्टजी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य्य कृष्णलीला से सम्बन्धित व्रजमण्डल के पुण्य स्थलों का नाम निर्देश करना है। व्रज का प्राचीन महत्व चाहें जो रहा हो, किंतु श्रीचैतन्य-महाप्रभु के पूर्व यहाँ के निवासी कृष्णलीला से संबंधित स्थलों को भूल गये थे। बाराहपुराण में जिन स्थलों का उल्लेख है, उनकी स्थिति और उनके अस्तित्व की जानकारी भी लोगों में नहीं थी। इतिहासकारों ने लिखा है कि चैतन्यमहाप्रभु के शिष्यों ने व्रज के तीर्थों को प्रकट किया और प्रमुख देवालयों की स्थापना की, किंतु इस कार्य्य का अधिकांश श्रेय नारायणभट्ट को है। इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं ॥ ४ पृष्ठ ॥

(४१) उन्होंने कृष्णलीला के भूले हुए स्थानों का उद्घाटन कर समस्त व्रजमण्डल में तत्संबन्धी अनेक वनों उपवनों और तीर्थों का निर्देश किया और स्थान-स्थान पर देवालय कुंड तालाब और कूप बनवाये ॥ २ पृष्ठ ॥

उन्होंने भक्तमण्डली को लीलानुकरण का सुख देने के लिये रासपद्धति का आविष्कार किया, जिससे व्रज की गान, वाद्य और नृत्यकलाओं की उन्नति के साथ यहाँ की नाट्य-कला का भी एक विशिष्ट रूप उपस्थित हुआ ॥ २ पृ० ॥

उन्होंने व्रज चौरासी कोस की यात्रा का आरम्भ किया, जो आज तक उसी प्रकार प्रचलित है, और जो प्रतिवर्ष सहस्रों व्यक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करती है ॥ २ पृ० ॥ "नारायणभट्ट" नामक शीर्षक में प्रभुदयालमीतलजी—

(४२) अयोध्यानिवासी रूपकलाकृत प्रसिद्ध भक्तमाल की टीका रूप "वार्त्तिकतिलक" के ५६५ पृष्ठ पर—

"श्रीनारायणभट्ट जी व्रज की भूमि के उपासक हुए, नाम, रूप, लीला, धाम को एक ही करके (अभेद) मानते थे। आपने बाराहपुराणानुसार श्रीमथुरामण्डल के सब गोप्यस्थल प्रगट किये।"

(४३) "श्रीनारायणभट्टचरितामृत" नामक प्राचीन ग्रन्थ में जो कि नारायणभट्टजी से सप्तम पीढ़ी सं० १७२२ में हुए श्री जानकीप्रसादगोस्वामीजी के द्वारा विरचित है—

स्थापिता वज्रनाभेन बलदेवादिमूर्त्तयः। उच्छिन्ना बहुकालेन ते सर्वे लोपमास्थिताः ॥ २। ३३ ॥
प्रदर्शिताः समुद्धृत्य भट्टनारायणेन हि। केचित् कुंडांतरे प्राप्ताः कूपमध्ये तथा परे ॥ २। ३४ ॥
पृथिव्याश्चान्तरे केचित् देवा एवं समास्थिताः। व्रजमण्डलभूगोलमेकविंशतियोजनम् ॥ २। ३५ ॥
अस्मिन् सर्वे स्थिताः तीर्थाः यमुनादक्षिणोत्तरम्। सार्द्धद्वयसहस्राणि तीर्थानि व्रजमंडले ॥२।३६॥
तीर्थान्तराणि चान्यानि प्रत्यक्षं दर्शितानि च। श्रीकृष्णाज्ञामनुप्राप्य भट्टनारायणेन हि ॥ २।३७॥
नान्यो भट्टान्महाप्राज्ञो व्रजस्योद्धारको भवेत्। तस्यैवानुग्रहेणान्ये जानंति व्रजमण्डलम् ॥ २।३८॥
तेनैव शिक्षिताः सर्वे यात्रां कुर्वन्ति मानवाः ॥

(४४) इत्थं कृष्णपरायणो मुनिवरो लीलास्थलं श्रीहरेः, प्रत्यक्षं कृतवान् जगत्रयहितं कृष्णाज्ञया संभवः।
कृत्वा कामविमोहनाय प्रणतिं श्रीलाडिलेयं प्रभुं, नीत्वा ग्राममथान्वागाद्गिरिवरे ह्युच्चाभिधानं ततः॥
अ० २। ६०।

(४५) इत्यष्टचत्वारि समाश्रितानि वनानि पुण्यानि मनोर्थदानि।
श्री भट्टनारायणनिर्मितानि व्रज कराख्याः व्रजमण्डलानि ॥

प्रथमोऽध्याय—उपसंहारः

(४६) अथ नारायणाचार्य्यः श्रीकृष्णाज्ञाप्रणोदितः । ब्राह्मणं सुन्दरं बालं कृष्णवेशं विधाय च ॥
राधावेशं तथा चैकं गोपीवेशानस्तथापरान् । रासलीलां स सर्व्वत्र कारयामास दीक्षितः ॥
कुत्रचिन् गोपवेषन गोवत्सान्श्चारयन्हरिः । तथा लीलां च कृतवान् कालियदमनादिकं ॥
सांझिकारचनं क्वापि राधागोपीभिरेव च । अन्या बहुविधा लीला या याः कृष्णश्चकारह ॥
सर्वलीलानुकरणं कारयामास नारदः । यस्मिन् दिने यद्स्ले वा कृष्णो लीलां चकारह ॥
तस्मिन् दिने स्थले तस्मिन्भट्टभास्करसंभवः । कारयामास तां लीलां बालैः कृष्णादिवेषिभिः ।
ततः प्रभृति सर्वत्र वनेषूपवनेषु च । व्रजतीर्थेषु कुञ्जेषु रासलीला बभूव ह ॥
आस्वाद ३ । १२१-१२६ श्लोक

(४७) अथ नारायणाचार्य्यः व्रजयात्रां चकारह । सर्व्वैश्च वैष्णवैर्विप्रै रन्यैश्चापि जनैः सह ॥
तीर्थे तीर्थे च सर्व्वत्र चाष्टभेदवनेषु च । द्वादशेष्वपि कुंजेषु षोडशाख्यवटेषु च ॥
वनयात्रा स्मृता चैका व्रजयात्रा तथापरा । द्वे चैव कृतवान् श्रीमान्नारदो भट्टरूपधृक् ॥
तीर्थे तीर्थे तथा स्नानं स कृत्वा विधिपूर्वकं ।.पश्यन् सर्व्वत्र देवेशं बहुरूपैः स्थितं प्रभुं ॥
तीर्थाधिष्ठातृदेवांश्च संपूज्य मन्त्रपूर्वकं । वनाधिष्ठातृदेवांश्च पूजयामास तत्ववित् ॥
यथाचारो यथाशैय्या नियमो यथा यत्र हि । यथा दानं यथा ध्यानं तत्तथैव चकार ह ॥
वाराहेण यथा प्रोक्तं विश्रामस्थानमेव च । तथैव कृतवान् भट्टः शास्त्रदृष्टेन कर्म्मणा ।
कृतार्थान् कृतवाँलोकान्व्रजयात्राप्रसंगतः । व्रजयात्रां समाप्यैव लोकानाज्ञापयत्प्रभुः ॥
एवमेव प्रकर्त्तव्यं युष्माभिः कृष्णहेतवे । भाद्रे मास्यसिते पक्षे जन्माष्टम्या अनन्तरं ॥
लोकाः सर्वे प्रकुर्व्वन्ति व्रजयात्रां तदाज्ञया ॥ आस्वाद ३ । १३०—१३६ ॥

(४८) ग्राउस साहिब महोदय ने भी (A distrit-memoicr MUTHURA में कहा है—

Till the close of the 16th century except in the neighbourhood of the great thoroughfare there was only here and there a scattered hamlet in the midest of unclaimed woodland. The Vaishnava culture there first developed in to its Present from under the influence of Rupa and Sanatan, the celebrated Bengali Gosains of Brindaban. It was disciple Narain Bhatt, who first established the Banjatra and Raslela, and it was from him that every lake and grave in the circut of Braj received a distinctive name in addition to the same seven or eight spots, which alone are mentioned in the earlier purans.

(४९) श्रीचन्द्रप्रसादसिंह, युवराजदत्त कालेज का प्रोफेसर पो० ओयल (खीरी) जि० लखीमपुर से १९-११-४६ ई० तारीख में प्रेषित एक पत्र में—

आप "रासलीलानुकरण आविष्कार" विषय का खोज में हैं। आप लिखते हैं कि मैंने एक पत्र लिखा था, उसका भी उत्तर नहीं मिला। मैं आपसे पूर्णरूप से सम्मत हूँ कि श्रीनारायणभट्ट जी रासलीला के आचार्य्य हैं। सब प्राप्त प्रमाणों तथा साक्ष्यों का अध्ययन करके मैं निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ और अपनी पुस्तक में मैंने यही लिख भी दिया है।"

(५०) ठौर ठौर रास के विलास लै प्रगट किये, जिये यौं रसिकजन कोटि सुख पाये हैं। (भक्तमाल के टीकाकार प्रियादासजी) क्रमशः—

॥ श्री गौरहरिर्जयति: ॥

ब्रज भक्ति विलास:

राधया सहितं कृष्णं लाड़िलेयं स्वभिष्टकम् । रेवती सहितं देवं वन्देऽहञ्च हलायुधम् ॥ १ ॥
कृष्णाज्ञया कृतं स्वेष्टं नत्वा देवत्रयं शुभम् । शंकरं परमानदं सर्व विद्या विशारदम् ॥ २ ॥
कुर्व्वेऽहं पञ्चमं गोप्यं वनयात्राशुभप्रदं । ब्रज-भक्तिविलासाख्यं ब्रजमाहात्म्य दर्शिनम् ॥ ३ ॥
वास-प्रदक्षिणार्थाय दान पूजन हेतवे । त्रयोदसहस्रैस्तु संख्या वेष्टित सुन्दरम् ॥ ४ ॥
समस्त ब्रजद्वाराणि वनान्युपवनानि च । प्रतिवनाधिवनानि स्युः वहुपुन्यप्रदानि च ॥ ५ ॥
द्वादशा द्वादशाख्याता स्त्वष्ट चत्वारसंख्यका । मासेपु द्वादशेष्वेपु मासो भाद्रपदो वरः ॥ ६ ॥
तस्मिन्प्रदक्षिणा कार्य्या मंत्रपूर्व विधानतः । यथोक्त विधिना कुर्य्याद्दान पूजन पूर्व्वकम् ॥ ७ ॥
मात्स्ये:-ब्रजमण्डल भूगोलं शेषनागफणं वरं । कुमुदाख्यं महाश्रेष्ठं सर्वेषां मध्य संस्थितम् ॥ ८ ॥
तस्योपरि स्थितं लोकं सर्वस्थानमहाफलम् । कृष्णलीला विहारार्थं मुच्चस्थानंविराजितम् ॥ ९ ॥
चतुरष्टकक्रोशेन परिपूर्णविराजितम् । अस्य प्रदक्षिणीं कुर्व्वन्धनधान्यसुखं लभेत् ॥ १० ॥
दानार्चावासतो लोको विष्णुलोकमवाप्नुयात् । आवासान्म्रियतेऽत्रेह पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ११ ॥
पुन्यं लक्षगुणं लब्ध्वा कृतेऽस्मिन्व्रजमण्डले । कृष्णेन निर्मिता स्तीर्थाः सार्द्धद्वयसहस्रकाः ॥ १२ ॥

॥ श्री गौरांगविधुर्जयति ॥

अनर्पित चरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ, समर्पयितु मुन्नतोज्वल रसं स्वभक्तिश्रियम् ।
हरिः पुरट-सुन्दर-द्युति कदम्ब सन्दीपितः, सदा हृदयकन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः ॥
गुरुं नत्वा कृपागारं भट्टनारायणं तथा । भाषां कुर्वे ब्रजभक्तिविलासस्य तु तोषिकाम् ॥ २ ॥

हम श्री राधिका जी के साथ श्रीकृष्ण तथा निज इष्ट लाड़िलेय स्वरूप और रेवती जी के साथ हलायुध देव की वन्दना करते हैं ॥१॥

अपने इष्ट कल्याण स्वरूप तीनों देव और परमानन्दकारी सकल विद्या में विशारद पितृव्य शंकर जी को नमस्कार कर श्रीकृष्ण-आज्ञा से वास-प्रदक्षिणा-दान-पूजा के लिए परम गुप्त, वन यात्रा शुभ प्रदानकारी, ब्रज महिमा दिखाने वाले तेरह अध्याय से युक्त 'ब्रजभक्तिविलास' नामक ग्रंथ का निर्माण करते हैं । ॥ २—४ ॥

इस ग्रन्थ में पुण्यप्रद समस्त ब्रज के द्वार समूह, बारह वन, बारह प्रतिवन, बारह अधिवन, और बारह उपवन का वर्णन है । और भी इसमें द्वादशमास तथा मास श्रेष्ठ भाद्रपद की यथा मन्त्र, यथाविधि, यथा दान, यथा पूजा प्रदक्षिणा का निर्णय है ॥ ५—७ ॥

मत्स्य पुरान में कहा है:—

शेष नाग के फणों में ठीक मध्य स्थल पर कुमुद नामक फण विराजित है । उसके उपरि भाग में सकल स्थान का फल रूप, चौरासी कोस परिमित ऊँचा स्थान है । यह श्री ब्रजमण्डल है जो श्रीकृष्ण के विहार के लिये है । इसकी प्रदक्षिणा से धन-धान्य एवं सुख मिलता है तथा दान, पूजा, वासादिकों से विष्णुलोक प्राप्त होता है । यहाँ वास पूर्वक मरने पर फिर पुनर्जन्म नहीं है । ब्रजमण्डल में किया हुआ पुण्य लक्ष गुण फल देता है । स्वयं श्रीकृष्ण के द्वारा विरचित पच्चीस हजार तीर्थ ब्रज मण्डल में विद्यमान हैं ॥ ७—१२ ॥

तत्रादौ वनोपवन प्रतिवनाधिवनान्यष्ट चत्वारिंशत् तानि चतुरष्टक्रोश—परिमाणस्थितानि चतुर्भाग-शोऽभ्यन्तरस्थितानि क्रमश आह ॥

पाद्मे—वनानि द्वादशान्याहुर्यमुनोत्तरदक्षिणे । महावनं महाश्रेष्ठं द्वयं काम्यवनं शुभम् ॥ १३ ॥
कोकिलाख्यं तृतीयञ्च तुर्य्यं तालवनं तथा। पञ्चमं कुमुदाख्यञ्च षष्ठं भाण्डीरसंज्ञकम् ॥ १४ ॥
नाम्ना छत्रवनं श्रेष्ठं सप्तमं परिकीर्तितम् । अष्टमं खदिरं प्रोक्तं नवमं लोहजं वनम् ॥ १५ ॥
नाम्ना भद्रवनं श्रेष्ठं दशमं बहुपुण्यदम् । एकादशं समाख्यातं बहुलावन सञ्ज्ञकम् ॥ १६ ॥
नाम्ना विल्ववनं श्रेष्ठं द्वादशं कामनाप्रदम् । इति द्वादशसंज्ञानि वनानि शुभदानि च ॥ १७ ॥

अथ द्वादशोपवनानि आह ।

वाराहे--आदौ ब्रह्मवनं नाम द्वितीयं त्वप्सरावनम् । तृतीयं विह्वलं नाम कदम्बाख्यं चतुर्थकम् ॥१८॥
नाम्ना स्वर्णवनं श्रेष्ठं पञ्चमं परिकीर्तितम् । सुरभीवन नामानं षष्ठ माल्हादवर्द्धनम् ॥ १९ ॥
श्रेष्ठं प्रेमवनं नाम सप्तमं शुभदं नृणाम् । मयूरवन नामानमष्टमं परिकीर्तितम् ॥ २० ॥
मानेंगितवनं श्रेष्ठं नवमं मानवर्द्धनम् । शेषशायिवनं श्रेष्ठं दशमं पापनाशनम् ॥ २१ ॥
एकादशं समाख्यातं नारदाख्यं शुभोदितम् । द्वादशं परमानन्द वनं सर्वार्थदायकम् ॥२२॥
इति द्वादश संज्ञानि वनान्युपवनानि च । इति द्वादशोपवनानि ॥

अथ द्वादश प्रतिवनानि ।

भविष्ये-आदौ रंकवनं श्रेष्ठं पुरसंज्ञा विराजितम् । वार्त्तावनं द्वितीयञ्च करहाख्यं तृतीयकम् ॥२३॥
चतुर्थं काम्यनामानं वनं कामप्रदं नृणाम् । वनमञ्जन नामानं पञ्चमं श्रीशुभप्रदम् ॥२४॥
नाम्ना कर्णवनं श्रेष्ठं षष्ठं स्वप्नवरप्रदम् । कृष्णाक्षिपन नामानं वनं नन्दन मष्टमम् ॥२५॥
नन्दप्रेक्षणकृष्णाख्यं वनं सप्तममीरितम् । वनमिन्द्रवनं नाम नवमं कृष्णपूजितम् ॥
शिक्षावनं शुभं प्रोक्तं दशमं नन्दभाषितम् ॥२६॥
चन्द्रावलीवनं श्रेष्ठमेकादशमुदाहृतम् । नाम्ना लोहवनं श्रेष्ठं द्वादशं शुभदं नृणाम् ॥२७॥
इति प्रतिवनान्याहु र्मार्गे वामे च दक्षिणे । इति द्वादश संज्ञास्ते देवावासफलप्रदाः ॥२८॥
इति द्वादश प्रतिवनानि ॥

वन, उपवन, प्रतिवन और अधिवन अड़तालीस संख्यक तथा चौरासी कोश परिमित हैं। चतुर्भाग के अभ्यन्तर से उन्हें क्रम पूर्वक कहते हैं—

पद्म पुराण में कहा है—यमुना की उत्तर-दक्षिण दिशाओं में बारह वन हैं:—महावन, कामवन, कोकिलावन, तालवन, कुमुदवन, भाण्डीरवन, छत्रवन, खदीरवन, लोहजंघवन, भद्रवन, बहुलावन और बेलवन ॥ १३--१७ ॥

अब बारह उपवन कहते हैं। वराहपुराण में-ब्रह्मवन, अप्सरावन, विह्वलवन, कदम्बवन, स्वर्णवन, सुरभीवन, प्रेमवन, मयूरवन, मानेंगितवन, शेषशायिवन, नारदवन और परमानन्दवन। (१८--२२)

अब बारह प्रतिवन कहते हैं -रंकवन, बार्त्तावन, करहावन, कामवन, अन्जनवन, कर्णवन, कृष्णाक्षिपनवन, नन्दप्रेक्षणकृष्णवन, इन्द्रवन, शिक्षावन, चन्द्रावलिवन और लोहवन। (२३--२८)

॥ अथ द्वादशधिवनानि ॥

विष्णुपुराणे—मथुरा प्रथमं नाम राधाकुण्डं द्वितीयकं । नन्दग्रामं तृतीयञ्च गड्स्थानं चतुर्थकम् ॥ २६ ॥
पञ्चमं ललिताग्रामं वृषभानुपुरं च षट् । सप्तमं गोकुलं स्थानमष्टमं वलदेवकम् ॥ ३० ॥
गोवर्द्धनवनं श्रेष्ठं नवमं कामनाप्रदम् । वनं जावषटं नाम दशमं परिकीर्तितम् ॥ ३१ ॥
मुख्यं वृन्दावनं श्रेष्ठमेकादशं प्रकीर्त्तितम् । संकेतवटकं स्थानं वनं द्वादश कीर्त्तितम् ॥ ३२ ॥
इति द्वादश संज्ञानि वनान्यधिवनानि च । वनानामधिपाः प्रोक्ता व्रजमण्डल मध्यगाः ॥ ३३ ॥
एषां नैव विलोकेन वनयात्रा च निष्फला । एषाञ्च दर्शनेनैव वनयात्रा शुभप्रदा ॥ ३४ ॥
आदौ लीलां यदा पश्येद्वनयात्रां ततश्चरेत् । सर्वान् कामानवाप्नोति विष्णुलोक मवाप्नुयात् ॥३५॥
सर्वत्र विजयी भूयाद्वनयात्राप्रचारकः । मन्त्रपूर्वं समायुक्तः शुचि र्नियम तत्परः ॥ ३६ ॥
प्रदक्षिणे च वृक्षाद्याः लता गुल्मादयस्तथा । गोब्राह्मण मूर्त्तयस्तु पाषाणाद्याः स्थिताःपथि ॥ ३७ ॥
तीर्थास्तु भगवत्स्थानाः नैव त्याज्याः प्रदक्षिणे । यत्तस्य सन्माननस्तु तत्तेन प्रपूजयेत् ॥ ३८ ॥
तीर्थे स्नानाचमं ग्राह्यं स्वरूप वृक्ष पूजनम् । स्थानं देवस्थलं पूज्य वनयात्रां समाचरेत् ॥
प्रदक्षिणागतान् वृक्षान् द्विजमूर्त्ति गवादिकान् । अपमानं पुरस्कृत्य परिक्रमणमाचरेत् ॥
निष्फला वनयात्रा च शापमुग्रमवाप्नुयात ॥ ३६ ॥
वन्ध्यो सन्तानहीनस्तु दरिद्रमृण्यसंयुतः । अपमाने कृते लोके चतुर्व्याधिमवाप्नुयात् ॥ ४० ॥
कौर्म्मे-रात्रौषितं विना धौतमार्द्रं कौशेयवाससम् । चर्म्मतुल्यं समाख्यातं धर्म्म कर्म्म विनाशनम् ॥ ४१ ॥
धौतं शुष्कं धृतं वस्त्रं धर्म्म कर्म्म शुभ प्रदम् । ब्रह्मचर्य्यकृता सापि वनयात्रा प्रदक्षिणा ॥
महाश्रेष्ठा समाख्याता त्रिवर्गफलदायिनी ॥ ४२ ॥
उपानहं विना कार्य्या मध्यमा सा प्रदक्षिणा । फलार्द्ध दायिनी श्रेष्ठा धनधान्यविवर्द्धिनी ॥ ४३ ॥
प्रदक्षिणा विना स्नानं कनिष्ठ फलदायिनी । यत्सुखेन समाविष्टस्तत्सुखं सुस्थितो भवेत् ॥ ४४ ॥

अब बारह अधिवन कहते हैं—विष्णु पुराण में—मथुरा, राधाकुण्ड, नन्दग्राम, गढ़, ललिताग्राम, वृषभानुपुर, गोकुल, वलदेववन, गोवर्द्धन, यावबट, वृन्दावन और संकेतवन। (२६—३२)

बन समूह का दर्शन नहीं करने से यात्रा निष्फल होती है तथा दर्शन से शुभफल देती है।

अब यात्रा की विधि बतलाते हैं—भगवान् की लीलाओं को ध्यान में रखते हुए बन यात्रा प्रारम्भ करने पर समस्त कामनाओं को प्राप्त होकर विष्णुलोक को जाते हैं। बन यात्रा के प्रचार से सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। प्रदक्षिण में मार्गस्थित वृक्ष, लता, गुल्म, गौ, ब्राह्मणादि मूर्त्ति, पाषाण, तीर्थ, भगवत्स्थानादिकों का परित्याग नहीं करें। यथाविधि सन्मान से सब की पूजा करें। तीर्थ में स्नान, आचमन, वृक्ष तथा देवस्थान की पूजा यथाविधि करते हुए वनयात्रा करें। प्रदक्षिणा में प्राप्त वृक्ष, गौ, मूर्त्तिसमूह का अपमान करने वालों की यात्रा निष्फल होती है। और उन्हें बड़े बड़े शाप प्राप्त होते हैं। वे सन्तान से हीन तथा दरिद्र होकर चार प्रकार व्याधि भोगते हैं। (३३-४०)

कूर्म्मपुराण में कहा है—रात का पहना हुआ वस्त्र, मलिन वस्त्र और कौशेयवस्त्रादि चर्म तुल्य हैं तथा धर्म-कर्म का नाश करने वाले हैं। धुले वस्त्र, शुष्कवस्त्र, धर्म्म कर्म्म शुभ को देने वाले हैं। ब्रह्मचर्य्य रख कर यात्रा करने से आधा फल मिलता है तथा धन-धान्य बढ़ता है।

शौचं विना यदा कार्या निष्फला स्यात्प्रदक्षिणा । वनयात्रा प्रसंगे तु रात्रौ त्यक्ता प्रदक्षिणा ॥
त्याजेज्जीवादिहिंसां च पादप्रक्षेपणे शुचिः । क्रिमिकीटादिकानाञ्च पादप्रक्षेपत्यजनम् ॥
न दृष्ट्वा जीवघातं च रात्रौ कुर्यात्प्रदक्षिणां । अधमा सा समाख्याता वनयात्रा शुभप्रदा ॥
उत्तालगतिना चैव वनयात्रा प्रदक्षिणा । एते जीवा म्रियन्ते स्म पापे पाप समे समाः ॥ ४५ ॥
नैव यात्राफलं तस्य गृहस्थः फलमाप्नुयात् ॥ ४६ ॥
वह्निभूमिं विना यात्राऽथवा नो दन्तधावनम् । ब्रह्महत्या फलं भूयाच्चाण्डालसदृशो कृतिः ॥ ४७ ॥
विष्ठोच्छिष्टास्थिमांसादौ पादस्पर्शोभिजायते । जलोच्छिष्टकृतः स्पर्शो भोजनोच्छिष्ट सम्भवः ॥ ४८ ॥
दीपतैलादिकानाञ्च स्पर्शनं तु कदा भवेत् । सचैलं स्नानमाचक्रु र्नरनारीद्विजातयः ॥ ४९ ॥
आलस्यं न च कुर्य्याच्च स्नपनं विधिपूर्वकम् । चाण्डाल समतां लब्ध्वा ब्रह्महत्याफलं लभेत् ॥ ५० ॥
वनयात्रा गते मार्गे शवधूमप्ररोहनम् । तमेव च परित्यज्य परिक्रमणमाचरेत् ॥ ५१ ॥
शवधूम प्ररोहे तु वनयात्रां समाचरेत् । पुराकृतं शुभं पुन्यं कर्म्म धर्म्मं हरत्यसौ ॥ ५२ ॥
वनयात्रा प्रसंगे तु रोगं वा सुतकं लभेत् । तत्र स्थान मुषित्वा तु परिमानं दिनं त्यजेत् ॥ ५३ ॥
ततः प्रदक्षिणां कुर्य्याद्विधिपूर्व्वां समापयेत् । आदौ कलेवरं शुद्ध्वा ततः कुर्य्यात् प्रदक्षिणाम् ॥ ५४ ॥
सांगमेव समाजातं वनयात्रा प्रसंगकम् ॥ ५५ ॥
वनयात्रा प्रसंगे तु नारी स्याच्च रजःस्वला । उषित्वा सा च तत्रैव दिनपञ्चान् परित्यजेत् ॥ ५६ ॥
षष्ठेऽन्हौ च भवेच्छुद्धा वनयात्रां समाचरेत् । विक्षेपे दिवसे जाते नैव दोषोऽभिजायते ॥ ५७ ॥
ब्रह्माण्डे—वनयात्रा-प्रसंगे तु नक्तव्रत समन्वितः । फलं कोटिगुणं पुन्यं फलाहारमुपोषणे ॥ ५८ ॥
फलं लक्षगुणं पुन्यमन्नोदनमुपोषणे । भोजने च कृते नक्ते सहस्रगुणितं फलम् ॥ ५९ ॥
भोजने चैव मध्यान्हे फलाहारं शतं गुणं । अन्नोदने तदर्द्धं स्याद् विंशत्या गुणितं दिने ॥ ६० ॥

प्रदक्षिणा बिना यात्रा कनिष्ट फल को देती है। शौचादिक के बिना यात्रा निष्फल होती है। रात में वनयात्रा का निषेध है। यात्रा के समय पाँव धीरे धीरे फेंके, नहीं तो जीवहिंसा होना सम्भव है। जीवहिंसा होने पर पाप तथा यात्रा निष्फल होती है। शौच, दाँतन के बिना यात्रा करने से ब्रह्महत्या दोष लगता है तथा वह यात्री चांडाल सदृश कहा जाता है। उच्छिष्ट, हड्डी, माँस का परस, उच्छिष्ट जल, उच्छिष्ट भोजन, तैलादिक वस्तु का परस सर्वथा वर्जनीय है। यदि स्पर्श होजाय तो उसी वस्त्र में स्नान करें। स्नानादिक करने में आलस्य न करे क्योंकि उससे ब्रह्महत्या दोष होता है। शव-धूँआ का वर्जन शुभदायक है, नहीं तो धर्म्म, कर्म्म, पूर्व संचित फल समूह नाश कर देता है। वनयात्रा करते हुए रोगी होजाय, किम्वा सूतकादि आ पड़े तो वहाँ ही वास करें। आरोग्य होकर तथा सूतक का परिमाण समय बीत जाने पर फिर यात्रा करें यदि नारी रजस्वला हो जाय तो वहाँ पाँचमा दिवस वास कर छठे दिवस में शुद्ध हो यात्रा करे। विक्षेप दिवस आने पर कोई दोष नहीं है ॥ ४१—५७ ॥

ब्रह्मांडपुराण में कहा है—रातको व्रत रखें। फलाहार से यात्रा कोटिगुण, अन्नादि उपवास से लक्षगुण, भोजन से हजार गुण, मध्याह्नकाल फलाहार से सौ गुण, अन्न भोजन से पचास गुण, दिवा भोजन से बीस गुणा फल होता है। पाँव धोकर दान तथा मन्त्रादि जप करे। स्नान पूर्वक पूजा नमस्कार द्वारा अर्घ्य प्रदान, दाहिने हाथ से यव, चावल, धान की संग्रह-विधि है। यथा संख्यक

बनयात्रा व्रतानाञ्च विधिरेषा ह्युदाहृता ।

पादप्रक्षेपणे चैव दानं मन्त्रजपं शुचिः । पूजनं स्नपनं श्रेष्ठं नमस्कारार्घदापनम् ॥ ६१ ॥
यत्र तण्डुल धान्यानां वपनं सव्यपाणिना । बनयात्रां नमस्कारे मन्त्रसीमा प्रमाणकम् ॥ ६२ ॥

हृद्युच्चरन् बनस्यापि मन्त्रञ्चैवाधिपस्य च ।

नैव दत्वा शरीरस्य कष्टं शक्त्यनुसारतः । कष्टं दत्वा शरीरस्य ह्यात्मघातफलं लभेत् ॥ ६३ ॥
क्रुद्धो हरि र्ददौ शापं फलसामान्यमाप्नुयात् ॥ ६४ ॥

इति बनाधिपाधिवनव्याख्यापूर्वफलं ।

श्री भागवते—निंदते वेदशास्त्राणां द्विजन्मा यदि निन्दते । षष्ठि वर्ष सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ ६५ ॥
एतद्धि सर्ववर्णानामाश्रमाणाञ्च सम्मते । श्रेयसामुत्तमं मन्ये स्त्री शूद्राणां च मानदे ॥ ६६ ॥

अथाष्टचत्वारिंशद्वनोपवन—प्रति—बनाधिबनानामधिपदेवताः । तत्रादौ द्वादशबनानामधिपदेवता उच्यन्ते ॥

बृहन्नारदीये:—हलायुधो महाबनाधिपो देवः ॥ १ ॥ गोपीनाथः काम्यबनाधिपो देवः ॥ २ ॥ नटवरः कोकिलाबनाधिपो देवः ॥ ३ ॥ दामोदरस्तालवनाधिपो देवः ॥ केशवो कुमुदबनाधिपोदेवः ॥ ५ ॥ श्रीधरो भाण्डीरबनाधिपो देवः ॥ ६ ॥ हरिश्छत्रबनाधिपो देवः ॥ ७ ॥ नारायणः खदिरबनाधिपो देव ॥८॥ हृषीकेशो लोहजंघानबनाधिपो देवः ॥ ९ ॥ हयग्रीवो भद्रबनाधिपो देवः ॥ १० ॥ पद्मनाभो बहुलाबनाधिपो देवः ॥ ११ ॥ जधार्दनो विल्वबनाधिपो देवः ॥ १२ ॥ इति द्वादशबनानामधिपदेवताः ॥ ६७ ॥

॥ अथ द्वादशोपबनानामधिदेवता उच्यंते ॥

बृहन्नारदीये:—गोपीजनवल्लभो ब्रह्मोपबनाधिपो देवः ॥ १ ॥ बामनोऽप्सरोपबनाधिपो देवः ॥ २ ॥ विह्वलो विह्वलोपबनाधिपो देवः ॥ ३ ॥ गोपालः कदम्बोपबनाधिपो देवः ॥ ४ ॥ विहारी स्वर्णोपबनाधिपो देवः ॥ ५ ॥ गोविन्दः सुरभ्युपबनाधिपो देवः ॥ ६ ॥ ललितामोहनो प्रेमोपबनाधिपो देवः ॥ ७ ॥ किरीटी मयूरोपबनाधिपो देवः ॥ ८ ॥ बनमाली मानेंगितोपबनाधिपो देवः ॥ ९ ॥ अच्युतः प्रौढानाथशेषशाय्युपबनाधिपो देवः ॥ १० ॥ मदनगोपालो नारदोपबनाधिपो देवः ॥ ११ ॥ आदिबद्रीश्वरः परमानन्दोपबनाधिपो देवः ॥ १२ ॥ इति द्वादश माख्याता द्वादशोपबनाधिपाः ॥

इति द्वादशोपबनानामधिपदेवताः ॥

मंत्रपाठ, यथा संख्या से नमस्कार, अवश्य विधि है । बनयात्री शरीर को कष्ट न देकर यथा शक्ति प्रदक्षिणा करें । शरीर में दुःख देने पर आत्मघाती होता है और यात्रा भी सामान्य फल को देती है तथा भगवान् भी क्रोधित होकर श्राप देते हैं ॥ ५८—६६ ॥

अब अड़तालीस बनों के अधिदेवता कहते हैं। बृहन्नारदीयपुराण में—महाबन का हलायुध काम्यबन का गोपीनाथ, कोकिलाबन का नटबर, तालबन का दामोदर, कुमुदबन का केशव, भाण्डीरबनका श्रीधर, छत्रबन का श्रीहरि, खदिरबन का नारायण, लोहबन का हृषिकेश, भद्रबन का हयग्रीव, बहुलाबन का पद्मनाभ, बेलबन का जनार्दन अधिदेवता है । यह बारहबन के संबंध में कथन है ॥ ६७ ॥

अथ द्वादश प्रतिवनानां द्वादशाधिपदेवताः ।

बृहन्नारदीये:—नंदकिशोरो रंकप्रतिबनाधिपो देवः ॥ १ ॥ कृष्णो वार्त्ताप्रतिबनाधिपो देवः ॥ २ ॥ मुरलीधरो करह प्रतिबनाधिपो देवः ॥३॥ परमेश्वरो कामप्रतिबनाधिपो देवः ॥४॥ पुण्डरीकाक्षोऽञ्जनप्रतिबनाधिपो देवः ॥ ५ ॥ कमलाकरो कर्णप्रतिवनाधिपो देवः ॥ ६ ॥ बालकृष्णो क्षिपनकप्रतिबनाधिपो देवः ॥७॥ नन्दनन्दनो नन्दप्रतिबनाधिपो देवः ॥ ८ ॥ चक्रपाणिरिन्द्रप्रतिवनाधिपो देवः ॥ ९ ॥ त्रिविक्रमो शीक्षाप्रतिबनाधिपो देवः ॥ १० ॥ पीताम्बरो चन्द्रावलीप्रतिबनाधिपो देवः ॥ ११ ॥ विश्वक्सेनो लोह प्रतिबनाधिपो देवः ॥ १२ ॥ इति द्वादश प्रतिबनानामधिपदेवताः ॥ ६९ ॥

अथ द्वादशाधिबनानां द्वादशाधिपा देवाः ॥

बौधायने—परब्रह्मो मथुराधिवनाधिपो देवः ॥१॥ राधावल्लभो राधाकुण्डाधिबनाधिपोदेवः ॥२॥ यशोदानन्दनो नन्दग्रामाधिबनाधिपो देवः ॥ ३ ॥ नवलकिशोरः गढ़ाधिवनाधिपो देव ॥ ४ ॥ ब्रजकिशोरो ललिताग्रामाधिबनाधिपो देवः ॥ ५ ॥ राधाकृष्णो वृषभानुपुराधिबनाधिपो देवः ॥ ६ ॥ गोकुलचन्द्रमा गोकुलाधिबनाधिपो देवः ॥ ७ ॥ कामधेनु बलदेवाधिबनाधिपो देवः ॥ ८ ॥ गोवर्द्धननाथो गोवर्द्धनाधिवनाधिपो देवः ॥ ९ ॥ व्रजेश्वरो यावटाधिबनाधिपो देवः ॥ १० ॥ वैकुण्ठो वृन्दावनाधिबनाधिपो देवः ॥ ११ ॥ राधारमणो संकेतवटाधिवनाधिपो देवः ॥ १२ ॥ ७० ॥

इति द्वादशनाख्याताः देवताधिवनाधिपाः । बनयात्रा प्रसंगे तु मन्त्रावासाऽर्चनीयकाः ॥
एषामष्टचतुर्णां प्रतिष्ठास्थापना संस्काराः व्रजप्रकाशे । इति द्वादशाधिबनानां द्वादशाधिपादेवताः ॥ ७१ ॥

अब बारह उपवन के अधिपति कहते हैं—ब्रह्मवन का गोपीजनवल्लभ, अप्सरावन का वामन, विह्वल वन का विह्वल, कदम्बवन का गोपाल, स्वर्णवन का बिहारी, सुरभीवन का गोविन्द, प्रेमवन का ललितामोहन, मयूरवन का किरीटि, मानेंगित वन का बनमाली, शेषशायीवन का अच्युत, नारदवन का मदनगोपाल, तथा परमानन्दवन का आदि बद्रीनाथ अधिदेवता हैं ॥ ६८ ॥

अब बारह प्रतिबन के अधिप कहते हैं—रंकप्रतिबन का नन्दकिशोर, वार्त्तावन का कृष्ण, करहावन का मुरलीधर, काम प्रतिबन का परमेश्वर, अंजन प्रतिवन का पुंडरीकाक्ष, कर्ण प्रतिबन का कमलाकर, क्षिपनप्रतिवन का बालकृष्ण, नन्दप्रतिबन का नंदनन्दन, वृन्दावन प्रतिबन का चक्रपाणि, शिक्षा प्रतिबन का त्रिविक्रम, चन्द्रावली-प्रतिबन का पीताम्बर तथा लोह प्रतिबन का विश्वक्सेन अधिदेवता है ॥ ६९ ॥

अब बारह अधिबन के देवता कहते हैं—बौधायन में-मथुरा का परब्रह्म, राधाकुंड अधिबन का राधावल्लभ, नन्दग्राम अधिबन का यशोदानन्दन, गढ़ अधिबन का नवलकिशोर, ललिता अधिबन का व्रजकिशोर वृषभानुपुर अधिवन का राधाकृष्ण, गोकुल अधिवन का गोकुल चन्द्रमा, बलदेव अधिबन का कामधेनु, गोवर्द्धन अधिवन का गोवर्द्धननाथ, वृन्दाबन-अधिबन का युगल और संकेत अधिबन का राधारमण, अधिदेव है ॥ ७० ॥

इन्ही अड़तालीस स्वरूप की प्रतिष्ठादि 'व्रजप्रकाश' नामक ग्रंथ में हमने लिखी है ॥ ७१ ॥

अथैषामष्टचतुर्णामधिपदेवतानां मन्त्रानि ॥

आदिपुराणे—आवास बनयात्रासु तपसाराधनाच्चने । शापेन वर्द्धिता मन्त्रास्तादृक् फलप्रयच्छका: ॥ ७२ ॥
कलाभंगे च संस्कारे प्रतिष्ठास्थापनेषु च । शापेन संयुता: मन्त्रा: शापमोचन निर्म्मिता: ॥ ७३ ॥
तुलसीमालया युक्तो पाणिना जयमाचरेत् ।
सीमा मर्यादमावध्य बनयात्राकृते सति । अभावाचमने तत्र प्राणायामं समाचरेत् ॥ ७४ ॥
तूष्णीं ज्ञानं समादाय त्यजेत् संभाषणं बहु । संस्कारे च प्रतिष्ठासु स्वरूपाणां सृजः पृथक् ॥ ७५ ॥
यत्र स्थाने कृता यात्रा तत्रैव शिवमर्च्चयेत् ।
तदैव बनयात्रेयं सागं एव समर्थिता: । बिना शिवविलोकेन बनयात्रा च निष्फला ॥ ७६ ॥
तत्रादौ द्वादशबनानां देवतादीनां मन्त्रा: ॥

त्रैलोक्य सन्मोहनतन्त्रे:—ॐ क्लीं महाबनाधिपतये हलायुधाय नम: इति षोडशाक्षरो महाबनाधिपहलायुधमन्त्र: अनेन मन्त्रेण प्राणायामं त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य गृत्समद ऋषि: हलायुध देवता पंक्तिश्छन्द: ममापूर्व दर्शन फलप्राप्तये जपे विनियोग: । शिरसि गृत्समदाय ऋषये नम: । मुखे हलायुधाय देवतायै नम: । हृदये पंक्तिश्छन्दसे नम: । इति न्यास: ॥ बनयात्रा प्रसंगे करादिषडंगन्यासो नास्ति । आवास तपसाराधने करादिषडंगन्यासो विद्यते ॥

अथध्यानं:—ध्यायेद्धलायुधं देवं महावने शुभप्रदम् । नमस्तेऽस्तु प्रलम्बघ्न बनयात्रा समर्थित: ।
इति ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा तत्र स्थाने समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्य गोप्तस्त्वं गृहानास्मत् कृतं जपम् ॥

इति महाबनाधिप हलायुध मन्त्र: ॥ ७७ ॥

---

४८ बनों के देवताओं के मन्त्र कहते हैं। आदिपुराण में यथा—आवास, बनयात्रा, तपस्या, आराधन, अर्च्चनादिक में मन्त्रवर्जन होने पर शाप का फल और कलाभंग, संस्कार, प्रतिष्ठा, स्थापनादिकार्य्य में मंत्रयुक्त शापमोचन होता है। हाथ में तुलसी माला लेकर जप करें। बनयात्रा में सीमालंघन हो तो प्राणायाम तथा आचमन करें। जपादिक में मौनी रहें। जहाँ से यात्रा प्रारम्भ करे वहाँ शिवजी की पूजा करे, नहीं तो यात्रा निष्फल होती है ॥ ७२—७६ ॥

त्रैलोक्य सन्मोहन तन्त्र मे मन्त्र इस प्रकार है—

" ॐ क्लीं महाबनाधिपतये हलायुधाय नम: "। यह महाबनाधिपका मन्त्र है। इस मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का गृत्समद ऋषि हलायुध देवता पंक्ति छन्द, अपूर्व दर्शन फल के लिये जप विनियोग है। बनयात्रा प्रसंग में करादि षडगंन्यास नहीं है, किन्तु वास, तपस्या, आराधनादिक में हैं—

ध्यान:—तदनन्तर महाबन का कल्याणकारी बलदेव का ध्यान करें। " हे प्रलम्बनाशक आपको नमस्कार " यह मन्त्र हैं। इस मन्त्र से यथाशक्ति जप पूर्वक " गुह्य गुह्य गोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृत जपं। " इस मन्त्र द्वारा समर्पण करें ॥ ७७ ॥

अथ काम्यबनाधिप गोपीनाथ मन्त्रः—

ओं श्रीं काम्यबनाधिपतये गोपीनाथाय नमः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्यात्। अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषि काम्यबनाधिपगोपीनाथो देवता: गायत्रीच्छन्दः मम काम्यफल प्राप्तये जपे विनियोगः। शिरपि नारदाय ऋपये नमः। मुखे काम्यबनाधिपतये गोपीनाथाय नमः। हृदये गायत्री च्छन्दसे नमः। अथ ध्यानं:—ध्यायेत् काम्यबनाधीशं गोपीनाथं महाप्रभुम्। क्रोश सप्त प्रमाणेन सांगयात्रा समर्थिता॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा तत्र स्थाने निवेदयेत्। गुह्यातिगुह्य गोप्तस्त्वं गृहानास्मत्कृतं जपं॥

इति काम्यबनाधिप गोपीनाथमन्त्र ॥ ७८ ॥

अथ कोकिलाबनाधिप नटवरमन्त्रः—ब्रह्मयामलेः—

ओं क्लीं कोकिलाबनाधिपतये नटवराय स्वधा। इति सप्तदशाक्षरो कोकिलबनाधिपनटवर मन्त्रः॥

अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः कोकिलाबनाधिपो नटवरो देवता। अनुष्टुप् च्छन्दः मम कृष्णविहारदर्शनार्थे जपे विनियोगः। शिरसि ब्रह्मणे ऋपये नम। मुखे अनुष्टुप च्छन्दसे नमः। हृदये कोकिलाबनाधिपतये नटवराय देवतायै नमः॥

अथ ध्यानः—कोकिलाधिपतिं देवं नटरूपं कलान्वितम्। ध्यायेच्छुभकरं श्रीशं सांगयात्रा समर्थितः॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा तत्र स्थाने निवेदयेत्। गुह्यातिगुह्य गोप्तस्त्वं गृहानास्मत्कृतं जपं।

इति कोकिलाधिपनटवरमन्त्रः॥ ७९ ॥

अथ तालबनाधिपदामोदरमन्त्रः।

शक्रयामलेः—श्रीं ह्रीं तालबनाधिपतये दामोदरराय फट्। इति षोडशाक्षरस्तालबनाधिपदामोदर-मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य गौतम ऋषि। तालबनाधिप दामोदर देवता। अनुष्टुप च्छन्दः। ममानिक तापश्रमनिरासनार्थे जपे विनियोगः। शिरसि गौतमाय ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप च्छन्दसे नमः। हृदये तालबनाधिपाय दामोदराय देवतायै नमः।

"ॐ क्लीं काम्यबनाधिपतये गोपीनाथाय नमः" यह काम्यबनाधिपका मन्त्र है। इस मन्त्र से तीन बार आचमन करें। इस मन्त्र का नारदजी ऋषि, काम्यबनाधिप गोपीनाथ देवता, गायत्री छन्द, मेरा काम्यबन फल प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है। शिर में "नारदऋपये: नमः॥ मुख में "काम्य-बनाधिपतये गोपीनाथाय नमः हृदय में "गायत्री छन्द से नमः" ध्यान—महाप्रभाव, कामबनाधिश्वर गोपीनाथ, का ध्यान करता हूँ। सप्तक्रोश प्रमाण से यात्रा समर्थ होती है। यथा शक्ति जप पूर्वक देवस्थान में निवेदन करें॥ ७८ ॥

ब्रह्मयामल में:—"ॐ क्लीं कोकिलाबनाधिपतये नटवराय स्वधा" यह १७ अक्षर नटवर का मन्त्र है। इस मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का ब्रह्मा ऋषि, कोकिलबनाधिप नटवर देवता, अनुष्टुप् छन्द, मेरा श्रीकृष्ण के बिहार दर्शनार्थ जप में विनियोग है। शिर में "ब्रह्मणे कृष्णाय नमः" मुख में अनुष्टुप् छन्दसे नमः" हृदय में "कोकिलबनाधिपतये नटवराय देवतायै नमः"।

ध्यान—नटरूप कलायुक्त शुभकर, श्रीपति कोकिलाधिपति को ध्यान पूर्वक यथाशक्ति जप समर्पण करें॥ ७९ ॥

अथ ध्यानं:—ध्यायेद्दामोदरं देवं दाम्ना बद्धकलेवरम् । प्रदक्षिणा कृता यात्रा सांगा एव समर्थिता ॥ इति ॥
ध्यात्वा यथा शक्ति जपं कृत्वा अर्पयेत् तालवनस्थले । इति तालवनाधिप दामोदरमन्त्रः ॥ ८० ॥

अथ कुमुदवनाधिप केशव मन्त्रः—

ब्रह्मयामले:—ओं क्लैं कुमुदवनाधिपतये केशवाय फट् । इति सप्तदशाक्षरः कुमुदवनाधिप-केशवमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्य कान्व ऋषिः कुमुदवनाधिपः केशवो देवता पंक्तिश्छन्दः । ममानेकमनोरथसिद्धिद्वारा कुमुदवनाधिपकेशवमन्त्रजपे विनियोगः । शिरसि कान्वाय ऋषये नमः । मुखे कुमुदवनाधिपाय देवतायै नमः । हृदये पंक्ति च्छन्दसे नमः ।

अथ ध्यानं:—केशवं कुमुदाधीशं ध्यायेत्केशिविमर्द्दनं । प्रदक्षिणा कृता यात्रा सांगं कुरु चतुर्भुज ! ॥
इति ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा कुमुदाख्ये समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्य गोप्तत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥ इति कुमुदवनाधिपकेशवमन्त्रः ॥ ८१ ॥

अथ भाण्डीरवनाधिप श्रीधरमन्त्रः—

धौम्यसंहितायां—ओं व्रां भाण्डीरवनाधिपतये श्रीधराय नमः । इति सप्तदशाक्षरो भाण्डीरवनाधिप-श्रीधरमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्य वृषाकपिः ऋषिः । भाण्डीरवनाधिप श्रीधरो देवता । कात्यायनी च्छन्दः । मम गृहसौख्य प्रपूरणार्थे भाण्डीरवनाधिप श्रीधरमन्त्रजपे विनियोगः । शिरसि वृषाकपये ऋषये नमः । मुखे भाण्डीरवनाधिपतये श्रीधराय देवतायै नमः । हृदये कात्यायनी-च्छन्दसे नमः ।

अथ ध्यानं—ध्यायेल्लक्ष्मीपतिं देवं भाण्डीरवनरक्षकं । प्रदक्षिणा मया कार्य्या सांग एव समर्थिता ॥ इति ॥

अथ शक्रयामल में तालवनाधिश्वरदामोदरमन्त्र कहते हैं ।

"ॐ ह्रीं तालवनाधिपतये दामोदराय फट्"। इस षोडशाक्षर दामोदर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का गौतम ऋषि, तालवनाधिपदामोदर देवता, अनुष्टुप् छन्द, मेरा अनेक तापश्रम निवारण के लिये जप में विनियोग, मस्तक में "गौतमाय ऋषये नमः", मुख में "अनुष्टुप् छन्दसे नमः" हृदय में "तालवनाधिपाय दामोदराय देवतायै नमः ॥ ध्यानः—रस्सी से बन्धन प्राप्त शरीर, दामोदरदेव का ध्यान पूर्वक यथा सांग यात्रा समर्पण तथा यथा शक्ति मन्त्र जप करें ॥ ८० ॥

अथ कुमुदवनाधिश्वर केशवदेव के मन्त्र कहते हैं ।

ब्रह्मयामल में:—"ॐ क्लैं कुमुदवनाधिपतये केशवाय फट्" इस सप्तादशाक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का काण्व ऋषि, कुमुदवनेश्वर केशव देवता, पंक्ती छन्द, मेरा अनेक मनोरथ सिद्धि द्वारा जप में विनियोग है। मस्तक में "काण्व ऋषये नमः" "मुख में कुमुदवनाधिपतये देवतायै नमः" हृदय में "पंक्ती छन्दसे नमः है। केशीविमर्द्दि, चतुर्भुज, कुमुदवनाधिप, श्री केशवजी को ध्यान-पूर्वक यथा सांग यात्रा समर्पण तथा जप करें ॥ ८१ ॥

अथ भाण्डीरवनेश्वर श्रीधरजी के मन्त्र कहते हैं ।

धौम्यसंहिता में—ॐ व्रां श्रीधराय नमः । इस सप्तदशाक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें ।

ध्यात्वा यथा शक्ति जपं कृत्वा श्रीधराय समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्यगोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥
इति भाण्डीरवनाधिप श्रीधरमन्त्रः ॥ ८२ ॥

अथ छत्रवनाधिपहरि मन्त्रः ।

ओं ग्रीं छत्रवनाधिपतये हरये स्वधा । इति चतुर्दशाक्षरश्छत्रवनाधिप हरिमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य आनन्द ऋषिश्छत्रवनाधिपो हरि देवता । अक्षरा पंक्ति श्छन्दो मम सचक्रमुकुटरक्षणार्थे जपे विनियोगः । शिरस्यानन्दाय ऋषये नमः । मुखे छत्रवनाधिपतये हरये देवतायै नमः । हृदयेऽक्षरापंक्तये च्छन्दसे नमः । अथ ध्यानं—

ध्यायेच्छत्रवनाधीशं त्रैलोक्याधिपतिं हरिम् । वनयात्रा कृता सिद्धा सांगं एव समर्पितः ॥

इतिध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा हरौ छत्रवनेऽर्पयेत् । गुह्यातिगुह्य गोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥
इति छत्रवनाधिप हरिमन्त्रः ॥ ८३ ॥

अथ खदिरवनाधिपनारायणमन्त्रः ।

ओं ह्रां खदिरवनाधिपतये नारायणाय स्वाहा । इति षोडशाक्षर खदिरवनाधिपनारायण मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य मेधातिथिः ऋषि खदिरवनाधिपो नारायणो देवता जगतीच्छन्दः मम सकल भोग सम्पत्प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः । शिरसि मेधातिथये ऋषये नमः । मुखे खदिरवनाधिपाय नारायणाय देवतायै नमः । हृदये जगत्यै च्छन्दसे नमः । अथ ध्यानं—

ध्यायेन्नारायणं देवं खद्रीशं श्रीरमाधिपं । धनधान्यसुखं भोगं प्रयच्छ मम सर्वदा ॥ इतिध्यात्वा
यथा शक्तिजपं कृत्वा खदिराख्ये समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्यगोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥
इति खदिरवनाधिप नारायणमन्त्रः ॥ ८४ ॥

इस मन्त्र का वृषाकपि ऋषि, भाण्डीरवनेश्वर श्रीधर देवता, कात्यायनी छन्द, मेरा गृहसुख प्रपूरण के लिये भाण्डीरवनाधिप श्रीधर मन्त्र जप में विनियोग है। मस्तक में " वृषाकपि ऋषये नमः " मुख में—"भाण्डीरवनाधिपतये श्रीधर देवतायै नमः।" हृदय में कात्यायनी छन्दसे नमः है। भाण्डीरवन रक्षक, लक्ष्मीपति का ध्यान पूर्वक यथा सांग प्रदक्षिणा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें ॥ ८२ ॥

अब छत्रवनाधिप श्रीहरि के मन्त्र कहते हैं।

" ॐ ग्रीं छत्रवनाधिपतये हरये स्वधा " इस मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का " आनन्द ऋषि, पंक्ति छन्द, मेरा सचक्र मुकुट रक्षण के लिये जप में विनियोग है मस्तक में " आनन्दाय ऋषये नमः " मुख में "छत्रवनाधिपतये हरये देवतायै नमः " हृदय में " अक्षर पंक्ति छन्दसे नमः है। त्रैलोक्याधिश्वर, छत्रवनाधिप का ध्यान पूर्वक यथा सांग यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें ॥ ८३ ॥

अब खदीरवनेश्वर का मन्त्र कहते हैं।

" ॐ ह्रां खदीरवनाधिपतये नारायणाय स्वाहा " इस षोडशाक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का " मेधातिथि ऋषि, खदीरवनाधिप नारायण देवता, जगती छन्द, मेरा समस्त भोग सम्पत्ति प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है। मस्तक में " मेधातिथये नमः " मुख में " खदीरवनाधिपाय

अथ लोहजंघानवनाधिप हृषीकेशमन्त्रः ।

परमेश्वर संहितायां—ओं क्लीं लोहजंघानवनाधिपतये हृषीकेशाय स्वधा । इत्येकोनविंशत्यक्षरो लोहजंघानाधिप हृषीकेशमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः लोहजंघानाधिपो हृषीकेशो देवता गायत्री छन्दः मम सकलारिष्टनिवारणार्थे शरीरारोग्य प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः, सिरसि सिन्धुद्वीपाय ऋषये नमः । मुखे लोहजंघानवनाधिपतये हृषीकेशाय नमः । हृदये गायत्री-च्छन्दसे नमः । अथ ध्यानं—

ध्यायेल्लोहवनाधीशं हृषीकेशमजं प्रभुं । सर्वदारोग्यतां देहि वनयात्रा प्रदक्षिने ॥ इति ॥
ध्यात्वा यथाशक्तिजपं कृत्वा हृषीकेशमर्पयेत् । गुह्यातिगुह्यगोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥

इति लोहजंघान हृषीकेशमन्त्रः ॥ ८५ ॥

अथ भद्रवनाधिपहयग्रीवमन्त्रः ।

वाष्कलसंहितायां—ओं हूं भद्रवनाधिपतये हयग्रीवाय नमः । इति षोडशाक्षरो भद्रवनाधिपहय-ग्रीवमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषिः भद्रवनाधिपो हयग्रीवो देवता कान्तिश्छन्दः मम सकलकल्याणार्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् ।

अथ ध्यानं—ध्यायेत् भद्रवनाधीशं हयग्रीवं महाप्रभुं । प्रदक्षिणा कृता यात्रा सांग एव समर्थिता ॥
इति ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा भद्रस्थाने समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्यगोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥

इति भद्रवनाधिपहयग्रीवमन्त्रः ॥ ८६ ॥

देवतायै नमः " हृदय में " जगत्यै छन्दसे नमः " है । श्री लक्ष्मीपति, धनधान्य सुखादिक प्रदानकारी, खदीरवनाधिप श्री नारायण का ध्यान पूर्वक सांग विधि से यात्रा अर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें ॥ ८४ ॥

अब लोहजंघानवनाधिप हृषीकेश मन्त्र कहते हैं ।

परमेश्वर संहिता में:—"ॐ क्लीं लोहजंघान वनाधिपतये हृषीकेशाय स्वधा" । इस १९ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का सिन्धु द्वीप ऋषि, लोहजंघाधिप हृषीकेश देवता, गायत्री छन्द, मेरा सकल अरिष्ट निवारणार्थ शरीरारोग्यार्थ जप में विनियोग है । मस्तक में, " सिंधुद्विपाय नमः " मुख में " लोहजंघाधिपाय देवतायैनमः " हृदय में " गायत्र्यै छन्दसे नमः " है । हृषीकेश, अज, आरोग्या-दिक प्रदानकारी, प्रभु, लोहवनाधिश्वर का ध्यान पूर्वक यथा सांग यात्रा समर्पण करें तथा यथा शक्ति मन्त्र जप करें ॥ ८५ ॥

अब भद्रवनेश्वर हयग्रीवजी के मन्त्र कहते हैं ।

वाष्कल संहिता में—" ॐ हूं भद्रवनाधिपतये हयग्रीवाय नमः " इन १६ अक्षर मन्त्र से तीन प्राणायाम करें । इस मंत्र का वशिष्ठ ऋषि, भद्रवनाधिपहयग्रीव देवता, कान्ति च्छन्द, मेरा सकल कल्याण के लिये जप में विनियोग है । पूर्व की तरह न्यास करके महासमर्थ, भद्रवनाधीश हयग्रीव भगवान का ध्यान करें । तथा प्रदक्षिणा समर्पण पूर्वक यथाशक्ति जप करें ॥ ८६ ॥

अब बहुलावनाधिप पद्मनाभजी के मंत्र कहते हैं ।

अगस्त संहिता में—" ॐ ह्रीं बहुलावनाधिपतये पद्मनाभाय स्वाहा " । इस सप्तदशाक्षर मंत्र

अथ बहुलावनाधिप पद्मनाभ मन्त्रः ।

अगस्त्यसंहितायां—ओं ह्रीं बहुलावनाधिपतये पद्मनाभाय स्वाहा इति सप्तदशाक्षरो बहुलावनाधिप-पद्मनाभमन्त्रः । अनेन मंत्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्यात्रिः ऋषिर्वहुलावनाधिपः पद्मनाभो देवता भूश्छन्दः मम सर्वकामसंपूरणार्थे पुत्रफल प्राप्ति सिद्धि द्वारा जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् ।

अथ ध्यानं—पद्मनाभं वरं ध्यायेद्बहुलावननायकं । प्रदक्षिणकृता यात्रा सांग एव समर्थिता: ॥ इति ॥

ध्यात्वा यथाशक्तिजपं कृत्वा बहुलाख्ये समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्यगोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥

इति बहुलावनाधिप पद्मनाभमन्त्रः ॥ ८७ ॥

अथ द्वादश बिल्वबनाधिपजनार्द्दन मन्त्रः ।

बृहत्पराशरे:—ओं क्लीं बिल्वबनाधिपतये जनार्द्दनाय नमः इति षोडशाक्षरो बिल्वबनाधिपजनार्द्दनमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य रुद्र ऋषि बिल्वबनाधिपो जनार्द्दनो देवता गायत्रीच्छन्दः मम परमपद प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः । शिरसि रुद्राय ऋषये नमः । मुखे बिल्वबनाधिपतये जनार्द्दनाय नमः । हृदये गायत्री छन्दसे नमः ।

ध्यानं—ध्यायेत् बिल्वबनाधीशं वरदञ्च जनार्द्दनम् । प्रदक्षिणा कृता यात्रा सांग एव समर्थिताः ॥ इति ॥

ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा जनार्द्दने समर्पयेत् । गुह्यातिगुह्यगोप्तस्त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपं ॥

इति द्वादशबिल्वबनाधिप जनार्द्दनमन्त्रः ॥ ८८ ॥

अथ द्वादशबनानां यमुनोत्तरदक्षिणयो द्वौ विभागौ ।

आदिवाराहे—उत्तरे यमुनायास्तु पंच संख्याः बनस्थिताः । महावनं च भाण्डीरंलोहजंघान बिल्वकम् ॥
भद्रमेते समाख्याताः यमुनोत्तरकूलगाः । यमुनादक्षिणे कुले सप्त संख्या स्थिता बनाः ॥
तालाख्यं बहुलाख्यञ्च कुमुदं छत्रखदिरं । कोकिलाख्यं बनं काम्यं सप्त दक्षिण कुलगाः ॥

द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का अत्रि ऋषि, बहुलाबनाधिप पद्मनाभ देवता, भू छंद, मेरा समस्त काम तथा पुत्र फल प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है । पहिले की तरह न्यास जानना । बहुलाबनाधिप पद्मनाभ जी का ध्यान पूर्वक यथा विधि यात्रा समर्पण कर यथाशक्ति जप करें ॥ ८७ ॥

अब द्वादश बिल्वबनाधिप जनार्द्दन मन्त्र कहते हैं ।

बृहत्पाराशर में:—" ॐ क्लीं बिल्वबनाधिपतये जनार्द्दनाय नमः " इति षोडशाक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का रुद्रऋषि, बिल्वबनाधिप जनार्द्दनजी देवता, गायत्री छन्द, मेरा परमपद प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्ववत् । बिल्वबनाधिप जनार्द्दन जी का ध्यान पूर्वक यथाविधि यात्रा समर्पण, तथा यथाशक्ति मन्त्र का जप करें ॥ ८८ ॥

द्वादश बन का दो विभाग है । आदिवाराह में यथा—यमुना के उत्तर भाग में महावन, भाण्डीर, लोहजंघान, बिल्व, भद्र नामक पञ्च बन और दक्षिण भाग में तालबन, बहुलाबन, कुमुदबन, छत्रबन, खदिरबन, कोकिलाबन, काम्यबन नामक सप्त बन है । श्रम शान्ति के लिये सब की परिक्रमा करें । दक्षिणोत्तर में विश्राम स्थान है । मधुबन, मृद्वन, आवासस्थान तथा उत्तर में है । दक्षिण में भी मृद्वन, मधुबन है । दक्षिणतट में स्थित मधुबन का अधिप माधव है । उत्तर तट में स्थित मृद्वन का अधिप वासुदेव है ॥ ८९ ॥

एषां प्रदक्षिणा कार्य्या श्रमस्तस्योपशान्तये । विश्रामस्थानमाख्यातं द्वितीयं दक्षिणोत्तरं ।
बनं मधुबनं नाम द्वितीयं मृद्रनं तथा । आवासस्थानकं श्रेष्ठमुत्तरे मृद्रनं शुभं ॥
दक्षिणे निर्म्मितं श्रेष्ठमावासाख्यं मधोर्वनं । एतयो र्वनयोश्चैव वनाच्छतगुणं फलं ।
वनानां च द्वयं श्रेष्ठं मृद्रनं च मधोर्वनं ॥ ८६ ॥

दक्षिण तटस्थ मधुवनस्याधिपो माधवो देवः । उत्तरतटस्थमृद्रनस्याधिपो वासुदेवो देवः ॥

एतयो र्वासुदेव माधवयोर्मन्त्रः । अथ मधुवनाधिपमाधव मन्त्रः—

माधवीये—ओं ह्रां ह्रीं मधुबनाधिपतये माधवाय नमः स्वाहा । इत्यष्टादशाक्षरो मधुबनाधिपमाधव मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य दधीचि ऋषि र्मधुबनाधिपो माधवो देवता । अनुष्टुप्छन्दः । ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । सिरसि दधीचिऋषये नमः । मुखे मधुबनाधिपाय माधवाय देवतायै नमः । हृदयेऽनुष्टुपच्छन्दसे नमः । अथ ध्यानं ।

ध्यायेन्मधुबनाधीशं माधवं मधुसूदनं । बनत्रय कृतां यात्रां विश्रामं देहि मे प्रभो ॥
इति ध्यात्वा यथाशक्तिजपं कृत्वा माधवाय समर्पयेत् । गुह्याति गुह्यगोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं ॥
इति मधुबनाधिपमाधव मन्त्रः ॥ ९० ॥

अथ द्वितीयविश्रामस्थान यमुनोत्तर तटस्थ मृद्रनाधिपवासुदेवमन्त्रः । कौण्डिन्य संहितायां—ओं क्लीं मृद्रनाधिपाय वासुदेवाय स्वधा । इति चतुर्दशाक्षर मृद्रनाधिप वासुदेवमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम-त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्यौर्व्व ऋषिर्मृद्रनाधिप वासुदेवो देवता मा च्छन्दः मम सकलपरिश्रम निवारणार्थे मृद्रनाधिपवासुदेवमन्त्रजपे विनियोगः । शिरसि और्व्वाय ऋषये नमः । मुखे मृद्रनाधिपाय वासुदेवाय देवतायै नमः । हृदये मा च्छन्दसे नमः । अथ ध्यानं—

मृद्रनाधिपतिं ध्यायेद्वासुदेवं व्रजेश्वरं । प्रदक्षिणा शुभा कार्य्या बनयात्रा समर्थिता ॥ इति ॥
ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा तत्र स्थाने समर्पयेत् ॥ गुह्या० ॥
इति द्वितीय विश्राम स्थानमृद्रनाधिपवासुदेव मन्त्रः ॥ ९१ ॥

अथ पञ्च सेव्यबनानि ।

आदिपुराणे:—आदौ जन्हुवनं नाम द्वितीयं मेनकावनं । कज्जली बननामानं तृतीयं सेव्यसंज्ञकं ॥

दोनों के मन्त्र यथा:—माधवीय में "ॐ ह्रीं ह्रीं मधुबनाधिपतये माधवाय नमः स्वाहा" इस १८ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का दधीचि ऋषि, मधुबनाधिप माधव देवता, अनुष्टुप् छन्द मेरा अभीष्ट सिद्धि के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्व की तरह । मधुसूदन, मधुबनाधिप, माधव का ध्यान पूर्वक बनयात्रा समर्पण करें । विश्राम दीजिये ऐसी प्रार्थना करें ॥ ९० ॥

अब द्वितीय विश्राम स्थान यमुना के उत्तर तट पर स्थित मृद्रनाधिप वासुदेव का मन्त्र कहते हैं। कौण्डिन्य संहिता में यथा:—" ॐ क्लीं मृद्रनाधिपाय वासुदेवाय स्वधा इस १४ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का और्व्व ऋषि, मृद्रनाधिप वासुदेव देवता मा छन्द, मेरा समस्त परिश्रम निवारण के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्व की तरह । व्रजेश्वर, मृद्रनाधिप, वासुदेवजी का ध्यान पूर्वक यथा-विधि यात्रा समर्पण करें तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें ॥ ९१ ॥

नन्दकूपवनं नाम चतुर्थं कृष्णदर्शकं । श्रेष्ठं कुशवनं नाम पञ्चमं शुभदायकं ॥
वनानां पञ्च द्वारानि वनाधिकफलानि च । सवनं व्रजलोकस्य सेव्यद्वाराणि पञ्चधा ॥
यथा भागवतं श्रेष्ठं शास्त्रे कृष्णकलेवरं । तथैव पृथिवीलोके सवनं व्रजमण्डलं ॥
अस्मिन् वासार्च्चनादानाध्यापनाद्यजनासनात् । स्नानमन्त्रप्रयोगाच्च नमस्कारात्प्रदक्षिणात् ॥
मृतात् पर्य्यटनात्तोषाद्दर्शनाच्च व्रजौकसाम् । चतुर्वर्गफलं लब्धा सर्वदा सुखमासते ॥ ६२ ॥

अथ सवनचतुरष्टकोशमर्य्याद व्रजमण्डलं भगवदंगस्वरूपः ।

विष्णु रहस्ये—पंच पंच वनस्थानाः भगवदवयवानि च । मथुरा हृदयं प्रोक्तं नाभौ मधुवनं शुभं ॥
स्तनौ कुमुदतालाख्यौ भालं वृन्दावनं तथा । बाहू द्वौ च समाख्यातौ बहुलाख्यमहावनौ ॥
भाण्डीर कोकिलाख्यातौ द्वौ पादौ परिकीर्त्तितौ । खदिरं भद्रिकं चैव स्कन्धौ द्वौ परिकीर्त्तितौ ॥
छत्राख्य लोहजंघानौ लोचनौ द्वौ प्रकीर्त्तितौ । बिल्वभद्रौ च श्रोत्रौ द्वौ चिबुकं वनकाम्यकं ।
अस्यां त्रिवेनिकं स्थानं सखीकूपवनं शुभं । प्रेमाञ्जनवनावोष्ठौ दन्तौ स्वर्णाख्यविह्वलौ ॥
सुरभीवनं जिह्वा च मयूराख्यं ललाटकं । मानेंगितवनं नासा नासायाः पुटमण्डलौ ॥
शेषशायीवनं श्रेष्ठं परमानन्दकद्वयं । भृकुट्यौ रंकवार्त्तौ नितम्बौ करहाकमौ ॥
लिंगं कर्णवनं चैव कृष्णक्षिपनकं गुदं । नन्दनं शिरसं प्रोक्तं पृष्ठमिन्द्रवनं तथा ॥
शीक्षावनं च चन्द्रायाः वनं लोहबनं शुभं । नन्दग्रामं च श्रीकुण्ड पञ्च कृष्णकरांगुलीः ॥
गढ़स्थानं ललितायाः ग्रामं भानुपुरं तथा । गोकुलं बलदेवं च वामकृष्णकरांगुलीः ॥
गोवर्द्धनं यावटं शुभं संकेतकं बनं । नारदस्यवनं चैव बनं मधुवनं तथा ॥
एते पञ्च समाख्याता बामपादागुंली शुभाः । मृद्वनं जन्हुकं चैव मेनकावनमेव च ॥
कज्जलीनन्दकूपञ्च पञ्च बामांघ्रिकागुंलीः । इति व्रजवनाख्यातं कृष्णांगपरिसंभवः ॥
कृष्णस्यावयवाः सन्ति वनान्युपवनानि च ॥

इति पञ्च पञ्चाशत् सवनादि व्रज-ग्रामाभगवदंगाः ॥ ६३ ॥

अब आदिपुराण में पञ्च सेव्यवन कहते हैं । जन्हुवन, मेनकावन, कज्जलीवन, नन्दकूपवन, कुशवन हैं । वनों के पाँच द्वार हैं जो वनों से अधिक फलदायी हैं । जिस प्रकार व्रजलोक के सेवन का विधान है उस प्रकार व्रजद्वारों का सेवन उचित है । जैसा श्री मद्भागवत श्रीकृष्ण के साक्षात्कलेवर हैं तैसा पृथ्वीलोक में व्रजमण्डल साक्षात् भगवत् स्वरूप है अतः सेव्य है । यहाँ वास पूजा, दान, अध्ययन याजन, स्थिति, स्नान, मन्त्र प्रयोग, नमस्कार, मरण, पर्य्यटन, प्रसन्न, दर्शन मात्र ही चतुर्वर्ग फल लाभ पूर्वक सर्वदा अखण्ड सुख का प्राप्त होता है ॥ ६२ ॥

४८ कोश प्रमाण व्रजमण्डल साक्षात् भगवत् का अंशरूप है । विष्णुरहस्य में कहा है:—५५ बन भगवदंग है । मथुरा हृदय, मधुबन नाभि, कुमुद तालबन दोस्तन, वृन्दावन भाल, बहुलावन, महावन दोनों बाहु, भाण्डीर, कोकिल दोनों हस्त, खदीर, भद्रकवन दोनों स्कन्ध, छत्रवन, लोहजंघान बन दोनों नेत्र, बिल्वबन, भद्रवन दोनों कर्ण, कामवन चिबुक, त्रिवेणी, सखीकूप, होंठ है । विह्वलादिक दाँत है । सुरभीवन जिह्वा, मयूरबन ललाट, मानेंगितवन नासिका, शेषशायी परमानन्दवन दोनों नासापुट, करेला कामाई, नितम्बदेश, कर्णवन लिंग, कृष्णाक्षिपनक गुदा, नन्दनवन शिर, इन्द्रबन पृष्ठ, शीक्षावन बाणी, दायवन;

अथ पञ्चसेव्य वनाधिपा: देवता: ॥

हस्तामलके:—पुरुषोत्तमो जन्हुवनाधिपो देव:। अनन्तदेवो मेनका वनाधिपो देव:। लक्ष्मीनारायण: कजलीवनाधिपो देवता। विंकटेशो नन्दकूपवनाधिपो देव:। अधोक्षज: कुशवनाधिपो देव:॥ एषां पञ्च सेव्यवनानां पञ्चाधिदेवतानां मन्त्राणि। अगस्त्य संहितायां ॥ ६४ ॥

तत्रादौ जन्हुवनाधिप पुरुषोत्तम मन्त्र:—

ओं ग्लां जन्हुवनाधिपतये पुरुषोत्तमाय नम:। अस्य मन्त्रस्य लोहित ऋषि: जन्हुवनाधिप: पुरुषोत्तमो देवता। बृहती च्छन्द:। मम सकलैश्वर्य्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:। शिरसि लोहिताय ऋषये नम:। मुखे जन्हुवनाधिपतये पुरुषोत्तमाय देवतायै नम:। हृदये बृहती च्छन्दसे नम:। इति सप्तदशाक्षरो जन्हुवनाधिप पुरुषोत्तम मन्त्र:। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अथ ध्यानं—

ध्यायेज्जन्हुवनाधीशं श्रीकृष्णं पुरुषोत्तमं। प्रदक्षिणा मया कार्य्या वनयात्रा समर्थित: ॥ इति ॥

ध्यात्वा यथाशक्तिजपं कृत्वा तत्र स्थाने समर्पयेत्॥ गुह्या० ॥ इति जन्हुवनाधिप पुरुषोत्तम मन्त्र ॥ ६५ ॥

अथ मेनकावनाधिपानन्तदेव मन्त्र:।

शौनकीये—ओं क्लीं मेनकावनाधिपतयेऽनन्तदेवाय नम:। इति सप्तदशाक्षर मेनकावनाधिपानन्तदेव मन्त्र:। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य वात्स्य ऋषिर्मेनकावनाधिपोऽनन्तदेवो देवता। गायत्रीच्छन्द:। ममानन्त फल प्राप्त्यर्थे जपे विनियोग:। शिरसि वात्स्याय ऋषये नम:। मुखे मेनकावनाधिपतयेऽनन्तदेवाय देवतायै नम:। हृदये गायत्री च्छन्दसे नम:। अथ ध्यानं—

मेनकाख्यवनाध्यक्षमनन्ताख्यं रमापतिं। ध्यात्वा प्रदक्षिणीकुर्व्वन्वनयात्रा समर्थित:॥ इति ॥

ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा तत्र स्थाने समर्पयेत्॥ गुह्या०॥ इति मेनकावनाधिपानन्तदेव मन्त्र: ॥ ६६ ॥

लोहवन, नन्दग्राम, श्रीकुण्ड पंच करांगुलि, गोवर्द्धन, जाववट, संकेतबन, नारदवन, मधुवन पंच वाम पादांगुली हैं। मृद्वन, जन्हुवन, मेनकावन, कजलीवन, नन्दकूपवन दक्षिणांगुलि हैं:—यह बन समूह श्रीकृष्ण के अंग से उत्पन्न साक्षात् कृष्ण के अवयव रूप जानना ॥ ६३ ॥

अब पञ्च सेव्यवन कहते हैं। हस्तामलक में:—

पुरुषोत्तमजी जन्हुवन का, अनन्तदेव मेनकावन का, लक्ष्मीनारायणजी कजलीवन का, विंकटेश नन्दकूपवन का, अधोक्षज कुशवन का अधिश्वर हैं ॥ ६४ ॥

अब मन्त्र कहते हैं अगस्त संहिता में:—पहिले जन्हुबन का यथा:—"ओंग्लो जन्हुवनाधिपतये पुरुषोत्तमाय नम:" इस मन्त्र द्वारा तीन वार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का लोहित ऋषि, जन्हुबनाधिप पुरुषोत्तमजी देवता, बृहती छन्द, मेरा सकलैश्वर्य्य सिद्धि के लिये जप में विनियोग है न्यास पूर्व की तरह। जन्हुबनाधिप पुरुषोत्तम का ध्यान पूर्वक यथाविधि प्रदक्षिणा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें ॥ ६५ ॥

अब मेनकाबन का कहते हैं, शौनकीय में—"ॐ क्लीं मेनकावनाधिपतये अनन्तदेवाय नम:"

इस १७ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन वार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का वात्स ऋषि, मेनकाबनाधिप अनन्तदेव देवता, गायत्री छन्द, मेरा अनन्त फल प्राप्ति के लिये जप में विनियाग है। न्यास पूर्ववत्। मेनकाधिप रमापति अनन्तजी का ध्यान पूर्वक यथा सांग यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें ॥६६॥

अथ कजलीबनाधिप लक्ष्मीनारायण मन्त्रः।

ब्रह्मयामलेः—ओं क्ष्रीं कजलीबनाधिपलक्ष्मीनारायणाय स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो कजलीबनाधिपलक्ष्मीनारायण युगलमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य शाण्डिल्य ऋषिः कजलीबनाधिपो लक्ष्मीनारायणो देवता जगती च्छन्दः मम सकलवाहनादिसौख्यलाभार्थे जपे विनियोगः। शिरसि शाण्डिल्य ऋषये नमः इत्यादि पूर्व्वबन्न्यासं कुर्य्यात्॥ अथ ध्यानं—

कज्जलाख्यबनाध्यक्षं लक्ष्मीनारायणं हरिं। वन्दे यात्रा प्रसंगात्तु सांग एव समर्थितः॥ इति॥

ध्यात्वा यथाशक्तिजप०॥ गुह्या०॥ इति कजलीबनाधिप लक्ष्मीनारायण मन्त्रः॥६७॥

अथ नंदकूपबनाधिपविंकटेश मन्त्रः। प्रल्हादसंहितायां—

ओं ऐं श्री नन्दकूपबनाधिपतये विंकटेशाय नमः। इत्येकोनविंशत्यक्षरो नन्दकूपबनाधिपविंकटेश-मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य कौशिक ऋषिः नन्दकूपबनाधिप विंकटेशो देवता बृहतीच्छन्दः मम कृष्णदर्शनार्थे जपे विनियोगः पूर्वबन्न्यासः। अथ ध्यानं—

नन्दकूपबनाधीशं विंकटेशं मनोहरं। ध्यायेद्गोपाल शोभाढ्यं सखिभिः परिसेवितं।

इति ध्यात्वा यथा शक्तिजप०॥ गुह्या०॥ इति नन्दकूपबनाधिप विंकटेश मन्त्रः॥६८॥

अथ कुशबनाधिपाधोक्षज मन्त्रः—

धौम्य संहितायां—ओं धी धीः कुशबनाधिपतयेऽधोक्षजाय नमः। इति षोडशाक्षरो कुशबनाधिपाऽधोक्षज मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य धौम्य ऋषिः कुशबनाधिपाऽधोक्षजो देवता। कात्यायनी च्छन्दः। मम कुलोद्धर पितृ तृप्त्यर्थे जपे विनियोगः। पूर्वबन्न्यासः। अथ ध्यानं—

ध्यायेत्कुशबनाधीशं श्रीवत्साख्यमधोक्षजं। पितृणामक्षयं मार्गं बनयात्रा समर्थितः॥

इति ध्यात्वा यथाशक्तिजप०॥ गुह्या०॥ इति पंचसेव्यबनाधिपानां मन्त्राणि॥६९॥

अब कजलीबन का कहते हैं। ब्रह्मयामल में यथाः—

"ॐ क्ष्रीं कजलीबनाधिपतये लक्ष्मीनारायणाय स्वाहा" इस २१ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का शाण्डिल्य ऋषि, कजलीबनाधिप लक्ष्मीनारायण देवता, जगती छन्द, मेरा समस्त वाहनादि सौख्य लाभ के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत्। कजलीबनाधिप हरि लक्ष्मी-नारायणजी का ध्यान पूर्वक यथासांग यात्रा समर्पण, तथा यथाशक्ति मन्त्र का जप करें॥६७॥

अब नन्दकूपबन का कहते हैं। प्रल्हाद संहिता में—

"ॐ ऐं श्रीनन्दकूपबनाधिपतये विंकटेशाय नमः" इस १६ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणा-याम करें। इस मन्त्र का कौशिक ऋषि, नन्दकूप बनाधिप विंकटेश देवता, बृहती छन्द, मेरा श्रीकृष्णदर्शन के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्व प्रकार है। नन्दकूप बनेश्वर, गोपाल, सखी द्वारा परिसेवित, शोभायुक्त विंकटेश का ध्यान पूर्वक यथा सांग यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र का जप करें॥६८॥

अब कुशबन का कहते हैं—धौम्यसंहिता में यथाः—

"ॐ श्री धीः कुशबनाधिपतयेऽधोक्षजाय नमः" इस १६ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का धौम्य ऋषि, कुशबनाधिप अधोक्षज देवता, कात्यायनी छन्द, मेरा कुल, पितृ उद्धारादि

अथ द्वादशोपवनाधिपदेवतानां मन्त्राण्युच्यन्ते । नारदीये:—

तत्रादौ ब्रह्मोपवनाधिप गोपीजन वल्लभ मंत्र: । ओं ग्लीं ब्रह्मवनाधिपतये गोपीजनवल्लभाय स्वाहा । इत्येकोनविंशत्यक्षरो ब्रह्मवनाधिपगोपीजन वल्लभ मन्त्र: । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषि: ब्रह्मवनाधिप गोपीजनवल्लभो देवता गायत्रीच्छन्द: मम युग्मदर्शनार्थे जपे विनियोग: । शिरसि हिरण्यगर्भाय ऋषये नमः । मुखे गायत्री च्छन्दसे नमः । हृदये गोपीजनवल्लभाय देवतायै नमः । अथ: ध्यानं—

ध्यायेत् ब्रह्मवनाधीशं गोपीनां जनवल्लभं । वनयात्रा प्रसंगस्तु सांग एव प्रयच्छ मे ॥ इति ॥

ध्यात्वा यथाशक्तिजप० ॥ गुह्या० ॥ इति ब्रह्मवनाधिप गोपीजनवल्लभ मन्त्र: ॥ १०० ॥

अथाप्सरावनाधिप वामन मन्त्र: ।

पाराशरे:—ओं ग्लौं अप्सरावनाधिपाय वामनाय नमः । इति पञ्चदशाक्षरोऽप्सरावनाधिप वामन मन्त्र: । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य दीर्घतमा ऋषि: । अप्सरावनाधिपो वामनो देवता । अष्टीच्छन्द: । ममानेक जलक्रीडा दर्शनार्थे जपे विनियोग: । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

ध्यायेद्वामनरूपं,स्त्वमणुरूपं महत्कृतं । अग्रे यच्छ कृना यात्रा सांग एव समर्थित: ॥ इति ॥

ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा तत्र स्थाने समर्पयेत् ॥ गुह्या० ॥ इत्यप्सराबनाधिप वामन मन्त्र: ॥ १०१ ॥

अथ विह्वलवनाधिपविह्वल मन्त्र:—अगस्त्यसंहितायां—ओं रौं विह्वलवनाधिपतये विह्वलस्वरूपाय नमः । इत्येकोनविंशत्यक्षरो विह्वलोपवनाधिप विह्वल मन्त्र: । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य

तृप्तादि के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्व प्रकार है । कुशवनाधिप, श्रीवत्स, पितृगण के अक्षय मार्ग देने वाले अधोक्षज भगवान का ध्यान पूर्वक यथाविधि यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें ॥ ६६ ॥

अब द्वादश उपवन का मन्त्र कहते हैं । नारदीय में । प्रथम ब्रह्मवनाधिप गोपीजनवल्लभ के मन्त्र कहते हैं । "ॐ ग्लीं ब्रह्मवनाधिपतये गोपीजनवल्लभाय स्वाहा" इस १९ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का हिरण्यगर्भ ऋषि, ब्रह्मवनाधिप गोपीजन वल्लभ देवता, गायत्री छन्द, मेरा युगलदर्शन के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्ववत् । ब्रह्मवनाधिप गोपीजन बल्लभ का ध्यान पूर्वक यथा सांग यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें ॥ १०० ॥

अब अप्सरावन का कहते हैं । पाराशर में—

"ओं ग्लौं अप्सरावनाधिप वामनाय नमः" इस १५ अक्षर मन्त्र द्वारा तीनवार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का नारदऋषि, अप्सरावनाधिप वामन देवता, अष्टा छन्द, मेरा अनेक जल क्रीडा दर्शनार्थ जप में विनियोग है । न्यास पूर्व प्रकार है । अणुरूप वामनजी का ध्यान पूर्वक यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति जप करें ॥ १०१ ॥

अब विह्वलवन का कहते हैं । अगस्त संहिता में:—

"ओं रौं विह्वल वनाधिपतये विह्वलस्वरूपाय नम." इस १६ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का अहिर्बुध्न ऋषि, विह्वल देवता, पंक्ती छन्द, मेरा षड्रूप दर्शन के लिये जप

मन्त्रस्याहिर्ब्रध्न ऋषि विट्ठलो देवता पंक्ति च्छन्दः। मम षड् रूप दर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

राधादिभिर्युतं कृष्णं वन्दे विट्ठलरूपिणं। वृषभानुपुरा यात्रा सांगत्वत्पार्श्वगामिनी॥ इति॥

ध्यात्वा यथाशक्ति जप० गुह्या०॥ इति विट्ठलोपवनाधिपविट्ठलमन्त्रः॥ १०२॥

अथ कदम्बवनाधिप गोपाल मन्त्रः।

रामार्च्चनचन्द्रिकायां—ओं ह्रीं कदम्बवनाधिपतये गोपालाय स्वाहा। इति षोडशाक्षरो कदम्बोपवनाधिपगोपालमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात्। अस्य मन्त्रस्य भारद्वाज ऋषिः कदम्बवनाधिपो गोपालो देवता जगतीच्छन्दः मम कदम्बारोहकृष्णदर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानः—

मुरलीवादनासक्तं ध्यायेद्गोपालनन्दनं। कदम्बनिकटे यात्रा सांग एव समर्थितः॥ इति॥

ध्यात्वा यथाशक्ति जप० गुह्या०। इति कदम्बोपवनाधिप गोपाल मन्त्रः॥ १०३॥

अथ स्वर्णोपवनाधिप विहारि मन्त्रः—

कौण्डिन्यसंहितायां—ओं क्रीं स्वर्णवनाधिपतये विहारिणे नमः। इति पञ्चदशाक्षरो स्वर्णोपवनाधिप विहारिमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्यात्। अस्य मन्त्रस्य शौनक ऋषिः स्वर्णवनाधिपो विहारी देवताऽनुष्टुप् च्छन्दः मम श्रीकृष्ण विहार दर्शनार्थे जपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

ध्यायेत् स्वर्णवनाधीशं राधाकृष्णं विहारिणं। कृता यात्रा प्रसंगस्तु सांग एव समर्थिताः॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति जप० गुह्या०॥ इति स्वर्णवनाधिपविहारि मन्त्रः॥ १०४॥

अथ सुरभ्युपवनाधिप गोविन्द मन्त्रः। शाण्डिल्यसंहितायां ओं क्रीं सुरभ्युपवनाधिपतये गोविन्दाय स्वधा। इति सप्तदशाक्षरो सुरभ्युपवनाधिप गोविन्द मन्त्रः। अनेन मंत्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्यात्।

में विनियोग है। न्यास पूर्व प्रकार है। राधादि युक्त, विट्ठल रूप का ध्यान पूर्वक यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें॥ १०२॥

रामार्च्चन चन्द्रिका में अब कदम्बवन का कहते हैं।

"ओं ह्रीं कदम्बवनाधिपतये गोपालाय स्वाहा"। इस १६ अक्षर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का भारद्वाज ऋषि, कदम्बवनाधिप गोपाल देवता, जगती छन्द, मेरा कदम्बारोही कृष्ण दर्शन के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्व प्रकार है। मुरली वादन युक्त, कदम्बारोही श्री गोपाल का ध्यान पूर्वक तथा विधि यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें॥ १०३॥

अब स्वर्णोपवन का कहते हैं। कौडिन्यसंहिता में—

"ओं क्रीं स्वर्णवनाधिपतये विहारिणे नमः" इस १५ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का शौनक ऋषि, बिहारी देवता, अनुष्टुप् छन्द, मेरा श्रीकृष्ण विहार दर्शनार्थ जप में विनियोग है। न्यास पूर्व प्रकार है। स्वर्णवनाधीश राधाकृष्ण का ध्यान पूर्वक यथा विधि यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें॥ १०४॥

अब सुरभीवन का कहते हैं। शाण्डिल्य संहिता में:—

"ओं क्रीं सुरभ्युपवनाधिपतये गोविन्दाय स्वधा" इस १७ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम

अस्य मन्त्रस्य कौण्डिन्य ऋषिः सुरभ्युपबनाधिप गोबिन्दो देवता कात्यायनी च्छन्दः। मम सर्वपापक्षय द्वारा मोक्षपद प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

सुरभ्युपबनाधीशं गोविन्दं कमलाप्रियं। बन्दे प्रदक्षिणाकार्य्या सागं एव समर्थितः॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० गुह्या०॥ इति सुरभ्युपबनाधिप गोबिन्द मन्त्रः॥ १०५॥

अथ प्रेमोपबनाधिप ललितामोहन मन्त्रः। बार्हस्पत्य संहितायां—

ओं ब्रूं प्रेमबनाधिपतये ललितामोहनाय स्वाहा। इति सप्तदशाक्षरो ललितामोहन मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य गुरु ऋषिः प्रेमोपबनाधिपो ललितामोहनो देवता उष्णिक्च्छन्दः मम सकल प्राधान्य कृष्ण दर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

ध्यायेत् प्रियान्वितं कृष्णं प्रेमपूर्णं मनोहरं। बनयात्रा प्रसगंस्तु त्वत्समीपे समर्थितः॥ इति॥
ध्यात्वा यथाशक्ति०॥ गुह्या०॥ इति प्रेमोपबनाधिप ललितामोहन मन्त्रः॥ १०६॥

अथ मयूरबनाधिपकिरीटिनो मन्त्रः। शुकोपनिषदिः—

ओं च्चौं मयूरबनाधिपतये किरीटिने स्वधा। इति षोडशाक्षरो मयूरबनाधिपमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषि मयूरबनाधिपः किरीटी देवता अष्टी छन्दः ममानेकाल्हाद दर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

मयूराधिपतिं देवं किरीट-मुकुट-धृतं। बन्दे नन्दसुतं कृष्णं गोपीभिः परिशोभितं॥
इति ध्यात्वा यथाशक्ति०॥ गुह्या०॥ इति मयूरोपबनाधिप किरीटिनो मन्त्रः॥ १०७॥

अथ मानेंगितोपवनाधिप बनमालिनो मन्त्रः। सौपर्णोपनिषदि—

ओं ग्रौं मानेंगितबनाधिपतये बनमालिने नमः। इत्यष्टादशाक्षरो बनमाली मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण

करें। इस मन्त्र का कौंडिन्य ऋषि, सुरभीवनाधिप गोविन्द देवता, कात्यायनी छन्द, मेरा समस्त पाप क्षय पूर्वक मोक्ष पद प्राप्ति के लिये जप में विनियाग है। न्यास पूर्व प्रकार है। कमलाप्रिय, सुरभीउपबनाधीश्वर, गोबिन्द का ध्यान पूर्वक यथाविधि यात्रा समर्पण तथा मन्त्र जप करें॥ १०५॥

अब प्रेमबन का कहते हैं। बार्हस्पत्य संहिता में:—

"ओं ब्रूं प्रेमपबनाधिपतये ललितामोहनाय स्वाहा" इस १७ अक्षर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का गुरु ऋषि, प्रमबनाधिप ललितामोहन देवता, उष्णिक् छन्द, मेरा समस्त प्राधान्य श्रीकृष्ण दर्शन के लिये जप में विनियोग है। पूर्व प्रकार न्यास जानना। प्रियायुक्त, प्रेमपूर्ण, मनोहर श्रीकृष्ण का ध्यान पूर्वक यथाविधि यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें॥ १०६॥

अब मयूरबनाधिप किरीटी मन्त्र कहते हैं। शुकोपनिषद् में:—

"ओं च्चौं मयूरबनाधिपतये किरीटिने स्वधा"। इस १६ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का नारद ऋषि, मयूरबनाधीश किरीटि देवता, अष्टी छन्द, मेरा अनेक आल्हाद दर्शन के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्व प्रकार है। किरीटी मुकुटधारी, गोपीगण परिसेवित, मयूराधिपति, किरिटी का ध्यान पूर्वक यथाविधि यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र जप करें॥ १०७॥

प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्यांगिरस ऋषि मानेंगितवनाधिपो वनमाली देवता गायत्री छन्दः। ममानेकसौख्यकृष्णदर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

राधाविज्ञप्तिसंयुक्तं कृष्णं मानविवर्द्धनं। वन्दे त्वद्दर्शनाद्यात्रा सांग एव समर्पितः।

इति ध्यात्वा यथाशक्ति जप० ॥ गुह्या० ॥ इति मानेंगितोपवनाधिपवनमालिमन्त्रः ॥ १०८ ॥

अथ शेषशयनवनाधिपाच्युत प्रौढ़ानाथ मंत्रः—

भारद्वाजोपनिषदिः—ओं पां शेषशायिवनाधिपायाच्युताय प्रौढ़ानाथाय नमः। इत्येकोनविंशदक्षरो प्रौढ़ानाथ मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य रुद्र ऋषिः शेष शयनवनाधिप प्रौढ़ानाथाच्युतो देवता अक्षरा पंक्ति छन्दः। मम लक्ष्मीसौख्यप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्।
अथ ध्यानं—वन्दे शेषशयानमीश्वरप्रभुं लक्ष्मीपदाब्जे रतं। प्रौढ़ानाथमंजुगुणाधिकवरं नारायणं सुन्दरं॥
कुंडे श्रीरमणे महोदधिशुभे नित्याभिषेकाभिधं। लक्ष्मीनाथविभुं वनाधिव वनं संपूर्णमिष्टप्रदम्॥

इति ध्यात्वा यथाशक्तिजप० ॥ गुह्यातिगुह्य० ॥ इति शेषशयनवनाधिपाच्युत प्रौढ़ानाथ मन्त्रः ॥१०९॥

अथ श्रीनारदोपवनाधिप मदनगोपाल मन्त्रः नारदीयेः—

ओं क्लीं नारदवनाधिपतये मदनगोपालाय स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मदनगोपाल मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य कौशिक ऋषि नारदवनाधिपो मदनगोपालो देवता कौमारी छन्दः मम सकलममनोरथसिद्धि द्वारा मोक्षपदप्राप्तये जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

अब मानेंगित बन का कहते हैं। सौपर्ण संहिता में—

"ओं ग्रौं मानेंगितवनाधिपतये वनमालिने नमः" इस अष्टादशाक्षर वनमाली मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का अंगिरस ऋषि, मानेंगितवनाधिप वनमाली देवता, गायत्री छन्द, मेरा अनेक सुख रूप श्रीकृष्ण दर्शन के लिये जप में विनियोग है। न्याश पूर्व की तरह। श्रीराधिका विज्ञप्ति से युक्त, मान बर्द्धनकारी श्रीकृष्ण की बन्दना करता हूँ, इस प्रकार ध्यान कर यथाविधि यात्रा समर्पण तथा यथाशक्ति मन्त्र का जप करें॥ १०८॥

अब शेषशयन वन के अधिप अच्युत प्रौढ़ानाथजी का मन्त्र कहते हैं। भारद्वाजोपनिषद् में—

"ओं पां शेषशायिवनाधिपायाच्युताय प्रौढ़ानाथाय नमः" इस १९ अक्षर मंत्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का रुद्र ऋषि, शेषशयनवनाधिप प्रौढ़ानाथजी देवता, अक्षरा पंक्ति छन्द, मेरा लक्ष्मी सुख प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत् जानना। ध्यान—शेषशायी, लक्ष्मीजी से सेवित चरण कमल वाले, सुन्दर गुणों से श्रेष्ठ, प्रभु प्रौढ़ानाथजी की बन्दना करता हूँ। नित्य अभिषेक से युक्त, महोदधि से शोभायमान रमणकुण्ड है। वहाँ श्रीलक्ष्मीपति प्रौढ़ानाथ प्रभु विराजमान हैं। यह बन सर्वोपरि तथा समस्त इष्ट को देने वाला है। इस प्रकार ध्यान द्वारा यथाशक्ति मन्त्र का जप कर "गुह्याति गुह्य" इत्यादि मन्त्र द्वारा यात्रा समर्पण करें॥ १०९॥

अब श्रीनारदोपवन के अधिप मदनगोपालजी का मन्त्र कहते हैं। नारदीय पुराण में:—

"ओं क्लीं नारदवनाधिपतये मदनगोपालाय स्वाहा" इस १८ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार

ध्यायेन्मुनिवनाधीशं गोपालं मदनाभिधं । नवनीतप्रियं कृष्णं बनयात्रा शुभप्रदं ॥ इति ॥
ध्यात्वा यथाशक्तिजप० ॥ गुह्याति० ॥ इति नारदबनाधिप मदनगोपाल मन्त्रः ॥ ११० ॥

अथ परमानन्दबनाधिपादिवद्रीस्वरूप मन्त्रः—

गुरूपनिषदि—ओं ऐं परमानन्दबनाधिपायादिबद्र्ये नमः । इति षोडशाक्षरः परमानन्दाधिप-मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य शौनक ऋषिः परमानन्दबनाधिपादिवद्रि देवता बृहती च्छन्दः। ममानेकाल्हाददर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। ध्यानं—

आदिवद्रिस्वरूपं त्वां परमानन्दवर्द्धनं। ध्यायेद्वनाधिपं देवं बनयात्रावरप्रदम् ॥ इति ॥
ध्यात्वा यथा० ॥ गुह्या० ॥ इति द्वादशोपवनाधिपानां मन्त्राणि ॥ १११ ॥

अथ द्वादश प्रतिबनाधिप मन्त्रः। तत्रादौ रंक प्रतिवनाधिप नन्दकिशोर मन्त्रः धौम्योपनिषदि—

ओं क्लीं रंकप्रतिवनाधिपतये नन्दकिशोराय स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो रंक प्रतिवनाधिप नन्द-किशोर मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य पराशर ऋषिः रंक प्रतिवनाधिपो नन्दकिशोरो देवता बृहतीच्छन्दः। मम परमोत्सवदर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

ध्यायेद्रंकबनाधीशं किशोरं नन्दनन्दनम्। बनयात्रा कृतां पूर्णां प्रयच्छ मम सर्वदा ॥

इति विज्ञाप्य यथाशक्ति जपं कृत्वा रंक-प्रतिबनेऽर्पयेत् ॥ गुह्या० ॥ इति रंक-प्रतिवनाधिपनंद-किशोर मन्त्रः ॥ ११२ ॥

अथ वार्ता प्रतिबनाधिप श्रीकृष्ण मन्त्रः। प्रल्हादसंहितायां—

ओं ह्रं वार्त्ताप्रतिवनाधिपतये कृष्णाय नमः। इति पञ्च दशाक्षरो कृष्णमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण

प्राणायाम करें। इस मन्त्र का कौशिक ऋषि, नारद बन के ईश्वर मदनगोपालजी देवता, कौमारी छन्द, मेरा सकल मनोरथ सिद्धि द्वारा मोक्ष पद प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत् है। मुनि नारदजी के वनाधिप मदनगोपाल नामक नवनीत प्रिय श्रीकृष्ण का ध्यान करता हूँ। जो बनयात्रा में शुभ को देने वाले हैं। इस प्रकार ध्यान कर यथा शक्ति जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ ११० ॥

अब परमानन्दबनाधिप श्री आदिवद्री स्वरूप का मन्त्र कहते हैं। गुरूपनिषद में:—

"ओं ऐं परमानन्दबनाधिपायादिबद्र्ये नम.।" इस १६ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का शौनक ऋषि, आदिवद्रीजी देवता, बृहती छन्द, मेरा अनेक आल्हाद प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत् है। परमानन्द वर्द्धन कारी, बनाधिप, वनयात्रा वरको देने वाले, आदिवद्रि स्वरूप का ध्यान कर यथा विधि मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १११ ॥

अब द्वादश प्रतिबनाधिप के मन्त्र कहते हैं--

पहिले रंक प्रतिवन के अधीश्वर नन्दकिशोरजी का मन्त्र—धौम्योपनिषद् में—"ओं क्लीं रंक-प्रतिबनाधिपतये नंदकिशोराय स्वाहा" इस १६ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का पाराशर ऋषि, नन्दकिशोरजी देवता, बृहती छन्द, मेरा परम उत्सव दर्शन के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत् जानना। किशोर स्वरूप, रंक प्रतिबन के अधीश्वर नन्दनन्दन का ध्यान करें। तथा बनयात्रा संपूर्ण दीजिये इस प्रकार प्रार्थना करें। यथाशक्ति जप कर यात्रा समर्पण करें ॥ ११२ ॥

प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्यागस्त्य ऋषि र्वार्त्तावनाधिपः श्रीकृष्णो देवता जगतीच्छन्दः । मम सुबुद्धि फल प्राप्तये जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

वार्त्ताप्रतिवनाधीशं कृष्णं वन्दे कलानिधिं । प्रदक्षिणा मया कार्या सांग एव समर्थितः ॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्याति० ॥ इति वार्त्तावनाधिपकृष्ण मंत्र—॥ ११३ ॥

अथ करह प्रतिवनाधिप मुरलीधर मन्त्रः । धौम्योपनिषदि—

ओं ह्रं करहप्रतिवनाधिपतये मुरलीधराय स्वाहा । इति विंशत्यक्षरः करहप्रतिवनाधिप मुरलीधर-मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मंत्रस्य मरीचि ऋषि करहप्रतिवनाधिपो मुरलीधरो देवता पंक्तिश्छन्दः । ममानेक सुखकृष्णदर्शनार्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

करहप्रतिवनाधीशं मुरलीधरसंज्ञकम् । गोपीभिर्मण्डितं कृष्णं ध्यायेद्यात्रा शुभप्रदम् ॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इति करह प्रतिवनाधिपमुरलीधर मन्त्रः ॥ ११४ ॥

अथ कामप्रतिवनाधिप परमेश्वर मन्त्रः—माधवीये—

ओं श्रीं कामप्रतिवनाधिपतये परमेश्वराय स्वधा । इत्येकोनविंशत्यक्षरो परमेश्वर मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य प्रल्हाद ऋषिः कामप्रतिवनाधिपः परमेश्वरो देवता गायत्री-च्छन्दः ममानेककाम प्रपूरणार्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

ध्यायेत्कामवनाधीशं श्रीकृष्णं परमेश्वरं । वनप्रदक्षिणा यत्र सांग एव समर्थिता ।

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इति कामप्रतिवनाधिप परमेश्वरमन्त्रः ॥ ११५ ॥

अब वार्त्ता प्रतिवनाधिप श्रीकृष्ण के मन्त्र कहते हैं प्रल्हाद संहिता मे—

" ओं ह्रं वार्त्ताप्रतिवनाधिपतये कृष्णाय नमः " इस १५ अक्षर मंत्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का अगस्त्य ऋषि, श्रीकृष्ण देवता, जगती छन्द, मेरा सुबुद्धि प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है । न्यास पहिले की तरह जानना । ध्यानः-कलानिधि, वार्त्ता प्रतिवन के ईश्वर कृष्ण की बन्दना करता हूँ । इस प्रकार ध्यान से यथाशक्ति मन्त्र का जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ ११३ ॥

अब करह प्रतिवनाधिप मुरलीधरजी का मन्त्र कहते हैं । धौम्योपनिषद् में—

" ओं ह्रं करहप्रतिवनाधिपतये मुरलीधराय स्वाहा " इस २० अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का मरीचि ऋषि, मुरलीधर देवता, पंक्ति छन्द, मेरा अनेक सुख तथा कृष्ण प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्ववत् जानना ।

ध्यान—करह प्रतिवनेश्वर, मुरलीधर नामक कृष्ण स्वरूप का ध्यान करें, जो गोपियों से शोभित तथा यात्रा शुभ को देने वाले हैं । इस प्रकार ध्यान से यथाशक्ति मन्त्र का जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ ११४ ॥

अब काम प्रतिवनाधिपपरमेश्वरजी का मन्त्र कहते हैं । माधवीय में—

" ओं श्रीं कामप्रतिवनाधिपतये परमेश्वराय स्वधा " इस १६ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बा प्राणायाम करें । इस मन्त्र का प्रल्हाद ऋषि, परमेश्वर देवता, गायत्री छन्द, मेरा अनेक काम पूर्ति के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्ववत् है । काम वनाधीश, परमेश्वर, श्रीकृष्ण का ध्यान पूर्वक यथाशक्ति मंत्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ ११५ ॥

अथांजन प्रतिवनाधिप पुण्डरीकाक्ष मन्त्रः—

पाद्मे—ओं सौं अञ्जनप्रतिवनाधिपतये पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा । इत्योंकारसहितैकविंशत्यक्षरः पुण्डरीकाक्ष मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य गृत्समद ऋषि रञ्जनप्रतिवनाधिपः पुण्डरीकाक्षो देवता अष्टीच्छन्दः मम सकलसौभाग्यसंपत्फल प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—अंजनाख्यवनाधीशं पुण्डरीकाक्षमव्ययं । ध्यायेत् प्रदक्षिणा सांगा त्वत्समीपे समर्थिता ॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इत्यंजनाख्यप्रतिवनाधिप पुण्डरीकाक्ष मन्त्रः ॥ ११६ ॥

अथ कर्णप्रतिवनाधिप कमलाकर मन्त्रः-भृगूपनिषदि—

ओं गौं कर्णप्रतिवनाधिपतये कमलाकराय नमः । इत्येकोनविंशत्यक्षरः कर्णप्रतिवनाधिपकमलाकर मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य विराट् ऋषिः कर्णप्रतिवनाधिप कमलाकरो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । मम सर्व सौख्य श्रवणार्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

कर्णप्रतिवनाधीशं कमलाकरमीश्वरं । ध्यायेत्प्रदक्षिणा सांगा यशोदापितृवेश्मनि ॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ ११७ ॥

अथ सप्तमक्षिपनक प्रतिवनाधिप बालकृष्ण मन्त्रः—

आंगिरससंहितायां—ओं खौं क्षिपनकप्रतिवनाधिपतये बालकृष्णाय नमः । इति विंशत्यक्षरो बालकृष्ण मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य वृक्षऋषिर्बालकृष्णो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । मम सकलप्रभुत्वसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

ध्यायेत् क्षिपनकाधीशं बालकृष्णं मनोहरं । वनयात्रा गिरेस्तीरे सांग एव समर्पिता ॥ इति ॥

ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इति क्षिपनकप्रतिवनाधिपबालकृष्ण मन्त्रः ॥ ११८ ॥

अब अंजन प्रतिवनेश्वर पुण्डरीकाक्षजी का मन्त्र कहते हैं । पद्म पुराण में—"ओं सौं अञ्जनप्रतिवनाधिपतये पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा" इस ओंकार के साथ २१ अक्षर मंत्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का गृत्समद ऋषि, पुण्डरीकाक्ष देवता, अष्टी छन्द, मेरा सकल सौभाग्य, सम्पत् प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्ववत् है । अंजन बनेश्वर, अव्यय पुण्डरीकाक्ष का ध्यान पूर्वक यथाशक्ति मन्त्र का जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ ११६ ॥

अब कर्ण प्रतिवनाधिप कमलाकर जी का मन्त्र कहते हैं । भृगूपनिषद् में—

"ओं गौं कर्णप्रतिवनाधिपतये कमलाकराय नमः" इस १६ अक्षर मंत्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का विराट् ऋषि, कमलाकर देवता, त्रिष्टुप् छन्द, मेरा सकल सुख श्रवण के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्ववत् है । कर्ण प्रतिवनाधिप, ईश्वर, कमलाकर का ध्यान पूर्वक यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ ११७ ॥

अब क्षिपनक प्रतिवनाधिप बालकृष्णजी का मन्त्र कहते हैं । आंगिरस संहिता में—

"ओं खौं क्षिपनक प्रतिवनाधिपतये बालकृष्णाय नमः" इस २० अक्षर बालकृष्ण मंत्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मंत्र का वृक्ष ऋषि, बालकृष्ण देवता, अनुष्टुप् छन्दः, मेरा सकल प्रभुत्व सिद्धि के लिये जप में विनियोग है । क्षिपन वनाधिप, मनोहर बालकृष्ण का ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ ११८ ॥

अथ नन्दनप्रतिबनाधिप नन्दनन्दन मन्त्रः। स्कान्दे—

ओं नां नन्दनप्रतिबनाधिपाय नन्दनन्दनाय स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो नन्दनन्दन मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य वृक्ष ऋषिर्नन्दनप्रतिबनाधिपो नन्दनन्दनो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। ममानेकसंपत् फल प्राप्तये जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

नन्दनाख्यबनाधीशं नन्दनन्दनबालकं। ध्यायेद्यात्रा प्रसंगस्तु सांग एव समर्थितः॥ इति॥

ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इति नन्दनप्रतिबनाधिपनन्दनन्दन मन्त्रः॥ ११९॥

अथेन्द्रप्रतिबनाधिप चक्रपाणि मन्त्रः। गारुडोपनिषदि—

ओं क्लीं इन्द्रप्रतिबनाधिपतये चक्रपाणये नमः। इत्यष्टादशाक्षरश्चक्रपाणि मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषिरिन्द्रप्रतिबनाधिपश्चक्रपाणिर्देवता। उष्णिक् छन्दः। मम सर्वारिष्टनिवारणार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

ध्यायेच्छक्रबनाधीशं चक्रपाणिं चतुर्भुजं। कृता प्रदक्षिणा सिद्धिः सांग एव समर्थिता॥ इति॥

ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा तत्र स्थाने समर्पयेत्॥ गुह्या०॥ इतीन्द्रप्रतिबनाधिप चक्रपाणि मन्त्रः॥ १२०॥

अथ शीक्षाप्रतिबनाधिप त्रिविक्रम मन्त्रः। नारदपञ्चरात्रे—

ओं सौं शीक्षाप्रतिबनाधिपतये त्रिविक्रमाय नमः। इत्यष्टादशाक्षरस्त्रिविक्रम मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मर्षिः शीक्षाप्रतिबनाधिपस्त्रिविक्रमो देवता गायत्रीच्छन्दः मम त्रिलोकविजयार्थे जपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

शीक्षाप्रतिबनाधीशं ध्यायेद्देवं त्रिविक्रमं। त्रैलोक्यविजयार्थाय बनयात्रा समर्थिता॥ इति॥

ध्यात्वा यथाशक्ति०॥ गुह्या०॥ इति शीक्षाप्रतिबनाधिप त्रिविक्रममन्त्रः॥ १२१॥

अब नन्दनप्रतिबनाधिप नन्दनन्दनजी का मन्त्र कहते हैं। स्कान्द में—"ओं नां नन्दनप्रतिबनाधिपाय नन्दनन्दनाय स्वाहा" इस १९ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का वृक्ष ऋषि, नन्दनन्दन देवता, अनुष्टुप् छन्द, मेरा अनेक धन सम्पत्ति प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है। न्यास पहिले की तरह जानना। अनन्तर नन्दनबनाधीश, बालक नन्दनन्दन का ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप, तथा यात्रा समर्पण करें॥ ११९॥

अब इन्द्रबनाधिप चक्रपाणि मन्त्र कहते हैं। गारुडोपनिषद् में—"ओं क्लीं इन्द्रप्रतिबनाधिपतये चक्रपाणये नमः" इस १८ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का नारद ऋषि, चक्रपाणि देवता, उष्णिक् छन्द, मेरा सकल अरिष्ट नाशार्थ जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत् है। चक्रबनाधीश, चतुर्भुज स्वरूप चक्रपाणिजी का ध्यान कर मंत्र जप तथा प्रदक्षिणा समर्पण करें॥ १२०॥

अब शीक्षाप्रतिबनाधिप त्रिविक्रमजी का मन्त्र कहते हैं। नारद पञ्चरात्र में—"ओं सौं शीक्षा प्रतिबनाधिपतये त्रिविक्रमाय नमः" इस अठारह अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का ब्रह्मा ऋषि, त्रिविक्रम देवता, गायत्री छन्द, मेरा तीन लोक विजय के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत्। शीक्षाप्रतिबनाधिप त्रिविक्रम देवता का ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें॥ १२१॥

अथैकादशम चन्द्रावलीप्रतिबनाधिप पीताम्बर मन्त्रः । दधीचि संहितायां—
ओं धीं धींश्चन्द्रावलि प्रतिबनाधिपतये पीताम्बराय स्वाहा । इत्येकविंशत्यक्षरश्चन्द्रावलिप्रतिबनाधिपपीताम्बर मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात् अस्य मन्त्रस्य संकुपिकऋषिश्चन्द्रावलिप्रतिबनाधिपपीताम्बरो देवता जगती छन्दः मम सर्वालंकार समृद्धयर्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् ।
अथ ध्यानं—चन्द्रावलिबनाधीशं ध्यायेत्पीताम्बरं हरिं । बनयात्रा प्रसगंस्तु सांगत्र समर्थितः ॥ इति ॥
ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इति चन्द्रावलिप्रतिबनाधिपपीताम्बर मन्त्रः ॥ १२२ ॥
अथ द्वादशम लोहप्रतिबनाधिपविष्वक्सेन मन्त्रः । विराटसंहितायां—
ओं ह्रां लोहप्रतिबनाधिपतये विष्वक्सेनाय नमः । इत्यष्टादशाक्षरो विष्वक्सेन मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य लोहित ऋषिः लोहप्रतिबनाधिपविष्वक्सेनो देवता बृहती छन्दः । ममसकलाभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—
लोहप्रतिबनाधीशं विष्वक्सेनमजं हरिं । वन्दे प्रदक्षिणा कार्य्या शुभदा स्यात्पदे पदे ॥ इति ॥
ध्यात्वा यथाशक्तिजपं कृत्वा तत्र समर्पयेत् ॥ गुह्यातिः ॥ इति द्वादशप्रतिबनाधिपानां मन्त्राणि ॥ १२३ ॥
अथ द्वादशाधिबनानां मथुरादिनां मन्त्राण्युच्यन्ते । तत्रादौ मथुराधिबनाधिप परब्रह्म मन्त्रः—
बौधायनसंहितायां—ओं ह्रां क्लीं मथुराधिपतये परब्रह्मणे नमः । इति षोडशाक्षरः परब्रह्म मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य धौम्यऋषि मथुराधिबनाधिपः परब्रह्म देवता गायत्रीच्छन्दः । मम परमपदप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः । शिरसि धौम्याय ऋषये नमः मुखे मथुराधिबनाधिपतये परब्रह्मने देवतायै नमः । हृदये गायत्रीच्छन्दसे नमः अथ ध्यानं—
मथुराधिबनाधीशं परब्रह्म सनातनं । ध्यायेत्प्रदक्षिणा सांग नवक्रोश प्रमाणतः ॥
इति ध्यात्वा यथाशक्ति जपं कृत्वा तत्र स्थाने समर्पयेत् । इति मथुराधिबनाधिप परब्रह्म मन्त्रः ॥ १२४ ॥

अब चन्द्रावली प्रतिबनाधिप पीताम्बरजी का मन्त्र कहते हैं । दधीचि संहिता में—"ओं धीं धींश्चन्द्रावलि प्रतिबनाधिपतये पीताम्बराय स्वाहा" इस २१ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का संकुपिक ऋषि, पीताम्बर देवता, जगती छन्द, मेरा सर्वालंकार वृद्धि के लिये जप में विनियोग है । न्यास पूर्ववत् जानना, चन्द्रावलीबनाधीश, पीताम्बर, हरि का ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १२२ ॥

अब लोह प्रतिबनाधिप विष्वक्सेनजी का मंत्र कहते हैं । विराट संहिता में—"ओं ह्रां लोहप्रतिबनाधिपतये विष्वक्सेनाय नमः" इस १८ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मंत्र का लोहित ऋषि, विष्वक्सेन देवता, बृहती छन्द, मेरा सकल अभीष्ट सिद्धि के लिये जप में विनियोग है । न्यास पहिले की तरह है । लोहप्रतिबनेश्वर, अज, विष्वक्सेन हरि का ध्यान कर यथा शक्ति मंत्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १२३ ॥

अब मथुराधिबनाधिप परब्रह्म जी का मन्त्र कहते हैं । बौधायन संहिता में—"ओं ह्रां क्लीं मथुराधिपतये परब्रह्मणे नमः" इस १६ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें । इस मंत्र का धौम्य ऋषि, परब्रह्म देवता, गायत्री छन्द, मेरा परम पद प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है । सिर पर धौम्यऋषि के लिये

अथ राधाकुण्डाधिबनाधिप राधावल्लभ मन्त्रः बृहन्नारदीये:—

ओं ह्रीं श्रीकुण्डाधिबनाधिपतये राधावल्लभाय स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो राधावल्लभमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्यात्। अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषि: राधावल्लभो देवता जगतीच्छन्दः मम पुत्र पौत्रादि फलप्राप्त्यर्थे आयुः परिपूरणार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

राधावल्लभमध्यक्षं श्रीकुण्डाधिबनाधिपं। ध्यायेन्मनोरथार्थाय सांगा स्याद्वनयात्रका॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इति श्रीराधाकुण्डाधिबनाधिपराधावल्लभ मन्त्रः ॥ १२५ ॥

अथ नन्दग्रामाधिबनाधिप यशोदानन्दन मन्त्रः। संमोहनतन्त्रे—

ओं क्लीं नन्दग्रामाधिबनाधिपतये यशोदानन्दनाय नमः। इत्येक विंशत्यक्षरो यशोदानन्दन मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात्। अस्य मन्त्रस्य भार्गव ऋषिर्नन्दग्रामाधिवनाधिपो यशोदानन्दनो देवता। अष्टीच्छन्दः मम सकल मनोरथ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

यशोदानन्दनं बन्दे नन्दग्रामबनाधिपं। वृषभानुपुरा यात्रा सांग एव समर्थिता॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इति नन्दग्रामाधिबनाधिप यशोदानन्दन मन्त्रः ॥ १२६ ॥

अथ वप्राधिवनाधिप नवलकिशोर मन्त्रः। भार्गवोपनिषदि—ओं ग्रौं वप्राधिवनाधिपतये नवलकिशोराय स्वधा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो नवलकिशोर मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्यात्। अस्य मन्त्रस्यौर्व ऋषिर्वप्राधिवनाधिपो नवलकिशोरो देवता। जगतीच्छन्दः ममाधिपत्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

वप्राधिविपिनाधीशं किशोरं नवलं प्रभुं। ध्यायेद्राज्यप्रदं चक्रं परशंकाभयापहम्॥ इति॥

ध्यात्वा यथाशक्ति० ॥ गुह्या० ॥ इतिवप्राधिबनाधिपनवलकिशोर मन्त्रः ॥ १२७ ॥

नमस्कार, मुख में मथुरावनाधिप परब्रह्म देवता के लिये, हृदय में गायत्री छन्द के लिये नमस्कार है। मथुरावनाधीश, परब्रह्म सनातन का ध्यान कर यथाशक्ति मंत्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १२४ ॥

अब राधाकुण्डाधिबनाधिप राधावल्लभ जी का मंत्र कहते हैं। बृहन्नारदीय में—"ओं ह्रीं श्रीकुण्डाधिपतये राधावल्लभाय स्वाहा" इस १६ अक्षर मंत्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का नारद ऋषि, राधावल्लभ देवता, जगती छन्द, मेरा पुत्र पौत्रादि फल प्राप्ति तथा आयु: वृद्धि के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत् है। मनोरथ प्राप्ति के लिये श्रीकुण्डाधिप, अध्यक्ष, राधावल्लभजी का ध्यान कर यथाशक्ति मंत्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १२६ ॥

अब नन्दग्रामाधिप, यशोदानन्दनजी का मंत्र कहते हैं—सन्मोहन तन्त्र में—" ओं क्लीं नन्दग्रामाधिबनाधिपतये यशोदानन्दनाय नमः" इस २१ अक्षर मंत्र से तीन बार प्राणायाम करें। इस मंत्र का भार्गव ऋषि, यशोदानन्दन देवता, अष्टी छन्द, मेरा सकल मनोरथ सिद्धि के लिये जप में विनियोग है। न्यास पूर्ववत्। नंदग्राम बनाधीश, श्री यशोदानंदनजी का ध्यान करता हूँ जिससे वृषभानुपुर की यात्रा सम्पूर्ण रूप से समर्थित होती है। इस प्रकार ध्यान कर यथा शक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १२६ ॥

अब वप्राधिबनाधिप नवलकिशोरजी का मन्त्र कहते हैं। भार्गवोपनिषद् में—" ओं ग्रौं वप्रबनाधिपतये नवलकिशोराय स्वधा" इस १६ अक्षर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का और्व

अथ ललिता ग्रामाधिवनाधिप व्रजकिशोर मन्त्रः—श्रैधरोपनिषदि ॥

ओं श्रैं ललिताग्राम विवनाधिपतये व्रजकिशोराय नमः । इत्येकविंशत्यक्षरो व्रजकिशोर मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात्। अस्य मन्त्रस्य विभाण्डक ऋषि व्रजकिशोरो देवता । गायत्री छन्दः। मम सकल पापक्षयद्वारा युगलकृष्णदर्शनार्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत्।
अथ ध्यानं—ललितासंयुतं कृष्णं सर्वाभिः सखीभिर्युतं। ध्यायेत् त्रिवेणीकूपस्थं महारासकृतोत्सवम् ॥
इति ध्यात्वा यथाशक्ति० गुह्याति० । इति ललिता ग्रामाधिवनाधिप व्रजकिशोर मन्त्रः ॥१२८॥

अथ वृषभानुपुराधिवनाधिप राधाकृष्ण मन्त्रः । भारद्वाजोपनिषदि—

ओं क्लीं वृषभानुपुराधिवनाधिपतये राधाकृष्णाय स्वधा । इत्येक विंशत्यक्षरो राधाकृष्ण मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात्। अस्य मन्त्रस्य गौतम ऋषि वृषभानुपुराधिवनाधिपो राधाकृष्णो देवता उष्णीक् छन्दः। मम सर्व व्रजोत्सवदर्शनार्थे जपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत्।
अथ ध्यानं—राधया सहितं कृष्णं ब्रह्मपर्वतसंस्थितं। वन्दे प्रदक्षिणा सांग सर्वदा वरदायकम् ॥
इति ध्यात्वा यथाशक्ति० गुह्या० । इति श्रीवृषभानुपुराधिवनाधिप राधाकृष्ण मन्त्रः ॥१२९॥

अथ श्रीगोकुलाधिवनाधिप गोकुलचन्द्रमा मन्त्रः । वृहद्गौतमीये—

ओं क्लीं गोकुलाधिवनाधिपाय गोकुलचन्द्रमसे स्वाहा। इति विंशत्यक्षरो गोकुलचन्द्रमा मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्य शाण्डिल्य ऋषि गोकुलाधिवनाधिपो गोकुलचन्द्रमा देवता गायत्री छन्दः मम बालकृष्णदर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्।

ऋषि, नवलकिशोर देवता, जगती छन्द, मेरा आधिपत्य सिद्धि के लिये जप में विनियोग है। न्यास पहिले की तरह है। राज्य प्रदानकारी अपर की शंका को दूर करने वाले, वप्र बन के ईश्वर प्रभु नवलकिशोर जी का ध्यान करें एवं यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १२७ ॥

अथ ललिता ग्रामवनाधिप व्रजकिशोर जी का मन्त्र कहते हैं। श्रैधरोपनिषद् में—"ओं श्रैं ललिता-ग्रामाधिवनाधिपतये व्रजकिशोराय नमः" इस २१ अक्षर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का विभाण्डक ऋषि, व्रजकिशोर देवता, गायत्री छन्द, मेरा समस्त पाप क्षय पूर्वक युगल कृष्ण दर्शन के लिये जप में विनियोग है। न्यास पहिले की तरह है। समस्त सखीयों से तथा ललिता जी से युक्त, त्रिवेणी कूपस्थ, महाराम रस उत्सव विस्तार करने वाले श्रीकृष्ण का ध्यान करें। अब यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १२८ ॥

अब वृषभानुपुराधिवनाधिप राधाकृष्ण के मन्त्र कहते हैं। भारद्वाजोपनिषद् में—"ओं क्लीं वृष-भानुपुराधिवनाधिपतये राधाकृष्णाय स्वधा" इस २१ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का गौतम ऋषि, राधाकृष्ण देवता, उष्णीक् छन्द, मेरा समस्त व्रज के उत्सवों का दर्शन के लीये जप में विनियोग है। न्यास पहिले की तरह जानना। ब्रह्म पर्वत में विराजित राधिका जी के साथ श्रीकृष्ण की बन्दना करता हूँ। इस प्रकार ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १२९ ॥

अब गोकुलाधिवनाधिप गोकुलचन्द्रमा जी का मन्त्र कहते हैं। वृहद्गौतमीय में—"ओं क्लीं गोकु-लाधिवनाधिपाय गोकुलचन्द्रमसे स्वाहा" इस २० अक्षर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का

अथ ध्यानं—पंचाब्दरूपिणं कृष्णं गोकुलेश्वरमीश्वरं । ध्यायेदुत्तरकोटीभिः यात्रा सांग समर्थिता ॥
इति ध्यात्वा यथाशक्ति० गुह्या० । इति गोकुलाधिवनाधिप गोकुलचन्द्रमा मन्त्रः ॥ १३० ॥

अथ बलदेवाधिवनाधिप कामधेनु मन्त्रः । ब्रह्मसंहितायां—

ओं वां बलदेवाधिवनाधिपाय कामधेनवे नमः । इत्यष्टादशाक्षरः कामधेनु मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य शौनक ऋषि बलदेवाधिवनाधिपः कामधेनु देवता । अनुष्टुप् छन्दः । मम गोधन वृद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् ।
अथ ध्यानं—ध्यायेन्मनोहरां देवीं कामधेनु वरप्रदां ! बनयात्रा मया कार्य्या सांग एव समर्थिता ॥ इति ॥
ध्यात्वा यथाशक्ति० गुह्या० ॥ इति बलदेवाधिवनाधिप कामधेनु मन्त्र' ॥ १३१ ॥

अथ नवम गोवर्द्धनाधिवनाधिप गोवर्द्धननाथ मन्त्रः । कौशिकोपनिषदि—

ओं वां गोवर्द्धनाधिवनाधिपाय गोवर्द्धननाथाय स्वाहा । इति विंशत्यक्षरो गोवर्द्धननाथ मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषि गोवर्द्धनवनाधिपो गोवर्द्धननाथो देवता । अनुष्टुप् छन्दः मम सकल पुण्यफल प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् ।
अथ ध्यानं—गोवर्द्धनवनाधीशं नाथं वन्दे जगद्गुरुम् । सप्ताब्दरूपिणं कृष्णं वनयात्रा शुभं भवेत् ॥
इति ध्यात्वा यथाशक्ति० गुह्या० ॥ इति गोवर्द्धनाधिवनाधिप गोवर्द्धननाथमन्त्रः ॥ १३२ ॥

अथ यावबटाधिवनाधिप व्रजवर मन्त्रः । शौनकाख्यसंहितायां—

वटाद्बहिः समन्तात्तु सघनं वनमास्थितम् । तमेवाधिवनं ख्यातं वटसेवापरायणम् ॥
तस्मिन्मध्ये बटं श्रेष्ठं कृष्णक्रीड़ावरप्रदन् । वटाद्बहिर्वनं ज्ञातं मध्ये चैव वटं स्मृतं ॥
वट वृक्षस्थितं तत्र वटसंज्ञं विधीयते । वटपत्रानुसारेण वटलिंगावटनि दर्शयेत् । इति वटस्थानलिंगाः॥

शाण्डिल्य ऋषि, गोकुलचन्द्रमा देवता, गायत्री छन्द, मेरा बालकृष्ण दर्शन के लीये जप में विनियोग है। न्यास पहिले की तरह जानना । पंचवर्षीय गोकुलेश्वर श्रीकृष्ण का ध्यान करें जिससे उत्तर कोटि की समस्त यात्रा परिपूर्ण होती हैं । अब यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १३० ॥

अब बलदेवाधिवनाधिप कामधेनु मन्त्र कहते हैं । ब्रह्मसंहिता में—"ओं वां बलदेवाधिवनाधिपाय कामधेनवे नमः" इस १८ अक्षर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का शौनक ऋषि, कामधेनु देवता, अनुष्टुप् छन्द, मेरा गोधन वृद्धि के लीये जप में विनियोग है । न्यास पहिले की तरह है । वर प्रदान कारिणी, मनोहर कामधेनु देवता का ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १३१ ॥

अब गोवर्द्धनाधिवनाधिप गोवर्द्धननाथ जी का मन्त्र कहते हैं । कौशिकोपनिषद में—ओं वां गोवर्द्धनाधिवनाधिपाय गोवर्द्धननाथाय स्वाहा" इस २० अक्षर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें । इस मन्त्र का नारद ऋषि, गोवर्द्धननाथ देवता, अनुष्टुप् छन्द, मेरा सकल पुण्य फल प्राप्ति के लीये जप में विनियोग है । न्यास पहिले की तरह जानना । जगद्गुरु, गोवर्द्धनवनाधीश, सप्तवर्षीय, स्वामी कृष्ण की बन्दना करता हूँ । जिससे बन यात्रा शुभ होती है । इस प्रकार ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १३२ ॥

अब यावबटाधिवनाधिप व्रजवर जी का मन्त्र कहते हैं । शौनक संहिता में—बट के बाहिर चारों ओर में सघन बन है उसे अधिवन कहते हैं जो बट की सेवा में नियुक्त है । बट श्रीकृष्ण की क्रीड़ा को

ओं वः यावबटाधिबनाधिपतये व्रजवराय नमः। इत्येकोनविंशत्यक्षरो यावबटाधिबनाधिपः व्रजवर मन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषि यावबटाधिबनाधिपो व्रजवरः देवता पंक्तश्छन्दः मम सकलसौभाग्यसम्पत्फलप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्।

ध्यानं—नानाशृङ्गारभूपाढ्यं राधाकृष्णं मनोहरं। ध्यायेद्युगलमूर्तिञ्च वनयात्रा वरप्रदं ॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० गुह्या०। इति यावबटाधिबनाधिप व्रजवर मन्त्रः ॥ १३३ ॥

अथैकादशमवृन्दाबनाधिबनाधिप वैकुण्ठमन्त्रः। सूतोपनिषदि—

ओं वृन्दावनाधिबनाधिपतये वैकुण्ठाय नमः। इत्यष्टादशाक्षरो वृन्दाबनाधिबनाधिपवैकुण्ठमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य जन्हु ऋषि वृन्दाबनाधिबनाधिपो वैकुण्ठो देवता। भूश्छन्द। मम सकलविद्याप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्।

ध्यानं—वृन्दाख्याधिबनाधीशं वैकुण्ठाख्यं जगत्प्रभुं। ध्यायेन्नारायणं देवं सनकादिभिः संस्तुतम् ॥

इति ध्यात्वा यथाशक्ति० गुह्या० ॥ इति वृन्दाबनाधिबनाधिपवैकुण्ठमन्त्रः ॥ १३४ ॥

अथ द्वादशमसंकेतबटाधिबनाधिपराधारमणमन्त्रः। राधापटले—

ओं ह्रां क्लीं सः संकेटबटाधिबनाधिपतये राधारमणाय नमः। इति त्रयविंशाक्षरो राधारमणमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य ब्रह्म ऋषिः संकेतबटाधिबनाधिपो राधारमणो देवता। गायत्रीच्छन्दः मम कृष्णविहारदर्शनार्थे जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्।

अथ ध्यानं—राधयाऽशोकनन्दिन्या कृष्णं वैहारिणं हरिं। वन्दे संकेतशोभाढ्यं वनाधीशं मनोहरं ॥

इति ध्यात्वा यथाशक्तिजपं कृत्वा तत्र स्थाने समर्पयेत्। गुह्यातिगुह्यगोप्तस्त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥

इति द्वादशाधिबनाधिपमन्त्रानि ॥ १३५ ॥

देने वाला तथा श्रेष्ठ है। वट के बाहिर बन तथा मध्य स्थल में वट है। वट वृक्ष के कारण वट है। वटपत्र द्वारा वटों का चिन्ह दिखावें।

"ओं वः यावबटाधिबनाधिपतये व्रजवराय नमः" इस १९ अक्षर मन्त्र द्वारा तीन वार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का विश्वामित्र ऋषि, व्रजवर जी देवता, पंक्ति छन्द, मेरा सकल सौभाग्य सम्पत्ति प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है। न्यास पहिले की तरह जानना। नाना प्रकार शृङ्गार, भूषण से युक्त मनोहर युगल स्वरूप श्रीराधा-कृष्ण का ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र का जप तथा यात्रा का समर्पण करें ॥ १३३ ॥

अब वृन्दाबनाधिबनाधिप वैकुण्ठ जी का मन्त्र कहते हैं। सूतोपनिषद् में—"ओं वृन्दाबनाधिबनाधिपतये वैकुण्ठाय नमः" इस १८ अक्षर मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें। इस मन्त्र का जन्हु ऋषि, वैकुण्ठ जी देवता, भू छन्द, मेरा समस्त विद्या प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है। न्यास पहिले की तरह है। वृन्दाबन के ईश्वर जगत् के प्रभु वैकुण्ठ नामक नारायण स्वरूप का ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १३४ ॥

अब संकेत बटाधिबनाधिप राधारमणजी का मन्त्र कहते हैं। राधापटलमें-ओं ह्रां क्लीं सः संकेटबटाधिबनाधिपतये राधारमणाय नमः"इस २३अक्षर मन्त्रसे तीन वार प्राणायाम करें। इस मन्त्रका ब्रह्म ऋषि राधारमण जी देवता,गायत्री छन्द,मेरा श्रीकृष्ण विहार दर्शनके लिये जपमें विनियोगहै। श्रीराधिका तथा अशोकनन्दिनीके

इत्यावासकृता मन्त्राः नित्याराधनजापकाः । प्रयोगवनसेवायां सर्वकामार्थसिद्धये ॥
इत्यष्टचत्वारसमाश्रितानि वनानि पुण्यानि मनोऽर्थदानि ।
श्रीभट्टनारायणनिर्म्मितानि व्रजाकराख्याः व्रजमण्डलानि ॥ १३६ ॥
इति श्रीभास्करात्मजश्रीनारायणभट्टगोस्वामीविरचिते व्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे प्रथमोऽध्यायः ॥

द्वितीय अध्यायः

अथ द्वादश तपोवनाण्युच्यन्ते । वराहपुराणे—
आदौ तपोवनं नाम द्वितीयं भूषणं वनं । क्रीडावनं तृतीयञ्च तुर्य्यं वत्सवनं स्मृतम् ॥
वनं रूद्रवनं नाम पञ्चमं रमणं वनं । षष्ठं ह्यशोकनामानं वनं सप्तमसंज्ञकम् ॥
नारायणं वनं ह्यष्ट नवमाख्यं सखावनम । सखीवनं महाश्रेष्ठं दशमं परिकीर्त्तितम् ॥
कृष्णान्तर्द्धाननामानमेकादशवनं स्मृतम् । वनं मुक्तिबनं नाम द्वादशं तपसाह्वयम् ॥
एते द्वादश आख्यातास्तपोवनमहाफलाः । इति द्वादश तपोबनानि ॥ १ ॥
अथ द्वादश मोक्षवनानि । आदिपुराणे—
पापांकुशवनं ह्यादौ रोगांकुशवनं द्वयम् । सरस्वतीवनं मोक्ष जीवनाख्य चतुर्थकम् ॥
नवलाख्यं वनं श्रेष्ठं पञ्चमं मोक्षसंज्ञकम् । किशोराख्यं वनं षष्ठं किशोर्य्याख्यं च सप्तमम् ॥
अष्टमं च वियोगाख्यं वनं मोक्षप्रदायकम् । नवमं च पिपासाख्यं वनं चात्रकसंज्ञकम् ॥
दशमं च तथा प्रोक्तं कपिवनमेकादशम् । गोदृष्टिवनमाख्यातं द्वादशं मोक्षसंज्ञकम् ॥
एते द्वादश आख्याता मोक्षसंज्ञाःशुभप्रदा ॥ इति द्वादश मोक्षवनानि ॥ २ ॥
अथ द्वादश कामबनानि । भविष्ये—
विहस्याख्यं वनं नाम प्रथमं कामनाप्रदम् । आहूतवननामानं द्वितीयं शुभदायकम् ॥
कृष्णस्थितिवनं नाम तृतीयं कामनाप्रदम् । चेष्टावनं चतुर्थं च पञ्चमं स्वपनं वनम् ॥

साथ विहार शील, संकेत वन के ईश्वर मनोहर श्रीकृष्ण का ध्यान कर यथाशक्ति मन्त्र जप तथा यात्रा समर्पण करें ॥ १३५ ॥

यह सब मन्त्र वासपूर्वक नित्य आराधन, जप के लिये हैं जिनका प्रयोग से समस्त कामना सिद्धि होती है। इति यह ४८ वनों से समाश्रित, पुण्यरूप, मनो अर्थ को देने वाला व्रजमण्डल है। जो कि श्रीनारायणभट्टगोस्वामी जी के द्वारा पुनः निर्म्मित है ॥ १३६ ॥

भास्करात्मज श्री नारायणभट्टगोस्वामी जी के द्वारा विरचित व्रजभक्तिविलास ग्रन्थ का प्रथम अध्याय समाप्त हुआ है।

अब द्वादश तपोबन कहते हैं। बाराह पुराण में यथा—१ तपोवन, २ भूषणबन, ३ क्रीडावन, ४ वत्सबन, ५ रुद्रबन, ६ रमणबन, ७ अशोकबन, ८ नारायणबन, ९ सखावन, १० सखीबन, ११ कृष्णान्तर्ध्यानवन, १२ मुक्तिबन हैं ॥ १ ॥

अब द्वादश मोक्षबन कहते हैं। आदि-पुराण में यथा—कुशबन, रोगाकुंशवन, सरस्वतीबन, जीवनबन,नवलवन, क्षरवन, किशोरीबन, वियोगबन, पियासाबन, चात्रकबन, कपिबन, गोदृष्टिबन हैं ॥२॥

अब द्वादश काम बन कहते हैं। भविष्य में यथा—विहस्यवन,आहूतवन,कृष्णस्थितिबन, चेष्टाबन

गह्वरनाम षष्ठं च शुकाख्यं सप्तमं शुभम् । कपोतपारखण्डाख्यं वनमष्टम कीर्त्तितम् ॥
नवं चक्रवनं नाम दशमं शेषशायनम् । दोलावनं समाख्यातमेकादशमसंज्ञकम् ॥
द्वादशं श्रवणाख्यं च काम संज्ञा वनाः स्मृताः ॥ इति द्वादश कामनावनानि ॥ ३ ॥

अथ द्वादशार्थवनानि । स्कान्दे:—

आदौ हाहावनं नाम द्वितीयं गायनं वनं । गन्धर्व्वाख्यं तृतीयं च ज्ञानं वनं चतुर्थकम् ॥
राजनीतवनं श्रेष्ठं पञ्चमं परिकीर्त्तितम् । षष्ठं लेपननामानं बोलखोरा च सप्तमं ॥
मेलनं ह्यष्टमं प्रोक्तं वनं नाम सुखप्रदम् । परस्परवनं नाम नवमं पाडरं तथा ॥
दशमं रुद्रवीर्ज्जस्य स्खलनं शुभदं वनम् । एकादशममाख्यातं द्वादशं मोहनीवनं ॥
इत्यर्थाख्यावनाख्याता द्वादशा वहुपुण्यदाः ॥ इति द्वादशार्थवनानि ॥ ४ ॥

अथ द्वादश धर्म्मवनानि । स्मृत्यर्थसारे—

आदौ जेतवनं नाम द्वयं निम्बवनं तथा । गोपीवनं तृतीयं च तुर्य्यं वियद्वनं तथा ॥
पञ्चमं नूपुराख्यं च षष्ठं यक्षवनं तथा । सप्तमं पुण्यसंज्ञकं अष्टमाम्रवनं नाम ॥
प्रतिज्ञामुत्तमं नवं चम्पावनं दशमं च । कामरुवनेकादशं कृष्णदर्शनसंज्ञकम् ॥
इति द्वादशमाख्यातं धर्म्मसंज्ञावनं शुभम् ॥ इति द्वादश धर्म्मवनानि ॥ ५ ॥

अथ द्वादशसिद्धवनानि । विष्णुपुराणे—

सारिकाख्यं वनं ह्यादौ विद्रुमाख्यं वनं द्वयं । त्रयं पुष्पवनं नाम चतुर्थं मालतीवनं ॥
नाम नागवनं श्रेष्ठं पञ्चमं परिकीर्त्तितं । षष्ठं रावलनामानं सप्तमं वकुलं वनं ॥
तिलकाख्यं वनं श्रेष्ठमष्टमं परिकीर्त्तितम् । नवं दीपवनं नाम दशमं श्राद्ध संज्ञकम् ॥
षट् पदाख्यवनं श्रेष्ठमेकादशं प्रकीर्त्तितम् । वनं त्रिभुवनाख्यं च द्वादशं सिद्धिदायकम् ॥
इति द्वादश सिद्धिवनानि ॥ ६ ॥

अथैषां षण्णां तपोऽर्थकामधर्म्ममोक्षसिद्धिवनानां प्रदक्षिणा सांगषड्वनानि । भविष्योत्तरे—

मूर्द्धस्पर्शवनाख्यं च वनमादौ प्रकीर्त्तितं । द्वयं पात्रवनं नाम त्रयं पितृवनं तथा ।
विहारवननामानं चतुर्थं परिकीर्त्तितं । विचित्रवननामानं पञ्चमं शुभदं नृणाम् ॥
षष्ठं विस्मरणाख्यं च षडेते सांग संज्ञकाः ॥ इति षट् सांगवनानि ॥ ७ ॥

स्वपनवन, गह्वरवन, शुकवन, कपोतपारखण्डवन, चक्रवन, शेषशायनवन, दोलावन, श्रवणवन हैं ॥ ३ ॥

अब द्वादश अर्थ वन कहते हैं । स्कन्ध में—हाहावन, गायनवन, गन्धर्ववन, ज्ञानवन, राजनीतवन, लेपनवन, बोलखोरावन, मेलनवन, परस्परवन, पाडरवन, रुद्रवीर्जवन, मोहिनीवन हैं ॥ ४ ॥

अब द्वादश धर्म्म वन कहते हैं । स्मृत्यर्थसार में—जेतवन, निम्ववन, गोपीवन, वियद्वन, नुपूरवन, यक्षवन, पुण्यवन, आम्रवन, प्रतिज्ञावन, चम्पावन, कामरुवन, कृष्णदर्शनवन हैं ॥ ५ ॥

अब द्वादश सिद्ध वन कहते हैं । विष्णुपुराण में यथा—सारिकावन, विद्रुमवन, पुष्पवन, मालतीवन, नागवन, रावल, वकुलवन, तिलकवन, दीपवन, श्राद्धवन, षट्पदवन, त्रिभुवनवन हैं ॥६॥

अब तपोवन, अर्थवन, काम्यवन धर्म्मवन मोक्षवन, सिद्धिवन, समूह का सांगवन के साथ प्रद-

अथैषां वनानामभ्यन्तर संकेटवटाद्याः यमुनायाश्चतुराशीतिक्रोशमर्य्यादान्तरे षोडशवटानि । पाद्मे—

संकेतवटमादौ तु भाण्डीराख्यं वटं द्वयम् । जाम्बकाख्यं तृतीयं च तूर्य्यं शृङ्गारसंज्ञकम् ॥
पञ्चमं वंशीवटं च श्रीवटं नाम षष्ठकम् । सप्तमं च जटाजूटं कामाख्यवटमष्टमम् ॥
मनोर्थवटकं नाम नवमं परिकीर्त्तितं । आशावटं महाश्रेष्ठं दशमं शुभदायकम् ।
अशोकाख्यं वटं श्रेष्ठमेकादशमुदाहृतं । नाम केलिवटं श्रेष्ठं द्वादशं परिकीर्त्तितम् ॥
नाम ब्रह्मवटं चैव त्रयोदशमसंज्ञकम् । नाम रुद्रवटं श्रेष्ठं चतुर्द्दशमुदाहृतम् ॥
श्रीधराख्यं वटं ख्यातं पञ्चदशममीरितम् । सावित्राख्यं वटं श्रेष्ठं संख्या षोडशनिर्म्मितम् ॥
इति ब्रजमण्डलान्तर षोडशवटानि ॥ ८ ॥

अथाष्टसप्ततितपोवनादीनां सप्तसंज्ञिकाणं ततोर्थकामधर्म्म मोक्षसिद्धि प्रदा प्रदक्षिणासांगाणामेतेषां वनानामधिपादेवता उच्यंते । आदिवाराहे—

तत्रादौ द्वादश ततोवनानामधिपा । एते द्वादश तपोवनानि भगवद्वराहरोमणि । अथाधिपादेवताः-विष्णुस्तपोवनाधिपो देवः । अटलेश्वरो भूषणवनाधिपो देवः ॥ गरुडध्वजो क्रीड.वनाधिपो देवः ॥ गोपालो वत्सवनाधिपो देवः ॥ श्री गोविन्दो रुद्रवनाधिपो देवः ॥ मधुरिपुः रमणवनाधिपो देवः ॥ श्रीरामः अशोकवनाधिपो देवः।शौरिर्नारायणवनाधिपो देवः॥ श्रीपतिः सखावनाधिपो देवः॥ चूडामणिः सर्खीवनाधिपो देवः॥ कंसाराति कृष्णान्तर्ध्यानवनाधिपो देवः ॥ अधोक्षजो मुक्तिवनाधिपो देवः ॥ इति द्वादशतपोवनाधिपाः ॥ ९ ॥

अथ द्वादशमोक्षवनाधिपा स्कान्दे ।

विश्वम्भरो पापाकुंशवनाधिपो देवः ॥ रामेश्वरो रोगाकुंशवनाधिपो देवः ॥ बागीशो सरस्वतीवनाधिपो देवः ॥ श्रीरामचन्द्रः जीवनवनाधिपो देवः ॥ कैटभजित् नवलवनाधिपो देवः ॥ श्रीवत्सलाञ्छनो क्षरवनाधिपो देवः ॥ जयकृष्णः किशोरीवनाधिपो देवः । ताडकान्तको वियोगवनाधिपो देवः । गोपालेशः गोदष्टिवनाधिपो देवः । ब्रजराजो पिपासावनाधिपो देवः । दैत्यारिश्चात्रकाख्यवनाधिपो देवः । लक्ष्मणाग्रजो कपिवनाधिपो देवः ॥ इति द्वादश मोक्षवनाधिपाः । एते द्वादश मोक्षवनानि भगवद्वाराहरोमाणि ॥ १० ॥

क्षिणा कहते हैं। भविष्योत्तर में यथा—सूर्य्यस्पर्शवन, पात्रवन, पितृवन, विहारवन, विचित्रवन, विस्मरणवन, यह सांगवन है ॥ ७ ॥

इन सब वन के अन्तर्गत १६ वट हैं। पाद्मे यथा—संकेतवट, भाण्डीरवट, जावट, शृङ्गारवट, वंशीवट, श्रीवट, जटाजूटवट, कामवट, मनोरथवट, आशावट, अशोकवट, केलिवट, ब्रह्मवट, रुद्रवट, श्रीधरवट, सावित्रीवट ॥ ८ ॥

भगवान् के वाहु-रोमरूप द्वादश तपोवन का अधिप यथा—तपोवन के विष्णु, भूषणवन के अटलेश्वर, रमणवन के मधुरिपु, वत्सवन के गोपाल, क्रीडावन के गरुड़ध्वज, रुद्रवन के श्रीगोविन्द, अशोकवन के श्रीराम, नारायणवन के शौरि, सखावन के श्रीपति, सखीवन के चूड़ामणि, कृष्णान्तर्द्धानवन के कंसाराति, भक्तिवन के अधोक्षज, अधिदेव हैं ॥ ९ ॥

अब द्वादश मोक्ष वन का अधिप कहते हैं। स्कान्द में—पापांकुश के विश्वम्भर, रोगाकुंशवन के रामेश्वर, सरस्वतीवन के बागीश, नवलवन के कैटभजित्, रमणवन के श्रीवत्सलाञ्छन, किशोरीवन के

अथ द्वादश धर्म्मबनाधिपा उच्यन्ते पाद्मे—

विजयनाथो विजयाख्यधर्म्मबनाधिपो देवः। रमाप्रियो निम्बबनाधिपो देवः। कौस्तुभप्रियः गोपानबनाधिपो देवः। सनातनो वियद्बनाधिपो देवः। नवनीतरायः नूपुरबनाधिपो देवः। बल्लवीनन्दनः यत्तबनाधिपो देवः। कल्याणरायः पुण्यबनाधिपो देवः। सच्चिदानन्दोऽग्रबनाधिपो देवः। परमानन्दो प्रतिज्ञाबनाधिपो देवः। मेघश्यामश्चम्पाबनाधिपो देवः। विश्वेश्वरो कामरुबनाधिपो देवः। कदम्बकुसुमोद्भासी कृष्णदर्शनबनाधिपो देवः। इति द्वादश धर्म्मबनाधिपदेवाः ॥ ११ ॥

अथ द्वादशार्थबनाधिपदेवाः। सौपर्ण्योपनिषदि—

असुरान्तकः हाहाबनाधिपो देवः। वृषासुरविनाशको गानबनाधिपो देवः। तृणावर्त्तकृपाकरो गन्धर्व्वबनाधिपो देवः। व्रजोत्सवो प्रशंसाख्यबनाधिपो देवः। नरहरिः नीतिबनाधिपो देवः। लोकपालनाथो लेपनबनाधिपो देवः। कपिलः ज्ञानबनाधिपो देवः। वृन्दापतिः मेलनबनाधिपो देवः ॥ विजयेश्वरः परस्परबनाधिपो देवः ॥ कुलग्रामी पाडरबनाधिपो देवः॥विघ्नहारी बीर्जबनाधिपो देवः॥कमलेश्वरो मोहनीबनाधिपो देवः ॥ इति द्वादशार्थबनाधिपाः ॥ १२ ॥

अथ द्वादश कामबनाधिपाः। विष्णुपुराणे—

दशरथात्मजो विहस्यबनाधिपो देवः। रावणारि राहूतबनाधिपो देवः। जनकात्मजो कृष्णस्थितिबनाधिपो देवः। बलिध्वंसी चेष्टाबनाधिपो देवः। गोलोकेशः स्वपनबनाधिपो देवः। गोवर्द्धनेशो गह्वरबनाधिपो देवः। द्वारकेशो शुकबनाधिपो देवः। साम्बकुष्ठविनाशकः कपोतबनाधिपो देवः। चन्द्रावलीपतिश्चक्रबनाधिपो देवः। लक्ष्मीनिवासो लघुशेषशायिबनाधिपो देवः। गोपतिर्दोलाबनाधिपो देवः। भक्तवत्सलो श्रवणबनाधिपो देवः ॥

चतुस्पथाधिपाः प्रोकास्त्वष्टचत्वारसंज्ञकाः ॥ इति द्वादशकामबनाधिपाः ॥ १३ ॥

जयकृष्ण, वियोगबन के ताडकान्त, गोदग्निबन के गोपालेश, पिपासाबन के व्रजराज, चात्रगबन के दैत्यारि, कपिबन के लक्ष्मणाग्रज, पापाकुंश के विश्वम्भर अधिदेव हैं ॥ १० ॥

अब द्वादश धर्म्मबन के अधिप कहते हैं। पाद्म में—विजयबन के विजयनाथ, निम्बबन के रमाप्रिय, गोपनबन के कौस्तुभप्रिय, वियद्बन के सनातन, नूपुरबन के नवनीतराय, यत्तबन के बल्लभीनंदन, पुण्यबन के कल्याणराय, अग्रबन के सच्चिदानन्द, प्रतिज्ञाबन के परमानन्द, याचन्नाबन के मेघश्याम, कामरुबन के विश्वेश्वर, कृष्णदर्शनबन के कदम्बकुसुमोद्भासी, अधिदेव हैं ॥ ११ ॥

अर्थबन का अधिदेवता कहते हैं। सौपर्ण्योपनिषद् में—हाहाबन के असुरान्त, वृषासुरनाशक गानबन के, गन्धर्व्वबन के तृणावर्त्तकृपाकर, प्रशंसाबन के व्रजोत्सव, नीतिबन के नरहरि, लेपनबन के लोकनाथ, ज्ञानबन के कपिल, मेलनबन के वृन्दापति, परस्परबन के विजयेश्वर, पाडरबन के कुलग्रामी, बीर्जबन के बिहारी, मोहनीबन के कमलेश्वर, अधिदेव हैं ॥ १२ ॥

अब द्वादश कामबन के अधिप कहते हैं। विष्णुपुराण में यथा-विहस्यबन के दशरथात्मज, राहूतबन के रावणारि, कृष्णस्थितिबन के जनकात्मज, चेष्टाबन के बलिध्वंसी, स्वपनबन के गोकुलेश, गह्वरबन के गोवर्द्धनेश, नवनबन के द्वारकेश, कपोतबन के सांबकुष्ठविनाशक, चक्रबन के चन्द्रावलिपति, लघुशेषशायि के लक्ष्मीनिवास, दोलाबन के गोपति, श्रवणबन के भक्तवत्सल अधिदेव हैं ॥ १३ ॥

अथ द्वादश सिद्धबनाधिपाः । विष्णुयामले—

विजयगोविन्दो सारिकाबनाधिपो देवः । गोकुलेशो विद्रुमबनाधिपो देवः । गोपीशः पुष्पबनाधिपो देवः । गोपीकान्तः जातिबनाधिपो देवः । हरिगोविन्दो नागबनाधिपो देवः । मेघश्यामश्चम्पाबनाधिपो देवः । श्रीनिवास रावलबनाधिपो देवः । त्र्यम्बकेशो बकुलबनाधिपो देवः । पूतनान्तकस्तिलकबनाधिपो देवः । जगन्निवासः श्राद्धबनाधिपो देवः । त्रिभुवनेशः षट्पदबनाधिपो देवः । इति द्वादश सिद्धबनाधिपाः ॥ १४ ॥

अथ षट्प्रदक्षिणा सांगबनाधिपाः । भविष्ये—

हरिस्सूर्य्यपतनबनाधिपो देवः । व्रजभावनो पात्रबनाधिपो देवः । राधाकृष्णो पितृबनाधिपो देवः । चाणूरान्तको विहारिबनाधिपो देवः । व्रजपालो विचित्रबनाधिपो देवः । हरिकृष्णो विस्मारणबनाधिपो देवः॥ इति षट्प्रदक्षिणा सांगबनाधिपाः देवाः ॥ १५ ॥

अथ चतुराशीतिकोशमर्य्यादमथुरामण्डलमध्ये मर्य्यादीकृत्य चतुर्दिक्षु व्रजमण्डलमेकविंशक्रोशपरिमाणीय चतुः सीमाबनानि प्रतापमार्त्तण्डे— पूर्वे हास्यबनं नाम पश्चिमस्यां पहारिबम् । दक्षिणे जन्हुसंज्ञकं सोनहदाख्यं तथोत्तरे ॥ इति चतुः सीमाबनानि ।

अथैषां चतुर्णां चत्वारोऽधिपाः ।—नारदीयेऽन्तिमपटले-लीलाकमललोचनो हास्यबनाधिपो देवः । विधिपश्यतिलोकेश्वरो पहारबनाधिपो देवः । लंकाधिपकुलध्वंसी जन्हुबनाधिपो देवः । श्रीवत्सलाञ्छनः त्रिभुवनबनाधिपो देवः ॥ इति चतुर्थबनाधिपाः ।

अन्योक्तिः—व्रजमण्डलं देवाश्चतुरस्रमण्डलाकारं चतुरशीतिमर्य्यादं पश्यन्ति । ऋषयः शृङ्गारप्रकाश्यं पश्यन्ति । मुनयः आत्मभिर्नारदादिभि र्वर्त्तुलमण्डलाकारं पश्यन्ति इतिव्रजमण्डलं मथुरामंडलं मध्यमर्य्यादीकृत्येति॥१६॥

अथ संकेतबटादिषोडशबटाधिपाः । स्कान्दे भूमिखण्डे—

राधारमणो संकेतबटाधिपो देवः । गरुडवाहनो भाण्डीरबटाधिपो देवः । गोपीश्वरो यावटबटाधिपो देवः । रुक्मिणीप्रियः शृङ्गारबटाधिपो देवः । वंशीधरो वंशीबटाधिपो देवः । लक्ष्मीनृसिंहो श्रीबटाधिपो देवः । राधामोहनो जटाजूटबनाधिपो देवः । श्रीनाथः कामबटाधिपो देवः । गदापाणि मनोरथबटाधिपो देवः ।

अब द्वादश सिद्धबन के अधिप कहते हैं । विष्णुयामल में —सारिकाबन के विजयगोविन्द, विद्रुमबन के गोकुलेश, पुष्पबन के गोपीश, जातिबन के गोपीकान्त, नागबन के हरिगोविन्द, चम्पाबन के मेघश्याम, सारिकाबन के श्रीनिवास, बकुलबन के त्र्यम्बकेश, तिलकबन के पूतनान्तक, दीपबन के शकटान्तक, श्राद्धबन के जगन्निवास, षट्पदबन के त्रिभुवनेश, अधिदेव हैं ॥ १४ ॥

अब ६ प्रदक्षिणा सांगबन के अधिप कहते हैं । भविष्य में—सूर्य्यपतनबन के हरि, पात्रबन के व्रजाभरण, पितृबन के राधाकृष्ण, विहारिबन के चाणूरान्तक, विचित्रबन के व्रजपाल, विसमरणबन के हरिकृष्ण, अधिदेव हैं ॥ १५ ॥

८४ क्रोश परिमाण मथुरा मण्डल में चारि तरफ २१ क्रोश परिमाण सीमा प्राप्त बन कहते हैं । प्रतापमार्त्तण्ड में—पूर्व में हास्यबन, पश्चिम में अपहारिबन, दक्षिण में जन्हुबन, उत्तर में सोनहदबन हैं । अन्तिम पटल में कहा कि—हास्यबन के लीलाकमललोचन, पहारबन के विधिपश्यतिलोकेश्वर, जन्हुबन के लंकाधिपकुलध्वंसी, सोनहदबन के श्रीवत्सलाञ्छन, अधिदेव हैं ॥ १६ ॥

अब १६ बट के अधिप कहते हैं । स्कान्द मे भूमिखण्ड पर-संकेतबट के राधारमण, भाण्डीरबट

विभीषणपरमदस्त्वाशावटाधिपो देवः। सीतानन्दकरोऽशोकवटाधिपो देवः। कालीयदमनकारकः केलिवटाधिपो देवः। गदाधरः ब्रह्मवटाधिपो देवः। वारिधिबन्धनो रुद्रवटाधिपो देवः। रामचन्द्रः श्रीधरवटाधिपो देवः। चक्रधरः सावित्री वटाधिपो देवः॥ इति संकेतवटादिषोडशवटाधिपाः॥ १७॥

अथ त्रयत्रिंशोत्तरशतानि बनानि यमुनोत्तरदक्षिणतटस्थानि वक्ष्यन्ते। भविष्ये—मथुराद्येकनवति

मथुरा १, राधाकुण्ड २, नन्दग्राम ३, गढ़ ४, ललितग्राम ५, वृषभानुपुर, ६, गोवर्द्धन ७, कामनावन ८, यावबट ९, नारदवन १०, संकेत ११, काम्यबन १२, कोकिलावन, १३, तालबन, १४, कुमुदवन १५, छत्रबन १६, खदिरबन १७, भद्रबन १८, बहुलावन १९, मधुबन २०, जन्हुबन २१, मेनकावन २२, कजलीवन २३, नन्दकूपबन २४, कुशबन २५, अप्सराबन २६, विह्वलबन २७, कदम्बवन २८, स्वर्णबन २९, सुरभीवन ३०, प्रेमवन ३१, मयूरबन ३२, मानेंगितबन ३३, शेषशयनबन ३४, वृन्दाबन ३५, परमानन्दबन ३६, रंकप्रतिबन ३७, वार्त्ताबन ३८, करहपुरबन ३९, अञ्जनपुरबन ४०, कर्णबन ४१, क्षीपनबन ४२, नन्दनवन ४३, इन्द्रबन ४४, शिक्षाबन ४५, चन्द्रावलीबन ४६, लोहबन ४७, सारिकाबन ४८, जातिबन ४९, ताराबन ५०, नागवन ५१, सूर्य्यपतनबन ५२, तिलबन ५३, त्रिभुवनबन ५४, विस्मरणवन ५५, पर्वतपहारीबन ५६, अशोकबन ५७, नारायणबन ५८, सखीबन ५९, गोदृष्टिबन ६०, स्वपनबन ६१, गह्वरबन ६२, कपोतबन ६३, लघुशेषशयनबन ६४, हाहाबन ६५, गानबन ६६, गन्धर्व्वबन ६७, ज्ञानबन ६८, नीतबन ६९, लेपनबन ७०, प्रशंसावन ७१, मेलनबन ७२, परस्परबन ७३, पाडरबन ७४, वीर्य्यबन ७५, मोहनीवन ७६, विलयबन ७७, निम्बबन ७८, गोपानबन ७९, वियद्वन ८०, नूपुरबन ८१, पुण्यबन ८२, यक्षबन ८३, अग्रबन ८४, प्रतिज्ञाबन ८५, कामरुबन ८६, कृष्णस्थितबन ८७, पिपासाबन ८८, चात्रगबन ८९, विहस्यवन ९०, आह्वानबन ९१, कृष्णान्तर्द्धानबन ९२॥ इत्येकनवतिबनानि यमुनादक्षिण तटस्थानि॥ १८॥

के गरुड़वाहन, जावबट के गोपीश्वर, शृङ्गारवट के रुक्मिणीप्रिय, बंशीबट के बंशीधर, श्रीवट के लक्ष्मीनृसिंह, जटाजूटवन के राधामोहन, कामवट के श्रीनाथ, मनोरथबट के गदापाणि, आशावट के विभीषणपरमद, अशोकवट के सीतानन्दकर, केलिवट के कालीदमनकारक, ब्रह्मवट के गदाधर, रुद्रवट के वारिधिबन्धन, श्रीधरवट के रामचन्द्र, सावित्रीवट के चक्रधर अधिदेव हैं॥ १७॥

यमुना के दक्षिण तट में मथुरा से लेकर ९२ वन हैं। भविष्य में यथा—मथुरा, राधाकुण्ड, गढ़, नन्दग्राम, ललिताग्राम, वृषभानुपुर, गोवर्द्धन, कामनावन, जाववट, नारदवन, संकेत, काम्यवन, कोकिलावन, तालबन, कुमुदवन, छत्रबन, खदीरवन, भद्रवन, बहुलावन, मधुवन, जन्हुवन, मेनकावन, कजलीबन, नन्दकूपवन, कुशवन, अप्सराबन, विह्वलबन, कदम्बवर्ण, स्वर्णबन, सुरभीवन; प्रेमवन, मयूरवन, मानेंगितवन, शेषशयनवन, वृन्दाबन, परमानन्दबन, रंकप्रतिवन, वार्त्तावन, करहपुरवन, अञ्जनबन, कर्णबन, क्षिपनवन, नन्दनवन, इन्द्रवन, सीक्षावन, चन्द्रावलीबन, लोहवन, सारिकाबन, जातिवन, तारावन, नागबन, सूर्य्यपतनवन, तिलबन, त्रिभुवनवन, विस्मरणबन, पर्वतपहारीबन, अशोकवन, नारायणवन, सखीबन, गोदृष्टिबन, स्वपनवन, गह्वरवन; कपोतबन, लघुशेषशयनबन, हाहाबन, गानबन, गन्धर्वबन, ज्ञानबन, नितबन, लेपनवन, प्रशंसावन, मेलनबन, परस्परवन, पाड़रबन, वीर्जवन, मोहनीवन, विजयबन, निम्बबन, गोपानबन, वियद्वन, नूपुरवन, पुण्यबन, यक्षबन, अग्रबन, प्रतिज्ञावन, कामरुबन, कृष्णस्थितवन, पिपासाबन, चात्रगबन, विहस्यवन, आह्वानबन, कृष्णान्तर्द्धानबन॥ १८॥

अथ द्विचत्वारिंशद्वनानि यमुनोत्तरतटस्थानि । सन्मोहनीतन्त्रे—

महावन ॥१॥ लोहजंघानबन ॥२॥ बिल्वबन ॥३॥ मृद्वन ॥४॥ कपिवन ॥५॥ ब्रह्मबन ॥६॥ कामवन ॥७॥ विद्रुमवन ॥८॥ पुष्पबन ॥९॥ चम्पाबन ॥१०॥ बकुलबन ॥११॥ दीपवन ॥१२॥ श्राद्धवन ॥१३॥ षट्पदबन ॥१४॥ पात्रवन ॥१५॥ चित्रवन ॥१६॥ बिहारवन ॥१७॥ विचित्रवन ॥१८॥हास्यबन ॥१९॥ जाम्बवन ॥२०॥ तपोबन ॥२१॥ भूषणबन ॥२२॥ वत्सवन ॥२३॥ क्रीडाबन ॥२४॥ रुद्रवन॥२५॥ रमणवन ॥२६॥ सखावन ॥२७॥ कृष्णान्तर्द्धानवन ॥२८॥ मुक्तिवन ॥२९॥ पापाकुंशवन ॥३०॥ रोगाकुंशवन ॥३१॥ सरस्वतीवन ॥३२॥ नवलवन ॥३३॥ किशोरवन ॥३४॥ किशोरीवन ॥३५॥ वियोगवन ॥३६॥ चेष्टावन ॥३७॥ सुखवन ॥३८॥ चक्रवन ॥३९॥ दोलावन ॥४०॥ बलदेवस्थल ॥४१॥ गोकुल ॥४२॥ इति द्विचत्वारिंशद्वनानि यमुनोत्तरतटस्थानि ॥ १९ ॥

अथ षोडशवटानि आह यमुनोत्तरदक्षिणतटयोः । भविष्योत्तरे—

समन्तात्तु वटानां च वनमस्ति मनोहरं । मध्ये वटं विजानीयात् वटलिंगानि पश्यति ॥

अथैवाष्ट संकेतवटाद्या यमुनादक्षिणतटस्थाः । संकेतवट ॥१॥ याववट ॥२॥ शृङ्गारवट ॥३॥ जटाजूटवट ॥४॥ बंशीवट ॥५॥ केलिवट ॥६॥ श्रीधरवट ॥७॥ रुद्रवट ॥८॥ इत्यष्टवटाः यमुनादक्षिणतटस्थाः ॥

अथाष्ट भाण्डीरवटाद्याः यमुनोत्तरतटस्थाः । भाण्डीरवट ॥१॥ श्रीवट ॥२॥ कामवट ॥३॥ मनोरथवट ॥४॥ आशावट ॥५॥ अशोकवट ॥६॥ ब्रह्मवट ॥७॥ सावित्रीवट ॥८॥ इत्यष्टवटाः यमुनोत्तरतटस्थाः ॥२०॥

अथ षोडशवटानां त्रयस्त्रिंशोत्तरशतवनानामभ्यन्तरगतानां स्थानानि तत्र दक्षिणतटस्थानामेकनवतिवनानां संकेतवटाद्याष्टवटेष्वेतेषु वनेषु श्रीकृष्णराज्यं । यमुनोत्तरतटस्थवनेषु चाष्टवटेषु श्रीबलदेवरामराज्यं । अथवनेषु वा वटेषु श्रीराधादीनां नवतिसखीनां भिन्नभिन्नमधिकारराज्यं । बृहद्गौतमीये—

वृषभानुपुर ॥१॥ संकेतवट ॥२॥ नन्दग्राम ॥३॥ राधाकुण्ड ॥४॥ गोवर्द्धन ॥५॥ गोपालपुर ॥६॥ अप्सरावन ॥७॥ नारदवन ॥८॥ सुरभीवन॥९॥पाडरवन॥१०॥डिम्बवन ॥११॥ इति भानुनन्दिनीराज्यं ॥२१॥

यमुना के उत्तरतट में ४२ वन हैं । सन्मोहिनी तन्त्र में—महावन, लोहजंघानबन, बिल्वबन, मृद्वन, कपिवन, ब्रह्मवन, कामवन, विद्रुमवन, पुष्पबन, चम्पाबन, बकुलवन, दीपवन, श्राद्धवन, षट्पदवन, पात्रवन, चित्रवन, बिहारवन, विचित्रवन, हास्यवन, जाम्बवन, तपोवन, भूषणवन, वत्सबन, क्रीड़ावन, रुद्रवन, रमणवन,सखावन, कृष्णान्तर्द्धानवन, मुक्तिवन, पापाकुंशवन, रोगाकुंशवन, सरस्वतीवन, नवलवन, किशोरवन, किशोरीवन, वियोगवन, चेष्टावन, शुकवन, चक्रवन, दोलावन, बलदेवस्थल, गोकुल ॥ १९ ॥

अब यमुना के उत्तर दक्षिण तट पर १६ वट कहते हैं । भविष्योत्तर में यथा—वट मध्य देश में और चारि ओर में सुन्दरवन जानना । संकेतवट, जाववट, शृगारवट, जटाजूटवन, बंशीवट, केलिवट, श्रीधरवट, रुद्रवट ८ दक्षिणतट में भाण्डीरवट, श्रीवट, कामवट, मनोऽर्थवट, आशावट, अशोकवट, ब्रह्मवट, सावित्रीवट ८ उत्तर तट में हैं ॥ २० ॥

यमुना के दक्षिण तट पर बनसमूह तथा वट समूह श्रीकृष्ण के राज्य है और उत्तर तट के वनसमूह तथा वटसमूह श्रीबलदेव के राज्य है । वनसमूह में तथा वटसमूह में श्रीराधादि ९० सखीयां के भिन्नभिन्न अधिकार राज्य कहते हैं । बृहद्गौतमीय में—वृषभानुपुर, संकेतवट, नन्दग्राम, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, गोपालपुर, अप्सरावन, नारदवन, सुरभीवन, पाडरवन, डिंडिमवन, श्रीराधिका के राज्य है ॥ २१ ॥

अथ ललिताराज्यमाह । नारदीये—ललिताग्राम १, गुर्ज्जरपुर २, करहपुर, स्वर्णपुर ४, नन्दनवन ५, छिपनकवन ६, कर्णवन ७, इन्द्रवन ८, काम्यवन ९, कामनावन १०, रंकपुरवन ११, अञ्जनपुर १२, शृङ्गारवट १३, भाण्डीरवट १४, एतेषु द्वादशवनेषु द्वयोर्वटयोर्ललिताधिकारराज्यम् ॥ २२ ॥

अथ विशाखाधिकारराज्यं—चिचित्सपुर १, पिपासावन २, चात्रगवन ३; जीवनवन ४, कपिवन ५, विहस्यवन ६, आहूतवन ७, वंशीवट ८, जटाजूटवट ९, इत्येतेषु सप्तवनेषु द्वयोर्वटयो विशाखाराज्यं॥२३॥

अथ चम्पकलतिकाधिकारराज्यं । सम्मोहनीये—मथुरामण्डलं १, कृष्णस्थितिवनं २, गढवनं ३, गोकुलकृष्णधाम ४, बलदेवस्थलं ५, श्रीवट ६, कामवट ७, इत्येतेषु पञ्चसु वनेषु द्वयोर्वटयोश्चम्पकलताधिकारराज्यं ॥ २४ ॥

अथ तुंगदेव्यधिकारराज्यं—भविष्यपुराणे भूमिखण्डे लक्ष्मीनारायणसंवादे—याववटवनं १, सारिकावनं २, विद्रुमवनं ३, पुष्पवनं ४, जातीवनं ५, मनोरथवट ६, आशावट ७, इत्येतेषु पञ्चसु वनेषु द्वयोर्वटयोस्तुंगदेव्यधिकारराज्यं ॥ २५ ॥

अथ रंगदेव्यधिकारराज्यं । गरुडसंहितायां—चम्पावनं १, नागवनं २, तारावनं ३, सूर्य्यपतनवनं ४, वकुलवनं ५, अशोकवट ६, केलिवट ७, इत्येतेषु पञ्चवनेषु द्वयोर्वटयो रंगदेव्यधिकारराज्यं ॥ २६ ॥

अथ चित्रलेखाधिकारराज्यं—तिलकवनं १, दीपवनं २, श्राद्धवनं ३, पट्पदवनं ४, त्रिभुवनवनं ५, ब्रह्मवट ६, इत्येतेषु पञ्चवनेष्वेकस्मिन्वटे चित्रलेखाधिकारराज्यं ॥ २७ ॥

अथेन्दुलेखाधिकारराज्यं—पात्रवनं १, पितृवनं २, विहारवनं ३, विचित्रवनं ४, विस्मरणवनं ५, हास्यवनं ६, रुद्रवट ७, इत्येतेषु षड्वनेष्वेकस्मिन्वटे चेन्दुलेखाधिकारराज्यं ॥ २८ ॥

अथ सुदेव्याधिकारराज्यं । बृहत्पराशरे—जन्हुवनं ॥१॥ पहारवनं ॥२॥ लोहवनं ॥३॥ भाण्डीरवनं ॥४॥ छत्रवनं ॥५॥ खदिरवनं ॥६॥ सौमनवट ॥७॥ इत्येतेषु षड्वनेष्वेकस्मिन् वटे च सुदेव्यधिकारराज्यं । इति श्रीराधादीनामधिकारराज्यं ॥ २९ ॥

नारदीय में—ललिताग्राम, गुर्जुपुर, करहपुर, स्वर्णपुर, नन्दनवन, छिपनवन, कर्णवन, इन्द्रवन, काम्यवन, कामनावन, रंकपुर, अञ्जनपुर, शृङ्गारवट, भाण्डीरवट, श्रीललिताजी के राज्य हैं ॥ २२ ॥

चिचित्सपुर, पिपासावन, चात्रगवन, जीवनवन, कपिवन, विहस्यवन, आहूतवन, वंशीवट, जटाजूटवट, विशाखाजी के राज्य है ॥ २३ ॥

सन्मोहिनी तन्त्र में—मथुरामण्डल, कृष्णस्थितिवन, गढ़वन, गोकुलकृष्णधाम, बलदेवस्थल, श्रीवट, कामवट, चम्पकलताजी के राज्य है ॥ २४ ॥

भविष्यपुराण में—लक्ष्मीनारायणसंवादपरभूमिखण्ड में जाववटवन, सारिकावन, विद्रुमवन, पुष्पवन, जातीवन, मनोर्थवट, आसावट, तुङ्गविद्याजी के अधिकार राज्य ॥ २५ ॥

गरुड़संहिता में—चम्पावन, नागवन, तारावन, सूर्य्यपतनवन, वकुलवन, अशोकवट, केलिवट, रंगदेवी जी के अधिकार हैं ॥ २६ ॥

तिलकवन, दीपवन, श्राद्धवन, पट्पदवन, त्रिभुवनवन, ब्रह्मवट, चित्रलेखाजी के राज्य हैं ॥२७॥

पात्रवन, पितृवन, बिहारवन, विचित्रवन, विस्मरणवन, हास्यवन, रुद्रवट, इन्दुलेखाजी के राज्य है ॥ २८ ॥

बृहत्पाराशर में—जन्हुवन, पहारवन, श्रीधरवट, सुदेवी जी के राज्य है ॥ २९ ॥

अथ चन्द्रावल्यधिकारराज्यं—कुमुदवनं चन्द्रावलीवनं महावनं कोकिलावनं तालवनं लोहवनं भाण्डीरवनं छत्रवनं खदिरवनं सौमनवट इत्येतेषु नववनेष्वेकस्मिन्वटेषु चन्द्रावल्यधिकारराज्यं ॥ ३० ॥

अथ ललितादिनवसखीनां द्विसप्तत्युपसखीनां द्विसप्ततिवनेषु राज्याधिकारः । ब्रह्मयामले—

तत्रादौ ललितोपसखीनामधिकारराज्यं—वार्त्तावने सुमनाराज्यं ॥१॥ परमानन्दवने सुखियाधिकारराज्यं ॥ २ ॥ वृन्दावने काञ्च्याधिकारराज्यं ॥ ३ ॥ शेषशयनवने दीपिकाधिकारराज्यं ॥ ४ ॥ मानेंगितवने मदीपिकाधिकारराज्यं ॥ ५ ॥ मयूरवने नागर्य्याधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ कदम्बवने प्रबलाधिकारराज्यं ॥ ७ ॥ बिल्ववने गौर्य्याधिकारराज्यं ॥ ८ ॥ इति ललिताष्टोपसखीनां सुमनादीनामधिकारराज्यं ॥ ३१ ॥

अथ विशाखोपसखीनामधिकारराज्यं—ब्रह्मवने मंगलाधिकारराज्यं ॥ १ ॥ कुशवने सुमुख्याधिकारराज्यं ॥ २ ॥ नन्दकूपवने पद्माधिकारराज्यं ॥ ३ ॥ कजलीवने सुपद्माधिकारराज्यं ॥ ४ ॥ मेनकावने मनोहराधिकारराज्यं ॥ ५ ॥ जन्हुवने सुपत्राधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ मृद्वने वहुपत्राधिकारराज्यं ॥ ७ ॥ मधुवने पद्मारेखाधिकारराज्यं ॥ ८ ॥ इति विशाखोपसखीनामधिकारराज्यं ॥ ३२ ॥

अथ चम्पकलतोपसखीनामधिकारराज्यं । गौतमीये—

बहुलावने सुकेश्याधिकारराज्यं ॥ १ ॥ बिल्ववने पद्मनयनाधिकारराज्यं ॥ २ ॥ भद्रवने सुनेत्राधिकारराज्यं ॥ ३ ॥ लोहजंघावने काम्यदीपिकाधिकारराज्यं ॥ ४ ॥ वत्सवने प्रदीपिकाधिकारराज्यं तपोवने सुकर्णाधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ भूषणवने रागसंयुक्तवेनिकाधिकारराज्यं ॥ ७ ॥ क्रीडावने नवनीतप्रियाधिकारराज्यं ॥ ८ ॥ इति चम्पकलतोपसखीनामधिकारराज्यं ॥ ३३ ॥

अथ चित्रलेखोपसखीनामधिकारराज्यं—

रुद्रवने रङ्गवल्लभाधिकारराज्यं ॥ १ ॥ रमणवने सुवल्ल्याधिकारराज्यं ॥ २ ॥ अशोकवने पद्मवल्ल्याधिकारराज्यं ॥ ३ ॥ नारायणवने मरीचिकाधिकारराज्यं ॥४॥ सखावने शिवनील्यधिकारराज्यं ॥५॥

कुमुदवन, चन्द्रावलीवन, महावन, कोकिलावन, तालवन, लोहवन, भाण्डीरवन, छत्रवन, खदीरबन, सौमनवट, चन्द्रावलीजी के राज्य हैं ॥ ३० ॥

अब ललितादि ६ सखियों की ७२ उपसखीयों का राज्य कहते हैं । ब्रह्मयामल में—प्रथम ललिताजी के—वार्त्तावन में सुमना, परमानन्दवन में सुखिया, वृन्दाबन में काञ्च्या, शेषशयनबन में दीपिका, मानेंगितबन में मदीपिका, मयूरवन में नागरी, कदम्बवन में प्रबला का, बेलबन में गौरी का अधिकार राज्य है ॥ ३१ ॥

अब विशाखा के उपसखीयों का कहते हैं । ब्रह्मबन में मंगला का, कुशबन में सुमुखी का, नन्दकूपबन में पद्मा का, कजलीबन में सुपद्मा का, मेनकावन में मनोहरा का, जन्हुवन में सुपत्रा का, मृद्वन में वहुपत्रा का, मधुबन में पद्मरेखा का अधिकार राज्य है ॥ ३२ ॥

अब चम्पकलता की उपसखीयों का कहते हैं । गौतमीय में-बहुलावन में सुकेशी का, बिल्ववन में पद्मनयना का, भद्रबन में सुनेत्रा का, लोहजंघानबन में काम्यदीपिका का, वत्सवन में प्रदीपिका का, तपोबन में सुकर्म्मा का, भूष्णवन में राजसंयुक्तवेणि का, क्रीड़ावन में नवनीतप्रिया का अधिकार राज्य है ॥३३॥

अब चित्रलेखा की उपसखीयों का कहते हैं । रुद्रबन में रङ्गवल्लभा का, रमणवन में सुवल्ली का,

सखीवने सत्यधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ कृष्णान्तर्द्धानवने साध्व्यधिकारराज्यं ॥७॥ मुक्तिवने ब्रह्मवल्ल्यधिकारराज्यं ॥८॥ इति चित्रलेखोपसखीनामधिकारराज्यं ॥ ३४ ॥

अथ तुङ्गदेव्युपसखीनामधिकारराज्यं । संमोहनीये—

पापाकुंशवने वीरदेव्यधिकारराज्यं ॥ १ ॥ रोगाकुंशवने भद्रदेव्यधिकारराज्यं ॥ २ ॥ सरस्वतीवने मनोहरादेव्यधिकारराज्यं ॥ ३ ॥ नवलवने मनोत्सवाधिकारराज्यं ॥ ४ ॥ किशोरवने कामदेव्यधिकारराज्यं ॥ ५ ॥ किशोरीवने नृदेव्यधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ वियोगवने स्नेहदेव्यधिकारराज्यं ॥ ७ ॥ गोदृष्टिवने मनोमाधिकारराज्यं ॥ ८ ॥ इति तुङ्गदेव्युपसखीनामधिकारराज्यं ॥ ३५ ॥

अथेन्दुलेखोपसखीनामधिकारराज्यं । त्रैलोक्यशम्मोहनतन्त्रे—

चेष्टावने सुलेखाधिकारराज्यं ॥ १ ॥ स्वपनवने पद्मवदन्यधिकारराज्यं ॥ २ ॥ गह्वरवने विचित्राधिकारराज्यं ॥ ३ ॥ शुकवने कामकुन्तलाधिकारराज्यं ॥ ४ ॥ कपोतवने सुगन्धाधिकारराज्यं ॥ ५ ॥ चक्रवने नागकेश्यधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ लघुशेषशायीवने कटिसैंह्यधिकारराज्यं ॥ ७ ॥ दोलावने सुलतिकाधिकारराज्यं ॥ ८ ॥ इतीन्दुलेखोपसखीनामधिकारराज्यं ॥ ३६ ॥

अथ रङ्गदेव्युपसखीनां श्रीदेव्यादीनामधिकारराज्यं—

हाहावने श्रीदेव्याधिकारराज्यं ॥ १ ॥ गानवने कमलासनाधिकारराज्यं ॥ २ ॥ गन्धर्ववने बलदेव्यधिकारराज्यं ॥ ३ ॥ ज्ञानवने महादेव्यधिकारराज्यं ॥ ४ ॥ नीतिवने रञ्जनाधिकारराज्यं ॥ ५ ॥ श्रीवने कलिरञ्जनाधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ लेपनवने कामदेव्यधिकारराज्यं ॥ ७ ॥ प्रशंसावने कमलाकान्ताधिकारराज्यं ॥ ८ ॥ इति रङ्गदेव्युपसखीनामधिकारराज्यं ॥ ३७ ॥

अथ सुदेव्युपसखीनां रतिक्रीडादीनामधिकारराज्यं । प्रभासखंडे—

मेलनवने रतिक्रीडाधिकारराज्यं ॥ १ ॥ परस्परवने विशालाधिकारराज्यं ॥ २ ॥ पाडरवने ऽन्ति-

---

अशोकवन में पद्मावल्ली का, नारायणवन में मरीरिका का, सखावन में शिवलिनी का, सखीवन में सत्या का, कृष्णान्तर्द्धानवन में साध्या का, मुक्तिवन में ब्रह्मवल्ली का, राज्य है ॥ ३४ ॥

अब तुङ्गदेवी जी की उपसखीयों का कहते हैं। संमोहिनी तन्त्र में—पापाकुंशवन में वीरदेवी का, रोगाकुंशवन में भद्रादेवी का, सरस्वतीवन में मनदेवी का, नवलवन में मनोत्सवा का, किशोरवन में काम्यदेवी का, किशोरीवन में नृदेवी का, वियोगवन में स्नेहदेवी का, गोदृष्टिवन में मनोमा का अधिकार राज्य है ॥ ३५ ॥

अब इन्दुलेखा की उपसखीयों का कहते हैं। त्रैलोक्यसन्मोहनतन्त्र में—चेष्टावन में सुलेखा का, स्वपनवन में पद्मावदनी, का गह्वरवन में विचित्रा का, शुकवन में कामकुन्तला का, कपोतवन में सुगन्धा का, चक्रवन में नागकेशरी का, लघुशेषशायिवन में कटिसैंही का, दोलावन में सुलतिका का अधिकार राज्य है ॥ ३६ ॥

अब रङ्गदेवी की उपसखीयों का कहते हैं। हाहावन में श्रीदेवी का, गानवन में कमलासना का, गन्धर्ववन में बलदेवी का, ज्ञानवन में महादेवी का, नीतिवन में रञ्जना का, श्रवणवन में कालिरञ्जना का, लेपनवन में कामदेवी का, प्रशंसावन में कमलाकान्ता का, अधिकार राज्य है ॥ ३७ ॥

अब सुदेवी की उपसखीयों का कहते हैं। प्रभासखण्ड में—मेलनवन में रतिक्रीडा का, परस्परवन

काधिकारराज्यं ॥ ३ ॥ रुद्रवीर्य्यस्खलनबने कामललिताधिकारराज्यं ॥ ४ ॥ मोहिनीवने निराज्यधिकारराज्यं ॥ ५ ॥ विजयबने महालीलाधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ निम्बवने कोमलांग्यधिकारराज्यं ॥ ७ ॥ गोपानबने विश्रुताधिकारराज्यं ॥ ८ ॥ इति सुरेन्द्युपसखीनामधिकारराज्यं ॥ ३८ ॥

अथ चन्द्रावल्युपसखीनां रागलेखादीनामधिकारराज्यं ।—

वियद्वने रागलेखाधिकारराज्यं ॥ १ ॥ नूपुरबने कलाकेल्यधिकारराज्यं ॥ २ ॥ पद्मवने पालिकाराज्यं ॥ ३ ॥ पुण्यबने मनोरमाधिकारराज्यं ॥ ४ ॥ अम्रबने मनोत्साहाधिकारराज्यं ॥ ५ ॥ प्रतिज्ञाबने उल्लासिकाधिकारराज्यं ॥ ६ ॥ कामोरुबने विशालिकाधिकारराज्यं ॥ ७ ॥ कृष्णदर्शनबने पद्माधिकारराज्यं ॥ ८ ॥ इति चन्द्रावल्युपसखीनामधिकारराज्यं ॥ इति सप्तत्रिंशोत्तरशतेषु बनेषु राधादिसख्युपसखीनामधिकारराज्यानि ॥ ३९ ॥

अथ सप्तत्रिंशोत्तरशतबनानां षोडशवटानां च प्रदक्षिणा परिमाणमाह । भविष्ये—

तत्रादौ मथुरामण्डलस्य प्रदक्षिणा नवक्रोशपरिमाणम् । राधाकुण्डगोवर्द्धनयोरुभयोः प्रदक्षिणा सप्तक्रोशपरिमाणम् । सीमामर्य्यादीकृत्य प्रदक्षिणा परिमाणम् । नन्दग्रामस्य क्रोशद्वयम् । गढ़बनस्य प्रदक्षिणा सार्द्धक्रोशद्वयम् । ललिताग्रामस्य प्र० क्रोशत्रयम् । बलदेवस्थानस्य प्र० सार्द्धक्रोशद्वयम् । कामनावनस्य प्र० क्रोशमेकम् । यावबटवनस्य प्र० सार्द्धक्रोशद्वयम् । नारदवनस्य प्र० पादोनक्रोशम् । संकेतवटस्य प्र० सार्द्धक्रोशमेकम् । सारिकावनस्य प्र० क्रोशमेकम् । विद्रुमवनस्य प्र० क्रोशार्द्धम् । पुष्पवनस्य प्र० क्रोशपरिमाणं जातीवनस्य सपादक्रोशम् । चम्पावनस्य क्रोशद्वयं । नागवनस्य सार्द्धक्रोशम् । तारावनस्य सार्द्धक्रोशद्वयम् । सूर्य्यपतनवनस्य पादोनक्रोशद्वयम् । वकुलवनस्य क्रोशपरिमाणं । तिलकवनस्य सपादक्रोशम् । दीपवनस्य क्रोशद्वयम । श्राद्धवनस्य सार्द्धक्रोशमेकम् । षट्पदवनस्य सपादक्रोशद्वयम् । त्रिभुवनवनस्य पादोनक्रोशत्रयम् ।

में विशाला का, पाडरवन में अन्तिका का, रुद्रवीर्जस्खलनवन में कामललिता का, मोहनीवन में निवरा का, विजयवन में महालीला का, निम्बबन में कोमलांगी का, गोपानवन में विश्रुता का राज्य है ॥ ३८ ॥

अब चन्द्रावली की उपसखीयों का कहते हैं। वियद्वन में रागलेखा का, नूपुरवन में कलाकेलि का, पद्मवन में पालिका का, पुन्यबन में मनोरमा का, अम्रबन में महोत्साहा का, प्रतिज्ञाबन में उल्लासिका का, कामरुबन में विशालिका का, कृष्णदर्शनवन में पद्मा का अधिकार राज्य है ॥ ३९ ॥

अब सब की प्रदक्षिणा का परिमाण कहते हैं—भविष्यपुराण में—

मथुरामण्डल की नौ कोस, राधाकुण्ड तथा गोवर्द्धन दोनों की सात कोस, नन्दग्राम की प्रदक्षिणा दो कोस, गढ़बन की देढ़ कोस, ललिताग्राम की तीन कोस, बलदेव स्थान की सार्द्ध दो कोस, कामनावन की एक कोस, जावट की अढ़ाई कोस, नारदबन की पौने कोस, संकेतबटवन की देढ़ कोस, सारिकावन की एक कोस, विद्रुमबन की आधा कोस, पुष्पबन की एक कोस, जातीबन की सवा कोस, चम्पाबन की दो कोस, नागबन की देढ़ कोस, तारावन की अढ़ाई कोस, सूर्य्यपतनवन की पौने दो कोस, वकुलबन की एक कोस, तिलकवन की सवा कोस, दीपबन की दो कोस, श्राद्धवन की देढ़ कोस, षट्पदबन की सवा दो कोस, त्रिभुवनबन की अढ़ाई कोस, पात्रवन की एक कोस, पितृवन की एक कोस, विहारवन की दो कोस, विचित्रबन की सवा दो कोस, विस्मरणबन की सवा कोस, हास्यबन की चार कोस, काम्यवन की सात कोस, तालवन की पौने कोस, कुमुदवन की आधा कोस, भाण्डीरवन की दो कोस, छत्रवन की सवा दो कोस, खदीरवन की सवा कोस, लोहवन की डेढ़ कोस, भद्रवन की पौने दो कोस, बेलवन की देढ़ कोस,

पात्रवनस्य क्रोशमेकम् । पितृवनस्य क्रोशार्द्धं । विहारवनस्य क्रोशद्वयम् । विचित्रवनस्य सपादक्रोशद्वयम् । विस्मरणवनस्य सपादक्रोशम् । हास्यवनस्य सार्द्धक्रोशद्वयं । जन्हुवनस्य क्रोशत्रयं । पर्वतवनस्य पादोनक्रोशत्रयं । महावनस्य चतुःक्रोशपरिमाणम् । काम्यवनस्य प्रदक्षिणा सप्तक्रोशपरिमाणं । कोकिलावनस्य पादोनक्रोशद्वयम् । तालवनस्य पादोनक्रोशम् । कुमुदवनस्य क्रोशार्द्धम् । भाण्डीरवनस्य क्रोशद्वयम् । छत्रवनस्य सपादक्रोशद्वयम् । खदिरवनस्य सपादक्रोशम् । लोहवनस्य सार्द्धक्रोशम् । भद्रवनस्य पादोनक्रोशद्वयम् । बिल्ववनस्यार्द्धक्रोशम् । बहुलावनस्य क्रोशद्वयम् । मधुवनस्य सार्द्धक्रोशकम् । मृद्वनस्य सार्द्धक्रोशत्रयम् । मेनकावनस्य सार्द्धक्रोशम् । कजलीवनस्य क्रोशमेकम् । नन्दकूपवनस्य पादोनक्रोशत्रयम् । कुशवनस्य सपादक्रोशद्वयम् । ब्रह्मवनस्य पादोनक्रोशम् । अप्सरावनस्य क्रोशमेकम् । विह्वलवनस्य सार्द्धक्रोशम् कदम्बवनस्य क्रोशमेकम् । स्वर्णवनस्य सपादक्रोशम् । सुरभिवनस्य पादोनक्रोशम् । प्रेमवनस्यार्द्धक्रोशम् । मयूरवनस्य पादक्रोशं । मानेंगितवनस्य क्रोशार्द्धम् । शेषशयनवनस्य पादोनक्रोशद्वयम् । वृन्दावनस्य प्रदक्षिणा पञ्चक्रोशम् । परमानन्दवनस्य क्रोशमेकम् । रंकपुरस्य पादोनक्रोशम् । वार्त्तावनस्य क्रोशद्वयम् । करहपुरस्यसार्द्ध-क्रोशद्वयम् । कामनावनस्य सार्द्धक्रोशम् । अञ्जनपुरस्य क्रोशमात्रम् । कर्णवनस्य सपादक्रोशम् । क्षिपनवनस्यार्द्धक्रोशम् । नन्दनवनस्य पादोनक्रोशम् । इन्द्रवनस्य सपादक्रोशम् । शिक्षावनस्य क्रोशमेकम् । चन्द्रावलीवनस्य सार्द्धक्रोशम् । लोहजंघानवनस्य क्रोशद्वयम् । जीवनवनस्य पादोनक्रोशम् । पिपासावनस्य क्रोशमेकम् । चात्रगवनस्य क्रोशार्द्धम् । कपिवनस्य क्रोशद्वयम् । विहस्यवनस्य सार्द्धक्रोशद्वयम् । आहूतवनस्य पादोन-क्रोशद्वयम् । कृष्णस्थितिवनस्य सपादक्रोशम् । तपोवनस्य क्रोशमेकम् । भूषणवनस्य पादोनक्रोशम् । वत्सवनस्य क्रोशद्वयम् । क्रीड़ावनस्य सार्द्धक्रोशम् । रुद्रवनस्य क्रोशार्द्धम् । रमणवनस्य क्रोशद्वयम् । अशोकवनस्य चतुःक्रोशम् । नारायणवनस्य क्रोशमात्रम् । सखावनस्य सपादक्रोशम् । सखीवनस्य क्रोशार्द्धं । कृष्णान्तर्द्धान-वनस्य क्रोशद्वयम् । वृषभानुपुरस्य क्रोशद्वयं । गोकुल श्रीकृष्णधाम्नः प्रदक्षिणा क्रोशमेकम् । मुक्तिवनस्य पादोनक्रोशद्वयम् । पापाकुंशवनस्य पादक्रोशम् । रोगाकुंशवनस्य क्रोशमेकम् । सरस्वतीवनस्य

बहुलावन की दो कोस, मधुबन की देढ़ कोस, मृद्वन की साढ़े तीन कोस, मेनकावन की देढ़ कोस, कजलीबन की एक कोस, नन्दकूपबन की पौने तीन कोस,कुसबन की सवा दो कोस,ब्रह्मबन की पौने कोस, अप्सराबन की एक कोस, विह्वलबन की देढ़ कोस, कदम्बबन की एक कोस, स्वर्णबन की सवा कोस, सुरभीबन की पौने कोस. प्रेमबन की आधा कोस. मयूरबन की पाव कोस. मानेंगितबन की आधा कोस, शेषशयनबन की पौने दो कोस, वृन्दाबन की पांच कोस, परमानन्दबन की एक कोस, रंकपुरबन की पौने कोस, बार्त्ताबन की दो कोस, करहपुर की अढ़ाई कोस, कामनाबन की देढ़ कोस, अञ्जनपुर की एक कोस, कर्णबन की सवा कोस, क्षिपनबन की आधा कोस,नन्दनबन की पौने कोस, इन्द्रबन की सवा कोस, सीक्षाबन की एक कोस, चन्द्रावलीबन की देढ़ कोस, लोहजंघानबन की दो कोस, जीवनबन की पौने कोस, पिपासावन की एक कोस, चात्रगबन की आधा कोस, कपिबन की दो कोस, विहस्यबन की अढ़ाई कोस, आहूतबन की पौने कोस, कृष्णस्थितबन की सबा कोस, तपोबन की एक कोस, भूषणबन की पौने कोस, वत्सबन की दो कोस, क्रीड़ाबन की देढ़कोस,रुद्रबन की आधा कोस, रमणबनकी दो कोस, अशोकबनकी चार कोस, नारायणबन की एक कोस, सखाबन की सबा कोस, सखीबन की आधा कोस,कृष्णान्तर्द्धानबन की दो कोस,वृषभानुपुर की दो कोस, गोकुलकी तीन कोस,मुक्तिबन की पौने दो कोस, पापाकंशबन की पाव कोस,रोगाकुंशबन की एक कोस,सरस्वतीबन की पौने तीन कोस,नवलबन की पौने कोस,किशोरबन की आधा कोस,किशोरीबन की एक कोस, वियोगबन की आधा कोस, गांधर्ब्बबन की साढ़े तीन कोस, चेष्टाबन की पौने कोस, स्वपनबन की आधाकोस,गह्वरबन की आधा कोस, शुकबन की सबा कोस, कपोनबन की पौने कोस,चक्रबन की एक कोस,

सपादक्रोशम्। नवलबनस्य पादोनक्रोशम्। किशोरबनस्य क्रोशार्द्धम्। किशोरीबनस्य क्रोशमेकम्। वियोग-बनस्य क्रोशार्द्धम्। गोदृष्टिबनस्य सार्द्धक्रोशत्रयम्। चेष्टाबनस्य पादोनक्रोशम्। स्वपनबनस्य क्रोशार्द्धम्। गह्वरबनस्यैव क्रोशार्द्धम्। शुकबनस्य पादक्रोशम्। कपोतबनस्य पादोनक्रोशम्। चक्रबनस्य क्रोशमेकम्। लघुशेषशयनबनस्य पादोनक्रोशद्वयम्। दोलबनस्य क्रोशार्द्धम्। हाहावनस्य पादक्रोशम्। गानबनस्य सपादक्रोशम्। गन्धर्वबनस्य पादोनक्रोशम्। ज्ञानवनस्य क्रोशार्द्धम्। नीतिबनस्य क्रोशमेकम्। श्रवणबनस्य क्रोशार्द्धम्। लेपनबनस्य सार्द्धक्रोशं। प्रशमाबनस्य पादक्रोशम्। मेलनबनस्य पादोनक्रोशम्। परस्परबनस्य क्रोशमेकम्। पाडरबनस्य सपादक्रोशम्। रुद्रवीर्य्यस्खलनबनस्य क्रोशद्वयम्। मोहिनीबनस्य सार्द्धक्रोशम्। त्रिजयबनस्य क्रोशमेकम्। निम्बबनस्य सपादक्रोशम्। सोपानबनस्य क्रोशद्वयम्। वियद्वनस्य पादोनक्रोश-द्वयम्। नूपुरबनस्य क्रोशार्द्धम्। पल्लबनस्य पादक्रोशं। पुन्यबनस्य क्रोशमेकम्। अग्रबनस्य सार्द्धक्रोशं। प्रतिज्ञावनस्य क्रोशत्रयम्। कामोरुबनस्य सपादक्रोशद्वयम्। कृष्णदर्शनबनस्य प्रदक्षिणा सार्द्धक्रोशम्॥

सप्तत्रिंशोत्तरशत मथुरामण्डलादिवनानां प्रदक्षिणापरिमाणं भविष्योत्तरे—

कार्य्या प्रदक्षिणा नित्यं सकामानामशेषितम्। सर्वकामानवाप्नोति वनानां शुभदायिनी ॥४०॥

अथ संकेतबटादिषोडशवटानां प्रदक्षिणा-परिमाणमाह। त्रैलोक्य सम्मोहनतन्त्रे—

संकेतबटस्य प्रदक्षिणा पादक्रोशम्। भाण्डीरबटस्य प्रदक्षिणा क्रोशार्द्धम्। यावबटस्य प्र० पादोन-क्रोशम्। श्रृङ्गारबटस्य प्र० पादक्रोशं। बंशीबटस्य सपादक्रोशं। जटाजूटबटस्य पादार्द्धक्रोशम्। श्रीबटस्य पादक्रोशमेकम्। कामबटस्य सार्द्धक्रोशद्वयम्। मनोरथबटस्य क्रोशद्वयम्। आशाबटस्य पादोनक्रोशद्वयम्। अशोकबटस्य क्रोशमेकम्। केलिबटस्य क्रोशत्रयम्। ब्रह्मबटस्य सार्द्धक्रोशमेकम्। रुद्रबटस्य पादोनक्रोशम्। श्रीधरबटस्य पादोनक्रोशं। सावित्रीबटस्य पादार्द्धक्रोशं प्रदक्षिणा।

नित्यं प्रदक्षिणं कुर्य्याद्वटानां वरदायिनाम्। भगवद्दर्शनं लब्ध्वा भगवान् वरदो भवेत्॥
मध्यस्थलं समारभ्य चतुर्दिक्षु समानतः। परिक्रमणमर्य्यादं विधिपूर्वं समाचरेत्॥
इति षोडशबटानां प्रदक्षिणापरिमाणम्॥ ४१ ॥

लघुशेषशयनबन की पौने दो कोस, दोलाबन की आधा कोस, हाहावन की सवा कोस, गानबन की सवा कोस, गन्धर्व्वबन की पौने कोस, ज्ञानबन की आधा कोस, नीतिबन की एक कोस, श्रवनबन की आधा कोस, लेपनबन की देढ़ कोस, प्रशंसाबन की सवा कोस, मेलनबन की पौने कोस, परस्परबन की एक कोस, पाडरबन की सवा कोस, रुद्रवीर्य्यस्खलनबन की दो कोस, मोहिनीबन की देढ़ कोस, विजयबन की एक कोस, निम्बबन की सवा कोस, सोपानबन की दो कोस, वियद्वन की पौने दो कोस, नूपुरबन की आधा कोस, पल्लबन की सवा कोस, पुण्यबन की एक कोस, अग्रबन की देढ़ कोस, प्रतिज्ञाबन की तीन कोस कामरूबन की सवा दो कोस, कृष्णदर्शनबन की देढ़ कोस, प्रदक्षिणा कही गयी है ॥ ४० ॥

अब षोलह बट की प्रदक्षिणा कहते हैं। त्रैलोक्य सन्मोहिनी तन्त्र में—संकेतबट की सवा कोस, भाण्डीरबट की आधा कोस, जाव्बट की पौने कोस, श्रृङ्गारबट की सवा कोस, बंशीबट की सवा कोस, जटाजूटबट की आधा कोस, श्रीबट की एक कोस, कामबट की अढ़ाई कोस, आसाबट की पौने दो कोस, अशोकबट की एक कोस, केलिबट की तीन कोस, ब्रह्मबट की देढ़ कोस, रुद्रबट की पौने कोस, श्रीधर-बट की सवा कोस, सावित्रीबट की आधा कोस प्रदक्षिणा है ॥

अथमथुरामण्डलादि समस्तव्रजमण्डल मष्टत्रिंशोत्तरशतवनेषु वा षोडशवटेषु तीर्थस्वरूपमाह ।

तत्रादौ मथुरापुरे चतुरशीतितीर्थदेवताः दक्षिणोत्तरकोट्यस्थास्त्वभ्यन्तरस्था ॥ तत्र त्रयो विभागाः । षड्विंशतितीर्थदेवताः मथुरायाः दक्षिणस्थाः हनुमदाद्यकोटिसंज्ञाः । पञ्चत्रिंशत् तीर्थदेवताः मथुराभ्यन्तरस्थाः । देवमथुराणां छल्वेश्वरसंज्ञाः । हनुमन्मूर्त्तिः ॥ १ ॥ ततो दीर्घकेशवः ॥ २ ॥ ततो भूतेश्वरः ॥ ३ ॥ ततो पद्मनाभः ॥ ४ ॥ दीर्घविष्णुमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ वसुमतीसरोवर्य्यामेते पञ्चदेवतामूर्त्तयः । वसुमतीतीर्थे मथुरादक्षिणतटस्थे ॥ ६ ॥ ततो दुर्गसेनी चर्च्चिकानदी । तस्या दक्षिणे भागे आयुधस्थानं । तस्मिन्निकटेऽपराजितादेवी । तत्समीपे कंसवासन्तिकास्थानम् ॥ १० ॥ ततो वास्तुको दक्षिणकोटिसरोवरः । ततो वधूटाख्यं गृहदेवी । दक्षिण कोटीश्वरस्वरूपं । उद्धवासं वत्सपुत्रं अर्कस्थलं । वीर्य्यस्थलं । कुशस्थलं । पुष्पस्थलं । महत्स्थलं ॥ एतेषां प्रदक्षिणा संसिद्ध्यर्थं सिद्धिमुखाशी स्वरूपं स्थापितम् । ततः शिवकुण्डमस्ति तस्य कुण्डस्य तीरस्थाः पञ्चदेवताः । हयमुक्ताख्यं कृष्णस्वरूपं । सिन्दुरीसिन्दुराख्ये द्वे लवणासुरस्य पटराज्ञी लवणगुहा । शत्रुघ्नस्वरूपं । ततो गुह्यतीर्थं । मरीचिकाचिन्हं तत्समन्तान्मल्लिकावनं । तन्मध्ये कदम्बखण्डं । तन्मध्ये लोकसिद्धमल्लाख्यादेवी । ततो अस्पृशासस्पृशे द्वे पुष्करिण्यौ तत्समीपे उल्लोलकुण्डं । तत्र चर्च्चिकादेवी । ततः कंसखातम् । तत्र भूतेश्वराख्यो महादेवः । सेतुबन्धाख्यं कृष्णस्वरूपं । वल्लभीमूर्त्तिः । गोपीगानस्थानं कृष्णे रंगभूमौ स्थिते सति इति षट्त्रिंशत्तीर्थदेवता मथुरा दक्षिणतटस्था दक्षिणकोटिसंज्ञाः । ततः उत्तरकोट्यास्तीर्थदेवताः । कुक्कुटस्थानं । तत्र शाम्भोच्छायमण्डलम् । वसुदेवदेवकीस्वपनस्थलम् । तत्रैव नारायणस्थानं सिद्धविनायकाख्यगणेशस्वरूपम् । कुब्जिकावामनस्थानम् । गर्त्तेश्वराख्यमहादेवः । लोहजंघस्वरूपम् । प्रभाल्लल्याख्यदेवीमूर्त्तिः । संकेतेश्वरदेवीमूर्त्तिः । इत्येकादशतीर्थस्थानमूर्त्तयः ॥ देवकीकुण्ड । ततो महातीर्थसरोवरी । तस्यामष्टदेवतास्थानाः ॥ गोकर्णाख्य ऋषिस्वरूपम् । सरस्वतीस्वरूपम् विघ्नराजाख्यगणेशमूर्त्तिः ।

वर समूह देने वाले वटों की नित्य प्रदक्षिणा करें जिससे भगवान् प्रसन्न होकर वर तथा दर्शन देते हैं । मध्यस्थल से आरम्भ पूर्वक चारि ओर से समान कर यथा विधि यथा मर्यादा परिक्रमा करें ॥ ४१ ॥

अब मथुरामण्डल से लेकर समस्त व्रजमण्डल में १३७ बन तथा १६ वट स्थित तीर्थों का स्वरूप कहते हैं पहिले मथुरापुरी के तीर्थों का स्वरूप । मथुरापुरी में तीर्थों की स्थिति तीन विभाग में है । दक्षिण कोटिस्थ, उत्तरकोटिस्थ, अभ्यन्तरस्थ रूप से जानना । जिनमें सम्पूर्ण तीर्थ देवता की संख्या ८४ है । २६ तीर्थ देवता मथुरा के दक्षिण में तथा ३५ तीर्थ देवता मथुरा के अभ्यन्तर (भीतर) में है । अवशिष्ट उत्तर में जानना । हनुमानजी की मूर्त्ति १, दीर्घकेशव २, भूतेश्वर ३, पद्मनाभ ४, दीर्घविष्णुमूर्त्ति ५, मथुरा के दक्षिण तट में वसुमती सरोवर पर वह ५ देवमूर्त्ति हैं । अनन्तर दुर्गसेनी चर्च्चिका देवी ६, उसी का दक्षिण भाग में आयुधस्थान ७, उसके निकट अपराजिता देवी, उसी का निकट कंसवासतिका स्थान ९, तदनन्तर वास्तुक दक्षिण कोटी सरोवर १०, अनन्तर वधुटी गृहदेवी ११, उद्धवासवत्सपुत्र १२, अर्कस्थान १३, कुशस्थल १४, पुष्पस्थल १५, महत्स्थल १६ हैं । इन मूर्त्ती देवतायों की प्रदक्षिणा सिद्धि के लिये सिद्धिमुखा पार्वती स्वरूप स्थापित है । तदनन्तर शिवकुण्ड है । उस कुण्ड के तट पर पञ्चदेवता हैं । हयमुक्त नामक श्रीकृष्णस्वरूप, सुन्दरी सिन्दुरा नामक दो लवणासुर की पाटराणी, लवणासुरगोका, शत्रुघ्न स्वरूप है ।

तदनन्तर गुह्यतीर्थ, मरीचिका चिन्ह है । अनन्तर मल्लिकावन है । उसके अन्दर कदम्बखण्ड है ।

गार्ग्याख्या गोकर्णऋषिवृद्धपत्नी । शार्ग्याख्यालघुपत्नीमूर्त्तिः । महालयाख्यरुद्रमूर्त्तिः । उत्तरकोटीशाख्य गणेश मूर्त्तिः । दूयूतस्थानम् । इत्यष्टदेवतास्थानाः महातीर्थनाम्नि सरसि गार्ग्याख्यनदीतीर्थमस्ति । तत्र रुद्रमहालयाख्यमन्दिरम् । ततो विघ्नराज कुण्डतीर्थम् । तत्र द्वयोरभ्यन्तरे मार्गे भद्रेश्वराख्यमहादेवमूर्त्तिः । ततः सोमकुण्डतीर्थं यमुनाभ्यन्तरस्थम् । तत्र सोमेश्वराख्य महादेवमूर्त्तिः । ततो सरस्वतीसंगमाख्यतीर्थमस्ति । तत्रैव घण्टाभरणकश्रवणं । गंडकेशवाख्यविष्णुमूर्त्तिः । ततो धारालोपनकवैकुण्ठधाममन्दिरम् । तत्समीपे खण्डवृषभमूर्त्तिः । ततो मण्डिकन्या पुष्करिणीतीर्थमस्ति । तत्रापि विमुक्तेश्वराख्यमहादेवमूर्त्तिः ॥ इति पञ्चत्रिंशत् मूर्त्तयः मथुरोत्तरतटस्था-तूत्तरकोटिसंज्ञाः ॥ अथ मथुराभ्यन्तरस्थास्तीर्थदेवताख्योदश । आदित्यपुराणे-क्षेत्रपालाख्यशिवमूर्त्तिः । विश्रान्तितीर्थम् । गतश्रमप्रदक्षिणस्थानम् । तस्योपरि-सुमंगलाख्यदेवी मूर्त्तिः । तत्पार्श्वे पिप्पलादेश्वराख्य विष्णुमूर्त्तिः । तत्र बज्रनामाख्यहनुमन्मूर्त्तिः । सम्वरणदाख्यशिवमूर्त्तिः । तत्पार्श्वे सूर्य्यमूर्त्तिः । सूर्य्यसम्बरणाख्य ऋषिमूर्त्तिः । एतेषु मध्ये कुलेश्वराख्यविष्णुमूर्त्तिः । पञ्चांगस्थानं । रामघाटं । चीरघाटं । गोपीघाटं । सूर्य्यकुण्डं । ध्रुवक्षेत्रं । गोपीकानीतौदनस्थलं । कुवलयापीडवधस्थलं । चाणूरमुष्टिकवधस्थानं । कंसशयनस्थलं । उग्रसेनिकारागृहस्थानं । उग्रसेनिराज्याभिषेकस्थानम् ॥ इति मथुरा मण्डलाधिदेवतास्थानतीर्थाः ॥ ४२ ॥

वहाँ मल्लाख्यदेवी है । तदनन्तर असृशा, असस्पृसा नामक दो पुष्करिणी हैं । उनके समीप उल्लोल कुण्ड है, वहाँ चर्चिकादेवी है । अनन्तर कंसखात है, वहाँ भूतेश्वर महादेव तथा सेतुबन्धु नामक कृष्णस्वरूप है । अनन्तर गोपीगान स्थान है, जहाँ पर श्रीकृष्ण रंगस्थल में उपस्थित हुए थे । अनन्तर उत्तरकोटी तीर्थ देवता कहते हैं । कुक्कुटस्थान, वहाँ साम्भोछायमण्डल, वसुदेवदेवकी शयनस्थल है । वहाँ भी नारायण-स्थान, सिद्धि विनायक नामक गणेश स्वरूप, कुब्जिकाबोनी स्थान, गर्त्तेश्वर नामक महादेव, लोह-जंघस्वरूप, प्रभाल्लल्या नामक देवीमूर्त्ति, महाविद्यामूर्त्ति, संकेतेश्वरी देवी है । वह ११ मूर्त्ति देवता देवकीकुण्ड में है, तदनन्तर महातीर्थ सरोवर है । वहाँ गोकर्ण नाम के ऋषि स्वरूप, सरस्वतीस्वरूप, विघ्नराज नामक गणेशमूर्त्ति, गोकर्ण ऋषि की गार्गी नामक बड़ी पत्नी, तथा शार्गी नामक छोटी पत्नी की मूर्त्ति, महालय नामक रुद्रमूर्त्ति, उत्तरकोटीश नामक गणेश मूर्त्ति, दूयूतस्थान हैं । तदनन्तर गार्गी नामक नदीतीर्थ है । वहाँ रुद्रमहालयाख्यमन्दिर है । तदनन्तर विघ्नराज कुण्ड है । दोनों के मध्यस्थल मार्ग में भद्रेश्वरनामक महादेव मूर्त्ति है । तदनन्तर यमुना के अभ्यन्तरस्थ सोमकुण्ड है । वहाँ सोमेश्वर महादेव मूर्त्ति है । अनन्तर सरस्वतीसंगम, घण्टाभरण श्रवण, गण्डकेशव नामक विष्णुमूर्त्ति है । तदनन्तर धारालोपन नामक वैकुण्ठ धाम मन्दिर है । उसके समीप खण्डवृषभमूर्त्ति है । अनन्तर मण्डिकन्या पुष्करिणी है । वहाँ विमुक्तेश्वर नामक महादेवमूर्त्ति है । वह ३५ मूर्त्ती देवता मथुरा के उत्तर तट पर है । अब अभ्यन्तर १३ तीर्थ के स्वरूप कहते हैं । आदित्यपुराण में—क्षेत्रपाल नामक शिवमूर्त्ति, विश्रान्ति तीर्थ, गत-श्रम प्रदक्षिणा स्थान है । ऊपर सुमंगलादेवी है । उसी के पास पिप्पलादेश्वरनामक विष्णुमूर्त्ति है । वहाँ बज्र नामक हनुमानकी मूर्त्ति,संवरणदनामक शिवमूर्त्ति है । उसके पास सूर्य्यमूर्त्ति, सूर्य्यसंवरण नामक ऋषि मूर्त्ति है । इनके मध्य स्थल में कुलेश्वर नामक विष्णुमूर्त्ति, पञ्चांगस्थान, रामघाट, चीरघाट, गोपीघाट, सूर्य्य-कुण्ड, ध्रुवक्षेत्र, गोपीकानीतओदनस्थल, कुवलयापीडवधस्थल, चाणूरमुष्टिकवधस्थान, कंसशयनस्थल, कारागृहस्थान, उग्रसेनिराज्याभिषेकस्थान है ॥ ४२ ॥

अथ श्रीकुण्डवनम्। आदिवाराहे—गोपिकाकुण्डं । अरिष्टवनमस्ति। तत्र धेनुकासुरवधस्थानम्। तत्पार्श्वे ललितामोहनाख्यौ द्वौ कुण्डौ। तत्र दक्षिणपार्श्वे द्वौ कुण्डौ राधाकृष्णाख्यौ । तयोः संगमपार्श्वे सखीमण्डलं। ललितया ग्रन्थिदत्तं स्थानम् । कलाकेलिसखीविवाहस्थलम् । तत्समीपे राधावल्लभमूर्त्तिः। तत्रैव श्रीमन्मदनगोपालमूर्त्तिः। इति श्रीकुण्डलिंगानि ॥ ४३ ॥

ततो नन्दग्रामतीर्थदेवताः। वाराहे—ग्रामस्य पश्चिमभागे मधुसूदनकुण्डं। तत्रैव मधुसूदनमुर्त्तिः। श्रीयशोदाकुण्डं। पाषाणस्वरूपका कृष्णदर्शकाः। हावकानां मुर्त्तयः। ललिताकुण्डं । तत्पार्श्वे मोहनकुंडं। दोहनीकुंडम्। दुग्धकुंडं। कृष्णदधिभाण्डभञ्जनात् प्रपूरितं दधिकुंडम् । ग्रामाग्रतः पावनाख्यसरोवरम्। तन्मध्ये यशोदाकूपम् । तत्पार्श्वे कदम्बखंडाख्यवनम् । ग्रामाभ्यन्तरे यशोदादधिमन्थनस्थानम्। तत्पार्श्वे नंदीश्वराख्यमहारुद्रमूर्त्तिः। रुद्रपर्वतोपरि नन्दरायमन्दिरम्। तत्र नन्दराययशोदाकृष्णबलभद्रदर्शनम्। तत्पार्श्वे यशोदानन्दनयुगलमूर्त्तिः । इति नन्दग्रामस्थिततीर्थ देवताः ॥ ४४ ॥

अथ गदृवनतीर्थ देवताः। भविष्ये—तत्र व्योमासुरहर्म्म्यः। वज्रकीलनाम पर्व्वतोऽस्ति । तत्पार्श्वे बलभद्रसरः । तत्तीरस्थं कृष्णरासमंडलम् । तत्पार्श्वस्थवज्रकीलपर्वतोपरिस्थं श्रीराधावल्लभमन्दिरम्। तत्रैव वाक्यवनमस्ति ॥ इति गदाधिवनलिंगतीर्थाः ॥ ४५ ॥

अथ ललिताग्रामलिंगः। श्रीवत्सोपनिषदि—सखीगिरीपर्व्वतोऽस्ति । तत्पार्श्वस्थखिसिलिनि-सिला मन्दिरम्। तत्रैव ललिताविवाहस्थलम्। तत्पर्वतस्य दक्षिणपार्श्वे त्रिवेणीतीर्थं । तन्मध्ये रासमंडलं। तत्पार्श्वे सखीकूपं। तदुत्तरपार्श्वे शिलापृष्ठस्थयुगलबलदेवमूर्त्तिः हिंसवृक्षाधःस्था । तद्वामपार्श्वेऽशोका-

---

अब श्रीकुण्डबन के स्वरूप कहते हैं—आदिवाराह में यथा-गोपिकाकुण्ड, अरिष्टबन है। वहाँ धेनुकासुर वधस्थान है। उसके पाश में ललिता, मोहन नामक दो कुण्ड हैं । उन दोनों के दक्षिण पार्श्व में राधा-कृष्ण नामक दो कुण्ड हैं। दोनों का संगम पार्श्व में सखीमण्डल, ललिताग्रन्थिदत्तस्थल, और कलाकेलीसखी का विवाहस्थल है । उसके पास राधावल्लभमर्त्ति और मदनगोपालजी की मूर्त्ति है। यह श्रीकृष्णकुण्ड का चिन्ह है ॥ ४३ ॥

अब नन्दग्राम के तीर्थ देवता कहते हैं। वाराहपुराण में—ग्राम के पृष्ठ देश में मधुसूदनकुंड है। वहाँ मधुसूदनमूर्त्ति, यशोदाकुंड, कृष्णदिखनेवाली पाषाणरूपा हावकों की मूर्ति, और ललिताकुंड हैं । उसके पास मोहनकुंड, दोहनीकुंड, दुग्धकुंड, दधिकुंड हैं। ग्राम के आगे पावन नामक सरोवर है। उसके मध्य में यशोदाकूप है। उसके पास में कदम्बखंडि नामक बन है। ग्राम के मध्य भागमें यशोदा दधिमंथन स्थान है। उसके पास नन्दीश्वर नामक महारूद्रमूर्ति है। रूद्रपर्वत के उपर के भाग में नन्दरायजी का मन्दिर है। वहाँ, नंदराय, यशोदा, कृष्ण, बलभद्र के दर्शन हैं। उसके पास में यशोदानन्दन युगलमूर्त्ति है। यह नन्दग्राम का चिन्ह है ॥ ४४ ॥

अब गदृवन के कहते हैं। भविष्यपुराण में यथा—वहाँ व्योमासुर की हवेली, बज्रकील नामक पर्वत है। उसके पास में बलभद्र सरोवर है। उसके तीर में श्रीकृष्णरासमंडल है। पर्वत के ऊपर तथा रासमंडल के निकट राधावल्लभजी का मन्दिर है। वहाँ वाक्यबन भी है ॥ ४५ ॥

अब ललिताग्राम का कहते हैं।—श्रीवत्सोपनिषद में—सखीगिरि नामक पर्वत है । उसके पास खिसिलिनी शिलाकामन्दिर है। वहाँ ललिताजीके विवाहस्थल है। उस पर्वतके दक्षिण पार्श्वमें त्रिवेणीतीर्थ है।

वासपर्व्वतोऽस्ति । तदुपरि ललित.क्रीडास्थ.नम । अशोकगोपमन्दिरम् । सखीगिरिपर्वतोपरि गोपिकापुष्करिणी । तत्रैव वरिकोलूखल्य: । सखीनां मृगतृष्णावल्लघुपादचिन्हानि पाषाणपरिस्थानि । तदुत्तरपार्श्वे देहकुण्डाभिधानकुण्डम् । तद्दक्षिणपार्श्वे वेणीशंकराख्यमहारुद्रमूर्त्ति: ॥ इति श्रीललिताग्रामाधिवनलिंगानि॥४६

ततो वृषभानुपुरलिंगानि । पाद्मे—विष्णुब्रह्माख्यनामानौ पर्व्वतौ द्वौ परस्परौ । दक्षिणपार्श्वे ब्रह्म नाम पर्वत: वामपार्श्वे विष्णुनामपर्व्वत: । ब्रह्मपर्व्वतोपरि श्रीराधाकृष्णमन्दिरम् । श्रीराधाकृष्णदर्शनं । तदधो भागे वृषभानुमन्दिरम् । श्रीवृषभानुकीर्त्तिदाश्रीदाम्नां त्रयाणां दर्शनम् । तत्पार्श्वे ललितासखीनां प्रियासहितानां मन्दिरम् । राधादिनवसखीनां दर्शनम् । ब्रह्मपर्वतोपरि दानमन्दिरम् । हिण्डोलस्थलं । मयूरकुटीस्थलम् । रासमंडलं । विष्णुब्रह्मनाम्नोरुभयो: पर्व्वतयो: साकरिखोरिस्थलम् । ब्रह्मपर्वतोपरि राधामन्दिरम् । अग्रे लीलानृत्यमण्डलम् । विष्णुपर्व्वतोपरि श्रीकृष्णमन्दिरम् । अग्रे लीलानृत्यमन्दिरम् । तत्पार्श्वे विलासमन्दिरम् । तत्पार्श्वे गह्वरवनं । तदधोस्थले रासमण्डलम् । राधासरोवर: । तत्पार्श्वे दोहनीकुंडम् । तत्पार्श्वे चित्रलेखया कृतं मयूरसर: । तत्रैव भानुसरोवर: । तत्पार्श्वे व्रजेश्वराख्य महारुद्रमूर्त्ति: । तद्वामभागे कीर्त्तिसर: । तत्रैव युगलदर्शनं भवति । चतुर्दिक्षु समन्तात् चतु: सरांसि । इति वृषभानुपुरतीर्थदेवता: ॥ ४७ ॥

अथ गोकुललिंगानि । विष्णुपुराणे—नन्दमन्दिरम् । यशोदाशयनस्थलम् । उलूखलस्थलम् । पर्य्यस्तशकटस्थलम् । भिन्नभाण्डीकुटीकम् । यमलार्जुनोत्पाटनतीर्थाख्यौ द्वौ कुण्डौ । तत्र दामोदरमूर्त्तिदर्शनम् । तत्र सप्तसामुद्रिकाख्यकूपम् । तत्पार्श्वे गोपीश्वरमहारुद्रमूर्त्ति: । गोकुलचन्द्रमामन्दिरम् । बालस्वरूपगोकुलेश्वरदर्शनम् । तत्पार्श्वे रोहिनीमन्दिरम् । तदभ्यन्तरं बलदेवजन्मस्थानम् । नन्दगोष्ठिस्थानम् । पूतनास्तनपानप्राणायानस्थलम् । इतिगोकुललिंगानि ॥ ४८ ॥

उसके मध्यस्थल में रासमंडल है। उसके पास सखीकूप है। उसके उत्तर में शिलापृष्ठयुक्त युगल बलदेव मूर्ति है जो किंहिस वृक्ष के नीचे है। वाम पार्श्व में अशोकावास पर्वत है । उसके ऊपर ललिताक्रीड़ास्थल, अशोक गोपमन्दिर है। सखीगिरि पर्वत के ऊपर गोपिका पुष्करिणी है। वहाँ पर वरिकोलूखल, प्रस्थरोपरि सखियों के छोटे-छोटे पादचिन्ह समूह हैं। उसके उत्तर पार्श्व में देहकुंड है। उसके दक्षिणपार्श्व में वेणीशंकर नामक महारूद्र मूर्त्ति है ॥ ४६ ॥

अब वृषभानुपुर का चिन्ह कहते हैं। यहाँ विष्णु, ब्रह्म नामक दो पर्वत परस्पर संलग्न हैं। दक्षिण में ब्रह्मपर्वत, वाम भाग में विष्णु पर्वत है । ब्रह्म पर्वत के ऊपरी भाग में श्रीराधाकृष्ण का मन्दिर है। जहाँ श्रीराधाकृष्ण दर्शन है । उसके निम्न भाग में वृषभानुजी का मन्दिर है। जहाँ श्रीवृषभानु, कीत्तिदा व श्रीदाम के विग्रह हैं। उसके पास प्रियाजी के साथ ललितादि सखियों का मन्दिर है। जहाँ श्रीराधा तथा अष्ट सखियों का दर्शन है। ब्रह्म पर्वत के ऊपर दान मन्दिर, हिण्डोलस्थल, मयूरकुटी, और रासमंडल हैं। विष्णु तथा ब्रह्म पर्वत के मध्यस्थल में सांकरीखोरिस्थल है। ब्रह्मपर्वत के ऊपर राधामन्दिर है आगे ललितानृत्य मन्दिर है। उसके पास विलास मन्दिर है। उसके पास गह्वरबन है। उसके अध:स्थल में रासमंडल और राधा सरोवर है। उसके पास दोहनीकुंड है। उसके पास चित्रलेखा रचित मयूरसरोवर है । वहाँ भानुसरोवर हैं। उसके पास व्रजेश्वर नामक महारूद्र मूर्त्ति है उसके वाम भाग में कीर्तिसरोवर है। वहाँ सप्रराय युगल दर्शन हैं। यहाँ चार दिशा में चार सरोवर स्थित हैं ॥ ४७ ॥

अब गोकुल का चिन्ह कहते हैं । विष्णुपुराणमें—नन्दमन्दिर, यशोदाशयनस्थल, ऊखलस्थल,

अथ बलदेवस्थलाधिवनतीर्थदेवता: । भविष्योत्तरे—दुग्धकुण्डम् । बलदेवभोजनस्थलम् । युगलभिन्नसन्मुखस्थमूर्त्ति: । मन्दिरं त्रिकोणं । इतिबलदेवस्थललिंग: ॥ ४६ ॥

अथ गोवर्द्धनलिंग: । आदिवाराहे—गोवर्द्धनपर्व्वतम् । तदुपरिस्थं हरिदेवमन्दिरम् । हरिदेवदर्शनम् । मानसीगंगा । ब्रह्मकुण्डम् । मनसाख्यदेवीमन्दिरम् । मनसादेवीदर्शनम् । चक्रतीर्थम् । चक्रेश्वरमहादेवमूर्त्ति: । लक्ष्मीनारायणस्थलम् । तत्समीपे कदम्बखण्डाख्यं वनम् । तन्मध्ये हरिदेवकुण्डम् । तत्पार्श्वे इन्द्रध्वजवनम् । तन्मध्ये पञ्चतीर्थाख्यकुण्डम् । पूर्व्वभागे मैन्द्रवतीतीर्थकुंडम् । दक्षिणभागे यमुतीर्थसर: । पश्चिमभागे वारुण्याख्य सर: । उत्तरभागे कौवेरिण्यानदी ॥ इति श्रीगोवर्द्धनाधिवनतीर्थदेवता: ॥ ५० ॥

अथ कामनवनलिंगा: । नारदीये—राधाकुंडम् । रासमंडलम् । राधया ग्रन्थिदत्तम् । पद्मावतीनाम सखीविवाहस्थलम् । ततो नारदवनम् । तन्मध्ये नारदाख्यकुंडम् नारदविद्याध्ययनस्थलम् । सरस्वती स्वरूपम् ॥ ५१ ॥

तत: संकेतवटाधिवनलिंगा: । कुलार्णवे—श्यामकुंडम् । तत: सारिकावनम् । मानसर: । ततो विद्रुमवनम् । रोहिणीकुंडम् । तत्पार्श्वे ब्रजेश्वरमहादेवमूर्त्ति: । तत: पुष्पवनम् । शंकरकुंडम् । तत्पार्श्वे लम्बोदराख्यगणेशदर्शनम् । ततो जातीवनम् । माधुरीकुंडम् । मानमाधुरीविलासस्थलम् । ततश्चम्पावनम् । गोमतीकुंडम् । ततो नागवनम । सखीकुंडम् । ततस्तारावनम् । ताराकुंडम् । तत: सूर्य्यपतनवनम् । सूर्य्यकुंडम् (कूपं) । ततो बकुलकुञ्जम् (वनं) । गोपीसर: क्रीड़ामंडलम् । ततस्तिलकवनं । मृगवतीकुंडम् । ततो दीपवनम् । रुद्रकुंडम् । लक्ष्मीनारायणयुगलदर्शनम् । तत: श्राद्धवनम् । बलभद्रकुंडम् । नीलकंठाख्य

शकटस्थल, यमलार्ज्जुन नामक दो तीर्थ हैं । वहाँ दामोदर मूर्त्ति है । सप्तसामुद्रिक कूप भी है । उसके पास गोपीश्वर नामक महारुद्र मूर्त्ति, गोकुलचन्द्रमा मन्दिर, बालक रूप गोकुलेश्वर का दर्शन, उसके पार्श्व में रोहिणी मन्दिर हैं । उसके अभ्यन्तर में बलदेवजी का जन्मस्थान, नन्दगोष्ठी स्थान, पूतनास्तन्य-प्राणचोषणस्थल है ॥ ४८ ॥

अब बलदेव स्थल का चिन्ह कहते हैं । भविष्योत्तर में—दुग्धकुण्ड, बलदेव भोजनस्थल,युगलभिन्नसन्मुखस्थमूर्त्ति, त्रिकोण मन्दिर है ॥ ४६ ॥

अब गोवर्द्धन के चिन्ह कहते हैं । आदिवाराह में—गोवर्द्धनपर्वत, ऊपर हरिदेवजी का मन्दिर, जहाँ हरिदेव दर्शन हैं । मानसीगंगा, ब्रह्मकुंड, मनसादेवी, चक्रतीर्थ, चक्रेश्वर महादेव दर्शन, लक्ष्मीनारायणस्थल हैं । उसके निकट कदम्बखंडि नामक वन है । उसके मध्य हरिदेवकुंड है । पार्श्व में इन्द्रध्वजवन हैं । उसके मध्य में पञ्चतीर्थ नामक कुंड है । पूर्वभाग में मैन्द्रवती तीर्थ कुंड है । दक्षिण में यमुतीर्थ सरोवर, पश्चिम में वारुणी नामक सरोवर, अन्त: भाग में कौवेरिणी नामक नदी है ॥ ५० ॥

अब कामबन का चिन्ह कहते हैं । नारदीय में—राधाकुंड, रासमंडल, राधाकर्तृक ग्रन्थिदत्तस्थल, पद्मावती नामक सखी का विवाहस्थल है । अनन्तर नारदबन है । उसके मध्य नारदकुंड है । यहाँ नारद विद्याध्ययन स्थल और सरस्वती स्वरूप है ॥ ५१ ॥

अब संकेतबटाधिबन का चिन्ह कहते हैं । कुलार्णव में—स्यामकुंड है । तदनन्तर सारिकाबन मानसर: है । अनन्तर विद्रुमबन, रोहिणीकुंड हैं । उसके पास ब्रजेश्वर महादेवमूर्त्ति है । अनन्तर पुष्पबन, संकरकुंड हैं । उसके पास लम्बोदर नामक गणेशजी का दर्शन है । अनन्तर जातीबन, माधुरीकुंड नामक

शिवमूर्त्तिदर्शनम् । ततः षट्पदवनम् । दामोदरकुंडम् । दामोदराख्य कृष्णस्वरूपदर्शनम् । ततस्त्रिभुवनबनम् । कामेश्वरकुंडम् ॥ तत्पार्श्वे बासुदेवदर्शनम् ॥ ततः पात्रबनम । दानकुंडं । कर्णदर्शनम् ॥ ततः पितृबनम । श्रवणकुंडम् । ततो बटस्थस्कन्धारोहदर्शनम् ॥ ततो विहारबनम् । शतकोटिगोपिकारासमंडलं । वारुणीकुंडं ॥ ततो विचित्रवनम् । कृष्णचित्रमन्दिरम् । तत्पार्श्वे चित्रलेखाकुंडम् ॥ अथ विस्मरणबनम् । केशवकुंडम् ॥ ततो हाहाबनम् । गोपालकुंडम ॥ ततो जन्हुबनम् । जन्हुऋषिकूपम् ॥ ततो पर्वतबनम् । बराहकुंडम् ॥ ततोमहाबनम् । बृहद्गौतमीये—तृणावर्त्तनाशकाख्यतीर्थकुण्डम् । तत्पार्श्वे मल्लाख्यं तीर्थम् । तदुपरिस्थं गोपेश्वराख्यमहादेवदर्शनम् । तत्पार्श्वे तप्तसामुद्रिकं नाम कूपम् ॥ ५२ ॥

ततः कामबनलिंगानि । विष्णुपुराणे—चतुरशीति ये तीर्थाश्चतुरशीति मन्दिराः ।

चतुरशीति ये स्तम्भाः कामसेनविनिर्म्मिताः । अष्टषष्ठ्युत्तरा संख्या शतस्था रक्षणाय वै ॥
असुरा देवताः सर्वे विष्णोराज्ञाप्रणोदिता । यस्मान्न्यूनाधिकं जातं स्तंभसंख्या न जायते ॥

विमलकुंडम् ॥ १ ॥ गोपीकाकुंडम् ॥ २ ॥ सुवर्णपुरम् ॥ ३ ॥ गयाकुंडम् ॥ ४ ॥ धर्मकुंडम् ॥५॥ सहस्रतीर्थसरः ॥ ६ ॥ (तत्र धर्म्मराजसिंहासनदर्शनम) । यज्ञकुंडम् ॥ ७ ॥ पाण्डवानां पञ्चतीर्थसरांसि । ॥ ८ ॥ परमोक्षकुंडम् ॥ ९ ॥ मणिकर्णिकाकुंडम् ॥ १० ॥ तत्पार्श्वे निवासकुंडम् ॥ ११ ॥ त्रिकोणाकृतं यशोदाकुंडम ॥ १२ ॥ ततो मनोकामनाकुंडम् ॥ १३ ॥ ततो गोपीकारमणकुंडम् ॥ १४ ॥ तत समुद्रसेतु बन्धकुंडम् ॥ १५ ॥ ततस्त्रिकोणाकृतं ध्यानकुंडम् ॥ १६ ॥ ततस्तप्तकुंडम् ॥१७॥ ततो जलविहारकुंडं ॥१८॥

माधुरीजिका विलासस्थल है । अनन्तर चम्पाबन और गोमतीकुंड है । आगे नागबन,सचीकुंड हैं । अनन्तर ताराबन, ताराकुंड हैं । तदनन्तर सूर्य्यपतनबन, सूर्य्यकूप हैं । अनन्तर बकुलबन, गोपीसर, क्रीड़ामंडल हैं । तदनन्तर तिलकबन, मृगावती कुंड हैं । अनन्तर दीपबन, रुद्रकुंड है । यहाँ लक्ष्मीनारायण की युगल मूर्त्ति के दर्शन हैं । तदनन्तर श्राद्धबन, बलभद्र कुंड, नीलकंठाख्य शिवमूर्त्ति हैं । अनन्तर षट्पदबन, दामोदर कुंड, दामोदर नामक कृष्णस्वरूप दर्शन हैं । तदनन्तर त्रिभुवनबन, कामेश्वर कुंड हैं । उसके पास बासुदेव जी के दर्शन हैं । तदनन्तर पात्रबन, दानकुंड, कर्णजी के दर्शन हैं । तदनन्तर पितृबन, श्रवणकुंड, बटवृक्ष स्कन्ध आरोहि दर्शन है । तदनन्तर विहारबन, शतकोटिगोपिका रासमंडल, वारुणीकुंड हैं । तदनन्तर विचित्रबन और कृष्ण चित्र मन्दिर है । तत्पार्श्व में चित्रलेखाकुंड है । अनन्तर विस्मरणबन, केशवकुंड हैं । अनन्तर हाहाबन, गोपालकुंड हैं । तदनन्तर जन्हुबन, जन्हुऋषिकूप हैं । तदनन्तर पर्वतबन, बाराह-कुंड हैं । तदन्तर महाबन है । बृहद्गौतमीय में कहा है कि यहाँ तृणावर्त्तनाशक नामक तीर्थकुंड है । तत्पार्श्व में मल्लाख्यतीर्थ,तदुपरि गोपेश्वर महादेवके दर्शन हैं । तत्पार्श्व में तप्तसामुद्रिक नामक कूप है॥५२॥

अब कामबन का चिन्ह कहते हैं । विष्णुपुराण में यथा—८४ तीर्थ, ८४ मन्दिर, ८४ खम्भ हैं जो कि कामसेन से निर्म्मित हैं । यहाँ सब असुर, देवता विष्णु आज्ञा से प्रेरित होकर १६८ खम्भ हुए हैं, ऐसे तो न्यूनाधिक विचार से यहाँ असंख्य खम्भ हैं । यहाँ पर विमलकुंड, गोपिकाकुंड, सुवर्णपुर, गयाकुंड, धर्म्मकुंड, सहस्रतीर्थसरोवर हैं । जहाँ धर्म्मराजसिंहासन का दर्शन, यज्ञकुंड, पांडवों के पञ्चतीर्थसरोवर, परमोक्षकुंड, मणिकर्णिकाकुंड हैं, उसके पास निवासकुंड, त्रिकोणाकृत यशोदाकुंड हैं । ततः मनोकामना कुंड, गोपीकारमणकुंड, समुद्रसेतुबन्धकुंड, त्रिकोणाकृतध्यानकुंड, तप्तकुंड, जलविहारकुंड, जलक्रीड़ाकुंड, रंगिलीकुंड, छबीलीकुंड, जकीलाकुंड, मनीलाकुंड, दर्नीलाकुंड, पञ्चकुंड, घोषरानीकुंड, विह्वलकुंड,

जलक्रीड़ाकुण्डम् ॥ १९ ॥ रंगिलीकुण्डम् ॥ २० ॥ ततो छविलाख्यकुण्डम् ॥ २१ ॥ ततो जलक्रीड़ाख्यकुंडम् ॥ २२ ॥ ततो मतीलाख्यकुण्डम् ॥ २३ ॥ ततो दतीलाख्यकुण्डम् ॥२४॥ तत्पार्वे पञ्चकुण्डाः ये स्थिताः ॥२६॥ ततो घोपरानीकुण्डम् ॥ ३० ॥ तस्य समीपे विह्वलकुण्डम् ॥ ३१ ॥ ततो श्यामकुण्डम् ॥ ३२ ॥ तत्पार्श्वे गोमतीकुण्डम् ॥ ३३ ॥ ततो द्वारिकाकुण्डम् ॥ ३४ ॥ तत्पार्श्वे मानकुण्डम् ॥३५॥ ततो ललिताकुण्डम् ॥३६॥ तत्पार्श्वे विशाखाकुण्डम् ॥ ३७ ॥ ततो दोहनीकुण्डम् ॥ ३८ ॥ ततो मोहिनीकुण्डम् ॥ ३९ ॥ ततो बलभद्रकुण्डम् ॥ ४० ॥ ततश्चतुर्भुजकुण्डम् ॥ ४१ ॥ तत्पार्श्वे सुरभीकुंडम् ॥ ४२ ॥ ततो वत्सकुंडम् ॥ ४३ ॥ लुक्लुकस्थानम् ॥ ततो गोविन्दकुंडम् ॥ ४४ ॥ तत्र वाक्षमीलनस्थानम् ॥ ४५ ॥ ततो खिसिलिनिशिलातीर्थम् ॥ ४६ ॥ व्योमासुरगोफास्थानम् । ततो भोजनस्थलम् । सुमनानामसखी विवाहस्थानम् । ललितया रहस्येन ग्रन्थिदत्तम् । ततो विष्णुपादचिन्हपर्व्वतमेकादशाङ्गुलावस्थस्वरूपपरिमाणलिंगम् । तत्पार्श्वे गरुडनामतीर्थम् ॥ ४७ ॥ ततो कपिलतीर्थस्थानम् ॥ ४८ ॥ ततो लोहजंघाख्यऋषिस्थानम् । ततो होडस्थानम् । तस्योत्तरे भागे इन्दुलेखास्थानम् । विष्णुपादचिन्हस्य लक्षणं-पाद्मे :—

कदम्बकुसुमाकारो पञ्चरेखाविभूषितः । वर्त्तुलश्चापि ह्रस्वश्च पादचिन्ह प्रकीर्त्तितः ॥
विन्दुर्विशसमाकीर्णः पृष्ठे नीलस्वरूपकम् । पादचिन्हञ्च सर्वञ्च चक्रमेकं तथा ध्वजम् ॥

तत्रैव पर्वतोपरि रामस्थानम् । एतयो द्वयोः स्थानयोर्मध्ये दीर्घप्रवर्त्तिनी हलरेखान्वित-बलदेवस्थलम् । तस्योत्तरे भागे काम्यबनमध्ये कृष्णकूपम् ॥ ४९ ॥ तत्पार्वे निर्झरसंयुक्त संकर्षणकूपं द्वितीयम्॥५०॥ ततो लोकेश्वरनाम गुह्यतीर्थम् ॥ ५१ ॥ बाराहकुंडम् ॥ ५२ ॥ ततः सतीकुंड नाम पुष्करिणी ॥ ५३ ॥ चन्द्रसखी पुष्करिणी ॥ ५४ ॥ तस्योपरि चन्द्रशेखराख्यमहादेवमूर्त्तिः ॥ ततो शृंगारतीर्थम् ॥ ५५ ॥ ततः शैलस्य दक्षिणपार्श्वे प्रभाल्ललीनामवापी ॥ ५६ ॥ तस्य पश्चिमे भागे भारद्वाजर्षिकूपम् ॥ ५७ ॥ तस्योत्तरेभागे

श्यामकुंड, गोमतीकुंड, द्वारिकाकुंड, मानकुंड, ललिताकुंड, विशाखाकुंड, दोहनीकुंड, मोहनीकुंड, बलभद्रकुंड, चतुर्भुजकुंड, सुरभीकुंड, वत्सकुंड, लुकलुकस्थान, गोविन्दकुंड, अक्षुमीलनस्थान, खिसलनीशिला, व्योमासुरगुफा, भोजनस्थल, सुमानासखीविवाहस्थल,ललिताग्रन्थिदत्तस्थान हैं । तदनन्तर विष्णुपादचिन्हपर्वत, गरुड़नामतीर्थ, कपिलतीर्थ, लोहजंघऋषिस्थान, होड़स्थल, उसके उत्तर में इन्दुलेखादेवी का स्थान है ।

अब विष्णुपादस्थल चिन्ह का लक्षण कहते हैं—यह लक्षण पद्मपुराण में है । यथा—कदम्बकुसुम सदृश, पाँच रेखायुक्त, गोलाकार, ह्रस्व पादचिन्ह है । विन्दु-विन्दु से युक्त पृष्ठ में नीलता है । एक चक्र है । इस प्रकार सर्वत्र पादचिन्ह हैं । उस पर्वत के ऊपर रामस्थान, दोनों के मध्य में दीर्घ हलरेखा युक्त बलदेवस्थल, उसके उत्तर भाग में कृष्णकूप, तत्पार्श्व में द्वितीय संकर्षणकूप,अनन्तर लोकेश्वरनामकगुह्यतीर्थ,बाराहकुंड, सतीकुंड, चन्द्रसखी पुष्करिणी, उसके ऊपर चन्द्रशेखर नामक शिवमूर्त्ति, शृंगारतीर्थ अनन्तर शैल के दक्षिण में प्रभालल्लि नाम की बावड़ी है । उसके पश्चिम भाग में भारद्वाज ऋषिकूप है, उसके उत्तर में संकर्षणकुंड, उसके पूर्व भाग में कृष्णकूप है । उक्त तीन कूप पर्वत के निकट में स्थित हैं । अनन्तर पर्वत शिखर में भद्रेश्वर नामक शिवमूर्त्ति, तदनन्तर अलक्षगरुडमूर्त्ति,तत्समीप में पिप्पल्यादाश्रम,अनन्तर पर्वत के पास पश्चिम की तरफ बुद्धस्वरूपस्थान, तदनन्तर दिहुहली, अनन्तर राधा पुष्करिणी, उसके पूर्व भाग में ललिता पुष्करिणी, उसके उत्तर में विशाखापुष्करिणी,उसके पश्चिम में चन्द्रावली पुष्करिणी, उसके दक्षिण

संकर्षणकूपम् ॥ ५८ ॥ तस्य पूर्वस्मिन्भागे कृष्णकूपम् ॥ ५९ ॥ ये त्रय कूपाः पर्वतस्य निकटे स्थिताः ॥ ततः शैलशिखरोपरिस्थभद्रेश्वराख्य महादेवमूर्त्तिः । ततस्तत्रैवालक्ष गरुड़मूर्त्तिः । ततस्तत्समीपे पिप्पल्यादाश्रमम् । ततः शैलस्य निकटे पश्चिमतः बुद्धस्वरूपस्थानम् । ततः दिहुहलीतिप्रसिद्धं नाम । तत्र लोकेश्वरस्गोत्तरे भागे लक्ष्मर्त्तिस्तन्निकटे राधानामपुष्करिनीतिप्रसिद्धम् ॥ ६० ॥ तत्पूर्वभागे ललितानाम पुष्करिणी ॥ ६१ ॥ तस्याः उत्तरे भागे विशाखानाम पुष्करिणी ॥ ६२ ॥ तस्याः पश्चिमे भागे चन्द्रावलीनाम पुष्करिणी ॥ ६३ ॥ तस्याः दक्षिणे भागे चन्द्रभागानाम पुष्करिणी ॥ ६४ ॥ पूर्वदक्षिणाभ्यन्तरे लीलावतीनाम पुष्करिणी ॥ ६५ ॥ पश्चिमोत्तराभ्यन्तरे प्रभावतीनाम पुष्करिणी ॥ ६६ ॥ आसां मध्यस्था राधानाम पुष्करिणी ॥ ६७ ॥ आसु षट्सु पुष्करिनीष्वभ्यन्तरेषु चतुः षष्टि सखीनां गोपीकानां नाम्ना पुष्करिण्यो दृश्यन्ते ॥ ६८ ॥ तासामग्रे कुशस्थली तीथम् ॥ ६९ ॥ तत्रैव शंखचूडवधस्थानम् । कामेश्वराख्यमहादेवमूर्त्तिः । उत्तरदेशे चन्द्रशेखराख्यमहादेवमूर्त्तिः । विमलेश्वरदर्शनम् । बाराहस्वरूपदर्शनम् । तत्रैव द्रौपदीसहितानां पञ्चपाण्डवानां दर्शनम् । तत्र वाष्टसिद्धिदाख्यगणेशदर्शनम् । वज्रपञ्जराख्य हनुमद्दर्शनम् । चतुर्भुजदर्शनम् । वृन्दान्वितगोविन्ददर्शनं । राधावल्लभदर्शनम् । गोपीनाथदर्शनम् । नवनीतरायदर्शनम् । गोकुलेश्वरदर्शनम् । रामचन्द्रदर्शनम् ॥ इत्यादि चतुरशीतिदेवानां दर्शनं कृतम् ॥

तदैव चतुरशीतितीर्थस्नानफलं लभेत् । नैव कुर्य्याद् यदालोकं तीर्थयात्रा तु निष्फला ।
चतुरशीतिस्तम्भानां समारभं करोद् यदा । तदैव परिपूर्णोऽस्तु तीर्थयात्रा समर्थितः ॥
इतिकाम्यवनलिंगानि ॥ ४३ ॥

अथ कोकिलावनम् । नारदपञ्चरात्रे:—रत्नाकरसर. । तत्पार्श्वे रासमंडलम् । ततस्तालवनम् । संकर्षणकुंडं ॥ ततः कुमुदवनं । पद्मकुंडं ॥ ततो भाण्डीरवनं । असिमाण्डह्रदनामतीर्थम् । मत्स्यकूपम् ।

में चन्द्रभागा पुष्करिणी हैं । पूर्व दक्षिण के अभ्यन्तर में लीलावती पुष्करिणी, पश्चिम उत्तर के अभ्यन्तर में प्रभावती पुष्करिणी, मध्यस्थल में राधानामक पुष्करिणी हैं । इन पुष्करणियों के अभ्यन्तर में ६४ सखियों की पुष्करिणी हैं । सब के आगे कुशस्थली है । वहाँ शंखचूड़ वधस्थान, कामेश्वर महादेव मूर्ति, उत्तर भाग में चन्द्रशेखर मूर्ति, विमलेश्वरदर्शन और बाराहस्वरूप दर्शन हैं । वहाँ द्रौपदी के साथ पांडवों के दर्शन भी हैं, तथा अष्टसिद्ध नामक गणेश दर्शन, वज्रपञ्जर नामक हनुमद्दर्शन, वृन्दायुक्त गोविन्ददर्शन, राधावल्लभदर्शन, गोपीनाथदर्शन, नवनीतरायदर्शन, गोकुलेश्वरदर्शन, और रामचन्द्रदर्शन हैं । इस प्रकार ८४ देवस्थान व ८४ तीर्थस्थानों का दर्शन करके ८४ खम्भों का दर्शन करें ॥ ४३ ॥

अब कोकिलाबन का चिन्ह कहते हैं । नारदपञ्चरात्र में—रत्नाकर सरोवर, उसके पास रासमंडल हैं । अनन्तर तालबन, संकर्षणकुंड हैं । अनन्तर कुमुदबन, पद्मकुंड हैं । अनन्तर भाण्डीरवन, असिमाण्डह्रदतीर्थ, मत्स्यकूप हैं । उस कूप के उत्तर पार्श्व में अशोक नामक वृक्ष है । वहाँ अशोकमालिनी नामक अशोकवनदेवता, अघासुरवधस्थल हैं । अनन्तर छत्रवन, सूर्य्यकुंड हैं । अनन्तर भद्रेश्वर-शिवमूर्ति, भद्र सरोवर हैं । अनन्तर विमलबन, बकासुरवधस्थान, उसके पास मामभाधुरी कुंड हैं । तदनन्तर बहुलाबन, संकर्षणकुंड, उसके निकट कृष्णकुंड हैं । तदनन्तर मधुवन, विदुरस्थान, मधुसूदनकुंड, लवणासुरवधस्थान, लवणासुर गोपा, शत्रुघ्नकुंड, उसके पास शत्रुघ्नमूर्तिदर्शन हैं । अनन्तर मृद्वन, प्रजापति स्थान हैं । अनन्तर ध्रुमबन, वामनकुंड हैं । तदनन्तर मोनकावन, रम्भासरोवर हैं । तदनन्तर कजलीबन, पुंडरीक सरोवर हैं ।

कुंडो नास्ति । तस्य कूपस्योत्तरपार्श्वेऽशोकनामवृक्षः । तत्रैवाशोकमालिनीनामाशोकवनदेवता । अघासुरवधस्थानम् ॥ ततो छत्रबनम् । सूर्य्यकुंडम् ॥ ततो भद्रबनम् । भद्रेश्वराख्यशिवमूर्त्तिः । भद्रसरः ॥ ततो विमलबनम् । भविष्योत्तरे—बकासुरवधस्थानम् । नन्दकुंडम् । तत्पार्श्वे मानमाधुरीकुंडम् ॥ ततो बहुलाबनम् । संकर्षणकुंडम् । तत्समीपे कृष्णकुंडम् ॥ ततो मधुबनम् । विदुरस्थानम् । मधुसूदन कुंडम् । लवणासुरवधस्थानम् । लवणासुरगुफा । शत्रुघ्नकुंडम् । तत्पार्श्वे शत्रुघ्नमूर्त्तिदर्शनम् ॥ ततो मृद्वनम् । प्रजापतिस्थानम् ॥ ततः जन्हुबनम् । बामनकुंडम् ॥ ततो मेनिकाबनम् । रम्भासरः ॥ ततः कजलीबनम् । पुण्डरीकसरः ॥ ततो नन्दकूपबनम् । दीर्घनन्दकूपम् । गोगोपालस्थलम् ॥ ततः कुशबनम् । मानसरः ॥ ततो ब्रह्मबनम् । यज्ञकुंडम् ॥ ततोऽप्सराबनम् । अप्सराकुंडम् ॥ ततो विह्वलबनं । विह्वलकुंडं । विह्वलस्वरूप कदम्बस्थल दर्शनं । संकेतेश्वर्य्यम्बिकादर्शनं । सखीगोपिकागानभोजनस्थलमंडलदर्शनं ॥ ततः कदम्बबनं । गोपिकासरः । रासमंडलं ॥ ततः स्वर्णबनं । रासमण्डलस्थलं । ततः सुरभिबनं । गोविन्दकुंडं । तत्पार्श्वे गोवर्द्धनपर्व्वतोपरिस्थं सप्तवर्षावस्थकृष्णस्वरूपगोवर्द्धननाथदधिभोजनस्थलं । गोपालपाणिचिन्हं । गोवर्द्धननाथदर्शनं ॥ ततः प्रेमवनं । प्रेमसरः । ललितामोहनदर्शनं । रासमण्डलं । हिण्डोलस्थलं ॥ ततो मयूरबनं । मयूरकुंडं ॥ ततो मानेंगितबनं । ब्रह्मपर्वतोपरिस्थं मानमन्दिरं । हिण्डोलं । रासमंडलं । रत्नकुंडं ॥ ततः शेषशयनबनं । महोदधिकुंडं । शेषनागोपरिशयन लक्ष्मीनारायणप्रौढ़नाथस्वरूपदर्शनं ॥ ५४ ॥

ततो वृन्दाबनं । पाद्मे—कालीयह्रदं । केशीघाटं । ततश्चिरघाटं ; ततो बंशीबटं । दशाब्दावस्थकृष्णपादचिन्हं । मदनगोपालदर्शनं । वृन्दादेव्यन्वितगोविन्ददर्शनं । ततः यज्ञपत्नीस्थलं । ततोऽक्रूरघाटं । उत्तरकोणस्थ शतकोटिगोपिकाभिः कृतरासमंडलस्थलं ॥ ततः परमानन्दवनं । आदिवद्रिकास्थानदर्शनं । आनन्दसरः । ततो रंकपुरबनं । सुभद्राकुंडं । ततो वार्त्तावनं । मानसरः । ततःकरहपुरबनं । ललितासरः । तदुपरिस्थ

अनन्तर नन्दकूपबन, दीर्घनन्दकूप, गोगोपालस्थल हैं । तदनन्तर कुशबन,मानसरः हैं । अनन्तर ब्रह्मबन, यज्ञकुंड हैं । अनन्तर अप्सराबन, अप्सराकुंड हैं । तदनन्तर विह्वलबन, विह्वलकुंड, विह्वलस्वरूप कदम्बस्थलदर्शन,संकेतेश्वरीअम्बिकादर्शन.सखी गोपीयों का गानेका तथा भोजन करनेका मंडलाकार स्थानहैं । तदनन्तर कदम्बबन, गोपिकासरोवर, रासमंडल हैं । अनन्तर स्वर्णबन, रासमंडल स्थल हैं । तदनन्तर सुरभीबन, गोविन्दकुंड, उसके पास गोवर्द्धनपर्वत के ऊपर भाग में सात वर्ष अवस्था प्राप्त कृष्णस्वरूप गोवर्द्धननाथ के दधिभोजनस्थल, गोपालपाणिचिन्ह, गोवर्द्धनाथ जी का दर्शन है । तदनन्तर प्रेमवन, प्रेमसरोवर, ललितामोहन जी का दर्शन, रासमंडल, हिण्डोल स्थल हैं । अनन्तर मयूरबन, मयूरकुंड हैं । अनन्तर मानेंगितबन तथा ब्रह्मपर्वत के ऊपर मानमन्दिर, हिण्डोला, रासमंडल, रत्नकुंड हैं । तदनन्तर शेषशयनबन, महोदधिकुंड, शेषनाग के ऊपर शयनपरायण लक्ष्मीनारायण प्रौढ़नाथस्वरूप का दर्शन हैं ॥ ५४ ॥

अनन्तर वृन्दाबन है । पद्मपुराण में—कालियह्रद, केशीघाट, तदनन्तर चीरघाट, अनन्तर बंशीबट, दशवर्षीय श्रीकृष्णपादचिन्ह, मदनगोपालजी का दर्शन, वृन्दादेवी के साथ श्रीगोविन्दजी का दर्शन हैं । अनन्तर यज्ञपत्नीस्थल है । तदनन्तर अक्रूरघाट, उसके उत्तर कोण में शतकोटि गोपिका के साथ कृत रासमंडल स्थल हैं । तदनन्तर परमानन्दबन, आदिबद्रिकाआश्रम दर्शन, आनन्दसरोवरहैं । अनन्तर रंकपुरबन, सुभद्राकुंड है । अनन्तर वार्त्ताबन, मानसरोवर है । अनन्तर करहपुरबन, ललितासरोवर, ऊपर में भानुकूप, रासमंडल, कदम्बखंड, हिण्डोलस्थल,भद्रादेवी सखीजी का विवाहस्थल, ललिताजी के द्वारा

भानुकूपम्। रासमण्डलम्। कदम्बखण्डम्। हिण्डोलस्थलम्। भद्रादेवी-सखीविवाहस्थलम्। ललितया ग्रन्थिदत्तम्। दानलीलास्थलम्। ततः कामनावनम्। श्रीधरकुंडम्। ततोऽञ्जनपुराख्यं वनम्। किशोरीकुंडम्। कृष्णकिशोरीदर्शनम्। ततः कर्णवनम्। दानकुंडम्। ततः क्षिपनकवनम्। गोपीकुंडम्। ततो नन्दनवनम्। नन्दनन्दनकुंडम्। अथेन्द्रवनम्। देवताकुंडम्। ततः शिक्षावनम्। कामसरः। ततश्चन्द्रावलीवनम्। चन्द्रावलीसरः। ततो लोहवनम्। गिरीशकुंडम्। वज्रेश्वरमहादेवदर्शनम्। ततस्तपोवनम्। पाद्मे:—विष्णुकुंडं। ततो जीवनवनम्। पीयूषकुंडम्। ततः पिपासावनम्। मन्दाकिनीकुंडम्। रासमंडलम्। ततश्चात्रगवनं। माहेश्वरीसरः। ततः कपिवनम्। अञ्जनीकुंडम्। हनुमद्दर्शनम्। ततो विहृस्यवनम्। रामकुंडम्। अथाहूतवनम्। ध्यानकुंडम्। ततः कृष्णस्थितिवनम्। हेलासरः। ततो भूषणवनम्। पद्मासरः। ततो वत्सवनम्। गोपालकुंडम्। ततः क्रीड़ावनम्। भामिनीकुंडं। ततः रुद्रवनम्। गदाधरकुंडं। ततो रमणवनं। मृगतृष्णाशुक्तिरससमूहम्। पञ्चवर्षावस्थकृष्णपादचिन्हम्। अटलेश्वरकुंडं। ततोऽशोकवनं। सीताकुंडं। ततो नारायणवनं। गोपकुंडं। ततो सखावनं। नारायणकुंडं। ततः सखीवनं। लीलावतीकुंडं। ततः कृष्णान्तर्द्धानवनं। कृष्णकुंडं। ततो मुक्तिवनं। मधुमंगलकुंडं। ततो पापांकुशवनं। अमृतकुंडं। ततो रोगांकुशवनं। धन्वन्तरिस्थानं। दुर्वासाकुंडं। ततो सरस्वतीवनं। सरस्वतीकुंडं। ततो नवलवनं। राधारमणकुंडं। ततो किशोरवनं। रमाकुंडं। ततो किशोरीवनं। नवनीतकुंडम्। ततो वियोगवनम्। उद्धवकुंडम्। ततो गोदृष्टिवनं। गोपालकुंडम्। समन्ताद्धिंसवृक्षाणां सघनं वनम्। स्वप्नेश्वराख्यमहादेवदर्शनम्। ततश्चेष्टावनम्। ध्यानकुंडं। ततःस्वप्नवनम्। अक्रूरकुंडं। ततः शुकवनं। द्वारिकाकुंडं। ततः कपोतवनं। शौनककुंडं। ततो लघुशेषशयनवनं। लक्ष्मीकुंडं। ततश्चक्रवनं। गोपीपुष्करिनी। ततो दोलावनं। स्कान्दे।—विशाखाकुंडम्। ततो हालावनं। रतिकेलिसखीकूपम्। ततो गानवनं। गन्धर्व्वकुंडम्। ततो गन्धर्व्ववनम्। विश्वावसुसरः।

ग्रन्थिदानस्थल, दानलीलास्थल हैं। तदनन्तर कामनावन, श्रीधरकुंड हैं। तदनन्तर अञ्जनपुरवन, किशोरीकुंड, कृष्णकिशोरी जी का दर्शन हैं। अनन्तर कर्णवन, दानकुंड हैं। तदनन्तर क्षिपनकवन, गोपीकुंड हैं। तदनन्तर नन्दनवन, नन्दनन्दनकुंड हैं। अनन्तर इन्द्रवन, देवताकुंड हैं। तदनन्तर शिक्षावन, कामसर हैं। तदनन्तर चन्द्रावलीवन, चन्द्रावली सरोवर हैं। अनन्तर लोहवन, गिरीशकुंड, वज्रेश्वर महादेवजी का दर्शन हैं। तदनन्तर तपोवन है। पद्मपुराण में कहा है। विष्णुकुंड है। अनन्तर जीवनवन, पीयूषकुंड हैं। तदनन्तर पिपासावन, मन्दाकिनीकुंड, रासमंडल हैं। तदनन्तर चात्रगवन, माहेश्वरी सरोवर हैं। तदनन्तर कपिवन, अञ्जनीकुंड, हनुमदर्शन है। तदनन्तर विहस्यवन, रामकुंड हैं। अनन्तर आहूतवन, ध्यानकुंड हैं। तदनन्तर कृष्णस्थितिवन, हेलासर हैं। अथ भूषणवन, पद्मासर: हैं। अथ वत्सवन, गोपालकुंड हैं। अथ क्रीड़ावन, भामिनीकुंड हैं। तदनन्तर रुद्रवन, गदाधरकुंड हैं। तदनन्तर रमणवन, मृगतृष्णाशुक्तिरससमूह, पञ्चवर्षीय कृष्णपादचिन्ह, अटलेश्वरकुंड हैं। तदनन्तर अशोकवन, सीताकुंड हैं। अथ नारायणवन, गोपकुंड हैं। आगे सखावन, नारायणकुंड हैं। अथ सखीवन, लीलावतीकुंड है। आगे कृष्णान्तर्द्धानवन, कृष्णकुंड है। अथमुक्तिवन, मधुमंगलकुंड हैं। आगे पापांकुशवन, अमृतकुंड हैं। अथ रोगांकुशवन, धन्वन्तरिस्थान, दुर्वासाऋषिकुण्ड हैं। अथसरस्वतीवन, सरस्वतीकुंड हैं। तदनन्तर किशोरीवन, नवनीतकुंड हैं। अथवियोगवन, उद्धवकुण्ड हैं। तदनन्तर गोदृष्टिवन, गोपालकुण्ड हैं। चारि ओर हिंस वृक्षों का सघनवन, स्वप्नेश्वर महादेव दर्शन हैं। तदनन्तर चेष्टावन, ध्यानकुंड हैं। तदनन्तर स्वप्नवन, अक्रूरकुंड हैं। तदनन्तर शुकवन,

ततो ज्ञानवनम्। मुक्तिकुण्डम्। ततो नीतिबनं। धर्म्मसरः। ततो श्रवणबनं। प्रह्लादकुण्डम्। ततो लेपनवनं। नरहरिकुण्डम्। ततः प्रशंसाबनं। बाराहकूपम्। ततो मेलनवनं। रुद्रकुण्डम्। ततः परस्परबनं। कलाकेलि-विवाहस्थलं। चन्द्रावल्या-ग्रन्थिबन्धनं कृतं। सुमनाकुण्डं। तत्पार्श्वे रासमण्डलस्थलं॥ ततः पाडरबनं। मनोहरकुंडं। ततो रुद्रवीर्य्यस्खलनबनं। मोहिनीकुण्डं। तत्पार्श्वे रुद्रकूपं। तदुपरि अमितमहादेव मूर्त्तिः। लिंगोर्द्ध भूमिशयनम्। ततो मोहिनीबनं। कमलासरः। तत्पार्श्वे मोहिनीस्वरूपभगवद्दर्शनं। ततो विजयबनं। मायाकुण्डम्। ततो गोपिकाकूपम्। धेनुकुण्डम्॥ ततो गोपालबनं यमुनायां गोपान-परस्पराख्यं तीर्थम्। ततो वियद्वनं। मन्दाकिनीकूपम्। ततो नूपुरबनम्। सुन्दरीकुण्डम्। ततो यक्षबनम्। प्रभावलीसरः। ततः पुण्यवनं। सत्यकुंडम्। ततो ऽग्रबनम्। नारदकुंडम्। प्रतिज्ञाबनं सन्देहकूपम्। ततः कामरुबनं विश्वेश्वरकुंडं। ततः कृष्णदर्शनबनं। परमेश्वरकुंडम्। तत्पार्श्वे परमेश्वरस्थानम्। इति सप्तत्रिंशोत्तरशतबनानां स्थानलिंगानि॥५५॥

अथ षोडशवटानां संकेतबटादीनां स्थानलिंगान्याह। स्कान्दे-उत्तरखंडे—

तत्रादौ संकेतस्य बटलिंगानि दर्शयेत्।

हिंडोलान्वितरासस्य मंडलं परिभूषितम्। तत्पार्श्वे कृष्णकुंडाख्यं मज्जने कृष्णदर्शनम्॥

ततो भांडीरवटम्। दीर्घमन्दिरं स्वरूपदर्शनव्यतिरिक्तम्। ततो यावबटं। रासमंडलं। तदुपरिस्थानि द्वादशाब्दावस्थं राधादि दशसखीनामारक्तानि पादलेपनेषु पादचिन्हानि। ततः शृङ्गारबटम्। द्वौ मन्दिरौ। दक्षिनभागे शृङ्गारमन्दिरं। बामभागे शय्यामन्दिरं। ततः श्रीवटं। लक्ष्मीमन्दिरं॥ ततः कामवटं कामदेवसरः। ततो मनोरथबटं, धनदाकुंडम्। ततः आशावटं, कामिनीकूपं। ततोऽशोकबटम्। जानकीसरः। तत्पार्श्वे त्र्यम्बकेश्वरमहादेवदर्शनम्। ततः केलिबटं, कमलकुंडम्। कृष्णरासमंडलम्॥ ततो ब्रह्मवटं, गयाकुंडं, शंकेश्वरमहादेवदर्शनम्। ततो रुद्रवटं, पार्व्वतीकुंडम्। कालभैरवदर्शनम्। ततः श्रीधरवटम्। श्रीधरकुंडम्। तत्पार्श्वे प्रल्हादकूपम्। ततः सावित्रीबटम्। गायत्रीकूपं, रमणीसरः। तत्पार्श्वे सुवट नाम्नं बटवृक्षमतिदीर्घम्।

द्वारिकाकुंड हैं। आगे कपोतबन, शौनककुंड हैं। तदनन्तर लघुशेषशयनबन, लक्ष्मीकुंड हैं। अथ चक्रबन, गोपीपुष्करिणी हैं। अथ दोलाबन, विशाखाकुंड हैं। अथ हाहाबन, रतिकेलिसखीकूप हैं। आगे गानबन, गन्धर्व्वकुंड हैं। तदनन्तर गन्धर्व्वबन, विश्वावसुसरः हैं। अथ ज्ञानबन, मुक्तिकुंड हैं। अथ नीतिबन, धर्म्मसरः हैं। अथ श्रवणबन, प्रह्लादकुंड हैं। अथ लेपनबन, नरहरिकुंड हैं। तदनन्तर प्रशंसाबन, बाराहकूप हैं। अथ मेलनबन, रुद्रकुंड हैं। अथ परस्परबन, कलाकेलिविवाहस्थल, चन्द्रावलीग्रन्थिबन्धनकृत-स्थान, सुमनाकुंड हैं। उसके पास रासमंडल हैं। अथ पाडरबन, मनोहरकुंड हैं। अथ रुद्रवीर्य्यस्खलनबन, मोहिनीकुंड हैं। उसके पास रुद्रकूप हैं। उसके ऊपर अमितमहादेवमूर्त्ति, (लिंगोर्द्ध भूमिशयन) हैं। अथ मोहनीबन, कमलासर, उसके पास मोहनीस्वरूप भगवद्दर्शन हैं। अथ विजयबन, मायाकुंड हैं। तदनन्तर गोपीकाकूप, धेनुकुंड हैं। तदनन्तर गोपालबन, यमुनाजी में गोपानपरम्परानामक तीर्थ हैं। तदनन्तर वियद्वन, मन्दाकिनीकूप हैं। तदनन्तर मयूरबन, सुन्दरीकुंड हैं। तदनन्तर यक्षबन, प्रभावलिसरः हैं। अथ पुण्यबन, सत्यकुंड हैं। आगे अग्रबन, नारदकुंड हैं। तदनन्तर प्रतिज्ञाबन, सन्देशकूप हैं। तदनन्तर कामरुबन, विश्वेश्वरकुंड हैं। अथ कृष्णदर्शनबन, परमेश्वरकुंड, उसके पास परमेश्वरस्थान हैं। यह १३७ बनों का चिन्ह है॥ ५५॥

अब १६ वटों का स्थान चिन्ह कहते हैं। स्कन्द पुराण के उत्तरखंड में—प्रथम संकेतबट के चिन्ह

इति बनानां कथितानि लिंगान्यनेकशः सप्तत्रयोत्तराशता । तथैव प्रोक्तानि बटादिकानां चिन्हानि तीर्थानि शुभप्रदानि ॥ ५६ ॥

इति श्रीमद्भास्करात्मज नारायणभट्टविरचिते व्रजभक्तिविलासाख्ये ग्रन्थे परमहंससंहितोदाहरणे लिंगकथनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥

तृतीयोऽध्यायः प्रारभ्यते ।

अथ सप्तत्रिंशोत्तरशतबनानां वा संकेतादिषोडशबटानां वा तीर्थानां स्वरूपाणामुत्पत्ति निरूप्यते ॥ स्कान्दे—

तत्रादौ सतीर्थमथुरोत्पत्ति निरूप्यते ।

पुराकृतयुगस्यान्ते मधुनामाऽसुरोऽभवत् । इन्द्रादीन् सकलान् जित्वा त्रैलोक्याधिपतिर्भवेत् ॥
नाम्ना मधुपुरीं कृत्वा प्रशशासासुरेश्वरः । तदैव पीडिता देवाः केशवं शरणं ययुः ॥
नमो नारायणायैव माधवाय नमोऽस्तु ते । मधुं विनाशय स्वामिन्नस्माकं परिपालय ॥
इति विज्ञापितो विष्णु र्युयुधे मधुना सह । दशवर्षप्रमाणेनासुरं तत्रावधीद्धरिः ॥
सर्व्वे देवाः समागत्य माधवं नाम चक्रिरे । मधोः पुरीं समुत्पाद्य मथुरां नाम चक्रिरे ॥
तत्र देवास्तपश्चक्रुस्त्यक्त्वा वैकुण्ठधामकम् । चतुरशीति तीर्थांश्च स्थापयेत्तुश्च देवताः ॥
दक्षिणोत्तरकोटीश्च त्रयो भागाः समासनः । षट्त्रिंशास्तीर्थदेवाश्च मथुरायास्तु दक्षिणे ॥
पञ्चत्रिंशोत्तरे स्थाप्याः नित्यसेवा वरप्रदाः । त्रयोदशान्तरे स्थाप्या मथुराकूलभूषिताः ॥
क्रमः-तत्रादौ हनुमन्मूर्त्तिं रक्षणाय प्रकल्पयेत् ॥
भाद्रमास्यसिताष्टम्यां सिंहलग्नोदये यदि । स्थापनं पूजनं कुर्यु र्गन्धपुष्पै र्मनोहरैः ॥
धूपदीपैश्च नैवेद्यै र्द्विजेभ्यो दानमाचरेत् । वस्त्रमन्नं च गोदानं प्रतितीर्थं समर्पयेत् ॥

भविष्ये व्यासः—

आमान्नपरिमाणं तु चतुः प्रस्थं प्रकीर्त्तितम् । आमं दद्याद्धि कौन्तेय दद्यादन्नं चतुर्गुणम् ॥
यथा शक्त्योदनं दद्यात् मनकं दोषमन्यथा । प्रथमस्य च कल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्त्तते ॥१॥

कहते हैं । हिण्डोला से युक्त रासमंडल द्वारा विभूषित संकेतबट है, पास में कृष्णकुण्ड है, जहाँ स्नान करने से कृष्णदर्शन होता है । तदनन्तर भाण्डीरबट, दीर्घमन्दिर स्वरूप दर्शन हैं । अथ जावबट, रासमण्डल, उसके ऊपर द्वादशवर्षीया राधादि दश सखीयों के इषत् रक्तिमायुक्त पादक्षेपण चिन्ह हैं । अनन्तर शृंगारबट है, वहाँ दक्षिण भाग में शृंगार मन्दिर, वाम भाग में शय्या मन्दिर हैं । तदनन्तर श्रीबट है, जहाँ लक्ष्मी मन्दिर है । अथ कामबट, कामदेवसरः हैं । अथ मनोर्थ बट, धनदाकुंड हैं । अथ आशाबट, कामिनीकूप हैं । अथ अशोकबट, जानकीसरः, उसके पास त्र्यम्बकेश्वर महादेव हैं । अथ केलिबट, कमलकुण्ड, कृष्ण-रासमंडल हैं । अथ ब्रह्मबट, गयाकुंड, शंकेश्वर महादेव दर्शन हैं । अथ रुद्रबट, पार्व्वतीकुंड, कालभैरव दर्शन हैं । तदनन्तर श्रीधरबट, श्रीधरकुंड, उसके पास प्रल्हादकूप हैं । अथ सावित्रीबट, गायित्रीकूप रमणीसरः हैं । उसके पास सुबट नामक अति दीर्घ बटवृक्ष है ॥५६॥

इति श्रीभास्करात्मज नारायणभट्टरचित व्रजभक्तिविलास ग्रन्थ का लिंगकथन नामक द्वितीय अध्याय ॥

अब १३७ बन, संकेतादिक १६ बट और अन्य तीर्थों का स्वरूप तथा उत्पत्ति निरूपण करते हैं । पहिले तीर्थों के साथ मथुरा उत्पत्ति वर्णन करते हैं । स्कन्द पुराण में यथा पहिले सत्ययुग के अन्त में मधु

तत्र हनुमत्प्रार्थन मन्त्रः—
यथा रामस्य यात्रायां सिद्धिस्त्वं मे प्रतिष्ठितः। तथा परिभ्रमे मेऽद्य भवान् सिद्धिप्रदो भव ॥
इति मन्त्रं दशधा पठन् दशनमस्कारं कुर्य्यात् ॥ २ ॥
ततो दीर्घकेशवप्रार्थनमन्त्रः।
चतुरशीतिक्रोशत्वं मर्य्यादं रक्ष सर्व्वदा। नमस्ते केशवायैव नमस्ते केशीनाशक ॥
इति मन्त्रं चतुर्धा पठन्तादिकेशवाय चतुर्नमस्कारं कुर्य्यात्।
केशिनोऽश्वस्वरूपस्य दानवस्य वधेन च। केशवाख्यो हरि र्भूत्वा आदिकेशवसंस्थितः ॥ ३ ॥
ततो भूतेश्वरप्रार्थनमन्त्रः। रुद्रयामले—
भूतानां रक्षणार्थाय स्थापितो हरिणा स्वयम्। सर्वदा वरदो नाथ भूतेशाय नमोऽस्तुते ॥
इति मन्त्रमेकादशधा पठन् भूतेश्वराख्य महादेवायैकादश नमस्कारं कुर्य्यात् ॥ ४ ॥
ततो पद्मनाभ प्रार्थनमन्त्रः। विष्णुयामले—
नमस्ते कमलाकान्त पद्मनाभ नमोऽस्तु ते। मथुरमण्डलं रक्ष प्रदक्षिणावरप्रद ॥
इति पञ्चभिः पठन् पञ्च नमस्कारान् कुर्य्यात्।

नामक दैत्य, इन्द्रादिक समस्त देवतायों को जय करता हुआ तीन लोक का स्वामी बन गया था। उससे पीड़ित होकर देवतागण भगवान केशव के शरण में आये। "हे नारायण! हे माधव! आपको नमस्कार आप मधु दैत्य का नाश कर हम सबका पालन करिये" इस प्रार्थना से भगवान ने प्रसन्न होकर १० वर्ष पर्य्यन्त युद्ध करते हुए दैत्य को मारा। देवतागण ने उपस्थित होकर भगवान की स्तुति की तथा माधव नाम रखा। मधुपुरी का नाम मथुरा रखा और वैकुण्ठ परित्याग कर यहाँ वास करने लगे। उस समय देवतागण द्वारा ८४ तीर्थ स्थापित हुए। दक्षिणोत्तर भाग में ३६ तीर्थों की स्थापना हुई। जो कि मथुरा के भूषण स्वरूप हैं। पहिले रक्षा के लिये हनुमत्मूर्त्ति की स्थापना की। भाद्रमास की शुक्लाष्टमी तिथी सिंह लग्न उदय में मूर्त्ती की स्थापना कर विविध मनोहर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैविद्य आदि के द्वारा पूजा करें और प्रत्येक तीर्थ में अन्न वस्त्रादिक प्रदान करें ॥ १ ॥

हनुमानजी प्रार्थनामन्त्र यथा—जिस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी की यात्रा में तुम महान् सहायक थे, उस प्रकार आज मेरी परिक्रमा में सिद्धि को प्रदान करो। इस प्रकार १० बार मन्त्र का पाठ पूर्वक १० नमस्कार करें ॥ २ ॥

अनन्तर दीर्घ केशवकी प्रार्थना के मन्त्र कहते हैं। हे केशि दैत्य को नाश करने वाले श्री केशव! आपको नमस्कार! आप मेरी चौरासि क्रोश यात्रा की मर्य्यादा रक्षा करें। इस प्रकार ४ बार मन्त्र पाठ कर श्री केशव के लिये ४ नमस्कार करें। केशव के मन्त्र यथा—अश्वरूपधारी केशीनामक दैत्य का बध से केशव नाम का धारण पूर्वक आदि केशव स्वरूप में विराजित हैं। इस मन्त्र का ४ बार पाठ पूर्वक ४ नमस्कार करें ॥ ३ ॥

अनन्तर भूतेश्वर प्रार्थना मन्त्र कहते हैं। रुद्रयामल में यथा—जीवों की रक्षा के लिये स्वयं भगवान् हरि ने ही स्थापित किये थे, हे नाथ! भूतों के ईश आपको नमस्कार! आप सर्वदा वर देने वाले हों। इस मन्त्र का ११ बार पाठ पूर्वक ११ नमस्कार करें ॥ ४ ॥

अनन्तर पद्मनाभ प्रार्थना मंत्र कहते हैं। विष्णुयामल में—हे लक्ष्मीकान्त पद्मनाभ! आपको

गोदानं वस्त्रदानञ्च दानमामान्नमुत्तमम्।
नमस्कारप्रमाणेन कुर्य्याद्दानं प्रयत्नतः। क्रमभंगं यदा कुर्य्यान्निष्फलत्वमवाप्नुयात्।
नमस्कारानुसारेण कुर्य्याद्दानं सुधी नरः। सर्व्वान् कामानवाप्नोति हृदिस्थपरिचिन्तितान्॥५॥
ततो दीर्घविष्णु प्रार्थन मन्त्रः।—
अखण्डव्रजरक्षार्थे दीर्घमूर्त्तिधरो हरिः। सर्वदा वरदो नाथ नमस्ते दीर्घविष्णवे॥
इति मन्त्रं चतुर्द्दशावृत्त्या पठन् चतुर्द्दशनमस्कारान् कुर्य्यात्॥ ६॥
ततो वसुमतीसरोवर्य्यां पञ्चदेवताप्रार्थनमन्त्र.।
(पञ्च)एतान् वसुमतीदेवान् सिंहलग्ने उपस्थिते। संस्थाप्य विधिवत्पूज्य सुरा वसुमतीं ययुः॥
कन्यालग्ने समायाते देवर्षि मुनयस्तथा। यत्र राज्याभिषेकञ्च चक्रु र्नारायणाधिपम्।
तीर्थं वसुमतीनाम्नाऽखण्डमण्डलराज्यदम्॥
ततो वसुमतीस्नान प्रार्थन मन्त्रः—
यथा विष्णो करोद्राज्यं त्रैलोक्य प्रशशासह। तथैव मे वरं ब्रूहि वसुमत्यै नमो नमः॥
इति मन्त्रं समाहृत्य पञ्चभि मंज्जनं चरेत्। पूर्व्वाभिमुखसंस्थित्वाऽखण्डराज्यमवाप्नुयात्॥
राज्यभ्रष्टो नरो यस्तु यत्र स्नायाच्छुचिर्यदा। अब्दत्रयप्रमाणेन कन्यालग्नान्तरे यदि॥
अखण्डमण्डलं राज्यं कुरुते नात्र संशयः। सर्वदा सुखसंयुक्तो शत्रूणां भयदायकः॥
ततो देवगणाः सर्व्वे दुर्गसेनीनदीं ययुः। पुरस्कृत्य हृषीकेशं निर्म्मितां विष्णुना स्वयम्॥
देवानां पितृणाञ्चैव मुनीनाञ्च तपस्विनाम्। सुवर्णचर्च्चिका रम्यां स्नानाचमनहेतवे॥ ७॥

नमस्कार। आप मथुरा मण्डल की रक्षा करें तथा प्रदक्षिणा वर प्रदान करें। इस मन्त्र का पाँच बार पाठ कर पाँच नमस्कार करें। और नमस्कार का प्रमाण से गोदान, वस्त्रदानादिक करें। उससे कम दान न देवें। नमस्कार के अनुसार ही दान करने से हृदय स्थित कामना समूह को प्राप्त होते हैं॥ ५॥

अनन्तर दीर्घविष्णु प्रार्थनामन्त्र कहते हैं। अखण्ड व्रज की रक्षा के लिये हरिने दीर्घ मूर्त्ति को धारण किया है। हे दीर्घविष्णु आपको नमस्कार, आप सर्वदा वरप्रद हों। इस प्रकार १४ बार मन्त्र पाठ कर १४ नमस्कार करें॥ ६॥

अनन्तर पञ्च वसुमति देवता को नमस्कार करें। सिंहलग्न में स्थापन पूर्वक यथा विधि से पूजा, करने से सरस तथा उत्तम बुद्धि को प्राप्त होता है। कन्यालग्न में देवर्षि प्रभृति ऋषिगण रात्रि काल में आकर जहाँ अभिषेक किये थे। यह वसुमती नामक तीर्थ है। अखण्ड मण्डल तथा राज्यादिक देने वाला है। वसुमतीतीर्थ का प्रार्थनामन्त्र यथा—हे वसुमती तीर्थ! आपको नमस्कार, श्रीविष्णु जिस प्रकार तीन लोक को शासन करते हैं उस प्रकार मैं तीन लोक का शासक बनूँ। इस मन्त्र का पाठ पूर्वक पूर्वाभिमुख होकर मज्जन करने पर अखण्ड राज्य को प्राप्त होता है। राजपद से भ्रष्ट कोई मनुष्य यदि तीन साल पर्य्यन्त कन्यालग्नमें शुचि होकर स्नानादिक करें तब अवश्य राजपद मिल सकता है तथा वह अखण्ड राज्य को प्राप्त होकर शत्रु से निर्भय होता है। तदनन्तर देवतागण आगे विष्णु को लेकर दुर्गसेनी नामक नदी में गये जिसको स्वयं भगवान् ने ही निर्म्माण किया था। वहाँ देवता,पितर, मुनिगण, तपस्विगण सबके मनोहर सुवर्णचर्च्चिका नामक देवी है॥ ७॥

ततो दुर्गसेनीचर्च्चिकानदीस्नानप्रार्थनमन्त्रः ।—

त्वं वैष्णवी महादुर्गे मार्गं देहि वरप्रदे । वैकुण्ठगमनार्थाय दुर्गसेनि नमोऽस्तु ते ॥

सप्तवारं पठन् मन्त्रं सप्तभिर्मज्जनं चरेत् ॥ ८ ॥

तत्र स्वायुधस्थानम्—भविष्योत्तरे—

यत्रैव भगवान् स्थित्वा धृत्वा चक्रादिकायुधान् । आयुधान् पूजयेद्राजा सर्व्वत्र विजयी भवेत् ॥

आयुध प्रार्थनमन्त्रः—

शंख चक्र गदा पद्म विष्णुपाणिमुपस्थित. । नमस्ते दशधावृत्त्या मधुदैत्यान्तकारकः ॥

इति दशधा मन्त्रं पठन् दश नमस्कारं कुर्यात् ।

तत्रापराजिता देवी मधुदैत्यान्तकारिणी

विष्णुना सहदेवेन पूजिता सर्वमंगला । नित्यं प्रपूजयेद्देवीं धनधान्यसुतं लभेत् ॥

ततो ऽपराजिता प्रार्थनमन्त्रः ।दुर्गातन्त्रे—

नमो देव्यै महादेव्यै शत्रुणां क्षयवर्द्धिनी । अपरायै जितायैव देवानां वरदायिनि ॥

इति मन्त्र शतावृत्त्या प्रणमेत्परमेश्वरीम् । दुर्गसेनीनदीतीरे द्वौ स्थानौ वरदायिनौ ॥

विधिवत् पूजनीयौ तु वाञ्छितफलदायकौ । षट्तीर्था: देवता: सर्वे पुन्या: सत्ययुगोद्भवा: ॥६॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि द्वापरान्तयुगोद्भवाः । स्कान्दे—

कंसवासन्तिकास्थानं कृष्णदर्शनकारकम् ।

ततः कंस वासन्तिकास्थानप्रार्थनमन्त्रः ।

नारदाज्ञावरं ब्रूहि भगवानवतारयत् । कंसगोष्ठि नमस्तुभ्यं नीलमाणिक्यरञ्जितः ॥

इति मन्त्रमेकावृत्त्या पठन् कंसवासन्तिकास्थानं प्रणमेत् ॥ १० ॥

चर्च्चिकानदी का स्नान प्रार्थनामन्त्र कहते हैं । हे महादुर्गे तुम वैष्णवी हो, वर समूह को देने वाली हो । वैकुण्ठ जाने के लिये मैं तुमको नमस्कार करता हूँ । ७ बार मन्त्र का पाठ कर सात बार मज्जन करें ॥ ८ ॥

वहाँ पर आयुध स्थान है भविष्योत्तर में यथा—यहाँ भगवान् चक्रादिक आयुध धारण कर विराजित हैं । यदि राजा आयूधों की पूजा करें तो सर्वत्र विजयी होता है । आयूधप्रार्थनामन्त्र यथा—हे विष्णु के हस्त-कमल विराजित शंख, चक्र, गदा और पद्म ! हे मधुदैत्य का नाशकारी ! आप सबको १०-१० नमस्कार । इस मन्त्र को १० बार पाठ पूर्वक १० बार नमस्कार करें । वहाँ विष्णु के साथ तथा देवताओं के साथ मधुदैत्य संहारकारिणी सर्व मंगलमयी अपराजिता देवी की नित्य पूजा करें। जिससे धन, धान्य, सुतादिक का लाभ होता है । दूर्गातन्त्र में—अपराजिता देवी का प्रार्थनमन्त्र यथा—हे शत्रु नाशकारिणी हे देवताओं के वर देने वाली जयपरायणा महादेवी अपरादेवी ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र कर १०० बार पाठ कर परमेश्वरी को प्रणाम करें । दूर्गसेनीनदी के तट पर वह दोनों स्थान वर समूह को देने वाले हैं तथा यथाविधि पूजन करने से वाञ्छित फल समूह को भी देने वाले हैं । सत्ययुग में उत्पन्न समस्त देवता और छै तीर्थ यहाँ विराजित हैं ॥ ६ ॥

अब द्वापर के अन्त में उत्पन्न तीर्थ समूह का वर्णन करते हैं । कंसवासस्थान-स्कन्दपुराण में—

ततो देवा ययुस्तत्र कन्यालग्नोदये यदि । वास्तुकां सरसीं रम्यां कोटिदक्षिणसंस्थिताम् ॥
यत्र ब्रह्मादयो वध्वा ग्रन्थि पत्नीभिरन्विताः । स्नानं कुर्युर्विधानेन सर्वदा सौख्यसंयुताः ॥
धनधान्यसमृद्धिस्तु पुत्रादिसन्तति ध्रुवम् । कदाचिन्नैव भ्रश्यन्ति सप्तजन्मसु दम्पती ॥ ११ ॥
ततो वास्तूकसरः स्नानप्रार्थनमन्त्रः—
सर्वदा मंगलं देहि वास्तूकसरसे नमः । काञ्चनांगवरं ब्रूहि देवानां वरदायिनी ॥
इति मन्त्रं पठन् रुद्रैः स्नानं चक्रुः सदा शिवैः । मज्जनं विधिना सर्वं नमस्कृत्य पृथक् पृथक् ॥
तत्पार्श्वे स्थापयेद्देवीं वधूटयाख्यां गृहेश्वरीम् ।
ततो वधूटी गृहदेवी प्रार्थनमन्त्रः—
गृहदेव्यै नमस्तुभ्यं वधूटयाख्यै नमो नमः । व्रजमण्डलकामिन्यै वरदायै नमो नमः ॥
इति मन्त्रमष्टभिः पठन्नष्टनमस्कारान् कुर्य्यात् ।
— ततो दक्षिणकोटीशं स्थापयेद् रुद्रमूर्त्तिकम् ॥
प्रार्थनमन्त्रः—
कोटीश्वर नमस्तुभ्यं महादेव नमोऽस्तु ते । अक्षीणां सम्पदं देहि सर्वदा वरदो भव ॥
इति मन्त्रमेकादशभिः पठन्नेकादशनमस्कारं कुर्य्यात् ॥ १२ ॥
तत उच्छ्वासवत्सपुत्रप्रार्थनमन्त्रः ॥—लैंगे—
उच्छ्वास नमस्तुभ्यं वत्ससूना नमोऽस्तु ते । सर्व्वपापप्रनाशायानेकसांगवरप्रद ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिः पठन् नमस्कारं कुर्य्यात् ॥ १३ ॥

कहा है—श्रीकृष्ण के दर्शनकारी कंसवासन्तीका स्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा–हे कंस के कुटुम्ब परिवार समूह ! आप सब नीलमाणिक्य से शोभित हों, इस मन्त्र को एक बार पाठ कर कंसवासस्थान का प्रणाम करें ॥ १० ॥

तदनन्तर देवतागण कन्यालग्न के उदय में दक्षिणकोटी संस्थित, सरस, मनोहर, वासस्थान में गये । जहाँ पर ब्रह्मादिक देवता अपनी पत्नीयों को आगे कर स्नानादिक किये थे । वहाँ विधिपूर्वक स्नानादि करने से धन, धान्य, सन्तान, सन्तति प्रभृति लाभ पूर्वक परम सुख को प्राप्त होता है, तथा सात जन्म पर्य्यन्त दम्पति का सम्बन्ध नाश नहीं होता है ॥ ११ ॥

तदनन्तर वास्तुकामसरोवर की प्राथ नाके मन्त्र कहते हैं । हे वास्तुक सरोवर ! हे देवताओं को वर देने वाले, आपको नमस्कार ! आप सर्वदा मंगल प्रदान कीजिये, इस मन्त्र का ११ बार पाठ पूर्वक पृथक-पृथक नमस्कार द्वारा मज्जन करें । उसके पास वधुटी नामक गृहेश्वरी का स्थापन करें । अनन्तर वधुटी गृहेश्वरी की प्राथ ना के मन्त्र कहते हैं । हे वधुटी नामक गृहदेवि ! आपको नमस्कार । आप व्रजमण्डल में कामना समूह को देने वाली हों । इस मन्त्र को ८ बार पाठ पूर्वक ८ नमस्कार करें । तदनन्तर दक्षिणकोटिश्वर रुद्रमूर्त्ति का स्थापन करें । प्रार्थनमन्त्र यथा-हे कोटीश्वर हे महादेव ! आपको नमस्कार आपको नमस्कार ! समस्त धन, धान्य सम्पत्ती देने वाले हों सर्वदा वर देने वाले हों । इस मन्त्र का ११ बार पाठ पूर्वक ११ नमस्कार करें ॥ १२ ॥

तदनन्तर उच्छ्वास नामक वत्स पुत्र की प्राथ ना करें लिंगपुराण में यथा–हे उच्छ्वासन हे

ततो सूर्य्यस्थलं गत्वा प्रार्थनं कुरुते सुराः । निर्म्मितं विष्णुना स्थानं सर्वताप प्रनाशनम् ॥
ततो ऽर्कस्थल प्रार्थनमन्त्रः—
व्रजमण्डलरक्षार्थं संस्थितो भगवान् रवे ! । नमस्ते काश्यपेयाय भास्कराय नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं द्वादशावृत्त्या पठन् द्वादशनमस्कारं कुर्य्यात् ॥ १४ ॥
देवानां रक्षनार्थाय कार्त्तवीर्य्यस्थलं करोत् ।
ततः कार्त्तवीर्य्याख्यवीरस्थल प्रार्थनमन्त्रः । स्कान्दे—
तारकाख्यप्रनाशाय कार्त्तिकाय नमो नमः । वीरस्थल नमस्तुभ्यं सर्व्वदा शिवकारकः ॥
इति मन्त्रं त्रयोदशावृत्या पठन् त्रयोदश नमस्कारं कुर्यात् ॥ १५ ॥
ततो कुशस्थलं गत्वा सर्वे देवाः मुनीश्वराः । सर्वपापक्षयार्थाय श्राद्धं कुर्युश्च तर्पणं ॥
पितृणामक्षयं दत्तं जातं देवर्षि तृप्तिदम् । षोडशान् प्रणतीन्कृत्वा देवेभ्यो पितृभ्यो नमः ॥
श्राद्धकृतफलं जातं सर्वाभीष्टफलं लभेत् ।
कुशस्थलप्रार्थनमन्त्रः । विष्णुधर्म्मोत्तरे—
कुशस्थल नमस्तुभ्यं पितृमोक्षवरप्रदः । देवपितृप्रसादान्मे धनधान्यसमृद्धयः ॥ इति ।
ततो पुष्पस्थलं गत्वा भगवत्पूजनं चरेत् । पुष्पैः सहस्रसंख्याभि राधाकृष्णं प्रपूजयेत् ॥
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वलोकेषु पूजितः ।
पुष्पस्थल प्रार्थनमन्त्रः—
नमस्ते सुमनाकार कृष्णदर्शनकारक । सर्वदा देहि सौभाग्यं कृष्णपूज्य नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं शतावृत्या नमस्कारान् शतान् करोत् । पूजाफलमवाप्नोति सांगं कुर्य्या प्रदक्षिणां ॥१६॥

वत्सपुत्र आपके लिये नमस्कार है । हमारे समस्त पाप नाश कीजिये व वरप्रद हूजिये इस मन्त्र के चार वार पाठ करके चार नमस्कार करें ॥ १३ ॥

तदनन्तर सूर्यस्थल में जाकर प्रार्थना करे जो समस्त तापनाशक व विष्णु से निर्मित है । अब सूर्यस्थल प्रार्थनामन्त्र कहते हैं । हे काश्यपेय हे भास्कर आपको नमस्कार है । आप व्रज-मण्डल रक्षा के लिये विराजित हैं । इस मन्त्र का द्वादश बार पाठ कर द्वादश नमस्कार करें ॥ १४ ॥

अनन्तर देवताओं की रक्षा के लिये कार्त्तवीर्य स्थान हुआ था तदनन्तर कार्त्तवीर्य्यस्थल की प्रार्थना के मन्त्र कहते हैं । स्कन्दपुराण में—तारकासुर का नाशकारी कार्तिकजी को नमस्कार । हे वीरस्थल ! आपको नमस्कार है । आप सर्वदा मंगल करने वाले हों इस मन्त्र को १३ बार पाठ पूर्वक १३ नमस्कार करें ॥१५॥

तदनन्तर समस्त देवता मुनिसमूह पाप नाश के लिये कुशस्थान पर जाकर श्राद्ध तथा तर्पण करने लगे, पित्रों के लिये जो दान है सो अक्षय फलदायक है, देवर्षीगण तृप्त होते हैं, देवताओं को नमस्कार पितृयोंको नमस्कार इसप्रकार कहकर१६बार प्रणाम करनेसे समस्त वाञ्छित फललाभ करताहै और श्राद्धकृत समस्त फल प्राप्त होताहै । अनन्तर कुशस्थल प्रार्थनामन्त्र कहते हैं विष्णु धर्मोत्तरमें-हे कुशस्थल आपको नमस्कार है । आप पितृगणों को मोक्ष देने वाले हों, पितृगण के प्रसादसे मेरे घरमें धन धान्यादिक की वृद्धि होय, अनन्तर पुष्पस्थल में जाकर एक हजार पुष्पों से भगवान् राधाकृष्ण की पूजा करे । जिससे समस्त काम-

ततो विष्णुं पुरस्कृत्य देवाः जग्मु महत्स्थलं । राज्यमंत्रं समाचक्रु व्रजमंडलरक्षकं ।
यत्र राजा करोन्मन्त्रं निर्भयं राज्यमाप्नुयात् ॥
महत्स्थल प्रार्थनमन्त्रः—
देवर्षिमुनिगन्धर्वसमालोकेष्टदायकं । नमस्ते महतां स्थान सुबुद्धिपरिचारकः ॥
इति चतुर्दशावृत्या मन्त्रं पठन् चतुर्दशनमस्कारं कुर्य्यात् ॥ १७ ॥
ततो सिद्धिमुखं नाम महादेवं च स्थापयेत् । सिद्धिस्तु वरदानस्तु देवोभ्यो यत्र जायते ॥
देवानां च मुनीनां च नराणां सिद्धिदायकः । त्रैलोक्यचिंतयाविष्ट नमस्ते रुद्रमूर्त्तये ॥
इति मन्त्रं समाहृत्यैकादशावृत्यभिर्नतीन् ॥ १८ ॥
ततस्ते शिवकुण्डं तु गत्वेशमभिषेचयेत् ।
ततो शिवकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—
अभिषिक्त जल तुभ्यं शिरसा प्रणमाम्यहम् । सर्वं कल्मषनाशाय परं मोक्षं प्रदेहि मे ॥
इति मन्त्रं समाहृत्यैकादशवृत्तिज्मजनं । वैकुण्ठपदमाप्नोति देवतुल्यकलेवरः ॥
इत्येवद्द्वापरान्ते व श्रीकृष्णेनैव निर्मिताः । तीर्थाश्च देवतापूज्याः रक्षणाय व्रजौकसाम् ॥
कृष्णावतारसम्भूता यद्वाभीरप्रपूजिताः ॥ १९ ॥
अथातः संप्रवक्ष्यामि त्रेतायुगसमुद्भवान् । रामावतारसम्भूतान् शत्रुघ्नप्रकटीकृतान् ॥

नाओं को पाकर समस्त लोक में पूजित हों । पुष्पस्थलप्रार्थनामन्त्र यथा—हे कृष्णदर्शन कराने वाले, हे पुष्पाकार, हे श्रीकृष्णपूज्य आपको नमस्कार है । मेरे को सौभाग्य प्रदान कीजिये, इस मन्त्र को सौ बार पाठ करने पर १०० नमस्कार करे इस मन्त्र से प्रदक्षिणा करे, तब पूजा का फल मिले ॥ १६ ॥

तदनन्तर विष्णु को आगे कर देवता समूह महत्स्थल में गये व्रजमण्डल रक्षक राज्यमन्त्र का पाठ करने लगे । यदि कोई राजा यहाँ आकर मन्त्र पाठ करे तो भय से रहित राज्य को प्राप्त होवे । अनन्तर महत्स्थल प्रार्थनामन्त्र यथा । हे महत्स्थल आप देवर्षि, मुनि,गन्धर्व लोकोंके समालोकन मात्र इष्ट देने वाले हों, आपको नमस्कार है । इस मन्त्र को १४ बार पाठ कर १४ नमस्कार करे ॥ १७ ॥

अनन्तर सिद्धि मुख नामक महादेव की स्थापना करें सिद्धि के देने वाले महादेव आपको नमस्कार है । जहाँ देवताओं से सिद्धि व वरदान मिलते हैं । जो देवता मनुष्य मुनियों का सिद्धि देने वाले हैं । अब मन्त्र कहते हैं, रुद्रयामल में यथा—हे रुद्रमूर्ती ! आप तीनों लोकों की चिन्ता में मग्न हों, आप समस्त सिद्धियों को देने वाले हों व पार्वती जी के वरदायक हों, आदर पूर्वक इस मन्त्र का ११ बार जप पूर्वक ११ नमस्कार करें ॥ १८ ॥

तदनन्तर देवता लोग ने शिवकुण्ड में जाकर शिवजी का अभिषेक किया मन्त्र यथा—हे अभषिक्त जल आपके लिये प्रणाम है । आप समस्त कल्मश नाश करने वाले हों परम मोद को दीजिये, इस मन्त्र का ११ बार पाठ कर स्नान करने पर देवता समान शरीर धारण कर वैकुण्ठ को जाता है । इति ये सब द्वापर के अन्त में श्रीकृष्ण द्वारा निर्मित इन तीर्थ देवताओं की व्रज रक्षा के लिये पूजा करनी चाहिये, कृष्णावतार में यह समस्त तीर्थ उत्पन्न हुए हैं जो कि अहीरों से पूजित हैं ॥ १९ ॥

अनन्तर त्रेतायुग उत्पन्न तीर्थ देवता का वर्णन करते है यह समस्त व्रजमण्डल रक्षा के लिये

तीर्थाञ्च देवतांञ्चैव व्रजमण्डलरक्षकान् । क्रमतः पूजनीयाञ्च मंत्रपूर्वविधानतः ॥
पाद्मे पातालखण्डे शेषवात्सायन संवादे—प्रतिज्ञामकरोद्रामो देवाः कृष्णो भवाम्यहम् ॥
तदात्र मथुरां यान्तु लीलां कुर्वे खिलं व्रजम् । तस्य कुण्डस्य पार्श्वस्थाः स्थापिता ये च देवताः ॥
तुलालग्नागते काले हयमुक्तं स्वरूपकम् । स्थापयेयुस्तदादेवा रामाज्ञापरिपालिताः ॥
लवणासुरहर्म्यं तु निर्मूलं संविधाय च । शत्रुघ्न स्थापयेन्मूर्तिर्हयमुक्तं स्वरूपकम् ॥
रामश्च स्थापयेद्यत्र वाजिशाला सुरस्य च ॥ २० ॥

ततो हयमुक्त प्रार्थनमंत्रः—
हयमुक्त नमस्तुभ्यं सर्वदा विजयप्रदः । व्रजं च सकलं रक्ष खुरैः क्षुण्णां वसुन्धराम् ॥
इतिमंत्रं चतुर्भिः पठन् चतुःप्रदक्षिणा प्रणतीन् कुर्यात् । कदाचिन्नैव भ्रंश्यति वाजिशाला गृहेषु च ॥२१॥
ततो सिन्दूरीसिन्दूराख्ययोर्द्वयोः प्रार्थनमन्त्रः—
लवणस्य ज्येष्ठराज्ञी सिन्दूरी महते नमः । कनिष्ठे लवणस्यापि सिन्दूरी वरदे नमः ॥
इतिमंत्रं पठित्वा द्वयोरभ्यंतरे पूर्वाभिमुखं संस्थित्य दक्षिणोत्तरभागे नमस्कुर्यात् ॥ २२ ॥
ततो लवणगुहाप्रार्थनमन्त्रः—
सुवर्णस्फटिके रम्ये लवणासुररक्षके । नमस्ते सुन्दरि सेव्ये मन्दिरे देवपूजने ॥
इति मन्त्रं भुवनषड्भिर्नमस्कारं च षट् चरेत ॥ २३ ॥
ततो शत्रुघ्न प्रार्थनमन्त्रः—
रामाज्ञापरिमाणेन व्रजरक्षार्थमागतः । शत्रुणां ज्वलनार्थाय शत्रुघ्नाय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं चतुर्दशावृत्या पठन् चतुर्दश नमस्कारं कुर्यात् ॥ २४ ॥

शत्रुघ्न द्वारा निर्मित हैं। उन्हें विधानसे पूजा करें। पद्मपुराण के पातालखण्ड में शेषवात्सायन संवादमें—श्रीराम ने प्रतिज्ञा की थी कि हे देवगण! मैं द्वापर में कृष्ण होकर मथुरा में समस्त व्रज पर लीला करूंगा। उस समय उस कुण्ड के पास श्रीराम की आज्ञा से देवतागणों ने तुला लग्न के आने पर हयमुक्त स्वरूप पाँच देवता की स्थापना की। महाराज शत्रुघ्न जी ने भी लवणासुर का गृह स्थापन कर उसमें हयमुक्तरूप लवणासुर की मूर्त्ति स्थापना की ॥ २० ॥

हयमुक्त प्रार्थनामन्त्र यथा—हे हयमुक्त! आपको नमस्कार! आप सर्वदा जय प्रदान करें तथा समस्त व्रज की रक्षा करें आपकी खुरों से पृथिवी खुद गई है। इस मन्त्र का चार बार पाठ पूर्वक चार परिक्रमा, चार नमस्कार करें जिससे घर में घुड़साल बढ़ता है ॥ २१ ॥

अनन्तर सिन्दूरी सिन्दुरा दोनों की प्रार्थना के मन्त्रः—हे सिन्दूरी नामक लवणासुर की बड़ी राणि! तथा सिन्दूरा नामक छोटी राणि! वर देने वाली आप दोनों को नमस्कार! दोनों के मध्यस्थल में पूर्वाभिमुख होकर दक्षिण उत्तर भाग में नमस्कार करें ॥ २२ ॥

अनन्तर लवणासुर गुहा की प्रार्थना के मन्त्र—सुवर्ण स्फटिक से मनोहर तथा लवणासुर की रक्षा करने वाली हे देव पूज्ये, सुन्दरीगण कर्तृक सेवित आपको नमस्कार। इस मन्त्र का छः बार पाठ करके छः नमस्कार करें ॥ २३ ॥

अब शत्रुघ्न प्रार्थनमन्त्र कहते हैं—हे शत्रुघ्न जी! आपको नमस्कार है। आप रामजी की आज्ञा

शत्रुघ्नं स्थापयेद्देवाः सर्वारिष्टप्रशान्तये । ततो गुह्याख्यतीर्थं तु स्थापयेत्कामनाप्रदं ॥
यत्र स्वर्णादिधातूनां धान्यानां गोप्यदानकं । गोप्यपुण्यमवाप्नोति दशलक्ष गुणं फलम् ॥

ततो गुह्यतीर्थ प्रार्थनमन्त्रः—
पुण्यलक्षगुणे तीर्थे गुह्यतीर्थ नमोस्तु ते । सर्वार्थवरद श्रेष्ठ देवानां च फलप्रद ! ॥
इति मन्त्रं यथाशक्त्या पठन् तदेव नमस्कारं कुर्यात् ॥ २५ ॥
ततो मरीचिकास्थानं सप्ताब्दकृष्णपादकं । भगवत् क्रीड़नस्थानं नूपुरचिन्हलाञ्छितं ॥

ततो मरीचिकाप्रार्थनमन्त्रः—
कृष्णपादरजो धूलि सप्तवर्षाङ्घ्रि लांछिते ! । सर्वदा वसुधां देहि नमस्ते मुक्ति दायिनी ॥
इति मन्त्रं समाहृत्य सप्तवारं नमस्करोत् । वनं तस्य समन्तात्तु मल्लिकानां करोद्धरिः ॥२६॥

ततो मल्लिकावन प्रार्थनमन्त्रः—
भगवन्निर्मिते तुभ्यं मल्लिके क्रीडनाय च । नमः सौगन्ध्यमाल्हाद सर्वदा सौख्यतां व्रज ॥
इति मंत्रं त्रिभिर्वृत्या त्रिभिर्वारं नमस्करोत् । तन्मध्ये अर्चयेत् कृष्णं कदम्बानां वनं स्वकम्॥२७॥

ततो कदम्बखण्ड प्रार्थनमन्त्रः—
मुक्तिदाख्यवरं देहि कृष्णसौभाग्यवर्धनं । नमस्ते परमोच्चाय कदम्बाख्य नमोस्तु ते ॥
इति मंत्रं समुच्चार्य्य सप्तभिः प्रणमेद्धरिः । ततो बलप्रवृद्धाय स्थापयेन्मल्लकेश्वरीम् ॥
देवानां च हितार्थाय लोकानां सौख्य हेतवे । अत्र लांगूलप्रक्षेपान् कुर्वन्ति वानराः स्वयं ॥२८॥

से व्रज रक्षा के लिये तथा शत्रुओं का नाश के लिये आये हों, आपको नमस्कार है । स मन्त्र का १४ बार पाठ पूर्वक १४ नमस्कार करें ॥ २४ ॥

समस्त अरिष्टों के नाश के लिये देवतागण ने शत्रुघ्न मूर्त्ति की स्थापना की । अनन्तर गुप्ताख्य नामक कामना देने वाला तीर्थ की स्थापना की, यहाँ स्वर्णादि धातुओं का गुप्त दान करने से गुप्त पुन्य लाभ होता है और १० लाख गुण फल पाता है मन्त्र यथा—हे गुप्त तीर्थ लक्षगुण पुन्य देने वाले आपको नमस्कार है । आप सर्वार्थ सिद्धि को देने वाले हैं, श्रेष्ठ हैं, देवताओं को फल देने वाले हैं । इस मन्त्र का यथा शक्ति पाठ पूर्वक नमस्कार करें ॥ २५ ॥

अनन्तर मरीचिका स्थान है । सात साल में स्थित श्रीकृष्ण के चरण चिन्ह तथा नूपुर चिन्ह से शोभित है । यह भगवान् के क्रीड़ास्थान है । ततः मरीचिका प्रार्थन मन्त्रः—हे मुक्ति के देने वाली मरीचिके ! आप निरन्तर पृथिवी का दान दीजिये, आप श्रीकृष्ण के पाद रजधूली से चिन्हित हों । इस मन्त्र का सात बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें ॥ २६ ॥

अनन्तर मल्लीकावन है मन्त्र यथा—हे भगवान से निर्मित मल्लीकाबन आपको नमस्कार है । आप भगवान् की क्रीड़ा के लिये हों आप सुगन्ध मालादियों से सुख को प्राप्त होंय, इस मन्त्र का ३ बार पाठ पूर्वक ३ नमस्कार करें ॥ २७ ॥

अनन्तर उसके बीच कदम्बवन की रचना की । कदम्बखण्डी प्रार्थनामन्त्र यथा—हे श्रीकृष्ण के सौभाग्य को बढ़ाने वाली कदम्बखण्डि आपको नमस्कार आप मुक्ति नामक वर को दीजिये, इस मन्त्र का सात बार पाठ पूर्वक श्रीहरि को प्रणाम करें, बल बढ़ाने के लिये मल्लकेश्वरी की स्थापना करें यहाँ पर

ततो मल्लादेवी प्रार्थनमन्त्रः । वायुपुराणे—

बल शक्ति-प्रदे देवि वीर्यशक्तिक्रमप्रदे । नारायणि ! नमस्तुभ्यं रूपं देहि जयप्रदे ॥

इति मन्त्रं त्रयोदशावृत्या पठन् नमस्कारान् कुर्यात् ॥ २६ ॥

ततो देवा समागत्य निर्मिते द्वे सरोवरे ।

अस्पृशा सस्पृशा नाम्ना सर्व मांगल्य वर्द्धिनी । यत्र गम्यागमं पापं भक्षाभक्ष्यं तथैव च ॥

चाण्डालस्पर्शनेऽशौचे व्यभिचारादिसंभवम् । म्लेच्छसंसर्गतो स्पर्शमेतत्सर्वं प्रणश्यति ॥

ततो ऽस्पृशा सस्पृशा पुष्करिण्योः स्नान प्रार्थनमन्त्रः—

सर्वपापहरे तीर्थे देवानां वरदायके । श्रीप्रदे धनदे मातर्नमस्ते सस्पृशास्पृशे ॥

इति दशधा मन्त्रमुच्चार्य पुष्करिण्योर्दशभिर्मज्जनं चरेत् ।

अस्पृशास्नानमादौ तु सस्पृशास्नपनं ततः । ततो देवा समागत्य कुण्डमुल्लोलसंज्ञकम् ॥ ३० ॥

उल्लोलकुण्डस्नान प्रार्थनमन्त्र भविष्ये —

कृष्णश्चोल्लोलक्रीडां च कुरुते गोपिका सह । यस्मादुल्लोलनामानमासीत् पृथ्वीतलेऽर्थदे ॥

इति मन्त्रं त्रिभिर्जप्त्वा स्नानं कुर्यान्त्रिमज्जनैः । परमानन्दमाप्नोति सर्वसौभाग्यसम्पदः ॥

तत्रैव चर्चिकां देवीं स्थापयेयुः पुरास्तदा । पूजासाङ्गकृतां सिद्धां सकलेष्टवरप्रदाम् ॥ ३१ ॥

ततश्चर्चिकेश्वरी प्रार्थनमन्त्रः—

चर्चिके वरदे देवि व्रजमंडलरक्षके । नमस्ते पूजिते देवि सकलेष्टवरप्रदे ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य अष्टभिः प्रणतीन्कुर्यात् ॥ ३२ ॥

देवताओं के कल्याण के लिये तथा मनुष्यों के सुख के लिये वानरों मनोहर शब्दपूर्वक पूंछ फेंकते हैं ॥२८॥

मल्लादेवी प्रार्थनामन्त्र-वायुपुराण में यथा—हे देवी आप बलशक्ती के देने वाली और वीर्य के विक्रम को देने वाली हों, हे नारायणि ! तुमको नमस्कार करता हूँ । हे जय देने वाली हमारे लिये रूपदान करो । इस मन्त्र का १३ बार पाठ करते हुये नमस्कार करें ॥ २६ ॥

उसके पीछे देवताओंने वहाँ आकर अस्पृशा सस्पृशा नाम के दो सरोवर स्थापित किये थे । जो सर्व मंगल के बढ़ाने वाली हैं, जहाँ गम्यागम्य, भक्षाभक्ष, चाण्डाल स्पर्शन, अशौच, व्यभिचार, म्लेच्छ संसर्ग, यवन संसर्गादि से जो पाप हैं, वे समस्त नाश होते हैं । अनन्तर अस्पृशा व सस्पृशा दोनों सरोवरों का स्नान प्रार्थनमन्त्र यथा—हे समस्त पाप हरण करने वाली, देवताओं के वर देने वाली और श्री तथा धन को देने वाली सस्पृशा अस्पृशा नामक तीर्थ माते आपको नमस्कार है । इस मन्त्र को दश बार पाठ पूर्वक पहले अस्पृशा पीछे सस्पृशा में स्नान करें ॥ ३० ॥

तदनन्तर देवतागण उल्लोल नामक कुण्ड में उपस्थित होने लगे । उल्लोलकुण्ड प्रार्थनामन्त्र यथा-भविष्य में—श्री कृष्ण गोपीगण के साथ उत्कट क्रीड़ा किये हैं, इसलिये पृथिवी में उल्लोल कुण्ड विराजित है । इस मन्त्र का ३ बार जप पूर्वक तीन बार मज्जन करने से परम आनन्द को प्राप्त होते हैं और सर्व सौभाग्य से सम्पन्न होते हैं ॥ ३१ ॥

वहाँ देवतागण ने चर्चिका देवी का स्थापन किया हैं । सांग पूर्वक पूजा करने से सिद्धि तथा

इति रामावतारे ऽस्मिन् तीर्था देवाः प्रकल्पिताः । त्रेतायुगसमुद्भूताः पूज्याः कोटिफलप्रदाः ॥
ततो पुनः प्रवक्ष्यामि द्वापरान्तयुगोद्भवान् । कृष्णावतारलीलाभिः कृतां तीर्थाश्च देवताः ॥
ततो देवाः समागत्य कंसखाताख्यतीर्थकम् । यत्र कृष्णो समागत्य मातुश्च भ्रातरं हनन् ॥३३॥

ततो कंसखातप्रार्थनमन्त्रः वाधूलि ऋषि संहितायाम् ।

कृष्णेन निर्मित स्थान कंसखात नमोस्तु ते । घोरकल्मषनाशाय सुतीर्थे वरदो नमः ॥
इति मंत्रं नवावृत्या नमस्कारान्नवाञ्चरेत् ॥ ३४ ॥
ततो देवाः समागत्य भूतानां रक्षणाय च । भूतेश्वरं महादेवं स्थापयेयुर्मनोर्थदम् ॥

ततो भूतेश्वर प्रार्थनमन्त्रः । लैंगे—

भूतानां रक्षणार्थाय नमस्ते भूतनायक । सर्वदा वरदो देव भूतेशाय नमो नमः ॥
इतिमन्त्रमेकादशावृत्या पठन्नेकादश नमस्कारान्कुर्यात् ॥ ३५ ॥
सेतुवन्धं हरेमूर्तिं जग्मुर्देवाश्च स्थापयेत् ।

ततो सेतुबन्ध प्रार्थनमन्त्रः—

सेतुबन्ध ! नमस्तुभ्यं कृष्णमूर्ते नमोस्तु ते । तीर्थानां देवतानां च साङ्गसिद्धिप्रदायक ॥
इति मन्त्रं समुचार्य सप्तभिश्च नमस्करोत् ॥ ३६ ॥
ततश्च वल्लभीमूर्तिं गत्वा गानस्थलं सुराः । स्थापयेयु र्मनोऽर्थानां मंगलार्थायुसिद्धिदम् ॥
रंगभूमौ स्थिते कृष्णे गोप्यो गानं समाचेरुः ॥

समस्त वर को देने वाली है । प्रार्थनामन्त्र—हे चर्चिके, हे वर देने वाली ! हे देवि ! हे ब्रजमण्डल रक्षा करने वाली ! आपको नमस्कार, आप पूजन के विषय में सफल तथा इष्ट वर समूह को प्रदान करें । इस मन्त्र का उच्चारण पूर्वक ८ बार प्रणाम करें ॥ ३२ ॥

यह सब रामावतार काल में त्रेतायुग समुद्भव कोटिफल देने वाले पूज्य तीर्थगण हैं । अब फिर द्वापर युग उत्पन्न तीर्थों का वर्णन करते हैं । जिन्हें देवतागण ने श्रीकृष्ण की लीला के अनुसार स्थापना किये हैं । तदनन्तर देवतागण कंसखात नामक तीर्थ में उपस्थित हुए । यहाँ श्रीकृष्ण ने ब्रज से आकर मामा कंस को मारा था ॥ ३३ ॥

वाधूलि ऋषि संहिता में—प्रार्थनमन्त्र यथा–हे कृष्णकर्तृक निर्मितस्थान कंसखात ! आपको नमस्कार । हे सुतीर्थ ! आप घोर कलमष को नाश करने वाले हैं और वर देने वाले हैं । इस मन्त्र का ९ बार पाठ पूर्वक ९ नमस्कार करें ॥ ३४ ॥

अनन्तर देवगणों ने आकर भूतों की रक्षा के लिये मन का अर्थ देने वाले भूतेश्वर महादेव की स्थापना की । भूतेश्वर प्रार्थनमन्त्र यथा-लिंगपुराण में—भूतों की रक्षा के लिये हे भूतनायक ! आपको नमस्कार आप सर्वदा वर देने वाले हों । इस मन्त्र का ११ बार पाठ पूर्वक ११ नमस्कार करे ॥३५॥

अनन्तर सेतुबन्ध में जाकर हरिमूर्त्ति की स्थापना की । सेतुबन्ध प्रार्थनमन्त्र यथा—हे सेतुबन्ध ! हे कृष्णमूर्त्ति ! आपको नमस्कार । आप तीर्थों के तथा देवताओं के सांग सिद्धि को देने वाले हों । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करे ॥ ३६ ॥

तदनन्तर गानस्थल में जाकर वल्लभीमूर्त्ति की स्थापना की जो कि मनोरथ समूह तथा मंगल सिद्धि

ततो वल्लभीप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णप्रिये नमस्तुभ्यं सर्व सौभाग्यदे नमः। कामाख्या परिपूर्णाख्यं वरं ब्रूहि नमोस्तु ते ॥

इति मन्त्रमष्टभिः पठन्नष्टप्रणतीन् कुर्यात् ॥ ३७ ॥

सिंहलग्नोदये रम्ये धनुलग्नोदये यदि। अष्टम्यां कुरुते यत्तु भाद्रकृष्णे प्रदक्षिणा ॥

एते षड्त्रिंशमाख्याताः कोटिदक्षिणसंस्थिताः। त्रेताद्वापरयोश्चैवावतारे रामकृष्णयोः ॥

तीर्थाश्च देवताश्चैव भाद्रकार्त्तिकयोः शुभाः। भाद्रमास्यसिताष्टम्यां कार्तिके शुक्लगाष्टमी ॥

इति मथुरायां भाद्रकार्तिकाष्टम्यां दक्षिण-कोटि-संज्ञकानां षड्त्रिंशतीर्थ देवतानामुत्पत्ति महात्म्यं मन्त्रपूर्वदर्शनम्, अथोत्तरे कोटिसंज्ञकानां कुक्कुटस्थानादितो पंचत्रिंशद्देवतातीर्थानां मन्त्र पूर्वोत्पत्तिमहात्म्यदर्शनं प्रतापमार्त्तण्डे—॥ ३८ ॥

तत्रादौ कुक्कुट स्थान प्रार्थनमन्त्रः—

नमः कुक्कुटकास्थान प्रभात वरदायक। सुवाक्यवरद श्रेष्ठ लोकानां मंगलं कुरु ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् ॥ ३९ ॥

भाद्रकार्तिकयोश्चैव नवम्यामसितेसिते। सिंहवृश्चिकयोर्लग्ने समारभ्य प्रदक्षिणा ॥

ततः साम्भोच्छाय मंडल प्रार्थनमन्त्रः—

साम्भोच्छाय नमस्तुभ्यं मंडलाय नमो नमः। सर्वतापं हरेन्नित्यं सर्वपापप्रणाशन ॥

इति मन्त्रं द्वादशावृत्या पठन् द्वादश प्रणतीन्कुर्यात् ॥ ४० ॥

ततो बसुदेवदेवकीशयनस्थल प्रार्थनमन्त्रः—

कंसाज्ञा संस्थित सौरी देवकी शयनस्थल। संकटमोचनार्थाय महत्तुभ्यं नमाम्यहम् ॥

समूह देने वाली है। जहाँ रंगभूमि पर श्रीकृष्ण के समय गोपियों ने गान गाये थे। वल्लभी मूर्ति प्रार्थनामंत्र यथा—हे सर्व सौभाग्य देने वाली कृष्ण प्रिये! आपको नमस्कार। आप परिपूर्ण वर दीजिये। आपको नमस्कार। इस मन्त्र के आठ बार पाठ पूर्वक ८ नमस्कार करें ॥ ३७ ॥

भाद्र कृष्ण पक्ष में सिंह लग्न के उदय से लेकर धनुः लग्न के उदय पर्य्यन्त यदि अष्टमी तिथि हो तो उसमें प्रदक्षिणा करे। इति दक्षिण कोटि स्थित ३६ तीर्थ का वर्णन हुआ है, जो कि त्रेता और द्वापर युग में रामकृष्ण के अवतार के समय उत्पन्न हुए हैं। यह सब भाद्र मास की कृष्णा अष्टमी और कार्त्तिक की शुक्ला अष्टमी सम्बन्धी जानना। अनन्तर उत्तर कोटि स्थित कुक्कुटस्थान प्रभृति ३५ संख्यक तीर्थ देवताओं के उत्पत्ति महात्म्य मन्त्र पूर्वक दिखाते हैं ॥ ३८ ॥

प्रतापमार्त्तण्ड में कुक्कुटस्थान प्रार्थनमन्त्र यथा—हे कुक्कुटस्थान हे प्रातः समय बर को देने वाले आपको नमस्कार। आप श्रेष्ठ हैं लोकों का मंगल कीजिये, इस मन्त्रका १०बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें ॥ ३९ ॥

भाद्र मास की कृष्णा नवमी और कार्त्तिक की शुक्ला नवमी में यदि सिंह वृश्चिक लग्न हों तो प्रदक्षिणा करे। अनन्तर सांभोच्छाय मण्डल की प्रार्थना करें। मन्त्र यथा—हे सांभोच्छाय मण्डल! आपको नमस्कार। आप समस्त ताप और पाप का हरण करने वाले हैं। इस मन्त्र का १२ बार पाठ पूर्वक १२ प्रणाम करें ॥ ४० ॥

अनन्तर बसुदेव देवकी के शयनस्थल के प्रार्थनामन्त्र कहते हैं—हे बसुदेव देवकी शयनस्थान!

इति मन्त्रं समुच्चार्य प्रणतीनष्टधा करोत् । ततो नारायणस्थानं देवो विष्णुं प्रपूजयेत् ॥४१॥

नारायण स्थान प्रार्थनमन्त्रः । बृहन्नारदीये—

नारायण नमस्तुभ्यं सुस्थानाय नमो नमः । सकलेष्टप्रदो नाथ मथुरां परिपालय ॥

इति मन्त्रं चतुर्भिः पठन् चतुर्नमस्कारं कुर्यात् ॥ ४२ ॥

कृष्णस्य यत्र सिद्धिः स्यादत्र देवाः समागताः । सिद्धिविनायकं स्थाप्य गणेशं विघ्ननाशनं ॥

प्रार्थनमन्त्रः—

सर्वसिद्धिप्रदो देव ! गणेश भगवन्नमः । यथा कृष्णो लभेत्सिद्धिं तथा लोकत्रये कुरु ॥

इति मन्त्रं चतुर्भिपठन् चतुर्नमस्कारं कुर्यात् ॥ ४३ ॥

ततो देवाः समाजग्मुः कुब्जिकास्थानमुत्तमं । कुब्जिकावामना यत्र कंसभृत्यावतुष्टिनी ॥

कृष्णेन ताडिता सापि शुद्धा देवाङ्गना भवत् । यस्मात्तत् कुब्जिकास्थानमतिसौभाग्यवर्धनं ॥

यत्र कुरूपिणी नारी रोगिणी दुर्भगा खला । कुब्जिका वधिरा मूका विक्षिप्ता साकिनीप्रिया ॥

कुलक्षिणी च दुर्भाग्या कर्कशा व्यभिचारिणी । वर्षत्रयं वसेद्यत्र सुभगा स्यात्पतिव्रता ॥

द्वापंचाशन्नमस्कारान् यत्र कृष्णाय संचरेत् । सर्व व्याधीन् परित्यज्य रात्रौ कृष्णं प्रदर्शयेत् ॥

सर्वान्कामानवाप्नोति धनधान्यसुखैर्युता । नित्यमेव नमस्कारफलमेतदुदाहृतम् ॥ ४४ ॥

ततो कुब्जिकास्थान प्रार्थनमन्त्रः । गौतमीये—

कुब्जे शुद्धे नमस्तुभ्यं सर्वदा सुखदे नमः । यथा कृष्णस्त्वयातुष्टस्तथैव संप्रसीदतु ॥

कंस की आज्ञा से आप बने हैं आप महान हैं संकट दूर करने के लिये आपको नमस्कार है । इस मन्त्र के पाठपूर्वक ८ बार प्रणाम करे ॥ ४१ ॥

तदनन्तर नारायण स्थान है जहाँ देवतागणों ने विष्णु की पूजा की है । प्रार्थनामन्त्र बृहन्नारदीय में यथा—हे नारायण ! सुस्थान आपको नमस्कार आप समस्त इष्ट को देने वाले हैं, आप मथुरा का पालन कीजिये । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक ४ बार नमस्कार करें ॥ ४२ ॥

कृष्ण के जहाँ सिद्धि प्राप्त हुई थी वहाँ देवतागणों ने उपस्थित होकर विघ्न नाशकारी विनायक गणेशजी की स्थापना करके सिद्धि प्राप्त की । सिद्धि विनायक गणेश प्रार्थनामन्त्र यथा—हे भगवान् गणेश ! आप समस्त सिद्धि को देने वाले हैं आपको नमस्कार । जिस प्रकार से श्रीकृष्ण प्राप्त हों उसी सिद्धि को हमें इन तीन लोक में दीजिये । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक ४ बार नमस्कार करें ॥ ४३ ॥

अनन्तर देवतागण कुब्जा के स्थान पर गये । जहाँ खर्वाङ्गि कंसभृत्या कुब्जा नामक रमणी थी जो कृष्ण कर्तृक ताड़ित होकर शुद्ध देवांगना रूप को प्राप्त हुई । इसलिये इसका नाम कुब्जास्थल है जो अति सौभाग्य को देने वाला है । जहाँ कुरूपिणी, रोगिणी, दुर्भगा, खला, खर्वाङ्गिका, वधिरा, गूंगी, विक्षिप्ता, साकिनीप्रिया, कुलक्षिणी, दुर्भागा, कर्कशा, व्यभिचारिणी नारी तीन वत्सर वास करने से सुभगा पतिव्रता हो जाती है । यहाँ ५२ नमस्कार श्रीकृष्ण के लिये करे । समस्त व्याधि से मुक्त होकर रात्रि में श्रीकृष्ण का दर्शन करें समस्त कामना को प्राप्त होकर धन धान्य सुख का भोग करे । नित्य नमस्कार का यह फल कहा गया है ॥ ४४ ॥

अनन्तर कुब्जिका स्थान प्रार्थनमन्त्र यथा—गौतमीय में—हे कुब्जिके ! हे शुद्धे ! आपको नम-

इति मंत्रं समाहृत्य द्विपंचाशत्क्रमेण तु । सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वव्याधिविवर्जितः ॥
ततो गर्त्तेश्वरं रुद्रं स्थापयेयुर्ज्वरापहं । दध्योदनघृतक्षौद्रशर्कराच्छादनादिकम् ॥
महिम्नस्तोत्रपाठेन शिवं च परिपूजयेत् । ज्वरे ह्येकादशैर्विप्रै रतिदाहे द्विविंशकैः ॥
त्रिदोषे देवतासंख्यैर्महिम्न स्तोत्रपाठकं । द्विविंशशतकैः पाठै मुक्तः स्यात्त्रिदिनान्तरे ॥
अर्धंसप्तदिनेष्वेव चतुर्थांशं चतुर्दश । गर्त्तेश्वर विलोकेन रोगमुक्तो न संशयः ॥ ४५ ॥

ततो गर्त्तेश्वर प्रार्थनमन्त्र रुद्रयामले—

गर्त्तेश्वर नमस्तुभ्यमतिदीर्घज्वरापह । हराय शंभवे देव शरीरारोग्यमाचर ॥

इति एकादशभिः पठन्नेकादश नमस्कारान्कुर्यात् ।

एतेषां देवतानां च अतिक्रमणमाचरेत् । निष्फला भवति यत्र तीर्थ यात्रा प्रदक्षिणा ॥४६॥
ततो देवाः समाजग्मुः लोहजंघतपस्थलं । लोहजंघ ऋषिर्नाम्ना तपश्चक्रेति दीर्घकम् ॥
चतुर्विंशभवैर्वर्षैः कृष्णदर्शनमाचरत् । वरदानं समालभ्य वैकुण्ठमगमत्पदम् ॥
लोहजंघ ऋषेर्मूर्त्तिं स्थापयेयुः सुरानघाः । ऋषेस्तु दर्शनादेव मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥ ४७ ॥

ततो लोहजंघ ऋषिमूर्ति प्रार्थनमन्त्रः—

लोहजंघ ऋषे तुभ्यं नमामि परमेश्वर । विनाशय यमालोकं सर्वदा कुरु मंगलम् ॥
लोहपात्रे घृतं धृत्वा दीपदानं समाचरेत् । मन्त्रं त्रिधा समुच्चार्य नमस्कारत्रयं चरेत् ॥

प्रकार आप सर्वदा वर को देने वाली हैं । जिस प्रकार तुमसे श्रीकृष्ण प्रसन्न हुए थे उस प्रकार प्रसन्न हों । इस मन्त्र का ५२ बार पाठ करने से समस्त कामनाओं की प्राप्ति होती है और मनुष्य समस्त व्याधि से मुक्त होता है । तदनन्तर देवताओं ने ज्वर नाशकारी गर्त्तेश्वर नामक महादेव की स्थापना की । यहाँ दधि, भात, घृत, मधु, शक्कर प्रभृति द्रव्यों से महिम्न स्तोत्र के पाठ पूर्वक शिवजी की पूजा करे । ज्वर होने पर ११ बार, अत्यन्त दाह में २२ बार, त्रिदोष में ३३ बार ब्राह्मण द्वारा पाठ करे । १२२ बार महिम्न स्तोत्र पाठ करने से तीन दिवस के अन्दर रोग मुक्त हो जाता है । सात दिवस में आधा, १४ दिवस में चतुर्थांश (गर्त्तेश्वर के दर्शन से) रोग नाश हो जाता है ॥ ४५ ॥

अनन्तर गर्त्तेश्वर प्रार्थनामन्त्र यथा-रुद्रयामल में—हे गर्त्तेश्वर आपको नमस्कार है । आप बहुत दिन की व्याधि को नाश करने वाले हो । हे हर ! हे शम्भु ! हे देव ! शरीर को आरोग्य कीजिये । इस मंत्र के ११ बार पाठ पूर्वक ११ नमस्कार करे । क्योंकि समस्त तीर्थ व देवताओं का उलंघन करने से तीर्थ-यात्रा व प्रदक्षिणा निष्फल होती है ॥ ४६ ॥

तदनन्तर देवतागण लोहजंघ तपस्यास्थल में गये । जहाँ लोहजंघ नामक ऋषि ने दीर्घ काल तक तपस्या की थी । २४ संवत्सर के पश्चात् उन्होंने श्रीकृष्ण का दर्शन पाकर और वरदान लेकर वैकुण्ठ को गमन किया । अथ लोहजंघ ऋषि की मूर्त्ति देवगणों ने स्थापना की । इन ऋषि के दर्शन मात्र से ही मनुष्य मुक्ति भाग होता है ॥ ४७ ॥

प्रार्थनामन्त्र—हे लोहजंघ ऋषि ! हे परमेश्वर ! आपको नमस्कार करता हूँ । आप मेरा नरकनाश करें और सर्वदा मंगल करें । लोहपात्र में घृत डालकर दीपदान पूर्वक ३ बार मन्त्र पाठ कर तीन नमस्कार करने से कभी उसको यमदूत के दर्शन नहीं होते । वज्र के तुल्य शरीर पाकर वह व्यक्ति तीन लोक में

कदाचिन्नैव तस्यास्ति यमदूतस्य दर्शनं। वज्रतुल्यं भवेत् कार्यास्त्रिलोकविजयी भवेत् ॥
प्रभालल्ल्याम्बिकामूर्ति स्थापयेद्देवकी शुभा। सर्वारिष्टविनाशाय कृष्णस्य रमणाय च ॥
सर्वान्कामानवाप्नोति प्रभालल्ल्याश्च प्रार्थनं ॥ ४८ ॥

ततो प्रभालल्लीप्रार्थनमन्त्रः। गौरीरहस्ये—

प्रभालल्लि नमस्तुभ्यं सुवरं च प्रयच्छ मे। कृष्णविक्रीड़नार्थाय देवक्यानिर्मितेऽर्चिते ॥
इति मंत्रं दशावृत्या नमस्कारान् समाचरेत् ॥ ४६ ॥
दक्षिणोत्तरकोटिश्च तीर्थान् देवान् प्रपूज्य च। दिनद्वयप्रमाणेन मथुरायां वसेत् सुधिः ॥
मथुरा त्रिदिनेष्वेव न त्याज्या तु कदाचन। यदि त्यक्त्वा प्रमाणेन कुर्याच्चैव प्रदक्षिणा ॥
फलमर्धमवाप्नोति मथुरा विहितास्थिताः। महाविद्यां शुभां देवीं स्थापयेद्देवकी प्रियाम् ॥
व्रजमण्डलरक्षाय सर्वदानवघातिनीम् ॥ ५० ॥

ततो महाविद्याप्रार्थनमन्त्रः। मार्कण्डेये—

महाविद्ये महाकालि देवानां हितकारिणि। नमस्ते गोपरक्षायै गोपिकाकुलरक्षिणि ॥
अष्टभिश्च पठेन्मन्त्रमष्टसंख्या नमस्करोत्। यत्रैव पठते कृष्णः गुरोः सांदीपनेर्मुनेः ॥
यस्मात्संजायते श्रेष्ठं महाविद्याम्बिकास्थलं। ततो संकेतसंस्थानं गोपिकाकृष्णसंगमम् ॥
यत्र संस्थापयेद्देवीं संकेतप्रियकारिणीम्। मथुरामंडले सस्थां देवकीनिर्मितेश्वरीम् ॥ ५१ ॥

ततो संकेतेश्वरी प्रार्थनमन्त्रः—

दम्पत्योः प्रीतिदे नित्यं चिरजात वियोगिनि। नमस्ते वरदे देवि संकेत फलदायिनि ॥

विजयी होता है। अनन्तर देवकी कर्तृक प्रभालल्ली नामक अम्बिका मूर्ति स्थापित हुई थी, जो कि समस्त अरिष्ट विनाश के लिये तथा श्रीकृष्ण के क्रीड़ा सुख के लिये विदित है। प्रभ लल्ली की प्रार्थना से समस्त कामना मिलती है ॥ ४८ ॥

प्रार्थनामन्त्र यथा-गौरीरहस्य में— हे प्रभालल्लि ! आपको नमस्कार। मुझको सुन्दर वर दीजिये। आप श्रीकृष्ण की क्रीड़ा सुख के लिये देवकी कर्तृक निर्म्मित तथा अर्च्चिता हैं इस मन्त्र का १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे ॥ ४६ ॥

दक्षिणोत्तर कोटि तीर्थ तथा देवताओं की पूजा कर दो दिन यावत् शुचि होकर बास करें। तीन दिन पर्य्यन्त मथुरा का त्याग नहीं करें। यदि त्याग करें तो फिर प्रमाण के साथ प्रदक्षिणा करें। मथुरा से बाहर रहने से अर्द्ध फल लाभ होता है ॥ ५० ॥

अनन्तर देवताओं ने देवकी प्रिया शुभ महाविद्या देवी की स्थापना की, जो ब्रजमण्डल की रक्षा के लिये और दुःख समूहों को नाश करने वाली है। प्रार्थनामन्त्र, यथा-मार्कण्डेय पुराण में—हे महाविद्ये ! हे महाकालि ! हे देवताओं का हित करने वाली आपको नमस्कार। आप गोप गोपिका समूह की रक्षा के लिये हों। ८ बार इस मन्त्र का पाठ पूर्वक ८ बार प्रणाम करें। जहाँ शिशु श्रीकृष्ण गुरु सान्दीपनि से पढ़े थे। इसलिये महाविद्या अम्बिका का स्थान उत्पन्न हुआ है ॥ ५१ ॥

अनन्तर गोपिका और श्रीकृष्ण के संगमस्थल संकेत संस्थान है जहाँ संकेत में प्रिय करने वाली देवी संकेतेश्वरी है। जो देवकी कर्तृक निर्म्मिता है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे दम्पत्ति की प्रीति देने वाली !

इति मंत्रं चतुर्भिः पठन् चतुर्नमस्कारं कुर्यात् । चिरं स्त्रीपुंसयो वैरो यत्र मुक्तो भविष्यति ॥
इत्येकादशमाख्याताः देवता तीर्थ संज्ञकाः । स्वकुण्डे देवकी स्थाप्याः कृष्णक्रीड़ार्थहेतवे ॥५२॥
ततो देवाः समाजग्मुर्महातीर्थसरोवरम् । रचित्वा पापनाशाय दैत्यघ्नदोष शान्तये ॥

महातीर्थसरः स्नान प्रार्थनमन्त्रः । भविष्ये—

क्रिमिकीटादिपापघ्ने नमस्ते सरसाम्बरे । सर्वदा विमले देवी सर्वसौभाग्यदायिके ॥
इति पंचदशावृत्या मन्त्रमुक्त्वा समज्जनैः । स्नापयेत्तु नमस्कारं सर्वे पापान् प्रमुच्यते ॥५३॥
अस्यास्तु देवतास्त्वष्टा स्थापिता सकलेष्टदाः । ततो गोकर्णसंस्थानं समाजग्मुः सुरास्तथा ॥
यत्र गोकर्णनामासौ तपस्तेपेऽतिविस्तरम् । वर्षैरष्टादशैः संख्यैः कृष्णदर्शनमाचरेत् ॥
यस्मादेषे महास्थानं वैकुण्ठपददायकम् ।

ततो गोकर्णर्षिमूर्तिप्रार्थनमन्त्रः । शौनकीये—

गोकर्णाय नमस्तुभ्यं वैकुण्ठपददायिने । सिद्धिं च सकलां यच्छ तोषितो भगवंस्त्वया ॥
इति मंत्रं समुचार्य पंचभिः प्रणमेद्दृषिम् । सर्वान्कामान्समालभ्य वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥५४॥

ततो सरस्वतीप्रार्थनमन्त्रः—

सरस्वति नमस्तुभ्यं सुबुद्धि-बलवर्धिनि । देवानां बलदे नित्यं रक्षःकुलविनाशिनि ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिस्तु नमस्करोत् ॥ ५५ ॥

हे परम संयोगिनी ! हे देवि ! आपको नमस्कार है । आप संकेत फल को देने वाली हैं । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक ४ नमस्कार करें । चिरकाल से स्थित स्त्री पुरुष का वैर भाव यहाँ नास हो जाता है । वह ११ तीर्थ देवता कही गई हैं जो कि श्रीकृष्ण की क्रीड़ा सुख के लिये अपने कुण्ड में देवकी कर्तृक स्थापिता हैं ॥ ५२ ॥

अनन्तर देवतागण महातीर्थ सरोवर में गये जो कि पाप नाश के लिये तथा दैत्य सम्बन्धी दोष नाश के लिये निर्म्मित किया हुआ है । प्रार्थनामन्त्र यथा—भविष्य में—हे सरोवर श्रेष्ठे ! कृमि कीटादि सम्बन्धी पाप नाश करने वाली आपको नमस्कार । आप सर्वदा पवित्र हैं और समस्त सौभाग्य देने वाली हैं । इस मन्त्र के १५ बार पाठ कर नमस्कार पूर्वक मज्जन स्नान करें ॥ ५३ ॥

यहाँ देवतागणों ने सकल इष्ट देने वाले विश्वकर्म्मा की स्थापना की । तदनन्तर गोकर्ण नामक स्थान में देवतागण गये । जहाँ गोकर्ण नामक ऋषि ने १८ संवत्सर पर्य्यन्त अत्यन्त घोर तपस्या कर श्रीकृष्ण के दर्शन प्राप्त किए थे । इसलिये यह महान् स्थान वैकुण्ठ पद को देने वाला है । अनन्तर गोकर्ण ऋषि की मूर्त्ति की प्रार्थनामन्त्र शौनकीय में—हे वैकुण्ठ पद को देने वाले गोकर्ण ऋषि ! आपको नमस्कार । आप सिद्धि समूह को प्रदान कीजिये । आपसे भगवान प्रसन्न हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार ऋषि को प्रणाम करें । समस्त कामना प्राप्त होकर वैकुठ पद को गमन करता है ॥ ५४ ॥

अनन्तर सरस्वती प्रार्थनमन्त्र—हे सरस्वति ! आपको नमस्कार । आप सुन्दर बुद्धि तथा बल को बढ़ाने वाली हैं ! आप देवताओं को बल देने वाली हो और सर्वदा राक्षस वंश का विनाश करने वाली हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करे ॥ ५५ ॥

ततो विघ्नराजगणेशप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्मवैवर्त्ते—

नमस्ते विघ्नराजाय लोकविघ्नविनाशन । वरदोऽसि सुराणां वै रक्षःकुलक्षयंकर ॥
इति मंत्रं समाहृत्य दशधा प्रणमेन्नरः । सर्वान्कामानवाप्नोति त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥५६॥

ततो गार्गीनामर्षिमहत्पत्नी प्रार्थनमन्त्रः—

गोकर्णधर्मपत्नी त्वं पतिव्रतातिवर्द्धिनी । नमस्तुभ्यं भवेद्देवी तपोराशिसमुद्भवे ॥
इति मन्त्रं समाहृत्य नमस्कारं नवं चरेत् ।

ततो सार्गिनामर्षिलघुपत्नीप्रार्थनमन्त्रः—

सार्गिदेवि नमस्तुभ्यमृषिपत्नि मनोरमे । सुभगे वरदे गौरि सर्वदा सिद्धिदायिनी ॥
इति मन्त्रं समुचार्य सप्तभिस्तु नमश्चरेत् ॥ ५७ ॥

ततो महालयं रुद्रं स्थापयेत् स्वर्गशुद्धये । दैत्यकारागृहस्थाश्च देवाः शुद्धाङ्गहेतवे ॥

ततो महालयरुद्रप्रार्थनमंत्रः । लैंगे—

महालय नमस्तुभ्यं रुद्राय शुद्धमूर्तये । शुद्धकल्याणरूपाय नमस्ते परमात्मने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नमस्कारोऽष्टभिश्चरेत् ॥ ५८ ॥

ततो उत्तरकोटिगणेशप्रार्थनमन्त्रः—

गणेशाय नमस्तुभ्यमुत्तरेशाय ते नमः । सर्वेषां देवतानांच पूजासांगफलप्रद ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य दशधा प्रणमेन्नरः । सर्वेषां देवतानां च फलमन्त्रमवाप्नुयात् ॥ ५९ ॥

अनन्तर विघ्नराज गणेश का प्रार्थनामन्त्र ब्रह्मवैवर्त्त में—हे विघ्नराज ! आपको नमस्कार । आप लोकों का विघ्न विनाश करने वाले हैं । आप देवताओं को वर देने वाले तथा राक्षस कुल नाश करने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० नमस्कार करने से समस्त कामनाओं को प्राप्त होकर मनुष्य तीन लोक में विजयी होता है ॥ ५६ ॥

अनन्तर ऋषि की बड़ी पत्नी गार्गी का प्रार्थनामन्त्र—आप गोकर्ण की धर्म पत्नी हैं और पातिव्रत को बढ़ाने वाली हैं । हे शुभे ! आपको नमस्कार । आप देवी हैं तपो राशि से उत्पन्ना हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार नमस्कार करें । अब ऋषि की छोटी पत्नी शार्गि का प्रार्थनमन्त्र—हे शार्गि ! तुम गोकर्ण की धर्म्म पत्नी हो, मनोरमा हो, सुभगा हो, वर देने वाली हो, गौरी हो, सर्वदा सिद्धि देने वाली हो । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करे ॥ ५७ ॥

तदनन्तर देवताओं ने स्वर्ग शुद्धि के लिये दैत्यों से ग्रहित और शुद्ध अङ्ग के लिये महालय नामक रुद्र की स्थापना की । प्रार्थनमन्त्र यथा-लिंगपुराण में—हे महालय ! रुद्र आपको नमस्कार ! आप शुद्ध मूर्त्ति वाले हैं और आप शुद्ध कल्याण रूप हैं । हे परमात्मन् ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ८ बार नमस्कार करे ॥ ५८ ॥

तदनन्तर उत्तरकोटिश गणेश प्रार्थनमन्त्र—हे गणेश ! उत्तरेश आपको नमस्कार । समस्त देवताओं की पूजा का सांग फल प्रदान कीजिये । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार नमस्कार करें तो उसे समस्त देवताओं का फल प्राप्त होता है ॥ ५९ ॥

ततो द्यूतस्थानप्रार्थनमन्त्रः । महाभारते—

द्यूतस्थान नमस्तुभ्यं देवानां विजयप्रदः । शुभदे कार्तिके मासि गोपिकावरदो भव ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य षोडशावृत्तिभिर्नमेत् । कार्तिके षोडशान्त्वृत्या वराकाश्च त्रिभिश्चरन् ॥
ओजपूर्णगुणां दृष्ट्वा नमस्कृत्याग्रतोगमन । द्यूतस्थानं विना पूज्य कुर्यादत्र प्रदक्षिणा ॥
अजयं सर्वदाप्नोति बुद्धिहीनः प्रजायते । इत्यष्टदेवताः प्रोक्ता महातीर्थसरोवरे ॥ ६० ॥
ततो गार्गीनदीतीर्थं जग्मुर्देवाः सविष्णुगाः ॥

ततो गार्गीस्नानप्रार्थनमन्त्रः । भविष्योत्तरे—

सर्वकल्मषनाशघ्ने नदी गार्गि नमोस्तु ते । इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनं च पठन्चरेत् ॥
नमस्कारान्दश कुर्यात् सर्वपापप्रणाशये ॥ ६१ ॥
महालयाख्यरुद्रस्य मन्दिरं रचयेत्सुराः । पार्वत्या सहितो रुद्रो कुरुतेऽत्र च मंगलम् ॥
यस्माच्छून्यं महावेश्म गार्गीतीरमुपाश्रितं ।

ततो रुद्रमहालयप्रार्थनमन्त्रः । गौरीरहस्ये—

भवस्य रमणायैव वरवेश्म नमोस्तु ते । गौरीसहोमनोर्थाय सकलेष्टप्रदाय च ॥
इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा नमस्कारं त्रयं चरेत् ॥ ६२ ॥
ततस्तु विघ्नराजस्य कुण्डं विघ्नविनाशनं । यत्रैव देवतानां च विघ्नाः नश्यंत्यनेकशः ॥
गणेशरूपमाधाय विष्णुर्विघ्नान्निवारयेत् । यत्र स्नानान्नराणां च विघ्ननाशो भवत्फलं ॥

अथ द्यूतस्थल प्रार्थनमन्त्र यथा-महाभारत में—हे द्यूत स्थान ! तुमको नमस्कार । तुम देवताओं को विजय देने वाले हो । शुभद कार्तिक मास में गोपिकाओं को बर देने वाले हो । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक १६ बार नमस्कार करें । कार्तिक मास में १६ कौड़ी लेकर तीन बार प्रणाम करके नमस्कार पूर्वक आगे जाकर प्रदान करें । बिना द्यूतस्थान की पूजा करने वाला प्रदक्षिणा करने से मनुष्य बुद्धिहीन होकर पराजय को प्राप्त होता है । महातीर्थ सरोवर में आठ देवता कहे गये हैं ॥ ६० ॥

अनन्तर विष्णु को आगे कर देवतागण गार्गीनदी तीर्थ में गये । स्नान प्रार्थनामन्त्र—भविष्योत्तर में—हे समस्त कल्मष नाश करने वाली गार्गी नदी ! आपको नमस्कार । आप समस्त मंगल की मांगल्यरूपा हैं आप तीर्थों की रानी हैं । आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन करें । १० बार नमस्कार करने से समस्त पाप नाश होता है ॥ ६१ ॥

अनन्तर देवतागण महालय नामक रुद्र का मन्दिर में गये । जहाँ पार्वती जी के साथ शिवजी मंगल करते हैं । इसलिये गार्गी के तट पर शून्य महा मन्दिर है । प्रार्थनामन्त्र यथा-गौरी रहस्य में—हे मनोहर गृह ! आप मनोहर रमण के लिये हैं । समस्त मनोरथ और समस्त इष्ट प्रदान करने वाले हैं । इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक तीन नमस्कार करें ॥ ६२ ॥

तदनन्तर विघ्ननाशक विघ्नराज का कुण्ड है । जहाँ देवताओं का अनेक प्रकार विघ्न नाश होता है । यहाँ गणेश रूप धारण करके श्रीविष्णु विराजित हैं । यहाँ स्नान करने से मनुष्यों का विघ्ननाश होता है । अनन्तर विघ्नराज कुण्ड का प्रार्थनामन्त्र है । ब्रह्मवैवर्त्त में—हे विघ्नराज ! हे गणेश ! आपको नमस्कार

संगमं च सरस्वत्या तीर्थराजं मनोहरं । देवानां च महाबुद्धि र्जायते नात्र संशयः ॥
पुस्तकानां कृतं दानं विद्यादानं शतं गुणं ।
ततो सरस्वतीसंगमस्नानप्रार्थनमन्त्रः । आश्वलायनसंहितायां—
देवानां बुद्धिदायै त्वां सरस्वत्यै नमो नमः । तीर्थराज नमस्तुभ्यं कलाधर नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिर्मज्जनैर्नमेत् ॥ ६८ ॥
ततो घण्टाभर्णे श्रुत्वा प्रबुद्धो भगवान्हरिः । कार्तिके शुक्लपक्षे तु दशम्यां लग्नवृश्चिके ॥
देवाः घण्टां समभ्यर्च्य घण्टास्वनमकारयन् । सर्वदा जयमाप्नोति त्रैलोक्येष्वुपराजिताः ॥
ततो घण्टावादनप्रार्थनमन्त्रः । गारुडे—
विष्णुबोध नमस्तुभ्यं सौवर्णाय महात्मने । सर्वदा जयद श्रेष्ठ घण्टाभर्ण नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं शतावृत्या घण्टां नत्वा च वादयन् । प्रबुद्धो भगवान् तत्र विजयाख्यवरं ददौ ॥
दारिद्र्यं नैव पश्यन्ति धनधान्यसुखं लभेत् । घण्टादानं समाचक्रुर्ब्राह्मणेभ्योऽर्थसिद्धये ॥६६॥
ततो गण्डकेशवप्रार्थनमन्त्रः—
गंडकेशव देवाय नमस्ते जलशायिने । सुराणां वरदो नाथ गंडद्वाराग्रसिद्धिदः ॥
इत्यष्टादशभिरुक्त्वा मन्त्रं देवा प्रघर्षेशुः । नाशाग्रं गुदामूलं च सर्वकामानवाप्नुयुः ॥ ७० ॥
धारलोपनं वैकुण्ठधाम विष्णोस्तु मन्दिरं । यत्र देवकृते कार्ये मनोभिरिचन्तितेखिले ॥
धराच्छिन्नं कदा नैव जायतेऽनेकविघ्नकैः ।

पूजा करे तो समस्त कामना को प्राप्त होती है और समस्त सौभाग्यवान होता है ॥ ६७ ॥

अनन्तर सरस्वती नदी का संगमस्थल नामक मनोहर तीर्थराज है। जहाँ देवताओं की मनोहर बुद्धि उत्पन्न होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। जहाँ पुस्तक दान करने से सौगुना विद्यादान होता है। सरस्वती संगमस्थल प्रार्थनामन्त्र यथा-आश्वलायन संहिता में—हे सरस्वति ! आपको नमस्कार । आप देवताओं को विमल बुद्धि देने वाली हैं। हे तीर्थराज ! आपको नमस्कार, आप कलाधर हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन करे ॥ ६८ ॥

अनन्तर घंटाभरण नामक तीर्थ वर्णन करते हैं, जहाँ भगवान् हरि जगे थे। कार्त्तिक के शुक्लपक्ष की दशमी तिथि में वृश्चिक लग्न पर देवतागणों ने अर्चना पूर्वक घंटा शब्द किया था। यहाँ घंटा शब्द करने से तीन लोक में जय लाभ होकर प्रसिद्धि हो जाती है। घंटावादन प्रार्थनमन्त्र-गरुडपुराण में—हे विष्णु का बोध कराने वाले (घंटाभरण) आपको नमस्कार। आप सुवर्णमय हो, महात्मा हो, सर्वदा जय देने वाले हो। इस मन्त्र का १०० बार पाठ करके नमस्कार कर घंटा बजावें तो भगवान् वहाँ जाग कर विजय नामक वर को देते हैं, जिसमें धन धान्य सुख लाभ पूर्वक दरिद्रता दूर हो जाती है। अर्थ सिद्धि के लिये ब्राह्मणों को घंटादान करें ॥ ६६ ॥

अनन्तर गंडकेशवप्रार्थनामन्त्र—हे जलशायि गण्डकेशवदेव ! आपको नमस्कार । आप देवताओं को वर देने वाले हैं और गङ्गाद्वार से आगे सिद्धि को देने वाले हैं। देवताओं ने इस मन्त्र का १८ बार पाठ पूर्वक नासिका अग्र के घर्षण पूर्वक समस्त कामनाओं को प्राप्त किया ॥ ७० ॥

अनन्तर धारलोप नामक वैकुण्ठ स्थान है। जहाँ विष्णु का मन्दिर है। वहाँ देवताओं के मान-

ततो वैकुण्ठधाममन्दिरप्रार्थनमन्त्रः—

सुधाररूपिणे तुभ्यं वैकुण्ठधाम मन्दिर ! । नमस्ते कमलाकान्त त्रैलोक्यवरदायक ! ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य शतमष्टोत्तरं नमेत् । सामन्तात्गृहलाभाय स्वर्गलोके महीयते ॥
पाषाणैः स्वगृहांश्चक्रुर्लोकास्तादृशमाप्नुयुः । गृहभावं सुखं श्रेष्ठं सर्वसौभाग्य वर्धनम् ॥

विष्णुपुराणे—

गो ब्राह्मण महाहत्या कदाचिन्नैव मुच्यते । यस्मादरिष्ट नामासौ दैत्यो कृष्णहतो वृषः ॥
द्वारे च मन्दिरस्यैवखण्डमूर्ति सदास्थिता । यतो गोविप्रहत्या च प्राणिनां मस्तके स्थिता ॥
आविर्भवति ब्राह्मे च मुहुर्ते कलहप्रिया । ततः सर्वदिने पूर्णे नैव संस्कारमर्हति ॥ ७१ ॥

ततो खण्डवृषप्रार्थनमन्त्रः—

धेनुकाय नमस्तुभ्यं गोपिकावल्लभप्रिय । अष्टषष्ठ्यागतैस्तीर्थैर्विमुक्तोऽसि वृषासुर ! ॥
इतिमन्त्रं समुच्चार्य अष्टषष्ठ्या नमस्करोत् । वृषग्रन्थि समायुक्तं गोदानं क्रियते नरः ॥
फलं कोटिगुणं जातं पुण्ये संख्या न विद्यते ॥ ७२ ॥
मण्डिकन्यासरस्तीर्थं ब्रह्मादिभिर्विनिर्मितं । ऋषिस्तु मण्डिको नाम तपस्तेपे सुदुष्करं ॥
तस्यासीत्सुन्दरी कन्या वर्षैः पंचशतैः शुभैः । मुहुर्तद्वय संस्थित्वा ततो पुष्करिणी भवेत् ॥
कृष्णाज्ञापरिमाणेन विमुक्तानां च मुक्तिदा ।

ततो मण्डिकन्यास्नानप्रार्थनमन्त्रः । पाद्मे—

मण्डिकन्ये नमस्तुभ्यं पुष्करिण्ये नमो नमः । विमुक्ते पापिनां देवि अविमुक्त शरीरिणां ॥
इति मन्त्रैश्चतुर्विंशैर्मज्जनैस्तु नमस्करोत् । जन्मान्तरकृतात् पापात् यत्र मुक्तो भविष्यति ॥७३॥

सिक अखिल कार्य्य की धारा अनेक विघ्नों से भी टूटती नहीं है । अनन्तर वैकुण्ठधाम प्रार्थनमन्त्र—हे परम उत्सव मन्दिर ! सुन्दरधार रूप आपको नमस्कार । आप त्रैलोक्य में वरदायक हैं । हे कमलाकान्त ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक विचित्रगृह प्राप्ति के लिये १०८ बार नमस्कार करें । पाषाण द्वारा गृह निर्म्माण करने से समस्त सौभाग्य से पूर्ण स्वर्गलोक प्राप्त होता है । विष्णुपुराण में—गोहत्या, ब्राह्मण हत्या और महाहत्या का पाप कभी नहीं मिटता है । इसलिये श्रीकृष्ण ने वृष रूप अरिष्ट नामक दैत्य को मारा । मन्दिर का द्वारदेश में खण्डमूर्त्ति सर्वदा रहती है । जिससे गोविप्र हत्या प्रभृति महापाप प्राणियों के मस्तक में रहता है । ब्रह्म मुहूर्त्त में कलह हो जाता है । इसलिये समस्त दिन संस्कार नहीं होने पाता है ॥ ७१ ॥

खण्डवृष प्रार्थनामन्त्र यथा—हे धेनुआकार ! आपको नमस्कार । आप गोपीवल्लभ श्रीकृष्ण के प्रिय हैं । ६८ तीर्थों को लाकर श्रीकृष्ण ने आपको मुक्त किया । इस मन्त्र का पाठ पूर्वक ६८ बार नमस्कार करे । वृष गाँठ से युक्त गौ का दान करने से कोटि गुण फल को लाभ करता है । उसका पुण्य की संख्या नहीं है ॥ ७२ ॥

अनन्तर देवताओं ने मण्डिकन्या नामक सरोवर की सृष्टि की । मण्डिक नामक ऋषि ने यहाँ बड़ी भारी तपस्या की थी, ५०० संवत्सर तपस्या के पश्चात् उनके एक सुन्दरी कन्या हुई जो कि दो मुहूर्त्त रहकर पुष्करिणी बन गई । यह श्रीकृष्ण की आज्ञा से विमुक्तों को भी मुक्ति देने वाली है । मण्डिकन्या

विमुक्तेश्वरनामानं महादेवं प्रकल्पयेत्। दर्शनादविमुक्तस्तु विमुक्तस्तु प्रजायते ॥

ततो विमुक्तेश्वरप्रार्थनमन्त्रः। उत्तरकोटिदेवतानां प्रार्थना—

अविमुक्तेश देवेश द्विसप्तभिरनुष्ठिताः । मथुरा क्रमणीया मे सफलास्यात्तवाज्ञया ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य चतुराशीतिवृत्तिभिः। नमस्कारान्समाचक्रु देवगन्धर्वमानवाः ॥
भाद्रकार्तिकयोश्चैवासिते शुक्ले दिने शुभे। नवम्यां सविधानेन कुर्य्यात् सांगप्रदक्षिणां ॥
सिंहवृश्चिकयोर्लग्ने समारम्भ शुभप्रदः । मासयोरुभयोश्चैव पक्षयोरसिते सिते ॥
दशम्यां च समागत्य मथुराभ्यन्तरं शुचिः। क्षेत्रस्थं शिवमभ्यर्च्य मन्त्रपूर्वविधानतः ॥ ७४ ॥

ततो क्षेत्रपालशिवप्रार्थनमन्त्रः। लैंगे—

क्षेत्रपाय नमस्तुभ्यं शिवाय शिवरूपिणे। सर्वदा कुरु मांगल्यं धनधान्यादिसम्पदः ॥
इत्येकादशभिर्मन्त्रं पठंश्च प्रणतिश्चरेत्। धर्मार्थकाममोक्षादीन् लभते वै न संशयः ॥७५॥
ततो विश्रान्तितीर्थन्तु सविष्णुदेवतास्तथा। स्नानं चक्रुर्विधानेनाकाशगङ्गाफलं लभेत् ॥

ततो विश्रान्तिस्नानप्रार्थनमन्त्रः। पाद्मे—

तीर्थराज नमस्तुभ्यं देवानां हितकारिणे। परस्परसुराधिष्ठविश्रान्त्यै वरदे नमः ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य शतावृत्या च मज्जनैः। नमस्कृत्याकरोत्स्नानमैश्चर्यपदमाप्नुयात् ॥७६॥

स्नान प्रार्थनामन्त्र यथा-पद्मपुराण में—हे मंडिकन्ये! हे पुष्करिणि! तुमको नमस्कार । तुम महावद्ध शरीर पापियों को भी मुक्ति देने वाली हो। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २४ बार मज्जन करें तो जन्मान्तर के पाप भी यहाँ नष्ट हो जाते हैं ॥ ७३ ॥

वहाँ विमुक्तेश्वर नामक महादेव की कल्पना करें। जिसकी कभी मुक्ति नहीं है वह भी उनके दर्शन-मात्र से मुक्त हो जाता है। अनन्तर विमुक्तेश्वर प्रार्थनामन्त्र—उत्तरकोटि देवताओं के—हे नित्यमुक्त स्वरूप! हे देवेश! मैंने १४ बार अनुष्ठान किया। मेरी यह मथुरा परिक्रमा आपकी आज्ञा से सफल हो। इस मन्त्र के ८४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे। देवता, गन्धर्व, मानवगण भाद्रमास की कृष्णा नवमी और कार्तिक की शुक्ला नवमी में सांग पूर्वक यथा विधि प्रदक्षिणा करे। दोनों महीनों की दोनों पक्ष की दशमी तिथि में मथुरा आकर सिंह वृश्चिक लग्न पर क्षेत्राधीश श्रीशिवजी की अभ्यर्थना पूर्वक यथाविधि प्रदक्षिणा का प्रारम्भ करें ॥ ७४ ॥

अनन्तर क्षेत्रपति शिव प्रार्थनमन्त्र-लिंगपुराण में—हे क्षेत्रपालक! शिव रूप श्री शिव! आपको नमस्कार। आप सर्वदा धन, धान्यादि सम्पत्ति मंगल को प्रदान करें। इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें। इन त्रयोदश देवताओं की प्रार्थना करने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ ७५ ॥

अनन्तर विष्णु के साथ देवतागणों ने विश्रान्तितीर्थ में जाकर यथा विधि से स्नान किया। यहाँ स्नान से स्वर्ग गङ्गा का फल मिलता है । स्नान प्रार्थनामन्त्र यथा—पद्मपुराण में—हे तीर्थराज! हे देवताओं के हितकारक! आपको नमस्कार। आप परदेवता श्रीहरि के विश्राम स्थल हैं। इस मन्त्र का १०० बार पाठ करके मज्जन, नमस्कार द्वारा स्नान करें। जिससे समस्त ऐश्वर्य्य प्राप्त होता है ॥ ७६ ॥

गतश्रमपदस्थानं जग्मुर्देवास्तुविश्रमाः । तत्र चिन्ताविनिर्मुक्तो श्रममुक्तो भवेन्नरः ॥

ततो गतश्रमपदस्थानप्रार्थनमन्त्रः—

वरदोसि महारम्य नानाक्लेशनिवारक ! । गतश्रम महास्थान नमस्ते नारदार्चित ! ॥

इति मन्त्रं पठन् तत्र दशधा प्रणमेत्सुधीः । घटिकार्धं स्थिरो भूत्वा सर्वदुःखाद्विमुच्यते ॥ ७७ ॥

ततो सुमंगलादेविमूर्तिं संस्थापयेद्धरिः । देनानां मंगलार्थाय नराणां वै तथैव च ॥

अस्यास्तु दर्शनेनैव कदा शोको न जायते । पुत्रोत्सवविवाहाद्यै मंगलैः सर्वदा सुखी ॥

ततो तस्याः प्रार्थनमन्त्रः । वायुपुराणे—

सुमंगले नमस्तुभ्यं सर्वदा मंगलप्रिये । धनधान्यप्रदे देवि व्रजमांगल्यदायिनी ॥

इतिमंत्रं चतुर्भिस्तु नमस्कारंश्चतुश्चरेत् । पिप्पलादेश्वरं विष्णुमूर्तिं संस्थापयेदजः ॥ ७८ ॥

ततो पिप्पलादेश्वरप्रार्थनामन्त्रः—

पिप्पलादेश्वराख्याय विष्णवे प्रभविष्णवे । मथुरामण्डलेशाय नमस्ते केशवाय च ॥

इति मन्त्रं षडावृत्त्या प्रणतीं षट् समाचरेत् ॥ ७९ ॥

ततो कर्कोटप्रार्थनमन्त्रः । रुद्रयामले—

कर्कोटाय नमस्तुभ्यं महादेवाय सम्भवे । सर्वदा कुरु मांगल्यं पाहि मां गिरिजापते ॥

इत्येकादशभिर्मंत्रं पठेत्तु प्रणमेच्छिवम् । सर्वबाधाविनिर्मुक्तो सर्वदा सौख्यसंयुतम् ॥ ८० ॥

सुखवासस्थलं गत्वा ब्रह्मणा सहिताः सुराः । लक्ष्म्यासार्धं रमेद्विष्णुरतिसौख्यसमाकुलः ॥

यतो यत्र समाख्याति सुखवासः स्थलं हरेः । सर्वसौभाग्यदं श्रेष्ठं नराणां देवतादिषु ॥

अनन्तर विश्राम प्राप्त देवतागण गतश्रम नामक स्थान में गये । जहाँ जीव चिन्ता से विमुक्त होकर श्रम मुक्त होता है । गतश्रम स्थानप्रार्थन मन्त्र यथा—हे महामनोहर ! हे नाना क्लेश दूर करने वाले ! हे महान स्थल गतश्रम ! आपको नमस्कार । आप वर को देने वाले हैं । नारद कर्तृक अर्चित हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार प्रणाम करें । आधा घड़ी स्थिर होकर ठहरें तो सर्व दुःख से मुक्त हो जाता है ॥७७॥

अनन्तर श्रीहरि ने देवताओं के तथा मनुष्यों के मंगल के लिये सुमंगला नामक देवी मूर्त्ति की स्थापना की । उसके दर्शन से पुत्रोत्सव, विवाहादिक मंगल में कभी शोक नहीं होता है । प्रार्थनामन्त्र यथा-वायुपुराण में—हे सुमंगले ! आपको नमस्कार । आप सर्वदा मंगल प्रिय हैं । इस व्रज में धनधान्य प्रभृति मंगल वस्तु देने वाली हैं । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक ४ नमस्कार करे ॥ ७८ ॥

अनन्तर श्रीहरि ने पिप्पलादेश्वर नामक विष्णुमूर्त्ति की स्थापना की । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे पिप्पलादेश्वर नामक विष्णु स्वरूप ! आप अज हैं । मथुरामण्डल के ईश्वर हैं, हे केशव ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक ६ बार प्रणाम करे ॥ ७९ ॥

अनन्तर कर्कोट प्रार्थनामन्त्र रुद्रयामल में—हे कर्कोट नामक महादेव शिव ! हे गिरिजापते ! सर्वदा मंगल कीजिये । मेरी रक्षा कीजिये । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक शिव को प्रणाम करे तो समस्त बाधाओं से निर्मुक्त होकर समस्त सुख को प्राप्त होता है ॥ ८० ॥

तदनन्तर ब्रह्माजी के साथ देवतागण सुखवास नामक स्थान में गये । जहाँ श्रीविष्णु सुख समूह से युक्त होकर श्रीलक्ष्मी जी के साथ रमण करते हैं । इसलिये उसका नाम श्रीहरि का सुखवास स्थान है ।

ततो सुखवासप्रार्थनमन्त्रः—

त्रैलोक्यसुखवासाय सुस्थानाय नमोऽस्तु ते । सर्वदा मंगलं देहि रमापतिप्रसादतः ॥
इति मंत्रं जपन्नत्वा वारमेकादशं हृदि । क्षणमात्रविलम्बेन सुस्थितोऽत्र सुखी भवेत् ॥८१॥
पूतनापतनस्थाने खरवात्यां च वाटिके । दशयोजनविस्तीर्णं पूतनापतनस्थलं ॥
सप्तदिनस्वरूपोऽसौ कृष्णो स्वामपिवत्स्तनं । गरं सुधामयं जातं सुन्दरीरूपमत्यजन् ॥
धात्रीतुल्यगतिं लेभे यतःस्थानं प्रपूजयेत् । तस्या हृद्युपरि कृष्णो क्रीडतेघटिकाद्वयं ॥
भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां तुललग्नोत्तरे मृताः । घटीपञ्च प्रमाणेन पूतनामोक्षमाप्नुयात् ॥

ततो खरवात्यां पूतनापतनवाटिकाप्रार्थनमन्त्रः । आदिपुराणे—

वाटिके पूतनास्थाने खरवात्यै नमो नमः । कृष्णक्रीड़ास्थले तुभ्यं लोकानां स्वर्गतिप्रदे ॥
इति मन्त्रं षडावृत्त्यापठंस्तत्रस्थलेष्वपत् । द्वयं शुद्धं समन्तात् चतुर्भिर्क्षणमुत्स्वपन् ॥
पित्रोरिव लभेन्मोक्षं परिवारकुलैः सह । तीर्थेषु मज्जनैः स्नानं यस्य नाम्नोच्चरन् चरेत् ॥
फलं तस्यैवमाप्नोति कृतस्यैव दशांशकम् । पुरुषेण कृतं पुण्यं तदर्धं लभते प्रिया ॥
स्त्रियाकृतं यदा पुण्यं पुरुषो नैव लभ्यते । स्नानं दानं तपो यज्ञं पुण्यं पापं विभागशः ॥
भर्तुरर्धमवाप्नोति यदिस्यात्तु पतिव्रता । पतिविद्वेषिणी नारी यदि स्यात्सविवाहिता ॥८२॥
तथाप्यर्द्धमवाप्नोति भाग्याद्दैवप्रणोदिता । ततो ऽगोचरनामानं वनं गत्वा हलायुधः ॥
रामस्तु रेवतीसार्थं परशंकाविवर्जितः ।

नर तथा मनुष्यों को सर्व सौभाग्य देने वाला है । प्रार्थनामन्त्र—हे त्रैलोक्य सुखवास के लिये सुन्दस्थान ! आपको नमस्कार । रमापति श्रीहरि के प्रसाद से सर्वदा मङ्गल दीजिये । इस मन्त्रको १२ बार हृदय में जप- के नमस्कार कर क्षण मात्र बिलम्ब करके ठहरने से मन सुखी होता है ॥ ८१ ॥

अनन्तर पूतनापतन स्थान खरवातिका का वर्णन करते हैं । जहाँ पूतना मरकर पड़ी थी, उसका विस्तार दश योजन है । श्रीकृष्ण ने ७वें दिन उसका स्तन पान किया था । उसी के स्तन में ढका हुआ विष अमृत स्वरूप होगया । पूतना ने उस समय सुन्दरी रूप को छोड़ कर अपना वास्तविक राक्षसी रूप प्राप्त किया और श्रीकृष्ण कर्तृक दुग्ध पान होने का कारण मातृ गति लाभ की । इसलिये उस स्थान की पूजा करे । उसके हृदय के ऊपर श्रीकृष्ण ने दो घड़ी पर्य्यन्त क्रीड़ा की थी । पूतना भाद्रपद की चतुर्दशी तिथि तुला लग्न के अन्दर मरी थी और पाँच घड़ी के पीछे मोक्ष के लिये प्राप्त हुई । अनन्तर खरवात्या और पूतना पतन बाटिकास्थान प्रार्थनामन्त्र—आदिपुराण में—हे बाटिके ! पूतनास्थान ! हे खरवात्ये ! आप दोनों को नमस्कार । आप दोनों श्रीकृष्ण के क्रीड़ास्थल हैं और लोकों के स्वर्ग गति को देने वाले हैं । इस मन्त्र का ६ बार पाठ कर दोनों स्थलों पर दो घड़ी शयन कर उठे । पितरों के साथ तथा समस्त परिवार के साथ मोक्ष को प्राप्त होता है । जिसका नाम लेकर तीर्थ में स्नानादिक करे उसका दशांश फल लाभ करता है । पुरुष के किये हुए पुण्य का आधा पत्नी लाभ करती है । किन्तु स्त्री कर्तृक पुण्य का फल पुरुष नहीं पाता है । स्नान, दान, तपस्या, यज्ञ, पुण्य, पाप प्रभृति दो भाग में विभाग होकर एक भाग पत्नी का होता है यदि पत्नी पतिव्रता हो । विवाहिता पतिविद्वेषिणी नारी भी दैव वशतः अर्द्ध फल को पाती है ॥ ८२ ॥

अनन्तर अगोचर नामक बन का प्रार्थनामन्त्र पाद्मे पातालखण्ड में—हे रेवतीकान्त ! हे नाग-

ततो गोचरप्रार्थनामन्त्रः। पाद्मे पातालखण्डे—

नमस्ते रेवतीकान्त नागसेवापरायण ! । क्रीडारमणसम्मोद हलायुध नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं शता-वृत्या पठंस्तु प्रणतिंश्चरेत्। परशंकां न पश्यन्ति यमोऽपि भस्मतां ययौ ॥
प्रियासार्धं चिरं रेमे गृहे सौभाग्यसम्पदा ॥ ८३ ॥
वज्राननमहामूर्त्तिर्हनुमत्परिचारकः। तत्र वज्रधरो पाणौ रामानुचरभावतः॥
रामनामानुभावेन हनुमत्सेवको सदा।

ततो वज्राननहनुमत्प्रार्थनमन्त्रः। अध्यात्म रामायणे—

वज्रानन नमस्तुभ्यं सर्वान्तकविनाशन ! । रामस्य रक्षणार्थाय हनुमत्मूर्तये नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य प्रणमेदष्टभिः क्रमात्। शिवसंवरणो नाम कालीयुद्धेक्षणाय च ॥
मुखद्वयं समाधाय पूर्वपश्चिमतः क्रमात्। वरदानप्रभावेनाहर्निशं युद्धमीक्षयेत् ॥ ८४ ॥
शिवसंवरणो नाम भावेनाहर्निशं युद्धं। उदितास्ते यदासूर्ये मरणं जीवनं दर्शेत् ॥
यतः समागतो रुद्रो मथुरामण्डले स्थितः।

ततो संवरणाख्यशिवप्रार्थनमन्त्रः। आग्नेये—

नमः संवरणायैव युद्धेक्षावरदाय च। नमस्ते घोररूपाय शिवाय शिवरूपिणे ॥
इति द्वादशभिर्मंत्रं पठंस्तु प्रणमेच्छिवं। युद्धे तस्य भयं नास्ति सर्वदा विजयीभवेत् ॥ ८५ ॥

ततो सूर्यप्रार्थनमन्त्रः—

आरक्ताय नमस्तुभ्यमहर्निश प्रदीपिने। क्रोधरूपाय देवाय भास्वराय नमो नमः ॥
इति मंत्रमुदाहृत्य पूर्वपश्चिमतो मुखं। पञ्च-पञ्च द्वयोर्मार्गे नमस्कारान्समाचरेत् ॥
सर्वदा विजयीभूत्वा प्रतापो जगतीतले ॥ ८६ ॥

गण कर्तृक सेवित ! हे क्रीड़ारमण में आनन्द प्राप्त हलायुध ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र का १०० बार पाठ कर प्रणाम करे। सर्पों से कोई शंका नहीं होती है। यमदण्ड भी भस्म हो जाता है। अपने गृह में प्रिया के साथ बहु काल यावत् सौभाग्य सम्पत्ति से युक्त हो रमण करता है ॥ ८३ ॥

अनन्तर वज्रानन नामक भगवत् परिचारक हनुमत् मूर्त्ति है। हाथ में वज्र है श्रीरामजी के सेवक भाव से उन्मत्त हैं। रामनाम का निरन्तर कीर्त्तन करने वाले हैं। प्रार्थनामन्त्र यथा अध्यात्मरामायण में—हे वज्रानन ! आप सबके अन्तक अर्थात् मृत्यु का नाशक हैं। आप निरन्तर भगवान् राम के रक्षक के लिये हनुमत् मूर्त्ति को धारण करने वाले हैं। आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ८ बार प्रणाम करें॥८४॥

अनन्तर संवरण नामक शिव हैं। जो कि कालिय नाग का युद्ध देखने के लिये दो मुख प्रगट करके पूर्व पश्चिम भाग में विराजित हैं। वरदान के प्रभाव से निरन्तर भगवान् के साथ कालिय नाग की युद्ध क्रीड़ा देखते हैं। सूर्य्य के उदय के समय जीवन को मृत्यु तुल्य देखते हैं। इसलिये मथुरा में आकर सर्वदा विराजित हैं। प्रार्थनामन्त्र यथा-आग्नेय में—हे संवरण नामक शिव ! आप कालियुद्ध देखने के लिये वर देने वाले हैं। आपको नमस्कार। आप घोर रूप हैं, शिव हैं, कल्याणरूपी हैं। इस मन्त्र को १२ बार पाठ पूर्वक शिवजी को प्रणाम करें तो युद्ध में भय नहीं होता। सर्वदा विजय प्राप्त होती है ॥८५॥

अनन्तर सूर्य्य प्रार्थनमन्त्र—हे दिन रात्रि को करने वाले ! रक्तवर्ण आपको नमस्कार। आप

सूर्यसंवरणो नाम बालखिल्यऋषेः सुतः । तपस्तेपे सहस्राब्दैर्विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥
यत्र स्थाने कलाविष्टऋषिमूर्तिं प्रकल्पयेत् ।

ततो ऋषिप्रार्थनमन्त्रः । गौतमीये—

सूर्यसंवरणायैव जगतां हितकारिणे । नमस्ते शिवरूपाय बालखिल्यर्षिसंभव: ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिः प्रणमेदृषिम् । सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वदा रोगवर्जितः ॥
इति पञ्चाङ्गसम्भूतं मथुराभ्यन्तरेश्वरं । रक्षाकुलेश्वरं देवं धर्मकामार्थदायकम् ॥
यत्रैव बलरामस्तु जलक्रीड़ां समाचरेत् । रामघाटं समाख्यातं मथुरामण्डले स्थितं ॥

ततो रामघाटस्नानप्रार्थनमन्त्रः—

सखिभिर्बली रामस्तु जलक्रीड़ाविहारिणे । नमस्ते रामतीर्थाय बलभद्राय ते नमः ॥
इति मंत्रं दशावृत्या मज्जनैः प्रणमेत्स्नपन् । अखण्डपदमापन्नो सर्वदा सौख्यमाप्नुयात् ॥८८॥
दशानां गोपिकानां च मुषित्वा वसनानि च । हरिः कदम्बमारुह्य गोपीन् व्रीडायुतां करोत् ॥
हसित्वा च हृषीकेशो चीरपाणिः प्रदर्शयत् । यतस्तु चीरतीर्थेऽस्मिन् कदम्बं परिपूजयेत् ॥
राधादिकसखिनां च दश चीराणि संगृहेत् । नीलकर्बूरधूम्रश्चरक्तपीतसितासितम् ॥
बादलं च द्वयं रक्तं पीतद्वयं मनोहरं । एतानि रंगभिन्नानि चीराणि च समादृदे ॥
कदम्बलतिकायांतु मन्त्रपूर्वं प्रबन्धयेत् ।

ततो चीरघाटस्नान कदम्बचीरबन्धनप्रार्थनमन्त्रः । वाराहे—

राधादिभिः सखिभिस्तु संस्तुतो देवकीसुतः । तस्मै तुभ्यं हृषीकेश नमः सौभाग्यवर्धनम् ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या पठन् नत्वा प्रबन्धयेत् । सर्वदा वस्त्रसौभाग्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥

क्रोधरूप हैं। हे देव ! हे भास्कर आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक पूर्व पश्चिम भाग में पाँच-पाँच बार नमस्कार करे तो सर्वदा प्रतापी होकर जगत् में विजय प्राप्त होता है ॥ ८६ ॥

सूर्य्य संवरण नामक बालखिल्य ऋषि बालक १००० साल पर्य्यन्त तपस्या कर विष्णु सायुज्य को प्राप्त हुए। जहाँ कलायुक्त सूर्य्य मूर्त्ति की स्थापना करे। सूर्य्य संवरण प्रार्थनमन्त्र यथा-गौतमीय में—हे सूर्य्य संवरण नामक बालखिल्य ऋषि पुत्र ! आपको नमस्कार। आप शिवरूप हैं। जगत् के हित करने वाले हैं। इस मन्त्र का ९ बार पाठ पूर्वक ऋषि को प्रणाम करे तो समस्त कामना की प्राप्ति होती है और रोग से रहित होता है ॥ ८७ ॥

यह पञ्चांग संभूत रक्षा करने में समर्थ धर्म्म, अर्थ, काम देने वाले, शिव मूर्त्ति का वर्णन किया गया है। जो मथुरा के अभ्यन्तर में स्थित है। अनन्तर रामघाट स्नान प्रार्थनमन्त्र तथा-पद्मपुराण में—हे सखागण के साथ बली राम ! आप जलक्रीड़ा विहार करने वाले हैं। हे रामतीर्थ ! हे बलभद्र ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, नमस्कार द्वारा स्नान करें तो अखण्ड पद को प्राप्त होकर सर्वदा सुख का अनुभव हो ॥ ८८ ॥

अनन्तर चीरतीर्थ नामक स्थान है। जहाँ श्रीहरि ने गोपियों के वस्त्र समूह लेकर कदम्ब वृक्ष पर चढ़कर उन्हें लज्जित किया। श्रीहरि हँसकर हाथ में वस्त्र लेकर देखने लगे थे। इसलिये उसका नाम चीरतीर्थ है। यहाँ कदम्ब की पूजा करे। राधादि सखीयों के लिये दस वस्त्र संग्रह करे। नील, कर्बुर,

अलाभे दशधा चीरे रञ्जनं दशधा करोत् । कदम्बे पूजयेत्कृष्णं गोपिकाभ्यो नमश्चरेत् ॥
चीरपूजां विना यात्रा नैव साङ्गं प्रयच्छति । चीरपूजां परित्यक्त्का वस्त्रदारिद्र्यपीडितः ॥
सर्वदुःखैस्तु सन्तप्तो नग्नकायः सदास्थितः । ततस्तु गोपिकासार्धं जलक्रीडां करोद्धरिः ॥
मार्गशीर्षे शुभे मासे गोप्यपुण्यफलप्रदे । भाद्रकार्तिकयोश्चैव वनयात्रा प्रसंगमे ॥
गोपीनां सुकुमारीणां वस्त्रदानं समाचरेत् । भोजनं विविधं कृत्वा गोपिका परिपूजयेत् ॥
दशलक्ष गुणं पुण्यं फलं गोप्यमवाप्नुयात् ॥ ८९ ॥

ततो गोपीघाटस्थानप्रार्थनमन्त्रः—

गोपीनाथ नमस्तुभ्यं कृष्णाय हरये नमः । सर्वपापविनाशाय सकलेष्टप्रदायिने ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनं स्नानमुच्चरन् । नमस्कारविधानेन गोपीभ्यस्तु नमश्चरेत् ॥
सर्वकामार्थमोक्षादीन् परमेशपदं लभेत् ॥ ९० ॥
सूर्यो यत्र स्थिरो भूत्वा घटीद्वयप्रमाणतः । स्नानं चकार दैत्यस्य हतदोषप्रशान्तये ॥
यस्मात्संजायते तीर्थं सूर्यकुण्डं च पुत्रदं । यत्र स्नानकृतस्यापि सूर्यतुल्यो भवेत्सुतः ॥

ततो तस्य स्नानप्रार्थनमन्त्रः । आदित्यपुराणे—

समतेज प्रकाशाय पुत्रदाय नमो नमः । द्वादशादित्यरूपाय भास्कराय वरप्रद ! ॥
इति द्वादशभिर्मन्त्रै मज्जनैः स्नपनंनमन् । धर्मार्थकाममोक्षादीन् लभते नात्र संशयः ॥ ९१ ॥

धूमाट, रक्त, पीत, शुभ्र, कृष्ण, बादला, दो प्रकार के रक्त, दो प्रकार के पीले, रंग के दश वस्त्र लेकर कदम्ब शाखा में मन्त्र पाठ पूर्वक बाँधे । अनन्तर चीरघाट में स्नान तथा कदम्ब वृक्ष पर वस्त्र बाँधने का मन्त्र-बाराहपुराण में--हे सौभाग्य वर्द्धक हृषीकेश ! हे देवकीसुत ! राधादि सखीगण कर्तृक आप स्तुत हुए थे । इसलिये हृषीकेश आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार कर वस्त्र को बाँधे । यह सर्वदा वस्त्र सौभाग्य को प्राप्त होता है । इसमें कोई सन्देह नहीं है । वस्त्र का अभाव होने से दश स्थान में उस-उस रङ्ग द्वारा रञ्जित करें । कदम्ब वृक्ष में श्रीकृष्ण की पूजा करें । गोपीयों को नमस्कार करें । वस्त्र पूजा बिना यात्रा सांग के साथ पूर्ण नहीं होती है । यदि वस्त्र पूजा न करें तब दारिद्र्य से पीड़ित होकर सर्वदा दुःख को प्राप्त होता है । और सर्वदा नंगा शरीर रहता है । अनन्तर गोपीयों के साथ श्रीहरि शुभ मार्गशीर्ष में जलक्रीड़ा करने लगे । भाद्र कार्तिक मास की वनयात्रा प्रसंग में सुकुमारी गोपियों के लिये वस्त्र दान संग्रह करें । विविध प्रकार भोजन द्वारा गोपियों की पूजा करें । जिससे दश लाख गुणा पुण्य फल प्राप्त होता है ॥ ८९ ॥

अनन्तर गोपीघाट स्नान प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपीनाथ ! हे कृष्ण ! हे हरि ! आपको नमस्कार । आप समस्त पाप नाश करने वाले हैं और समस्त इष्ट देने वाले हैं । इस मन्त्र का १० बार पाठ पूर्वक मज्जन स्नान करें । विधि पूर्वक गोपियों को नमस्कार करे । समस्त कामना, मोक्षादिक परमेश्वर पद को लाभ करता है ॥ ९० ॥

जहाँ सूर्य ने दो घड़ी यात्रा में स्थिर होकर दैत्य नाश दोष की शांति के लिये स्नान किया है इससे पुत्र दाता सूर्य्यकुण्ड नामक तीर्थ उत्पन्न हुआ है । यहाँ स्नान करने से सूर्य्य के तुल्य प्रतापी पुत्र होता है ! प्रार्थनामन्त्र यथा—आदित्यपुराण में—हे समतेजः प्रकाशकारी ! हे पुत्र दाता ! आपको नमस्कार ।

पितृउद्धारकरं तीर्थं ध्रुवक्षेत्रं महाफलं । प्रेतयोनिगतास्तेऽपि पितरो लुप्तपिण्डकाः ॥
अपुत्रा नर्कगाश्चैव यत्र श्राद्धमवाप्नुयात् । प्रेतयोनिं परित्यक्त्वा देवयोनिमवाप्नुयुः ॥

ततो ध्रुवक्षेत्रस्नान प्रार्थनमन्त्रः—

गदाधर नमस्तुभ्यं पितृमोक्षविवर्द्धन । ध्रुवक्षेत्रवर श्रेष्ठ ध्रुवाटलवरप्रद ॥
इति मन्त्रं नवावृत्या मज्जनैः स्नपनं नमन् । ध्रुवलोकमवाप्नोति विष्णोश्चैव प्रसादतः ॥

ध्रुवसंहितायां—

ध्रुवस्तपश्चकाराऽत्र शताब्दं बहुविस्तरं । भगवद्दर्शनं लब्ध्वा पदवीमटलां लभेत् ॥ ६२ ॥
ततस्तु गोपिकाः सर्वाः भगवद्भोजनाय च । ओदनं नियमानास्ता कृष्णपूजनतत्पराः ॥
चक्रुर्विविधगानैस्तु कृष्णपूजां मनोर्थदां । यतस्तु गोपिकानीतोदनस्थानमुदाहृतं ॥
यत्र स्थानं प्रपूज्यन्त्योदनेनैव विधानतः । लोको कामानवाप्नोति धनधान्यसमृद्धिभिः ॥
मथुराभ्यन्तरे मार्गे वृन्दाबनगमागमे । स्थानं देवैः शुभं कार्यं शून्यं पूर्णमहोत्सवं ॥

ततो गोपिकानीतौदनप्रार्थनामन्त्र. । बृहन्नारदीये—

नमस्ते बासुदेवाय गोपिकावल्लभाय च । स्वादौदनप्रभुक्ताय श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं षडावृत्या पठन्स्थानं प्रणम्य च ॥ ६३ ॥

ततो कुवलयापीडवधस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

दन्तभग्न नमस्तुभ्यं बलकृष्णकृताऽर्थक । नमः कुवलयापीडवधस्थान वरप्रद ॥

आप द्वादश आदित्य रूप हैं भास्कर देव हैं, वर देने वाले हैं। स मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक मज्जन करें तो धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्षादिक प्राप्त होते हैं इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ ६१ ॥

अनन्तर पितर उद्धारकारी ध्रुवक्षेत्र है। जो महाफल को देने वाला है। प्रेतयोनि प्राप्त, जिनका पिण्ड लोप होगया, अपुत्र, नरकगामी पितरगण यहाँ श्राद्ध प्राप्त करके प्रेतयोनि छोड़ कर देवयोनि को प्राप्त होते हैं। अनन्तर ध्रुवक्षेत्र स्नान प्रार्थनामन्त्र—हे गदाधर! आपको नमस्कार। आप पितरगणों की मोक्ष बढ़ाने वाले हैं। हे ध्रुवक्षेत्र! आप श्रेष्ठ हैं, ध्रुवजी को अटल पद देने वाले हैं। इस मन्त्र के ९ बार पाठ पूर्वक मज्जन नमस्कार स्नान करें तो अवश्य विष्णुप्रसाद से ध्रुवलोक को प्राप्त होता है। ध्रुव संहिता में—यहाँ श्रीध्रुव १०० वर्ष यावत् निश्चल तपस्या कर भगवत् दर्शन लाभ पूर्वक अटल पदवी को प्राप्त हुए हैं ॥ ६२ ॥

अनन्तर ओदनस्थान का वर्णन करते हैं—जहाँ कृष्णपूजन में तत्पर गोपिकागण भगवान के भोजन के लिये विविध प्रकार ओदनादि लेकर विविध गानादि पूर्वक मनोरथ देने वाली कृष्ण पूजा को करती थीं। गोपिकागण ओदन लाती थीं। इसलिये इसका नाम ओदन स्थान है। यहाँ विविध ओदन द्वारा विधि पूर्वक पूजा करने से धनधान्य प्रभृति वैभव के साथ कामना समूह प्राप्त होते हैं। मथुरा के अन्दर मार्ग में वृन्दावन के गमन आगमन के लिये यह स्थान देवतागण कर्तृक निर्म्मित है। ओदनस्थल प्रार्थनामन्त्र—बृहन्नारदीय में—हे वासुदेव! गोपिकावल्लभ आपको नमस्कार। आपने गोपीगण कर्तृक सुन्दर सुस्वाद ओदन प्राप्त किये हैं। हे कृष्ण! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ६४ बार पाठ पूर्वक स्थान को प्रणाम करें ॥ ६३ ॥

अनन्तर कुवलयापीड़ वधस्थानमन्त्रः—हे भग्नदन्त! आपको नमस्कार। श्रीबलदेव और श्रीकृष्ण

सप्तभिर्मन्त्रमुच्चार्य्य स्थानं च प्रणमेत्सुधीः । हस्तितुल्यबलं लब्ध्वा यमपुरात्स जीवति ॥६४॥
चाणूरमुष्टिकौ मल्लौ बलकृष्णकृतांजसौ । तयो र्बधस्थलं श्रेष्ठं तिवीर्य्यबलप्रदं ॥

ततो चाणूरमुष्टिकमल्लबधस्थानप्रार्थनमन्त्रः—

नमश्चाणूरमल्लाय मुष्टिकाय तथा नमः । बलभद्रहतायैव कृष्णखण्डकृतायते ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु द्वयोः स्थानं नमश्चरेत् ॥ ६५ ॥

ततो कंसशयनस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णोद्भव विचिन्त्याय कंसशयन वेश्मने । नमो नारदमन्त्राय भगवज्जन्महेतवे ॥
इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा नमस्कारं त्रयं चरेत् । वैकुण्ठपदमाप्नोति सुशील इव रूपधृक् ॥ ६६ ॥

ततो उग्रसेनीकारागृहस्थानप्रार्थनमन्त्रः । दशमे—

गायन्ति ते विशदकर्मगृहेषु देव्यो राज्ञां स्वशत्रुबधमात्मविमोक्षणं च ।
गोप्यश्च कुंजरपतेर्ज्जनकात्मजाया. पित्रोश्च लब्धशरणा मुनयो वयं च ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्यैकादशैर्विभिर्नमेत् । यत्र स्थाने प्रयोगं व निगडेन परिप्लुते ॥
दशसाहस्रसंख्याके मुक्तः कारागृहाद् भवेत् । सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुग्रसेनिप्रणोदितः ॥६७॥

ततो उग्रसेनिराज्याभिषेकस्थानप्रार्थनमन्त्रः । भविष्योत्तरे—

पुत्रबाधानिवृत्ताय राज्यस्थान नमोऽस्तु ते । अन्वायान्वस्वरूपाय कृष्णराज्याभिषेचनं ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिः प्रणमेत्सुधीः । ययाति शापतो कृष्णो राज्यसिंहासने न्यसेत् ॥
मातुश्च पितरं नत्वोग्रसेनमभिषेचयेत् । इत्येते मथुरायास्तु तीर्थाः देवाश्च सुस्थलाः ॥
स्नानप्रणतिपूजाभिः पूजनीया पृथक् पृथक् ॥ ६८ ॥

के द्वारा आप कृतार्थ हैं । हे कुवलयापीड बधस्थान ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक स्थान की प्रदक्षिणा करे तो हस्ति सदृश बल को पाकर १२० साल पर्यन्त जीवित रहता है ॥ ६४ ॥

अनन्तर चाणूरमुष्टिक बधस्थल है—यह चाणूरमुष्टिक नामक श्रीकृष्ण के बल से उत्तेजित दो कंस के महामल्लों का बध स्थान है जो अत्यन्त वीर्य्यबल को बढ़ाने वाला है । प्रार्थनमन्त्र—हे चाणूरमल्ल ! हे मुष्टिकमल्ल ! आपको नमस्कार । आप श्रीकृष्ण कर्तृक खण्डित होकर बलदेव कर्तृक बध को प्राप्त हुए हैं। इस मन्त्र के ४ वार पाठ पूर्वक दोनों स्थलों को नमस्कार करे ॥ ६५ ॥

अनन्तर कंसशयन स्थल प्रार्थनमन्त्र—हे कंसशयन स्थल ! आप श्रीकृष्ण के उद्भव के लिये हैं। जहाँ भगवान् के जन्म के लिये नारद कर्तृक प्रतारित कंस विविध प्रकार मन्त्रणा करता था । इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक ३ बार नमस्कार करे तो सुशील रूप को धारण करके वैकुण्ठ में गमन करता है ॥६६॥

अनन्तर उग्रसेनि कारागृह स्थान प्रार्थनामन्त्र—श्रीभागवत के दशम स्कन्ध में है। इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें । इसको १०००० बार प्रयोग से निश्चय कारागृह से मुक्तिलाभ करता है। यह सत्य है, सत्य है, फिर सत्य है। उग्रसेनि का वचन है ॥ ६७ ॥

अनन्तर उग्रसेनि राज्याभिषेक स्थल प्रार्थनामन्त्र— भविष्योत्तर में—हे पुत्र (कंस) की बाधा निवृत्ति के लिये उग्रसेनि राज्याभिषेक स्थान ! आपको नमस्कार । आप अन्वरूप हैं। श्रीकृष्ण कर्तृक आप अभिषिक्त हैं। इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करे। ययाति के शाप से उन्मुक्त कर माता पिता

सकलगुणनिधानो भट्टनारायणाख्यः । प्रभुमयप्रचुरात्मा नारदस्यावतारः ॥
व्रजशुभगुणमध्ये संस्थितस्थानतीर्थे । विधिसमयप्रयोगं पूर्णमेतच्चकार ॥ ९९ ॥

इति श्रीभास्करात्मजभट्टनारायणविरचिते व्रजभक्तिविलासे परमसंहितोदाहरणे व्रजमहात्म्यनिरूपणे बनयात्राप्रसंगे मथुरोत्पत्तिमहात्म्यकथनदर्शनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ १०० ॥

॥ चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ श्रीकुण्डबनादुत्पत्तिमहात्म्यदर्शनं । आदिवाराहे—

तत्रादौ श्रीकुण्डबनप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णक्रीडास्थलायैव नमस्तुभ्यं बनाय च । साफलाख्यं वरं देहि कृष्णसौभाग्यदायिने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य चतुर्भिः प्रणमेद्वनं ॥ १ ॥
गोपिका रमते यत्र कृष्णसार्द्धं यथेच्छया । यस्मात्तु गोपिकाकुण्डं सर्वसौभाग्यदायकं ॥

ततो गोपिकाकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णवश्यकृते तुभ्यं गोपिकाविमलोज्वल । पीतवर्णजलायैव गुप्तपुण्यफलप्रद ॥
इति मन्त्रं दशावृत्त्या मज्जनैः स्नपनं नमन् । धर्मार्थकाममोक्षादीन् लभते वै न संशयः ॥
यत्रव गोपीकानां च पूजनं वस्त्रभोजनः । सौभाग्यफलमाप्नोति सौभाग्यं वर्द्धनं भवेत् ॥
त्रयोदश्यां तु सप्तम्यां भाद्रकार्त्तिकयोस्तथा । कृष्णपक्षे शुभयोगे कुर्यात्सागंप्रदक्षिणां ॥ २ ॥
वनस्य व्रजयात्रायाः प्रसंगेऽनुक्रमेन च ! । अरिष्टासुरनामासौ यत्रैव वसते सदा ॥
यदरिष्टं वनं नाम वहुवानरसंकुलं ।

को नमस्कार कर पूर्वक श्रीकृष्ण ने उग्रसेन को राज्य सिंहासन पर बैठाया है और अभिषिक्त भी किया है। इति यह सब मथुरा के तीर्थ तथा देवता हैं। स्नान, प्रणाम और पूजादि द्वारा पृथक् २ पूजा करें ॥९८॥

समस्त गुणों की खान, विशालात्मा, नारदावतार श्री नारायणभट्ट जी व्रज सम्बन्धी शुभ-गुणों से परिपूर्ण स्थान तथा तीर्थों का यह विधि समय के प्रयोगमय प्रबन्ध पूर्ण करते हैं ॥ ९९ ॥

इति श्रीमद्भास्कर आत्मज श्रीनारायणभट्ट गोस्वामी विरचित व्रजभक्तिविलास का माहात्मनिरूपण बनयात्राप्रसंग मथुराउत्पत्ति-महिमाकथन दर्शन नामक तृतीय अध्याय का अनुवाद ॥१००॥

अब श्रीकुण्डबनादि उत्पत्ति महिमा का दर्शन कहते हैं—आदिवराह में—प्रथम श्रीकुण्डबन-प्रार्थनामन्त्र यथा—हे कृष्णक्रीड़ास्थलबन ! आपको नमस्कार। हे कृष्णसौभाग्य देने वाले ! साफल्य नामक वर दीजिये। इस मन्त्र के जप पूर्वक चार बार बन के लिये प्रणाम करें ॥ १ ॥

यहाँ गोपीगण श्रीकृष्ण के साथ यथेच्छा रमण करते हैं इसलिये यहाँ सर्व सौभाग्य देने वाला गोपिकाकुण्ड है। स्नान प्रार्थनामन्त्र—हे श्रीकृष्ण के वश्य के लिये विमल उज्वल गोपिकाकुण्ड ! पीतवर्ण जलमय आपको नमस्कार। आप गुप्त पुन्य फल देने वाले हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, स्नान, नमस्कार करें। धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्षादिक प्राप्त होते हैं; इसमें कोई सन्देह नहीं। जहाँ गोपियों का वस्त्र, भोजन द्वारा पूजा का विधान है। सौभाग्य फल मिलता है। भाद्रमास की कृष्णा त्रयोदशी और कार्त्तिक की कृष्णा सप्तमी में शुभ योग पर सांग प्रदक्षिणा करे ॥ २ ॥

बनयात्रा क्रम से अरिष्टासुर नामक दैत्य जहाँ सर्वदा वास करता है। इसलिये इसका नाम

ततो ऽरिष्टप्रार्थनमन्त्रः—

अरिष्टरूपिणे तुभ्यं वनाय च नमो नमः। वानराकुलरम्याय ममारिष्टं विनाशय ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य पञ्चभिः प्रणमेद्वनं। अरिष्टे नैव पश्यन्ति बहुवैरिकृतेऽपि च ॥
वृषरूपं समाधाय कृष्णघाताय स्वागमत्। यतो वृषासुरो नाम विख्यातः पृथिवीतले ॥

स्कान्दे:—यत्र कृष्णहतो दैत्यो धेनुकासुरदैत्यराट्। यत्रारिष्टाः समाख्याताः शत्रोर्बधज्वरादयः ॥
प्रयोगेनैव नश्यन्तु बधस्थानोत्तमोत्तमः। ज्वरमेकान्तरं चैवान्ह्यहिक्यं च तृतीयकम् ॥
सप्तमासो परिभ्रामन् यत्रस्थानोत्तमोत्तमः। ज्वरमुक्तो भवेल्लोको परमायुः स जीवति ॥ ३ ॥

ततो धेनुकासुरबधस्थानप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णं प्रसादितायैव धेनुकासुर नाशक। सुस्थानाय नमस्तुभ्यं गोपिकाभयहारिणे ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिः प्रणमेत्स्थलम्। सर्वारिष्टविमुक्तोऽसौ सर्वदा सुखमाप्नुयात् ॥
ललितामोहनो यत्र वृषहत्यानिवृत्तये। अष्टषष्टिसमाख्याततीर्थानाहूय संस्नपन् ॥
वृषहत्याविमुक्तोऽसौ ख्यातौ द्वौ कुण्डविश्रुतौ। ललितामोहनौ कुण्डौ कृमिहत्याव्यपोहकौ ॥

ततो ललितामोहनकुण्डयोः स्नानप्रार्थनमन्त्रः—

नमो पातकविघ्नाघ्नौ ललितामोहनौ शुभौ। स्नापयेऽहं विमोक्षाय कुण्डौ नीरमनोहरौ ॥
इति मन्त्रं समुचार्य दशभिर्मज्जनैं नमन्। आदौ तु ललिताकुण्डं स्नापयेद्दशमज्जनैः ॥
ततस्तु मोहनं कुण्डं सर्व हत्यान् विमुच्यति। भ्रूणहा कृमिहा गोहा ब्रह्महा स्वानहात्महा ॥
एताभ्यो षड् हत्याभ्यो स्नापनाच्च विमुच्यते ॥ ४ ॥

अरिष्ट वन है जो कि बहुत से बन्दरों से युक्त है। अनन्तर अरिष्ट वन प्रार्थनामन्त्र कहते हैं—हे अरिष्टरूपी वन! तुमको नमस्कार २। हे बन्दर समूह से मनोहर मेरा अरिष्ट नाश कीजिये। इस मन्त्र के ५ बार पाठ पूर्वक ५ नमस्कार करें। कदापि बहु शत्रु कर्तृक प्राप्त अरिष्ट नहीं रहता है। श्रीकृष्ण को मारने के लिये वृषरूप धारण कर आने के कारण पृथिवी में वृषासुर नाम से प्रसिद्ध है। स्कन्धपुराण में—जहाँ दैत्यराज धेनुकासुर कृष्ण द्वारा हत हुआ था। जहाँ प्रयोग करने से शत्रु कर्तृक बध का प्रयोग तथा ज्वरादिक अरिष्ट समूह नाश हो जाते हैं। यह उत्तम से उत्तम स्थान है। जहाँ एकैया, तेइया, चौथैया प्रभृति पुराना ज्वर नाश हो जाता है। ज्वर से मुक्त होकर प्राणी यावत् परमायु जीता है ॥ ३ ॥

धेनुकासुर बधस्थान प्रार्थनामन्त्र—हे कृष्ण कर्तृक नाश प्राप्त धेनुकासुर के बध स्थान! हे गोपियों के भयहरण करने वाले सुन्दर स्थान! तुमको नमस्कार। इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक स्थल को प्रणाम करे तो समस्त अरिष्ट से मुक्त होकर सुख को प्राप्त होता है। ललितामोहन यहाँ वृषहत्या से निवृत्ति के लिये ६८ संख्यक तीर्थों को लाकर स्नान पूर्वक वृषहत्या से विमुक्त हुए इसलिये यह ललिता मोहन नामक दो कुण्ड पृथिवी में विख्यात हुए दोनों कुण्ड का स्नान प्रार्थनामन्त्र—हे ललिता, मोहन नामक दोनों कुण्ड! आप पातक तथा विघ्नों का नाश करने वाले हैं। आपका मनोहर जल है। मैं मोक्ष के लिये स्नान करता हूँ। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार प्रणाम करके मज्जन करें। पहिले ललिताकुण्ड में पश्चात् मोहनकुण्ड में स्नान करे। भ्रूणहत्या, कृमिहत्या, गोहत्या, ब्रह्महत्या, स्वानहत्या, आत्महत्या नामक छः प्रकार हत्या से मुक्त होता है ॥ ४ ॥

ततस्तु राधिकात्यक्तो ललितामोहनस्तदा । अस्माकं नैव संसर्गो ब्रह्महत्यासमन्वितः ॥
नैव दृष्टा न ज्ञातव्यास्त्वस्मभितीर्थसंगता । न मन्तव्यं न मन्तव्यं वृषहत्याविमोचनं ॥
एतद्राधावचः श्रुत्वा कृष्णो विह्वलमानसः । ललितान्तु परित्यज्य राधापाणिं समाददे ॥
स्थित्वाग्रतः स्थले राजन् कुण्डे तीर्थान्समाह्वये । चक्रतुः स्नपनं यत्र राधाकृष्णौ सुनिर्मलौ ॥
यतस्तु पृथिवीलोके कुंडौ श्रीकृष्णराधिकौ । ललिता द्वयकुण्डाभ्यां जलं यत्रै वनीयते ॥
विमलौ सर्वपापघ्नौ ब्रह्महत्याविघातकौ । आदौ स्नानं तु राधायाःकुण्डे सर्वार्थदायकम् ॥
ततस्तु कृष्णकुण्डे तु सर्वपापप्रणाशनम् ।

ततो राधाकृष्णकुण्डयोः स्नानप्रार्थनमन्त्रः । वाराहे—

सर्वपापहरस्तीर्थ नमस्ते हरिमुक्तिद । नमः कैवल्यनाथाय राधाकृष्णाभिधायिने ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य अष्टपष्ठ्यादिमज्जनैः । स्नापयेद्विधिना पूर्वं नमस्कारं पृथक् पृथक् ॥
वृषहत्यादिपापानि प्रणश्यन्ति प्रभावतः । धनधान्यसुतोत्पत्तिश्चिराय सुखमाप्नुयात् ॥
द्वयोस्तु कुण्डयोश्चैव स्नानमेकविधं स्मृतम् ॥ ५ ॥
तयोस्तु संगमपार्श्वेसखीनां मण्डलं स्थलं । सरित्पूर्णविधानेन सखीनां सप्तम्यां निशि ॥
पूजनं विधिवत्कुर्यात् सरित्पूर्णफलं लभेत् । धनधान्यसमृद्धिं च सर्वदा सुखमाप्नुयात् ॥

ततो सखीमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—

सखीनां मंडलायैव राधादिभ्यो नमो नमः । सर्वमंगलमांगल्यवरदाय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं चतुपष्ठ्या वृत्तिभिः प्रणमेत्स्थलं । सर्वदा सुखमाप्नोति सर्वदा नेत्रशीतलः ॥ ६ ॥

श्रीराधा कर्तृक श्रीकृष्ण और ललिता त्यक्त होने लगे । क्योंकि आपने ब्रह्महत्या की, आपका संसर्ग हम सब में नहीं हो सकता है । आपने जो समस्त तीर्थों को बुला कर स्नान किया किम्वा तीर्थों को प्रकट किया सो हम सबने न देखा, न सुना, न मन में लाये । इस प्रकार राधिका के वचन को सुनकर श्रीकृष्ण विह्वल मन पूर्वक ललिता को छोड़ राधिका के हस्त धारण करने लगे । आगे स्थित कुण्ड पर समस्त तीर्थों के आह्वान पूर्वक श्री राधिका के साथ सखीगण को लेकर आपने स्नान किया । इसलिये पृथिवी में श्रीकुण्ड तथा कृष्णकुण्ड विख्यात हुए । उस समय श्री ललिता देवी लज्जिता होकर दोनों कुंडों से जल उठा कर अपने कुण्ड में डालने लगीं । दोनों कुण्ड विमल है तथा समस्त पाप और ब्रह्महत्या प्रभृति को नाश करने वाले हैं । पहिले समस्त अर्थ देने वाले राधाकुंड में स्नान करें, पश्चात् समस्त पाप नाश के लिये कृष्णकुंड में स्नान करें । अनन्तर दोनों कुंड का स्नान प्रार्थनामन्त्र कहते हैं । बाराह में—हे राधा कृष्ण नामक दोनों कुंड ! आप समस्त पाप नाश करने वाले हैं । श्रीहरिप्राप्ति रूप मुक्ति कैवल्य को देने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६८ वार स्नान मज्जन नमस्कार करें तो ब्रह्म हत्यादि पाप समूह से मुक्त होकर धन, धान्य पुत्रादि के लाभ पूर्वक चिरायु होता है । दोनों कुंडों की स्नान विधि एक प्रकार है ॥ ५ ॥

दोनों कुंड के संगम के पास सखीमण्डल स्थल है । सप्तमी की रात्रि में सरित्पूर्ण विधि से सखियों की पूजा विधि पूर्वक करने से सरित्पूर्ण फल प्राप्त होता है और धन, धान्य, समृद्धि लाभ पूर्वक सर्वदा सुख प्राप्त होता है । प्रार्थनामन्त्र—हे सखीयों के मण्डल स्थल ! हे राधादिक ! समस्त मंगल के मंगल

ततो यत्र कलाकेल्या सख्या वैवाहिकं स्थलं । दशवर्षस्वरूपेण कलाकेलिकृतो हरिः ॥
कृतं ललितया चैव प्रियग्रन्थि विनिर्मितम् । उच्चरन् बहुधा गीतं वैवाहिकसुमंगलम् ॥
गानं सर्वसखिभिस्तु प्रियसौभाग्यवर्धनं । यतो वैवाहिकं स्थानं सर्वदैव वरप्रदम् ॥
ततो विवाहस्थलप्रार्थनमन्त्रः—
कलाकेलिविवाहस्थाशोकपुत्रीवरप्रदः । सुस्थानाय समानीय व्रजराजस्य हेतवे ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिः प्रणमेत्स्थलं । नारी सौभाग्यसंयुक्ताखण्डसौभाग्यमाप्नुयात् ॥७॥
तत्रैव संस्थितो कृष्णो राधया सहितो हरिः । राधावल्लभमूर्तिस्तु लोकानां वरदायकः ॥
ततो राधावल्लभप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्मवैवर्त्ते राधाखण्डे—
राधावल्लभरूपाय पुत्रपौत्रप्रदाय च । नमस्ते केशवायैव सर्वपापप्रणाशिने ॥
दशवर्षस्वरूपेण कलाकेलिं वृणोद्धरिः । इति मन्त्रं समुच्चार्य दशधा प्रणमेद्धरिम् ॥ ८ ॥
स्नानयात्राप्रसंगे तु स्थानमूर्त्योस्तु दर्शनम् । नैव कुर्यात् श्रमस्तस्य विफलस्तु प्रजायते ॥
यत्र तीर्थे स्थिताः विष्णो मूर्तयस्तु विराजिताः । नमस्कारैः पृथक् पूज्यास्तेऽपि सर्वे वरप्रदाः ॥
शापदा नैव पूज्यास्ते राधाकृष्णेन निर्मिता ॥ ६ ॥
ततो मदनगोपालमूर्तिर्भूत्वा स्थितो हरिः । लोकानां मोहनार्थाय गोपीनां च तथैवच ॥
ततो मदनगोपाल प्रार्थनमन्त्रः । विष्णुरहस्ये—
देवाय वासुदेवाय धर्मकामार्थदायिने । नमस्ते मोहनायैव श्रीमद्गोपालरूपिणे ॥
इत्येकादशभिर्मन्त्रं पठन्नत्र नमस्करोत् । वैकुण्ठपदमाप्नोति पुण्यशीलसमो नरः ॥

सुन्दर वर को देने वाले ! आप सबको नमस्कार । इस मन्त्र का ६४ वार पाठ कर स्थल को नमस्कार करें ॥ ६ ॥

विविध गानों से वैवाहादि सुमंगल गाकर जहाँ सखियों के साथ उत्सव मनायें हैं और जहाँ कलाकेलि नामक सखी के साथ दस वर्ष स्वरूप श्रीकृष्ण का वरण हुआ था और श्री ललिता ने जहाँ पर दोनों की गाँठ बाँधी थी वही यह कलाकेलि नामक सखी का विवाह स्थल है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे कलाकेलि सखी के विवाहस्थल ! हे अशोक पुत्री को वर देने वाले, आप कृष्ण के लिये निर्मित सुन्दर स्थान हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करे तो नारी अखण्ड सौभाग्य को लाभ करती है ॥७॥

वहाँ श्रीकृष्ण राधिका के साथ राधाबल्लभ मूर्त्ति रूप से विराजित हैं और समस्त वर को देने वाले हैं। राधाबल्लभ प्रार्थनामन्त्र यथा—ब्रह्मवैवर्त्त के राधाखण्ड में—हे पुत्र पौत्र देने वाली श्रीराधा-बल्लभ मूर्त्ति ! आपको नमस्कार। हे सर्व पाप नाश करने वाले केशव आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार श्रीहरि को प्रणाम करे ॥ ८ ॥

स्नान, यात्रा प्रसंग में यदि स्थान और मूर्त्ति का दर्शन न करे तब उसका समस्त मनोरथ विफल हो जाता है। तीर्थों में जहाँ-जहाँ विष्णु मूर्त्ति विराजित हैं उन सब के नमस्कार पूर्वक पृथक् २ पूजा करे। वह समस्त श्रीराधाकृष्ण कर्तृक निर्म्मित तथा वर समूह को देने वाले हैं। यदि न पूजा करें तब शाप देते हैं ॥ ६ ॥

अनन्तर श्रीहरि मदनगोपाल रूप होकर विराजित हैं, जो गोपी और लोकों का मोहन के लिये

बनयात्राप्रसंगे तु विधिरेपा प्रकीर्तिता । इति श्रीकुण्डमाहात्म्यमुत्पत्तिस्नपनं यजं ॥
निरूपितं यथा सांगं त्रिपु लोकेपु मुक्तिदम् ।
इति श्रीकुण्डमाहात्म्यं ॥ १० ॥

अथ बनयात्राप्रसंगे नन्दग्रामतीर्थ देवोत्पत्ति माहात्म्यं । आदिपुराणे—

यत्र नन्दोपनन्दास्ते प्रतिनन्दाधिनन्दनाः । चक्रुर्वासं सुखस्थानं यतो नन्दाभिधानकं ॥
भाद्र कार्तिकयोः शुक्ले चतुर्थ्यामष्टमीदिने । बनयात्राप्रसंगस्तु सर्वकामार्थ दायकः ॥११॥

ततो मधुसूदनकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—

केशवाय नमस्तुभ्यं परमायुर्विवर्धने । मधुसूदन कृष्णाय देवानां हितकारिणे ॥
सप्तभिर्मन्त्रमुचार्य स्नपनं भज्जनैर्नमन् । सर्वधर्मार्थ कामादीन् लभते नात्र संशयः ॥ १२ ॥
मधुसूदनमूर्तिं च यशोदा यत्र स्थापयेत् ।

ततो मधुसूदनमन्त्रः—

यशोदाशासितायैव दैत्यदर्पविनाशिने । नमस्ते चिरजीवाय मधुसूदन केशव ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । परमायुः सजीविन्यो निरातंका निरीतयः ॥१३॥
यशोदा कुरुते स्नानं नित्यमेव दिनं प्रति । यतो संजायते कुण्ड यशोदासंज्ञकं शुभम् ॥
यत्र पयस्विनी नारी गवामधिपतिर्नरः । दर्शनात्स्नानतो वापि धनधान्यसुखैर्युतः ॥

ततो यशोदाकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—

धनधान्यसुखं देहि तीर्थराज नमोस्तु ते । वैकुण्ठपदलाभाय प्रार्थयामि नमस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुचार्य मज्जनैर्दशधा स्नपन् । नमस्कारं प्रकुर्वीत पुत्रादिसुखमाप्नुयात् ॥१४॥

हैं। मदनगोपाल प्रार्थनामन्त्र विष्णुरहस्य में—हे देव ! हे बासुदेव ! हे धर्म, काम, अर्थ के देने वाले ! हे मोहन ! हे मदनगोपाल रूप ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे । पुण्य-शील होकर मनुष्य वैकुंठ पद को प्राप्त होता है । बनयात्रा के प्रसंग में यह विधि कही गई है । इति श्रीकुंड का उत्पत्ति, महिमा, स्नपन, यजन यथा विधि सांग पूर्वक वर्णन किया गया है । जो तीन लोक में मुक्ति को देने वाले हैं ॥ १० ॥ इति श्रीकुंडउत्पत्तिमाहात्म्य ।

अब बनयात्रा प्रसंग में नन्दग्राम के तीर्थ, देवता की उत्पत्ति और माहात्म्य कहते हैं । आदि पुराण के अनुसार यहाँ नन्द, उपनन्द, प्रतिनन्द, अभिनन्द और सुनन्द ने वास किया है इसलिये यह नन्द-ग्राम नामक सुख स्थान है । भाद्रमास की शुक्ला चतुर्थी और कार्तिक मास की शुक्ला अष्टमी में बनयात्रा प्रसंग समस्त काम, अर्थादि देने वाला है ॥ ११ ॥

पहिले मधुसूदन कुंड प्रार्थनमन्त्र—हे केशव ! हे परमायु बढ़ाने वाले !, हे मधुसूदन, हे कृष्ण ! हे देवताओं के हित करने वाले ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र का ७ बार पाठ कर स्नपन, मज्जन, नमस्कार करें तो समस्त धर्म्म, अर्थ, कामादि लाभ करता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ १२ ॥

श्री यशोदा कर्तृक मधुसूदन मूर्त्ति यहाँ स्थापित हैं । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे यशोदाशासित दैत्य-दर्प विनाशी मधुसूदन ! आपको नमस्कार । आप चीरञ्जीवी हैं, केशव हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो यावत्परमायु निर्भय होकर जीता है ॥ १३ ॥

श्री यशोदा प्रति दिन यहाँ स्नान करती हैं यह यशोदाकुंड है । यहाँ स्नान करने से नारी दुग्ध-

ततो हावप्रार्थनमन्त्रः—

नमः कृष्णेक्षकास्तुभ्यं धर्मकामार्थमोक्षिणः। पाषाणरूपिणो देवाः यशोदाशीषसंस्थिताः॥
इति मन्त्रं षडावृत्त्यापठञ्च प्रणमेत् च तान्। अभयं पदमाप्नोति परशंकाविवर्जितः॥ १५॥
यत्रैव ललितायाता राधया प्रेषिता किल। सङ्केते कृष्णमानीय स्नपनं कुरुते स्थले॥
यतस्तु ललिताकुण्डमभिधानमनोहरं। महातीर्थं समाख्यातं देवानामपि दुर्लभं॥

ततो ललिताकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—

ललिते स्नपने रम्ये स्वर्गद्वारविधायिने। नमो विमलतोयाय तीर्थराज नमोस्तु ते॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिर्मज्जनैः स्नपन्। नरो मोक्षमवाप्नोति ललिताकुण्ड संस्मरन्॥ १६॥
ललिता स्नपनं कृत्वा मोहनेक्षणमिच्छति। ततस्तु तत्समीपे तु स्नपितं कृष्णमोक्षयेत्॥
तत्रैव ललिता कुर्यात्कुण्डमोहनसंज्ञकम्। यत्र स्नायाद्विधानेन कृष्णदर्शनमाप्नुयात्॥
साफल्यपदमाप्नोति जगन्मोहनकारकम्।

ततो मोहनकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—

नमो मोहनकुण्डाय जाह्नवीफलदायिने। नमः कैवल्यनाथाय कृष्णदर्शनहेतवे॥
इति मन्त्रं दशावृत्त्या मज्जनैः स्नपनं नमन्॥ १७॥
यत्र नन्दादयो गोपाः गवां दोहनमादधुः। नन्दाः श्वेतांश्च गांश्चैव दुदुहुरयुताधिकाः॥
मणार्धं दुग्धतः पूर्णा स्वाभीरगोकुलोत्सवाः। प्रतिनन्दास्तथा पीता उपनन्दाश्च रक्तका॥

यता और नर गौमान् होता है। दर्शन तथा स्नानादिक से धन, धान्य, सुख को प्राप्त होता है। अनन्तर प्रार्थनामन्त्र कहते हैं। हे तीर्थराज! आपको नमस्कार। धन, धान्य सुख को दीजिये। वैकुण्ठ प्राप्ति के लिये आपको नमस्कार करता हूँ। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार स्नान नमस्कार करे तो पुत्रादि सुख प्राप्त होता है॥ १४॥

अनन्तर हाव प्रार्थनामन्त्र—हे कृष्ण दर्शन करने वाले! हे धर्म्म, अर्थ, काम, मोक्ष देने वाले! हे पाषाणरूपधारी, हे यशोदा के आशिष से वर्द्धित आप सबको नमस्कार। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक सबको नमस्कार करे तो अभय पद को प्राप्त होता है और भय से रहित हो जाता है॥ १५॥

यहाँ राधा कर्तृक प्रेषित श्री ललिता ने श्री कृष्ण को इस संकेत स्थल में लाकर स्नान कराया। इसलिये इसका नाम ललिता कुंड है। यह देवताओं को भी महादुर्ल्लभ महान् तीर्थ है। अनन्तर ललिता-कुंड स्नान प्रार्थनामन्त्र कहते हैं। हे मनोहर! हे ललिता कर्तृक स्थापित स्थल! हे स्वर्गद्वार देने वाले! हे विमल जल वाले! हे तीर्थराज! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ मज्जन, स्नान, नमस्कार करें। ललिताकुंड के स्मरण से मोक्ष मिलती है॥ १६॥

ललिताजी श्रीकृष्ण मोहन को स्नान कराकर देखने लगीं और उस समय मोहन नामक कुंड की सृष्टि हुई, यहाँ विधि पूर्वक स्नान करने से श्रीकृष्ण का साक्षात् दर्शन होता है और प्राणी जगत् मोहनकारी सुन्दर पद को प्राप्त होता है। प्रार्थनामन्त्र—हे मोहनकुंड! हे गङ्गा फल देने वाले! हे कैवल्य नायक! श्रीकृष्ण दर्शन के लिये आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १० बार पाठ करके मज्जन स्नपन नमस्कार करे॥१७॥

अब दोहिनीकुंड का वर्णन करते हैं। जहाँ नन्दादि गोपगण गोदोहन करते थे। श्रीनन्द

अधिनन्दाश्च धूम्राश्चासितवर्णविवर्जिताः । यत्र कुर्याद्गवां दानं पुण्यकोटिगुणं फलम् ॥
अशक्तौ तु गवां दाने स्वर्णरूप्यादिदोहनीम् । दद्यात्विप्राय विज्ञाप्य दशलक्षगुणं फलम् ॥
प्रतापमार्तण्डे—दुग्धकुंडे पयोदानं स्वयं पानमथाचरेत् । स्वर्णादिपात्रके धृत्वा शर्करोपरि संस्थितम् ॥
नमः प्रदक्षिणी कृत्य ब्राह्मणाय निवेदयेत् । गवामधिपतिर्भूयात् शतसंख्याभिधायिनाम् ॥
यतस्तु दोहनीकुण्डं नन्दग्रामे शुभप्रदम् ।
ततो दोहनीकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—
नमो निर्मलतोयाढ्य देवानाञ्च सुधामय । नमस्ते दोह सम्भूत सर्वकामार्थदायक ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य दशभिर्मज्जनैः स्नपन् । नमन्सुफलमाप्नोति सकलेष्टफलं शुभम् ॥१८॥
यत्र नन्दादयो गोपा दुग्ध्वा दुग्धं समादधुः । दुग्ध कुण्डं समाख्यातं यत्र दुग्धमयोऽभवत् ॥
ततो दुग्धकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः । धौम्योपनिषदि —
सुधामयस्वरूपाय देवमोक्षप्रदायिने । नमः कैवल्यनाथाय सर्वदारोग्यतां कुरु ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु मज्जनैः स्नपनं नमन् । देवतुल्यं भवेत्कायं परमेशपदं लभेत् ॥१६॥
भुक्त्वासौ दधिभाण्डं तु कृष्णो यत्र दधिक्षिपेत् । मात्रा संतर्जयन् धावन दधिना भूमिपूरिता ॥
यतस्तु दधिकुंडस्तु देवानाममृताह्वयः । देवानां दुर्लभः श्रेष्ठः मुनिगन्धर्वयोगिनां ॥
दधिदानं च विप्राय दत्त्वाथ स्वयमश्नुते । दशकोटिगुणं पुण्यं फलमाप्नोति मानवः ॥
ततो दधिकुंडप्रार्थनमन्त्रः—
देवानां दुर्लभतीर्थ नमस्तेऽमृतरूपिणे । जलरूपहरस्तुभ्यं पयोराशि शुभप्रदं ॥
इति मन्त्रं त्रयस्त्रिंशैः पठन् स्नायात्तु मज्जनैः । साफल्यपदमाप्नोति गोरसैः सर्वदा सुखं ॥२०॥

श्वेत वर्ण, आधा मन दुग्ध देने वाली अयुत संख्या से अधिक गौओं का उसी प्रकार प्रतिनन्द पीला गौओं का, उपनन्द रक्तवर्ण गौओं का, अभिनन्द धूम्राट वर्ण गौओं का दोहन करते थे । जहाँ गौ दान करने से कोटि गुणा फल मिलता है । गौ का दान करने में अशक्त हों तब सुवर्ण की दोहनी बना कर निवेदन पूर्वक ब्राह्मण को दान करे । उससे लक्षगुण फल होता है । प्रतापमार्त्तण्ड में कहा है—दुग्धकुंड में दुग्ध दान करे । अनन्तर स्वयं पान करें । सुवर्णादिक पात्र में शक्कर मिलाकर दुग्ध रख नमस्कार प्रदक्षिणा पूर्वक ब्राह्मणों के लिये निवेदन करे तो शत संख्यक गौओं का अधीश्वर होता है । इसलिये नन्दीश्वर में शुभप्रद दोहिनीकुंड है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे निर्म्मल जल वाले ! हे अमृतमय ! आपको नमस्कार है । आप दोहन से उत्पन्न हैं और समस्त काम अर्थ देने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार मज्जन, स्नान, नमस्कार करें तो समस्त इष्ट फलों की प्राप्ति करता है ॥ १८ ॥

अनन्तर दुग्धकुंड का वर्णन करते हैं । जहाँ नन्दादिक गोप दुग्ध दोहन कर रखते थे, वहाँ दुग्ध-कुंड है जो इस कारण से उत्पन्न हुआ है । स्नान प्रार्थनमन्त्र यथा—धौम्य उपनिषद् में—हे अमृतमय स्वरूप ! हे देवताओं को मोक्ष देने वाले ! हे कैवल्य नायक ! आपको नमस्कार । आप सर्वदा आरोग्य दीजिये । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक मज्जन, स्नान, नमस्कार करे तो देवता के सदृश शरीर लाभ कर विष्णु पद को प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

अब दही कुंड का वर्णन करते हैं । श्रीकृष्ण ने दधि भोजन कर दधि के बर्त्तन यहाँ फेंके हैं ।

भवन्ति देवताः सर्वे पवित्रञ्च सरोवरम्। तस्मात्पावननामासौ लोकानां पावनीकृतम् ॥
पवित्ररूपिणं तीर्थं ब्रह्महत्यादिनाशनम्। तिलादिपुण्यधान्यानां स्वर्णादीनां च पावनं ॥
दानं विप्राय दातव्यं काचनांगद्युतिप्रदम्।

ततो पावनसरः स्नानप्रार्थनमन्त्रः—

नमः पावनरूपाय देवानां कल्मषापहम्। नन्दादिपावनायैव तीर्थराज नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य षोडशैर्मज्जनैर्नमन्। स्नपनं चक्रिरे लोका वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥२१॥
तत्रैव सरसो मध्ये यशोदाकूपमुत्खनत्। यत्र कूपं पिवेत्तोयं कृष्णतुल्यं सुतो भवेत् ॥
घटैर्दुग्धं प्रदातव्यं नन्दग्रामाधिशालिने। पितृणामक्षयं दत्तं फलमाप्नोति मानवः ॥

ततो यशोदाकूपस्नानाचमनमन्त्रः। आदिवाराहे—

कामसेनीसुताकूप सुपुत्रफलदायक। नमः पावनतीर्थाय गोपिकायै नमस्तु ते ॥
सप्तभिः पठते मन्त्रं मज्जनाचमनं चरेत्। सुपुत्रफलमाप्नोति धनधान्यादिसम्पदम् ॥२२॥
तत्समीपेऽकरोन्माताकृष्णविक्रीडनायसा। कदम्बानां बनं श्रेष्टं गोपिकाप्रियवल्लभं ॥
कदम्बखण्डिमाख्यातमतिसौभाग्यवर्धनं।

ततो कदम्बबनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकावल्लभायैव कृष्णगोपालरूपिणे। नमस्ते सुखरूपाय यशोदानन्दनाय च ॥

माता कर्तृक तर्जित होकर प्रभु भागे और दधि के साथ बर्त्तनों को भी धरती में दबा दिया। इसलिये यह दधि कुंड है। देवता, गन्धर्व, मनुष्य, मुनि, ऋषि, योगियों को भी यह स्थान दुर्लभ है। मनुष्य यहाँ यदि ब्राह्मण को दधि दान करें एवं स्वयं दधि भोजन करें तब दशकोटि गुण फल प्राप्त होता है। स्नान प्रार्थना-मन्त्र यथा—हे देवदुर्ल्लभ तीर्थ! अमृत स्वरूप आपको नमस्कार। हे जलरूप! हे शुभद! पाप राशि समूह का हरण कीजिये। इस मन्त्र के ३३ बार पाठ पूर्वक मज्जन, स्नान, नमस्कार करे तो साफल्य पद को प्राप्त होता है और गोरस से सवदा सुखी रहता है ॥ २० ॥

अब पावन सरोवर का वर्णन करते हैं—देवतागण भी यहाँ पावन होते हैं, इसलिये मनुष्यों को पवित्र करने वाला यह पावन सरोवर है। यह परम पवित्र है और ब्रह्म हत्यादि के पाप का नाश करने वाला है। यहाँ तिल, धान्यादि प्रदान करने से बड़ा पुण्य होता है और सुवर्ण दान करने से सुवर्ण सदृश अङ्ग की कान्ति होती है। स्नानप्रार्थनामन्त्र यथा—हे पावनरूप! हे देवताओं के कल्मष नाशक! आपको नमस्कार। हे तीर्थराज! आपको नमस्कार। आप नन्दादिकों को पावन करने वाले हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १६ नमस्कार करे तो नमस्कार स्नानादि से वैकुण्ठ पद प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

उस सरोवर के मध्य में यशोदाकूप है। इस कूपे का जल पान करने से कृष्ण तुल्य पुत्र होता है। नन्दग्राम के मनुष्यों के लिए दूध्वों के साथ घट दान करे तो मनुष्य अक्षय पितृलोक फल को प्राप्त होता है। प्रार्थनामन्त्र—आदिवाराह में—हे कामसेनिकन्या के कूप! हे सुन्दर पुत्र फल को देने वाले! हे पावन तीर्थ! हे गोपिका! आपको नमस्कार। ७ बार पाठ पूर्वक मज्जन, स्नान, आचमन करें तो धन, धान्यादि सम्पत्ती के लाभ पूर्वक सुन्दर पुत्र प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

उसके पास कदम्बखण्डि है जो माता यशोदाजी ने अपने पुत्र श्रीकृष्ण के क्रीड़ा सुख के लिये

इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु नमस्कारं समाचरेत्। घटिमात्रं विलम्ब्यात्र वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥२३॥
दधि मंथानमाचक्रे यशोदायुतकं दधि। चतुर्थांशायुतं सर्पि दधिमाखनभाजनौ ॥
लघुदीर्घौ विराजन्तौ नन्द वेश्मसमीपतः।

ततो दधिभाजनप्रार्थनमन्त्रः—

कामसेनिसुताकार्यं सुमिष्टदधिभाजनौ। नमस्त्वमृतरूपाय देवानां मोक्षहेतवे ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य दशधा च नमस्करोत्। दशाचमनमाचक्रे तक्रं संकुशमीकृतम् ॥
चिरजीवी भवेल्लोको गवामधिपतिर्भवेत्। धनधान्यसुताद्यैश्च परिवारसुखं चिरं ॥२४॥
ततो नन्दीश्वरं रुद्रं नाम्ना संस्थापयेत्प्रिया। नन्दीश्वरं नन्दपत्नी स्थापितं मंगलार्थये ॥
परिवारसुखार्थाय कुलाभीर संवृद्धये।

ततो नन्दीश्वरप्रार्थनमन्त्रः। स्कान्दे—

नन्दीश्वराय देवायाभीरोत्पत्तिहिताय च। यशोदासुखदायैव महादेवाय ते नमः ॥
शक्राङ्कृत्यापठन्मन्त्रं नमस्कुर्याच्चतुर्दशैः। चिरायुर्भवति लोको धनधान्यसुखं लभेत् ॥२५॥
इति प्रासादितो रुद्रो यशोदायै वरं ददौ। स्वकीयाय कृतार्थाय वरं प्रार्थयते हरः ॥
यत्राहं पर्वतो भूये बलकृष्णसुते नमः। नन्दधातृसमेतस्त्वं ममोपरि विराजते ॥

ततो नन्दधाममन्दिरे नन्दयशोदाकृष्ण बलभद्रप्रार्थनमन्त्रः। ब्रह्मवैवर्त्ते—

लगायी रखी थी। यह गोपिकावल्लभ श्रीकृष्ण का परम प्रियस्थल है। जो अत्यन्त सौभाग्य वर्द्धक है। प्रार्थनामन्त्र—हे गोपिकावल्लभ! हे कृष्णगोपालरूप! आपको नमस्कार। आप सुखरूप हैं। यशोदा को आनन्द देने वाले हैं। इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे और घड़ी मात्र यहाँ विश्राम करे तो वैकुण्ठ पद अवश्य प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

अब दधिमन्थन स्थान का वर्णन करते हैं। यहाँ श्री यशोदाजी दधि मंथन करती थीं। यह दधिमंथन स्थान है। दो बर्त्तन थे एक तो दही का बर्त्तन दूसरा दधि से उत्पन्न चतुर्थांश घृत का बर्तन। एक बड़ा दूसरा छोटा है। नन्दगृह के सन्मुख भाग में दोनों रक्खे जाते थे। दोनों का प्रार्थनामन्त्र—हे दधिवर्त्तन! हे घृत वर्त्तन! आप दोनों अमृत रूप हैं। जो देवताओं की मोक्ष के लिये हैं। आप यशोदा द्वारा साधे गये हैं। आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० नमस्कार और १० आचमन करे। वहाँ तक्र पान करें तो मनुष्य चिरञ्जीवी होकर गौओं का स्वामी होता है। धन, धान्य, सुत व परिवारादि के लाभ पूर्वक सुखी होता है ॥ २४ ॥

अनन्तर यशोदा कर्तृक स्थापित नन्दीश्वर नामक शिवलिंग है। जो नन्दग्राम के मंगल के लिये है और परिवार के साथ समस्त आभीरगणों के सुख के लिये है। नन्दीश्वर प्रार्थनामन्त्र। स्कान्द में—हे नंदीश्वर! हे देव! हे आभीरगणों के सुख के लिये उत्पन्न! हे यशोदा को सुख देने वाले! हे देवाधिदेव महादेव! आपको नमस्कार। १४ बार मन्त्र पाठ पूर्वक १४ नमस्कार करे तो मनुष्य चिरायु लाभ करके धनधान्य व सुख को प्राप्त होता है ॥ २५ ॥

इस प्रकार प्रसन्न होकर श्रीरुद्र ने यशोदा के लिये वर दिया। अब रुद्र भी अपने कृतार्थ के लिये प्रार्थना करने लगे। मैं पर्वत रूप से विराजित हूँ। आप पति नन्दजी के साथ तथा पुत्र कृष्ण, बलदेवजी

नन्दधात नमस्तुभ्यं यशोदायै नमो नमः । नमः कृष्णाय बालाय बलभद्राय ते नमः ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु चतुर्धा प्रणमेन्नरः । सर्वदा सुखमाप्नोति चिरकालस्य सम्पदा ॥ २६ ॥
यशोदायाः महान्पुत्रो नन्दपत्न्याः समुद्भवः । ज्येष्ठो युगलमूर्तिस्तु यशोदानन्दनाभिधः ॥
कृष्णरामान्वितान्मातुः पृथकूमंस्थो बृहत्सुतः ।

ततो यशोदानन्दनयुगल प्रार्थनमन्त्रः । भविष्योत्तरे—

यशोदानन्दनायैव युगलाय स्वरूपिणे । नमस्तु नन्दसत्पुत्रभूमिदीप्तिकृताय च ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु पठञ्च प्रणतींश्चरेत् । चतुराचमनं दुग्धं यत्र कुर्यात् सुधी नरः ॥
सर्वदा तृप्तिमाप्नोति चिरंजीवी भवेत्किल ॥ २७ ॥
सीमायां ग्रामतो स्थित्वा नन्दादिभ्यो नमश्चरेत् ।

ततो षड्त्रिंशनन्दोपनन्दप्रतिनन्दाधिनन्दप्रार्थनमन्त्रः—

नमो नन्दोपनन्देभ्यो प्रतिनन्दाय ते नमः । नमोभिनन्दगोपेभ्यो सुपुत्रेभ्योऽर्थसिद्धये ॥
इति मन्त्रं तु षड्त्रिंशैः पठंस्तु प्रणतींश्चरेत् । नन्दस्य परिवारे च परिवारोऽस्य जायते ॥
इत्येते देवताः ख्याता नन्दग्रामव्रजौकसः । तीर्थाः पुण्यफलाः प्रोक्तास्त्रिवर्गफलदायिनः ॥
इति सदेवतीर्थं नन्दग्राम उत्पत्ति माहात्म्य निरूपणं ॥ २८ ॥

अथ वनयात्राप्रसंगे सदेवतीर्थनामाख्यवनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं । ब्राह्मे—

भाद्रशुक्ले तु पूर्णायां वनयात्रा समाप्यते । गद् नाम्नो वनस्यापि माहात्म्यं च प्रदर्शयेत् ॥
आसीद्वयोमासुरो नाम बलदेवरिपुर्बली । वासं यत्र चकारासौ महद्वने मनोहरं ॥

के साथ मेरे पृष्ठ के ऊपर विराजें । अनन्तर नन्दधातृमंदिर में नंद, यशोदा, कृष्ण, बलदेव के प्रार्थनामंत्र–ब्रह्मवैवर्त्त में—हे नंदधातृ ! तुमको नमस्कार । हे यशोदे ! आपको नमस्कार । हे बालक श्रीकृष्ण तथा बलदेव ! आप दोनों को नमस्कार । इस मन्त्रके ४ बार पाठ पूर्वक ४ नमस्कार करें तो सर्वदा सुखके लाभ पूर्वक चिरकाल तक धनी होकर रहता है ॥ २६ ॥

यशोदा के महान पुत्र हैं, जो नंदपिता से उत्पन्न हैं । यशोदानंदन नामक युगल मूर्ति है । ज्येष्ठ बलराम कनिष्ठ श्रीकृष्ण हैं । भविष्योत्तर में—हे यशोदा आनंदक ! हे युगल स्वरूप ! हे नंद सत्पुत्र ! आप भूमि को उज्वल करने के लिये हैं ; आपको नमस्कार । इस मंत्र के ४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें । वहाँ सुधी मनुष्य दुग्ध द्वारा ४ बार आचमन करे तो सर्वदा तृप्ति लाभ पूर्वक चिरञ्जीवी होता है ॥ २७ ॥

ग्राम की सीमा पर रह कर नन्दादिक को नमस्कार करे । नमस्कार की संख्या ३६ बार है । अनन्तर नन्द, उपनन्द, प्रतिनन्द, अधिनन्द, सुनन्द का प्रार्थनमन्त्र यथा—हे नन्द ! हे उपनन्द ! हे प्रतिनन्द ! हे अभिनन्द ! हे सुनन्द ! आप सबको नमस्कार । पुत्र, पौत्र,परिवार गणों के साथ आप सबको नमस्कार । इस मन्त्र के ३६ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करे तो अवश्य श्रीनन्द के परिवार में जन्म लेता है । इति यह सब तीर्थ, देवता, वर्णन किये गये हैं जो सब त्रिवर्ग फल को देने वाले हैं । इति देवता के साथ तीर्थ नन्दग्राम उत्पत्ति महात्म्य निरूपण किया गया है ॥ २८ ॥

अब वनयात्रा प्रसंग में सदेव तीर्थ वनों की उत्पत्ति व महिमा कहते हैं । ब्रह्मपुराण में—भाद्र

वज्रकीलं गिरिं यत्र स्थापयेद्रक्षाय च । हलायुधविघाताय मुसलखण्डनाय च ॥
लघुप्रकार विस्तारं ग्रन्थभूयस्त्व शंकया । वक्ष्येऽहं रम्यं ग्रन्थं व्रजभक्तिविलासकं ॥इति भट्टोक्ति॥२६॥
ततो व्योमासुरप्रार्थनमन्त्रः । लैंगे—
बलदेवारिहर्म्याय शक्रादीनां परिग्रह । देवरूपाय देवाय सुस्थलाय नमो नमः ॥
इति मंत्रं नगावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । पदं मोक्षमवाप्नोति सर्वबन्धात्प्रमुच्यते ॥३०॥
ततो वज्रकीलप्रार्थनमन्त्रः—
वज्रकीलायते तुभ्यं नमस्तु गिरये नमः । बलभद्रार्थिने तुभ्यं देवानां वरदायिने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिस्तु नमश्चरेत् । पदमैन्द्रमवाप्नोति पुनर्जन्म न विद्यते ॥ ३१ ॥
भविष्ये—
गोकुले सः समागत्य व्योमासुरो नभोगतिः । स्कन्धमारुह्य शेषाख्यं नभसि तु स्थले भ्रमन् ॥
तत्रैव बलदेवस्तु पातयन्तं भुवस्थले । खण्ड खण्डं हलेनापि चकार मुसलायुधो ॥
दशयोजनविस्तीर्णं शरीरं तस्य संस्थितं । यत्र ब्रह्मादयो देवा बलभद्राभिषेचनं ॥
चक्रुस्ततो बभूवात्र बलभद्रसरः शुभम् ।
ततो बलभद्रसरः स्नानप्रार्थनमन्त्र—
नमो भद्रस्वरूपाय सुभद्राय शुभप्रदः । अभद्रनाशिने तुभ्यं नमः संकर्षणाय ते ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिर्मज्जनैः नमन् । स्नानं कुर्य्याद्विधानेन चिरजीवी भवेन्नरः ॥ ३२ ॥

शुक्लपक्ष की पूर्णिमा में बनयात्रा समाप्त होने पर गढ़ नामक बन का महात्म्य भी दिखावें । व्योमासुर नामक बलदेवजी का शत्रु महान् बली दैत्य था । जिसने यहाँ आकर सुन्दर गुफा का निर्म्माण करके वास करने लगा । उसने रक्षा के लिये वज्रकीलगिरी को स्थापन किया था । हलधर के विनाश के लिये तथा मूसल खण्डन के लिये वह निरन्तर चेष्टा करता था इस कारण से यहाँ व्योमासुर का गृह है । मैं संक्षेप भाव से ग्रन्थ का वर्णन करता हूँ । विशेष वर्णन से ग्रन्थ विस्तार का भय होता है । यह मेरा सुन्दर व्रजभक्तिविलास नामक ग्रन्थ है (स्वयं भट्टजी के वचन) ॥ २६ ॥

व्योमासुर गृह प्रार्थनामन्त्र-लिंगपुराण में—हे बलदेव के शत्रु व्योमासुर के गृह ! हे देवदुर्ल्लभ ! हे देवरूप ! हे देव ! सुन्दर स्थल आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो उसको मोक्ष पद अवश्य मिलता है तथा पुनर्जन्म नहीं होता ॥ ३० ॥

अनन्तर वज्रकीलगिरि का प्रार्थनमन्त्र—हे वज्रकीलगिरि ! वज्रकीलक रूप आपको नमस्कार । आप बलदेवजी के लिये निर्म्मित किये गये हैं और देवताओं को वर देने वाले हैं । इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो उसको इन्द्र पद मिलता है और पुनर्जन्म नहीं होता है ॥ ३१ ॥

भविष्य में—व्योमासुर, आकाश गति से गोकुल में आकर शेष देव को कन्धे पर चढ़ाकर अपने स्थल में आकाश पर घूमने लगा । अनन्तर मूषलधारी बलदेव ने उसको पृथिवी के ऊपर गिराकर हल द्वारा उसका शरीर टूक २ कर दिया । दशयोजन विस्तार का उसका शरीर था । जहाँ ब्रह्मादि देवताओं ने आकर बलदेव जी का अभिषेक किया । इसलिये यहाँ बलभद्र सरोवर हुआ है । प्रार्थनामन्त्र—हे भद्रस्वरूप ! हे सुभद्र ! हे शुभ को देने वाले ! हे अशुभ नाशक ! हे संकर्षण ! आपका नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करे । विधि पूर्वक स्नानादि करने से चिरञ्जीवी होता है ॥ ३२ ॥

तत्तीरे पूर्णिमारात्रौ कृष्णो गोपिभिः संयुतः। रासक्रीडां करोत्यत्र बहुधा विमलो भवन् ॥
भ्रातुर्विजयसंस्थानव्योमासुरबधस्थले।

ततो रासमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—

बल्लभाय च गोपीनां नमस्ते रासमण्डल। भूमिभारावताराय प्रसीद परमेश्वर ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या पठंञ्च प्रणमेद्धरिम्। सर्वदा सुखमाप्नोति विचरन् पृथिवीतले ॥ ३३ ॥
बज्रकीलोपरि कृष्णो राधया सहितो गमन्। मीनलग्नोदये जाते दानलीलां च भोजनम् ॥
प्रसादं दत्तवान्नत्र सर्वेभ्योच्छिष्टमोदकान्। राधाबल्लभमूर्तिस्तु मन्दिरे प्रवभूवह ॥

ततो राधाबल्लभमन्दिरालोकप्रार्थनमंत्रः। वृहत्पाराशरे—

नमस्तु बल्लभायैव राधाप्रिय मनोहर !। गोलोकपदरूपाय नमस्तेच्युतशोभने ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्यैकादशप्रणतीन् चरेत् ॥ ३४ ॥
पर्वतोपरि संस्थित्य वाक्यैः कृष्णः समाह्वयन्। गोपालांञ्च सखीनत्र वाक्यनामा भवद्वनम् ॥

ततो वाक्यबनप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णवाक्यसमुद्भूत वधिरान्धविनाशन। सर्वदारोग्यलाभाय वाक्यनाम्ने नमस्तु ते ॥
इति मंत्रं समुचार्य दशधा प्रणमेद्वनम्। वधिरान्धो भवेत् यत्र मासत्रयतपश्चरेत् ॥
वधिरान्धद्वयद्रोगान्मुच्यते नात्र संशयः। इति वप्रवने देवास्तीर्थाः पुण्यफलप्रदाः ॥
पूर्णायां बनयात्रायां समापनं समाचरन।
इतिबनयात्राप्रसंगे वाक्यवप्रवनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणम् ॥३५॥

उस कीनार में पूर्णिमा की रात्रि में श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ बहु प्रकार की रासक्रीड़ा की है। अनन्तर रासमण्डल स्थल प्रार्थनामन्त्र—हे गोपीबल्लभ ! इस रासमण्डल में आपको नमस्कार। हे परमेश्वर ! प्रसन्न होइये। आप पृथिवी के भार नाश के लिये हैं। इस मन्त्र के १० वार पाठ पूर्वक हरि को प्रणाम करे तो सर्वदा सुख को पाकर पृथिवी में विचरण करता है ॥ ३३ ॥

बज्रकीलगिरि के ऊपर श्रीकृष्ण ने राधिकाजी के साथ जाकर मीन लग्न के उदय में दानलीला, भोजनादिक किया और समस्त गोपियों को उच्छिष्ट प्रसाद मोदकादिक प्रदान किये। मन्दिर में राधाबल्लभ मूर्त्ति विराजित हुई। राधाबल्लभ मन्दिर दर्शन प्रार्थनामन्त्र-वृहत्पराशर में—हे कृष्णबल्लभा। हे मनोहर राधाबल्लभ ! आपको नमस्कार। हे गोलोक पद स्वरूप ! हे अच्युत शोभना ! आपको नमस्कार। इस मंत्र के पाठ पूर्वक ११ प्रणाम करे ॥ ३४ ॥

पर्वत के ऊपर भाग में जाकर श्रीकृष्ण मनोहर वाक्य से गोपाल सखाओं को आह्वान करने के कारण यहाँ वाक्यबन है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे कृष्णवाक्य द्वारा उत्पन्न ! हे वधिरता, अन्धता नाश करने वाले ! सर्वदा आरोग्यता प्राप्ति के लिये आपको नमस्कार। इस मंत्र के पाठ पूर्वक दस बार प्रणाम करे। यदि वधिर अन्ध हो तो तीन मास तपस्या करने से अवश्य दोनों रोगों से मुक्ति लाभ करता है। यह वप्रवन में पुण्यफल प्रदान करने वाले देवता, तीर्थों का वर्णन हुआ है। पूर्णिमा में बनयात्रा का समापन करें। इति बनयात्रा प्रसंग में वाक्य तथा वप्र अधिबन की उत्पत्ति महिमा निरूपण हुआ है ॥३५॥

अथ ललिताग्राम उच्चग्राम तीर्थ देवोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणम् । विष्णुरहस्ये—

यत्र गोपसुताः सर्वा ललितादिप्रभृतयः । क्रीडाश्चक्रुः समासेन श्रीकृष्ण गुण मोदिताः ॥
यस्मात्सखी गिरिर्नाम बभूव व्रजमण्डले ॥ ३६ ॥

तत्पार्श्वे खिसलीख्याता कृष्णक्रीड़ा शिलास्थिता । भाद्रे मासे सितेपक्षे तृतीयायां शुभदिने ॥
वनयात्राप्रसंगस्तु क्रोशत्रयप्रविस्तृतः ।

ततो खिसलिनीशिलाप्रार्थनमन्त्रः—

सह गोपालकृष्णाय स्खलनक्रीडनाय च । यशोदानन्दनायैव सुस्थलाय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्स्खलनमाचरेत् । स्वर्गश्रेणीं समारुह्य वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥३७॥
यत्र कृष्णकृतोद्वाहे ललिता व्रज क्रीडकः । सप्तवर्षस्वरूपेण ललितां संवृणोद्धरिः ॥
यतो वैवाहिकं स्थानं शक्रादीनां वरप्रदम् ।

ततो वैवाहिकस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

व्रजोत्सवाय कृष्णाय व्रजराजाय शोभिने । ललितायै नमस्तुभ्यं व्रजकेल्यै नमो नमः ॥
सप्तधा पठते मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । दम्पत्योर्बहुधा प्रीतिः सर्वदा चिरवर्धिनी ॥
कुमारी वा कुमारोऽसौ कृष्णोद्वाहसुखं लभेत् । कृष्णतुल्यो भवेल्लोको नारी स्याल्ललितासमा ॥
वृद्धो मोक्षपदं लब्ध्वा देवदम्पतितां चरेत् ॥ ३८ ॥

ततस्त्रिवेणीतीर्थप्रार्थनमन्त्रः । कौर्म्ये—

कृष्णाज्ञासंप्रवर्त्तिन्यै त्रिवेण्यै सततं नमः । परं मोक्षपदं देहि धनधान्यप्रवृद्धिनी ॥

अब ललिताग्राम तथा ऊंचा गाँव के तीर्थ, देवताओं की उत्पत्ति व महिमा कहते हैं । विष्णु-रहस्य में—यहाँ श्रीकृष्ण के गुण समूह पर मुग्ध होकर ललितादि गोप कन्याओं ने सर्व प्रकार क्रीड़ा की है । इसलिये इसका नाम सखीगिरि करके व्रजमण्डल में प्रसिद्ध है ॥ ३६ ॥

उसके पास स्खलिनी नाम से प्रसिद्ध श्रीकृष्ण की क्रीड़ा शिला है । भाद्र मास के शुक्लपक्ष की तृतीया शुभ तिथिमें यहाँ बनयात्रा प्रसंग है । यह विस्तार में तीन कोस है । स्खलिनी शिला प्रार्थनामन्त्र—गोपालगणों के साथ श्रीकृष्ण की खिसनी क्रीड़ा के लिये सुन्दर शिलास्थान ! आपको नमस्कार । आप यशोदानन्दन रूप हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो स्वर्ग की सीढ़ी में चढ़ कर वैकुण्ठ को प्राप्त होता है ॥ ३७ ॥

यहाँ श्रीकृष्ण ने सात साल स्वरूप से ललिताजी को वरण किया यह वैवाहिक स्थान है, जो इन्द्रादि देवताओं को दुर्ल्लभ हैं । प्रार्थनामन्त्र—हे व्रज के उत्सव स्वरूप ! हे कृष्ण ! हे व्रजराज ! हे शोभनस्वरूप ! आपको नमस्कार । हे श्री ललिते ! व्रज क्रीड़ा परायण आपको नमस्कार । ७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो चिर काल पर्य्यन्त दम्पत्ति में बहुत प्रकार से प्रीति बनी रहती हैं । कुमारी और कुंवर होय तो श्रीकृष्ण के तुल्य विवाह उत्सव का लाभ प्राप्त करता है । नर श्रीकृष्ण के तुल्य और नारी ललिता के तुल्य हो जाती हैं । वृद्ध मोक्षपद को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥

अनन्तर त्रिवेणीतीर्थ प्रार्थनामन्त्र—कौर्म्म में—हे कृष्ण की आज्ञा से प्रवर्त्तिते त्रिवेणि ! आपको नमस्कार । श्रेष्ठ मोक्ष को दीजिये । धन, धान्य, सुख की वृद्धि कीजिये । श्रीकिशोरी रूपा श्रीललिता उच्च

उच्चग्रामनिवासिनीं भगवतीं वेणीं महास्वर्णदीं, स्नानार्थं ललिता गता शुभप्रदा नाम्नी किशोरीमता ।
स्नानार्थं समुपागता च रमणो श्रीरेवतीं वल्लभां, श्रीदेवो बलदेवः सन्निधिगतां स्नायात्प्रभोरग्रजः ।
इति मन्त्रं समुच्चार्य नमस्कारत्रयं चरेत् । त्र्यंगुलिभिः समादाय धूलिं धार्यं ललाटके ॥
परमेशपदं लब्ध्वा कृतार्थः स्वाङ्कुवस्थले । नित्यं धूलिं ललाटे च वेणीस्नानफलं लभेत् ॥३९॥

ततो रासमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—

सख्यान्विताय कृष्णाय रास क्रीडान्विताय च । वेणीरम्यकृतार्थाय सुस्थलाय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं दशावृत्त्या नमस्कारं पठंश्चरेत् ॥ ४० ॥
कूपं चक्रुश्च ताः सर्वाः सख्यस्तु ललितादयः । अपः पानाय कृष्णस्यागमनायेक्षणाय च ॥
सखी कूपं समाख्यातं त्रिवेण्यां मण्डले स्थले ।

ततो सखिकूपस्नानाचमनमन्त्रः—

कृतार्थोऽसि सखीकूप देवानां मुक्तिहेतवे । ललितायाः स्वपानाय सखीकूप नमोऽस्तु ते ॥ ४१ ॥
इति मन्त्रं षडावृत्त्या मज्जनाचमनं नमन् । मुक्तो कृतार्थतां याति भगवद्भक्त वत्सलः ॥
यत्रैव नारदो मुक्तो भट्टनारायणस्तथा ॥ इति भट्टोक्तिः ॥ ४२ ॥

ततो श्रीबलदेवप्रार्थनमन्त्रः । पाद्मे—

रेवतीरमणायैव नमस्ते मुसलायुध । लाङ्गिलेय समेताय हलायुध नमोऽस्तु ते ॥
इत्येकविंशवारैस्तु नमस्कारं समाचरेत् । कृतार्थो जायते लोको सर्वधान्यधनैर्युतः ॥ ४३ ॥

गाँव निवासिनी, महास्वर्गंगा भगवती, वेणी में स्नान के लिये गईं और भी श्रीकृष्ण के अग्रज, रेवती-वल्लभ, श्रीदेव देव बलदेव ने आकर स्नान किया था । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ३ बार नमस्कार करे और तीन अंगुल से धूलि उठाकर ललाट में धारण करें तो परमेश्वर पद के लाभ पूर्वक पृथिवी में कृतार्थ हो जाता है । ललाट में नित्य धूलि धारण करने से त्रिवेणी स्नान का फल प्राप्त होता है ॥ ३९ ॥

अनन्तर रासमण्डल प्रार्थनामन्त्र—हे सखीयों के द्वारा युक्त श्रीकृष्ण ! हे रासक्रीड़ा परायण ! हे सुन्दर रासस्थल ! आपको नमस्कार । आप वेणी के मनोहर करने के लिये हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे ॥ ४० ॥

अनन्तर ललितादि सखीगणों ने श्रीकृष्ण को आगमन की प्रतीक्षा में उत्कण्ठित होकर जल-पान के लिये कूआ बनाया, जिसका नाम सखी कूप है जो त्रिवेणी मण्डल में विराजित है । स्नानप्रार्थनामन्त्र—हे सखीकूप ! तुम कृतार्थ हो और देवताओं की मुक्ति के लिये हो । अपने जल पान के लिये ललिता कर्तृक निर्म्मित हो तुमको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करे तो मुक्त होकर कृतार्थ हो जाता है और भगवान् का प्रिय होता है ॥ ४१ ॥

यहाँ श्रीनारद जी और भट्ट नारायण जो मैं हूँ मुक्त हो गये हैं ॥ ४२ ॥

अनन्तर बलदेव प्रार्थनामन्त्र । पाद्म में—हे रेवतीरमण ! मूशल-आयुधधर ! आपको नमस्कार । हे हलायूध ! लाङ्गिलेय सहित आपको नमस्कार ! इस मन्त्र के २१ बार पाठ पूर्वक नमस्चार करे तो कृतार्थ होकर धन, धान्य से युक्त होता है ॥ ४३ ॥

ततो ललितास्थलप्रार्थनमन्त्रः—

ललिताक्रीडनस्थान नमस्ते मोहनप्रिय ! । सखिरम्याय मोक्षाय हरिसांनिध्यहेतवे ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य प्रणामं त्वष्टभिश्चरेत् । सुशीलपदमाप्नोति भगवत्पार्श्वस्थोभवत् ॥४४॥

ततो पुष्करिणीख्याता गोपिकानां सखिगिरौ । यत्रैव ललिताद्यास्ताः सख्यः स्नानं समाचेरुः ।

गोपीपुष्करिणीख्याता देवानां दुर्लभा शुभा ।

ततो गोपिकापुष्करिणीस्नानाचमनमन्त्रः—

पुष्करिण्यै नमस्तुभ्यं मुक्तिदायै नमो नमः । साफल्यपदप्राप्त्यै सर्वकल्मषनाशये ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य पञ्चभिर्मज्जनैर्नमन् । स्नानं पठन् समाचक्रे वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥४५॥

ततो उलूहतिमंत्रं उच्चरन्नभिषेचनपूर्वकं पठन् वैकुण्ठपदं लभेत्—

यत्र वदरिकां नीत्वा खंडिकुर्वंस्तु वर्चनं । उलूखलाः कृत सख्यः दशधा च स्थिताः शुभाः ॥

उलूखलीप्रार्थनमन्त्रः—

उलूखल्यो नमस्तुभ्यं सखीनां प्रियवल्लभाः । मोक्षदाः शुभदाः नित्यं सखीगिरिशिखास्थिताः ॥

इति मन्त्रं त्रिभि रुक्त्वा कृत्वा वर्चनमाचरेत् । नमस्कारत्रयंकृत्वा क्षुधातृप्तः सदास्थितः ॥४६॥

यत्रैव ललितानां च सखिनां पादलिंगगाः । सप्ताब्दपरिवेषाणां मृगतृष्णेव दृष्टिगाः ॥

क्रीड़ाभिर्निर्मिता रम्या सखिगिरिशिखोपरि ।

ततो सखिचरण प्रार्थनमन्त्रः । मात्स्ये—

सखीनां चरणेभ्यस्तु नमस्ते मोक्षदायिनः । निर्धौत कल्मषांघ्रयस्तु पावनेभ्यो नमो नमः ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य स्पृष्टा लोचनयोर्नमन् । विष्णोः शरणमाप्नोति पुण्यशीलसमो नरः ॥

अनन्तर ललितास्थल प्रार्थनामन्त्र—हे ललिता क्रीड़ास्थल ! हे मोहन प्रिय ! आपको नमस्कार । आप सखीगणों से वेष्ठित होने के कारण मनोहर हैं । आप हरि के सान्निध्य के लिये हैं । इस मन्त्र के उच्चारण पूर्वक ८ बार प्रणाम करे तो सुशील होकर भगवत्पार्षदत्व लाभ करता है ॥ ४४ ॥

अनन्तर गोपी पुष्करिणी है । जो परम मनोहर है और सखीगिरि में है । यहाँ ललितादि सखीगणों ने स्नान किया था जो देवताओं को भी अति दुर्ल्लभ है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे गोपी पुष्करिणी ! आपको नमस्कार । आप मुक्ति के देने वाली हैं । साफल्य पद प्राप्ति के लिये और समस्त कल्मष नाश के लिये आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार मज्जन करे स्नान करें और नमस्कार करे तो वैकुण्ठ पद को प्राप्त होता है ॥ ४५ ॥

यहाँ सखीयों ने वदरिका लेकर खण्ड-खण्ड पूर्वक उलूखल बना कर दस स्थलों पर रखा था वह वदरिका उलूखलि स्थान है । प्रार्थनामन्त्र—हे उलूखलियाँ (ऊखल) आप सबको नमस्कार । आप सब सखीयों की परम वल्लभा हैं । नित्य सखीगिरि पर विराजिता हैं । शुभ और मोक्ष को देने वाली हैं । इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक शिखर देश में अर्च्चना करें और तीन बार नमस्कार करें तो क्षुधा पिपासा नाश हो जाती है और सर्वदा तृप्त रहता है ॥ ४६ ॥

यहाँ ललितादि सखीयों के चरण चिन्ह समूह हैं । बहुत दिन पर्य्यन्त ढूँढ़ने से मृगतृष्णा की झाईं के न्याय दीख पड़ते हैं । वे सखीगिरि के शिखर देश में क्रीड़ा से निर्म्मित हैं । प्रार्थनामन्त्र—मात्स्य

ततो राधाकृष्णदर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

नमः प्रियायै राधायै ब्रह्मणो वरदायिने । सर्वेष्टफलरम्याय राधाकृष्णाय मूर्तये ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिः प्रणमेत्प्रियाम् । वाञ्छितं फलमाप्नोति विचरन् ब्रजमण्डले ॥
मुक्तिभागीभवेल्लोको नित्यदर्शनकारकः ॥ ५१ ॥

भाद्रशुक्लतृतीयायां बनयात्रा वरप्रदः । भाद्रकार्तिकयोर्मासे पक्षयोरुभयोरपि ।
न्यूनाधिक्ये दिने जाते न्यूनाधिक्यं न कारयेत् । बनयात्रा हरेर्लीला संख्या प्रोक्ता दिनान्तरे ॥
न्यूनाधिक्यदिनेष्वेषु न्यूनाधिक्यं न विद्यते । बनयात्राप्रसंगस्तु लीलाकृष्णकृताशुभा ॥
दिनमभ्यन्तरे कार्यं न्यूनाधिक्ये दिने यदि । यस्यां तिथौ यदाप्रोक्ता लीलावनप्रदक्षिणा ॥
या तिथिःक्षयमाप्नोति आगमिन्यां तिथौ चरेत् । वृद्धिं प्राप्ते तिथौ वापि तामेव तु परेत्यजेत् ॥
न्यूनाधिक्यं न विद्यते दिनसंख्या समाचरेत् । भाद्रशुक्लतृतीयायामुषित्वाथ निशीथके ॥
वृषभानुपुरे यात्रा साङ्ग एव समर्थिता ॥ इति भविष्ये ॥ ५२ ॥

ततो वृषभानुपुरदर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

महीभानुसुतायैव कीर्तिदायै नमो नमः । सर्वदा गोकुले वृद्धिं प्रयच्छ मम कांक्षितां ॥
इति मन्त्रं दशावृत्त्या नमस्कारं समाचरेत् । सर्वदा गोकले वृद्धिं धनधान्यसमाकुलः ॥५३॥

कृतयुग के अन्तभाग में ब्रह्माजी ने श्रीहरि की प्रार्थना की कि हे रासबिहारी ! आप मेरे ऊपर के भाग में ब्रज गोपीयों के साथ सदा रासविहार करें । विशेष करके वर्षा काल में विविध लीला विलास द्वारा कृतार्थ करें । श्रीभगवान ने कहा कि हे ब्रह्मा ! तुम वृषभानुपुर में जाकर पर्वत रूप हो जाओ तो तुम पर्वत होकर मेरी विविध लीलाओं का दर्शन करोगे । इसलिये ब्रह्माजी पर्वत होकर बरसाने में विराजित हैं ॥ ५० ॥

अनन्तर राधाकृष्ण दर्शन प्रार्थनामन्त्र—हे प्रिय ! हे श्री राधिके ! आपको नमस्कार है । आप ब्रह्माजी को बर देने वाले हैं । आप दोनों मनोहर हैं और श्री राधाकृष्ण स्वरूप हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार प्रियाजी को प्रणाम करे तो वाञ्छित फल के लाभ पूर्वक ब्रजमण्डल में विचरण करे और मुक्तिभागी होकर नित्य दर्शन का लाभ करता है ॥ ५१ ॥

भाद्र शुक्ल तृतीया के दिन बनयात्रा श्रेष्ठप्रद है । भाद्र और कार्त्तिक के दोनों पक्षों में यदि तिथी घट बढ़ जावे तो भी घट बढ़ न मान कर दिन की गणना से बनयात्रा करें और लीला का अनुकरणादिक करावें । जिस तिथि में जो लीला और जो प्रदक्षिणा कही गई है उस दिन उस लीला को अवश्य माने और उसी दिन में वही प्रदक्षिणा करें । यदि तिथी क्षय प्राप्त होकर आगे की तिथि में हो किम्वा तिथि की वृद्धि हो तो दोनों का वर्जन करे । केवल दिन गिन कर लीला प्रभृति का समाधान करें । कारण इसमें न्यूनाधिक्य नहीं हैं । भाद्र शुक्ल तृतीया में वास पूर्वक निशीथ में वृषभानुपुर की सांगयात्रा करें । यह भविष्य में उल्लेखित है ॥ ५२ ॥

वृषभानुपुरदर्शनप्रार्थनामन्त्र—हे महीभानु सुता श्री कीर्त्तिदे ! आपको नमस्कार । आप सर्वदा गोकुल में मेरी आकांक्षा पूर्ण कीजिए । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो सर्वदा गोकुल में धन, धान्य, सुख लाभ करता है ॥ ५३ ॥

ततो राधा प्रियं कृष्णं वाक्यमूचे कृतार्थकृत् । मम पितृपुरे त्वं हि मया सह प्रतिष्ठतु ॥
ब्रह्मा कृतार्थतां याति मम प्रीतिकरो भव । तत्रैव श्रीराधा प्रियं श्रीकृष्णं ब्रह्मा विज्ञाप्य—
तस्य वृषभानुपुरे ब्रह्मनाम पर्वतोऽस्ति । तस्योपरि विहारार्थं स्वकीयं मन्दिरं कृत्वा हेमाद्रौ ह्येकदा
समये कृष्णेन राधाया: दानो याच्यते । तस्माद्दान प्रवास: स्याद्रास क्रीड़ास्थलो भव: ॥ ५४ ॥

ततो राधादिनवसख्यवलोकनप्रार्थनमन्त्र: । ब्राह्मे—
प्रियायै च नमस्तुभ्यं ललितायै नमो नम: । चम्पकाद्यै सखिभ्यस्तु चन्द्रावल्यै नमो नम: ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारान् पृथक् चरेत् ॥ ५५ ॥

ततो दानमन्दिरप्रार्थनमन्त्र:—
दानवेषधरायैव दध्युपाम्यामिलाषिणे । राधानिर्भर्त्सितायैव कृष्णाय सततं नम: ॥
इति मन्त्रं समाहृत्य चतुर्धा प्रणमेत्स्थलं । दधिना पूजयेत् यत्र हिन्डोलसहितं स्थलं ॥
सर्वदा सुखमाप्नोति दम्पति मनसेप्सितम् ॥ ५६ ॥

ततो मयूरकुटीस्थलप्रार्थनमन्त्र:—
किरीटिने नमस्तुभ्यं मयूरप्रियवल्लभ ! । सुरम्यायै महाकुट्यै शिखण्डिपदवेश्मने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभि: प्रणमेत्स्थलं । यत्र स्थित्वा मयूरेभ्यो भोजनं विधिवच्चरेत् ॥
सुप्रियाभि: रमेन्नित्यं सर्वदानन्दवर्धनं ॥ ५७ ॥

(बनयात्रानिषेध: ब्रह्मयामले)—
बनयात्राप्रसंगेषु पार्श्व स्थानि बनानि च । वामदक्षिणग्रेमार्गे सन्मुखपृष्ठभागयो: ॥

अनन्तर श्री राधा प्रिय कृष्ण से कहने लगीं कि तुम मेरे पिताजी के नगर में मेरे साथ सर्वदा विराजिये । जिससे ब्रह्माजी भी कृत-कृत्य हो जायेंगे और मेरा स्थान प्रियकर होगा । वहाँ ब्रह्माजी पर्वतरूप होकर ब्रह्मगिरि नाम से विख्यात हुए । श्रीराधा प्रिय के साथ विविध विहार के लिये अपने महल निर्म्माण पूर्वक रहने लगे । सुवर्ण पर्वतमें एक समय श्रीकृष्ण ने प्रियाजी से दान माँगा । इसलिये दान प्रवास नामक रासक्रीड़ा स्थल हुआ है ॥ ५४ ॥

अनन्तर राधादिक नौ सखियों का अवलोकन प्रार्थनामन्त्र—ब्राह्म में—हे प्रियाजी ! आप को नमस्कार । हे ललिते ! आपको नमस्कार । हे चम्पकलता प्रभृति सखीयो ! हे चन्द्राबलि ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक पृथक् २ नमस्कार करें ॥ ५५ ॥

अनन्तर दानमन्दिर प्रार्थनामन्त्र:—हे दानी वेषधारी ! हे दधि, दुग्ध अभिलाष करने वाले ! श्री राधाकर्तृक भर्त्सित श्रीकृष्ण आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ४ बार स्थान को प्रणाम करें और दधि लेकर हिण्डोला के साथ स्थान की पूजा करें तो सर्वदा सुख मिलता है और दम्पत्ति अपनी मन: कामना को प्राप्त होते हैं ॥ ५६ ॥

अनन्तर मयूरकुटी स्थल प्रार्थनामन्त्र—हे किरीटधारी मयूरप्रिय श्रीकृष्ण ! आपको नमस्कार । हे मयूरकुटी नामक मनोहर महाकुटी ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करे । यहाँ निवास करके मयूरों के लिये विधि पूर्वक भोजन प्रदान करने से सुन्दरी स्त्री प्राप्त होती है और सर्वदा सुख मिलता है ॥ ५७ ॥

बनयात्रा का निषेध ब्रह्मयामल में—बनयात्रा प्रसंग में पार्श्वस्थ बाम, दक्षिण, आगे, पीछे, बन

संस्कारबनयात्रा स्यात् कृतयात्राफलं लभेत्। कृतयात्राफलं लब्ध्वा सांगा तत्र प्रदक्षिणा॥
गमागमनचिन्तायाः हेतुर्नैवोपजायते ॥ इति निषेधः ॥ ५८ ॥

ततो मयूरकुटीस्थले रासमण्डलप्रार्थनमन्त्रः। आदिबाराहे—

नमः सखीसमेताय राधाकृष्णायते नमः। विमलोत्सवदेवाय व्रजमंगलहेतवे॥

इति मन्त्रं नवावृत्या मण्डलाय नमश्चरेत्। वैकुण्ठपदमाप्नोति धनधान्यादिभिः सुखी ॥ ५६ ॥

ततो लीलानृत्यमण्डलसांकरीखोरि दर्शन प्रार्थनमन्त्रः—

दधिभाजनशीर्षाः स्ताः गोपिकाकृष्णरुन्धिताः। तासां गमागमौ स्थानौ ताभ्यां नित्यं नमश्चरेत्॥

इति मन्त्रं समुचार्य यथाशक्त्या नमश्चरेत्। नानाभोगविलासाद्य : गोरसैः सौख्यमाप्नुयात् ॥६०॥

ततो विलासमन्दिरप्रार्थनमन्त्रः—

विलासरूपिणे तुभ्यं नमः कृष्णाय ते नमः। सखीवर्गसुखाप्ताय क्रीडाविमलदर्शिने॥

इति त्रयोदशावृत्या पठन्मन्त्रं नमश्चरेत्। कलत्रादिधनैर्धान्यैश्चिरञ्जीवी सुखी सदा ॥ ६१ ॥

ततो गह्वरबनप्रार्थनमन्त्रः। वृहन्नारदीये—

गह्वराख्याय रम्याय कृष्णलीलाविधायिने। गोपीरमणसौख्याय वनाय च नमो नमः॥

इति षोडशवृत्तिभि र्मन्त्रमुक्त्वा नमश्चरेत्। भगवच्छखीतां लब्ध्वा मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥६२॥

ततो रासमंडलप्रार्थनामन्त्रः—

विलासरासक्रीडाय कृष्णाय रमणाय च। दशवर्षस्वरूपाय नमो भानुपुरे हरे॥

समूह का संस्कार यात्रा होती है। जिससे कियी हुई यात्रा फल देती है। यात्रा फल के साथ सांग प्रदक्षिणा भी हो जाती है। जाऊं किम्बा न जाऊं इसकी चिन्ता नहीं रहती है। इसका नाम संस्कार बनयात्रा ॥ ५८ ॥

अनन्तर मयूरकुटी स्थल में रासमण्डल प्रार्थनामन्त्र—आदिबाराह में—हे सखीगणों के साथ श्री राधाकृष्ण! आपको नमस्कार। विमल उत्सव देने वाले हे देव! आप व्रजमण्डल के हित के लिये हैं। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मण्डल को प्रणाम करे तो धन, धान्यादिक से सुखी होकर वैकुण्ठ पद को प्राप्त होता है ॥ ५६ ॥

अनन्तर लीला नृत्यमण्डल सांकरीखोरि दर्शन प्रार्थनामन्त्र—दही बर्तन मस्तक में बिराजित और श्रीकृष्ण कर्तृक रोक दी गयी गोपियों के यह आने जाने का रास्ता है। उसको नित्य नमस्कार करें। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक यथाशक्ति नमस्कार करे तो नाना भोग विलास और गोरस सुख का अनुभव होता है ॥ ६० ॥

अनन्तर विलास मन्दिर प्रार्थनामन्त्र—हे विलास रूप श्रीकृष्ण! आपको नमस्कार। आप सखी समूह के सुख के लिये और विमल क्रीड़ा देखने वाले हैं। इस मन्त्र का १३ बार पाठ करके नमस्कार करे तो धन, धान्य कलत्रादि लाभ पूर्वक चिरञ्जीवी होता है ॥ ६१ ॥

अनन्तर गह्वरबन प्रार्थनामन्त्र—वृहन्नारदीय में—हे गह्वरनामक रम्य श्रीकृष्ण लीला विधान के स्थान! आपको नमस्कार। आप गोपीरमण श्रीकृष्ण के सुख के लिये हैं। इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो भगवान के सख्य भाव के लाभ पूर्वक मुक्तिभागी होता है ॥ ६२ ॥

अनन्तर रासमण्डल प्रार्थनामन्त्र—हे विलासि! हे रासक्रीड़ा परायण! हे कृष्ण! हे रमण!

इति मन्त्रं दशावृत्या पठन्स्तु प्रणमेत्स्थलं। परिवारसुखेनापि सर्वदा सुखमाप्नुयात् ॥ ६३ ॥
यत्र राधा चतुः षष्ठि सखिभिः समुपागता। नित्य स्नानकृता साध्वी यतो राधा सरोऽभवत् ॥
ततो राधासरस्नानाचमनमन्त्रः—
देवकृतार्थरूपायै श्रीराधासरसे नमः। त्रैलोक्यपदमोक्षाय रम्यतीर्थाय ते नमः ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैः स्नपन्। गोपीनां पूजनं कुर्यात् वस्त्रालंकरणादिभिः ॥
कृतार्थी भवति लोके देवयोनिमवाप्नुयात् ॥ ६४ ॥
वृषभानुश्च यत्रैव सर्वगोपैः समन्वितः। गोदोहनं समाचक्रे वल्लभीपूर्णकामभिः ॥
यस्मात्संजायते तीर्थे दोहनीकुण्डसुस्थलं।
ततो दोहनीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
रक्तनीलसिताधूम्रापीतागोदोहनप्रद ! । वृषभानुकृतस्तीर्थ नमस्तुभ्यं प्रसीद मे ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु स्नानाचमनकैः स्नपेत्। सर्वदा बहुदुग्धैस्तु परिपूर्णमनोरथः ॥
यत्रैव दुग्धपूर्णां च दोहिनीं दानमाचरेत्। ततो स्वयंमुपोह्येति त्रैलोक्याधिपतिर्भवेत् ॥
मोक्षाख्यपदवीं लब्ध्वा चिरञ्जीवी भवेन्नरः ॥ ६५ ॥
यत्रैव चित्रलेखा च नित्यस्नानं समाचरेत्। मयूरेभ्योऽशनं दत्वा क्रीडानं चैव पश्यति ॥
मयूरसरसाख्यं च चित्रलेखाविनिर्मितं।
ततो मयूरसरस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
मयूरक्रीडिने तुभ्यं चित्रलेखे नमोस्तु ते। त्रैलोक्यपदमोक्षाय मयूरसरसे नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य पंचभिर्मज्जनाचमैः। नमस्कारं प्रकुर्वीत परं मोक्षपदं लभेत् ॥ ६६ ॥

आपको नमस्कार। आप दस वर्ष की अवस्था धारण करके वृषभानुपुर में विराजित हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्थान को प्रणाम करे तो परिवार के साथ विविध सुख को प्राप्त होता है ॥ ६३ ॥

यहाँ साध्वी श्री राधिका ६४ सखीयों को लेकर स्नान करती थीं वहाँ राधा सरोवर है। स्नान प्रार्थनामन्त्र यथा—हे राधिका सरोवर ! देवतागणों को कृतार्थ करने वाले ! आपको नमस्कार। आप तीन लोक में मोक्ष देने वाले हैं और मनोहर तीर्थ हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान करें और वस्त्र, अलंकार द्वारा गोपीयों की पूजा करें तो मनुष्य कृतार्थ होकर देवयोनि को प्राप्त होता है ॥ ६४ ॥

यहाँ वृषभानु जी समस्त गोपों के साथ मिलकर गोदोहन करते थे वहाँ दोहिनीकुण्ड है। गोपियों की कामना यहाँ पूर्ण हुई है। स्नानप्रार्थनामन्त्र यथा—हे रक्त, नील, शुभ्र, धूमाट और पीत रङ्ग की गौ के दोहन स्थल ! हे वृषभान द्वारा निर्मित तीर्थ ! तुमको नमस्कार। प्रसन्न होइये। इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन, नमस्कार करें तो सर्वदा प्रचुर दुग्ध मिलता है। वहाँ दोहनी में दुग्ध पूर्ण कर दान करने से तीन लोकों का अधिपति होता है और चिरञ्जीवी होकर मोक्ष पद को प्राप्त होता है ॥ ६५ ॥

यहाँ चित्रलेखा सखी नित्य आकर स्नान करती है और मयूरों को भोजन देकर क्रीड़ा देखती है वह चित्रलेखा निर्मित मयूर सरोवर है। स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र—हे प्रिय मयूर ! हे चित्रलेखा ! आपको नमस्कार। आप तीन लोक और मोक्ष को देने वाली हैं। हे मयूरसोर ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक पाँच मज्जन, आचमन द्वारा नमस्कार करे तो परम मोक्ष पद को प्राप्त होता है ॥ ६६ ॥

यत्रैव वृषभानुश्च नित्यस्नानं चकारह । यत्रैव कृतदोषाश्च कायमानसवाचकाः ॥
स्नपनात्तेऽपि नश्यन्ति दानं शतगुणं फलं ।
ततो भानुसरोवरस्नानाचमन प्रार्थनमन्त्रः । विष्णुधर्मोत्तरे—
निर्धूतकिल्विषायैव गोपराजकृताय ते । वृषभानुमहाराजकृताय सरसे नमः ॥
इति मन्त्रं शतावृत्या मज्जनाचमनैं र्नमन् । सर्वान्कामानवाप्नोति धनधान्यसुखैर्युतः ॥
कृष्णदर्शनमाप्नोति मुक्तिभागी भवेन्नरः । नित्यमेव कृताद्दोषान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ६७ ॥
कीर्तिश्च यत्र गोपीभिः सह स्नानं समाचरेत् । सौभाग्यसुतधान्यादिसुखमाप्नोति मानवः ॥
यतो कीर्त्तिसरःख्यातं सकलेष्टप्रदायकं ।
ततो कीर्तिसरः स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । बृहत्पाराशरे—
नमः कीर्तिमहाभागे सर्वेषां गोव्रजौकसां । सर्वसौभाग्यदे तीर्थे सुकीर्तिसरसे नमः ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य नवभिर्मज्जनाचमैः । स्नपनं कुरुते लोको लभते मोक्षसम्पदम् ॥ ६८ ॥
वृषभानुसरःपार्श्वे महारुद्रं व्रजेश्वरं । ततो भान्वादयो गोपाः स्थापयेदिष्टसिद्धये ॥
ततो व्रजेश्वराख्यमहारुद्रप्रार्थनमन्त्रः । गौरीतन्त्रे—
व्रजेश्वराय ते तुभ्यं महारुद्राय ते नमः । व्रजौकसां शिवार्थाय नमस्ते शिवरूपिणे ॥
शक्रावृत्या पठेन्मन्त्रं सर्वकल्याणमाप्नुयात् । व्रजे वसन्सदा नित्यं भुंक्ते सौभाग्य सम्पदम् ॥६९॥
ललितामोहनो यत्र शूरभक्ताय दर्शनं । ददौ नेत्रं प्रफुल्लास्यो दर्शनेक्षणकं वरं ॥
यत्रैवान्धो कृतस्नानं परं मोक्षपदं लभेत् ।

यहाँ वृषभानु जी नित्य स्नान करते हैं वह भानुसरोवर है । स्नान मात्र से ही कायिक, वाचिक, मानसिक पाप समूह नाश हो जाते हैं । यहाँ दान देने से शत गुण फल मिलता है । भानुखोर स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—विष्णुधर्म्मोत्तर में—हे कल्मष को धोने वाले ! हे गोपराज वृषभानु द्वारा निर्म्मित ! हे भानु-सरोवर आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करे तो समस्त कामनाओं को प्राप्त होकर धन, धान्य, सुख परायण होता है और श्रीकृष्ण के दर्शन प्राप्त करके मुक्ति भागी होता है । वह नित्य किये गये दोषों से मुक्त हो जाता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ ६७ ॥

कीर्तिदा देवी जहां गोपियों के साथ नित्य स्नान करती थीं वह कीर्त्तिदा सरोवर हैं । सौभाग्य, सुत, धन, धान्यादि सुख और समस्त मनोरथ को देने वाला है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—बृहत्पाराशर में—हे कीर्त्ति महाभागे ! वृषभानु गोप और समस्त व्रजवासियों को समस्त सौभाग्य देने वाली ! हे कीत्ति सरोवर आपको नमस्कार । इस मन्त्र का पाठ कर ९ बार मज्जन, आचमन द्वारा स्नान करे तो समस्त सुख सम्पत्ति लाभ करता है ॥ ६८ ॥

भानु सरोवर के पास महारुद्र व्रजेश्वर शिवलिंग है । जिनको वृषभानु प्रभृति गोप समूह ने इष्ट सिद्धि के लिये स्थापन किया है । प्रार्थनामन्त्र-गौरीतन्त्र में—हे व्रजेश्वर ! हे महारुद्र ! आपको नमस्कार । आप व्रजवासियों के मंगल के लिये हैं । शिव रूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ करने से समस्त कल्याण को प्राप्त होता है और व्रज में सर्वदा वास पूर्वक सौभाग्य सम्पत्ति लाभ करता है ॥ ६९ ॥

ललिता मोहन ने यहाँ भक्त सूरजी के लिये दर्शन देकर उन्हें नेत्र तथा सुन्दर मुख का प्रदान

तस्य बुद्धिर्भवेद् व्याप्ता सर्वशास्त्रेषु गोप्यतः। ललितामोहनो मूर्त्तियुगलो दर्शनं ददौ ॥

ततः शूरसरः स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

कृतार्थरूपिणे तुभ्यं शूरस्य सरसे नमः। धर्मार्थकाममोक्षाणां वैकुण्ठपददायिने ॥

इति मन्त्रं दशावृत्त्या मज्जनाचमनं नमन्। स्नपनं विधिवत् कुर्यात् परमोक्षपदं लभेत् ॥

इत्येतच्च समाख्यातं वृषभानुपुरोद्भवं। राधातीर्थस्वरूपाणां माहात्म्योत्पत्तिदर्शनं ॥

इति वृषभानुपुरोत्पत्तितीर्थस्नानस्वरूपोत्पत्तिमाहात्म्यं ॥ ७० ॥

अथ गोकुलदेवतीर्थस्नानोत्पत्तिमाहात्म्यं। वाराहे—

ततो भाद्रपदे मासि दशम्यां शुक्लपक्षगे। गोकुले वनयात्रा च गोलोकसमताफले ॥

वैकुण्ठं द्वितीयं रम्यं जन्मना विष्णुनिर्मितं। मथुरा नगरी रम्या केवलोत्पत्तिहेतवे ॥ ७१ ॥

ततो गोकुलप्रवेशप्रार्थनमन्त्रः—

गोलोकरूपिणे तुभ्यं गोकुलाय नमो नमः। अतिदीर्घाय रम्याय द्वाविंशद्योजनाय ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य द्वाविंशद्भिर्नमश्चरेत्। गोलोकपदप्राप्ताय मुक्तिभागो भवेन्नरः ॥ ७२ ॥

अभिमन्युसुतो यत्र स्वकीयं मन्दिरं करोत्। सुखवासमनोर्थाय वसुदेवागमाय च।

शतवर्षप्रवासस्तथो सर्वगोपैः समन्वितः।

ततो नन्दमन्दिरप्रार्थनमन्त्रः—

नन्दधाम्ने नमस्तुभ्यं त्रैलोक्यपददायिने। कृष्णवात्सल्यपुत्राय परमोत्सवहेतवे ॥

इति मन्त्रं समुचार्य नवभिः प्रणयेद्गृहम्। कृष्णतुल्यतनुर्यस्य सुखमाप्नोति सर्वदा ॥७३॥

किया है। यह सूरसरोवर है। यहाँ अन्ध स्नान करने से नेत्र दान प्राप्त होकर समस्त शास्त्र में तीव्र बुद्धि और पारंगत हो जाता है। ललिता मोहन मूर्ति ने यहाँ युगल रूप से दर्शन दिया था। अनन्तर सूरसरः स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे सूरसरः कृतार्थ रूप आपको नमस्कार। आप धर्म्म, अर्थ काम, मोक्ष, और वैकुण्ठ पद को देने वाले हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार, स्नान यथाविधि से करें तो परमोक्ष को प्राप्त होता है। इति। यह सब वृषभानुपुर की उत्पत्ति स्थान, तीर्थ, देवताओं की महिमा दिखाई है ॥ ७० ॥

अब गोकुल के देवता, तीर्थ, स्थानों की उत्पत्ति, महिमा वर्णन करते हैं। वाराह में—अनन्तर भाद्रपद मास की शुक्ला दशमी में गोकुल में आकर वनयात्रा करने से गोलोक के समान फल को लाभ करता है। यह दूसरा मनोहर वैकुण्ठ है। जन्मादि से लेकर लीला समूह करने के लिये यह विष्णु कर्तृक निर्म्मित है। मथुरा नगरी तो केवल उत्पत्ति के लिये मनोहरा है ॥ ७१ ॥

अनन्तर गोकुल में प्रथम प्रवेश प्रार्थनामन्त्र कहते हैं। हे गोलोक रूप श्रीगोकुल! आपको नमस्कार। आप अति दीर्घ स्वरूप हैं, रम्य हैं, २२ योजन आपका आयतन हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २२ नमस्कार करे तो गोलोक पद प्राप्त होकर के मुक्तिभागी होता है ॥ ७२ ॥

यहाँ अभिमन्यु पुत्र ने सुख पूर्वक वास के लिये और वसुदेव के आगमन के लिये अपना मन्दिर बनाया था और समस्त गोपगणों के साथ शतवर्ष वास किया है। अनन्तर नन्द मन्दिर प्रार्थनामन्त्र—हे नन्दधाम! आपको नमस्कार। आप त्रैलोक्य पद को देने वाले हैं। पुत्र कृष्ण के वात्सल्य सुख और परम

यशोदा शयनस्थानं रचयेद् यत्र वेश्मनि । पुत्रोत्सवसुखार्थाय शतगोपीसमाकुला ॥
ततो यशोदाशयनस्थलप्रार्थनमन्त्रः । मात्स्ये—
यशोदाशयनायैव समस्तसुखदायिने । पुत्रसौभाग्यलाभाय नमस्ते शुभदो भव ।
इति मन्त्रं दशावृत्या पठंस्तु शयनं नमेत् । चिरञ्जीवी भवेद्बालो मृतवत्सा नरप्रिया ॥
पुत्रसौख्ययुतो नन्दस्तादृशो सौख्यमाप्नुयात् । कन्याजन्मो भवेद्गर्भे तथापि पुत्रमाप्नुयात् ॥७४॥
उलूखलस्थलं यत्र यशोदा रचयेत्त्वकं । पंचाशत्मणसंख्याकमन्नोज्वलसुहेतवे ॥
ततो उलूखलप्रार्थनमन्त्रः—
तन्दुलानेकधान्याय सर्वदा पूरणाय ते । नमस्ते सौख्यदायैवोलूखलाय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं त्रयत्रिंशैः पठित्वा प्रणमेत्स्थलं । सर्वदानेकधान्यैस्तु परिपूर्णसुखं लभेत् ॥ ७५ ॥
यत्रैव नवनन्दानां चक्रसंस्था विदूरतः । धौरेययुगसंत्यक्ता सामग्रीभिः समाकुलाः ॥
तेषामभ्यन्तरे गोपा उपविश्युः समासतः । कुशभूमौ ततो दूरमुपनन्दनभूमयः ॥
ततस्तु प्रतिनन्दानामेवं षट् त्रिंशभूमयः । चक्रतीर्थास्त्वनेकाः स्युः गोकुले संस्थिताः पृथक् ॥
नन्दस्य चक्रतीर्थाधो यशोदा कृष्णबालकं । मासस्वरूपिणं तत्र स्थापयेत् क्षेत्रपूरणं ॥
कृपवृतीं करोन्माता तत्क्षणे शकटासुरः । चक्रतीर्थस्वरूपेण चक्रतीर्थे विवेशह ॥
ततस्तत्रागतं दैत्यं वधमिच्छन्समाश्रितं । नेत्रोन्मील्य हरिः साक्षात् दृष्ट्वा वामपदाहनत् ॥
चक्रतीर्थो विभज्येत खण्डंखण्डप्रमाणतः । चूर्णीभूतं तु तं दृष्ट्वा सर्वे गोपाः समागताः ॥

उत्सव के लिये हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक गृह के लिये ६ बार प्रणाम करें तो कृष्ण के बराबर पुत्र सुख प्राप्त होता है ॥ ७३ ॥

अनन्तर यशोदाशयनस्थल है । यहाँ शत-शत गोपीगणों से युक्त होकर यशोदा शयन स्थल रचना करती थी । जो पुत्र का उत्सव सुख के लिये हैं । प्रार्थनामन्त्र यथा--मत्स्य में—हे समस्त सुखदाता यशोदाशयनस्थल ! पुत्र सौभाग्य लाभ के लिये आपको नमस्कार । आप शुभ को दीजिये । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक शयन स्थल को नमस्कार करे । मृतवत्स (मरा हुआ) बालक भी चिरञ्जीवी होकर सर्व प्रिय होता है । श्री नन्दराज ने जिस प्रकार श्रीकृष्ण के सदृश पुत्र सुख पाया है । गर्भ में तो कन्या थी तो भी पुत्र मिला ॥ ७४ ॥

अनन्तर ऊखल स्थल है । जो यशोदा जी ५० मन अन्न धरने के लिये बनाई है । प्रार्थनामन्त्र—हे सुख देने वाले ऊखल ! आप चाँमल और अनेक धान्य से परिपूर्ण हैं । इस मन्त्र के ३३ बार पार पूर्वक स्थल को नमस्कार करे तो सर्वदा अनेक धान्य से सुखी रहता है ॥ ७५ ॥

वहाँ आगे नौ नन्दों के चक्का गाड़ी (बैलगाड़ी, वा शगड) पृथक्-पृथक् रखे हुए हैं । उसमें विविध सामग्री रहती है । गोपगण उसके अन्दर बैठा उठा करते थे । चक्का स्थल अनेक हैं । ३६ चक्का गाड़ी वहाँ पृथक्-पृथक् कुछ कुछ दूर में रखे जाते थे । नन्दजी का चक्का तीर्थ है वहाँ एक गाड़ी के नीचे यशोदा जी एक मास अवस्था प्राप्त श्रीकृष्ण को शयन कराकर गृह कर्म्म में नियुक्ता थीं । अनन्तर शकटासुर नामक दैत्य ने कृष्ण को मारने के लिये चक्राकार होकर चक्रतीर्थ में प्रवेश किया था । तदनन्तर श्रीकृष्ण ने नेत्र खोलकर देखा और वाम चरण का प्रहार किया । उससे चक्का गाड़ी खण्ड-खण्ड होकर चूरण हो गयी और दैत्य मर गया । अनन्तर गोपगण भाग कर आये । क्रीड़ा परायण श्रीकृष्ण को देख नन्दजी के

क्रीडमानं सुतं दृष्ट्वा प्राप्तुः नन्दमायता । पर्यस्तसकटस्थानं पुत्रायुश्चिरवर्द्धनं ॥

ततो पर्यस्तशकटस्थलप्रार्थनमन्त्रः । स्कान्दे —

मृतमासामृतोद्भून चिरपुत्रायुर्दायिने । शकटासुरमोक्षाय सुस्थलाय नमोस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिः प्रणमेत्स्थलं । मासेनमृतवत्सापि नारी वा पुरुषोऽपिवा ॥

चिरञ्जीवीनमाख्यातं लभते तादृशं सुतं ॥ ७६ ॥

गन्धर्वौ नारदशापात् यमलार्जुनसंज्ञकौ । पृथिवीतलमायातौ वृक्षयोनिमुपाश्रितौ ॥

नन्दगोपोद्भवो कृष्णो युवामुद्धारयिष्यति । इति शापावरं दत्वा मत्ताभ्यां प्रययौ मुनिः ॥

यशोदा दधिचौरेण कृष्णं बध्वा उलूखले । ताडयन् धावतीं दृष्ट्वा मातरं गोकुलेश्वरः ॥

उलूखलेन सार्धं तावुत्पाटयति भूमि .: । गन्धर्वयोनितां यातौ वृक्षयोनिपरित्यजौ ॥

कृष्णं प्रजग्मतुः स्तुत्वा स्वधाम परमं स्वकं । यत्रैव शापतो रोगी रोगमुक्तस्तु जायते ॥

विचित्रो यदि वा कुष्ठी बहुरोगसमाकुलः । दामोदरप्रसादात्तु भुक्तिभागी भवेन्नरः ॥७७॥

ततोलूखलयोः स्थाने द्वौ कुण्डौ यमलार्जुनौ । महातीर्थौ समाख्यातौ दामोदरकृतौ शुभौ ॥

तयोः स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । आदिपुराणे—

यमलार्जुन देवाभ्यां नमो दामोदराय च । उलूखलकृतोद्धार वरदो भव सर्वदा ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । कृतार्थयोनिमाप्नोति विष्णुसांनिध्यगः सदा ॥७८॥

यमलार्जुनदेवाभ्यामुद्धराख्यो ऽच्युतो हरिः । दामोदरमहामूर्तिं स्थापितो नन्दनन्दनः ॥

भाग्य की प्रशंसा करने लगे । पुत्र की आयु बढ़ाने वाला इस शकट स्थान को परिक्रमा करे । शकटस्थल प्रार्थनामन्त्र यथा—स्कान्द में—हे मरते हुए पुत्र को अमर करने वाले ! हे शकटासुर मोक्षस्थल ! हे सुन्दर तीर्थ ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार प्रणाम करे तो मरता हुआ पुत्र भी जीवित होकर चिरायु लाभ करता है । नर और नारी भी चिरायु होकर तादृश चिरायु पुत्र का लाभ करता है ॥७६॥

अब यमलार्जुन मज्जन स्थल है । यमल, अर्जुन नामक दोनों गन्धर्वों ने नारदजी के शाप से पृथ्वी में आकर वृक्ष योनि में जन्म लिया, किन्तु नारद जी का यह वचन था कि नन्द गोप से उद्भव श्री कृष्ण द्वारा तुम दोनों की मोक्ष होगी । एक समय दधि चोरी के कारण यशोदा जी ने श्रीकृष्ण को ऊखल में बाँध कर ताड़न करती हुई और कार्य्य के लिये गईं तो श्रीकृष्ण ने भय से सरते हुए, दोनों वृक्ष के पास पहुँच कर ऊखल के साथ उनको उखाड़ दिया । उस समय वह दोनों वृक्ष वृक्षयोनि को छोड़ कर दिव्य गन्धर्व रूप को धारण कर श्रीकृष्ण की स्तुति बन्दना पूर्वक मोक्ष धाम के लिये गये । यहाँ रोगी शाप द्वारा प्राप्त रोग से मुक्त हो जाता है । जिसको अनेक रोग हैं और जो कोढ़ी है वहाँ दामोदरजी के प्रसाद से मुक्त होकर मुक्ती भाग होता है ॥ ७७ ॥

वहाँ यमलार्जुन नामक दो कुण्ड श्रीकृष्ण कर्तृक निर्म्मित हुए हैं । वहाँ दोनों पेड़ उखेड़े गये थे । दोनों का स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—आदिपुराण में—हे यमलार्जुन देवता ! आप दोनों को नमस्कार । हे दामोदर ! हे ऊखल उद्धारकारी ! आपको नमस्कार । आप सर्वदा वर दीजिये । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करे तो कृतार्थ योनि प्राप्त करके विष्णु का सान्निध्य लाभ करता है ॥ ७८ ॥

श्रीनन्दनन्दन ने यमलार्जुन उद्धार के नाम से प्रसिद्ध होकर दामोदर महामूर्त्ति की स्थापना की ।

ततो दामोदरप्रार्थनमन्त्रः—

दामवद्धाय कृष्णाय मातृस्नेहसुताय ते । नमो दामोदरायैव बालकृष्ण नमोऽस्तु ते ॥
षड्वर्षरूपिणे तुभ्यं दामोदरस्वरूपिणे । इति षड् पदमन्त्रं च पठित्वा पंचभिर्नमेत् ॥
मुक्तिभागी भवेल्लोको जननीजनवल्लभः ॥ ७६ ॥
वृक्षोत्पाटनदोषस्य शान्तये नन्दनिर्मितं । नगसंख्यासमुद्रांश्च समानीतं च कूपकं ॥
सप्तसामुद्रिकं नाम वृक्षहत्यानिवारणं । हरिताद्रं छिन्नोद्भवृक्षं वटाश्वत्थकदम्बकं ॥
सप्तकूपकृतास्नानान्मुक्तो भवति पातकात् ।

ततो सप्तसामुद्रिककूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । शौनकीये—

दधि-दुग्ध-घृत-क्षीर-मधु-तक्ररसादिभिः । सप्तसामुद्रकूपाय रचिताय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिर्मज्जनादिभिः । स्नानाचमनपूर्वस्तु नमस्कारं समाचरेत् ॥
सप्त दुग्ध रसादीनां दानं दद्यात् विधानतः । गोदानं विधिवत् कुर्यात् देवयोनिमवाप्नुयात् ॥
सप्तगोत्रद्विजेभ्यस्तु सप्त दानं समाचरेत् । सप्तर्षिगोत्रजाः विप्रास्तेभ्यो दानं समाचरेत् ॥
सप्तप्रकारहत्याभि विमुक्तो यत्र मानव. ॥ ८० ॥
कामसेनीसुताद्यास्ताः गोप्यो बालोत्सवाय च । गोपीश्वरमहादेवं स्थापयेयुर्मनोरथैः ॥
पूर्णायुषो भवेत्बालाः धनधान्यादिसम्पदः । दिने दिने विवर्धते गोपीश्वरप्रदर्शनात् ॥

ततो गोपीश्वरप्रार्थनमन्त्रः । लैंगे—

गोपीश्वराय रुद्राय महादेवाय ते नमः । गोपीनां शिवदायैव भवाय शततं नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्यैकादशैः प्रणमेच्छिवं ॥ ८१ ॥

प्रार्थनामन्त्र यथा—हे दाम से बद्ध श्रीकृष्ण ! हे मातृ वात्सल्य ! हे दामोदर आपको नमस्कार । हे बाल-कृष्ण आपको नमस्कार । आप दामोदर हैं, छै साल की अवस्था के बालक हैं । इस षट् पद मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार नमस्कार करने से जननी जन प्रिय होकर मुक्तिभागी होता है ॥ ७६ ॥

वृक्ष उत्पाटन दोष की शान्ति के लिये नन्दनिर्म्मित सप्त सामुद्रिक कूप हैं । जहाँ सात संख्यक समुद्र तीर्थ लाये गये थे । हरे बट, पीपल, कदम्ब काटने से जो महादोष होता है वह सप्त सामुद्रिक कूप में स्नान करने से नष्ट हो जाता है । अनन्तर सप्त सामुद्रिक कूप का स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र कहते हैं । शौनकीय में—हे दधि, दुग्ध, घृत, क्षीर, मधु, तक्र, रसादि सप्त समुद्र द्वारा निर्मित सप्त सामुद्रिक कूप ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन, स्नान, आचमन पूर्वक नमस्कार करे । दुग्धादि सात वस्तुओं का यथा विधि दान करें । विधि पूर्वक गोदान करने से देवयोनि की प्राप्ति होती है । सातों गोत के सातों ब्राह्मणों को सात प्रकार दान करें । सप्तर्षि गोत्रोत्पन्न ब्राह्मणों को दान करने से सात प्रकार की हत्या से विमुक्त हो जाता है ॥ ८० ॥

कामसेनि के पुत्रादिक ने सकल गोप बालकों के आनन्द उत्सव के लिये गोपीश्वर महादेवकी स्थापना की है । नित्य गोपीश्वर की पूजा करने से बालक पूर्णायु होकर धन धान्यादि सम्पत्ति परायण हो जाता है । गोपीश्वर प्रार्थनामन्त्र—लैंग में—हे गोपीश्वर रुद्र ! महादेव आपको नमस्कार । आप गोपीयों के कल्याण के लिये हैं । आप भव हैं । इस मन्त्र के पाठ करके एकादश बार शिवजी को प्रणाम करे ॥८१॥

गोकुलचन्द्रमामूर्तेर्मन्दिरं यत्र राजते । बालस्य गोकुलेशस्य दर्शनं कुरुते नरः ॥
मुक्तिभागी भवेल्लोको धनधान्यसमाकुलः ।

ततो गोकुलेश्वरप्रार्थनमन्त्रः—

गोकुलेश नमस्तुभ्यं बालकृष्ण वरप्रद । व्रजमण्डललोकस्य रक्षणायागतो शिशून् ॥
पंचभिः पठते मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् ॥ ८२ ॥

सूरसेनीसुनो यत्र रोहण्युद्वाह्माचरेत् । मन्दिरं रमणायार्थे रचयेद्रोहिण्णी गृहम् ॥
दशवर्षेण वास्तव्यो बलदेवसमुद्भवः ।

ततो रोहिणीमन्दिरप्रार्थनमन्त्रः—

धर्मपत्नीगृहायैव वसुदेवसुखोद्भवः । रोहिण्यन्तपुरायैव नमस्ते गोकुलोत्सव ! ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य शक्रावृत्या नमश्चरेत् । बलदेवसमं पुत्रं चिरजीविनमाप्नुयात् ॥८३॥
तदभ्यन्तरगेहे च बलदेवोद्भवस्थलम् ।

ततो बलदेवजन्मस्थलप्रार्थनमन्त्रः । पाद्मे—

हलिने बलदेवाय नमस्ते शेषमूर्तये । जन्मस्थलाय गोप्याय कंसाभीतिवरप्रदः ॥
इति मन्त्रं पठेद्धीमान् सप्तभिः प्रणमेत्स्थलं । तस्यैव सर्वदा सौख्यं धनधान्यं प्रजायते ॥८४॥
यत्र नन्दोऽकरोद्गोष्ठीं सर्वगोपैः समन्वितः । नन्दादिभिश्च षड्त्रिंशैर्गोष्ठीरम्या ऽभवच्छुभा ॥

ततो नन्दगोष्ठीप्रार्थनमन्त्रः—

नन्दादिभ्यो नमस्तुभ्यं गोष्ठीस्थानाय धीमते । नित्यसौबुद्धिदायैव विष्णोः सान्निध्यहेतवे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य षट्त्रिंशाद्भिः समासतः । कुबुध्या संयुतो लोको सुबुद्धिश्च प्रजायते ॥

जहाँ गोकुल चन्द्रमाजी का मन्दिर है। मनुष्यगण गोकुलनाथ के बाल स्वरूप का दर्शन करते हैं और धन धान्य से युक्त होकर मुक्तिभागी होते हैं। गोकुलेश्वर प्रार्थनामन्त्र—हे गोकुलेश्वर ! हे बालकृष्ण ! हे वरप्रद ! आपको नमस्कार। आप व्रजमण्डल के लोकों की रचा के लिये शिशु रूप से प्रगटित हैं ! पाँच बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें ॥ ८२ ॥

जहाँ सूरसेनि पुत्र ने रोहिणी जी को विवाह कर रमण के लिये रोहिणी गृह का निर्म्माण किया है। अनन्तर रोहिणी मन्दिर प्रार्थनामन्त्र—हे धर्म्म पत्नी रोहिणी जी के गृह ! हे बसुदेव सुत कर्तृक निर्म्मित ! हे रोहिणी के अन्तःपुर ! गोकुल उत्सव रूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १४ बार नमस्कार करें तो बलदेव के तुल्य चिरायु पुत्र प्राप्त होता है ॥ ८३ ॥

उसके मध्यस्थल के भीतर श्री बलदेव जी का जन्म स्थान है। प्रार्थनमन्त्र यथा—पाद्म में—हे हलधारि ! हे बलदेव ! शेष मूर्त्ति आपको नमस्कार। हे गोप्य जन्मस्थान ! हे कंस को भय देने वाले ! आप को नमस्कार। इस मंत्र के पाठ पूर्वक बुद्धिमान् ७ बार स्थान को प्रणाम करे तो उसको निरन्तर धन, सुखादिक उत्पन्न होते हैं ॥ ८४ ॥

अब नन्द गोष्ठीस्थल कहते हैं। जहाँ नन्दराय जी समस्त गोपगण से युक्त होकर गोष्ठी करते थे। नन्दादिक ३६ मुख्य मुख्य व्यक्ति थे। वह मनोहर गोष्ठीस्थल है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे नन्दादिक ! आप सबको नमस्कार। हे गोष्ठीस्थान ! हे बुद्धि विकाश स्थल ! हे नित्य बुद्धि देने वाले ! आपको नमस्कार। आप विष्णु के सान्निध्य के लिये हैं। इस मंत्र के ३६ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करे तो मंद बुद्धि वाले सुंदर

विक्षिप्तो यदि वा लोकः सुशीलः स्यान्नसंशयः। कुनीतिकारको लोको राजा वा धर्मसंयुतः॥
सुनीतिकारको राजा सुधर्मो भवते नरः॥ ८५॥
शतगोपीसमाकीर्णे सर्व्वाश्चैव तु गोपिकाः। विमोहयन् विवेशाथ पूतना नन्दसद्मनि॥
देवांगनापवेषाख्या राक्षसीरूपवर्जिता। अंके कृष्णार्भकं नीत्वा दिनसप्तस्वरूपिणं॥
विषाढ्यं पयसापूर्णं स्नेहस्तन्यमपाययत्। दुग्धसार्धं पिबेत्प्राणमस्याः घोरेण पाणिना॥
संगृह्य निविडं यत्र संत्यजेत्यतरेत्वदन्। नन्दवेश्म परित्यक्त्वा राक्षसीं तनुमास्थिता॥
सा जगाम नभो मार्गं दुर्वासर्षेस्तु शिष्याणी। पातयद्धरणीलोके पूतनापयसाहनत्॥
धात्रीव गतिमालेभे देवयोनीमनोहराम्। यस्मादेतत् समुद्भूतं पूतनास्तन्यपानकं॥
ततो पूतनास्तन्यपानस्थलप्रार्थनमन्त्रः—
सप्तवासरवेषाय कृष्णाय सततं नमः। पूतनामोक्षदायैव पयः पानाय ते नमः॥
इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा नमस्कारं समाचरेत्। मुक्तिभागी भवेल्लोको गनागमविवर्जितः॥
इति गोकुलमाहात्म्यमुत्पत्तिः समुदाहृता। बनयात्राप्रसंगे तु सर्वाभीष्टवरप्रदा॥
इति गोकुलोत्पत्तिसदेवतीर्थस्नानमाहात्म्यनिरूपणं॥ ८६॥
अथ महाबनपार्श्वे सदेवतीर्थस्नानबलदेवस्थलोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणम्। पाद्मे—
यत्र नन्दादयो गोपाः यदोर्नैमन्त्रणञ्चरेत्। दशायुतगवां दुग्धं समानीयात्रप्रक्षिपुः॥
दुग्धपूर्णं पयोकुण्डं प्रचक्षुदुग्धकुण्डकं। नानामिष्टान्नद्रव्यैस्तु सिताद्यैः द्राक्षक्षुच्चयैः॥
तण्डुलैः पायसं चक्रुर्बलदेवस्य प्रीतये। श्रावणे च सहो मासे पायसं च निवेदनम्॥
तेषां गृहे वसेत् लक्ष्मीदुग्धपूर्णवसुन्धरा। हलिनो वरदानेन जलं दुग्धं प्रजायते॥

बुद्धिशाली हो जाता है। यदि मनुष्य विक्षिप्त हो जावे तो निश्चय सुन्दर बुद्धि वाला हो जाता है। अधर्मी राजा धर्म्म परायण हो जाता है॥ ८५॥

जब शत-शत गोपी कर्तृक यशोदा जी वेष्टित थीं, उस समय राक्षसी पूतना सुन्दर देवांगना का रूप को धारण कर सबको मोहित करती हुई नन्दालय में प्रवेश करने लगी। उसने सात दिन के बालक श्री कृष्ण को गोद में लेकर विष युक्त दुग्ध का पान कराया। किन्तु श्रीकृष्ण हस्त कमल द्वारा निविड दाब कर दुग्ध के साथ उसका प्राण खींचने लगे। तब वह छोड़ छोड़ कहकर अपना राक्षसी रूप को धारण कर नन्दगृह परित्याग करके आकाश मार्ग में गई और शरीर से प्राण छोड़कर पृथ्वी में गिरी। श्रीकृष्ण कर्तृक दुग्ध पीने के कारण मातृ गति प्राप्त की। इस कारण यहाँ पूतना स्तनपानतीर्थ उत्पन्न हुआ है। प्रार्थना मन्त्र यथा—सात दिवस अवस्था वाले! हे श्रीकृष्ण! आपको निरन्तर नमस्कार। हे पूतनामोक्षदायक! दुग्ध पान करने वाले आपको नमस्कार। इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो मुक्तिभागी होकर गमनागमन से रहित होता है। यह गोकुल की महिमा, उत्पत्ति का वर्णन किया गया है, जो कि बन-यात्रा प्रसंग में समस्त अभीष्ट वर देने वाला है॥ ८६॥

अनन्तर महाबन के पास देवता, तीर्थों के साथ बलदेव स्थल उत्पत्ति महिमा निरूपण करते हैं। पाद्म में—यहाँ नन्दादिक गोपों ने यादवों को निमन्त्रण दिया था और एक लाख गौओं का दुग्ध लाकर यहाँ रखवाया गया था। वहाँ एक कुण्ड बन गया है उसका नाम दुग्धकुण्ड है। नानाविध मिष्टान्न और घृत, सक्कर, मधु द्वारा मिला हुआ सुन्दर पायसान्न, बलदेवजी की प्रीति के लिए बनाया गया था। श्रावण

यतः संजायते नाम्ना दुग्धकुण्डं मनोहरं । बनयात्राप्रसंगस्तु नवम्यां भाद्रशुक्लगे ॥
यत्र स्नानाचमेनैव प्रार्थनेन तथैवच—
देवयोनिमवाप्नोति सुरास्तेऽमृतपायिनः । धनधान्यसुखादींश्च लभते नात्र संशयः ॥

ततो दुग्धकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

सुधामयपयस्तुभ्यं हलायुधवरोद्भव ! । चिरायुर्वरदायैव दुग्धकुण्ड नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य दशधा मज्जनैः स्नपन् । विधिवदाचमं कुर्यात् नमस्कारैश्च प्रार्थयेत् ॥
चिरजीवी भवेल्लोकोऽमृतपा देवता यथा ॥ ८७ ॥

आदिपुराणे—

यत्रव बलदेवस्तु यदुपुत्रैः समन्वितः । भोजनं क्रियते स्वेच्छं कृतदुग्धाढ्यपायसम् ॥
नन्दादिसकलैर्गोपैर्बहुदुग्धविभूतये । यत्रैव बनयात्री च नैवेद्यं पायसं चरेत् ॥
सर्वदा दुग्धपूर्णस्तु तस्य गेहो प्रजायते । धनधान्यसुखैः पूर्णः सर्वदा रमते जनः ॥

ततो बलदेवभोजनस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

सकलेष्टप्रदायैव हलिनो भोजनस्थल । देवर्षिमनुजानाञ्च हितार्थसिद्धये नमः ॥
इति चतुर्दशावृत्या पठन् मन्त्रं नमश्चरेत् । शक्रसंख्याघृतं ग्रासं बलदेवस्य तुष्टये ॥ ८८ ॥

ततो बलदेवयुगलप्रार्थनमन्त्रः—

रेवतीरमणायैव गोपानां वरदायिने । अन्योन्यसन्मुखालोकप्रीतये च नमस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य वामभागमुपास्थितो । नमस्कारं दशावृत्या युगलाभ्यां समाचरेत् ॥
दशवर्षस्वरूपेण बलदेवः प्रसीदतु ॥ ८९ ॥

और भादों मास में पायस निवेदन करने पर लक्ष्मी उनके गृह को नहीं छोड़ती हैं और पृथ्वी दुग्धपूर्ण होती है। बलदेवजी के वर से जल दुग्ध हो गया था इसलिये मनोहर दुग्ध कुण्ड हुआ। भाद्र मास शुक्ला नवमी में यहाँ बनयात्रा प्रसंग है। यहाँ स्नान, आचमन, प्रार्थना से देवयोनि मिलती है और अमृत भोजन के लिये मिलता है और धन, धान्य, सुखादिक मिलता है इसमें कोई सन्देह नहीं है। दुग्धकुण्ड स्नानाचमन मन्त्र—हे सुधामय दुग्ध वाले ! हे हलधर जी के वर से उत्पन्न, चिरायु वर के लिये आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार मज्जन, स्नान और विधि पूर्वक आचमन, नमस्कार, प्रार्थना करे तो चिरायु होकर देवयोनि को प्राप्त होता है ॥ ८७ ॥

आदिपुराणमें— यहाँ बलदेवजी ने यदु पुत्रों के साथ इच्छा पूर्वक दुग्ध युक्त पायस का भोजन किया था। नन्दादिक समस्त गोपों ने भी बहुत से दुग्ध वैभव के लिये भोजन किया था। यहाँ बनयात्री पायस का नैवेद्य देवें तो सर्वदा धन, धान्य और गोरस वैभव से परिपूर्ण होकर रमण करें। बलदेव भोजन-स्थल प्रार्थनामन्त्र—हे समस्त इष्ट प्रदान करने वाले ! हे हलधर भोजनस्थल ! देवता, मनुष्यों के कल्याण सिद्धि के लिये आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें बलदेव की प्रीति के लिये १४ बार घृत का ग्रास करे ॥ ८८ ॥

बलदेव युगल प्रार्थनामन्त्र यथा—हे रेवतीरमण ! हे गोपों के वर देने वाले ! आप दोनों परस्पर परस्पर के मुख दर्शन में उत्कण्ठित हैं। आप दोनों को नमस्कार। इस मन्त्र के उच्चारण पूर्वक बाम भाग में जाकर १० बार युगल के लिये नमस्कार करे तो दस वर्ष के स्वरूप में श्रीबलदेव प्रसन्न होते हैं ॥ ८९ ॥

ततो त्रिकोणमन्दिरप्रदक्षिणप्रार्थनमन्त्रः—

नन्दगोपकृतार्थाय त्रिकोण रमणस्थल । गोपकामप्रपूर्णाय प्रदक्षिणपदे नमः ॥
पञ्चभिरुच्चरन् मन्त्रं कुर्यात्पञ्च प्रदक्षिणं । सर्वदा सौख्यमाप्नोति धनधान्यादिभिः स्तुतैः ॥
नन्दादिसर्वगोपैस्तु निर्मितं हलिनः स्थलं । अत्रैव देवतादीनां पूर्णाः स्युश्च मनोरथाः ॥६०॥
देवादिभिः कार्यप्रदक्षिणा शुभा शुभप्रदा स्यान्मनुजादिकानां ।
कृष्णे नभो मासि शुभं प्रकाशितं श्रीभट्टनारायणसंज्ञकेन ॥
इति श्रीभास्करतनयनारायणभट्टविरचिते व्रजभक्ति विलासाख्ये
परमहंससंहितोदाहरणे चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ पंचमोऽध्यायः ॥

अथ गोवर्धनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणम् । आदिवाराहे—

भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां कुर्याद्गोवर्धनागमम् । कार्तिके शुक्लकृष्णेतु प्रतिपद्यां शिवामयोः ॥
प्रदक्षिणाकृतापूजा शक्रपूजापहारिणी । बनप्रदक्षिणाच्चाभिः स्नानं च प्रणतिं चरेत् ॥
रामाज्ञाग्राहकः श्रीमान्हनुमद्वानराधिपः । उत्तरादुधृतं स्कन्धे नीत्वा पर्वतमुत्तमं ॥
देवताकाशवाक्यैस्तु सेतुपूर्णस्तु जायते । तिवाक्यं समाकर्ण्य प्रक्षिप्तवनीतले ॥
गोवर्धनो हरेर्भक्तो हनुमन्तं ब्रवीद्वचः । भगवत्पादहीनं मां करिष्ये ऽत्रगमिष्यति ॥
शापं दातुं प्रशक्तोऽभूत्गिरिर्हनुमते किल । ततो गिरिवरस्यापि वाक्यमाकर्ण्य वानरः ॥
वरदो गिरये भूयादब्रवीत्वाक्यं कपीश्वरः ।
हनुमदुवाच-क्षमस्व भोदुराराध्य त्वयावासं चकार स । इन्द्रो देवादिभिः सार्धं गोपपूजां समाददे ॥

अनन्तर बलदेवजी के त्रिकोण मन्दिर की प्रदक्षिणा प्रार्थनामन्त्र—हे त्रिकोण रमणस्थल ! आप गोपों की कामना करने के लिये हैं । आप नन्दजी द्वारा निर्म्मित हैं । आपकी मैं प्रदक्षिणा करता हूँ । आप को नमस्कार । इस मन्त्र के ५ बार पाठ पूर्वक ५ बार प्रदक्षिणा करे तो सर्वदा धन, धान्य, सुतादिक प्राप्त होकर सुखी रहता है । यह स्थल नन्दादि समस्त गोपों के द्वारा निर्म्मित है । यहाँ देवताओं के मनोरथ समूह पूरण होते हैं ॥ ६० ॥

देवतादि करके यह शुभ प्रदक्षिणा करना कर्त्तव्य है, जो मनुष्यों के लिये शुभ फल देने वाली है जो भाद्रमास कृष्णपक्ष में श्रीभट्ट नारायणजी द्वारा सुन्दर रूप में प्रकाशित हुई है ॥ ६१ ॥

इति श्रीमद्भास्करात्मज श्रीनारायणभट्टगोस्वामी विरचित व्रजभक्तिविलास परमहंससंहिता उदाहरण के चतुर्थ अध्याय का अनुवाद समाप्त हुआ ।

अनन्तर गोवर्द्धनजी की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । आदिवाराह में—भाद्रकृष्णा चतुर्दशी में गोवर्द्धन आवे । कार्त्तिक के कृष्ण पक्ष अमावस्या और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि में प्रदक्षिणा करे और इन्द्रपूजा अपहरणकारी पूजा को करें तथा स्नान, पूजा, प्रणाम द्वारा प्रसन्न करे । श्रीरामजी की आज्ञा से वानरराज श्रीहनुमान श्रीगोवर्द्धन पर्वत को उत्तराचल से स्कन्ध पर रखकर ला रहे थे । उस समय देववाणी हुई कि समुद्र में सेतु बँध गया है । हनुमान जी ने यह सुनकर इन्हें यहाँ पृथ्वी पर फेंक दिया । हरिभक्त गोवर्द्धन जी ने हनुमानजी से कहा कि आपने भगवान के चरण चिन्ह स्पर्श से मुझे वञ्चित किया । मैं

ऊर्ज-सित प्रतिपद्यां गोपानां रक्षको भव । द्वापरान्ते कलेरादौ लीलापूर्णो भविष्यसि ॥
इत्याश्वास्य कपिः श्रीमान् जगाम नभसा सुधीः । रामं प्राप्त्वा नमस्कारं दण्डवत् प्रपपात ह ॥
अब्रवीद्वाक्यं कपिः श्रेष्ठः सेतुपूर्णः प्रजायते । यस्मादहं क्षिपाम्यद्य गोवर्द्धनगिरिं प्रभो ॥
श्रुत्वैवं हनुमद्वाक्यं रामो वचनमब्रवीत् । एते गिरिवराः श्रेष्ठाः पादस्पर्शाद्विमोक्ष्यते ॥
गोवर्द्धनं गिरिवरं करिष्येहं विमोक्षणं । पाणिस्पर्शाच्च नन्दस्य गोपानां रक्षकं परं ॥
वसुदेवकुलद्भूतो बालकृष्णो भवाम्यहं । इति गोवर्धनोत्पत्तिः देवानां सौख्यकारिणी ॥१॥

ततो गोवर्द्धनपर्वतपूजनप्रदक्षिणाप्रार्थनमन्त्र—

गोवर्धन गिरे तुभ्यं गोपानां सर्वरक्षक । नमस्ते देवरूपाय देवानां सुखदायिने ॥
द्वि सहस्रं जपन मन्त्रं नमस्कारं प्रदक्षिणं । कुर्याच्चतुः प्रमाणेन मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥
अयं गोवर्धनश्चात्र प्रतिवासरनिम्नतां । इन्द्रशापाद्भुवो मध्ये गमिष्यति कलौ युगे ॥
यवमात्रप्रमाणेन लोकानां मुक्तिदो भवः । यस्य दर्शनमात्रेण मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥ २ ॥

ततो हरिदेवप्रार्थनमन्त्रः । स्कान्दे—

करोद्धृतनगेन्द्राय गोपानां रक्षकाय ते । सप्ताब्दरूपिणे तुभ्यं हरिदेवाय ते नमः ॥
पञ्चधा पठते मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । सर्वपापाद्विनिर्मुक्तो वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥ ३ ॥
गोपिकावचनेनापि कृष्णस्तु मनसाकरोत् । वृषहत्यापराधस्य मुक्तये मानसीं शुभां ॥
गंगां दुग्धमयीं पुण्यां महापापप्रणाशिनीम् ।

आपको शाप दूंगा । हनुमानजी ने कहा—हे गिरिवर ! क्षमा कीजिये । जब इन्द्र देवतागणों के साथ गोप समूह की पूजा ग्रहण करेगा उस समय भगवानजी इन्द्रकी पूजाका खण्डन कर आपकी ही पूजा करवायेंगे । इससे इन्द्र कुपित होकर व्रज में उत्पात करने लगेगा तो उस समय आप व्रजवासियों के रक्षक होंगे । द्वापर के अन्त में और कलिके प्रथम में तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होगी । इस प्रकार कहकर हनुमानजी आकाश-गामी होकर रामजी के पास गये और समस्त हाल सुनाया । रामजी कहने लगे सेतुबन्ध के लिये लाये गये यह सब पर्वत मेरे चरण स्पर्श से विमुक्त होगये हैं, किन्तु मैं उस गोवर्द्धन को हस्तकमल के स्पर्श द्वारा पवित्र करूंगा । मैं वसुदेव के कुल में उत्पन्न होकर व्रज में विविध बालक्रीड़ा करूंगा और गोवर्द्धन के ऊपर गौ चरणादि अद्भुत-अद्भुत क्रीड़ा विनोद करूंगा । यह गोवर्द्धन जी की उत्पत्ति का कारण है जिससे देवतागण भी सुखी होते हैं ॥ १ ॥

अनन्तर गोवर्द्धन पर्वत पूजन प्रदक्षिणा प्रार्थनामन्त्र—हे श्रीगोवर्द्धन गिरि ! आपको नमस्कार। आप गोपगणों के रक्षक हैं । आप देवरूप हैं और देवताओं को सुख देने वाले हैं । इस मन्त्र के २००० बार जप पूर्वक नमस्कार और ४ बार प्रदक्षिणा करे तो मनुष्य अवश्य मुक्तिभागी होता है । यह श्रीगोवर्द्धन कलियुग में नित्य इन्द्र शाप के कारण पृथ्वी के अन्दर यव परिमाण से नीचे चले जाते हैं ॥ २ ॥

अनन्तर हरिदेव प्रार्थनामन्त्र यथा—स्कान्द में—हे हरिदेव ! सात साल की अवस्था स्वरूप आपको नमस्कार । आपके हस्त कमल में गिरिराज है । आप गोप समूह के रक्षक हैं । इस मन्त्र के ५ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो समस्त पापों से मुक्त होकर वैकुण्ठ पद को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

अनन्तर मानसीगङ्गा है । गोपियों के वचन से श्रीकृष्ण ने वृषहत्या के अपराध से मुक्त होने के लिये इसे मन से उत्पन्न किया है, जो दुग्धमयी पवित्रा है और घोर पापों का नाश करने वाली है ।

129 page

ततो मानसीगंगास्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गंगे दुग्धमये देवि भगवन्मानसोद्भवे । नमः कैवल्यरूपाढ्ये मुक्तिदे मुक्तिभागिनी ॥
इति मन्त्रं शतावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । ब्रह्महत्यादिपापानि नश्यन्ति नात्र संशयः ॥
वृषहत्यापराधात्तु विमुक्तो देवकीसुतः ॥ ४ ॥
यत्र ब्रह्मादयो देवाः समाजग्मुर्भुवस्थले । ब्रह्मस्तुत्याभिषेकं च हरेश्चक्रे विधानतः ॥
सामवेदोद्भवैर्मन्त्रैः सर्वकामार्थसिद्धये । ब्रह्मकुण्डं यतो जातं ब्रह्मादिभिर्विनिर्मितं ॥

ततो ब्रह्मकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । कौर्मे—

ब्रह्मादिनिर्मितस्तीर्थं शुद्धकृष्णाभिषेचन । नमः कैवल्यनाथाय देवानां मुक्तिकारक ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । द्वयोर्मध्ये कृतं दानं सहस्रं गुणितं भवेत् ॥
पुण्यं मानसिकं यत्र फलमक्षयमाप्नुयात् । मनसि संस्थितान्कामान् चिन्तनात्सर्वमाप्नुयात् ॥
गुप्तदानं प्रकुर्वीत स्वर्णगौरजतादिकं । अन्नवस्त्रादिकं चैव पात्रपृथ्वीगृहादिकं ॥
दशायुतगुणं पुण्यं फलं तद्द्विगुणं लभेत् । नारीकेलफलादीनां हस्त्यश्वादिविधायिनां ॥
पुण्यं लक्षगुणं जातं फलं स्यात्तच्चतुर्गुणं । मनसा क्रियते दानं मक्षयं फलमाप्नुयात् ॥५॥
यत्रैव देवताः सर्वे कृत्वा कृष्णं पुरः सरं । मनसाख्यशुभां देवीं स्थापयेयुर्मनोर्थदां ॥

ततो मानसाम्बिकाप्रार्थनमन्त्रः । वायुपुराणे—

मनसः कामदायैव मनसायै नमो नमः । नम देव्यै महादेव्यै धनधान्यफलप्रदे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिः प्रणमेच्चतां । सर्वान्कामानवाप्नोति मनसा चिन्तनादपि ॥
देव्यास्तु भवनस्यापि परिक्रमणमष्टधा । क्रियमाणः फलं लेभे मनसा यदि चिंतितम् ॥ ६ ॥

अनन्तर मानसीगङ्गा स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे गंगे ! हे दुग्धमयि ! हे देवि ! हे भगवान के मन से उद्भवे ! हे कैवल्य रूपिणी ! हे मुक्ति देने वाली ! हे मुक्तिभागिनी ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के शत बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो ब्रह्महत्यादि पाप समूह अवश्य नाश हो जाते हैं । यहाँ वृषहत्या अपराध से देवकी सुत विमुक्त हुए थे ॥ ४ ॥

यहाँ ब्रह्मादिक देवता आकर उपस्थित हुए । ब्रह्माजी ने साम वेद उत्पन्न मन्त्रों से यथा विधि सवार्थ सिद्धि के लिये श्रीकृष्ण का अभिषेक किया । जिससे ब्रह्मकुण्ड उत्पन्न हुआ है । स्नानाचमन-प्रार्थनामन्त्र यथा-कौर्म्य में—हे ब्रह्मादि द्वारा निर्म्मित तीर्थ ! हे शुद्ध ! हे कृष्ण के अभिषेक स्थल ! कैवल्य नायक आपको नमस्कार । आप देवताओं के मुक्ति करने वाले हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें । दोनों के बीच दान करने से हजार गुणा फल होता है । मनमें पुण्य करने से भी अक्षय फल लाभ होता है । जिसकी चिन्ता मात्र से ही मन में रखी हुई समस्त कामना सिद्धि होती है । यहाँ सुवर्ण, चाँदी, वस्त्र, अलंकारादिक गुप्त भाव से दान करने से दश अयुत गुण पुण्य और उसका दो गुणा फल मिलता है । नारिकेल, हस्ति, अश्वादिक दान से लक्षगुण पुण्य और उसका चतुर्गुण फल लाभ होता है । मनमें दान करने से अक्षय फल लाभ होता है ॥ ५ ॥

यहाँ देवतागणों ने श्रीकृष्ण को आगे कर मनसा नामक मनोरथ देने वाली देवी की स्थापना की । मनसा देवी प्रार्थनामन्त्र यथा—वायुपुराण में—हे मनसादेवि ! मनः कामना देने वाली आपको नमस्कार । हे देवि ! हे महादेवि ! धनधान्य फल देने वाली आपको नमस्कार । इस मन्त्र के उच्चारण

T-S page

ततश्चक्रतीर्थस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

चक्रतीर्थ नमस्तुभ्यं कृष्णचक्रेण लाञ्छित । सर्वपापच्छिदे तस्मै कृष्णनिर्मलनिर्मित ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । दशद्वारात् कृतात्पापात् मुच्यते नात्र संशयः ॥७॥
यत्रैव देवताः सर्वे चक्रेश्वरसदाशिवं । स्थापयेयुः प्रपूर्णाय मनसः कामनाय च ॥

ततश्चक्रेश्वरप्रार्थनमन्त्रः । रुद्रयामले—

चक्रेश्वराय रुद्राय पञ्चास्य शिवमूर्तये । व्रजमंडलरक्षाय नमस्ते भवमूर्तये ॥
इत्येकादशभिर्मन्त्रं नमस्कारं पठनश्चरेत् । सर्वकामार्थमोक्षादिं लभते नात्र संशयः ॥ ८ ॥

ततो लक्ष्मीनारायणप्रार्थनमन्त्रः—

लक्ष्मीनारायणायैव गोवर्धनसुखाय ते । नमस्ते गोपवृन्दानां परिपूर्णव्रजोत्सव ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु प्रदक्षिणं नमश्चरेत् । पुत्रादि सर्वकामांश्च लभते नात्र संशयः ॥९॥

भविष्ये—यत्र कृष्णस्तु गोपीनां मनांस्याह्लादनं करात् । कदम्बोपरि संविष्टो मुरलीवादनं शुभम् ॥
गोप्योऽधःस्थलसंस्थास्ता. रासक्रीडनतत्पराः । यतो कदम्बखण्डाख्यं बनं जातं महद्भूतं ॥
देवानां मनुजानांच कृष्णदर्शनदायकं । मुक्तिभागी भवेल्लोको यत्रागत्य नमश्चरेत् ॥

ततो कदम्बखण्डाख्यबनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकाह्लादरूपाय कृष्णक्रीडनहेतवे । कदम्बाख्यबनायैव कृष्णाय सततं नमः ॥
दशभिर्जपते मन्त्रं क्षणं स्थित्वा हरिं स्मरन् । वैकुण्ठपदमाप्नोति सर्वसौख्यसमन्वितः ॥१०॥

पूर्वक ९ बार देवी को प्रणाम करें तो मनमें चिन्तन मात्र से ही समस्त कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। देवी की भवन परिक्रमा न कर यदि मनमें चिन्तन करें तो भी परिक्रमा कर्म्म का फल प्राप्त होता है ॥६॥

अनन्तर चक्रतीर्थ स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे चक्रतीर्थ ! तुमको नमस्कार । तुम श्रीकृष्ण के चक्र से चिन्हित हो । हे समस्त पाप नाशकारी ! हे श्रीकृष्ण कर्तृक निर्मित ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करे तो दस स्थानों में किया हुआ पाप नाश हो जाता है । इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ ७ ॥

यहाँ देवतागणों ने चक्रेश्वर महादेव की स्थापना की । जो समस्त मनः कामना पूर्ति के लिये हैं । चक्रेश्वर प्रार्थनामन्त्र यथा—रुद्रयामल में—हे चक्रेश्वर रुद्र ! आपको नमस्कार । आपके पाँच मुख हैं । आप कल्याण मूर्ति स्वरूप हैं और व्रजमण्डल की रक्षा के लिये हैं । भव मूर्ति आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो समस्त कामना और मोक्षादिक लाभ करता है ॥ ८ ॥

अनन्तर लक्ष्मीनारायण प्रार्थनामन्त्र—हे लक्ष्मीनारायण ! आपको नमस्कार ! आप गोवर्द्धन में सुख के लिये हैं । गोपवृन्दों के उत्सव रूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक प्रदक्षिणा, नमस्कार करे तो समस्त कामना और पुत्रादि लाभ करता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ ९ ॥

भविष्य में—यहाँ श्रीकृष्ण गोपियों के मनको आल्हादित करते हुए कदम्ब आरोहण पूर्वक मुरली बजाते थे । गोपीगण रासक्रीडा में उत्कण्ठित होकर कदम्बों के नीचे बैठती थीं । इसलिये उसका नाम कदम्बखण्डि है । इस कारण से इस अद्भुत कदम्बखण्डि नामक बन की सृष्टि हुई है जो देवता और मनुष्यों को कृष्णदर्शन कराने वाली है । यहाँ मनुष्य आकर नमस्कार करने से मुक्तिभागी होता है । प्रार्थनामन्त्र

यत्रैव गोपिकाः सर्वाःकृष्णमानीय चार्भकम् । स्नापयेयुः सुखाल्हादैर्हरिदेवं मुहुर्वदन् ॥
कुण्डं श्रीहरिदेवाख्यं प्रचक्रुः पुण्यवर्धनं । धनधान्यप्रदं नृणां चिरबालायुवर्द्धनं ॥
ततो हरिदेवकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः —
गोपिकाकृततीर्थाय हरिदेव मनोहर । तीर्थराज नमस्तुभ्यं कृष्णलालित्यदर्शिने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्ताचमनमज्जनैः । नमस्कारं विधानेन कुर्यान्मुक्तिपदं लभेत् ॥ ११ ॥
शक्रयामले-यत्रेन्द्रो ध्वजमादाय कृष्णस्याग्रे व्रजन् पुरः । कृतार्थं पदमालेभे विष्णोरग्रे सरस्वतः ॥
इन्द्रध्वजवनप्रार्थनमन्त्रः—
कृतार्थरूपिणे तुभ्यमिन्द्रध्वज कृतार्थिने । नमः कैवल्यनाथाय शक्रध्वजव नाय ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य षडावृत्या नमस्चरेत् । कृतार्थं पदमाप्नोति त्रैलोक्याधिपतिर्भवेत् ॥ १२ ॥
तन्मध्ये देवताः सर्वे पञ्चतीर्थान् समाददुः । कुंडं चक्रुश्च गोपीनां क्रीडास्नपनहेतवे ॥
पञ्चतीर्थाख्यकुंडञ्च पञ्चहत्याविनाशनं । पञ्चधान्यकृतं दानं पञ्चविप्राय दीयते ॥
सिततण्डुलगोधूमयवमुद्गमसूरिकम् । पञ्चधान्यमिदं श्रेष्ठं घृतादिरससंयुतम् ॥
पञ्चगोत्रसमुद्भूताः वशिष्ठात्रिपराशरः । कश्यपाङ्गिरसश्चैते दानपात्राः प्रपूजकाः ॥
ततो पञ्चतीर्थकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
नर्मदे सरयू काञ्चि गोमती वेत्रिके नमः । कृष्णाभिषेचनार्थाय पञ्चतीर्थाय ते नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य पञ्चभिर्मज्जनाचमं । नमस्कारं करोत्येवं पञ्चसौभाग्यसम्पदम् ॥
लभते वैष्णवं लोकमुच्चकैः पदमाप्नुयात् ॥ १३ ॥

यथा—हे गोपिकाओं के आल्हाद रूप ! हे श्रीकृष्ण क्रीड़ा के लिये कदम्बखण्डी नामक बन ! हे श्रीकृष्ण ! आपको निरन्तर नमस्कार । यहाँ क्षण काल ठहर कर १० बार मन्त्र जप पूर्वक हरि के स्मरण करने से समस्त सुख को प्राप्त होकर वैकुण्ठ पद को प्राप्त हो जाता है ॥ १० ॥

यहाँ गोपीगणों ने बालक श्री कृष्ण को लाकर बार-बार हरिदेव-हरिदेव कहकर सुख से स्नान कराया है वहाँ श्रीहरिदेव नामक कुंड का उत्पन्न हुआ है जो धन, धान्य, देने वाला है और बालकों को परमायु करने वाला है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र— हे गोपिकागण कर्तृक निर्म्मित तीर्थ ! हे मनोहर हरिदेव ! हे तीर्थराज ! हे श्रीकृष्ण लीला के दर्शक ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ कर ७ बार आचमन, मज्जन, स्नान करे । विधि पूर्वक नमस्कार करने से मुक्ति पद को प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

शक्रयामल में—यहाँ इन्द्र ध्वज लेकर श्रीकृष्ण के आगे जाकर कृतार्थ हो गया था यह वही इन्द्रध्वजबन है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे इन्द्रध्वजबन ! कृतार्थ स्वरूप आपको नमस्कार । आप इन्द्र के ध्वज द्वारा निर्म्मित हैं और कैवल्य नायक हैं । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो त्रैलोक्य अधिपति होकर कृतार्थ पद को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

उसके बीच में देवतागणों ने पाँच तीर्थों का उद्भव कराया और गोपियों के स्नान, क्रीडादिक के लिये पाँच कुंड निर्मित किये । अतः यह पञ्चकुंड नामक तीर्थ है जो कि पाँच हत्याओं का भी नाश करने वाला है । यहाँ पाँच गोत्रों से उत्पन्न पाँच विप्रों के लिये पाँच प्रकार के धान्य पृथक् २ प्रदान करें । सफेद चाँवल, गेहूँ, यब, मूंग, मसूर यह पञ्च धान्य हैं । घृतादि रस से संयुक्त कर सबका दान करें । वशिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप और अंगिरा गोत्र से उत्पन्न पाँच ब्राह्मण दान के पात्र हैं । पञ्चतीर्थस्नानाचमन

ततो मैन्द्रवतीर्थकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । मात्स्ये—

मैन्द्वाय नमस्तुभ्यं ऋषिश्रृङ्गसुताय ते । मैन्द्वाख्याय तीर्थाय कुण्डाय सततं नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य चतुर्धा मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत सर्वान्कामानवाप्नुयात् ॥१४॥
यमोऽनुचरभावेन यत्र स्नानं समाचरेत् । व्रजमण्डलरक्षार्थमागतो पाशदण्डभृत् ॥
कृष्णाज्ञया भ्रमन्यत्र गोपानां रक्षणाय च । यमतीर्थसरोरम्यं महिषासुरनाशनं ॥
यत्रैव कार्तिके मासि कृष्णपक्षे त्रयोदशि । तस्यां वै कुरुते स्नानं दीपदानं चतुर्मुखं ॥
सर्वदा सौख्यमाप्नोति सर्वारिष्टविवर्जितः ।

ततो यमतीर्थसरोवरस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः--

सर्वारिष्टहरस्तीर्थं यमतीर्थं सरोवर ! । नमस्ते कल्मषौघानां शान्तये भूरिदाय ते ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु पठित्वा मज्जनाचमं । नमस्कारं प्रकुर्वीत सदासुखमवाप्नुयात् ॥
चतुर्विधं कृतं दानं कृष्णागौस्वर्णलौहकम् । तिलं दद्यात् विधानेन गूर्जराय विशेषतः ॥
यमलोकं कदा नैव दृष्टो मोक्षपदं लभेत् ॥ १५ ॥
तप्तोदकं समानीय वरुणोऽनुचरभावतः । श्रीकृष्णस्नपनार्थाय रचयेन्निर्मलं सरः ॥
वरुणाख्यसरो रम्यं विख्यातं पृथिवीतले ।

ततो वरुणसरस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

मन्दाकिनीसमस्तीर्थं वरुणसंगकाय च । नमः परमशोभाढ्य कल्मषघ्नाय ते नमः ॥
द्विसप्ततिभिरुच्चार्य मन्त्रं मज्जनमाचमं । नमस्कारं प्रकुर्वीताखण्डसौभाग्यसम्पदं ॥
लभते परमं सौख्यं परिवारसमन्वितः ॥ १६ ॥

प्रार्थनामन्त्र—हे नर्मदे ! हे सरयू ! हे कांचि ! हे गोमती ! हे वेत्रवती ! आप सबको नमस्कार । श्रीकृष्ण के अभिषेक के लिये आप सब हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार मज्जन, स्नान, नमस्कार करने से पाँच प्रकार की सम्पदा लाभ करता है और वैष्णव लोक के लाभ पूर्वक उच्च पद के लिये जाता है ॥ १३ ॥

अनन्तर मैन्द्रवकुंडप्रार्थनास्नानाचमनमन्त्र—मात्स्य में—हे समस्त अरिष्ट हरणकारी मैन्द्रव नामक ऋषिश्रृंग के पुत्र ! हे मैन्द्रव नामक तीर्थ ! हे कुण्ड रूप ! आपको नमस्कार ; इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार, स्नान, प्रार्थना करे तो समस्त कामना प्राप्त हो जाती हैं ॥ १४ ॥

यहाँ पासधारी यमराज अनुचर भाव से स्नान किये हैं और श्री कृष्ण की आज्ञा से गोपों की रक्षा के लिये भ्रमण करते थे । यह महिषासुर नाशकारी यमराज का तीर्थ है । कार्त्तिक मास कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी में वहाँ स्नान पूर्वक चारों ओर में दीपदान करने से सकल अरिष्टों से मुक्त होकर सुखी होता है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे समस्त अरिष्ट नाश करने वाले यमतीर्थ सरोवर ! आपको नमस्कार । आप कल्मष समूह के नाश के लिये हैं और बहुत कुछ देने वाले हैं । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो सर्वदा सुख को प्राप्त होता है । यहाँ विशेष करके गूजरों के लिये तथा और के लिये चार प्रकार के दान करें । कृष्ण गौ, सुवर्ण, लोहा, तिल यह चार प्रकार की वस्तु यथा विधि दान करने से यमलोक का दर्शन कभी नहीं करता है और मोक्ष पद को प्राप्त होता है ॥ १५ ॥

अनन्तर वरुण सरोवर है । यहाँ वरुणजी ने अनुचर भाव से उष्ण जल लाकर श्रीकृष्ण का अभिषेक करने के लिये निर्म्मल सरोवर बनाया था इसलिये यह पृथ्वी में वरुण सरोवर प्रसिद्ध हुआ है ।

कुबेरोऽत्र तपश्चक्रे नदीं कौवेरिणीं करोत् । यत्र स्नातो नरो यस्तु कुबेरवद्धनी भवेत् ॥
चतुर्विधधनैपूर्णो जायते नात्र संशयः ।

ततो कौबेरिणीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । भविष्ये—

कौवेरिण्यै नमस्तुभ्यं नद्यै लक्ष्म्यै नमो नमः । कृष्णायै वहुधान्यायै स्वर्णदायै वरानने ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । धनाढयो वहुधा लोको स्नपनाज्जायते ध्रुवम् ॥
इति गोवर्द्धनस्थानतीर्थोत्पत्तिरुदाहृता । लोकानाञ्च हितार्थाथावन्यामाविर्भवन्ति हि ॥
इति गोवर्धनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं ॥ १७ ॥

अथ कामबनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं । वाराहे—

भाद्रकृष्णतृतीयायामागतो बनयात्रया । यत्रैव गोपिकानान्तु कामास्तु बहुधा भवन् ॥
यतो कामबनं नाम विख्यातं पृथिवीतले । मोहिता देवताः सर्वा कामसन्तप्तमानसः ॥

ततो कामवनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपीगीतप्रविष्टाय धीसंमोहनकारिणे । नमस्ते कामदेवाय श्रीमन्मदनमूर्त्तये ॥
ततो मन्त्रं समुच्चार्य पञ्चधा च नमस्करोत् । सर्वदा पुरुषार्थेन रमते स्त्रीजनैः सह ॥
परमायुः सजीवेत सौख्यश्रीवल्लभः सदा ॥ १८ ॥
रतिकेलिसखी यत्र स्नानं प्रतिदिनं करोत् । रतिकेलिकृतं कुण्डं सर्वसौभाग्यवर्धनं ॥
नारी च पतिना सार्धं रतिकेलिं समाचरेत् । कदाचिन्न भवेद्भगं पत्युश्चरति क्रीडनं ॥
वियोगं न कदा जातं पत्युरत्यन्तवल्लभा ।

स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे मन्दाकिनी समान तीर्थ ! हे वरुण नामक सरोवर ! हे परम शोभा से युक्त ! हे कल्मष नाशकारी तीर्थ ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ७२ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान, नमस्कार करे तो अखण्ड सौभाग्य को प्राप्त होकर परिवार के साथ परम सुख का लाभ करता है ॥ १६ ॥

अनन्तर कुबेर तीर्थ है । यहाँ कुबेरजी ने तपस्या करके कौबेरिणी नामक नदी की सृष्टि की । यहाँ स्नान करने से मनुष्य कुबेर के समान धनी हो जाता है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—भविष्य में— हे कौबेरिणी ! लक्ष्मी रूपा नदी आपको नमस्कार । आप कृष्ण रूपा हैं । सर्वदा धन धान्य के लिये आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान करे । यहाँ स्नपन करने से मनुष्य बहु-बन्धन से मुक्त अवश्य होता है । इति यह गोवर्द्धन के तीर्थ कुण्ड देवताओं की उत्पत्ति और महिमा वर्णन किया गया है जो लोकों के हित के लिये जानना है ॥ १७ ॥

अब कामबन की उत्पत्ति महिमा का निरूपण करते हैं । वाराह में—भाद्र की कृष्णा तृतीया तिथि में बनयात्रा के लिये आवें । यहाँ गोपियों की बहुत प्रकार की कामना हुई थी, इसलिये पृथ्वी में यह कामबन करके प्रसिद्ध है । देवतागण मोहित होकर यहाँ काम संतप्त हो गये थे । अनन्तर कामबनप्रार्थना-मन्त्र यथा—हे गोपियों की संज्ञा मोहित करने वाले ! हे कामबन ! हे कामदेवरूप श्री मदनमोहन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार नमस्कार करें तो सर्वदा विविध पुरुषार्थ से युक्त होकर स्त्रियों के साथ रमण करता है । यावत् परमायु जीता है ॥ १८ ॥

अनन्तर रतिकेलि कुंड है । यहाँ रतिकेलि नानक सखी प्रति दिन स्नान करती हैं । यहां सम्पूर्ण

ततो रतिकेलिकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । भविष्ये—

रतिकेल्यै नमस्तुभ्यं सर्वकैवल्यमूर्तये । सर्वसौभाग्यदे तीर्थे रतितीर्थ नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं त्रिधावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । सर्वदा सौख्यमाप्नोति दम्पतीरतिक्रीडनात् ॥१६॥
यत्रैव फाल्गुने मासि होलिकोत्सवकारकः । मण्डलो राजते सौख्यमुत्सवञ्च ब्रजौकसाम् ॥

ततो केलिमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—

राधाकृष्णविलासाय मण्डलाय नमो नमः । सर्व मंगलमांगल्यफाल्गुनोत्सवकारक ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिः प्रणमेत्स्थलं । सर्वदा सौख्यमाप्नोति होलिकोत्सववर्धनः ॥

इति कामबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ २० ॥

अथ जावबटाधिबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । वृहद्गौतमीये—

राधापादतलाद्यत्र जावकः स्खलितोऽभवत् । यस्माज्जावबटं नाम विख्यातं पृथिवीतले ॥

ततो जावबटप्रदक्षिणाप्रार्थनमन्त्रः—

राधाजावकसम्भूत सौभाग्यसुखवर्धन । रतिकेलिसुखार्थाय नमो जाववटाय च ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य दशधा प्रणतिञ्चरेत् । सर्वदा सुखमाप्नोति सर्वसौभाग्यसम्पदां ॥
यत्र राधाकरोत्स्नानं चतुषष्ठिसखिभिस्सा । यस्माज्जावबटे संस्थं राधाकुण्डं मनोहरं ॥
रक्तनीरसमाक्रान्तं किंचित् पीतसमाकुलं । रतिकेलिसुखं नृणामतिसौभाग्यवर्धनं ॥२१॥

ततो राधाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

राधायै सततं तुभ्यं ललितायै नमो नमः । कृष्णेन सह क्रीडायै राधाकुण्डाय ते नमः ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । नर नारी कृतस्नानादखण्डसुखमाप्नुयात् ॥ २२ ॥

सौभाग्य को बढ़ाने वाला रतिकेलि नामक कुण्ड है । यहाँ स्नान करने से नारी पति से कभी वियुक्त नहीं होती है और पति की अत्यन्त वल्लभा होती है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—भविष्य में—हे रतिकेलि ! समस्त कैवल्य मूर्त्ति रूप आपको नमस्कार । हे सर्व सौभाग्य देने वाले रतितीर्थ आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक स्नान आचमन, प्रणाम करें तो दम्पती रति क्रीड़ा में सर्वदा सुख प्राप्त करते हैं ॥ १६ ॥

यहाँ फाल्गुन मास में होलिका उत्सव होता है । ब्रजवासी मण्डली बद्ध होकर पृथक-पृथक् उपस्थित होते हैं और वहाँ बड़ा भारी उत्सव सुख होता है । अनन्तर होलीमंडल प्रार्थनामन्त्र—हे राधाकृष्ण विलास ! हे मण्डल आकार ! हे समस्त मंगल के मङ्गल रूप फाल्गुन उत्सवकर्त्ता ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार स्थान को प्रणाम करे तो सर्वदा होलिकोत्सव सुख का अनुभव करता है । यह कामवन की उत्पत्ति महिमा वर्णन की गयी है ॥ २० ॥

अब जावबटाधिवन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । वृहद्गौतमीय में—यहाँ श्रीराधिका जी के चरणों से जावक (महावर) गिरा था । इसलिये यह यावबट नाम से विख्यात हुआ है । प्रदक्षिणा प्रार्थना मन्त्र—हे राधिका के जावक से उत्पन्न ! हे सौभाग्य सुख को देने वाले ! हे रतिकेलि सुख के लिये जाववट ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के उच्चारण पूर्वक १० बार प्रणाम करे तो सर्वदा समस्त सौभाग्य सम्पत्ति के लाभ पूर्वक अजस्र सुख को प्राप्त होता है ॥ २१ ॥

यहाँ राधाकुंड है । जहाँ श्रीराधिका ६४ सखियों को सङ्ग में लेकर स्नान करती थीं एवं किंचित्

नारदीये—यत्र राधाकरोद्रासं कृष्णेन सह विह्वला । सप्तवर्षस्वरूपेण सखिभिर्बहुधा सुखम् ॥
कौमार सम्भवामूर्त्तिर्ललिता राधया सह । कण्ठे हस्तं समाधाय अन्योन्यकुटिलेक्षणं ॥
रासमण्डलमाख्यातं गोपवृन्दैर्विनिर्मितं । भाद्रेमासि सिते पक्षे कृष्णो क्रीडां करोत्यसौ ॥

ततो रासमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—
चतुषष्ठिसखिभ्यस्तु राधादिभ्यो नमो नमः । कृष्णाय रमणायैव सप्तवर्षस्वरूपिणे ॥
इति मन्त्रं नवावृत्या मण्डलाय नमश्चरेत् । त्रैलोक्यपदराज्यस्य सुखमाप्नोति मानवः ॥२३॥
यत्रैव बहुधा जाताः सर्वाः सख्यस्तु विह्वलाः । कृष्णं परिजहुस्तत्र राधाग्रन्थिं समायुजन् ॥
पद्मावत्यास्तु सख्यास्तु विवाहं सा समाचरेत् । गानं वैवाहिकोत्साहं सर्वमांगल्यपूरितं ॥
स्थानं वैवाहिकं नाम नरनारीवरप्रदं ।

ततः पद्मावती विवाहस्थलप्रार्थनमन्त्रः—
नमस्ते सर्वमांगल्यशुभवैवाहिकस्थल । पद्मावती समेताय नमस्ते नन्दसूनवे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य वारमेकादशं नमन् । चिरञ्जीवी भवेल्लोको पुत्रोत्सवसुखं लभेत् ॥
इति जाववटाधिबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ २४ ॥

अथ बनयात्राप्रसंगे नारदबनोत्पत्तिमाहात्म्यं—
भाद्रेमास्यसिते पक्षे चतुर्दश्यां च दर्शनं । शुक्ले कार्तिकमासि च दर्शनं प्रतिपद्दिने ॥

पीला युक्त रक्त जल जिसमें है । जो अत्यन्त सौभाग्य बढ़ाने वाला है और रतिकेलि सुख के लिये है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे राधिका स्वरूप ! हे श्री ललिते ! हे श्रीकृष्ण के साथ क्रीड़ा करने वाले ! हे राधाकुंड ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन, नमस्कार करें तो नर व नारी अखण्ड सुख को प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

अनन्तर रासमंडल स्थल है । नारदीय में—यहाँ सखियों को संग लेकर श्रीराधिका ने सात वर्ष की अवस्था में विह्वल होकर श्रीकृष्ण के साथ विविध रासलीला की थीं । जहाँ कौमार मूर्त्ति से श्रीललिता जी श्रीराधिका जी के कंठ पर हाथ रखकर परस्पर कुटिल दृष्टि के साथ बिहार करती थीं । यह रासमंडल है जो गोपगण कर्तृक निर्म्मित है । भाद्र मास के शुक्ल पक्ष में श्रीकृष्ण यहाँ क्रीड़ा करते हैं । रासमंडल प्रार्थनामन्त्र यथा—हे चौसठ सखीयों के साथ श्रीराधिके ! आपको नमस्कार । हे सात वर्ष स्वरूप श्रीरमण श्रीकृष्ण ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मंडल को नमस्कार करे तो त्रैलोक्य राज्य पद को पाकर सुखी होता है ॥ २३ ॥

अनन्तर पद्मावती वैवाहिक स्थल है । यहाँ समस्त सखियाँ अत्यन्त विह्वल हुई थीं और श्रीकृष्ण का आलिंगन किया था । वहाँ श्रीराधिका ने श्रीकृष्णके साथ पद्मावती सखीको गाँठबन्धन कराकर विवाह कराया था । सखीगण विविध प्रकार वैवाहिक उत्सव गानादि करने लगीं । इसलिये यह वैवाहिक स्थल है जो नर नारियों को बर देने वाला है । विवाह स्थल का प्रार्थनामन्त्र—हे समस्त मंगलमय शुभ वैवाहिक स्थल ! हे पद्मावती सहित श्रीनन्दनन्दन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ११ बार नमस्कार करें तो मनुष्य चिरञ्जीवी होकर पुत्रोत्सव सुख का लाभ करता है । यह जाववट अधिबन की उत्पत्ति महिमा कही गयी है ॥ २४ ॥

अब बनयात्रा प्रसंग में नारदबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । भाद्रमास के कृष्णपक्ष की

आदिपुराणे-यत्रैव मुनिशार्दूलो नारदस्तु तपश्चरेत्। कृष्णसंदर्शनार्थाय योगविद्यां च प्रार्थयन्॥
यतो नारदमाख्यातं बनं नाम भुवि स्थितं।

ततो नारदबनप्रार्थनमन्त्रः—

गोवर्धनमुखास्थाय नारदाख्यबनाय च। तपसां राशये तुभ्यं नमः कैवल्यरूपिणे॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिः प्रणमेत्स्थलं। परं मोक्षपदं लेभे सर्वदा विजयी भवेत्॥२५॥
यत्रैव नारदो नित्यं स्नानं कृत्वा तपश्चरन्। यतो नारदकुण्डाख्यं सर्वेष्टफलदायकं॥

ततो नारदकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः। बृहन्नारदीये—

ब्रह्मलोकप्रदायैव वैकुण्ठाददायिने। नमः नारदकुण्डाय तुभ्यं पापप्रशान्तये॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनै र्नमन्। सर्वपापविनिर्मुक्तो वैकुंठपदमाप्नुयात्॥ २६॥
यत्र ब्रह्मा समागत्य पुत्राध्ययनहेतवे। सर्वयोगमयीं विद्यां कमण्डलुसमाकुलः॥
उपदेशं च पुत्राय करोति परमोत्सवं। यतो विद्यास्थलं जातं सिद्धपीठं वरप्रदं॥
यतो ब्रह्माप्रसादात्तु नारदाध्ययनाच्च यः। देवर्षिमुनिलोकानां सिद्धिविद्याप्रदायकः॥

ततो नारदविद्याध्ययनस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

ब्रह्मविद्यास्थलस्तुभ्यं जगदानन्ददायिने। नारदाध्ययनश्रेष्ठ नमस्तुभ्यं वरप्रद॥
इति मन्त्रं सप्तावृत्या नमस्कारैः स्थलं नमेत्। सर्वलोकार्थदां विद्यां सकलेष्टविमोहिनीम्॥
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं नारदस्य प्रसादतः। ब्रह्मणो वरमालभ्य नारदो विजयी भवेत्॥
यत्र स्थले जड़ो बुद्धया मूर्खो मूकोऽलसोऽकुधीः। त्रिक्षिप्तो वधिरश्चैव कुशीलो द्यूतलम्पटः॥
कृत्वौषधं महाश्रेष्ठं वाक्प्रवृत्ति शुभप्रदं। अद्रकं भद्रकं चैव वचं वावचिकं तथा॥

चतुर्दशी तिथि में और कार्तिक मास की शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि में दर्शन करना कर्त्तव्य है। आदि-पुराण में—यहाँ मुनि शार्दूल श्रीनारद ने योगविद्या की प्रार्थना पूर्वक श्रीकृष्ण प्राप्ति के लिये तपस्या की है। इसलिये पृथ्वी में नारदबन करके यह विख्यात है। नारदबन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोवर्द्धन के मुखस्थल में स्थित नारद नामक बन! आपको नमस्कार। हे तपस्या की राशि! कैवल्य स्वरूप आपको नमस्कार है। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार स्थल को प्रणाम करें तो परम मोक्ष पद के लाभ पूर्वक सर्वदा विजयी होता है॥ २५॥

यहाँ श्रीनारद जी नित्य स्नान पूर्वक तपस्या आचरण करते हैं। यह नारदकुण्ड है जो समस्त इष्ट फल को देने वाला है। नारदकुंड स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—बृहन्नारदीय में—हे ब्रह्मलोक को देने वाले! हे वैकुंठ पद प्राप्त कराने वाले! हे श्रीनारद कुंड! पाप नाश के लिये आपको नमस्कार है। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करे तो समस्त पापों से मुक्त होकर वैकुंठ पद को प्राप्त होता है॥ २६॥

यहाँ पुत्र के अध्ययन के लिये स्वयं ब्रह्मा जी ने आकर समस्त योगमयी विद्या को कमण्डल में से उठाकर परम आनन्द उत्सव के साथ अध्ययन कराया है। इसलिये यह सिद्ध पीठ इष्ट को देने वाला विद्यास्थल उत्पन्न हुआ है। ब्रह्माजी के प्रसाद से तथा नारदजी के अध्ययन के कारण यह स्थल देवर्षि, मुनि, मनुष्यों को परम सिद्धि विद्या देने वाला है। नारद विद्याध्ययन स्थल का प्रार्थनामंत्र—हे जगत् को आनन्द देने वाले नारदजी के अध्ययन स्थल! आपको नमस्कार! हे ब्रह्माजी की विद्या के स्थल! आपको

125 page

ब्राह्मी सद्यघृतं शुद्धं युक्त्वा चूर्णं शुभप्रदं । षष्ठं पीतरसाढ्य.स्यं सारस्वतमिदं शुभं ॥
माघे मास्यसिते पक्षे चतुर्दश्यां समाचरेत् । कोकिलास्वरसादृश्यं स्वरमाप्नोति मानवः ॥
पिबन्माघचतुर्दश्यां नाभिमात्रजले स्थितः । अस्मिन्नारदकुण्डे ऽसौ कृत्वा बुद्धिविशारदः ॥
सुबुद्धिर्जायते लोको सुशीलो धर्मतत्परः ॥ २७॥

ब्राह्मे—ब्रह्मा सरस्वतीमूर्तिं स्थापयेत् पुत्रसिद्धये । सरस्वत्याग्रतो विश्य नारदो मुनिसत्तमः ॥
विद्याध्ययनसंयुक्तो योगविद्यां लभेदसौ । सरस्वत्यवलोकेन विद्यावान् जायते नरः ॥

ततो सरस्वतीप्रार्थनमन्त्रः । आश्वलायने—

सरस्वत्यै नमस्तुभ्यं नारदेष्टप्रदायिने । ब्रह्मण्यै ब्रह्मरूपिण्यै सिद्धि विद्यास्वरूपिणि ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिश्च नमश्चरेत् । सर्वान्कामानवाप्नोति सिद्धिविद्यां वरप्रदां ॥
इति नारदबनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं ॥ २८ ॥

अथ संकेतबनाधिबनोत्पत्ति महात्म्यनिरूपणं । कौर्म्ये—

संगमो यत्र जायेत श्रीराधाकृष्णयोः सदा । आगमागमसंयोगान्नाम संकेतकं स्थलं ॥
भाद्रे मासि सितेपक्षे पञ्चम्यां दर्शनं करोत् । न्यूनाधिकौ यदा जातौ चतुर्थी तृतीयादिने ॥
चतुर्थीतु विशेषेण बनयात्राप्रसंगके । बनयात्राप्रसंगे तु संकेतबनसंज्ञकं ॥

ततो संकेतबनप्रार्थनमन्त्रः—

युगलागमबेपाय राधायै नन्दसूनवे । संकेतबनरम्याय नमस्तुभ्यं प्रसीद मे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । दम्पत्योर्बहुधा प्रीतिर्जायते नात्र संशयः ॥२९॥

नमस्कार । हे ब्रह्मा जी की विद्या के स्थल ! आपको नमस्कार । आप वर समूह के देने वाले हैं । इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो मनुष्य समस्त लोक अर्थ को देने वाली विद्या को प्राप्त होता है तथा श्रीनारदजी के प्रसाद से समस्त इष्ट को पाकर त्रिजगत् को मोहित करता है । यहाँ श्रीनारदजी ब्रह्माजी से बर लाभ पूर्वक विजयी हुए हैं । यहाँ जड़बुद्धि वाला, मूर्ख, मूक, आलसी. मन्दबुद्धि वाला, उन्मादग्रस्त, बधिर, मन्दस्वभाव वाला, जूआबाज, मनुष्य भी यदि इस महान् श्रेष्ठ वाणी शुभ को देने वाला परम औषध को सेवा करें तो उत्तम फल का लाभ करता है औषध यथा—अदरक, भद्रक, बच (वावचि) ब्राह्मी, सद्यजात घृत से शुद्ध सरस्वतीरस चूरण है। माघ मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तिथि में औषधि बना कर पान करने से कोकिल के बराबर स्वर को प्राप्त करता है। माघ चतुर्दशी के दिन इस नारदकुंड में नाभि मात्र जल में खड़ा होकर पान करने से विद्या विशारद होकर प्रसिद्धि लाभ करता है । मनुष्य सुन्दर बुद्धि विशिष्ट होकर धर्म्म परायण, सुशील बन जाता है ॥ २७ ॥

ब्राह्म में—यहाँ ब्रह्माजी ने पुत्र की सिद्धि के लिये सरस्वती मूर्त्ति की स्थापना की । नारद जी सरस्वती के आगे बैठकर विद्याध्ययन परायण होकर योगविद्या पढ़ी थी । मनुष्य यहाँ सरस्वती जी का दर्शन करने से विद्यावान् होता है । सरस्वती प्रार्थनामन्त्र यथा—आश्वलायन में—हे सरस्वति ! हे नारद जी को इष्ट देने वाली ! हे ब्रह्माणि ! हे ब्रह्मरूपिणि ! हे सिद्धिविद्यास्वरूपा ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करे तो समस्त कामनाओं को प्राप्त होता है । जो कि सिद्धि विद्या वर को देती हैं । यह नारदवन की उत्पत्ति, महिमा वर्णन हुआ है ॥ २८ ॥

अब संकेतवट अधिवन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । कौर्म्म में—यहाँ श्रीकृष्ण और श्रीराधिका

This page

श्यामाश्यामौ यथा सौख्यं यत्र स्नानं समाचरेत् । युगलौ पितृमात्रोश्च नामोच्चारणकारकौ ॥
स्यामकुण्डं समुद्भूतं संकेतोपवने स्थितं ।

ततो श्यामकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । कौडिन्यये—

युगलस्नपनार्यैव श्यामाश्यामाय शाश्वते । विमलोत्सवरूपाय केशवाय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारैर्विधानेन स्नानान्मोक्षपद लभेत् ॥
इति संकेतबटाधिबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ३० ॥

ततो सारिकाबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं—

श्रावणकृष्णपञ्चम्यां ब्रजयात्राप्रसंगतः । यत्रैव सारिकानां च क्रीड़ानं विरुतं रतिं ॥
पश्यति परमानन्दो राधया: संयुतो हरिः । यतो नाम समुद्भूतं सारिकाबनमुत्तमं ॥

ततो सारिकाबनप्रार्थनमन्त्रः । भविष्योत्तरे—

सारिकाल्हादसौख्याय नानाश्रुतसुखप्रद । युगलाय नमस्तुभ्यं रमारमणनामतः ॥
इति मन्त्रं षडावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । तस्यैव बन्धनो नास्ति सुवाक्यं श्रूयते सदा ॥
दुर्वाक्यं न कदा तस्य श्रवणस्य पथं चरेत् ॥ ३१ ॥
श्रीराधाकृष्णयोश्चैव मनसाल्हादसम्भवं । यतो मानसरो यत्र जायते तन्मनोहरं ॥
नानाहंसवकाकीर्णं कलनिर्ल्हादसारसं । देवांगनासमाकीर्णं देवगन्धर्वसंकुलं ॥

ततो मानसरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

भगवन्मनसोद्भूत राधामंदविहासज ! । तीर्थराज नमस्तुभ्यं श्रीमानसरसे नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य शक्त्यावृत्या क्रमेण च । मज्जनाचमनै नित्यं नमस्कारं समाचरेत् ॥

का संगम होता है वह संकेतबटस्थल है । आना जाना का मिलन स्थल है और यहाँ दोनों का संकेत होता था । भाद्र मास शुक्लपक्ष चतुर्थी में यहाँ गमन करें । संकेतबट प्रार्थनामन्त्र—हे संकेतबन नामक मनोहर स्थल ! आपको नमस्कार । आप प्रसन्न हों । इस मन्त्र के उच्चारण पूर्वक ६ बार प्रणाम करें तो दम्पति में परस्पर अनेक प्रकार की प्रीति उत्पन्न होती है ॥ २६ ॥

श्यामाश्याम दोनों ने यथा संख्य यहाँ पिता माता के नाम का उच्चारण कर स्नान किया था, वहाँ श्यामकुण्ड उत्पन्न हुआ है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र-कौडिन्यय में—हे युगलस्नान के लिये ! हे श्यामाश्याम रूप ! हे विमल उत्सव रूप केशव ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र का पाठ कर ७ बार स्नान,आचमन कर विधि पूर्वक नमस्कार करने से मोक्षपद लाभ होता है । यह संकेत बट अधिवन की उत्पत्ति व महिमा है ॥ ३० ॥

अब सारिकाबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । श्रावण कृष्णा पञ्चमी में शारिकाबन की यात्रा है । वहाँ श्रीकृष्ण प्रियाजी के साथ आनन्दित होकर सारिकाओं के क्रीडन, तथा मनोहर शब्द को सुनते थे । यह सारिकाबन है । प्रार्थनामन्त्र यथा--भविष्योत्तर में—हे रमा रमण नामक युगल दोनों ! आप सारिका के आल्हाद के विषय हैं । उनको नाना प्रकार सुख देने वाले हैं । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें । उसका बन्धन नहीं होता है तथानिरन्तर प्रिय वाक्य सुनता है । दुर्वाक्य कभी उसके कानों में नहीं पहुँचता है ॥ ३१ ॥

यहाँ मानसरोवर है । जो राधाकृष्ण के मन के आल्हाद से उत्पन्न है । वहाँ विविध प्रकार हंस,

गन्धर्वयोनिमालम्य पुण्यशीलस्थलं ययौ ॥ इति सारिकाबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥३२॥

अथ विद्रुमबनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं । मात्स्ये—

आषाढ़शुक्लपञ्चम्यामागतो बनयात्रया । यत्र कदम्बविल्वाद्याः मध्ये विद्रुमराजयः ॥

शोभंते बहुशोभाभिर्देवगन्धर्वकिन्नरैः । विद्रुमोत्पत्तिसंजाता विद्रुमाख्यबनं भवेत् ॥

ततो विद्रुमबनप्रार्थनमन्त्रः—

विद्रुमोद्भवरूपाय तालांकरचिताय च । सर्वसौन्दर्यगन्धाय बनाय च नमोस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य द्वाविंशैश्च नमश्चरेत् । सर्वाभरणसंयुक्तो सौभाग्यसुखमाप्नुयात् ॥

कदापि भूषणैर्हीनो नैव जायेन्न संशयः ॥ ३३ ॥

विद्रुमार्थागता यत्र रोहिणी भूषणाय सा । स्नानं चकार शुद्ध्यर्थं मुक्तादानं करोति सा ॥

रोहिणीकुण्डमाख्यातं वसुधातलराजितं ।

ततो रोहिणीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

रोहिणी कृत तीर्थाय नमस्ते कल्मषापह । देवगन्धर्वभूषाय सर्व सौभाग्यदायक ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्याष्टभिराचमनैर्नमन् । मज्जनैः स्नपनं कुर्यात्सौभाग्यसुखमाप्नुयात् ॥३४॥

मुक्तान्नीत्वा गता देवी रोहिणी पतिवल्लभा । बज्रेश्वरं महादेवं स्थापयेद्विधिपूर्वकम् ॥

नानाविद्रुमलाभाय नित्यसंभूषणाय च । सौभाग्यफलप्राप्ताय पतिकांतिविवृद्धये ॥

ततो बज्रेश्वरमहादेवप्रार्थनमन्त्रः । रुद्रयामले—

बज्रेश्वराय देवाय नमस्तुभ्यं प्रसीद मे । मणिविद्धसमुद्भूत बज्रमूर्ते नमोस्तु ते ॥

चक्रवाक गण मनोहर शब्द पूर्वक क्रीड़ा करते हैं । जो देवतागण, गन्धर्वगण, देवीगणों से व्याप्त है। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे श्री राधिका के मन्द हास्य से उत्पन्न ! हे श्रीकृष्ण के मन से जात ! हे तीर्थराज ! सुन्दर सरोवर आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १४ बार नमस्कार, आचमन, स्नान करें तो पुण्यशील होकर गन्धर्वलोक को प्राप्त होता है । इति सारिकाबन की उत्पत्ति, महिमा, वर्णन हुआ ॥ ३२ ॥

अब विद्रुम बन का कहते हैं—आषाढ़ शुक्ला पञ्चमी के दिन यात्रा की विधि है। यहाँ बीच में विद्रुम समूह, चारि ओर में बेल, कदम्ब प्रभृति अनेक वृक्ष गण हैं। निरन्तर देवता, गन्धर्व, किन्नरों से वेष्टित है। इससे इसका नाम विद्रुमबन है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे विद्रुमों से उत्पन्न ! हे तालांक श्री बलदेवजी के द्वारा रचित ! समस्त सौगन्ध्य विशिष्ट आपको नमस्कार । इस मन्त्र का पाठ पूर्वक २२ बार नमस्कार करें । समस्त आभूषण को प्राप्त होकर सौभाग्य सुख को प्राप्त होता है। कभी आभूषण से हीन नहीं होता है ॥ ३३ ॥

यहाँ श्री रोहिणी भूषणार्थ विद्रुम लेने के लिये आकर शुद्धि के लिये मुक्ता दान पूर्वक स्नान करती थीं, यहाँ रोहिणीकुण्ड है। जो पृथ्वी में प्रसिद्ध है। स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र—हे रोहिणी कृत तीर्थराज ! हे कल्मष नाशकारी ! आपको नमस्कार । हे देवता, गन्धर्वों के लिये भूषणरूप ! हे समस्त सौभाग्य देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ८ बार स्नान, आचमन, नमस्कार करें तो समस्त सौभाग्य को प्राप्त होता है ॥ ३४ ॥

पतिव्रता रोहिणीदेवी विविध मुक्ता लेकर वहाँ गयी और विधि पूर्वक बज्रेश्वर महादेव की

इत्येकादशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । वज्रांगो दीर्घजीवीस्याद्रत्नादिधनसंयुतः ॥
इति विद्रुमवनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं ॥ ३५ ॥

अथ पुष्पवनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं । पाद्मे—
जेष्ठशुक्लत्रयोदश्यामागतो व्रजयात्रया । यत्रैव ललिताद्यास्ताः सख्योगोप्यस्तथाखिलाः ॥
पुष्पसेवाकृतार्थाय कृष्णसंमोहनाय च । कृष्णाभरणशोभार्थै रम्यस्त्रकृनिर्मिताय च ॥
रचयेयुर्मनोर्थैस्तु रम्यं पुष्पवन शुभम् । यमुनाकूलसम्भूतं देवगन्धर्वसंयुतं ॥
पुष्पान्समादद्दुर्लोकाः कृष्णं गोपींस्तु पूजयेत् । सुवर्णभूषणान् लेभे रमते वसुधातले ॥

ततो पुष्पवनप्रार्थनमन्त्रः । स्कान्दे—
सौगन्ध्यसुमनाल्हाददायिने सुमनोहर । नमः पुष्पवन तुभ्यं सर्वदाश्रीविवर्द्धनं ॥
इतिमन्त्रं समुचार्य शतमष्टोत्तरं नरः । प्रकुर्वीत विधानेन कांचनैर्भूषणं लभेत् ॥
यत्र स्थानसमुद्भूतैः पुष्पैरभ्यर्च्चनं हरेः । कुरुते सर्वदा सौख्यं नित्यमेव वरं लभेत् ॥३६॥

लैंगे— यत्रैव शंकरो नित्यं स्नात्वा कृष्णार्चनं करोत् । रचयेत्स्नानकुण्डं च परंमोक्षप्रदं नृणाम् ॥
कल्याणवर्द्धनं श्रेष्ठं शिवरूपं सुखप्रदं ॥

ततो शंकरकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
शिवनिर्मिततीर्थाय भवरूपाय ते नमः । देवर्षिमनुजादीनां परमोत्सवहेतवे ॥

स्थापना की । नाना प्रकार की विद्रुम प्राप्ति के लिये नित्य भूषणों के लिये और सौभाग्य फल प्राप्ति के लिये और पति की कांति श्री बढ़ने के लिये इसे जानना ।

रुद्रयामल में वज्रेश्वर महादेव का प्रार्थनामन्त्र— हे वज्रेश्वर देव ! आपको नमस्कार । आप प्रसन्न हों । आप वज्रमूर्त्तिरूप हैं और आप में मणि बिंधा हुआ है ! इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो वज्रांग होकर दीर्घजीवी होता है । नाना प्रकार का रत्न उसके करगत रहते हैं । इति यह विद्रुमबन की उत्पत्ति और महिमा कही गयी है ॥ ३५ ॥

अब पुष्पबन को कहते हैं । पाद्म में— ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी के दिन यात्रा के लिये आवे । यहाँ ललितादि समस्त गोपसुन्दरियाँ श्रीकृष्ण के आभूषणों के लिये पुष्प सेवार्थ आती थीं । मनोहर पुष्पादि लेकर विविध माला बनाती थीं । यमुना के तट पर मनोहर पुष्पवन की रचना कर विविध क्रीड़ा विनोद करती थीं । इस कारण से पुष्पबन उत्पन्न हुआ है जो देव गंधर्वों से परिपूर्ण है । यहाँ मनुष्य पुष्पों के अर्पण पूर्वक गोपियों के साथ राधाकृष्ण की पूजा करे तो सुवर्ण भूषणों के लाभ पूर्वक पृथ्वी पर रमण करता है । प्रार्थनामंत्र यथा स्कान्द में— हे सुमनोहर पुष्पबन ! आप सुगन्ध पुष्पों से आल्हाद को देने वाले हैं । सर्वदा श्री बढ़ाने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो विविध सुवर्ण अलंकार से भूषित होकर सुखी होता है । इस स्थल से उत्पन्न पुष्पों से श्रीकृष्ण की पूजा करने से नित्य सुखी होता है ॥ ३६ ॥

लैंग में— यहाँ शंकर जी नित्यस्नान पूर्वक श्रीकृष्ण की अर्च्चना करते हैं । आपने स्नान के लिए कुंड का निर्माण किया है । जो मनुष्यों को परम मोक्ष पद को देने वाला है और कल्याण को बढ़ाने वाला है । यह श्रेष्ठ है, शिवरूप है और सुखप्रद है । स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र यथा—हे शिवनिर्मित तीर्थराज ! आपको नमस्कार । आप भव रूप हैं और देवर्षि मनुष्यों के लिये परम उत्सव को देने वाले हैं । इस मन्त्र

इति मन्त्रं समुच्चार्य पञ्चभिर्मज्जनाचमैः । गालिनीभिश्चमुद्राभिः स्नपनं प्रणतिं चरेत् ॥
शिवलोकमवाप्नोति सर्वेषां वश्यकारकः । कल्याणं सकलं लेभे निर्भाग्यो भाग्यवान्भवेत् ॥३७॥
शिवो लम्बोदरं पुत्रं स्थापयेद्विघ्नशान्तये । लम्बोदरं गणेशं च पूजयेद्विधिवत्सुधीः ॥
धनपुत्रादिकामांश्च लभते नात्र संशयः ।

ततो लम्बोदरगणेशप्रार्थनमन्त्रः—

लम्बोदर महाभाग नमस्ते गिरिजात्मज । पुत्रादिधनकामानां वर्धनो शुभदायक ! ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य प्रणतिं द्वादशं चरेत् । तस्य विघ्नानि नश्यन्ति सर्वदा सिद्धिमाप्नुयात् ॥
इति पुष्पवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ३८ ॥

अथ जातीवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । नृसिंहपुराणे—

आषाढ़शुक्लसप्तम्यामागतो व्रजयात्रया । राधाप्रियसखी यत्र माधुरीनामगोपिका ॥
राधाकृष्णार्चनार्थाय रचयेन्मालतीवनं । नानाद्रुमलताकीर्णं मथुरामण्डलं द्युतिं ॥

ततो जातीवनप्रार्थनमन्त्रः—

माधुरीनिर्म्मितायैव जातिवन नमोऽस्तु ते । अतिसौगन्ध्यमोदाय लक्ष्मीरूपाय ते नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य प्रणतिं दशधा करोत् । सदा सौभाग्यसंयुक्तो लक्ष्मीवानपि जायते ॥३९॥
माधुरी नित्यमेवात्र स्नपनं कुर्वती सुखं । स्वकुण्डं रचयेद्गोपी माधुरीकुण्डविश्रुतं ॥
यत्र स्नानकृतानारी कर्कशा दुर्भगाशुभा । सुशीला शुभगा श्रेष्ठा मधुरस्वरभाषिणी ॥
अप्सरेव च लोकेषु रमते मोदतेऽखिलं ।

का पाठ पूर्वक मज्जन करे और गालिनी मुद्रा देखा कर स्नान, नमस्कार करे। मनुष्य शिवलोक को प्राप्त होता है और सबको वश में लाता है। दुर्भाग्य भाग्यवान् होकर समस्त कल्याण को लाभ करता है ॥३७॥

यहाँ पर शिवजी ने विघ्न शान्ति के लिये लम्बोदर, पुत्र, गणेशजी की स्थापना की है। पण्डित यथा विधि लम्बोदर गणेशजी की पूजा करे तो धन, पुत्र, कामनाओं को अवश्य लाभ करता है। लम्बोदर गणेश प्रार्थनमन्त्र—हे लम्बोदर ! हे महाभाग ! हे गिरिजापुत्र ! आपको नमस्कार। आप धन, धान्य, पुत्र, कामनाओं को बढ़ाने वाले हैं, शुभ को देने वाले हैं। स मन्त्र का पाठ पूर्वक १२ बार प्रणाम करे तो उसका विघ्न समूह नाश हो जाते हैं और वह सर्वदा सिद्धि को प्राप्त होता है। इति यह पुष्पवन की उत्पत्ति, महिमा कही गयी है ॥ ३८ ॥

अब जातीबन की उत्पत्ति, महिमा, कहते हैं। नृसिंहपुराण में—आषाढ़ शुक्ला सप्तमी में व्रजयात्रा के लिये यहाँ आवे। यहाँ राधिका की प्रियसखी माधुरी नामक गोपी ने राधाकृष्ण की पूजा के लिये मालतीबन का निर्म्माण किया है जो नाना प्रकार के वृक्ष लताओं से परिपूर्ण तथा मथुरा मण्डल की शोभा स्वरूप है। प्रार्थनामन्त्र—हे माधुरी निर्म्मित जातीबन ! आपको नमस्कार। आप अत्यन्त सुगन्ध दायक हैं। मोक्ष देने वाले लक्ष्मीरूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार प्रणाम करें तो सर्वदा सौभाग्यवान होकर लक्ष्मी को प्राप्त होता है ॥ ३९ ॥

माधुरी सखी ने यहाँ नित्य स्नान करने के लिये अपने नाम से कुण्ड निर्म्माण किया है जो त्रिजगत् में माधुरीकुण्ड के नाम से विख्यात है। यहाँ स्नान करने से कर्कशा, दुर्भगा, अशुभा, नारी भी सुशीला, सुभगा, श्रेष्ठा, मीठी बोलने वाली होती हैं। अप्सरा के न्याय रमण करती है। स्नानाचमन

ततो माधुरीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

माधुरीरचितं तीर्थं पीतवारिसमाकुल । नमस्ते माधुरीकुण्डं मानरूप नमो नमः ॥
इति मन्त्रं षडावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । मधुरा भवति वाणी लोकानां प्रियवल्लभः ॥४०॥
यत्र राधाकरोन्मानं माधुर्या सह विह्वला । कुटिलेक्षणा दृष्ट्या सा श्रीकृष्णमवलोकयेत् ॥
बहुभिः प्रार्थनाभिः सा माधुर्या सुदृशाभवत् । विलासं कुरुतेऽसौ सा कृष्णेन सह मोहिता ॥
मानपूर्णं विलासस्य माधुरीस्थलमीरितं ।

ततो मानमाधुरीस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

मानपूर्णनिवासाय राधारमणहेतवे । विलासमाधुरीस्थान रतिसौख्याय ते नमः ॥
चतुर्भिरितिमन्त्रं च पठंश्च प्रणतिं चरेत् । दम्पत्योर्बहुधा प्रीति रतिसौख्यं च सर्वदा ॥
इति जातिबनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं ॥ ४१ ॥

अथ चम्पाबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । कात्यायनसंहितायां—

आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां च गतोऽसौ व्रजयात्रया । यत्र चम्पासखीनाम रचयेत्सुन्दरं बनं ॥
ललितामोहनस्यापि क्रीडारमणहेतवे । सखी चम्पलता श्रेष्ठा ललिता प्रियवल्लभा ॥
यस्याः प्रीत्या समायाता गोमती गोपिका शुभा । क्रीडाविमलकल्लोलहेतवे कुण्डनिर्मलं ॥
नीलवारिसमाकीर्णं नानाद्रुमलतावृतं । त्रिविधैः कमलैश्चापि रक्तनीलसरोरुहैः ॥
बहुधा राजते श्रेष्ठं तपः सिद्धिप्रदायकं ।

ततश्चम्पाबनयात्राप्रार्थनमन्त्रः—

देवगन्धर्वकीर्णाय चम्पाबन नमोऽस्तु ते । सकलेष्टप्रदायैव ललितारमणाय ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । देवयोनिं समालभ्य सर्वदा सुखमाप्नुयात् ॥

प्रार्थनामन्त्र यथा—हे माधुरी निर्मित माधुरीकुण्ड ! मानिनी रूप आपको नमस्कार । आप पीले जलसे युक्त हैं । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करने से वाणी मीठी होती है और वह मनुष्यों का प्रिय होता है ॥ ४० ॥

यहाँ श्रीराधिका अपनी प्रियसखी माधुरी के साथ विह्वल होकर मान करके श्रीकृष्ण को कुटिल नयन से देखने लगीं । माधुरी कर्तृक बहुत प्रकार प्रार्थना से प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण के साथ विलास करने लगीं । पहले मान और पीछे विलास करने के कारण इस स्थल का नाम मानमाधुरीविलासस्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे राधारमण विलास के लिये मानविलासमाधुरीस्थान ! अति सुख स्वरूप आपको नमस्कार । आप मानपूर्ण विलासमय स्थल हैं । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करे तो दम्पती में बहुत प्रकार की प्रीति बढ़ती है और सर्वदा सुख मिलता है । इति यह जातीबन का वर्णन हुआ ॥ ४१ ॥

अब चम्पाबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । कात्यायनसंहिता में—आषाढ़ शुक्ला षष्ठि में यहाँ यात्रा करें । यहाँ चम्पासखी नामक ललिताजी की प्रिय सखी ने ललितामोहन श्रीकृष्ण के क्रीड़ा विलास के लिये बनकी रचना करी है । यहाँ गोमतीजी ने आकर आश्रय कियाहै । जो अत्यन्त निर्म्मल तथा विमल क्रीड़ा कल्लोल के लिये हैं । जल इसका नील है । जो विविध द्रुमलता से युक्त है । रक्त, शुभ्र, नील रङ्ग के त्रिविध कमलों से यह विराजित है । यह स्थान तपस्या सिद्धि के लिये है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे चम्पाबन ! देवता, गन्धर्वों से युक्त आपको नमस्कार । आप सकल इष्ट को देने वाले हैं और ललितारमण

ततो गोमतीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोमती मनसोर्थाय सर्वकामप्रदायिने । तपसां सिद्धये तुभ्यं तीर्थराज नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनें नमन् । त्रिविधं सौख्यमाप्नोति कामधर्मार्थसंज्ञकं ॥
इति चम्पावनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं ॥ ४२ ॥

अथ नागवनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं । शक्रयामले—

वनयात्राप्रसंगं च भाद्रकृष्णे क्षमादिने । आगतो वनयात्रार्थी हस्त्यारोहसुखं लभेत् ॥
ऐरावतसमारूढो शक्रो यत्र समागतः । शचीजलविहारस्य क्रीड़ालोकनहेतवे ॥
सर्वाभिरप्सरोभिश्च जलक्रीड़ां करोद्धरिः । तत्रैवैरावतं मुच्य शक्रो क्रीड़ां प्रपश्यति ॥
यस्मान्नागवनं नाम जायते पृथिवीतले । इन्द्राणी रचयेत्कुण्डं जलक्रीड़ाविहारिणे ॥
गन्धर्वदेवताभिश्च अप्सरोगणसेवितं । शचीकुण्डं समाख्यातं भूमौ नागवने स्थितं ॥

ततो नागवनप्रार्थनमन्त्रः—

नमो नागवनायैव ऐरावतसमुद्भव । राज्यलक्ष्मीप्रदस्तुभ्यं सर्वदा विजयप्रद ॥
सप्तभिर्मंत्रमुच्चार्य नमस्कारं समाचरेत् । राज्यसम्पदमाप्नोति शक्रतुल्यपराक्रमः ॥

ततो शचीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

शचीनिर्मिततीर्थाय पातिव्रत्यस्वरूपिणे । नमः कैवल्यनाथाय रम्यतीर्थ नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं मुदाहृत्य द्वादशैर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं विधानेन कुर्यान्मोक्षपदं लभेत् ॥
यत्र स्नानकृता नारी सप्तजन्मपतिव्रता ॥ इति नागवनोत्पत्तिमहात्म्यनिरूपणं ॥ ४३ ॥

के सुख के लिये हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कारादिक करें तो देवयोनि के लाभ पूर्वक सर्वदा सुख को प्राप्त होता है। गौमतीकुण्ड का स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गौमति! हे तीर्थराज ! हे समस्त कामना को देने वाले! आपको नमस्कार। आप तपस्या सिद्धि के लिये हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करे तो काम, धर्म, अर्थ नामक तीन प्रकार सुख को प्राप्त होता है। इति चम्पावन उत्पत्ति महिमा ॥ ४२ ॥

अब नागवन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। शक्रयामल में—यहाँ भाद्र मास अमावस्या में यात्रा विधि है। उस दिन यहाँ आने से बनयात्री को हस्ती आरोहण का सुख प्राप्त होता है। यहाँ शची की जल-क्रीड़ा देखने के लिये इन्द्र ऐहरावत हाथी पर चढ़कर आया था। जहाँ श्रीहरि समस्त अप्सरागणों के साथ जल क्रीड़ा करते थे। यहाँ एहरावत को छोड़कर इन्द्र ने क्रीड़ा देखी इसलिये यह पृथ्वी में नागवन करके प्रसिद्ध है। इन्द्राणी ने जलविहार के लिये एक कुण्ड बनाया जो कि गन्धर्व, देवता, अप्सराओं से सेवित है और जिसका नाम शचीकुण्ड है। नागवन प्रार्थनामन्त्र—हे नागवन! आपको नमस्कार। आप ऐहरावत समुद्भव हैं। आप राज्य लक्ष्मी को देने वाले हैं। सर्वदा विजय दीजिए। इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो इन्द्र की बराबर पराक्रमी होकर राज्य सम्पदा को प्राप्त होता है। शचीकुण्ड स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे शची निर्मित तीर्थ! पातिव्रत्य स्वरूप आपको नमस्कार। हे रम्यतीर्थ! हे कैवल्य नायक! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १२ बार मज्जन, आचमन विधि पूर्वक करें तो मनुष्य मोक्ष पद को प्राप्त होता है। यहाँ स्नान करने से नारी सात जन्म पर्य्यन्त पतिव्रता होती है। इति नागवन का वर्णन हुआ है ॥ ४३ ॥

अथ तारावनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । शेषरामायणे—

श्रावण कृष्णसप्तम्यामागतो व्रजयात्रया । तारा यत्र तपस्तेपे कन्यापञ्चत्वसिद्धये ॥
भगवद्दर्शनार्थाय वरलाभाय दुश्चरं । यस्मात्तारावनं नाम विख्यातं पृथिवीतले ॥

ततस्तारावनप्रार्थनमन्त्रः—

तारावन नमस्तुभ्यं तपः सिद्धिस्वरूपिणे । देवयोनिसमुद्भूत कन्यायै वरदे नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । देवर्षियोनिमाप्नोति परमोक्षपदं लभेत् ॥
तारा यत्र कृतं स्नानं परिचर्यासुसिद्धये । ताराकुण्डं समाख्यातं तारावनमुपस्थितं ॥

ततस्ताराकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

तारानिर्मिततीर्थाय ताराकुण्डाभिधायिने । तीर्थराज नमस्तुभ्यं सर्वपापप्रणाशन ! ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत फलं शतगुणं लभेत् ॥
यत्रैव क्रियते दानं तारां रुक्ममयं कृतं । कर्षत्रयप्रमाणेन स्वर्गे हर्म्यं लभेन्नरः ॥

इति तारावनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ४४ ॥

अथ सूर्यपतनवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । आदित्यपुराणे—

श्रावणकृष्णद्वादश्यामागतो व्रजयात्रया । त्रेतायुगे समायाते सूर्यो यत्र पपात ह ॥
रावणस्य भयं लब्ध्वा श्रीरामशरणागतः । यतो सूर्य्यप्रपाताख्यं वनं यत्र प्रजायते ॥

ततो सूर्यपतनवनप्रार्थनमन्त्रः—

भास्कराय नमस्तुभ्यं भुवस्तलसमागतः । नमः प्रत्यक्षदेवाय तिमिरान्धविनाशिने ॥
इति द्वादशभिर्मन्त्रं समुच्चार्य नमस्करोत् । सर्वरोगैर्विनिर्मुक्तो धनधान्यमवाप्नुयात् ॥

अब तारावन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। शेषरामायण में—श्रावण कृष्णा सप्तमी में यहाँ आकर यात्रा करें। यहाँ तारा नामक कन्यका ने भगवत् दर्शन रूप वर प्राप्ति के लिये दुश्चर तपस्या की थी इसलिये तारावन करके यह प्रसिद्ध है। प्रार्थनामन्त्र—हे तारावन ! तुमको नमस्कार । तुम तपस्या-सिद्धि रूप हो। हे देवयोनि समुद्भूत कन्यका आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करें तो देवर्षि योनि को प्राप्त होकर परम मोक्ष का लाभ करता है। परिचर्य्या सिद्धि के लिये तारा ने यहाँ स्नान किया इसलिये यहाँ ताराकुण्ड है। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे तारा कर्तृक निर्म्मित ताराकुण्ड ! हे तीर्थराज ! तुमको नमस्कार। तुम समस्त पाप नाश करने वाले हो। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ वार मज्जन, आचमन, स्नान, नमस्कार करने से शतगुने फल को प्राप्त होता है। यहाँ तीन कर्ष सुवर्ण लेकर मूर्त्ति बनाकर दान करने से स्वर्ग में सुवर्ण महल मिलता है। इति तारावन उत्पत्ति महिमा ॥ ४४ ॥

अब सूर्य्यपतनवन की उत्पत्ति महिमा वर्णन करते हैं। आदित्यपुराण में—श्रावण कृष्णा द्वादशी में व्र.यात्रा के लिये यहाँ आवे। त्रेतायुग के आने पर रावण से भयभीत होकर सूर्य्यनारायण यहाँ पृथ्वी में पड़ कर श्रीरामजी के शरण में आये थे। इसलिये सूर्य्य प्रपात नामक बन उत्पन्न हुआ है। प्रार्थनमन्त्र यथा—हे भास्कर ! हे पृथ्वी में आगमनकारी सूर्य्यदेव ! आपको नमस्कार। आप अज्ञान अन्धकार के नाशक और प्रत्यक्ष देवता हैं। इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो समस्त रोगों से मुक्त होकर धन धान्यादिक को प्राप्त होता है। सूर्य्य यहाँ पर पड़ा था वहाँ एक लम्बा कूँआ होगया। इसलिये उसका नाम सूर्य्य कूप है। जो अनेक पुण्यों को बढ़ाने वाला है। वहाँ ५ कर्ष प्रमाण से सुवर्ण

यत्र स्थानेऽपतत्सूर्यो दीर्घकूपः प्रजायते । सूर्यकूपं समाख्यातं बहुपुण्यविवर्द्धनं ॥
यत्र स्नानकृतो धीमान् स्वर्णमूर्तिं रविं ददौ । पंचकर्षप्रमाणेन वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥
इति सूर्यपतनबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ४५ ॥

अथ बकुलबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । गौरीरहस्ये--
आषाढ़शुक्लद्वादश्यामागतो व्रजयात्रया । गोप्यो बकुलवृक्षाणां बनं चक्रुर्मनोहरं ॥
रमणार्थाय कृष्णस्य रूपं वैहारिणोऽत्रहि । बकुलाख्यं बनं जातं विख्यातं पृथिवीतले ॥
कृष्णसार्द्धं रमेद्गोपी यत्रोत्साहसुखं रतं ।

ततो बकुलबनप्रार्थनमन्त्रः—
गोपिकानिर्मितार्थाय बकुलानां बनाय ते । नमः परमरूपाय परमाल्हादरूपिणे ॥
इति मन्त्रं समुचार्य त्रिश्चप्रणतिमाचरेत् । मनोभिलाषिणीं नारीं लब्धा सौख्यमवाप्नुयात् ॥४६॥
यत्र गोप्यो सरोरम्यं निर्मयेयुर्मनोहरं । पीतारुणसितैर्नीलैर्जलैरूर्मिसमाकुलं ॥
अंगरागविनिर्धौतभिन्नकल्लोलशोभितं । जलक्रीड़ाविहारेण चिप्रबाहूरुनिर्भरैः ॥
विमलं क्रीडमानास्ताजगुः कृष्णं मनोरथैः । गोपीसरो समाख्यातं विख्यातं पृथिवीतले ॥

ततो गोपीसरोवरस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
नानाविमलवर्णाम्भःसरसे गोपिकार्चित ! नमः कल्मषनाशाय गोपिकासरसे नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत सर्वदा सुखमाप्नुयात् ॥ ४७ ॥
यत्र गोप्यः शुभां क्रीडां चक्रुः कृष्णमहोत्सवैः । क्रीडामण्डलमाख्यातं गोपीनां कृष्णगोष्टिकं ॥
गीतवाद्यसमायुक्तं नानारवमनोहरं ।

की मूर्त्ति बनाकर सूर्य्य को दान करने से बैकुण्ठ पद को प्राप्त होता है। इति सूर्य्यपतनबन का वर्णन॥४५॥

अब बकुलबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। गौरीरहस्य में—आषाढ़ शुक्लपक्ष द्वादशी में बकुलबन में आवे। गोपीगणों ने श्रीकृष्ण के विलास के लिये अनेक बकुल वृक्षों से इस वन का निर्म्माण किया है। इसलिए पृथ्वी में बकुलबन करके यह प्रसिद्ध हुआ। यहाँ श्रीकृष्ण के साथ गोपीगणों ने उत्सव सुख में रत होकर रमण किया था। बकुलबन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपिका निर्मित बकुलबन ! परम रूप आपको नमस्कार। आप परम आल्हाद रूपी हैं। इस मन्त्र का पाठ करके ३ बार प्रणाम करे तो नारी मनोभिलाषित फल को प्राप्त होकर सुखी होती है॥ ४६ ॥

यहाँ गोपियों ने मनोहर सरोवर का निर्म्माण किया। विचित्र, पीला, अरुण, काले, नीले, सफेद जल की लहर से यह युक्त है। यहाँ गोपीगण श्रीकृष्ण के साथ विविध जल विहार पूर्वक मनोरथ को प्राप्त हुईं। गोपियों के भुजादि प्रहार से यहाँ अँगराग समूह धुल गया है। जो पृथ्वी में गोपीसरोवर करके विख्यात है। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे गोपीका कर्तृक अर्च्चित गोपिकासरोवर ! कल्मष नाशकारी आपको नमस्कार। आप नाना प्रकार के रङ्गीन जल द्वारा शोभित हैं। इस मन्त्र के उच्चारण पूर्वक सात बार मज्जन, आचमन, स्नान करें और विधि पूर्वक नमस्कार करे तो सर्वदा सुख मिलता है॥४७॥

अनन्तर क्रीड़ामण्डल है। वहाँ गोपीगणों ने श्रीकृष्ण के महोत्सव रूप विविध प्रकार क्रीड़ा की है। यहाँ गोपियों की गोष्ठी होती थी। गाना, नृत्य, वाद्य के द्वारा यह स्थान परम मनोहर है। क्रीड़ा-मण्डल प्रार्थनामन्त्र—हे गोपिकाओं के रमण के लिये बनमंडल ! आपको नमस्कार। हे यशोदानन्दन

ततो क्रीड़ामण्डलप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकारमणार्थाय मण्डलाय नमोस्तु ते। यशोदानन्दनायैव कृष्णाय सततं नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य षोडशावृत्तिभिर्नमेत्। परं मोक्षपदं लेभे धनधान्यसमाकुलः ॥
इति बकुलबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं।

अथ तिलकबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं। वामनपुराणे—

नवम्यां श्रावणे कृष्णे बनयात्राप्रसंगतः। आगतो व्रजयात्रार्थी तिलकाख्यं बनं शुभं ॥
मृगावत्याप्सरा यत्र शृङ्गारतिलकं करोत्। गोपीनां सुकुमारीणां कृष्णवेषाभिधायिनां ॥
बहुतिलकवृक्षाणां रोपणं रमणं करोत्। तिलकाख्यं बनं जातं सर्व सौभाग्यवर्धनं ॥

ततस्तिलकबनप्रार्थनमन्त्रः। बृहद्गौतमीये—

शृङ्गारतिलकाभ्यस्तु गोपिकाभ्यो नमो नमः। बनाय तिलकाख्याय बनराज नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या प्रणतिं कुरुते नरः। सकलेष्टप्रदां नित्यं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ४६ ॥
मृगावतीकृतं स्नानं गोपिकाभिः समन्विता। यतो मृगावतीकुण्डं विख्यातं पृथिवीतले ॥

ततो मृगावतीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

मृगावतीकृतार्थाय तीर्थराज नमोस्तु ते। ताम्रवर्ण पयोद्भूत ब्रह्महत्यादिघातक ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिर्मज्जनाचमैः। नमस्कारं प्रकुर्वीत परमैन्द्रपदं लभेत् ॥
इति तिलकबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ५० ॥

अथ दीपबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं। भविष्ये—

जेष्ठशुक्लद्वितीयायां व्रजयात्राप्रसंगतः। दीपनामबनं गत्वा परिपूर्ण सुखंलभेत् ॥

श्रीकृष्ण! आपको नमस्कार। इस मन्त्र का पाठ कर १६ बार नमस्कार करे तो धन, धान्य से सुखी होकर परम मोक्ष को प्राप्त होता है। इति बकुलबन की उत्पत्ति महिमा समाप्त ॥ ४८ ॥

अब तिलकबन की उत्पत्ति और महिमा कहते हैं। वामनपुराण में—श्रावणमास की कृष्णा नवमी तिथि में व्रजयात्रा प्रसंग में तिलकबन की आकर यात्रा करें। मृगावती नामक अप्सरा ने यहाँ कृष्ण चेष्टाकारिणी गोपियों का शृङ्गार व तिलक किया था। अनेक तिलक वृक्षों के रोपण से तिलक बन उत्पन्न हुआ है, जो परम सौभाग्य बढ़ाने वाला है। तिलकबन प्रार्थनामन्त्र यथा—बृहद्गौतमीय में—हे शृङ्गार-तिलक विशिष्टा गोपियाँ! आप सबको नमस्कार। हे तिलक नामक बनराज! आपको नमस्कार। इस मंत्र के १० बार पाठ पूर्वक प्रणाम करे तो समस्त कामनाओं को अवश्य प्राप्त होता है ॥ ४६ ॥

यहाँ मृगावती ने गोपियों के साथ स्नान किया इसलिये मृगावती कुंड पृथ्वी में विख्यात हुआ है। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे मृगावती कर्तृक निर्मित तीर्थराज! आपको नमस्कार। आपका जल ताम्रवर्ण है और ब्रह्महत्या का नाश करने वाला है। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार स्नान, आचमन, नमस्कार करें तो परम इन्द्र पद को लाभ करता है। इति तिलकबन वर्णन हुआ ॥ ५० ॥

अब दीपबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। भविष्य में—ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया में व्रजयात्रा प्रसंग से दीपबन की यात्रा करने से परिपूर्ण सुख को प्राप्त होता है। यहाँ श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ (कार्तिक पूर्णिमा के दिवस) दीपदान किया है यहाँ पर मनुष्य कार्तिक मास में दीपदान करने से त्रिलोक मोहिनी लक्ष्मी को प्राप्त होता है और चार प्रकार के अर्थ को प्राप्त होकर धन धान्य से सुखी होता है।

यत्र कृष्णः सगोपीभिः दीपदानं समाचरेत् । मासि कार्तिकपूर्णे तु जगन्मंगलकारके ॥
यत्रैव दीपदानं च कुरुते कार्तिके नरः । त्रैलोक्यमोहिनीं लक्ष्मीं धनधान्यसमाकुलां ॥
चतुर्गुणमयीं लेभे चतुर्वर्गफलप्रदं ।

ततो दीपवनप्रार्थनमन्त्रः—

नमो दीपवनायैव कमलेष्टप्रदायिने । सगोपिकाय कृष्णाय नमस्ते नन्दसूनवे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य दशधा प्रणतिञ्चरेत् । दीपदानफलं लेभे त्वन्यमासेषु दर्शनात् ॥ ५१ ॥
यत्र रुद्रोऽकरोत्स्नानं कृष्णदर्शनलालसः । रुद्रकुण्डं समुद्भूतं सकलेष्टप्रदं नृणां ॥

ततो रुद्रकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

रुद्रकुण्डाय ते तुभ्यं नमो रुद्रविनिर्मित । सकलेष्टप्रदायैव तीर्थराज शुभप्रद ! ॥
इत्येकादशधा मन्त्रं पठित्वा मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत सर्वकल्याणमाप्नुयात् ॥५२॥
लक्ष्मीनारायणं मूर्त्तिं स्थापयेदर्थसिद्धये । रुद्रो मोक्षप्रदार्थाय कृष्णमायाविमोहितः ॥

ततो लक्ष्मीनारायणप्रार्थनमन्त्रः । लक्ष्मीरहस्ये—

लक्ष्म्यासह सुखासीन नारायण नमोस्तु ते । कलिदोषविनाशाय संतत्युद्भवहेतवे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्यः द्वादशैः प्रणतिं चरेत् । धनवान् पुत्रवान् लोको कीर्तिमांश्च प्रजायते ॥
इति दीपवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ५३ ॥

अथ श्राद्धवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । गारुडे—

वैशाखस्यासिते पक्षे तृतीयासंभवे दिने । व्रजयात्रा समायाता नाम श्राद्धवनं शुभं ॥
इदञ्च यादवानाञ्च मोक्षरूपप्रदस्थलं । यतस्तु यादवाः सर्वे बलदेवप्रभृतयः ॥

दीपवन प्रार्थनामन्त्र—हे दीपवन ! आपको नमस्कार । आप लक्ष्मी के भी इष्ट को देने वाले हैं । हे गोपिका के साथ नन्दपुत्र श्रीकृष्ण ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार प्रणाम करे । और महीना में दर्शन मात्र से ही दीपदान फल को प्राप्त होता है ॥ ५१ ॥

यहाँ रुद्रकुण्ड है । श्रीकृष्ण के दर्शनार्थ रुद्रजी स्नान करते थे । इसलिये समस्त इष्ट को देने वाला रुद्रकुण्ड उत्पन्न हुआ है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे रुद्रकुण्ड ! आपको नमस्कार । आप रुद्रकर्तृक निर्म्मित हैं । आप समस्त इष्ट को देने वाले हैं । हे तीर्थराज ! आपको नमस्कार । आप शुभ को देने वाले हैं । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक स्नान,आचमन,मज्जन करें तो समस्त कल्याण को प्राप्त होता है ॥५२॥

यहाँ रुद्र जी ने अर्थ सिद्धि के लिये लक्ष्मीनारायण मूर्त्ति की स्थापना की है । श्रीकृष्ण की माया से मोहित रुद्र यहाँ मोक्ष पद के लिये अर्चना करते थे । लक्ष्मीनारायण प्रार्थनामन्त्र यथा—लक्ष्मीरहस्य में–हे लक्ष्मीजी के साथ सुख पूर्वक विराजित श्रीनारायण ! कलिदोष नाश के लिये तथा सन्तान सन्तति के लिये आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १२ बार नमस्कार करे तो मनुष्य धनवान् पुत्रवान् और कीर्त्तिमान् होता है । यह दीपवन की महिमा वर्णन किया गया है ॥ ५३ ॥

अब श्राद्धवन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । गारुड़ में—वैशाख के कृष्णपक्ष की तृतीया के दिन श्राद्धवन की यात्रा करें । यह यादवों को मोक्ष देने वाला स्थल है । यहाँ बलदेव प्रभृति यादवों ने अपने पित्रों को मोक्ष के लिये श्राद्ध किया था । यहाँ श्राद्ध करने से अक्षय फल का लाभ होता है । जो अपमृत्यु से मरा है, अग्नि से जला है, जिसको प्रेतयोनि प्राप्त हुई है, जो अन्धा है, जिसके सन्तान नहीं है, जो वंश

श्राद्धं कुर्वन्ति मोक्षाय पितृणामक्षयं फलं । अपमृत्युमृतो लोको वह्निदाहादिना यतः ॥
प्रेतत्वयोनियुक्तांघोऽसन्तानो निर्वंशकः । यत्र श्राद्धमवाप्नोति प्रेतत्वं मुच्यते क्षणात् ॥
पितृदेवगतायोनिं प्राप्नोत्यत्र न संशयः । पुत्रवान् धनवान् भूयादित्युक्त्वा च वरं ददौ ॥
यतो श्राद्धबनं जातं विख्यातं पृथिवीतले ।

ततो श्राद्धबनप्रार्थनमन्त्रः —

अक्षयं पुण्डरीकाक्ष प्रेतमुक्तिप्रदो भवः । नमः श्राद्धबनं तुभ्यं पितृदेव नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा नमस्कारं त्रयं चरेत् । तस्यैव पितरो यान्ति अक्षयपदसंज्ञकं ॥
आश्विने वाथवा पौषे मासयोरुभयोरपि । कृष्णपक्षे करोच्छ्राद्धं गयाश्राद्धफलं लभेत् ॥
पायसस्य कृतं पिण्डमन्यधान्यविवर्जितं । पितृणामक्षयं सद्यः सर्वदा तृप्तिकारकं ॥ ५४ ॥
बलदेवकृतं श्रेष्ठं सद्यः श्राद्धबनं शुभम् । यत्रैव बलभद्रस्तु नित्यस्नानं समाचरेत् ॥
मध्याह्नोदयवेलायां यदूनां श्राद्धहेतवे । नाम श्रीबलभद्रस्य कुण्डं पापप्रणाशनं ॥
विख्यातं पृथिवीलोके स्थितं श्राद्धबने शुभे ।

ततो बलभद्रकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

बलभद्रकृतायैव तीर्थराज नमोस्तु ते । वैमल्यजलपूर्णाय कुण्डाय सततं नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य दशधा मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत् मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥ ५५ ॥
नीलकण्ठशिवस्यापि मूर्तिं संस्थापयेद्बली । यत्रैव यादवानाञ्च मोक्षायार्थविभूतये ॥

ततो नीलकंठशिवप्रार्थनमन्त्रः । लैंगे—

भवायाकाशरूपाय नीलकंठाय ते नमः । जलमूर्ते नमस्तुभ्यं यदूनां मोक्षदायक ! ॥
इत्येकादशभिर्मन्त्रं पठंस्तु प्रणतिञ्चरेत् । धनधान्यसुखादींश्च लभते नात्र संशयः ॥
इति श्राद्धबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ५६ ॥

शून्य है, वह भी यहाँ श्राद्ध को प्राप्त करके प्रेतयोनि से मुक्त होकर पितृयोनि को प्राप्त होता ह। इसलिये इसका नाम श्राद्धबन है। श्राद्धबन प्रार्थनामन्त्र—हे अक्षय! हे पुण्डरीकाक्ष! हे श्राद्धबन! हे पितृदेव! आप सबको नमस्कार। आप प्रेतयोनि से मुक्त करने वाले हो। इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से उसको पितृगण अक्षय पद को प्राप्त होते हैं। आश्विन किम्वा पौष मासके कृष्ण पक्ष में श्राद्ध करने से गया श्राद्ध फल को लाभ करते हैं। पायस का पिण्ड बनाकर देने से पितर लोकों का अक्षय फल तथा तृप्ति होती है ॥ ५४ ॥

बलदेव कर्तृक रचित श्राद्धबन है। यहाँ बलभद्र जी नित्य स्नान करते हैं व मध्याह्न के उपस्थित होने पर यादवों को बुलाकर श्राद्धादिक दान करते हैं। इसलिये पृथ्वी में विख्यात पाप नाशक बलभद्रकुंड है। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे बलदेव निर्म्मित तीर्थराज कुण्ड! विमल जल से परिपूर्ण आप को नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार नमस्कार, स्नान, मज्जन, आचमन करने से मुक्तिभागी होता है ॥ ५५ ॥

वहाँ बलदेवजी ने नीलकण्ठ महादेव जी की मूर्त्ति स्थापित की जिससे यादवों की मोक्ष व वैभव बढ़े। नीलकंठ शिव का प्रार्थनामन्त्र यथा—लैंग में—हे भव! हे आकाशरूप! हे नीलकंठ! आपको नमस्कार। हे जलमूर्त्ति! हे यादवों को मोक्ष देने वाले! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ११ बार पाठ

अथ षट्पदवनोत्पत्तिनिरूपणं । भविष्योत्तरे—

वैशाखशुक्लसप्तम्यां व्रजयात्री समागतः । यत्रैव भ्रमरानेकाः नानारवसमाकुलाः ॥
बहुधा रवमाचक्रुर्गोपिका क्रीडनोत्सवाः । यस्मात् षट्पदनामानं वनं ख्यातं भुवस्तले ॥

ततो षट्पदवनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकारमणस्थान भ्रमरावलिसंकुल । षट्पदाख्यवनायैव नमस्तुभ्यं वरप्रद ॥
इति षड्भिः समुच्चार्य मन्त्रं च प्रणतिञ्चरेत् । सर्वदा स्त्रीसुखं लेभे धनधान्यसमन्वितः ॥५७॥
यत्र राधादयो गोप्यः कटिं बद्ध्वा हरेः करैः । आलिंगनं समाचक्रुर्भ्रमगारावमोदिताः ॥
ताडयन्नच्युतं कृष्णं स्नापयेयुर्मदोद्धताः । दामोदरं प्रषिंचेयुर्जलवैहारनिर्भरैः ॥
नाम दामोदरं कुण्डं विख्यातं पृथिवीतले । गोपीकृष्णं महातीर्थं नानावर्णजलाप्लुतं ॥

ततो दामोदरकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

सगोपीस्नानरम्याय वेषदामोदराय ते । नमः कैवल्यनाथाय तीर्थराज नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमत् । सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वसौभाग्यसम्पदं ॥
यत्र गोप्यो प्रियं मूर्तिं दामोदरस्वरूपिणं । स्थापयेयुर्गणोत्साहैर्नित्यदर्शनलालसाः ॥ ५८ ॥

ततो दामोदरस्वरूपदर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

दामोदर महाभाग गोपीवश्य वरप्रद ! । शतकोटिसखीनाञ्च वल्लभाय नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य षोडशावृत्तिभिर्नमेत् । मुक्तिभागी भवेल्लोको वैकुण्ठं वसते सदा ॥

इति षट्पदवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ५६ ॥

पूर्वक प्रणाम करे तो धन, धान्य, सुखादि अवश्य लाभ करता है। इति। यह श्राद्धवन की उत्पत्ति महिमा हुई ॥ ५६ ॥

अब षट्पदवन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। भविष्योत्तर में—वैशाख शुक्लपक्ष की सप्तमी में यहाँ यात्रा करें। यहाँ भ्रमरों ने गोपियों की क्रीड़ा उत्सव में नाना प्रकार के शब्द किये हैं। इस कारण पृथ्वी में षट्पदवन करके प्रसिद्ध है। षट्पदवन की प्रार्थनामन्त्र—हे गोपियों के रमणस्थल ! हे भ्रमर समूह से व्याप्त ! हे षट्पद नामक वन ! वर देने वाले आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक प्रमाण करे तो सर्वदा धन धान्य व स्त्री सुख का प्राप्त होता है ॥ ५७ ॥

यहाँ राधिका प्रभृति व्रजांगनाओं ने स्वहस्त से श्रीकृष्ण की कमर बाँध कर आलिंगन किया और मदोन्मत्ता होकर अच्युत श्रीकृष्ण को ताड़ना पूर्वक स्नपन कराया तथा विविध जल विहार से दामोदर का जल से सिंचन किया। इसलिये पृथ्वी में यह दामोदर कुण्ड प्रसिद्ध हुआ है जो महातीर्थ तथा नाना वर्ण के जल से युक्त है। दामोदरकुंड स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे महाभाग ! हे दामोदर ! हे गोपीवश ! हे वरदाता ! हे शतकोटि गोपियों के वल्लभ ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन, नमस्कार करने से मुक्तिभागी होकर वैकुण्ठ पद को प्राप्त होता है। इति षट्पदवन का वर्णन ॥ ५८ ॥

यहाँ गोपियों ने नित्य दर्शन लालसा से प्रिय दामोदर मूर्त्ति की स्थापना की थी। मन्त्र यथा—हे दामोदर ! हे महाभाग ! हे गोपीवश्य ! वरप्रद शतकोटि सखियों के वल्लभ आपको नमस्कार। इस मंत्र के १६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से मुक्तिभागी हो वैकुंठ प्राप्त होता है ॥ ५६ ॥

अथ त्रिभुवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । विष्णुरहस्ये—

वैशाखकृष्णपूर्णायां व्रजयात्री समागतः । त्रयाणां भुवनानाञ्च यत्र सौख्यं करोद्धरिः ॥

गोपीभ्यो शतकोटीभ्यो बहूत्सवमनोरथैः । यतस्त्रिभुवनं नाम बनं जातं महीतले ॥

ततस्त्रिभुवनबनप्रार्थनमन्त्रः—

नमस्त्रैलोक्यसौख्याय मंगलोत्सवहेतवे । कलानां निधये तुभ्यं धनधान्यादिदायकः ॥

इत्यष्टधा पठेन्मत्रं नमस्कारं समाचरेत् । त्रैलोक्यसंभवां लक्ष्मीं भुंक्ते भूमिपदेस्थितः ॥ ६० ॥

यत्रैव कामनाः पूर्ण गोपीनाञ्चाकरोद्धरि । स्नानं चकार गोपीभिः सह कृष्णो सुखोत्सवैः ॥

यतो कामेश्वरं कुण्डमिच्छापूर्णजलाप्लुतं ।

ततो कामेश्वरकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

काम्योत्सवप्रपूर्णाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते । धनधान्यसुखोत्पत्तिसौख्यरूपाय ते नमः ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य त्रिशत्या मज्जनाचमैः । नमस्कारं चकारात्र वांछितं फलमाप्नुयात् ॥६१॥

गोप्योऽत्र दर्शनार्थाय बासुदेवस्वरूपकं । स्थापयेयुः सुखाल्हादैः परिपूर्ण मनोरथाः ॥

ततो वासुदेवप्रार्थनमन्त्रः—

नमस्ते बासुदेवाय गोपिकाबल्लभाय च । नमः परमरूपाय देवकीनन्दनाय च ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य यथा शक्त्या नमश्चरेत् । परं मोक्षपदं याति धनधान्यसमृद्धिमान् ॥

दर्शनाद्वासुदेवस्य मुक्तिभागी भवेन्नरः । इति त्रिभुवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ६२ ॥

अथ पात्रबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । महाभारते—

वैशाखस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यामुपागते । व्रजयात्राप्रसंगेन पात्राख्यवनसंज्ञकं ॥

अब त्रिभुवनबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। विष्णुरहस्य में—वैशाख शुक्लपक्ष में व्रजयात्रा की विधि है। यहाँ शतकोटि गोपियों के साथ श्रीहरि ने विविध विलास पूर्वक तीनों भुवनों के उत्सवों के सुख प्रदान किये थे। इसलिये त्रिभुवन नामक वन की उत्पत्ति हुई है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे तीन लोकों के सुखकारक! हे मंगल उत्सव के लिये कलानिधि त्रिभुवनबन! आपको नमस्कार। आप धन धान्य को देने वाले हैं। इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो त्रैलोक्य संभव लक्ष्मीका भोग करता है॥६०॥

यहाँ श्रीकृष्ण ने गोपियों की कामना पूर्ण की और विविध सुख उत्सव के साथ स्नान किया। इसलिये काम्येश्वरकुण्ड की उत्पत्ति हुई है। काम्येश्वरकुंड का स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र—हे काम्य उत्सव पूर्णकारी काम्येश्वर तीर्थराज! आपको नमस्कार। आप धन, धान्य, सुख, सम्पत्ति व पुत्र दायक हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करें तो मज्जन, स्नान, आचमन से वाञ्छित फल का लाभ करता है॥ ६१ ॥

यहाँ गोपीगणों ने सुख दर्शन के लिये मनोहर बासुदेव मूर्ति की स्थापना पूर्वक परिपूर्ण मनोरथ को प्राप्त किया था। बासुदेव दर्शन प्रार्थनामन्त्र—हे बासुदेव! हे गोपिकाबल्लभ! हे श्रेष्ठ स्वरूप! हे देवकीनन्दन! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक यथा शक्ति नमस्कार करें तो धन धान्य से युक्त होकर परम मोक्षपद को प्राप्त होता है। बासुदेवजी के दर्शन से मुक्तिभागी हो जाता है। इति यह त्रिभुवन बन की उत्पत्ति महिमा वर्णन किया गया है॥ ६२ ॥

अब पात्रबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। महाभारत में-वैशाख शुक्लपक्ष त्रयोदशी के दिन यहाँ

द्वापरस्य युगस्यान्ते राजा कर्णोऽभवत्सुधीः । धातूनांतु चतुर्णां सस्वर्ण रुक्मप्रभृतिनां ॥
ताम्रकांस्यद्वयोश्चैव पात्राणि च चकारह । घृतशर्करगोधूमतिलपूर्णानि तूर्यं च ॥
सद्रव्याणि द्विजातिभ्यो ददौ दानमनुत्तमं । अंगिरात्रिभरद्वाजकश्यपेभ्यो प्रणम्य च ॥
यस्मात्पात्रबनं नाम विख्यातं पृथिवीतले ।

ततो पात्रबनप्रार्थनमन्त्रः—

सर्वधातुमयस्थान स्वर्णभूमि नमोस्तु ते । रत्नगर्भ नमस्तुभ्यं पात्रस्थल नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं शतावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । पात्रदानफलं लेभे पुण्यं कोटिगुणं फलं ॥
यथा शक्त्या करोद्दानं चतुष्पात्रं सधातुकं । चतुष्पात्रादि धान्यं च द्विजेभ्यो सविधानतः ॥
सर्वान्कामानवाप्नोति सहस्रगुणितं फलं ॥६३॥
यत्र कर्णो महात्यागी नित्यस्नानं चकार ह । सुवर्णनिर्मितं कुण्डं नीलाम्भः कमलान्वितं ॥
यत्र स्नात्वा करोद्दानं दशभारसुवर्णकं । माघकार्तिकयोश्चैव पक्षयोरुभयोरपि ॥
दान कुण्डो भवेदत्र पुण्यं कोटिगुणं फलं ॥

ततो दानकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

सर्वाक्षयप्रदस्तीर्थ दानकुण्ड नमोस्तु ते । सदेहकर्ण मोक्षाय नमः पापप्रणाशिने ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । सकलेबरजीवात्मा वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥ ६४ ॥

ततो कर्णदर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

कर्णाय दानरूपाय कौरवाय नमोस्तु ते । सर्वकल्मषनाशाय मुक्तिदो मुक्तिमूर्तये ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य पञ्चभिः प्रणतिञ्चरेत् । मुक्तिभागी भवेल्लोको दर्शनान्नात्र संशयः ॥
इति पात्रबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ६५ ॥

व्रजयात्रा प्रसंग है । द्वापरयुग के अन्त में कर्ण नामक प्रतापी दानवीर राजा हुए हैं । उन्होंने सुवर्ण, चाँदी, ताम्र व काँसे के विविध प्रकार के बर्तन बनाकर उसमें घृत, शक्कर, गोधूम, तिल भरकर अंगिरा, अत्रि, भरद्वाज, कश्यप को प्रणाम पूर्वक दान दिया इसलिये इसका नाम पात्रवन है । पात्रबन का प्रार्थनामन्त्र— हे समस्त धातुपूर्ण स्थान ! हे सुवर्णभूमि ! हे रत्नगभ ! आपको नमस्कार । हे पात्र स्थान ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो पात्र दान का फल लाभ करता है और उसका कोटि गुण फल मिलता है । यहाँ यथाशक्ति चार प्रकार धातुओं के पात्र बनाकर उसमें घृतादि चार प्रकार के द्रव्य रखकर ब्राह्मणों को यथा विधि दान करने से समस्त कामना मिलती है व उसके सहस्रगुण फल मिलता है ॥ ६३ ॥

यहाँ महायोगी कर्ण माघ और कार्तिक दोनों पक्ष में नित्य स्नान पूर्वक दश भार सुवर्ण का दान करते थे । इसलिये इसका नाम दानकुण्ड है । जो सुवर्ण से निर्म्मित है तथा नील कमलों मे व्याप्त है । स्नाना-चमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे समस्त अक्षय प्रदान करने वाले तीर्थराज ! दानकुण्ड ! आपको नमस्कार । आप कर्ण के मोक्ष के लिये हैं और घोर पापों के नाश करने वाले हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो वह वैकुण्ठ पद का लाभ करता है ॥ ६४ ॥

कर्णमूर्त्ति का दर्शन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे कर्ण ! हे दानवीर ! हे दानरूप ! हे कौरव ! आप को नमस्कार । आप समस्त कल्मष को नाश करने वाले हैं । आपसे मुक्ति मिलती है आप मुक्ति की मूर्त्ति

अथ पितृवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । विष्णुपुराणे—

जेष्ठकृष्णत्रयोदश्यां व्रजयात्राप्रसंगतः । आगतो पितृयात्रार्थी पितृणामाशिषं लभेत् ॥

आजगाम मुनिश्रेष्ठो श्रवणो पितृवत्सलः । तीर्थयात्राप्रसंगेन पित्रोरन्धस्वरूपिणोः ॥

स्कन्धारोहणसंयुक्तो स्वतीर्थं रचयेऽत्रहि । कवरीवटमूलेस्मिन्निधाय स्नपनं चरेत् ॥

यतो पितृवनं नाम भवति पृथिवीतले । स्नपनाच्छ्रवणं कुण्डं सर्वतीर्थोत्तमोत्तमं ॥

ततो पितृवनप्रार्थनमन्त्रः—

नमः पितृवनायैव पुत्रवात्सल्यहेतवे । मोक्षरूपनिवासाय भगस्तुभ्यं नमोस्तु ते ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । चिरजीवी भवेल्लोको परिवारविवर्धनः ॥ ६६ ॥

ततो श्रवणकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

तीर्थराज नमस्तुभ्यं श्रवणेन विनिर्मित । पापौघशमनायैव सर्वधर्मस्वरूपिणे ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य पञ्चभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत परमायुः स जीवति ॥ ६७ ॥

ततो वटस्थस्कन्धारोहणदर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

नमो मात्रेऽन्धरूपिण्यै नमः पित्रेऽन्धरूपिणे । वरादायै नमस्तुभ्यं वरदाय नमोस्तु ते ॥

इति द्वादशभिर्मन्त्रं पठंस्तु प्रणतिञ्चरेत् । पुत्रसौख्यमवाप्नोति नित्योत्सवविवर्धनः ॥

इति पितृवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ६८ ॥

अथ विहारवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । ब्रह्माण्डे—

जेष्ठशुक्लचतुर्थ्यांतु व्रजयात्राप्रसंगतः । आगतो व्रजयात्रार्थी विहाराख्यवनं शुभं ॥

यत्रैव शतकोटिभिर्गोपीभीरासमाचरेत् । नन्दसुनुर्महोत्साहैर्झंकाररवमोहनैः ॥

हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार प्रणाम करें तो मनुष्य दर्शनमात्र से ही मुक्तिभागी होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है । इति पात्रबन का वर्णन ॥ ६५ ॥

अब पितृबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । विष्णुपुराण में—ज्येष्ठ कृष्णा त्रयोदशी में पितृबन में आकर पितर लोक का आशिष लेवें । यहाँ पितृवत्सल मुनिराज श्रवण तीर्थ करते हुए अन्ध पिता, माता को कन्धे पर चढ़ाकर आये और अपने कबीर को बर के पेड़ के नीचे उतार कर स्नान किया । इसलिये पृथ्वी में सर्व तीर्थों से उत्तम श्रवणकुण्ड करके यह प्रसिद्ध हुआ है । पितृबन प्रार्थनामन्त्र—हे पितृबन ! हे मोक्षरूप ! हे पुत्रवात्सल्य के लिये । हे शिव कर्तृक स्तुत्य ! निवासार्थ आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो मनुष्य चिरंजीवी तथा विविध परिवार से युक्त होता है ॥६६॥

श्रवणकुण्ड स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे श्रवण द्वारा विनिर्मित तीर्थराज ! आपको नमस्कार । आप पाप समूह को नाश करने वाले और समस्त धर्म्म स्वरूप हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक पाँच बार मज्जन, आचमन द्वारा नमस्कार करें तो उसकी परमायु बढ़ती है ॥ ६७ ॥

अनन्तर बट के नीचे स्कन्ध आरोह दर्शन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे अन्ध रूपिणि माता ! अन्धरूप पिता ! वर देने वाले आप दोनों को नमस्कार । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो मनुष्य पुत्र सुख लाभ पूर्वक नित्य उत्सवानन्द का अनुभव करता है । इति पितृबन का वर्णन ॥ ६८ ॥

अब विहारबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । ब्रह्माण्ड में—ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थी में व्रजयात्री विहार नामक वन में आवे । यहाँ नन्दनन्दन श्रीकृष्ण ने शतकोटि व्रजांगनाओं के साथ झंकार नूपुर रव से

नाना विमलरूपेण विहारं रतिविह्वलं । विहारबनमाख्यातं यस्मान्नाम भविष्यति ॥
तन्मध्ये स करोद्रासं रासमंडलमद्भुतं । विख्यातं त्रिपुलोकेषु बहुसौभाग्यवर्द्धनम् ॥
ततो विहारबनप्रार्थनमन्त्रः—
गोपिकानिर्मितायैव नन्दसूनुविहारिणे । देवर्षिदुर्ल्लभ श्रेष्ठ बनराज नमोस्तु ते ॥
इति षोडशभिर्मंत्रं पठित्वा प्रणतिं चरेत् । सर्वदा परिवारेषु रमते स महोत्सवैः ॥ ६६ ॥
ततो शतकोटीगोपिकारासमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—
गोपीभ्यो शतकोटीभ्यो स कृष्णाभ्यो नमोस्तु ते । देवादिपरमोत्साह रासगोष्ठि नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । धनधान्यसुखं लव्ध्वा परमोक्षप्रदं लभेत ॥ ७० ॥
आगत्य वरुणो यत्र वारुणीं मदिरां करोत् । कृष्णपानाय गोपीनां पानाय मदविह्वलां ॥
वैहारविह्वलाः गोपीः कृष्णं वैहारविह्वलं । दृष्ट्वा करोन्महातीथ वारुणीकुण्डमुत्तमं ॥
सुरापानकृतो मोहाद्यत्र दोषो विमुच्यते ।
ततो वारुणीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
नमो वरुणरम्याय वारुणीकुण्ड ते नमः । इन्द्रादिलोकपालानां वरदाय नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं नवावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । दशद्वारकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥
इति विहारबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ७१ ॥
अथ विचित्रबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । वृहद्गौतमीये—
वैशाखशुक्लपञ्चम्यामागतो व्रजयात्रया । यत्र गोप्यो विचित्राणि रचयेयुः सुमंगलं ॥
नानावर्णानि रम्यानि मनोज्ञानि सुनिर्मलाः ।

परिपूर्ण विविध उत्साह युक्त होकर नाना पवित्र रति विहार किया है इसलिये इसका नाम विहारवन है। यहाँ रास विहार के कारण अद्भुत रासमण्डल हैं। जो सौभाग्य बढ़ाने वाला है और तीन लोक में विख्यात हैं। विहारबन प्रार्थनामन्त्र—हे गोपिकागण निर्म्मित नन्दनन्दन के विहार के लिये अद्भुत बनराज! आपको नमस्कार है। आप श्रेष्ठ हैं और देवर्षि दुर्लभ हैं। इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो समस्त परिवारों में सुखी होकर रमण करता है ॥ ६६ ॥

अनन्तर शतकोटि गोपियों का रासमण्डल प्रार्थनामन्त्र—हे श्रीकृष्ण के साथ शतकोटि गोपियों! आप सबको नमस्कार। हे देवताओं को परम आनन्द देने वाली रासगोष्ठि! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो धन,धान्य, सुख के लाभ पूर्वक परम मोक्ष को प्राप्त होता है ॥७०॥

यहाँ मदोन्मत्ता गोपियों के लिये किम्वा मदोन्मत्त श्रीकृष्ण के लिये वरुणदेव ने आकर वारुणी मदिरा बनायी। श्रीकृष्ण ने गोपियोंके साथ वारुणी पीकर विविध लीला विलास किया तथा वारुणी नामक महाकुंड को उत्पन्न कराया। मोह से भी सुरापान करने वाला मनुष्य यहाँ स्नान करने से दोषों से मुक्त होता है। स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र—हे वरुणरम्य वारुणीकुंड! हे इन्द्रादि लोकपाल को वर देने वाले! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो दश द्वार में किये पाप से मुक्त हो जाता है। इति विहारबन का वर्णन ॥ ७१ ॥

अब विचित्रबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। वृहद्गौतमीय में—वैशाख शुक्ला पञ्चमी में व्रजयात्री यहाँ आवें। जहाँ गोपीगणों ने विचित्र प्रकार के सुमङ्गलों की रचना की है जो नाना प्रकार के

ततो विचित्रबनप्रार्थनमन्त्रः—

विचित्ररूपिणे तुभ्यं नमस्ते क्रीड़नस्थल । गोपीनिर्मितवासाय जगदानन्दहेतवे ॥

इति मन्त्रं षडावृत्या पठित्वा प्रणतिञ्चरेत् । परत्रेह च प्राप्नोति चित्रवैचित्रमन्दिरं ॥७२॥

कृष्णस्य मन्दिरं चक्रुश्चित्रवैचित्रशोभितं । नानाविमलक्रीडाभिः रमणाय मनोहरं ॥

ततश्चित्रमन्दिरप्रार्थनमन्त्रः—

नानावर्णविचित्राय गोपिकानिर्मिताय च । अत्युत्सवविलासाय रमणाय नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य षोडशावृत्तिभिर्नमेत् । चित्रं समर्पयेद्यत्र लिखित्वा विधिपूर्वकं ॥

सर्वदा सुखसंयुक्तं मन्दिरं लभते नरः ॥ ७३ ॥

चित्रलेखा सखी रम्या यत्र स्नानं चकार ह । सखीभिः सह रम्याभिर्मन्दिरारम्भसिद्धये ॥

ततश्चित्रलेखाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

चित्रलेखाकृततीर्थ चित्रविमलवारिणे । तीर्थराज नमस्तुभ्यं सर्वदा वरदायिने ॥

इति मन्त्रं नवावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । चित्रविचित्रकार्याणि सिद्धयंति सकलान्यपि ॥

इति विचित्रबनोत्पतिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ७४ ॥

अथ विस्मरणबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । मात्स्ये—

वैशाखकृष्णपञ्चम्यां व्रजयात्राप्रसंगतः । यत्र गोप्यो हरिं त्यक्त्वा भ्रमेयुः कृष्णचिन्तनीः ॥

कृष्णस्तुगोपिकाश्चिन्वन् भ्रमन् घोरबने मुहुः । रूपं केशवमाधाय विस्मितोऽत्र स्थीयते ॥

तस्माद्विस्मरणं नाम जातं बनमहद्भुतं ।

ततो विस्मरणबनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकादर्शनान्वेषबनाय च नमोऽस्तु ते । केशवाल्हादसंजात धूम्रवर्णाय ते नमः ॥

इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा नमस्कारं समाचरेत् । भूमिद्रव्यमवाप्नोति स्वकीयं वापरात्मकं ॥७५॥

वर्णों से मनोहर और निर्मल है। प्रार्थनामन्त्र—हे विचित्र रूपि क्रीड़ास्थल ! आपको नमस्कार। गोपीगण द्वारा रचित विचित्र मन्दिरों से आप परिपूर्ण हैं और जगत् के आनन्द के लिये हैं। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो परलोक में चित्र विचित्र मन्दिर प्राप्त होता है ॥ ७२ ॥

अनन्तर चित्र मन्दिर है। गोपीगणों ने श्रीकृष्ण का चित्र विचित्र मन्दिर बनाकर विविध क्रीड़ा विलास किया इसलिये चित्र मन्दिर उत्पन्न हुआ है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपीगण निर्मित नाना वर्ण से रचित विचित्र चित्र मन्दिर ! आपको नमस्कार। आप अत्यन्त उत्सव विलास के लिये हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १६ बार नमस्कार करे। यहाँ विधि पूर्वक चित्र लिखकर अर्पण करने से सर्वदा सुख पूर्ण विविध मन्दिर प्राप्त होता है ॥ ७३ ॥

यहाँ मनोहरा चित्रलेखा सखी ने सखीयों के साथ मन्दिर आरम्भ सिद्धि के लिये स्नान किया था। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे चित्रलेखा सखी द्वारा निर्मित विमल जल से पूर्ण चित्रलेखा नामककुंड ! आपको नमस्कार। आप तीर्थराज हैं व सर्वदा वर को देने वाले हैं। इस मन्त्र के ९ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो उसके चित्र विचित्र अनेक कार्य्य सिद्ध होते हैं। इति विचित्रबन का महिमा वर्णन ॥ ७४ ॥

अब विस्मरण बन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। मात्स्य में—वैशाख कृष्ण पञ्चमी में व्रजयात्री

केशवो गोपिकाः लब्ध्वा यत्र स्नानं चकार स। कुण्डं केशवमाख्यातं विख्यातं पृथिवीतले ॥
ततो केशवकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
गोपिकाशक्तरूपाय केशवाय नमोस्तु ते। स्नपिताय भगोस्तुभ्यं विमलाङ्गध्र ते नमः ॥
इति षोडशभिर्मंत्रं मज्जनाचमनैं र्नमन्। सर्वपापविनिर्मुक्तो मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥
इति विस्मरणबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ७६ ॥
अथ हास्यबनोत्पत्तिमाहात्म्यं। कौर्म्ये—
पूर्णायाञ्च सितेपक्षे वैशाखे व्रजयात्रया। प्रारम्भो शुभदो प्रोक्तो हास्य नाम बनाच्छुभात् ॥
सर्वा राधादिगोप्यस्तु गोपालं हास्यमाचेरुः। यतो हास्यबनं जातं नाम विख्यातकीर्तितं ॥
हास्यबनप्रार्थनमन्त्रः—
गोपीहास्यस्वरूपाय कृष्णलोलविधायिने। नानाल्हादविनोदाय नमो वैमल्यमूर्तये ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिस्तु नमश्चरेत्। सर्वदा हास्यक्रीड़ाभिजायतेऽहर्निशं सुखं ॥
वियोगं न कदा पश्येत् विनोदं लभभे सदा ॥ ७७ ॥
गोप्यो गोपालमारुध्य स्नापयेयुर्महोत्सवैः। नानागानविधानेन चुचुम्बुश्चिबुकं हरेः ॥
यतो गोपालकुण्डञ्च विख्यातं नाम संभवं।
ततो गोपालकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
मनोरमाय गोपीनां कृष्णाल्हादनतत्पर। नमो गोपालकुंडाय तीर्थराज नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं पठन्नित्यं शक्त्यावृत्या नमश्चरेत्। मज्जनाचमनैः पूर्वैर्विध्येषा ब्रह्मणोदिता ॥

यहाँ यात्रा करे। यहाँ गोपीगण हरि को त्याग कर ढूँढ़ने लगी और श्रीकृष्ण गोपीगणों को छोड़कर ढूँढ़ने लगे व केशव रूप का धारण करके यहाँ ठहरने के कारण विस्मित हुए इसलिये विस्मरण नामक वन-राज की उत्पत्ति हुई। विस्मरणबन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपिका अन्वेषण बन ! हे केशव के आल्हाद से धूम्रवर्ण स्वरूप ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो अपनी किम्वा अपर की भूमी को प्राप्त होता है ॥ ७५ ॥

केशव ने गोपियों के लाभ पूर्वक यहाँ स्नान किये थे। वहाँ केशवकुंड हुआ। केशवकुंड स्नाना-चमन प्रार्थनामन्त्र—हे गोपीगणों से आशक्त स्वरूप ! हे केशव ! आपको नमस्कार। आप महासौभाग्य शील के स्नान के लिये है, विमल अङ्ग गन्ध से आप धुले हुए हैं। इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक मज्जन, स्नान, आचमन, नमस्कार करें तो समस्त पापों से मुक्त होकर मुक्तिभागी होता है। इति विस्मरण बन का वर्णन ॥ ७६ ॥

अब हास्यबन की उत्पत्ति महिमा वर्णन करते हैं। कौर्म्य में—वैशाख पूर्णिमा में व्रजयात्री हास्यबन यात्रा का प्रारम्भ करें। यहाँ समस्त राधिकादि गोपीगणों ने गोपाल से हास्य किया था इसलिये यह हास्यवन नाम से प्रसिद्ध हुआ है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपीहास्य स्वरूप ! हे कृष्ण को चञ्चल करने में विचक्षण ! आपको नमस्कार। आप नाना प्रकार के आल्हाद विनोद को देने वाले हैं और विशुद्ध मूर्त्ति वाले हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करने से सर्वदा हास्य क्रीड़ा आनन्द से रहता है। उसका कभी वियोग नहीं होता है ॥ ७७ ॥

गोपीगणों ने श्रीगोपाल को रून्ध कर महोत्सव पूर्वक स्नान कराया और चिबुक का चुम्बन

मुक्तिवान् धनवान् यात्री गवामधिपतिर्भवेत् ॥ इति हास्यबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥७८॥
अथ जन्हुवनोत्पत्तिमाहात्म्यं । ब्राह्मे—
जेष्ठशुक्लचतुर्दश्यां ब्रजयात्राप्रसंगतः । प्रदक्षिणाप्रपूर्णास्तु कोणदक्षिणगामिनी ॥
जन्हु नाम मुनिश्रेष्ठो यत्र तपे महत्तपः । अयुतद्वयवर्षेण त्रेतायुगसमागमे ॥
रामो दाशरथिर्भूत्वा कृतार्थं कुरुते हरिः । गंगां त्यक्त्वा ऋषिर्भूमौ वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥
यतो जन्हुवनं नाम विख्यातं पृथिवीतले ।
ततो जन्हुवनप्रार्थनमन्त्रः—
देवगन्धर्वसेव्याय नानाद्रुमलतार्चित । विकल्मषाय मोक्षाय तपस्थल नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं करोति यः । ब्रह्महत्यादिनिर्मुक्तो वैकुण्ठपदमाप्नुयात् ॥७९॥
नित्यस्नानं चकारात्र जन्हुश्च तपसांनिधिः । जन्हुकूपसमाख्यातं गंगापातसमुद्भवं ॥
जन्हुऋषिकूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
गंगापातसमुद्भुत ! जन्हुतीर्थ नमोम्तु ते । सर्वकल्मषनाशाय जन्हुकूप नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं त्रिधावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । धनधान्यसुखं तस्य गंगास्नानंफलं लभेत् ॥
इति जन्हुवनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ८० ॥
अथ पर्वतबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । वाराहे—
पञ्चम्यां जेष्ठशुक्ले तु ब्रजयात्राप्रसंगकं । प्रलयान्ते नगैकोऽसौ संस्थितो पृथिवीतले ॥

किया इसलिये यह गोपालकुण्ड करके प्रसिद्ध है । स्नानाचमन—प्रार्थनमन्त्र यथा—हे गोपियों के लिये मनोहर ! हे श्रीकृष्ण के आल्हादन में तत्पर ! हे तीर्थराज गोपालकुण्ड ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के नित्य पाठ पूर्वक १४ बार नमस्कार, स्नान, आचमन करें । यह विधि ब्रह्माजी ने कही है । मनुष्य मुक्तिवान् धनवान् गोमान होता है । इति । यह हास्यबन की उत्पत्ति महिमा हुई ॥ ७८ ॥

अब जन्हुबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । ब्राह्म में—ज्येष्ट शुक्ल चतुर्दशी में ब्रजयात्री प्रदक्षिणा करें जो दक्षिण कोण गामी है । त्रेतायुग के आने पर जन्हु नामक मुनिराज ने २०००० वर्ष यहाँ तपस्या की थी तथा श्रीहरि ने दासरथी राम होकर उन्हें कृतार्थ किया । ऋषिजी गंगा को छोड़कर वैकुण्ठ में गये । इसलिये यह स्थल पृथ्वी में जन्हुबन करके प्रसिद्ध हुआ है । प्रार्थनामन्त्र—हे देवगन्धर्व सेवित नाना प्रकार के वृक्ष लतादि से युक्त तपस्या स्थल ! आपको नमस्कार । आप कल्मष नाशकारी तथा मोक्ष के लिये हैं । जो इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे वह ब्रह्महत्या से मुक्त होकर वैकुंठ पद को प्राप्त होता है ॥ ७९ ॥

तप के भण्डार जन्हुऋषि यहाँ नित्य स्नान करते थे । इसलिये यहाँ जन्हु कूप की उत्पत्ति हुई है । गंगा जी यहाँ आकर गिरी हैं । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र—हे गङ्गाजी के गिरने से उत्पन्न जन्हुकूप ! आपको नमस्कार । आप समस्त कल्मष नाश करने वाले हैं । इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक स्नानाचमन मज्जन, नमस्कार करे तो उसको धन, धान्य, सुख और गङ्गास्नान फल मिलता है । इति जन्हुबन का वर्णन ॥ ८० ॥

अब पर्वतबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं । वाराह में—ज्येष्ठ शुक्ला पञ्चमी में यहाँ यात्रा विधि है । प्रलय के अन्त में एक पर्वत यहाँ रखा गया था । यहाँ हरि ने वाराह रूप से जन्म लिया था । पृथ्वी

वाराहरूपमास्थाय यत्र जातो स्वयं हरिः । भूमेरुद्धारणार्थाय पातालमधिरोहति ॥
यतोपर्वतनामात्र बनं चक्रुश्च यादवाः ।

ततोपर्वतबनप्रार्थनमन्त्रः—

वाराहजन्मरम्याय पर्वताख्य बनाय च । नमः कल्याणरूपाय सुवर्णादिस्वमूर्तये ॥
इति मन्त्रं नगावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सर्वदा पृथिवीलोके चिरजीवी भवेन्नृपः ॥८१॥
भूमिप्रवेशतो जातं कुण्ड वाराहसंज्ञकं ।

ततो वाराहकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

वाराहनिर्मिततीर्थ नीलवारिपरिप्लुत । तीर्थराज नमस्तुभ्यं सर्वदा वरदो भव ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं करोद्यस्तु पृथुतुल्यपराक्रमः ॥
इति पर्वतबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं ॥ ८२ ॥

अथ महाबनोत्पत्तिमाहात्म्यनिरूपणं । वृहद्गौतमीये—

महान्महाऋषिर्नाम यत्र तेपे महात्तपः । वर्षपञ्चसहस्रैस्तु द्वापरान्ते महामुनिः ॥
बैकुण्ठपदलाभाय कृष्णदर्शनलालसः । यस्मान्महाबनं नाम जायते पृथिवीतले ॥

ततो महाबनप्रार्थनमन्त्रः—

तपः पीठ नमस्तुभ्यं कृष्णक्रीड़ावरप्रद । त्रैलोक्यरमणक्षेत्र महाबन नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिः प्रणतिञ्चरेत् । सर्वान्कामानवाप्नोति चिरञ्जीवी भवेन्नरः ॥
भाद्रशुक्लनवम्यान्तु बनयात्रां समाचरेत् । क्रमतः पादविक्षेपैर्धनवान् पुत्रवान्भवेत् ॥८३॥
पक्षवासरसंभूतो यशोदानन्दनो हरिः । अन्धकारस्वरूपेण तृणावर्तो महासुरः ॥

को धारण करने के लिये पाताल में प्रवेश करने के कारण यादवों ने इस स्थल का नाम पर्वतबन रखा है। प्रार्थनामन्त्र—हे वराह भगवान के जन्म के कारण मनोहर ! हे पर्वत नामक बनराज ! हे कल्याण स्वरूप ! हे सुवर्णादिरूप ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो सर्वदा पृथ्वी में चिरञ्जीवी होता है ॥ ८१ ॥

भूमि में प्रवेश हो जाने के कारण यहाँ वाराह नामक कुण्ड उत्पन्न हुआ। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे वराह निर्म्मित तीर्थ ! हे नील जल से परिपूर्ण बाराहकुंड ! आपको नमस्कार। आप वर को दीजिये। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन, आचमन, नमस्कार करने से पृथुतुल्य पराक्रमी होता है। इति पर्वतबन का वर्णन ॥ ८२ ॥

अब महाबन की उत्पत्ति महिमा कहते हैं। वृहद्गौतमीय में—महाऋषि नामक बड़े भारी ऋषि ने द्वापर के अन्त में ५००० वर्ष पर्य्यन्त बैकुण्ठ प्राप्ति और श्रीकृष्ण दर्शन के लिये तपस्या की। इसलिये पृथ्वी में यह स्थल महाबन करके प्रसिद्ध है। प्रार्थनामन्त्र—हे तपस्या पीठ ! हे कृष्णक्रीड़ा वर को देने वाले ! हे तीन लोक में मनोहर क्षेत्र ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करें तो समस्त कामनाओं को प्राप्त होकर चिरजीवी होता है। भाद्र शुक्ला नवमी तिथि में यहाँ बनयात्रा करें तो क्रमण के समय एक एक चरण का क्षेपण में धनवान् पुत्रवान् होता है ॥ ८३ ॥

श्री कृष्ण ने १५ दिन की अवस्था में बालघाती तृणावर्त्त को यहाँ आकाश से गिराकर मारा था इसलिये तृणावर्त्त नाशक नाम से यहाँ कुण्ड उत्पन्न हुआ। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे बासुदेव के

जगाम गोकुलं रम्यं कुर्वन्मुद्रितलोचनान् । कृष्णं नीत्वा मुत्रो लोकादगच्छन्नभसः पथा ॥
ज्ञात्वा हरिस्तृणावर्त्तमसुरं बालघातिनं । यत्रैव स्वपतद्भूमौ जघान पदमुष्टिना ॥
तृणावर्त्तो लभेन्मोक्षं देवयोनिसमाकुलः । यतो कुण्डं समुद्भूतं तृणावर्तविनाशकं ॥
ततस्तृणावर्तनाशककुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
वासुदेवप्रसादेन मुक्तरूप नमोस्तु ते । तीर्थराज नमस्तुभ्यं नेत्ररोगभयापह ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य षड्भिर्मज्जनमाचरेत् । दिव्यदृष्टिं समालभ्य विष्णुलोकमवाप्नुयात् ॥
यत्रैव नेत्रपीडार्तो पुष्यान्धो तारकान्वितः ! स्नानाचमनमस्कारैर्दिव्यदृष्टिमवाप्नुयात् ॥ ८४ ॥
विष्णुयामले—यत्रैव सखिभिः सार्द्धं रामकृष्णौ बलोद्धतौ । मल्लमल्लाख्यतीर्थाख्यं संजातं पृथिवीतले ॥
यत्रैव देवताः सर्वे नमस्कारं शतं चरेत् । असुरघ्नं बलं लब्ध्वा सर्वकामानवाप्नुयुः ॥
कृशांगो दुर्बलो दुःखी कृष्णतुल्यपराक्रमः ॥ ८५ ॥
ततो देवाः समाजग्मुः शरीरारोग हेतवे । समस्तव्रजरक्षार्थं गोपेश्वरसदाशिवं ॥
स्थापयेयुः सुखार्थाय सर्वकल्याणहेतवे । त्रयस्त्रिंशनमस्कारान् करोति मनसा धिया ।
चिरजीवी भवेल्लोको गोपेश्वरप्रसादतः ॥८६॥
भविष्ये—भ्रूणहत्यादिपापानां कृमीकीटविधायिनां । विनाशाय समाचक्रुस्तप्तसामुद्रकूपकं ॥
यादवाः देवताः सर्वे वातशीतादिशान्तये । शतावृत्याकरोत्स्नानं विमुक्तो जायते नरः ॥
तप्तसामुद्रिके कूपे कुर्यात्स्नानं विधानतः । गोदानपञ्चकं दद्यात्कांचनं पञ्चप्रस्थकं ॥
वस्त्रं पञ्च सितं रक्तं हरितं पीतधूम्रकं । रुक्मादि पञ्च पात्राणि पञ्चमुद्रायुतानि च ॥
सर्वैस्तु कल्मषैर्मुक्तो परिवारैः सुखं व्रजेत् ॥ ८७ ॥

प्रसाद से मुक्तरूप ! हे नेत्ररोग नाशकारी तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार मज्जन, आचमन करने से दिव्य दृष्टि पाकर विष्णुलोक को जाता है। यहाँ अन्धा, काणा, नेत्र रोग से पीड़ित व्यक्ति, स्नानादि करने से दिव्य दृष्टि को प्राप्त होता है ॥ ८४ ॥

विष्णुयामल में—यहाँ सखाओं के साथ कृष्ण, बलदेव ने बल से उद्धत होकर विविध क्रीड़ा किये थे । यहाँ मल्लामल्ल नामक तीर्थ की उत्पत्ति हुई । यहाँ देवतागण नित्य शतवार नमस्कार करते हैं और असुर नाशकारी बलदेव को पाकर समस्त कामनाओं को प्राप्त होते हैं । यहाँ कृशांग, दुर्बल, दुःखी व्यक्ति कृष्ण के तुल्य पराक्रमी हो जाते हैं ॥ ८५ ॥

अनन्तर देवतागण ने आकर शरीर के आरोग्य के लिये तथा समस्त व्रज की रक्षा के लिये गोपेश्वर महादेव जी का स्थापन किया जो समस्त सुख कल्याण के लिये है। जो मन बुद्धि से ३३ बार नमस्कार करें वह गोपेश्वर जी के प्रसाद से चिरञ्जीवी होता है ॥ ८६ ॥

भविष्य में कहा है—भ्रूणहत्यादि पाप, कृमी कीडा सम्बन्धी पापों के नाश के लिये यादवगण तथा देवतागण कर्तृक तप्त सामुद्रिक कूप उत्पन्न हुआ था । जो शीत, वातादिक शान्ति के लिये है । यहाँ १०० बार स्नान करने से मनुष्य अवश्य विमुक्त हो जाता है । तप्तसामुद्रिक कूप में विधि पूर्वक स्नान कर पाँच गौदान, ५ प्रस्थ सुवर्ण का दान, सफेद, रक्त, हरा, पीला, धूम्र रंग के पाँच वस्त्रों का दान, सुवर्ण, चाँदी प्रभृति पाँच प्रकार के पात्र का दान, ५ अयुत मुद्रा का दान करने से समस्त परिवारों के साथ कल्मषों से मुक्त होकर सुखी होता है ॥ ८७ ॥

पञ्चकागतमृत्युश्च यथापूर्वविधायकः । तथैव निर्मलत्वाय पूर्वशान्तिविधायकः ॥
प्राणे च विद्यमाने तु जीवन् कंठनिरोधके ।

अथ पञ्चकागतमृत्यौ प्राणेविद्यमाने पूर्वमेव प्रायश्चित्तः । कुलार्णवे—

धनिष्ठादिकनक्षत्रेस्वागतेषु च पञ्चसु । मृत्यौ कण्ठागते काले विद्यमाने तु जीवके ॥
पूर्वमेव विधानेन प्रायश्चित्तं समाचरेत् ।

अमृतादिशुभेष्वेषु घटिकादिष्वहर्निशं । नक्षत्रपञ्चकेष्वेषु पञ्चविंशगुणं फलं ॥
पञ्चवासरकेष्वेषु त्वथवापञ्चमासिके । अथवा पञ्चवर्षेषु तादृशं फलमीक्षयेत् ॥
पंचकेष्वादिकेष्वेव पञ्चविंशगुणं फलं । विंशं द्वितीयके जातं तिथिगुण्यं तृतीयके ॥
दशश्चतुर्थके जाते पंचके पंचकं गुणं । तुर्येषु चरणेष्वेव भिन्नभिन्नफलं स्मृतं ॥
बालस्तरुणवृद्धेषु मृयते तत्स्वरूपिणः । सपाद षट् हनन् जीवान् धनिष्ठातुर्यपादकः ॥
सार्धद्वादशजीवांश्च धनिष्ठागततृतीयकं । एकोनविंशकं हन्यात् वासवद्वितीयाह्निकः ॥
प्रथमे पंचविंशाश्च जीवान्हन्यात्कुलोद्भवान् । स्वकुलेऽवाथवा मातुः प्रोहिते कन्यकाकुले ॥
प्रियेषु हन्यते जीवान् समीपस्थान्पुरादिषु ।

यांतिर्निबन्धे-जीवन् पूर्वकृताशान्तिमृ तद्दोषो न विद्यते । दानं पंचविधं प्रोक्तं पंचनक्षत्रदारुणे ॥

तत्रादौ धनिष्ठाशान्तिः महार्णवे—

स्वेतगोदानपंचैव सितवस्त्रं च पंचकं । कांस्यपात्रं च पंचैव चतुःप्रस्थप्रमाणतः ॥
पात्रेषु संलिखेन्मन्त्रं चन्दनेन विधानतः ।

मन्त्रः—वासवाय नमस्तुभ्यं शान्तिं यच्छ शुभां मृतौ । कुटुम्बसकलेष्वेव दानेन सह रम्यतां ॥ इति मंत्रः—
पञ्चधा लिखयेन्मन्त्रं समुद्रां दानमाचरेत् । धनिष्ठाऋक्प्रपाठेभ्यो विप्रेभ्यो पंचसंख्यया ॥
कुटुम्बेषु मनुष्यास्तु भवन्ति परमायुषः । इति विद्यमाने जीवे धनिष्ठाशान्तिः ॥

अथ सतभिषाशान्तिः—

उशक्रयामले—रक्तगोदानपंचैव पञ्चपात्रं च ताम्रकं । रक्तवस्त्रं च पंचैव विप्रेभ्यो दानमाचरेत् ॥
मन्त्रं संलिख्य पात्रेषु चन्दनेन नियोजयेत् ।

मन्त्रः—वरुणाय नमस्तुभ्यं कुरु मे शान्तिं मानवीं । सकलारिष्टनाशाय कुटुम्बपरमायुषे ॥ इतिमं०—
शतभिष्सूक्तपाठेभ्यो द्विजेभ्यो दानमाचरेत् । सर्वकौटुम्बलोकेषु परमायुः स जीवति ॥
इति विद्यमाने जीवे शतभिषाशान्तिः ।

अथ रोगग्रस्ते पूर्वमेव पूर्वभाद्रपदशान्तिः । देवीपुराणे—

स्वेतगां हरितश्रृङ्गां हरिद्रुसमन्वितां । त्रिविधं च कृतंपात्रं सप्तप्रस्थप्रमाणतः ॥
मन्त्रं त्रिषु लिखेद्धीमान् कुंकुमेन विधानतः ।

अनन्तर पञ्चकागत मृत्यु में प्राण रहने का पहिले ही यहाँ प्रायश्चितादि करें। ग्रन्थकार सम्पूर्ण विधि शास्त्रों से उठाते हैं, पंचम अध्याय शेष पर्य्यन्त। ग्रन्थ बढ़ जाने के कारण हम यहाँ अनुवाद नहीं रखते हैं। पाठकगण उद्धृत शास्त्र वचनों को देख लेवें।

मन्त्रः—अजपाद महाभाग नमोऽस्तु पृथिवीपते । शान्तिं प्रयच्छ मे देव कौटुम्बपरमायुषीं ॥ इतिमन्त्रः—
पूर्वभाद्रपदस्यापि अपराणि द्विजातयः । तेभ्यो दानं समर्प्यन्ति शान्तिमाप्नोति कौशलीं ॥
इति पूर्वभाद्रपदशान्तिः ॥

अथोत्तराभाद्रपदपूर्वशान्तिः दिवोदासनिबन्धे—
पीतगां पीतवस्त्रञ्च पीतपात्राणि कारयेत् । तन्दुलं परिपूर्णानि समुद्गाणि निधारयेत् ॥
तेषु मन्त्रं लिखेत्तत्र नवप्रस्थकृतेषु च ।
मन्त्रः—अहिर्बुध्न्य नमस्तुभ्यं पित्तालस्थ वरप्रद । कुटुम्बपरिवारेषु शान्तिं यच्छ नमोऽस्तु ते ॥ इतिमन्त्रः—
कुंकुमेन समभ्यर्च्य विप्रेभ्यो दानमाचरेत् । पंचके मृतकस्यापि जीवदोषो न विद्यते ॥
इति जीवविद्यमाने चतुर्थपञ्चकोत्तराभाद्रपदपूर्वशान्तिः ।

अथ पंचम पंचकरेवतीशान्तिः । प्रतापमार्तण्डे—
रुक्मस्य पंचपात्राणि प्रस्थमात्रं चकार ह । धूम्रवर्णमयींधेनु पंचमुद्रासमन्वितां ॥
धूम्रवर्णानि वस्त्राणि विद्यमाने कलेवरे । पात्रेषु नारिकेराणि धारयेन्मन्त्रमुच्चरेत् ॥
मन्त्रः—पूषणे भगवन्तुभ्यं नमस्ते पंचकान्तिक । कुटुम्बपरिवाराय मानुषीं शान्तिमाचर ॥ इतिमं० ॥
विप्रेभ्यो विधिवद्दद्यात् ग्रहशान्तिमवाप्नुयात् ।

इति रोगग्रस्ते धनिष्ठादिपंचकागतमृत्यौ पूर्वशान्तिः ।
ब्राह्मे—रोगग्रस्तो यदालोको योगस्त्रैपुष्करागतः । तदादौ क्रियते शान्तिर्विद्यमाने सजीवके ॥
दोषत्रिगुणशान्ताय प्रायश्चित्तं समाचरेत् । यथैव पंचके त्याज्यमशुभं कर्मसञ्ज्ञकं ॥
त्रैपुष्करेऽशुभे योगे श्राद्धादीनि विसर्जयेत् । दशगात्रविना श्राद्धं पक्षदोषो न विद्यते ॥
दशगात्रविशुद्धे न पक्षदोषोऽभिजायते । वृद्धौ शुभेऽत्र मांगल्ये योगस्त्रैपुष्करोऽशुभः ॥
त्रिगुणं फलदः प्रोक्तो नराणां शुभकर्मणि ॥

त्रैपुष्करयोगोत्पत्तिः । ज्योतिर्निबन्धे—
भद्रातिथिः शनिकुजार्कदिनेषु वह्नि द्वीशार्य मोत्तरपदपुनर्वैश्वदेवः ।
त्रैपुष्करो भवति यत्त्रिगुणाप्रदोयं योगो मृतौ त्याज्यभवो हि मानवैः ॥
शनौ कुजे रवेर्वारे धनिष्ठा मृगतक्षके । द्विगुणफलदो योगो ऽशुभे कर्माणि वर्जयेत् ॥
द्वौ योगौ च परित्याज्यावशुभे कर्मसंज्ञके । रोगग्रस्ते शरीरे तु प्राणो कंठगतस्तदा ॥
विद्यमाने तदा जीवे पूर्वशान्तिं समाचरेत् । नैव कृत्वा मृतात्पूर्वं प्रायश्चित्तं त्रिपुष्करे ॥
अशुभं त्रिगुणं कुर्य्यान्मृतश्राद्धादिकर्मणि ॥ इतिनिषेधः ॥

अथ मृत्यावागते काले विद्यमाने जीवे पूर्वमेवशान्तिः । शांत्यर्णवे—
गोदानत्रयं कृत्वा पीतरक्तसितासितं । एवं वर्णत्रयेणैव त्रीणि वस्त्रानि कारयेत् ।
कांस्यपित्तलिताम्राणां त्रीणि पात्राणि संचरेत् । प्रस्थत्रयप्रमाणेन त्रैपुष्करप्रशांतये ॥
तेषु मन्त्रं लिखेद्धीमान्सद्रव्यं पूर्णतण्डुलं ॥
मन्त्रः—ब्रह्मविष्णुमहेशेभ्यो नमस्ते त्रिगुणप्रद ! । त्रैपुष्करमघोरास्यं निवारय प्रसीद मे ॥ इतिमन्त्रः ॥
द्विजेभ्यस्तृतयेभ्यस्तु विधिपूर्वं समापयेत् । कौटुम्बपरिवारेषु परमायुः फलं लभेत् ॥
त्रैपुष्करस्य योगस्य जीविते शांतिमाचरेत् । मृतदोषो न विद्यते परमायुषजीविनः ॥
इति विद्यमानजीवे मृत्या आगते काले त्रैपुष्करयोगशान्तिः ॥

अथ द्विगुणकृतयोगशांतिर्मृत्याद्यागतसमये जीवविद्यमाने—

पाद्मे—वर्णद्वयं च गोदानं श्वेतरक्तं मनोहरं । तथैव पित्तलिकांस्यपात्रौ द्वौ प्रस्थपंचकं ॥
वस्त्रौ द्वौ सितरक्तौ च द्विगुणस्य प्रशांतये । विप्राभ्यां विधिवद्द्यात्सद्रव्यं रुक्ममुद्रकं ॥
नारिकेरयुतं कृत्वा तन्दुलेन प्रपूरितम् । तयोस्तु मन्त्रमालेख्य चंदनेन विचर्चयेत् ॥
द्विगुणं फलदो योगो विफलो जायते ध्रुवम् । मृतकर्मणि संत्याज्यमशुभे द्विगुणाभिधं ॥
पूर्वशांतिं न कुर्वीत जीवितं मृत्युमागतं । द्वयोस्तु जीवयोश्चैव मृत्युमाप्नोति कौलकीं ॥

मन्त्रः—त्वष्टेन्द्रसशिनस्तुभ्यं नमामि सकलेष्टदाः । प्रयच्छंतु शुभान्कामान् द्विगुणं मे निवारय ॥
इत्येते शुभदाः वृद्धौ मांगल्यदिशुभादिषु । अशुभादिषु कार्य्येषु ह्यशुभफलदाः स्मृताः ॥
इति रोगग्रस्ते कलेवरे जीवविद्यमाने द्विगुणयोगागते काले पूर्वमेव शान्तिः ॥

अथाश्विन्यादिसप्तविंशनक्षत्रेषु रोगशान्तिरभिधीयते—

अश्विन्यादिषु पीडा स्याज्ज्वरदाहो कलेवरे । तद्दोषशमनार्थाय ज्वरतापादिशांतये ॥
दानं कुर्य्याद्विधानेन रोगशांतस्तदा भवेत् ।

तत्रादौ अश्विन्यां रोगशांतये ऽश्विनीदानं ॥ आदित्यपुराणे—

सितमश्वं समादाय सुवर्णप्रतिमां रवेः । टंकप्रमाणतः कुर्य्यात्कांस्यपात्रे निधारयेत् ॥
घृतपूर्णे मुखं पश्येन्मन्त्रं द्वादशभिः पठेत् ।

मन्त्रः—भास्कराय नमस्तुभ्यं कौमाराय नमो नमः । अश्विनीसंभवां पीडां निवारय नवात्मकीं ॥
इति मन्त्रं त्रीभिरुक्त्वा दद्याद्दानं द्विजातये । ज्वरबाधाविनिर्मुक्तो स्नानमारोग्यमाप्नुयात् ॥
इत्यश्विन्यां रोगसंभवेऽश्विनीदानशान्तिः ॥

अथ भरण्यां रोगसंभवे भरणीदानशान्तिः । विष्णुधर्मोत्तरे—

द्विप्रस्थपरिमाणेन कांस्यपात्रं च कारयेत् । सार्द्धप्रस्थत्रयं नीत्वा तिलं श्यामांगनिर्मितं ॥
धर्मराजस्वरूपं च कृत्वा सौवर्णनिर्म्मितं । कर्षमात्रप्रमाणेन तिलपात्रे निवेशयेत् ॥
तिलपात्रे लिखेन्मन्त्रं कृष्णविप्राय दापयेत् ।

मन्त्रः—धर्मराज नमस्तुभ्यमेकादशदिनात्मकीं ॥ पीडां निवारय देव यमदोषसमुद्भवां ॥ इतिमंत्रः ॥
इति या कथिता शान्तिः भरण्याः नैरुजात्मकी । इति भरण्यां रोगसंभवे भरणीदानशांतिः ॥

अथ कृत्तिकायां रोगसंभवे कृत्तिकादानशान्तिः । अग्निपुराणे—

अग्निदोषसमुद्भूतो कृत्तिकासंभवो रुजः । तद्दोषशमनार्थाय दानमुत्तममीरितं ॥
कर्षमात्रसुवर्णेन वन्हेस्तु प्रतिमां करोत् । तण्डुलं पात्रमाध्याय प्रतिमां तत्र पूजयेत् ॥
मन्त्रं संलिख्य पात्रेऽस्मिन् दानं विप्राय दापयेत् ।

मन्त्रः—कृपीटाय नमस्तुभ्यं बाधां मे विनिवारय । नववासरसंभूतां वन्हिदोषसमुद्भवां ॥ इतिमन्त्रः ॥
इत्येना कथिता शान्तिः कृत्तिकायाः निरोजकी । आयुरारोग्यतां याति वन्हिदोषविवर्जितः ॥
इति कृत्तिकायां रोगसंभवे कृत्तिकादानशांतिः ।

अथ रोहिण्यां रोगसंभवे रोहिणीदानशान्तिः । ब्रह्माण्डे—

विप्रदोषाच्च रोहिण्यां ज्वरो भवति दारुणः । तद्दोषशमनार्थाय शान्तिदानं समाचरेत् ॥
पीतगां ब्रह्मणो मूर्त्तिं सुवर्णस्य चकारह । पीतपट्टस्य वस्त्रेण मन्त्रं संलेख्य छादयेत् ॥
टंकमात्रसुवर्णस्य प्रतिमा ब्रह्मणो शुभा ॥

मन्त्रः—पितामह नमस्तुभ्यं सप्तवासरसंभवां । निवारय महाभाग पीडामेऽतिज्वरोद्भवाम् ॥ इतिमंत्र—
ब्राह्मणाय ददौ दानं रोगनिर्मुक्ततां नयेत् ॥ इति रोहिणीदानशान्तिः ॥
मृगशीर्षे भवेद्रोगश्चन्द्रदोषसमुद्भवः । तज्ज्वरशमनार्थाय शान्तिदानं समाचरेत् ॥
कांस्यपात्रं समादाय प्रस्थद्वय प्रमाणकं । तन्मध्ये पायसं धृत्वा चन्द्रस्य प्रतिमां करोत् ॥
पंचकर्ष प्रमाणेन रुक्मेन शुभदायिनीं ॥

मन्त्रः—समुद्रतनय ! देव मासबाधां निवारय । रोहिणीपतये तुभ्यं द्विजरूपाय ते नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य दशभिः प्रणतिञ्चरेत् । ब्राह्मणाय ददौ दानं रोगनिर्मुक्ततां नयेत् ॥
इति मृगशीर्षशान्तिदानं । महार्णवे ॥

अथार्द्रायां रोगसम्भवे-आर्द्रादानशान्तिः । लगं—
आर्द्रायां जायते रोगो शिवदोषसमुद्भवः । तज्ज्वरशमनार्थाय दानशान्तिं चकार ह ॥
श्वेतवर्णं वृषं नीत्वा धूम्रवस्त्रेन छादितं । कर्षमात्रेण रुक्मेण शिवमूर्तिं प्रकल्पयेत ॥

मन्त्रः—वृषारूढ़ नमस्तुभ्यं शूलिने वरदायिने । आर्द्रारोगनिवृत्ताय रुद्रबाधां निवारय ॥
इत्येकादशभिर्मन्त्रमुच्चरन्प्रणमेच्छिवम् । ददौ दानं च विप्राय रोगनिर्मुक्ततां व्रजेत् ॥
इति आर्द्रादानशान्तिः ।

स्कान्दे—पुनर्वसौ भवेद्रोगो देवदोषसमुद्भवः । तज्ज्वरशमनार्थाय दानशान्तिं च कारयेत् ॥
पलार्द्धपरिमाणेन सुवर्णप्रतिमां शुभां । स्वशरीरानुसारेण सूत्रेण परिवेष्टयेत् ॥
रक्तपट्टेन संछाद्य हस्ते नीत्वा नरः सुधीः ।

मन्त्रः—देवायादितये तुभ्यं नमामि कामरूपिणे । सप्तवासरजां बाधां निवारय नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिः प्रणतिञ्चरेत् । द्विजाय च ददौ दानं दक्षिणाभिमुखो भवन् ॥
पुनर्वसुकृता शांतिः रोगनिर्मुक्ततां व्रजेत् ॥ इति पुनर्वसुदानशांतिः ॥

शौरिवंशे—पुष्यर्क्षे जायते रोगो गुरुब्राह्मणदोषतः । शान्तिदानं समाचक्रे ज्वरपीडादिशांतये ॥
बृहस्पतेः करोन्मूर्तिं कर्षमात्रसुवर्णतः । चणकद्विदलप्रस्थसप्तकं परिधाय च ॥
पीतवस्त्रे लिखेन्मंत्रं हरिद्राभिः सुधीर्नरः ।

मन्त्रः—बृहस्पते सुराचार्य नमस्ते पुष्यनायक ! । सप्तवासरजां बाधां निवराय सुदारुणां ॥ इतिमंत्रः—
सूत्रं शरीरमात्रेण पीतं तत्र निवेशयेत् । पश्चिमाभिमुखो भूत्वा दानं दद्याद्द्विजातये ॥
रोगनिर्मुक्ततां याति गुरुपुष्यस्य दानतः ॥ इति पुष्यदानशांतिः ॥

पाद्मे—अश्लेषायां भवेद्रोगो नागदोषसमुद्भवः । तद्दोषशमनार्थाय मृत्युरोगप्रशान्तये ॥
शेषस्य प्रतिमां कुर्यात् पलमात्रसुवर्णतः । द्वादशांगुलमानेन श्वेतवस्त्रेण छादयेत् ॥
शरीरसूत्रमानेन पुच्छं च परिवेष्टयेत् । प्रस्थत्रयप्रमाणेन तन्दुलं परिधाय च ॥
तन्मध्ये लेखयेन्मन्त्रं मुत्तराभिमुखो विशन् ।

मन्त्रः—पातालवासिने तुभ्यं मृत्युयोगादिशान्तये । नमोऽश्लेषापते देव शेषनाग प्रसीद मे ॥ इतिमंत्रः—
इत्येतत्क्रियते दानं ब्राह्मणाय तपस्विने । मृत्युयोगाद्विमुच्यते परमायुः सजीवति ॥
इति ऽश्लेषादानशान्तिः ।

गारुडे—मघायां जायते पीडा ज्वरदाहादिव्याकुला । विंशवासरजा पीडा पितृदोषसमुद्भवा ॥

तद्दोषविनिवृत्ताय पितृशान्तिं समाचरेत् । पलतुर्यप्रमाणेन स्वर्णमूर्तिं चकारह ॥
श्वेतवस्त्रे लिखेन्मन्त्रं छादयेदुत्तरे मुखः ।
मन्त्रः—विंशवासरजां पीडां निवारय गदाधर । पितृदेव नमस्तुभ्यं शरीरारोग्यतां कुरु ॥ इतिमन्त्रः—
मघानक्षत्ररोगस्य शान्तिदानं विधानतः । द्विजाय ऋग्प्रपाठाय वृद्धाय प्रणमन्ददौ ॥
इति मघादानशान्तिः ॥

वामनपुराणे—रोगः स्यात्पूर्वफाल्गुन्यां देवदोषसमुद्भवः । मृत्युयोगः समाख्यातस्तद्दोषशमनाय च ॥
शान्तिदानं समाचक्रे गोदानं दानमुत्तमं । रक्तवर्णमयीं धेनुं रक्तपट्टस्य वस्त्रकम् ॥
भगस्य प्रतिमां कुर्यात् सुवर्णपलमात्रतः । पट्टवस्त्रे लिखेन्मन्त्रं गोमूर्तिं परिछादयेत् ॥
मन्त्रः—भगाय च नमस्तुभ्यं मृत्यूद्भवकलेवर । मृत्युयोगभवां बाधां निवार्य्यसि मे प्रभो ॥ इतिमं० ॥
उत्तराभिमुखं विप्रं कृत्वादानं प्रदापयेत् । मृत्युयोगाद्विमुच्येत परमायुर्भवेन्नरः ॥
इति पूर्वाफाल्गुनीदानशान्तिः ।

नृसिंहे—रोगो ह्युत्तरफाल्गुण्यां राक्षसीदोषसंभवः । सप्तवासरजापीडा ज्वरादिमहादारुणा ॥
तद्दोषशमनार्थाय शान्तिदानं समाचरेत् । दध्योदनं महाश्रेष्ठं बहुशर्करयान्वितं ॥
ब्राह्मणान्सप्तसंख्यकान् भोजनं कारयेत्बुधः । पत्रेऽश्वत्थस्य संलिख्य मंत्रमुत्तरफाल्गुनी ॥
दक्षिणस्यां च दिग्भागे तडागे प्रक्षिपेज्जले । दृष्ट्वा च रोगिणं यत्र शीघ्रज्वरप्रशान्तये ॥
मन्त्रः—भगदेवाय ते तुभ्यं नमस्ते जलशायिने । सप्तवासरजां पीडां निवारय प्रसीद मे ॥ इतिमं० ॥
रोगनिर्मुक्ततां याति चिरजीवी भवेन्नरः । अल्पाद्विमुच्यते रोगी भगदेवप्रसादतः ॥
इत्युत्तरफाल्गुनीदानशान्तिः ।

भविष्योत्तरे—हस्तर्क्षे जायते रोगो रविदोषसमुद्भवः । पञ्चवासरजा पीडा ज्वरदाहातिदारुणा ॥
तद्दोषशमनार्थाय शान्तिदानं समाचरेत् । पञ्चाब्दगजमादाय सूर्य्यमूर्तिविराजितं ॥
दशगुंजाप्रमाणेन सुवर्णप्रतिमा शुभा । माषतंदुलमादाय दक्षिणे च शुभेकरे ॥
मंत्रं त्रिभिः समुचार्य गजोपरिपरिक्षिपेत् ।
मंत्रः—नमस्तुभ्यं गजेन्द्राय द्विरदाय जयैषिणे । पञ्चवासरजां पीडां निवारय प्रसीद मे ॥ इतिमं० ॥
कम्बलेन समाच्छाद्य दद्यादानं द्विजाय च । पूर्वाभिमुखमास्थाय नरो नैरुज्यतां व्रजेत् ॥
इति हस्तानक्षत्रदानशान्तिः ।

आदिपुराणे—चित्रायां जायते रोगो विप्रद्रोहसमुद्भवः । रुद्रवासरजा पीडा तद्दोषशमनाय च ॥
शान्तिदानं करोद्धीमान् रोगनिर्मुक्ततां व्रजेत् । धूम्रवर्णं वृषं नीत्वा गोधूमं मणसंख्यकं ॥
ताम्रपात्रे निधायात्र रक्तवस्त्रेण छादयेत् । तद्वस्त्रे लिखते मन्त्रं नमस्कृत्य विधानतः ॥
मंन्त्रः—त्वाष्ट्रदेव नमस्तुभ्यं चित्रेशाय नमोस्तु ते । रुद्रवासरजं रोगं निवारय सदा प्रभो ॥
ब्राह्मणाय ददौ दानमीशानाभिमुखोभवन् । त्वाष्ट्रदानविधिप्रोक्तः नराणां रोगमुक्तये ॥
इति चित्राशान्तिदानं ।

वायुपुराणे—स्वात्यां संजायते पीडा वायुदोषसमुद्भवा । मृत्युरोगः समाख्यातस्तस्मिन् रोगी न जीवति ॥
सर्वौषधिकृतेवापि विना शान्त्या न जीवति । मृत्युयोगविनाशाय शान्तिदानं समाचरेत् ॥
सदाशिवस्तुं नीत्वा सितस्याममहोज्वलं । शतप्रस्थप्रमाणेन तन्दुलं सितवर्णकं ॥
वृषपृष्ठे समाधाय धूम्रवस्त्रपरिवृतं । वायुकोणे समास्थाय व्यंजने मन्त्रमालिखेत् ॥

मन्त्रः—अञ्जनीपतये तुभ्यं वायवे स्वातिस्वामिने । मृत्युयोगभवां बाधां निवारय प्रसीद मे ॥ इतिमन्त्रः ॥
द्विजाय च ददौ दानं परमायुः सजीवति ॥ इति स्वातिनक्षत्रशान्तिदानं ॥

स्कान्दे—विशाखायां भवेद्रोगो देवाग्न्योः दोषसंभवः । तिथिवासरजा पीडा तद्दोषशमनाय च ॥
शक्राग्न्योःकारयेन्मूर्तिं कर्षमात्रसुवर्णजां । चतुः प्रस्थप्रमाणेन कांस्यपात्रं चकारह ॥
पंचप्रस्थप्रमाणेन तिलस्वेतं निधारयेत् । मन्त्रं तत्र लिखेद्धीमान् पीतरक्तेन वाससा ॥
पूर्वाभिमुखतोविश्य दद्याद्दानं द्विजातये ।

मन्त्रः—देवेन्द्राय नमस्तुभ्यं वह्नये ब्रह्मसाक्षिणे । पञ्चवासरजां पीडां निवारय प्रसीद मे ॥ इतिमं० ॥
उर्द्धाधोमुखमास्थाय नमस्कारं द्वयं चरेत् । रोगी निर्मुक्ततां याति विशाखादानशान्तितः ॥
इति विशाखाशान्तिदानं ।

मात्स्ये—रोगः स्यादनुराधायां मित्रदेवस्य दोषतः । षष्ठिवासरजा बाधा तद्दोषशमनाय च ॥
कर्षार्द्ध परिमाणेन सौवर्णेन चकारह । विधित्रन्मित्रदेवस्य रक्तवस्त्रेण छादितं ॥
प्रस्थत्रयप्रमाणेन ताम्रपात्रं चकारयेत् । रक्तं तत्र दधौ प्रस्थं लिखेन्मन्त्रं विधानतः ॥
उत्तराभिमुखोभूत्वा ब्राह्मणाय प्रदापयेत् ।

मंत्रः—मित्रदेव नमस्तुभ्यमनुराधापते नमः । निवारयसि मे बाधां षष्ठिवासरसंभवां ॥ इतिमं० ॥
कुर्याच्छान्तिं विधानेन रोगैर्विमुक्ततांनयेत् । इति अनुराधाशान्तिदानं ॥

शक्रयामले-ज्येष्ठायां संभवो रोगो मृत्युयोगसमागमे । न जीवति कदा रोगी तुर्यपादे यदा स्थिते ॥
तद्दोषशमनार्थाय शान्तिदानमुदाहृतं । कर्षमात्रसुवर्णं च पीतवस्त्रे निवेशयेत् ॥
तन्मध्ये लेखयेन्मंत्रं पूर्वाभिमुखतोविशत् ।

मंत्रः—शक्राय देवदेवाय नमस्तुभ्यं प्रसीद मे । मृत्युयोगभवां बाधां निवारय शचीपते ॥ इतिमं० ॥
इति गुप्तकृतं दानं रोगमृत्योर्विमोदयति । दीर्घायुर्जायते लोको दानशान्तिप्रभावतः ॥
इति ज्येष्ठाशान्तिदानं ।

आदिवाराहे-मूले संजायते रोगो ह्यनाचारसमुद्भवः । नववासरजा पीडा तद्दोषशमनाय च ॥
पलद्वयसुवर्णस्य नैर्ऋतेः प्रतिमां करोत् । श्यामवस्त्रेण संछाद्य दक्षिणाभिमुखोविशन् ॥
प्रस्थद्वयघृतं नीत्वा लोहपात्रे निधाय च । नवभिरुच्चरन्मंत्रं मुखं तत्र विलोकयन् ॥

मंत्रः—नमस्ते दैत्यराजाय नैर्ऋताय कृतार्थिने । नववासरजां पीडां निवारय च प्रद्रिद ॥ इतिमं० ॥
दत्वा दानं च विप्राय रोगनिर्मुक्तवां नयेत् । इति मूलशान्तिदानं ॥

कौर्म्ये—पूर्वाषाढे भवेद्रोगो जलदोषसमुद्भवः । मृत्युयोगसमाख्यातस्तद्दोषविनिवृत्तये ॥
देवहस्तप्रमाणेन सितवस्त्रं समाददे । पश्चिमाभिमुखो भूत्वा तन्दुलं प्रस्थसप्तकं ॥
तत्रैव लिखयेन्मंत्रं जलमादौ प्रपूज्य च ।

मन्त्रः—नमः पावनरूपाय व्यापिने परमात्मने । मृत्यूद्भवमहाबाधां निवारय च केशव ॥ इतिमं० ॥
ब्राह्मणाय ददौ दानं मृत्युबाधाद्विमुच्यते । मृत्युयोगकृताद्दानात् परमायुः सजीवति ॥
इति पूर्वाषाढादानशान्तिः ।

विष्णुपुराणे—रोगः स्यादुत्तराषाढे श्राद्धलोपसमुद्भवः । मासपीडा ज्वरोद्भूता तद्दोषशमनाय च ॥
पलद्वयप्रमाणेन सुवर्णप्रतिमांकरोत् । विश्वेषां देवयोश्चैव श्वेतवस्त्रावृतः ॥
दशप्रस्थानुसारेण सिततन्दुलमुत्क्षिपेत् । लिखेन्मन्त्रं च तत्रैव पश्चिमाभिमुखेविशन् ॥

मन्त्रः—नमो विश्वप्रबोधाय विश्वदेव नमोऽस्तु ते । मासोद्भवमहापीडां निवारय सनातन ॥
ब्राह्मणाय ददौ दानं रोगनिर्मुक्ततां नयेत् । इति उत्तराषाढा शान्तिदानं ॥
वामनपुराणे—श्रवणर्क्षे भवेद्रोगो मातृपित्रोस्तु दोषजः । शिववासरजा पीडा ज्वरातीसारसंभवा ॥
तद्दोषशमनार्थाय शान्तिदानं समाचरेत् । नैमंत्र्य ब्राह्मणं श्रेष्ठं सितवस्त्रं मनोहरं ॥
हस्तपंचाशमानेन मन्त्रं तत्र लिखेद्बुधः । सिततन्दुलपूर्णं च घटं मृन्मयमुत्तमं ॥
दश पुंगीफलं मध्ये दशमुद्रासमाकुलं । पूर्वाभिमुखमाविश्य चन्दनेन समर्चयेत् ॥
मन्त्रः—विष्णवे श्रवणेशाय गोविन्दाय नमो नमः । रुद्रवासरजां पीडां विनाशय महोत्कटां ॥इतिमं०॥
इति शान्त्या ददौ दानं ब्राह्मणाय विशेषतः । रोगनिर्मुक्ततां याति परमायुः सजीवति ॥
इति श्रवणा शान्तिदानं ॥
भविष्ये—रोगःस्याच्च धनिष्ठायामपमानसमुद्भवः । पक्षवासरजा पीडा तद्दोषशमनाय च ॥
प्रस्थत्रयप्रमाणेन कांस्यपात्रं चकारयेत् । विलिप्य चन्दनेनैव शुष्कं कुर्याद्विधानतः ॥
तन्मध्ये मन्त्रमालेख्य सुवर्णस्य शलाकया । पञ्चप्रस्थप्रमाणेन तन्दुलं तत्र प्रक्षिपेत् ॥
हरिद्वस्त्रेण संछाद्य पश्चिमाभिमुखोभवन् । रुक्ममुद्राद्वयं धृत्वा दानं दद्याद्द्विजातये ॥
मन्त्रः—वसवे देवदेवाय धनिष्ठेशाय ते नमः । पक्षवासरसंभूतां निवारय च सुप्रद ॥ इतिमन्त्रः ॥
शान्त्यादानकृतेनापि रोगनिर्मुक्ततां व्रजेत् । इति धनिष्ठाशान्तिदानं ॥
लैंगे—शतभिषदुग्रनक्षत्रे रोगः स्याज्जलदोषतः । रुद्रवासरजा पीडा तद्दोषशमनाय च ॥
पितल्याः पंचप्रस्थेन घटं कृत्वा मनोहरं । प्रस्थत्रयं घृतं नीत्वा कर्षस्वर्णं तु प्रक्षिपेत् ॥
समन्ताच्चन्दनेनैव लेपयेन्लुष्कमाचरेत् । तत्रैव लेखयेन्मन्त्रं सितवस्त्रेण छादयेत् ॥
मन्त्रः—वरुणाय नमस्तुभ्यं देवाय वरदायिने । रुद्रवासरजां पीडां निवारय कलाधर ! ॥ इतिमं० ॥
उत्तराभिमुखो भूत्वा दानं दद्याद्द्विजातये । नैरोग्यतां व्रजेद्रोगी परमायुः सजीवति ॥
इति शतभिषादानशान्तिः ॥
मार्कण्डेये—पूर्वाभाद्रपदे रोगो जायते जीवघाततः । मृत्युरोगसमाख्यातस्तद्दोषशमनाय च ॥
लोहपात्रं समानीय नवप्रस्थप्रमाणतः । सप्तप्रस्थतिलं नीत्वा श्यामवर्णं शवोपमं ॥
कृष्णवर्णामजां नीत्वा सितवस्त्रेण छादयेत् । ग्राह्यं प्रस्थद्वयं तैलं तस्मिन् दृष्ट्वा मुखं सुभम् ॥
तत्रैव सप्तभिर्मंत्रं पठित्वा माषमुत्क्षिपेत् । उत्तराभिमुखो भूत्वा दानं दद्याद्द्विजातये ॥
मन्त्रः—अजपाद नमस्तुभ्यं मृत्युबाधापपीडक । मृत्युयोगभवां बाधां निवारय प्रसीद मे ॥ इतिमं० ॥
मृत्युयोगभवाद्रोगान्मुच्यते नात्र संशयः । इतिपूर्वाभाद्रपदशान्तिदानं ॥
वायुपुराणे—रोगःस्यादुत्तराभाद्रे देवदोषसमुद्भवः । सप्तवासरजा पीडा तद्दोषशमनाय च ॥
नीत्वा कर्षसुवर्णं तु ताम्रपात्रं च प्रस्थकं । चणकद्विदलं प्रस्थं पीतवस्त्रेण वेष्टितं ॥
रुक्ममुद्राद्वयं न्यस्य पश्चिमाभिमुखो भवन् । पीतवस्त्रे लिखेन्मन्त्रं सप्तभिःप्रणतिञ्चरेत् ॥
मन्त्रः—अहिर्बुध्न्य नमस्तुभ्यं रुद्रदेव नमोऽस्तु ते । सप्तवासरजां पीडां निवारय प्रसीद मे ॥
ब्राह्मणाय ददौ दानं रोगनिर्मुक्ततां व्रजेत् ॥ इति उत्तराभाद्रपदशान्तिदानं ।
ब्रह्मयामले-रेवत्यां जायते रोगो पर्वदोषसमुद्भवः । षष्ठिवासरजा पीडा तद्दोषशमनाय च ॥
रक्तवर्णमयीं धेनुं पीतवस्त्रेण छादितां । कांस्यपात्रं शुभं कार्यं पञ्चप्रस्थप्रमाणकं ॥
कर्षमात्रसुवर्णस्य पूषणोमूर्तिमाचरेत् । पात्रस्य च समन्ताच्च चन्दनेन लिखेद्बुधः ॥

मन्त्रः—पूषणे रेवतीशाय देवदेवाय ते नमः । षष्टिवासरजां पीडां शीघ्रमेव निवारय ॥ इति मन्त्रः ॥
उत्तराभिमुखो भूत्वा दद्याद्दानं द्विजातये । रोगनिर्मुक्ततां याति परमायुः सजीवति ॥
नक्षत्रसप्तविंशत्या रोगेषु शान्तिमाचरेत् । दानं दद्याद्विधानेन रोगनिर्मुक्ततां ययौ ॥
ऋक्षेषु वर्तमानेषु नित्यदानं चकारह । कदा रोगं न पश्येत निरोगी सर्वदा भवेत् ॥
आयुरारोग्यतां याति कुटुम्बसौख्यमाप्नुयात् ।
इति सप्तविंशत्याश्विन्यादिनक्षत्ररोगसंभवेषु सप्तविंशतिनक्षत्रशान्तिदानविधिः ।
इति श्रीमद्भास्करात्मज श्रीनारायणभट्ट गोस्वामीविरचिते पञ्चमगोप्यग्रन्थे
व्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

॥ षष्ठो ऽध्यायः ॥

व्रजस्य शुभमर्यादा कृष्णलीलाविनिर्मिता । यादवानाञ्च गोपानां रम्यभूमिमनोहरा ॥
रत्नगर्भा पयपूर्णा मणिकाञ्चनभूषिता । मथुरामण्डलमध्ये प्रमाणकृतशोभिता ॥
चतुरशीति क्रोशाढ्यां चतुर्दिक्षु विराजिता । मथुरामण्डलात्क्रोशमेकविंशतिकं भजेत् ॥
चतुर्दिक्षु प्रमाणेन पूर्वादिक्रमतोगणत् । पूर्वभागे स्थितं कोणं वनं हास्याभिधानकं ॥
भागे च दक्षिणे कोणं शुभं जन्हुवनं स्थितं । भागे च पश्चिमे कोणे पर्वताख्यवनं स्थितं ॥
भागे ह्युत्तरकोणस्थं सूर्यपतनसंज्ञकं । इत्येता व्रजमर्यादा चतुष्कोणाभिधायिनी ॥
चतुरस्रं व्रजं ब्रूयुर्देवतास्तं शिवादयः । मण्डलाकारमीक्षन्ति मुनयो नारदादयः ॥
शृंगाराकारकं ब्रूयुः ऋषयः सनकादयः । नैरंतर्य्यमुपास्यन्ते देवर्षिमुनयस्तथा ॥
इति व्रजमण्डलमर्यादा ब्रह्माण्डे भूमिखण्डे ॥१॥ तत्रादौ यमुनादक्षिणतटस्थकाम्यवनोत्पत्तिनिरूपणं—
आदिवाराहे—यत्रैव देवतानाञ्च कामनासिद्धितां व्रजेत् । ऋषीणाञ्च मुनीनाञ्च मनुजानां तपस्विनां ॥
कामनासिद्धितामेति यतो काम्यवनं भवेत् । भाद्रमासि सितेपक्षे प्रतिपद्दिनसंभवे ॥

व्रज की शुभ मर्य्यादा श्रीकृष्ण की लीला से निर्मित है जो यादवों तथा गोपों की मनोहर विहार भूमि द्वारा सुशोभित तथा जो रत्नगर्भ स्वरूपा है और विमल अमृत निन्दि जल से व्याप्त और मणि, काञ्चन प्रभृति विविध रत्नों से भूषित है । यह मर्य्यादा मथुरामण्डल के बीच प्रमाण सिद्ध रूप से सुशोभित है । ८४ कोश जिसका परिमाण है । ८४ कोश व्रजमण्डल-पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दिशा के कोण के विचार से चार भाग हैं । प्रत्येक का २१ कोश परिमाण है । पूर्व भाग का कोण हास्यबन, दक्षिण भाग का कोण जन्हुवन, पश्चिम भाग का कोण पर्वतबन, उत्तर भाग का कोण सूर्य्यपतन बन हैं । यह चारकोण की व्रजमर्य्यादा हैं । शिवादिक देवतागण चार कोण के व्रजमण्डल कहते हैं । नारदादि मुनिगण इसे मण्डलाकार रूप से देखते हैं । सनकादि ऋषिगण शृंगार आकार कहते हैं । इस व्रजमण्डल की उपासना मुनि ऋषिगण नित्य करते हैं । यह व्रजमण्डल की मर्य्यादा (सीमा) वर्णन हुई है । ब्रह्माण्ड के भूमिखण्ड में ॥ १ ॥

पहले यमुना के दक्षिण तट स्थित काम्यबन का चिन्ह और उत्पत्ति का वर्णन करते हैं । आदिवाराह में—जहाँ देवताओं, ऋषियों, मुनियों, मनुष्यों, तपस्वियों की कामना सिद्धि होती है इसलिये इसका नाम काम्यबन है । भाद्रमास की शुक्लपक्षीया प्रतिपद तिथि में पूर्वा फाल्गुनि नक्षत्र और बुधवार के दिन

पूर्व्वाफाल्गुणि संयुक्ते भृगुवारसमन्विते । बनयात्राप्रसंगाय प्रापुः काम्यबनं शुभं ॥
सर्वार्थकामसिद्धयर्थं देवांगमनुजादयः ।

अथ काम्यबनप्रार्थनमन्त्रः—

नमस्ते भगवद्रूप कामनासिद्धिदायिने । बनयात्राप्रसंगेन प्रसीद परमेश्वर ! ॥
इतिमन्त्रं समुच्चार्य ह्यष्टषष्ठिशतोत्तरैः । नमस्कारान्करोद्धीमान् रात्रौ वासं चकारह ॥

प्रवासनिषेधः पाद्मे—

नैव प्रतिपदारात्रौ प्रवासं यत्र कारयेत् । तस्यैव बनयात्रायाः परिपूर्णं प्रदक्षिणा ॥
नैव सांगं समायाति न फलत्वं प्रजायते । प्रवासान्मानसीसिद्धिर्जायते नात्र संशयः ॥ २ ॥
भाद्रशुक्लद्वितीयायामुत्तराशनिसंयुते । प्रभातसमये धीमान् सिंहलग्नोदये यदा ॥
विमलस्नानमाचक्रुर्देवता मनुजादयः । विमलाख्यं महाकुण्डं शुभं काम्यबनेऽभवत् ॥

ततो विमलकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । वृहद्गौतमीये—

वैमल्यरूपिणे तुभ्यं नमस्ते जलशायिने । केशवाय नमस्तुभ्यं तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । विमलांगो भवनलोको देवयोनिसमो नरः ॥
गोपिकाः स्नानमाचक्रुः पूर्णकामाभिलाषिण्यः । यतस्तु गोपिकाकुण्डं संजातं पृथिवीतले ॥
सुवर्णसोपानपरम्परायुतं पयः पूर्णं । रमणीभिर्सुशोभितं सरोरुहाकीर्णं वरं ॥
मनोहरांगं समस्तकामर्थदं शुभप्रदं ॥ ३ ॥

ततो गोपिकाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । नारदीये—

नमस्ते गोपिकानाथ नमः सर्वार्थदायिने । नमः कृतार्थरूपाय गोपिकासरसे नमः ॥
नमस्कारं चकारात्र स्वर्णदानं समाचरेत् । धनधान्यसुखादींश्च लभतेऽस्य प्रभावतः ॥४॥

बनयात्रा प्रसंग पूर्वक देवता, मनुष्यगण काम्यबन को प्राप्त हुए । काम्यबन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे भगवत् स्वरूप ! हे कामना सिद्धि को देने वाले काम्यबन ! आपको नमस्कार । बनयात्रा प्रसंग में आप प्रसन्न हों। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १६८ बार नमस्कार पूर्वक रात्रि में वास करे । यदि प्रतिपदा रात्रि में यहाँ वास न करें तब बनयात्रा की सम्पूर्ण परिक्रमा निष्फल हो जाती है । रात्रि से वास करने से मन की सिद्धि होती है ॥ २ ॥

भाद्र शुक्ला द्वितीया में उत्तरानक्षत्र संयोग हो और प्रभात काल में जिस समय सिंह लग्न का उदय हो उस समय देवतागण मानवगणों ने यहाँ विमल स्नान किया है, इसलिये काम्यबन में विमल नामक महाकुण्ड उत्पन्न हुआ है। विमलकुण्ड स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—वृहद्गौतमीय में—हे विशुद्ध रूप ! हे जलशायि केशव ! आपको नमस्कार । हे तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन, आचमन करें तो मनुष्य शुद्ध शरीर होकर देवतायोनि को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

गोपिकागणों की पूर्ण काम की इच्छा से स्नान करने के कारण यह पृथ्वी में प्रसिद्ध गोपीका-कुण्ड उत्पन्न हुआ है । जिसकी सुवर्ण की सिढ़ियाँ हैं जो अयुत रमणी से और मनोहर नील कमल-द्वारा परिशोभित हैं जो समस्त काम, अर्थ, शुभ को देने वाला है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—नारदीय में—हे गोपिकानाथ ! हे समस्त अर्थ देने वाले ! हे कृतार्थरूप ! हे गोपिका सरोवर ! आपको नमस्कार । इस मंत्र

यत्र शक्रादयो देवाः श्राद्धं चक्रुर्गयासमं । तेषाञ्च पितरोऽत्रैव हस्तं पिण्डं समाददुः ॥
गयाकुण्डाभिधानेदं विख्यातं वनभूमिषु । दुग्धेन परिपूर्णन्तु पितृदेवादिसंकुलं ॥
ततो गयाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । भविष्ये—
तारणे दिव्यतोयाढ्य देवदेवांगसंभव ! । नमस्ते तीर्थराजाय फल्गुतीर्थसमाह्वय ! ॥
इतिमन्त्रं समुच्चार्य नवभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं विधास्येत परं मोक्षपदं लभेत् ॥
गयाकुण्डे कृतं श्राद्धं निःप्रेतत्वमवाप्नुयात् ॥ ५ ॥
धर्मं यत्राकरोद्राजा धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । धर्मकुण्डं समाख्यातं शुभे काम्यवनेभवत् ॥
धर्मोह्यक्षयतां याति सहस्रगुणितं फलम् ।
ततो धर्मकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । विष्णुधर्मोत्तरे—
धर्माय धर्मरूपाय निर्मले सत्यरूपिणे । नमस्ते परमोक्षाय पुण्यतीर्थं नमोस्तु ते ॥
इति पञ्चदशावृत्या मन्त्रमुच्चार्य स्नापयेत् ॥ ६ ॥
तीर्थानां च सहस्राणामागमोयत्र संभवः । यतस्तीर्थं सरोरम्यं सहस्राख्यं मनोहरं ॥
ततो सहस्रसरः तीर्थस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्माण्डे—
सहस्रगुणपुण्याय पावनाय महात्मने । नमो सहस्रतीर्थाय नैर्मल्यवररूपिणे ॥
इत्येकादशभिर्मंत्रं मज्जनाचमनैर्नमन् । कृतार्थफलतां याति नरो मोक्षफलं लभेत् ॥७॥
ततो धर्मराजसिंहासनावलोकनप्रार्थनमन्त्रः । आग्नेये—
धर्मराज नमस्तुभ्यं धर्मसिंहासनाय च । नमः कैवल्यनाथाय सत्यरूप नमोस्तु ते ॥

के तीन बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन, नमस्कार करें । यहाँ सुवर्ण का दान करने से धन, धान्य, सुखादिक लाभ होता है ॥ ४ ॥

अनन्तर गयाकुण्ड है । यहाँ इन्द्रादि देवतागणों ने गया के तुल्य श्राद्ध किया है । देवताओं पितरगणों के हाथ उठाकर श्राद्ध पिण्ड को ग्रहण करने का कारण यह गयाकुण्ड नाम से विख्यात हुआ है, जो दुग्ध से परिपूर्ण है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र-भविष्य में—हे उद्धार करने में समर्थ ! हे दिव्य जल से परिपूर्ण ! हे देवतागण कर्तृक उत्पन्न ! हे फल्गुतीर्थ करके विख्यात गयाकुण्ड तीर्थ ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार मज्जन, आचमन, नमस्कार करने से परम मोक्षपद को प्राप्त होता है । गयाकुण्ड में स्नान करने से प्रेतयोनि छूट जाती है ॥ ५ ॥

धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर महाराज ने यहाँ धर्म्म किया था वही यह धर्म्मकुंड है । यहाँ धर्म्म करने से अक्षयगुणा फल होता है । धर्म्मकुंड स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—विष्णुधर्म्मोत्तर में—हे धर्म्म ! हे धर्म्म-रूप ! हे निर्म्मल ! हे सत्यरूपि ! हे पुण्यतीर्थ ! हे परम मोक्ष के लिये धर्म्मकुंड आपको नमस्कार ! इस मन्त्र के १५ बार पाठ पूर्वक स्नान करे ॥ ६ ॥

हजारों तीर्थ का जहाँ आगमन हुआ है यह वही सहस्रतीर्थ सरोवर है । स्नान प्रार्थनामन्त्र यथा—ब्रह्माण्ड में—हे सहस्रगुण पुण्यरूप ! हे पावन स्वरूप ! हे महात्मा सहस्रतीर्थ सरोवर ! आपको नमस्कार है । आप निर्म्मल वर को देने वाले हैं । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करे तो मनुष्य कृतार्थ होकर मोक्षपद को प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

अनन्तर धर्म्मराज सिंहासन अवलोकन प्रार्थनामन्त्र—आग्नेय में—हे धर्म्मराज ! तुमको

इति मन्त्रं शतावृत्या नमस्कारं शतं चरेत् । शतधाकृतपापानि क्षीयन्ते यत्र दर्शनात् ॥८॥
मात्स्ये—राजा युधिष्ठिरो यत्र पञ्चयज्ञं चकारह । यज्ञकुण्डो स्थितो यत्र पञ्चयज्ञफलप्रदः ॥
ततो यज्ञकुंडप्रदक्षिणाप्रार्थनमन्त्रः—

पाण्डवसुकृतार्थाय पंचयज्ञाभिधायिने । नमो ब्रह्मण्यदेवाय यज्ञकुंड नमोस्तु ते ॥
इत्यष्टभिः समुच्चार्य प्रणामंश्चप्रदक्षिणां । कृतार्थ फलतां याति प्रदक्षिणप्रभावतः ॥ ९ ॥

महाभारते—यज्ञान्ते पांडवाः श्रेष्ठाः स्नानं चक्रुर्विधानतः । युधिष्ठिरादिपञ्चानां पञ्चतीर्थ सरांसि च ॥
ततो पञ्चसरस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

धर्मरूप नमस्तुभ्यं वायुपुत्र नमोस्तु ते । शक्रात्मज नमस्तुभ्यमश्विन्यास्तनयौ नमः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य पञ्चभिर्मज्जनाचमैः । कृतार्थफलमाप्नोति मानवाः विष्णुरूपिणः ॥१०॥
यत्रैव मुक्तिमाप्नोति नन्दगोपादयो मताः । कुंडं मोक्षाभिधं जातं कामसेनिविनिर्मितं ॥

ततो परमोक्षकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । शौनकीये—

मोक्षाय मुक्तिरूपाय मुक्तितीर्थ नमोस्तु ते । नमः कैवल्यनाथाय सर्वदा मोक्षदायिने ।
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । परं मोक्षपदं लेभे धनधान्यादिभिर्युतः ॥११॥

ततो मणिकर्णिकाकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । वामनपुराणे—

नमस्त्रिभुवनेशाय व्यापिने परमात्मने । तीर्थराज नमस्तुभ्यं मणिकर्णि नमोस्तु ते ॥
इतिमन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा मज्जनाचमनैर्नमन् । सर्वविद्याभिसंपन्नो लक्ष्मीवानपिजायते ॥१२॥

नमस्कार । हे धर्म्म सिंहासन ! हे कैवल्य नायक ! हे सत्यस्वरूप ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे । इसके दर्शन से शत-शत प्रकार के पाप समूह नष्ट हो जाते हैं ॥८॥

मात्स्य में-राजा युधिष्ठिर ने यहाँ पञ्च यज्ञ किये हैं । वहाँ यज्ञकुंड है जो पञ्च यज्ञ के फल को देने वाले हैं । यज्ञकुंड प्रदक्षिणा प्रार्थनामन्त्र-हे पञ्चयज्ञ नामक तीर्थ ! हे पाण्डवों को कृतार्थ करने वाले ! हे यज्ञकुंड ! ब्रह्मण्यदेव आपको नमस्कार । इस मन्त्र के आठ बार पाठ पूर्वक प्रणाम और प्रदक्षिणा करें तो प्रदक्षिणा के प्रभाव से कृतार्थ हो फल को प्राप्त होता है ॥ ९ ॥

महाभारत में—यज्ञ के अन्त में पाण्डवों ने विधि पूर्वक स्नान किया । पाँच पाण्डव के नाम से पाँच सरोवर तीर्थ उत्पन्न हुए हैं । पाँच सरोवर स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र-हे धर्म्मरूप ! आपको नमस्कार । हे वायुपुत्र ! आपको नमस्कार । हे इन्द्रपुत्र ! आपको नमस्कार । हे अश्विनी के दोनों पुत्र ! आप दोनों को नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक पाँच बार मज्जन, आचमन करे तो मनुष्य कृतार्थ फल को प्राप्त होकर विष्णुरूप हो जाता है ॥ १० ॥

जहाँ नन्दादिक गोपगण मुक्ति को प्राप्त हुए थे यह कामसेनि निर्म्मित परमोक्ष नामक कुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र शौनकीय में—हे मुक्तिरूप मोक्षकुंड आपको नमस्कार ! आप कैवल्य नायक हैं और सर्वदा मोक्ष को देने वाले हैं । इस प्रकार मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान, नमस्कार करें तो धन, धान्य से युक्त होकर परम मोक्ष को प्राप्त होता है ॥११॥

अनन्तर मणिकर्णिकाकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्र—वामनपुराण में—हे त्रिभुवनईश ! हे व्यापक ! हे परमात्मा ! हे मणिकर्णिका नामक तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के तीन बार पाठ

सर्वे देवाः निवासं च यत्र चक्रुर्मनोरथैः । यतो निवासकुंडाख्यं शुभे काम्यवनेऽभवत् ॥

ततो निवासकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

निवासाख्य महातीर्थ सर्वदा सुखदायिने । नमस्ते कल्मषघ्नाय वासुदेवकृताय च ॥

षड्भिर्मन्त्रं समुच्चार्य मज्जनाचमनै र्नमन् । सर्वदा सौख्यमाप्नोति धनधान्यादिभिर्युतः ॥

नित्यमेव करोत्स्नानं यशोदा कामसेनिजा । यशोदाकुंडमाख्यातं त्रिकोणाकारनिर्मितं ॥

ततो यशोदाकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

कामसेनिसुते तुभ्यं नमामि विमलात्मके । तीर्थरूपे नमस्तुभ्यं सर्वदा पुत्रवत्सले ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । बहुभिः परिवारैस्तु सर्वदासौख्यमाप्नुयात् ॥१४॥

ततो देवकीकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । गौडनिबन्धे—

कृतार्थरूपिणे तुभ्यं तीर्थराज नमोस्तु ते । तपस्विमुनिवेष्टाय देवकीस्नान संज्ञिके ॥

दशभिरुच्चरेन्मन्त्रं मज्जनाचमनैर्नमन् ॥ १५ ॥

ततो मनोकामनाकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । धौम्यसंहितायां—

मनोर्थद नमस्तुभ्यं कामनावरदायिने । तीर्थराज नमस्तुभ्यं सकलेष्टवरप्रद ॥

नवभिरुच्चरेन्मन्त्रं मज्जनाचमनैर्नमन् । मनसाचिन्तते कामान् प्राप्नुयान्नात्र संशयः ॥१६॥

ततो समुद्रसेतुबंधकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

देवानां सिद्धिरूपाय सेतुबन्ध नमोस्तु ते । नमस्ते सकलेष्टाय तीर्थराज नमोस्तु ते ॥

पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान, नमस्कार करने से समस्त विद्या से सम्पन्न होकर लक्ष्मीवान् होजाता है ॥१२॥

समस्त देवतागणों ने मनोरथ पूर्वक जहाँ निवास किया है वहाँ निवासकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे निवास नामक महातीर्थ ! हे सर्वदा सुख को देने वाले ! हे कल्मष नाशकारी ! हे वासुदेव कर्तृक निर्मित ! आपको नमस्कार । इस मंत्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान करने से मनुष्य धन, धान्य से परिपूर्ण होकर सर्वदा सुखी होता है ॥ १३ ॥

कामसेनी पुत्री यशोदा वहाँ नित्य स्नान करती थी, यह यशोदाकुंड है जो त्रिकोण आकार से निर्मित है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा— हे कामसेनि सुता ! विमल आत्मा स्वरूप आपको नमस्कार । हे तीर्थरूप ! हे पुत्र वत्सला ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन, आचमन, स्नान करने से वह परिवार युक्त होकर सर्वदा सुखी होता है ॥ १४ ॥

अनन्तर देवकीकुंड है । स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्र यथा—गौड़निबन्ध में—हे कृतार्थरूपि ! हे तीर्थराज ! आपको नमस्कार । हे तपस्वी, मुनि वेष्टित देवकीकुंड ! आप देवकी के स्नान के कारण उत्पन्न हैं । इस मंत्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान करे ॥ १५ ॥

अनन्तर मनःकामनाकुंड है । स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र यथा—धौम्यसंहिता में—हे मन अर्थ को देने वाले मनोकामनाकुंड ! कामना वर देने वाले आपको नमस्कार ! हे तीर्थराज ! समस्त इष्ट वर देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ९ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करे तो कामनाओं का समूह चिन्ता मात्र ही प्राप्त होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ १६ ॥

अनन्तर समुद्रसेतुबन्धकुंड है । स्नान, आचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे सेतुबन्ध ! देवताओं के सिद्धि

इतिमन्त्रं समुच्चार्य द्वादशैर्मज्जनाचमैः । सर्वबाधाविनिर्मुक्तो सर्वदाविजयी भवेत् ॥ १७ ॥
ततो ध्यानकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । ध्रुवसंहितायां—
चतुर्भुज नमस्तुभ्यं विष्णवे दिव्यरूपिणे । तीर्थराज नमस्तुभ्यं दिव्यदृष्टयाभिधायिने ॥
इतिमन्त्रं चतुर्भिस्तु मज्जनाचमनैर्नमन् । दिव्यदृष्टिं समालभ्य वैष्णवं पदमीक्षते ॥ १८ ॥
ततस्तप्तकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
सर्वतापविनाशाय मनस्तापनिवारक । समस्तकल्मषघ्नाय तप्तकुण्ड नमोस्तु ते ॥
इति मन्त्रं त्रिधावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । मनसस्तापनिःशान्तिमाप्नुयान्नात्र संशयः ॥१९॥
ततो जलविहारकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्मयामले—
शक्राप्सरविहाराय तीर्थराज नमोऽस्तु ते । कल्लोलविमलाङ्गाय सर्वदेष्टवरप्रद ॥
इतिमन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । वैहारसुखसम्पत्तिमाप्नुयात्मानवः सदा ॥ २० ॥
ततो जलक्रीड़ाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
जलक्रीडाविहाराय वैमल्यजलसंभव । गोपालकृतवेषाय कृष्णाय सततं नमः ॥
इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । लभेच्छीतलतां लोको नेत्रसौख्यमनोरथैः ॥ २१ ॥
ततो रंगीलकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
नानावर्णसुभाङ्गाय पीतरक्तजलात्मक । सदानन्दस्वरूपाय दिव्यकान्ते नमोस्तु ते ॥
एकोनविंशदावृत्या मज्जनाचमनै र्नमन् । नानावर्णैस्तु वस्त्रैस्तु भूषितो सौख्यमाप्नुयात् ॥२२॥

रूप आपको नमस्कार है । आप समस्त इष्ट देने वाले हैं आप तीर्थों के राजा हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १२ बार मज्जन, आचमन, स्नान करने से सर्वदा विनिर्मुक्त होकर विजयी होता है ॥ १७ ॥

अनन्तर ध्यानकुण्ड है । स्नान, आचमन, प्रार्थनामन्त्र यथा ध्रुवसंहिता में—हे चतुर्भुज ! आप को नमस्कार । हे विष्णु ! दिव्यरूप आपको नमस्कार । हे तीर्थराज ! दिव्य दृष्टि से दर्शनीय आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो वह दिव्य दृष्टि को प्राप्त होकर वैकुण्ठ पद को गमन करता है ॥ १८ ॥

अनन्तर तप्तकुण्ड है स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र यथा—हे तप्तकुण्ड ! समस्त पाप के नाशकारी, मन के ताप निवारक और समस्त कल्मष ध्वंसकारी आपको नमस्कार । इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान करने से मन के ताप की शान्ति हो जाती है, इसमें कोई सन्देह नहीं हैं ॥१९॥

अब जलविहारकुंड के स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र कहते हैं । ब्रह्मयामल में—हे इन्द्र अप्सरों के विहार के लिये तीर्थराज जलविहारकुण्ड ! आप सर्वदा इष्ट वर देने वाले हैं और विशुद्ध तरंगों से युक्त हैं । इस मन्त्र के १४ बार पाठ कर स्नानादि करने से विहार सुख सम्पत्ति प्राप्त होता है ॥ २० ॥

अनन्तर जलक्रीड़ा कुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे विमल जलसे उत्पन्न जल क्रीड़ा कुण्ड ! आप जलक्रीड़ा विहार के लिये हैं । हे गोपाल कर्तृक रचितवेष श्रीकृष्ण ! आपको निरन्तर नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन, आचमन करे तो मनुष्य शीतल स्वभाव को प्राप्त करता है और उसके नेत्र आरोग्य रहते हैं ॥ २१ ॥

अनन्तर रंगीलकुण्ड स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र—हे पीले रक्त जलात्मक रंगीलकुण्ड ! आपको नमस्कार । आप का अंग नाना वर्णमय सुन्दर है । आपकी कान्ति दिव्य है । आप सर्वदा आनन्द रूप

ततो छवीलाख्यकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । कौर्म्ये—

नमः कान्तिमते तुभ्यं छवीलाख्यसरोवरे । तीर्थनैर्मल्यतोयाढ्य वेपनैर्मल्यदायके ॥

इतिमन्त्रं समुच्चार्य पञ्चभिर्मज्जनाचमैः । अतिरूपवतीं कान्तिं लभते नात्र संशयः ॥ २३ ॥

ततो जकीलकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । माधवीये—

जकीलाख्यमहातीर्थ परमोत्साहदायक । नमस्ते जडतां देव दुर्बुद्धिं विनिवारय ॥

इतिमन्त्रं त्रिधावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । नश्येज्जकीलतां तस्य सौन्दर्यपदवीं लभेत् ॥२४॥

ततो मतीलकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । गौरीरहस्ये—

नमो मतीलतीर्थाय नानावैचित्रबुद्धिद । शुभेष्ट वरदो देव तीर्थराज नमोस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । धनधान्यसमायुक्तो सदा धर्मरतो भवेत् ॥२५॥

ततो दतीलकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

मन्दहास्य महातीर्थ सर्वसौख्यप्रदायक ! । दुर्बुद्धिकलहच्छेद तीर्थराज नमोस्तु ते ॥

इति द्वादशभिर्मन्त्रमुच्चारन्मज्जनाचमैः । सर्वदानन्दरूपेण रमते पृथिवीतले ॥ २६ ॥

ततो घोषराणीकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । नारदीये—

सुघोषण महाप्राज्ञ तीर्थराज नमोस्तु ते । कटुवाक्यविनाशाय दिव्यघोष नमस्तु ते ॥

इतिमन्त्रं समुच्चार्य षड्भिराचम्य प्रार्थनैः । दुर्वचो सुवचो जातः सुशीलो जायते नरः ॥ २७ ॥

हैं। इस मन्त्र के १९ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो अनेक प्रकार वस्त्रों से भूषित होकर सुखी होता है ॥ २२ ॥

अनन्तर छबीलकुंड है । स्नान, आचमन, प्रार्थनामन्त्र यथा—कौर्म्ये में—हे छबील नामक सरोवर ! कान्तिवान आपको नमस्कार । हे तीर्थ ! निर्म्मल जल से युक्त आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक पाँच बार मज्जन, आचमन करें तो अत्यन्त रूपवती कान्ति को प्राप्त होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ २३ ॥

अनन्तर जकीलकुंड है । स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र यथा माधवीय में—हे जकील नामक महा-तीर्थ ! परम उत्साह देने वाले आपको नमस्कार । हे देव ! आप जड़ता और मन्द बुद्धि का निवारण करने वाले हैं । इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन, नमस्कार करें तो उसके शरीर से जकीलता नाश होकर सुन्दरता आती है ॥ २४ ॥

अनन्तर मतीलकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा-गौरीरहस्य में—नाना प्रकार विचित्र बुद्धि देने वाले मतीलकुंड ! आपको नमस्कार । आप तीर्थराज हैं शुभ इष्ट वर को देने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन, आचमन स्नान करें तो धन धान्य से युक्त होकर सर्वदा धर्म्म परायण होता है ॥ २५ ॥

अनन्तर दतीलकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे मन्दहास्य महातीर्थ ! हे समस्त सौख्य दाता ! हे दुर्बुद्धि कलह नाशकारी दतील नामक तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन, नमस्कार करे तो सर्वदा आनन्दित होकर पृथ्वी में विचरण करता है ॥२६॥

अनन्तर घोषराणी कुंड है । स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र यथा-नारदीय में—हे सुघोषण महा बुद्धिमान ! हे तीर्थराज ! आपको नमस्कार । हे दिव्यघोष ! आप कड़वी बात विनाश के लिये हैं । इस

ततो विठ्ठलकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । गौतमीये—

नमो गोपालगोपेभ्यो विठ्ठलेभ्यो स्वरूपिणः । भगवत्प्रेमपूर्णेभ्यो सर्वदावरदायिनः ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिर्मज्जनाचमैः । हरिदर्शनमाप्नोति तीर्थराजप्रभावतः ॥ २८ ॥

ततो श्यामकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्मवैवर्ते—

सगोपालाय कृष्णाय यशोदानन्दनाय च । नमस्ते कमलाकान्त गोपिकारमणाय च ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य दशधामज्जनाचमैः । प्रणमेद्भ्रूणहत्यादिपापेभ्यो मुच्यते नरः ॥

श्यामकुण्डापमानेन भ्रूणहत्यादिकं फलं । लभते निष्फला यात्रा भ्रमते व्यर्थभूतले ॥२६॥

भ्रूण प्रमाणं धर्मप्रदीपे—

एक मासं चतुर्थांशं द्विमासं ह्यर्द्ध संज्ञकं । त्रिभिर्मासैस्त्रयोभागं तुर्यमासैः प्रपूरणं ॥

एतद्भ्रूणमितिख्यातं तदूर्ध्वंगर्भसंज्ञकं । व्यभिचारसमुद्भूतं नरनारी निवर्तयेत् ॥

नैवमुक्तो ऽपराधात्तु प्रायश्चित्तं विनाधमः । गुप्तहत्या न मुञ्चति विना पंचाद्व्रतेन च ॥

वर्षत्रयं च तुर्य्यांशे षड्वर्षैस्तु ततोऽर्द्धके । नववर्ष त्रियादाद्ये द्वादशे परिपूर्णके ॥

गृहं ग्रामं न पश्यन्ति तीर्थषट्कं समाचरेत् । गंगा गोदावरी वेत्रा सिन्धुश्चैव तु नर्मदा ॥

गोमतीषु च षट्केषु षड्भिर्मासैः प्रवासयेत् । मन्त्रं तुर्य्यांशभ्रूणस्यापराधस्य विमुक्तये ॥

चतुर्थांशभ्रूणप्रायश्चित्तमन्त्रः । विष्णुस्मृतौ—

ओं ह्रीं केशवाय नमस्तुभ्यं सर्वकल्मषमोक्षणे । भ्रूण तुर्य्यापराधं मे निवारय प्रसीद मे ॥

अस्य मन्त्रस्य देवल ऋषिः केशवो देवता पंक्ति छन्दः मम चतुर्थभ्रूणापराधशान्त्यर्थे जपे विनियोगः, देवल ऋषये सिरसे स्वाहा मुखे पंक्ती छन्दसे नमः, हृदये केशवाय देवतायै नमः ।

अथध्यानं—भ्रूणदोषहरं देवं पीताम्बरधरं हरिम् । कृपामयं कलाकांतं केशवं चिन्तयाम्यहम् ॥

इतिध्यात्वा—द्विसहस्रजपं कृत्वा केशवाय समर्पयेत् । उत्तराभिमुखो भूत्वा जपेन्मन्त्रं समासतः ॥

ह्रीमितिर्वीजाक्षरमन्त्रेण षडंगन्यासं—

द्विसहस्रमिदं मन्त्रं प्रतिवासरमाचरेत् । एकस्मिन् तीर्थराजेऽस्मिन् षण्मासांश्च व्यतीयते ॥

मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार आचमन करने से बुरा बोलने वाला अच्छा बोलता है और मनुष्य सुशील होता है ॥ २७ ॥

अनन्तर विठ्ठलकुण्ड है । स्नान, आचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—गौतमीय में—हे गोपालक गोपगण ! विठ्ठल स्वरूप आप सबको नमस्कार । आप सब भगवान्‌के प्रेमसे परिपूर्ण हैं और सर्वदा वर को देने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार मज्जन, आचमन, स्नान करने से तीर्थराज के प्रभाव से हरिदर्शन होता है ॥ २८ ॥

अनन्तर श्यामकुण्ड है । स्नानप्रार्थनादिमन्त्र यथा—ब्रह्मवैवर्त्त में—हे गोपाल के साथ श्रीकृष्ण यशोदानन्दन आपको नमस्कार । हे कमलाकान्त ! हे गोपीरमण ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार मज्जन, स्नान, आचमन, प्रणाम करने से भ्रूणहत्यादि पापों से मुक्त होता है । श्यामकुण्ड को नहीं मानने से यात्रा निष्फल होती है भ्रूणहत्यादि पापोंका फल प्राप्त होकर व्यर्थ पृथ्वीमें घूमताहै॥२६॥

अनन्तर भ्रूणहत्यादि पापों का वर्णन करते हैं अध्याय शेष यावत्—

ततस्तु सप्तमे मासि गंगां हित्वा नदीं ययौ । गोदावरीमुपाश्रित्य मन्त्रमेनं समाचरेत् ॥
मातुः शतगुणं पापं पितुस्तद्द्विगुणं भवेत् । तद्दशांशं भवेत्पापं वचनाद्भ्रंशकस्य च ॥
एवं तीर्थं करोत् षट्कं त्रिवर्षं च व्यतीयते । भ्रूणहा गोमतीं लब्धा गुप्तदानं समाचरेत् ॥
भ्रूणापराधशांताय गुप्तदानविधीरिता । प्रस्थत्रयं सुवर्णस्य कुष्मांडं तु चकार ह ॥
तन्मध्ये पंचरत्नानि रक्तवस्त्रेण छादयेत् । दत्वा विप्राय यत्नेन चौरभावं समाचरेत् ॥
अंतर्ध्यानगतंमार्गं भ्रूणहत्या विमुच्यति । प्रायश्चित्तं न कुर्व्वीत पुत्रशोकधनक्षयः ॥
शरीरविघ्नतां याति दुःखरोगदरिद्रता । लोकानां श्रवणात्पापं तुर्य्यांशं च विलीयते ॥
लोकेभ्यस्तु समाछाद्य समूलं च विनाशयेत् । विप्रो नैवाभिजानाति गुप्तदानं कृतं यदा ॥
दानं कदाचिज्ज्ञानाति तद्दानं निष्फलं भवेत् । प्रतीपं दोषमाप्नोति पुनस्तीर्थान्समाचरेत् ॥
तदा सांगं भवेद्यात्रा भ्रूणहत्या व्यपोहति । तदा ग्रामं गृहं वापि धनधान्यादिभिः सुखं ॥
एकग्रामे पुरेवापि ह्येकावासे गृहेऽपि वा । दशांशं लभते पापं दर्शनाद्वचनादपि ॥
स्पर्शनाच्चैव तुर्यांशं लभते पापसंभवं । प्रभातसमये तस्य भ्रूणघ्नो मुखमीक्षते ॥
तद्दिनं वर्द्धितं पापं तद्दशांशं लभेन्नरः । मृगचर्म्मोपरि स्थित्वा चतुर्मन्त्रान् जपेत्सुधीः ॥
चतुः प्राकारकं भ्रूणं चतुः प्राकारका विधिः । चतुर्गुणं कृतं दानं चतर्गुण्यं च तीर्थकं ॥
चतुर्गुणं जपेन्मन्त्रं भ्रूणहत्या व्यपोहति । द्विगुणं द्वितीये भ्रूणे त्रिगुणे च तृतीयके ॥
चतुर्गुणं चतुर्थेऽस्मिन् भ्रूणमेतदुदाहृतम् ॥

धर्म्मकल्पद्रुमे—हविष्यान्नं संभुंजीयाच्चान्द्रायणव्रतं चरेत् । ब्रह्मचर्य्यसमायुक्तो प्रायश्चित्तमुदाहृतम् ॥
दानं प्राकट्यहीनेन गुप्तं पापापहारकं । एवं चतुः प्रकारेण गर्भहत्या ह्युदाहृता ॥
मासपंचममारम्य दशमाससमुद्भवं । सार्द्धपञ्चममासेन गर्भभागं चतुष्टयं ॥
षड्भिर्मासचतुर्भागैर्गर्भभागं चतुर्विधं । भ्रूणे दानमितिख्यातं गर्भे तद्द्विगुणं स्मृतं ॥
प्रायश्चित्तं विधानेन गर्भहत्या व्यपोहति ॥

अथार्द्धभ्रूणप्रायश्चित्तमन्त्रः सन्मोहनतन्त्रे—

ओं ग्लौं नमो नारायणायैव भ्रूणार्द्धकल्मषापह । नमस्ते कमलाकान्त मम हत्यां व्यपोहतु ॥
इति नारायणमन्त्रमर्द्धभ्रूणाघशांतये । षट्सु तीर्थेषु कर्त्तव्यमीशानाभिमुखो भवन् ॥

"अस्य नारायणमन्त्रस्य शंभु ऋषि र्नारायणो देवता, गायत्री छन्दः, ममार्द्धभ्रूणघ्नपापपरिहारार्थे गंगातीर्थे द्विसहस्रमिदं जपमहं करिष्ये" इति संकल्प्य शिरसि शंभु ऋषये नमः मुखे गायत्री छन्दसे नमः हृदये नारायणाय देवतायै नमः इति न्यासः ग्लौमित्येकबीजाक्षरमन्त्रेण षडंगन्यासं कुर्यात् ॥ अथध्यानं—
कलामयं कान्तवपुर्दधानं नारायणं शंखगदाधरं हरिं । भ्रूणाघदोषाय विमुक्तिहेतुं सर्व्वार्थकामःपरिचिन्तयामि॥

इति नारायणस्वरूपं ध्यात्वा—

इत्यर्द्धभ्रूणदोषस्य शान्तये च कृतं जपं । नारायणाय निक्षिप्तं गुह्यमन्त्रं प्रकाशितं ॥
इत्यर्द्धभ्रूणापराधप्रायश्चित्तमन्त्रः—

अथ त्रिभागभ्रूणापराधप्रायश्चित्ताय माधवमन्त्रः । बृहत्पाराशरे—

ओं ह्रीं नमस्ते माधवायैव मधुदैत्यविमुक्तिद । भ्रूणत्रिमासपापौघशांतये कमलापते ॥
इति माधवमन्त्रं तु पादोनभ्रूणशान्तये ॥

अस्य मन्त्रस्य कुशसृषिर्माधवो देवता अष्टी छन्दः मम त्रिभागभ्रूणापराधशान्त्यर्थे माधवमन्त्र जपे विनियोगः शिरसि कुशसृषये नमः मुखे माधवाय देवतायै नमः हृदये अष्टी छन्दसे नमः इतिन्यासः।
अथध्यानं—वन्दे माधवमीश्वरं गुणनिधिं भ्रूणघ्नपापापहं। श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरालंकृतं ॥
सर्वापद्विनिवारणशुभप्रदं कामाग्निसन्दीपनं। नानादोषविनाशनं करतले चक्रादिभिः शोभितम् ॥
इति माधवस्वरूपं ध्यात्वा—
द्विसहस्रमिदं जप्त्वा भ्रूणहत्याविमुक्तये। दक्षिणाभिमुखो भूत्वा माधवाय समर्पयेत् ॥
इतित्रिभागभ्रूणापराधशांतये माधवमन्त्रः ॥
अथ चतुर्थ परिपूर्णभ्रूणापराधनिवृत्यर्थ हृषीकेशमन्त्रः। कश्यपसंहितायां—
ओं ग्लैं नमस्ते तु हृषीकेश नमस्ते जलशायिने। पूर्णभ्रूणापराधघ्नेन परिपूर्णकलाधर! ॥
अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मर्षिः हृषीकेशो देवताऽनुष्टुपछन्दः मम परिपूर्णभ्रूणापराधविमुक्त्यर्थं हृषीकेशमन्त्रे जपे विनियोगः शिरसि ब्रह्मर्षये नमः मुखेऽनुष्टुप् छन्दसे नमः हृदये हृषीकेशदेवतायै नमः। ग्लैंमित्येकबीजाक्षरमन्त्रेण षडंगन्यासं कुर्यात्। अथ ध्यानं—
वन्दे हृषीकेशमनर्घ्यमूर्त्तिं कलासमग्रैः परिपूर्णदेहं। रामानुजं दिव्यमनोहरांगं भ्रूणापराधाघप्रशांतकारकम् ॥
इति ध्यात्वा—द्विसहस्रमिदं जप्त्वा पश्चिमाभिमुखो विशन्। पूर्णभ्रूणापराधं मे हृषीकेश निवारय ॥
इति परिपूर्णभ्रूणापराधनिवृत्यर्थ हृषीकेशमन्त्रः ॥
अथ चतुष्प्रकारभ्रूणापराधचतुर्मन्त्राणां चतुरः शापमोचनानाह। हयग्रीवपञ्चरात्रे—
ओं अस्य श्रीचतुर्थांशभ्रूणापराधमुक्तकेशवमन्त्रशापमोचनस्य विश्वामित्र ऋषिस्त्रिपुरभैरवीदेवता बृहतीछन्दः मम चतुर्थभ्रूणापराधमुक्तकेशवमन्त्रशापप्रमोचने जपे विनियोगः।
षड्भिस्तार्यांजलीः नीत्वा ह्याग्नेय्यां दिशिर्निःक्षिपेत्। तदा चतुर्थभ्रूणस्यापराधान्मोच्यते नरः ॥
इति पौलस्त्यऋषिशापमुक्तोभवः इति चतुर्थभ्रूणप्रायश्चित्तशापमोचनः ॥
ततोऽर्द्धभ्रूणापराधमुक्तनारायणमन्त्रशापमोचनः। नारदपञ्चरात्रे—
ओं अस्य श्रीअर्द्धभ्रूणापराधमुक्तनारायणमन्त्रस्य कौंडिन्यऋषिशापप्रमोचनस्य नारद ऋषिः कौमारी देवता अष्टी छन्दः मम कौंडिन्यशापमुक्तो भवः इत्यर्द्धभ्रूणप्रायश्चित्तमन्त्रशापमोचनद्वितीयः।
अथ पादोनभ्रूणापराधप्रायश्चितमन्त्रस्य पराशरर्षिशापस्तस्य तृतीयो शापमोचनः। बृहद्गौतमीये—
ओं अस्य श्रीपराशरर्षि शापप्रमोचनस्य शांडिल्यर्षिः शांकरी देवता भूछन्दः मम माधवमन्त्रपराशरर्षिशापप्रमोचने ज० 'त्रिरावृत्ति जलं नीत्वा दक्षिणस्यां दिशि क्षिपेत्। पराशरर्षिशापा तु मन्त्रमुक्तो भवेद्यदि'।
इतिपादोनभ्रूणापराधप्रायश्चित्तमन्त्रो पराशरर्षि तृतीयो शापमोचनः ॥
अथ पूर्णभ्रूणापराधप्रायश्चित्तमन्त्रस्य लोहितर्षिशापस्तस्य मोचनप्रयोगः। अगस्त्यसंहितायां—
अस्य श्री लोहितर्षिशापप्रमोचनस्य गौतमऋषिः श्रीदेवी देवता बृहतीछन्दः मम लोहितर्षिशापप्रमो० ज० वि० दशांजलीः समादाय कोणत्रायव्यतो क्षिपेत्।
पूर्णे भ्रूणापराधस्य प्रायश्चित्तसमन्वितः। मन्त्रस्तु सांगतां याति शापमुक्तो यदा भवन ॥
पाद्मे—भ्रूणो भ्रंस्येत्त्वयं तर्हि माता तं नैव पश्यति। गृहशुद्धं प्रकुर्वन्ति प्रायश्चित्तं दिनत्रयं ॥
अनेनैव विधानेन चान्द्रायणव्रतं चरेत्। पिता भ्रूणं न पश्येत्तदा भ्रूणो न जायते ॥
मातृपित्रोः समक्षं तु भ्रूणपातो ददर्शतु। असाववतरद्भ्रूणो षण्मासाभ्यंतरे तदा ॥
मातृपित्रोः सदा दुःखं कुरुतेऽब्दं न लंघयेत्। मृते गर्भे भवेद्गर्भे त्रिमासाभ्यन्तरे गते ॥

मातृगर्भं स्पृशेन्माता पिता वा मोहसंयुतः । तदाऽसौ मृतगर्भस्तु पुनरेव प्रजायते ॥
पुत्रो वा कन्यका वापि तदैव द्वौ प्रजायते । पुत्राच्छतगुणं पापं कन्यायां परिकीर्त्तितं ॥
रतिकर्मकृताद्गर्भो मृतो पतनमाचरेत् । तस्यैव महती हत्या कदाचिन्नैव मुञ्चति ॥
प्रायश्चित्तं विधानेन कुर्य्यान्मुक्तो भवेद्यदि ॥

अथ चतुष्प्रकार चतुर्णां गर्भाणां चत्वारप्रायश्चित्तमन्त्राः । रुद्रयामले—

तत्रादौ चतुर्थगर्भ प्रायश्चित्तत्रिविक्रममन्त्रः—

ओं व्रीं त्रिविक्रम नमस्तुभ्यं तुर्य्यगर्भापराधह । निवारय कृतं पापं श्रीवत्सांक नमोऽस्तु ते ॥

इति त्रिविक्रममन्त्रः । अस्य मन्त्रस्य माण्डूक ऋषिस्त्रिविक्रमो देवता जगती छन्दः मम तुर्य्यगर्भापराधशांतये त्रिविक्रममन्त्रजपे विनियोगः । शिरसि मांडकाय ऋषये नमः मुखे जगती छन्दसे नमः हृदये त्रिविक्रमाय देवतायै नमः । इतिन्यासः । अथध्यानं—

त्रिविक्रमं कलाकान्तं संसारार्णवतारकं । चिन्तयामि जगन्नाथं जगदानन्ददायकं ॥

इति ध्यात्वा-ईशानाभिमुखो भूत्वा द्विसहस्रमिदं जपेत् । त्रिविक्रमाय देवाय ह्यर्ययेत्सविधानतः ॥

नक्षत्रदर्शनं कृत्वा तंदुलान्नं च भक्षयेत् । मृतस्पर्शे कृते तर्हि कौलके वान्यकौलके ॥
नक्षत्रदर्शनं कृत्वा शुद्धतामाचरेन्नरः ॥
इतिचतुर्थ गर्भ प्रायश्चित्तत्रिविक्रममन्त्रः ॥

अथ शौनकर्षिशापान्वितोऽयं मन्त्रः । वृहन्नारदीये—

ओं अस्य श्रीशौनकर्षिशापप्रमोचनमंत्रस्य वृहदारण्यकर्षिर्भैरवो देवता पंक्ति छन्दः मम शौनकर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः इति शौनकर्षि शापमुक्ताभवः "चतुर्भिरुचरेन्मन्त्रं दक्षिणास्यां जलं क्षिपेत्" इति चतुर्थगर्भापराधशांतये त्रिविक्रममन्त्रशापमोचनं ।

अथार्द्ध गर्भापराधप्रायश्चित्तवामनमन्त्रः । वामनपुराणे—

ओं ह्रीं ग्लौं वामनाय नमस्तुभ्यं नमस्ते ब्रह्मरूपिणे । मेखलाजिनयुक्ताय गर्भार्द्धदोषशान्तये ॥
इति वामनमन्त्रः ॥

अस्य मन्त्रस्य भृगु ऋषिर्वामनो देवता अक्षरा पंक्ति छन्दः ममार्द्ध गर्भापराधनिवृत्यर्थं प्रायश्चित्तवामनमन्त्रजपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत् । शिरसि भृगवे ऋषये नमः, मुखेऽक्षरापंक्तिछन्दसे नमः । हृदये वामनदेवतायै नमः । अथ ध्यानं—

सर्वविद्यार्थतत्वज्ञं वामनं चिन्तयाम्यहं । अर्द्ध गर्भापराधाख्यनिहंतारमजं प्रभुम् ॥ इति ध्यात्वा—
पूर्वाभिमुखमाविश्य सहस्रत्रितयं जपेत् । अर्द्ध गर्भापराधात्तु मुक्तो भवति मानवः ॥
प्रायश्चित्तं विना लोको त्रिपु लोके न तिष्ठति । भ्रूणहा वल्गुलीं योनिमालभ्य भ्रमते भुवि ॥
गर्भहा कौलकीं योनिं चाण्डालमुखमास्यतां । दश जन्मभवां योनिं मुहुर्मुहु प्रवर्त्तिना ॥
बालघ्नो ह्यडकायोनिमजायोनिं च विप्रहा ॥

पुराणसमुच्चये—

पुत्रे पितुर्भवेद्धत्या सहस्रगुणिता भवेत् । पुत्रस्य च भवेत्ताते सहस्रार्द्धं प्रजायते ॥
कन्यायाश्चायुतं गुण्यं दशधा कन्यके पितुः । भ्रातुश्च कन्यकायां तु पञ्चधा जायते ध्रुवं ॥
जामातुश्च भवेद्धत्या स्वसुरि द्विशतं गुणं । जामातरि भवेच्छ्वश्रोरेकविंशगुणं फलं ॥

श्वश्रोः सुतस्य दशधा तत्सुतस्य च पञ्चधा । चतुर्गुणं भवेत्पौत्रे द्विगुणं च प्रपौत्रके ॥
नारीहत्या भवेत्पत्यौ षड्गुणा त्रिगुणस्त्रियां । मातुः पितुः समाख्याता दुहित्री पुत्रकन्यका ॥
मातृश्वसुः पितुर्वापि चतुर्गुणफलं स्मृतं । भगिनी पुत्र कन्यायाः शतगुणप्रवर्त्तिनी ॥
एवं कौलसमुद्भूते हत्या निर्णयमीरितं ॥

भविष्योत्तरे–ब्राह्मणे ब्राह्मणस्यापि समता गुणितं भवेत् । क्षत्रिये द्विगुणं जातं तदर्द्धं क्षत्रियस्य च ॥
वैश्ये त्रिगुणं जातं तं चतुर्थांशं तु ब्राह्मणे । शूद्रे ह्येकगुणं जातं शूद्रस्य तु तदर्द्धकं ॥
अन्त्यजे ब्राह्मणस्यापि द्विसहस्रगुणा भवेत् । म्लेच्छस्य जायते हत्या सामान्या परिकीर्त्तिता ॥
हत्या संस्कारसंभूते म्लेच्छे नैव प्रजायते । संग्रामे वैरभावे च नैव हत्या प्रजायते ॥
अज्ञातां च करोद्धत्यां कदाचिन्नैव मुंचति ॥

इति चतुर्वर्णापराधनिषेधः । इत्यर्द्धगर्भप्रायश्चित्तवामनमन्त्रः ।

अस्य मन्त्रस्य भारद्वाजर्षेः शापस्तस्य मोचनप्रयोगः । बारस्पत्यसंहितायां—

ओं अस्य श्रीभारद्वाजर्षिशापप्रमोचनमन्त्रस्य बारस्पत्यर्षिश्चन्द्रमा देवता भूर्छंदः मम भारद्वाजर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः । भारद्वाजशापमुक्ताभवः । इति षष्ठांजलीः नीत्वा कोणं नैर्ऋतमुत्क्षिपेत् । इति द्वितीयो शापमोचनः ।

अथ पादोनगर्भप्रायश्चित्तपद्मनाभमन्त्रः । शौनकीये—

ओं श्रीं देवाय पद्मनाभाय गर्भदोषापहारिणे । नमस्ते कमलाकान्त सर्वदाघविमुक्तये ॥

इति पादोनगर्भप्रायश्चित्ताय पद्मनाभमन्त्रः । अस्य मन्त्रस्य वेणु ऋषिः पद्मनाभो देवता जगती छन्दः मम पादोनगर्भापराधविमुक्त्यर्थप्रायश्चित्तपद्मनाभमन्त्रजपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

पद्मनाभं पयोमूर्त्तिं गर्भदोषापहारिणं । चिन्तयामि कलापूर्णं नानापुण्यार्थदायकं ॥इति ध्यात्वा—
पश्चिमाभिमुखो भूत्वा मन्त्रं जप्त्वा विधानतः । पादोनगर्भसंभूतां हत्यां मम निवारय ॥

इति पद्मनाभमन्त्रः औत्सारर्षिशापान्वितोऽयं मन्त्रः अस्यौत्सारर्षिशापप्रमोचनमन्त्रस्य साकलऋषिर्वैष्णवी देवता बृहती छन्दः ममौत्सारर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः इत्यौत्सारर्षिशापमुक्ताभवः । पंचाञ्जलौ जलं नीत्वा दक्षिणस्यां दिशि क्षिपेत् । इत्यौत्सारर्षिशापमोचनः ॥

अथ पूर्णगर्भापराधमुक्त्यर्थं प्रायश्चित्ताऽधोक्षजमन्त्रः । बौद्धायने—

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं सौ देवायाधोक्षजाय च । नमो ब्रह्मण्यरूपाय पूर्णगर्भापराधह ! इत्यधोक्षजमन्त्रः ॥

अस्य मन्त्रस्य धौम्यर्षिरधोक्षजो देवता जगती छन्दः मम पूर्णगर्भापराधशान्त्यर्थेऽधोक्षमन्त्रजपे वि० शिरसि धौम्याय ऋषये नमः मुखे जगती छन्दसे नमः हृदयेऽधोक्षजाय देवतायै नमः इति न्यासः । ततो पंचबीजाक्षरेण पञ्चांगन्यासं कुर्यात् । अथ ध्यानं—

वन्देऽधोक्षजमीश्वरं गुणनिधिं गर्भापराधापहं । शंखं चक्रगदाभृतं करतले नारायणं सुन्दरं ॥
सर्वाभीष्टवरप्रदं सकलया लक्ष्म्यान्वितं कामदं । नानामुक्तिप्रदं नृणां शुभप्रदं संसारपापापहम् ॥

इत्यधोक्षजस्वरूपं ध्यात्वा—

उत्तराभिमुखो भूत्वा मन्त्र जाप्यं समाचरेत् । पूर्णगर्भापराधं मे ऽज्ञातपापं निवारय ॥

इति पूर्णगर्भापराधप्रायश्चित्ते ऽधोक्षजमन्त्रः ॥ हिरण्यस्तूपर्षिशापान्वितोऽयं मन्त्रः । संमोहनतन्त्रे—

ओं अस्य श्रीहिरण्यस्तूपर्षिशापप्रमोचनमन्त्रस्य वृषाकपि ऋषिः कात्यायनी देवता पंक्ति छन्दः मम

हिरण्यस्तूपर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः इति हिरण्यस्तूपर्षिशापमुक्ताभवः। इति सप्तांजलीः नीत्वा कोण-वायव्यमुत्क्षिपेत्। इति हिरण्यस्तूपर्षिशापमोचनः॥

भविष्ये—भ्रूणहा गर्भहा वापि दशाब्दपरिमाणतः। परिवारत्रयं नीत्वा समूलं च विनश्यति॥

ब्रह्मघाती नरो यस्तु तीर्थं द्वादशमाचरेत्। गया वेणी च वेत्रा च मणिकर्णिका गंडकी॥

चर्मन्वती सुभद्रा च कालिन्दी च महेन्द्रका। गोमती सरयू क्षिप्रास्तीर्थाः द्वादश संज्ञका॥

आदौ द्वादशतीर्थांश्च कृत्वा श्रीकुण्डमाविशत्। व्यतीय द्वादशाब्दानि प्रायश्चित्तं समाचरन्॥

प्रायश्चित्तं विना लोको ब्रह्महत्या न मुच्यति। सप्तजन्म भवेत्कुष्ठी गलिताङ्गस्तु जायते॥

अथ ब्रह्महत्याप्रायश्चित्ते मधुसूदनमन्त्रः। ब्राह्मे—

"ओं ह्रीं क्लीं मधुसूदनाय स्वाहा" इति ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तार्थमिदं दशाक्षरमधुसूदनमन्त्रं। अस्य मन्त्रस्य नारदर्षिर्मधुसूदनो देवता गायत्री छन्दः मम ब्रह्महत्यापराधशान्त्यर्थे मधुसूदनमन्त्रजपे विनियोगः शिरसि नारदऋषये नमः मुखे गायत्री छन्दसे नमः हृदये मधुसूदनाय देवतायै नमः। अथ ध्यानं—

मधुदैत्यनिहन्तारं मधुसूदनमीश्वरं। ब्रह्महत्यापराधस्य शान्तये चिन्तयाम्यहं॥

इति मधुसूदनस्वरूपं ध्यात्वा—

"पूर्वाभिमुखमाविश्य मन्त्रं जप्त्वा विधानतः। मधुसूदनदेवेश ब्रह्महत्यां व्यपोहतु॥

गोधूमान्नं प्रभक्षयेत नक्तव्रतसमन्वितः। ब्रह्मचर्य्यसमायुक्तो तिलसौवर्णप्रस्थकं॥

गुप्तं कृत्वा च विप्राय प्रतितीर्थेषु दीयते॥

इति ब्रह्महत्यापराधशान्तये मधुसूदनमन्त्रः। दक्षिणामूर्त्यर्षिशापान्वितोऽयं मन्त्रः अस्य मन्त्रस्य शापमोचनः। कौडिन्यसंहितायां—

ओं अस्य श्रीदक्षिणामूर्त्यर्षिशापप्रमोचनमन्त्रस्य नैध्यर्षिस्त्रिपुरसुन्दरी देवता विराट् छन्दः मम दक्षिणामूर्त्यर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः इति दक्षिणामूर्तिशापमुक्ता भवः "सप्ताञ्जलीः समादाय कोणं नैर्ऋतमुत्क्षिपेत्। इतिदक्षिणामूर्तिशापमोचनः।

अथ क्षात्रियवधापराधप्रायश्चित्तः। विष्णुधर्मोत्तरे—

नववर्षं गृहं त्यक्त्वा तीर्थानां नवकं चरेत्। गंगा भागीरथी क्षिप्रा कालिन्दी यमुना तथा॥

कर्मनाशा च कौशिल्या ह्युलकनन्दा च मेनिका। आदावष्टौ करोत्तीर्थं ततो पुष्करतीर्थकं॥

व्यतीय नववर्षाणि प्रदोषव्रतसंयुतः। पक्वान्नं भोजयेन्नित्यं ब्रह्मचर्य्यसमन्वितः॥

पलत्रयं सुवर्णस्य नालिकेरं करोन्नरः। मध्ये मुक्तां समादाय सितवस्त्रेण छादितं॥

नित्यदानं तु विप्राय दत्वा मुक्तिमवाप्नुयात्॥

ततः क्षत्रियप्रायश्चित्तमन्त्राः। अगस्त्यसंहितायां—

नमः प्रद्युम्नदेवाय क्षत्रहत्याव्यमोहक!। सर्वकल्मषनाशाय वासुदेव नमोऽस्तु ते॥ इति मन्त्रः—

अस्य मन्त्रस्य कौशिकर्षिः प्रद्युम्नो देवता बृहती छन्दः मम क्षत्रियापराधविमोचने प्रायश्चित्त-प्रद्युम्नमन्त्रजपे विनियोगः। शिरसि कौशिकाय ऋषये नमः। मुखे बृहती छन्दसे नमः हृदये प्रद्युम्नाय देवतायै नमः इति न्यासः। अथ ध्यानं—

क्षत्रापराधदोषघ्नं प्रद्युम्नं चिन्तयाम्यहं। पीताम्बरधरं देवं कमलाकांतं वल्लभं॥

इति स्वरूपं ध्यात्वा—

वृषारूढाजिने स्थित्वा विल्ववृक्षस्थले जपन्। ईशानाभिमुखो भूत्वा सहस्रत्रितयं जपेत्॥

क्षत्रहत्याद्विमुक्तस्तु मुक्तिभागी भवेन्नरः । गोदानशतकं दत्वा ग्रहवल्लभतां व्रजेत् ॥
सप्तद्वारकृतां भिक्षां जीवहिंसाकृते यदि । तदैव मुच्यते हत्या विनायाञ्चा न मुच्यति ॥
द्वारेषु ब्रुवते वाक्यं हत्यासंधानदर्शनं । दशांशं मुच्यते पापं न ब्रूत्वा तद्विवर्द्धितं ॥
हत्योक्तवत्सरे पूर्णे वासरे प्रतिभागतः । वर्द्धते क्षीयते वापि प्रायश्चित्तेऽकृते कृते ॥

इति क्षत्रियावधापराधप्रायश्चित्तमन्त्रः । वाधूलस् ऋषिशापान्वितोऽयं मन्त्रः । अस्य श्रीवाधूलस् ऋषिशापप्रमोचनस्य अहिर्बुध्न्य ऋषि माहेश्वरी देवता त्रिष्टुप् छन्दः मम क्षत्रियवधापराधप्रायश्चित्ते वाधूल ऋषिशापप्रमोचने जपे विनियोगः इति वाधूल ऋषि शापमुक्तो भवः "पंचाञ्जलौ जलं नीत्वा पश्चिमस्यां दिशि क्षिपेत्" इति वाधूल ऋषि शापमोचनः ॥

अथ वैश्यवधापराधप्रायश्चित्तः । दुर्गारहस्ये—

वर्षषट्कं गृहं त्यक्त्वा तीर्थषट्कं समाचरेत् । गंगासिन्धुस्त्रिवेणी च क्षिप्रा वेत्रवती नदी ॥
गयां गत्वा करोच्छ्राद्धं फल्गुस्नानं समाचरेत् । व्यतीय षड्वर्षाणि पूर्णिमाव्रतमाचरेत् ॥
पायसं भोजयेन्नित्यं भूमिशायी जितेन्द्रियः । पात्रं त्यक्त्वा पलाशस्य पात्रे भोजनमाचरेत् ॥
चतुः पलसुवर्णस्य फलाम्रं कारयेत्सुधीः । मध्ये विद्रुमसमादाय छादयेत्पीतवाससा ॥
नित्यदानं द्विजायैव ददौ मुक्तिमवाप्नुयात् ।

ततः वैश्यवधप्रायश्चित्तेऽनिरुद्धमन्त्रः । देवीपुराणे—

ओं श्रीं क्लीं सौंः अनिरुद्धाय वैश्यापराधघ्नाय फट् स्वाहा, इति विंशाक्षरोऽनिरुद्धमन्त्रः । अस्य मन्त्रस्येरिपठि ऋषिरनिरुद्धो देवता कांतिछन्दः मम वैश्यापराधशान्त्यर्थे प्रायश्चित्तेऽनिरुद्धमन्त्रजपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

वैश्यहत्यापराधघ्नमनिरुद्धं भजाम्यहं । शंखचक्रगदाशार्ङ्गनानावस्त्रविभूषितं ॥

इति ध्यात्वा—सिंहचर्मणि संविश्य पिप्पलाधस्तले जपन् । आग्नेयाभिमुखो भूत्वा सहस्रद्वितयं चरेत् ॥

वैश्यहत्याविमुक्तस्तु मुक्तिभाग्भवते नरः । द्विपं चाशगवां दानं दत्वा कौटुम्बपालकः ॥

इति वैश्यहत्यापराधप्रायश्चित्तेऽनिरुद्धमन्त्रः । यमदग्निशापान्वितोऽयं मन्त्रः । ओं अस्य श्रीयमदग्निशापप्रमोचनस्य वशिष्ठ ऋषिस्त्रिपुरभैरवी देवता अष्टी छन्दः मम वैश्यहत्यापराधप्रायश्चित्तेऽनिरुद्धमन्त्राराधने यमदग्निशापप्रमोचने जपे विनियोगः । इति यमदग्निशापमुक्तो भवः "चतुर्भिरञ्जलीः नीत्वा चतुर्दिक्षु परिक्षिपेत्" । इति यमदग्निशापमोचनः ॥

अथ शूद्रापराधप्रायश्चित्तः । विष्णुयामले—

वर्षत्रयं गृहं त्यक्त्वा तीर्थानां त्रयं चरेत् । गंगा चर्मन्वती वेत्रा स्नानं कुर्याद्विधानतः ॥
चतुर्दशी व्रतं कृत्वा फलाहारं समाचरेत् । ब्रह्मचर्य्यसमायुक्तस्त्रिपलस्वर्णविल्वकं ॥
मध्ये रत्नं समादाय पट्टवस्त्रेण छादितं । विप्राय नित्यदानं तु दत्वा मोक्षमवाप्नुयात् ॥

ततः शूद्रवधापराधप्रायश्चित्तेऽच्युतमन्त्रः । विष्णुपुराणे—

ओं विष्णवेऽच्युतरूपाय व्यापिने परमार्थिने । शूद्रापराधपापघ्ने नमस्ते मोक्षदायिने ॥

इति द्वात्रिंशाक्षरोऽच्युतमन्त्रः । अस्य मन्त्रस्य गौतमपुत्रो वामदेवर्षिरच्युतो देवता गायत्री छन्दः मम शूद्रापराधविमोचने प्रायश्चित्तेऽच्युतमन्त्रजपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

अच्युतं कमलाकांतं शूद्रहत्याविनाशनं । सर्वदैत्यनिहन्तारमीश्वरं प्रणमाम्यहं ॥ इति ध्यात्वा—

रक्तकम्बलमादायाऽशोकवृक्षस्तले विशन् । नैऋताभिमुखो भूत्वा द्विसहस्रमिदं जपेत् ।
शूद्रहत्याविमुक्तस्तु मुक्तिभागी भवेन्नरः । गोदानं दशकं दत्वा कौटुम्बसौख्यमाप्नुयात् ॥
चतुर्द्वारकृताभिक्षा शूद्रहत्या कृतेऽपि वा । तदैव मुच्यते हत्या न भिक्षा मुच्यते क्वचित् ॥
भविष्ये—अपराधी भवेल्लोको विचित्रश्चित्तविभ्रमः । प्रतिवासरमेधन्ते रात्रौ च लवणं यथा ॥
लवणं दीयते रात्रौ दारिद्र्यमृणमेधते । यस्मात्क दान दातव्यं लवण रात्रि संभवे ॥
आदित्यपुराणे—

नित्यमेव कृतं दानं वासरे लवणस्य च । गृहपाकानुमानेन न्यूनाधिक्यविवर्जितं ॥
तद्गृहे ऋणदारिद्र्यं कदाचिन्नैव तिष्टति । बहु प्रवर्द्धितो गेहे ऋणदारिद्र्यव्याधयः ॥
लवणस्य कृते दाने वर्षमात्रं विनश्यति । धनधान्यसमृद्धिस्तु पुत्रपौत्रादि वृद्धयः ॥
नैरोग्यसुखसंपत्तिर्मंगलयोत्सवकेलयः । प्रतिवासरमेधन्ते सर्वकामार्थचिन्तनैः ॥
श्रीकुण्डादिशुभे तीर्थे दाने च लवणस्य च । कृते शतऋणैः ग्रस्तो बहुदारिद्र्यपीडितः ॥
मुक्तो भवति लोकोऽस्मिन्सर्वकामानमाप्नुयात् । सदा संपीड्यमानोऽपि मुच्यते व्याधिबंधनात् ॥
यथैवादित्यवारेऽसौ चणादिधान्यसंभवाः । तप्तवालुकयंत्रेण भुंक्त्वा पानादिकं चरेत् ॥
बहुधा ऋणदारिद्र्यरोगशोकभयं व्यथा । भूतं तद्द्विगुणं जातं ननु स्याद्वर्द्धते क्षणं ॥
शनिवारे चणाधान्यं बालुकायन्त्रभुञ्जितं । भुंक्त्वा बहुविधं जातं दारिद्र्यं कलहं ऋणं ॥
नाशये चणमात्रेण गृहे नैव कदा भवेत् । तद्गृहे वर्द्धते लक्ष्मीः धनधान्यादिसम्पदा ॥
स्वप्नेपि नैव पश्येत रोगशोकदारिद्रजं । दरिद्रागमने जातं निद्रालस्यं मनो भ्रमं ॥
पुरुषाद्द्विगुणं पापं स्त्रीबधे जायते ध्रुवं । नारीकर्मरता भर्त्ता नारी स्याद्बहुनक्षिणी ॥
तद्गृहे नैव वृद्धिः स्याद्धनधान्यादिसंपदः । प्रतिवासरमेवास्ति क्षीयते च प्रतिक्षणं ॥
उपवासदिने वापि ह्येकादश्यां विशेषतः । तप्तं च वालुकायन्त्रं करोद्ग्रामे पुरेऽपि वा ॥
व्रतं निष्फलतां याति ब्रह्महत्या प्रजायते । शतजीवाभिघातेन हत्यैका ब्रह्मघातिनी ॥
भुञ्जितो घ्राणतो वापि जीवाग्निदहनादपि । दैवशापो भवेद्ग्रामे तस्माद्ग्रामो विनश्यति ॥
दुर्भिक्षं मरणं व्याधिदरिद्रो राजविग्रहः । यतस्तु बालुकायन्त्रं तप्तं नैव तु कारयेत् ॥
एवं पक्वान्नकृद्यन्त्रं मिष्टान्नाय प्रकल्पितं । एकादश्यष्टमी पूर्णाभूता सा पक्षवर्द्धिनी ॥
पितृपक्षे च भाद्रे च वैशाखे माघकार्तिके । कदाचिन्नैव कर्त्तव्यं वन्हिसंयुक्ततप्तकं ॥
वर्षमध्ये भवेद्भ्रष्टो ग्रामो निर्धनपीडितः ।

इति शूद्रापराधप्रायश्चित्तोऽद्भुतमन्त्रः वृषाकपिशान्वितोऽयं मन्त्रः । अस्य श्रीवृषाकप्यर्षिशापप्रमोचनस्य च्यवनर्षिविश्वम्भरो देवता गायत्री छन्दः मम वृषाकप्यर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः इति वृषाकप्यर्षिशापमुक्तो भव: "चतुर्भिरञ्जलीः नीत्वा दक्षिणस्यां दिशि क्षिपेत् । इति वृषाकप्यर्षिशापमोचनः ॥
अथान्त्यजवधापराधप्रायश्चित्तः । भविष्ये—

वर्षद्वयं गृहं त्यक्त्वा गंगावेत्रवतीं चरेत् । भास्करस्य व्रतं कुर्य्यात् दधिभक्तं तु भोजयेत् ॥
चतुःपलसुवर्णस्य दाडिमं कारयेच्छुधीः । हरित्पट्टेन वस्त्रेण छादितं दानमाचरेत् ॥
नित्यं विप्राय दातव्यं हत्यामुक्तो भवेन्नरः ।

ततोऽन्त्यजवधापराधप्रायश्चित्ते जनार्द्दनमन्त्रः। माधवीये तन्त्रे—

जनार्द्दनाय देवाय गोब्राह्मणहिताय च। वधान्त्यजापराधघ्ने नमस्ते मुक्तिदायिने॥

इति द्वात्रिंशाक्षरो जनार्द्दनमन्त्रः। अस्य मन्त्रस्य वेणुऋषि र्जनार्द्दनो देवता पंक्ती छन्दः ममान्त्यजवधापराधविमोचने प्रायश्चित्ते जनार्द्दन मन्त्रजपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्।

अथध्यानं—अन्त्यजघ्नापराधघ्नं वन्देऽहं त्वां जनार्द्दनं। सच्चिदानन्दरूपाढ्यं पीतवस्त्राभिलंकृतं॥

इति ध्यात्वा-श्यामकम्बलमादाय श्वेतार्कतलतो जपेत्। आग्नेयाभिमुखो भूत्वा त्रिसहस्रमिदं जपेत्॥

हत्यांत्यजविमुक्तस्तु मुक्तिभाग्जायते नरः। गोदानपंचकं दत्वा सौभाग्यादिसुखं लभेत्॥

दशद्वारकृताभिन्नांत्यजहत्या विमुच्यति।

इत्यंत्यजवधापराधप्रायश्चित्ते जनार्द्दनमन्त्रः। भार्गवर्षिशापः। अस्य श्री भार्गवर्षिशापप्रमोचनस्य सावारवर्षिः कात्यायनी देवता जगती छन्दः मम भार्गवर्षिशापप्रमोचने जपे वि०इति भार्गवर्षिशापमुक्ता भवः। "त्रिभिरञ्जलिमादाय पश्चिमस्यां दिशि क्षिपेत्"। इति भार्गवर्षिशापमोचनः।

अथ चाण्डालवधापराधप्रायश्चित्तः। ब्राह्मे—

वर्षमेकं गृहं त्यक्त्वा गंगां च सरयूं ययौ। चाण्डालघातको लोको स्नानाद्धत्यां व्यपोहति॥

भूमिपुत्रव्रतं कुर्यात् पुन्नागं भोजयेत्सुधीः। अतिथ्यागमने काले मध्यान्हे पातकी नरः॥

मार्जारयोनिमालभ्य प्रायश्चित्तं विनाधमः। पञ्चकर्षप्रमाणेन सौवर्णं नारंगीफलं॥

मध्ये नीलमणिं धृत्वा सितपट्टेन वाससा। छादितं विधिवद्द्याद्ब्राह्मणाय समासतः॥

मुच्येच्चांडालकी हत्या नित्यदानकृते यदि॥

ततश्चांडालवधापराधप्रायश्चित्ते परब्रह्ममन्त्र.। संमोहनतन्त्रे—

परब्रह्मस्वरूपाय जगदानन्दहेतवे। चांडालवधपापघ्ने नारायण नमोस्तु ते॥

इति द्वात्रिंशाक्षरो परब्रह्ममन्त्रः। अस्य मन्त्रस्य काण्वर्षिः परब्रह्मो देवता अक्षरा पंक्ति छन्दः मम चांडालवधापराधविमोचने प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत्। शिरसि काण्वर्षये नमः मुखेऽक्षरापंक्तये छन्दसे नमः हृदये परब्रह्मणे देवतायै नमः इति न्यासः। अथ ध्यानं—

वन्दे परब्रह्ममनादिरूपं देवाधिदेवं कमलायताक्षं। चांडालपापघ्नमजं सुरेशं सर्वार्थदं सुन्दरश्यामलांगं॥

इति परब्रह्मस्वरूपं ध्यात्वा—

मृगचर्म समादाय वटस्याधस्तले जपेत्। पूर्वाभिमुखमाविश्य सहस्रद्वितयंचरेत्॥

ग्रन्थसंज्ञकगोदानं नवकं दीयते बुधः। नवद्वारकृताभिन्ना हत्या चांडालकी ब्रजेत्॥

इति चांडालवधापराधप्रायश्चित्ते परब्रह्ममन्त्रः। आप्लुवानृषिशापान्वितोऽयं मन्त्रः। अस्य श्री-आप्लुवानृषिशापप्रमोचनस्य साकलर्षिः वैष्णवी देवता विराट् छन्दः ममाप्लुवानृषिशापप्रमोचने जपे विनियोगः। इत्याप्लुवानृषि शापमुक्ता भवः "पंचाञ्जलिः समादाय कोणमीशानमुत्क्षिपेत्। इत्याप्लुवानृषिशापमोचनः॥

इतीरितं ब्रह्मवधादिपातकं नरस्वरूपं सकलाभिशान्तये। प्रायश्चित्तं गोप्यव्रतादिदानं श्रीभट्टनारायणसंज्ञकेन॥

इति श्री भास्करात्मज श्रीनारायणभट्टगोस्वामी विरचिते ब्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे ब्रजमाहात्म्यनिरूपणे श्यामकुंडदृष्टान्ते गोप्यभ्रूणादिवधप्रायश्चित्ताभिधानाख्ये नरस्वरूपके षष्ठोऽध्यायः॥

॥ सप्तमोऽध्यायः ॥

अथ गवादिपशुजन्तूनां वधापराधप्रायश्चित्तः। स्कान्दे—

गवादि पशुजन्तूनां म्लेच्छावासे वधोभवेत्। तद्ग्रामे च पुरे वापि हत्यादोषो न विद्यते॥
ब्राह्मणे त्वथवा वैश्ये जीवहत्याभिजायते। पशुपक्षिमृगादीनां वधदोषमुदाहृतं॥
यथैव च सुरापानं महापातककारकं। तथैव वैष्णवानां च चातुर्वर्णाभिधायिनां॥
क्षत्रिये च गवां त्यक्त्वा पशुपक्षिमृगादयः। तेषां वधे कृते नैव हत्यादोषोभिजायते॥
नीलकण्ठशुकश्वानबिडालशिखिचाग्रगाः। एषां वधं त्यजन्ति स्म हत्या स्यात् कुलघातिनी॥
चतुर्वर्णाश्रमावासे गवां घातं समुद्भवं। समूलं नाशतां याति वायुनोदितवह्निना॥
तदैव घातकस्यापि वधहत्या न जायते। राजा शस्याधिपो मन्त्री तथैव ग्रामरक्षकः॥
येषां न विद्यते दोषं प्रायश्चित्तमथाचरेत्। चौरो ऽसत्कृतको वापि जीवहिंसां न कारयेत्॥
गोघ्नो वधं न कुर्वीत तद्हत्या फलमाप्नुयात्। सीताशिखावधं कुर्यात् गवां हत्या शतंसमं॥
फलमाप्नोति लोकोपि समूलं च विनश्यति। गवादिपशुजातीनामग्रतस्तृणमाहरेत्॥
अथवा भोजनं ह्यग्राद्वाकशल्येन वृथा करोत्। तदात्मकल्पनात्तस्य हत्यास्यात्कुत्सिनीमता॥
दारिद्रशोकसप्रार्त्तापमानबहुदुःखदा। कस्य नीत्वा ददौ कस्मै द्रव्यादीनर्थसञ्चयान्॥
लोकनिन्दामयी नाम हत्या स्याद्बहुक्लेशदा। अजैडकां बालवतीं गुर्विणीं वा शिशुं तथा॥
वैश्यविप्रापराधस्तु क्षत्रिये नैव विद्यते। मेषछागसुतस्यापि वधदोषो न जायते॥
कालस्वरूपजीवानां वध दोषो न विद्यते। यज्ञकर्मणि जीवानां घाते दोषो न विद्यते॥
यज्ञांशशेषसंभुक्तं मांसं जीवसमुद्भवं। वैश्यब्राह्मणयो नैव भुक्तदोषो न जायते॥
शृगालभेडसिंहानां सुतमज्ञानसंयुतं। तत्रैव नगरे ग्रामे गृहे नैवानयेत् क्वचित्॥
वानरर्क्षविवर्णानामेषामागमनं शुभं। शृगालादित्रयाणान्तु सुतागमन वेश्मनः॥
ब्रह्महत्या फलं जातं समूलं च विनाशयेत्।

धर्मप्रदीपे—मनसा कर्मणा वाचा यज्ञं वैवाहिकादिकं। विध्वंसनमभीच्छन्ति कृच्छ्रहत्या फलं लभेत्॥
विंशवर्षान्तरे लोको समूलं च विनश्यति। ब्राह्मणो वाममार्गस्थो सुरामांसरतः सदा॥
मांसाहारे सुरापाने तस्य दोषो न विद्यते। दुर्गोत्सवोत्सवे नित्यमजाघातं चकार ह॥
दैवोदितमहामन्त्रैस्तस्य दोषोन विद्यते। क्षत्रियो महिषं हन्यात् दैत्यरूपं स्मृतं तदा॥
दुर्गोत्सवे न दोषः स्यात् प्रीता महिषमर्दिनी। विना महिषघातेन क्षत्रियोऽविजयी भवेत्॥
महिषी पयस्विनी घाते हत्याकलगभिधायिनी। पुत्रशोकमवाप्नोति प्रायश्चित्तं विना यदा॥
मूर्खाणाञ्च नराणाञ्च कदा हत्या न मुञ्चति। गृहभंगं स्थानभ्रष्टं द्वयोत्साहं करिष्यति॥
हत्यालिंगं समादाय तीर्थयात्रां समाचरेत्। कपोतमैनिकासाराचक्रवाकूगर्दभादयः॥
जीवापराधिनी नाम हत्यैषा परिकीर्तिता। पुरुषं मृतवत्साख्यं करोत्यब्दत्रयान्तरे॥
कागाकाशवहायास्तु हत्या दोषो न विद्यते। शृगालश्वानत्रिक्षिप्तो उलूको कालकारकः॥
तेषां वधे न हत्या स्यादुष्ट्रे किंचिद्भविष्यति। श्यामावधे भवेद्धत्या दैवघ्नीत्यभिधा स्मृता॥
संग्रामपरिवारञ्च कुटुम्बं च विनाशयेत्।
चिरीपंडुकुलीमूषक्षयाणां मधर्माचरेत्। मिथ्या कलंकदा नाम हत्या द्रव्यार्थनाशिनी॥

मृद्धजिर्णी नागत्यक्ता द्रुयोर्हत्या न विद्यते । बंधनागतजीवानां गवादीनां पयस्विनां ॥
क्षुधया पीडितं कुर्यात् हत्या स्यात्कल्पदाहिनी । दरिद्ररोगसन्तापं कुरुते नन्वहर्निशं ॥
मिथात्मकलदाहं स केषाञ्चित् कारयेत्कदा । काम्यहत्या भवेत्तस्य पुत्राद्युत्सवनाशकः ॥
छायान्वितं हरिद्वृक्षं यश्छिनोत्यधमोनरः । तस्याद्रा जायते हत्या समूलञ्च विनाशकं ॥
मनसा कर्मणा वाचा परद्रोहं विचिन्तयन् । समूलं नाशमायाति द्रोहहत्या ऽशुभप्रदा ॥
शुष्कवृक्षं छिनोद्यस्तु गृहकार्यार्थमाहृतं । तस्य हत्या न दोषो च नैवात्र शुभदायकं ॥
घनछायं वटं छित्वा ब्रह्महत्या समं फलं । अश्वत्थमोदकी नाम हत्या कुल विनाशिनी ॥
निम्बे मनोर्थहानाम हत्या सौख्यविनाशिनी । चूते फलप्रहानाम हत्या भोगप्रणाशिनी ॥
विल्वे द्रव्यपहानाम पूजाधर्मार्थनाशिनी । घातयेद्धरितं वृक्षं मन्त्रप्रचारसिद्धये ॥
रोगिणीनाम सा हत्या सर्वदा व्याधिदायिनी । सफलं हरितं वृक्षं निर्मूलफलकारिणी ॥
निर्मूलनाशिनी हत्या वंशवृद्धिविनाशिनी । विफलं कंटसंयुक्तं वृक्षं छित्वा हरिच्छुभम् ॥
नैव हत्या भवेत्तस्य वैरभावेन दूषितं । कृष्णपक्षे छिनोत्काष्ठमधुनं च प्रजायते ॥
छलेन कस्य द्रव्याणि नीत्वा तस्मै न दीयते । पञ्चजन्मसु जामाता भूत्वा द्रव्यं समाददे ॥
व्यभिचारप्रलोभेन दद्याद्दानं मिषेण च । तद्दानं निष्फलं जातमिच्छितार्थं विनाशयेत् ॥
गवादिधनधान्यादिवस्त्रहर्म्यादिभूमयः । वाससो दानमिच्छन्ति वाक्यदानविधायकः ॥
नैव दद्याच्च विप्राय समूलं तद्विनश्यति । विप्रं निमन्त्रयेद्यस्तु भोजनं नैव कारयेत् ॥
तदात्मकल्पनात्पापं प्राणहत्यासमाह्वयं । यदर्थं दीयते दानमन्यकस्मै प्रदीयते ॥
तदात्मकल्पनाल्लोकश्चाण्डालत्वं प्रजायते । धर्मकर्मविहीनस्तु वैमुख्यं देवपितृतः ॥
फलञ्च छेदने कस्य पुत्रशोकमवाप्नुयात । द्विजनैमंत्रणं कृत्वा यद्वस्तु भापयेत्क्वचित् ॥
तमेव नैव कुर्वन्ति भोजनं निष्फलं भवेत् । शिशुकं शुष्कबीजञ्च रक्तं व श्वेतचन्दनं ॥
जगन्नाथाम्बिकायैव भानुरूपायचिच्छिदे । हरिते नैव दोषः स्यात् प्रतिमानिर्मिताय वै ॥
बलान्मोहेन कस्यैव पुस्तकं जगृहे नृपः । समूलनाशमायाति ब्राह्मणात्मविकल्पनात् ॥
स्थानभ्रष्टं करोद्राजा समूलञ्च विनश्यति ।

इति प्रायश्चित्तनिषेधः । तत्रादौ गोवधप्रायश्चित्तः । स्कान्दे—

प्रायश्चितं विना गोहा नारीहस्ताद्वधं लभेत् । वर्षं षट्कं गृहं त्यक्त्वा सप्ततीर्थं समाचरेत् ॥
गंगा चर्मण्वती वेत्रा यमुना गण्डकी नदी । सिन्धुश्च कर्मनाशाख्या सप्ततीर्थाः प्रकीर्तिता ॥
एषां स्नपनमात्रेण गोहत्यान्मुच्यते नरः । देवीव्रतं समाचक्रे भुञ्जीयान्मिष्टफेणिका ॥
नक्तव्रतं च षड् वर्षं ब्रह्मचर्यसमन्वितः । स्त्रीयोनिं लभते लोको प्रायश्चित्तं विनाधमः ॥
देवप्रस्थप्रमाणेन सौवर्णिः सप्रगाःकरोत् । बहुधा रक्तपट्टेन वाससा गुप्तछादिताः ॥
सप्ततीर्थकृतादानात् गोहत्या मुच्यते यदा ॥ इति गोवधप्रायश्चित्तदाननिर्णयः ।

ततो गोवधापराधप्रायश्चित्ते विष्णुमन्त्रः । आदिपुराणे—

नमस्ते गरुडारूढ़ विष्णवे प्रभविष्णवे । कमलापतये देव गोऽपराधं निवारय ॥ इति द्वात्रिंशाक्षरो विष्णुमन्त्रः

अस्य मन्त्रस्य सांख्यायनर्षि, विष्णुर्देवता, गायत्रीछन्दः मम गोवधापराधविमोचने प्रायश्चित्ते जपे

विनियोगः न्यासं पूर्ववत् । शिरसि सांख्यायनाय ऋषये नमः मुखे गायत्री छन्दसे नमः हृदये विष्णुदेवतायै नमः इति न्यासः । अथ ध्यानं—

वन्दे विष्णुं रमाकान्तं पुण्यशीलादिभिर्युतं । गोघ्नापराधहन्तारं जगत्रयहितैषिणं ॥

इति विष्णुरूपं ध्यात्वा—

मृगचर्मं समादाय लक्ष्मीनारायणस्तले । उत्तराभिमुखो भूत्वा त्रिसहस्रमिदं जपेत् ॥

द्वादशं ग्रन्थिसंज्ञकं प्रायश्चिते च दीयते । शक्रद्वारकृताभिख्या गोलिंगेन समाकुलः ॥

तदैव मुच्यते हत्या गवां धर्मार्थनाशिनी ॥

इतीव दानतीर्थानि प्रायश्चित्तं विधाय च । गोवर्धने च श्रीकुण्डे उर्जस्नानसमाचरेत् ॥

तदापराधमुक्तस्तु सर्वसौभाग्यमाप्नुयात् ।

इति गोवधापराधप्रायश्चित्ते विष्णुमन्त्रः । देवराजर्षिशापान्वितोयंमन्त्रः—

अस्य श्रीदेवराजर्षिशापप्रमोचनमौर्व ऋषिः पद्मावती देवता कान्तिछन्दः मम देवराजर्षिशापप्रमोचने जपेवि०—इति देवराजर्षिशापमुक्ताभव:—अष्टवाराञ्जली: नीत्वा ह्यष्टपूर्वादिषु क्षिपेत्-इति देवराजर्षि शापमोचनः ।

अथ वृषवधापराधप्रायश्चित्ते कृष्णमन्त्रः । वाराहे—

वृषहत्यापराधे च प्रायश्चित्तं च गोसमं ।

ओं कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च । नमस्ते वृषहत्याघ्ने गोपिकावल्लभाय च ॥

इति द्वात्रिंशाक्षरो कृष्णमन्त्रः । अस्य मन्त्रस्याश्वलायनर्षिः श्रीकृष्णो देवता जगती छन्दः मम वृषवधापराधविमोचने प्रायश्चित्ते कृष्णमन्त्र ज० वि० न्यास० पू० अथ ध्यानं—

पद्मात्वन्नयने स्मरामि सततं भावो भवत्कुंतले ; नीलेमुह्यति किंकरोमिमहितैः प्रीतोस्मि ते विभ्रमैः॥

मिथुस्त्वप्नवचो निशम्य सरूपा निर्भत्सतो राधया । कृष्णस्तद्धिपिनेतदपदिशः क्रीडाविटः पातु वः ॥

इति ध्यात्वा—व्याघ्रचर्मं समादाय धातृवृक्षस्तले जपन् । ईशानाभिमुखो भूत्वाद्विसहस्रमिदं जपेत् ॥

रुद्रग्रन्थिं च गोदानं विप्राय च प्रदापयेत् । रुद्रद्वारकृताभिख्या वृषहत्या विमुच्यति ॥

प्रस्थैकादशमानेन शिवरुद्रस्वरूपकं । रुक्मस्य विधिवत्कृत्वा तण्डुलेन सुगोप्यकं ॥

सितेन वाससा बध्वा गुप्रदानं समाचरेत् । गोवर्धने प्रियाकुण्डे कार्तिकस्नानमाचरेत् ॥

पूर्वषट्तीर्थकं कृत्वा ततो गोवर्धनं चरेत् । गणेशस्य व्रतं कुर्यादन्नोदनमभोजयेत् ॥

वर्षत्रयं गृहं त्यक्त्वा ब्रह्मचर्यसमन्वितः । कर्षद्वयं रुक्मपात्रं प्रस्थतण्डुलपूरितं ॥

नित्यदानं करोद्धीमान् वृषहत्याद्विमुच्यते ।

इति वृषवधापराधप्रायश्चित्ते कृष्णमन्त्रः—शौनकर्षिशापान्वितोऽयं मन्त्रः ।

अस्य श्रीशौनकर्षिशापप्रमोचनमन्त्रस्य—मधुछन्दः ऋषिर्भुवनेश्वरी देवता—विश्वच्छन्दः मम शौनकर्षिशापविमोचने ज० वि० इति शौनकर्षिशापमुक्ताभवः । नवभिरञ्जलीर्नीत्वा पश्चिमस्यां दिशि क्षिपेत् ।

अथ महिषीवधापराधप्रायश्चित्तः । कुलार्णवे—

मासत्रयं गृहं त्यक्त्वा गंगायमुनयोः स्नपन् । यमराजं सुवर्णस्य पञ्चकर्षप्रमाणतः ॥

मूर्तिं कृत्वा विधानेन रक्तपट्टेन छादितां । कृष्णगोरवरुढाढ्यं तीर्थे दानं समाचरेत् ॥

स्वर्णं पलार्द्धकं नीत्वा सार्द्धप्रस्थं तिलं सितं । नित्यदानं करोद्यस्तु दक्षिणाभिमुखोभवन् ॥

यमस्य दीपदानं तु रात्रौ नित्यं समाचरेत् । तदैव महिषी हत्यान्मुच्यते नात्र संशयः ॥
सोमरूद्रव्रतं कुर्य्यात्प्रायश्चित्तमितीरितं । प्रायश्चित्तं विना रोगो मनस्तापं दरिद्रता ॥
दर्शनं यमराजस्य नित्यमेव प्रजायते । महिष्यारोहणस्यापि ह्यलक्ष्मी च वसेत्गृहे ॥

इति महिषीप्रायश्चित्तनिषेधः । ततो महिषीवधापराधप्रायश्चित्ते चंडीमन्त्रः—दुर्गारहस्ये । ओं क्लीं स्रां ग्लौं, चंडदेव्यै नमः इति दशाक्षरचंडीमन्त्रः अस्य मन्त्रस्य रूद्र ऋषिश्चंडी देवता उष्णिक् छन्दः मम महिषीवधापराधप्रायश्चित्ते चंडीमन्त्रजपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

ध्यायेच्चंडीं महादेवीं चण्डमुण्डविनाशिनीं । महिष्यासुरहन्त्रीं त्वां महिषीपापनाशिनीं ॥
इति ध्यात्वा-त्रिसहस्रमिदं जप्त्वा श्यामकम्वलसंस्थितः । दक्षिणाभिमुखो भूत्वा विल्ववृक्षस्तले जपन् ॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्रिस्त्वं गृहाण परमेश्वरि ! । त्रिवारांजलिमादाय नैऋतं कोणमुत्क्षिपेत् ॥
इति महिषीवधापराधप्रायश्चित्ते चण्डीमन्त्रः । अस्य मन्त्रस्य शापो नास्ति ।

अथाश्ववधापराधप्रायश्चित्तः । हयग्रीवपञ्चरात्रे—

दशमासं गृहं त्यक्त्वा गंगा वेत्रवतीं चरेत् । सूर्य्यस्य प्रतिमां कृत्वा नवकर्षसुवर्णतः ॥
रक्तवस्त्रेण संगोप्य तीर्थदानं समाचरेत् । पलद्वयं सुवर्णं तु नित्यदानं समाचरेत् ॥
पूर्वाभिमुखमाविश्य मन्त्रजाप्यं विधानतः । प्रायश्चित्तं विना तापं मनसस्तु प्रजायते ॥
सप्तम्यान्तु व्रतं कुर्य्याद्दध्योदनमभोजयेत् । अश्वहत्या विमुक्तस्तु सर्वदा विजयी भवेत् ॥

इत्यश्ववधापराधप्रायश्चित्तनिषेधः । ततो प्रायश्चित्तेऽश्विनीकुमा मन्त्रः । वायुपुराणे—ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं अश्विनीकुमाराभ्यां स्वाहा इति द्वादशाक्षरोऽश्विनीकुमारमन्त्रः । अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषिरश्विनीकुमारो देवता जगती छन्दः ममाश्ववधापराधविमोचने प्रायश्चित्तेऽश्विनीकुमारमन्त्रजपे वि० न्या० पूर्ववत् । अथ ध्यान—अश्वापराधहन्तारावश्विनौ देवसत्तिकौ । नमामि शुभदौ काम्यौ कुमारौ सुमनोहरौ ॥
इति ध्यात्वा – द्विसहस्रमिदं जप्त्वा पलाशपिप्पलस्तले । शुक्लासनं समादाय कुमारप्रीतये ततः ॥
सप्ताञ्जलौ जलं नीत्वा ह्युत्तरस्यां दिशि क्षिपेत् ।
इत्यश्ववधापराधप्रायश्चित्तेऽश्विनीकुमारमन्त्रः । अस्य मन्त्रस्य शापो नास्ति ॥

अथ श्वानवधापराधप्रायश्चित्तः । भैरवीयतन्त्रे—

श्वानस्य तु वधे कार्य्ये श्वानयोनिं व्रजेदसौ । पुनः पुनर्दशावृत्याऽकालमृत्युमवाप्नुयात् ॥
प्रायश्चित्तं विना हत्यां नरेभ्यो गुप्तमाचरेत् । पुत्रशोकं समालभ्य वध्वाः वैधव्यमीक्षयेत् ॥
श्वानवत्तत्रिमाप्नोति संतापं च क्षणे क्षणे । शुनीवधं करोत्यस्तु कन्यावैधव्यमीक्षते ।
सप्तजन्म भवेत्हत्या हृदयोपरिगामिनी । वर्षत्रयं गृहं त्यक्त्वा पंचतीर्थं समाचरेत् ॥
गंगा वेत्रवती भद्रा गण्डकी यमुना तथा । वर्षत्रयान्तरे पञ्चतीर्थानां स्नानमाचरेत् ॥
श्वानहत्या विमुक्तस्तु नक्तभोजनमाचरेत् । प्रकृतिप्रस्थमानेन सौवर्णैः पञ्चमूर्त्तयः ॥
श्यामांगपट्टवस्त्रेण छादयेद्विधिपूर्वकं । पंचतीर्थो कृतं दानं श्वानहत्याद्विमुच्यति ॥
सुवर्णं टंकमानेन गोधूमचूर्णगोप्यकं । विप्राय नित्यदानं हि दत्वा मुक्तिमवाप्नुयात् ॥

इति श्वानवधप्रायश्चित्ते दाननिर्णयः । ततः श्वानवधापराधप्रायश्चित्ते मुक्तिभैरवमन्त्रः । मंथानभैरवीये—" ओं ह्रां श्रीं ह्रीं श्रीं मुक्ति भैरवाय स्वाहा" इति द्वादशाक्षरो मुक्तिभैरवमन्त्रः । अस्य मन्त्रस्य जन्हु ऋषि मुक्तिभैरवो देवता बृहती छन्दः । मम श्वानवधापराधमुक्तये प्रायश्चित्ते ज० विनियोग न्या० पूर्ववत्

अथ ध्यानं—श्वानापराधपापघ्नं मुक्तिदं भैरवं भजे । ऋणमुक्तिप्रदं नृणां शून्यदारिद्रनाशनं ॥
इति ध्यात्वा—कृष्णाशोकतले स्थित्वा श्यामासनविराजितः । ईशानाभिमुखो भूत्वा द्विसहस्रमिदं जपेत् ॥
व्यतीय त्रिणिवर्षाणि ग्रामं नीत्वा करोद्यम् । शीतकण्ठमहादेवं मुक्त्यै स्थापयेऽत्रहि ॥
मत्स्यावतारविष्णोश्च जन्मन्यवसरे दिने । स्थापयेद्द्रुमूर्तिं तु स्नानपापौघमुक्तये ॥

मत्स्यावतारजन्मनिर्णयः । मात्स्ये—
मत्स्यादि पंच गोप्यास्ते तीर्थङ्कूर्म्मादिमूर्त्तयः । वराह राम कल्की च बौद्धो षड्गोप्यसंज्ञिकं ॥
स्वकीयेषु पुराणेषु जन्मन्यवसरं दिनं । लिख्यते गोप्यसंज्ञाभिः दशधा जन्मसंज्ञिका ॥
मत्स्यकूर्मो वराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः । रामो रामश्च रामश्च बौद्धः कल्कीरिति स्मृताः ॥
धृतो मध्यावतारस्तु सत्यार्थवरदानतः । प्रसंगादशधा प्रोक्ताः देवोत्सर्गादिहेतवे ॥
पौष्यमास्यसिते पक्षे पंचमी सोमसंयुता । मघानक्षत्रसंयुक्ता प्रीतियोगसमन्विता ॥
सूर्य्योदयात्समारभ्य घटिका द्वितयं गता । लग्ने धनुषि संस्थे च शंखासुरप्रपीडितैः ॥
धर्म्मं कर्म्म विहीनैस्तु वेदाध्ययनवर्जितैः । देवैः प्रणोदितो विष्णुस्तीर्थराजे च नैमिषे ॥
ऋषेस्तु पितृभावेन ह्यञ्जलौ प्रपतद्भुवि । शयिता पुत्रभावेन संन्यसेच्चक मंडलौ ॥
तत्र प्रवर्द्धितो मत्स्यो कूपमध्ये विनिक्षिपेत् । निःसार्य्य कूपमध्याच्च तडागेऽसौ विनिक्षिपेत् ॥
तत्र प्रवर्द्धितो विष्णुरर्णवे निःक्षिपेत् मुनिः । मत्स्यावतारसंभूतो शंखदैत्यं विचिन्वयन् ॥
वेदवेदार्थलाभाय शंखदैत्यवधाय च । क्षीराब्धौ क्रीडमानोऽसौ मत्स्यो नारायणो भवत् ॥
वेदान्नीत्वा ददौ विष्णुः देवेभ्यो स्तुतिमाददे । एवं मत्स्यदिने जाते रामकृष्णादिमूर्त्तयः ॥
तेषां च मन्दिरेष्वेषु वेदस्तौतिं समाचरेत् । सर्वदा सुखसम्पद्धिर्द्विधान्यादिसंचयैः ॥
कुबुद्धिर्नश्यते ऽत्रैव सुबुद्धिस्तु प्रजायते । सर्वदा जाड्यसंपन्नो विद्यावान् जायते नरः ॥
वेदार्थभावको जातः मत्स्यजन्मोत्सवकृतात् । विष्णवे प्रणतिं कुर्य्यान्नानाद्रव्यार्थमाप्नुयात् ॥
इति मत्स्यावतारजन्मनिर्णयः ॥

अथ कूर्म्मावतारजन्मनिर्णयः । कौर्म्ये—
देवैर्विज्ञापितो विष्णुर्भूमेर्भारधृताय च । चैत्रे मासि सिते पक्षे द्वितीया सोमसंयुता ॥
अश्विन्यर्क्षप्रयुक्ता स्यात् प्रीतियोगसमन्विता । सूर्योदयात् समारभ्य घटिका षोडशा गताः ॥
कर्कलग्नोदये जाते कूर्म्मो नारायणोऽभवत् । वसुन्धरा बभौ तस्मिन् कूर्म्मे भारधृते यदि ॥
नद्यादौ जलपूजां च कुर्य्नानाथं मंगलैः । द्वितीये दिवसे गौरी जलपूजनमाचरेत् ॥
इति कूर्मावतारजन्मनिर्णयः ।

अथ वाराहावतारजन्मनिर्णयः । वाराहे—
प्रलयेऽब्धौ धरामग्ना देवैर्विज्ञापितो हरिः । तस्याः निःसारणार्थाय क्रीडाक्रोडतनुर्भवेत् ॥
मार्गे मासि सिते पक्षे नवमी शनिसंयुता । पूर्वभाद्रपदाविष्टा वज्रयोगसमन्विता ॥
सूर्योदयप्रवृत्या तु घटीसप्त व्यतीयते । लग्ने च मकरे संस्थे वाराहोऽवतरद्भुवि ॥
पातालादागता पृथ्वी तुंडाग्रधृतभूषिता । पृथिव्यां सर्वकर्म्माणि जायते ह्यनघाः फलाः ॥
इतिवाराहावतारजन्मनिर्णयः ।

अथ भार्गवावतारजन्मनिर्णयः । ब्रह्मांडे—
क्षत्रपापकुला पृथ्वी तस्याः ह्युद्धरणाय वै । क्षत्रियाणां विनाशाय निःक्षत्रियकृतार्थिने ॥

ब्रह्मर्षि र्यमदग्निस्तु रेणुकाख्या पतिव्रता । चक्रतुश्च व्रतं श्रेष्ठं विष्णुपुत्रार्थं दंपती ॥
सत्यव्रतो महाविष्णु र्ब्राह्मण्यकुलसंभवः । माघे मासि सिते पक्षे सप्तमी सोमसंयुता ॥
अश्विन्यर्क्षं समाविष्टा शुभयोगसमन्विता । मुहूर्ते ब्राह्मणे जाते लग्ने धनुषि संस्थिते ॥
रेणुका जनयत्पुत्रं जगज्ज्योतिकलामयं । यमदग्निः पिता तस्य रामेण वपुषा हरेः ॥
नाम्ना परशुरामाख्यं चकार कुलदीपकं । दीपे प्रज्वलिते कीटाः पतंगाद्याः विनश्यति ॥
यमदग्निसुते जाते क्षत्रियाः नाशमाप्नुयुः । अचला जायते पृथ्वी धर्म्यं कर्म्म समाकुला ॥
ब्राह्मणैः राजभिः पूर्णा नानायज्ञार्थसंपदः । निःकल्मषा निरातंका नाना द्रव्यार्थदायिनी ॥

इति परशुरामावतारजन्मनिर्णयः ।

अथ बौद्धावतार जन्म निर्णयः । भविष्योत्तरे—

धर्म्माधर्मविवेकाय लोकानां भयहेतवे । अधर्म्मं दर्शनार्थाय बौद्धो नारायणो ऽभवत् ॥
आश्विने कृष्णपक्षे तु दशमी गुरुसंयुताः । पुनर्वस्वर्क्षं सयुतां परिघेन समन्विता ॥
सूर्योदये घटी जाता षट्लग्ने तुलसंस्थिते । सत्यार्थभाषणार्थाय बौद्धो नारायणोऽभवत् ॥
ब्रह्मकुलजदैत्यानां वधपातकसंभवात् । हस्तौ छित्वा हरिः साक्षात्परस्त्रीगमनोद्भवात् ॥
पादौ छित्वा जगन्नाथः लोकानां दर्शनाय च । संस्थितो भगवान्भूमौ धर्म्माधर्म्म विवेकवित् ॥
मिथ्यात्मकल्पनादोषाद्धरिर्दारुकलेवरः । धर्मपत्न्यास्तु सीतायाः शुद्धायाः भगवान्प्रभुः ॥
एवं लोको भवेद्रोगी स्त्रीशापा दुःखितो सदा । मिथ्याभिशंसनाद् योषाहरिर्द्रेण सदान्वितः ॥
बौद्धायने—विप्राणां ताडनेनैव पाणिहीनो नरो भवत् । परस्त्रीगमनात्पापात्पादखंजस्तु जायते ॥
अपवादकलंकेन ह्यथवा कुष्ठसंभवात् । हस्तपादविहीनस्तु जायते पापसंभवात् ॥

इति बौद्धावतारजन्मनिर्णयः ॥

अथ कल्क्यवतारजन्मनिर्णयः । भविष्ये—

अति चौराकुलां पृथ्वीं दृष्ट्वा नारायणो हरिः । समराख्ये पुरे रम्ये कल्कीरूपो भवेत्स्वयं ॥
श्रावणे कृष्णसप्तम्यां रेवती भृगुसंयुते । धृतियोगसमायुक्ते दुर्दिने भयविह्वले ॥
चतुर्दशघटीजाते कन्यालग्नमुपस्थिते । चौराणां नाशनार्थायावतारद्धरिरीश्वरः ॥

इति दशावतार जन्म निर्णयः ॥

गोदानं सप्तसंख्याकं दत्वा मुक्तिमवाप्नुयात् । शतसंख्यान् द्विजांश्चैव भोजयेद्विधिपूर्वकम् ॥
श्वानहत्याविमुक्तस्तु प्रायश्चित्ताभिधानतः । मोक्षाख्यं पदवीं लब्ध्वा धनधान्यसुखं लभेत् ॥

इति श्वानवधापराधप्रायश्चित्ते मुक्तिभैरवमन्त्रः । धौम्यर्षिशापान्वितोऽयं मन्त्रः । अस्य श्रीधौम्यर्षि-शापप्रमोचनस्य बृहदारण्यकर्षिः महाकाली देवता त्रिष्टुप् छन्दः मम धौम्यर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः । इति धौम्यर्षि शापमुक्ता भवः । "दशावृत्यांजलीः नीत्वा नैऋतं कोणमुत्क्षिपेत्" इति धौम्यर्षिशापप्रमोचनः ।

अथ बिडालवधापराधप्रायश्चित्ते दामोदरमन्त्रः—

ओं ह्रीं क्लीं श्रीं दामोदराय स्वाहा इति दशाक्षरो दामोदरमन्त्रः अनेन प्रा० त्र० कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्य नारद ऋषिः दामोदरो देवता गायत्री छन्दः मम बिडालवधापराधविमुक्तये प्रायश्चित्ते जपे विनि-योगः न्या० पू० अथ ध्यानं—

बिडालपापघ्नमजं सुरेशं दामोदरं सुन्दर विश्वसाद्यं । वन्दे सदा कारुणिकस्वरूपं जगत्त्रयेशं शुभ दायकान्तं॥

इति दामोदरस्वरूपं ध्यात्वा—

त्रिसहस्रजपेन्मन्त्रं शमीवृक्षस्तले शुचिः। त्रिवर्णासनमादाय वायव्याभिमुखः स्थितः॥
विडालवधपापात्तु मुच्यते नात्र संशयः। प्रायश्चित्तं विना लोकः समूलं च विनश्यति॥
इति बौद्धायने।
नवतीर्थं समाचक्रे गंगा वेत्रवती तथा। सरयू चन्द्रभागा च सिंधु कावेरी गंडकी॥
वैसुली कर्मनाशा च नवसंख्या प्रकीर्तिताः। सार्द्धं वर्षत्रयं गेहं त्यक्त्वा तीर्थं समाचरेत्॥
एकरोमं विडालस्य भ्रंशनं कुरुते नरः। तत्प्रमाणं सुवर्णस्य रोमदानं करोति सः॥
तदैव मुच्यते पापात् धनधान्यसुखं लभेत्। नवरात्रं जिताहारस्त्वेकान्तरव्रतं चरेत्॥
प्रायश्चित्तविधानेन पूर्वजां पदवीं लभेत्। नैव कुर्याद्विधानेन गर्वतो जडतांधतः॥
अलक्ष्मीं लभते शीघ्रं सर्वथाः नश्यते क्षणात्। फलाहारं च भुञ्जीयादेकान्तरव्रतेन च॥
चान्द्रायणं शुभं प्रोक्तं पापे वैडालसम्भवे। व्रजेच्चाण्डालकीं योनीं प्रायश्चित्तं विना नरः॥
प्रस्थाष्टादशमानेन सौवर्णिः प्रतिमाःनवः। प्रस्थद्वयप्रमाणेन वैडालस्य कलेवरं॥
एकमेकान्तरेणैव प्रतितीर्थे समागते। दधिनाल्लादितं कृत्वा दानं दद्याद्विजातये॥
नवतीर्थं कृताद्दानात् स्नानाच्चैवमुपोषणं। विडालसंभवपापान्मुच्यते नात्र संशयः॥
दशगुञ्जाप्रमाणैश्च घृते क्षिप्त्वाहिरण्मयम्। नित्यमेव कृतं दानं मोत् हत्याद्विमुच्यते॥
सार्द्धं च तृतीयं वर्षं व्यतीयासौगृहागमत्। तत्रैव दशगोदानं ग्रन्थिसंज्ञाकमाचरेत्॥

ज्योतिर्निबन्धे—

विडालो भुञ्जितान्नं वा कच्चान्नं भक्षयेद्यदि। वर्षत्रयान्तरे जातं दुर्भिक्षं स्यान्महर्घता॥
नरादिपशुजातीनां मृत्युलाभादिनाशनं। तद्दोषशमनार्थाय शान्तिदानं समाचरेत्॥
दुर्भिक्षशमनार्थाय प्रायश्चित्तमितीरितं। गोधूमयवशालीकमुद्गमाषमसूरिका॥
घृततैलमितिख्यातं चतुर्दशमणाभिधम्। समन्तान्नवकं धृत्वा स्वयं मध्यस्थलेविशत्॥
अर्द्धरात्रे कृतं दानं दुर्भिक्षशमनं भवेत्। विडालस्य वधे कार्ये जगन्नाथस्वरूपकं॥
सर्वदा पूजनार्थाय स्थापयेत्स्वच्छमन्दिरे। विडालस्यापराधोसौ सप्तजन्मसु दह्यते॥
कौमेरिवैजकं शिंशुः ह्याम्रीकाष्ठ चतुर्थकैः। कलेवरः शुभः प्रोक्तो जगन्नाथस्य सिद्धिदः॥
एवं नन्दस्य भानोश्च कलेवरवरप्रदः। कुंभेरिनिर्मिते मूर्तौ सहस्रकलयान्वितः॥
धनधान्यसुतोत्पत्तिरिष्टसिद्धिप्रदायकः। वीजैसारसमुद्भूते तदर्द्धं कलयान्वितः॥
द्रव्यार्थकामनासिद्धिर्लोकप्राधान्यदायकः। शिंशुकाष्ठसमुद्भूते तदर्थं कलयान्वितः॥
पशुवाहनवादीनां नानाभोगप्रदायकः। आम्रीकाष्ठमयीभूतो भयहालोकसौख्यदः॥
तदर्धकलयाविष्टो लक्ष्मीवन्तं जनं करोत्। नन्दभानुर्जगन्नाथस्तेषां मूर्तिप्रकीर्तिता॥
पाषाणनिर्मितास्तेषां मतयो विघ्नतां ययुः। कदापि नैव कर्त्तव्याः पाषाणस्य स्वरूपकाः॥
पंचकाष्ठेन देवानां मूर्तिः स्याच्छुभदायिनी। श्वेतार्क वैजसारश्च कुमेर्याम्री च शिंशुपाः॥
एतैः काष्ठैः समुद्भूता चण्डिकाप्रतिमाशुभा। पाषाणसम्भवा देवी सर्वदैव वरप्रदा॥
जगन्नाथानुसारेण सहस्रकलयान्विता। अन्यकाष्ठसमुद्भूताः मूर्त्तयो भयदायकाः॥
देशोपद्रवकर्त्तारो समूलोत्पाटदाऽशुभाः। दशावतारमूर्त्तिनां पाषाणप्रतिमाशुभा॥
कृष्णावतारोद्भवमूर्त्तयस्ते पाषाणरूपाः शुभदाः सदास्तु।
राधादयो निर्मितधातुमूर्त्तयः पाषाणभूताः शुभदाः स्म लोके॥

यथैव रामादिचतुः स्वरूपाः पाषाणधातुप्रचुराः शुभाः स्युः ॥
कृष्णादिषट्स्वरूपास्ते यदि स्युर्दारुरूपिणः ॥

षट्स्वरूपाः—श्रीकृष्णः बलदेवोऽथ गोविन्दो देव उच्यते । मदनमोहनो नाम गोपीनाथविहारिणः ॥
इति षट्स्वरूपाः ।

वायुना नोदिता वन्हिः निर्मूलं नगरं दहेत् । कदापि नैव तिष्ठेत ग्रामो भस्म भवो यदा ॥
दशवर्षप्रमाणेन मुखं नैवावलोकयेत् ॥ इति ब्राह्मे ॥

विघ्नस्वरूपिणं पूजा ब्रह्महत्या दिने दिने । अमंगलमृणं दुःखं रोगशोकदरिद्रता ॥
विडालदोषशान्ताय स्थापयं बौद्धसंज्ञकं । कूर्मजन्मदिने प्राप्ते स्थापयेद्विधिपूर्वकं ॥
परकायाप्रवेशाख्यमन्त्रपूर्वप्रयोगकं । कलेवरे यदा पूर्णे मक्षिकाभ्यस्तु रक्षयं ॥
मस्तके जीवसंस्कारमेकस्मिन् दिवसेऽभवत् । द्वितीये हृदये जातं तृतीये बाहुमूलयोः ॥
चतुर्थे जंघयोश्चैव पंचमे नेत्रनाशिके । षष्ठे कर्णद्वयोश्चैव सप्तमे पादमूलयोः ॥
अष्टमे पृष्ठिभागं च नवमे च स्तनद्वये । मुखं च दशमे जातं गलमेकादशे दिने ॥
नाभिलिंगगुदादन्तनेत्रं स्याद्द्वादशे दिने । जिह्वाकेशनखाः रोमाः स्युस्त्रयोदशवासरे ॥
सर्वांगावयवे पूर्णे त्रयोदश दिनान्तरे । कर्त्तव्यं पक्षमेकं तु प्रयोगं लक्षपञ्चकं ॥
एवं दारुमये प्रोक्ता पाषाणे धातुसंज्ञिके । त्रिविधे मूर्त्तिसंस्कारे विधिरेका प्रकीर्तिता ॥
राजसेवाधिकारे च त्रिविधाः मूर्त्तयः स्मृताः । विना मन्त्रप्रयोगेन नरेषु च यथाशवः ॥
अकल्याणकराः हि स्युर्दारुपाषाणधातवः ।

भविष्योत्तरे—पूजार्थध्यानार्थशुभार्थनैव विचिन्तनार्थं गुणगोप्यसंज्ञकं ।
स्वप्नार्थमष्टौ कथिताः स्वरूपाः प्रयोगसंज्ञाः भवतीह लोके ॥
शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती । मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टौ प्रकीर्त्तिता ॥

अथ परकायाप्रवेशमन्त्रः । पारमेश्वरसंहितायां—

ओं ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रीं क्लीं परमात्मने हूं फट् स्वाहा इति पञ्चदशाक्षरो परकायाप्रवेशमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामं दशधा कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्य सनकसनन्दनसनातनाख्यो ऋषयः परब्रह्म नारायण-परमात्मनस्त्रयो देवताः गायत्र्युष्णिग्त्रिष्टुप् छन्दांसि विश्वम्भरीकामेश्वरीनन्दजाख्यो शक्तयः दुर्गामंगला-रक्तदन्तिकाख्यो बीजाः सूर्य्यवाय्वाकाशाख्यस्तत्वानि मम शैलदारुधातुमयस्वरूपपरकायाप्रवेशार्थे जपे विनियोगः । ततः अंगन्यासः शिरसि सनकसनन्दनसनातनेभ्यमृषिभ्यो नमः मुखे गायत्र्युष्णिग्त्रिष्टुप् छन्देभ्यो नमः हृदये विश्वंभरी कामेश्वरी नन्दजाभ्यस्त्रिभ्यो शक्तिभ्यो नमः ततो षडंगन्यासः । ओं ह्रीं अंगु-ष्ठाभ्यां नमः ओं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः ओं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः । ओं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः । ओं क्लीं कनिष्ठकाभ्यां नमः । ओं परमात्मने हूं फट् स्वाहा इति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति पञ्चदशाक्षराख्य-परकायाप्रवेशमन्त्रेण षडंगन्यासं कुर्यात् । एवं हृदयादिषु विन्यसेत् । अथ ध्यानं—

वन्दे विष्णुमनादिमीश्वरमजं नारायणं श्यामलं । लक्ष्मीकान्तमनन्तमूर्त्तिमनघं पीताम्बरालंकृतं ।
पद्माद्यं सुमनोहरांगवपुषं सत्यव्रतं श्रीपदं । सर्वव्यापिजगन्मयं गुणनिधिं दैत्यारिं वेद्याखिलं ॥

इति ध्यात्वा-गीवालव्यजनेनैव स्वरूपे मन्त्रयोजयेत् । गुह्यातिगुह्यमन्त्रेण प्रविवेश हरेऽनघ ! ॥
शैलदारुमये मूर्त्तौ धातुरूपे कलेवरे । प्रसीद कृपयाविष्ट जगन्नाथ हरे प्रभो ! ॥

जितेन्द्रियो शुचि भूत्वा ह्युपोषणपरायणः । दुग्धाहारसमायुक्तो नक्तभोजनमाचरेत् ॥

इति पाषाणदारुधातुमयी त्रिविध स्वरूप प्राणप्रतिष्ठायां परकायाप्रवेश—सिद्धमन्त्रप्रयोगः अस्य मन्त्रस्य शापो नास्ति । इति विडालवधापराधप्रायश्चित्ते दामोदरमन्त्रः अस्य मन्त्रस्य दुर्वासर्षिः । शापो नास्ति । तस्य मोचनप्रयोगः । वसिष्ठसंहितायां—

ओं अस्य श्रीदुर्वासऋषिशापमोचनमन्त्रस्य लोमहर्षण ऋषि दुर्गा देवता त्रिष्टुप् छन्दः मम दुर्वासऋषिशापप्रमोचने जपे विनियोगः इति दुर्वासाऋषिशापमुक्ताभवः "चतुर्भिरञ्जली नीत्वा उत्तरस्यां दिशि क्षिपेत्" इति दुर्वासाऋषिशापमोचनः ॥

अथ वानरवधापराधप्रायश्चित्तः । पाद्मे पातालखण्डे—

वानरस्य वधेनैव राक्षसीयोनिमाप्नुयात् । मासत्रयं गृहं त्यक्त्वा गंगापुष्करमाचरेत् ॥
भौमवारव्रतं कुर्य्याद्भोजनं मिश्रसंज्ञकं । ब्रह्मचर्य्यसमायुक्तः वानरद्वितयं करोत् ॥
चतुः प्रस्थ सुवर्णस्य रक्तवस्त्रेण छादितं । तीर्थयोः गोप्यसंज्ञकं दानं दद्यात् द्विजातये ॥
नित्यदानं करोद्यस्तु चतुर्गुञ्जाहिरण्यकं । प्रायश्चित्ते कृते दाने कपिहत्याद्विमुच्यते ॥

इति कपिवधापराधप्रायश्चित्ते स्नानदानप्रयोगः ।

ततो कपिवधापराधप्रायश्चित्ते राममन्त्रः—

कौशल्यानन्दनायैव रामचन्द्राय ते नमः । जानकीपतये तुभ्यं कपिपापविमुक्तये ॥

इति द्वात्रिंशाक्षरो राममन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य अगस्त्यऋषिः रामो देवताऽनुष्टुप् छन्दः मम कपिवधापराधविमोचने प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । ध्यानं—

वन्दे रामं किरीटसुन्दरदृशं सीतापतिं श्यामलं । श्रीवत्सांकमनन्तमूर्त्तिमनघं पीताम्बरालंकृतं ॥
विश्वेश्वरं वानरघातपापहं कलानिधिं लक्ष्मणसेवितांघ्रिं ॥

इति ध्यात्वा-उत्तराभिमुखो भूत्वा सहस्रत्रितयं जपेत् । कदम्बस्य स्थले स्थित्वा गोदानं पञ्चकं ददौ ॥

वानरस्य कृता हत्या त्रैवर्गफलनाशिनी । तदापराधमुक्तस्तु सर्वसौख्यमवाप्नुयात् ॥
स्थापयेत् प्रतिमां रामं कपिहत्याविमुक्तये । धातुरूपमयं विष्णुं भार्गवस्य च जन्मनि ॥
नित्य संदर्शनार्थाय रामं नैवोत्थयेद्यदि । चतुर्जन्मसु दह्यते कपिहत्या समुद्भवाः ॥

इति कपिवधापराधप्रायश्चित्ते राममन्त्रः । दधीच्यर्षिः शापान्वितोऽयं मन्त्रः । अस्य श्रीदधीच्यृषि शापप्रमोचनस्य विश्वामित्रर्षिः भवानी देवता जगती छन्दः मम दधीच्यृषिशापप्रमोचने जपे विनियोगः इति दधीच्यृषि शाप मुक्ता भवः "नवाञ्जलीः समादाय कोणमाग्नेयमुत्क्षिपेत्" इति दधीच्यृषिशापमोचनः ।

अश्वत्थामावधापराधप्रायश्चित्ते कामेश्वरीमन्त्रः । वायुपुराणे—

ओं ऐं श्रीं क्लीं खं कामेश्वर्य्यै स्वाहा इति दशाक्षरो कामेश्वरीमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्यानन्दर्षिः कामेश्वरी देवता त्रिष्टुप् छन्दः मम श्यामावधापराधविमुक्तये प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

कामेश्वरीं महादेवीं श्यामाहत्याविनाशिनीं । ध्यायेत्कामार्थदां शुक्लां जीवदोषापहारिणीं ॥

इति ध्यात्वा-ईशानाभिमुखो भूत्वा चन्दनस्य च मालया । जपेन्मन्त्रं सहस्राख्यं श्यामाहत्याविमुच्यति ॥

गृहार्थनाशिनी हत्या नव जन्म विदाहिनी । भागीरथीकृते तीर्थे प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥
ततः श्रीकुण्डस्नानेन श्यामा हत्या विमुच्यति । पञ्चकर्षप्रमाणेन सौवर्णीं मूर्त्तिमाचरेत् ॥

पीतवस्त्रं परिछाद्य दद्याद्विप्राय शान्तये । गोदानं नवकं दत्वा स्यामाहत्याविमुक्तये ॥
अब्दे पूर्णे यदा जाते स्थापयेच्चंडमर्द्दिनीं । देव्याः व्रतं विधानेन नक्तभोजनमाचरेत् ॥
इति स्यामावधापराधप्रायश्चित्ते कामेश्वरीमन्त्रः—

कुंभयज्ञर्षिशापान्वितोऽयं मन्त्रः । ओं अस्य श्रीकुम्भयज्ञर्षिशापप्रमोचनस्य विमलर्षिः पद्मावती देवता अनुष्टुप् छन्दः मम कुंभयज्ञर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः । इति कुंभयज्ञर्षिशापमोचनः ॥
अथ सीताशिखावधापराधप्रायश्चित्तं । मात्स्ये—

सीता सिखावधे कार्य्ये गवां हत्या शताधिकं । समूलोत्पाटनं कुर्य्यात् धनधान्यसमूहकं ॥
दशवर्षं गृहं त्यक्त्वा दशतीर्थं समाचरेत् । सरयू गंडकी गंगा यमुना चन्द्रभागका ॥
गोदा वेत्रवती कांची वेणी श्रीकुंडमुत्तमं । दशकल्पलतादानं प्रतितीर्थे हिरण्मयं ॥
दानात्स्नपनमात्रेण शिखाहत्या विमुच्यति । नवम्यास्तु व्रतं कुर्य्याच्चांद्रायणविधानतः ॥
दशाऽब्दकं व्यतीयाय स्थापयेल्लक्ष्मणं गृहे । नित्यसन्दर्शनार्थाय शिखाहत्या विमुक्तये ॥
वर्षद्वादशकं यावन्नित्यदानं समाचरेत् । दशगुंजाप्रमाणेन सुवर्णं घृतपात्रकं ॥
इति सीताशिखावधप्रायश्चित्ते दानस्नानं ।

ततः प्रायश्चित्ते लक्ष्मणमन्त्रप्रयोगः । वैष्णवीये—

उर्मिलापतये तुभ्यं लक्ष्मणाय नमोस्तु ते । सीताशिखापराधं मे निवारय प्रसीद मे ॥
इति वैष्णवमते द्वात्रिंशाक्षरो सिद्धलक्ष्मणमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य गृत्समदर्षिः लक्ष्मणो देवता उष्णिक् छन्दः मम जानकीसिखावधापराधविमुक्तये प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । ध्यानं—

शेषं निरञ्जनं विष्णुं लक्ष्मणं त्रिपथस्थितं । भ्रातृजायाशिखादोषसर्वपापौघनाशनं ॥ इतिध्यात्वा—
पूर्वाभिमुखमाविश्य वृक्षपर्पटिकास्तले । सहस्रत्रयं जप्त्वा चम्पकोद्भवमालया ॥
प्रायश्चित्तविधानेन शिखाहत्या विमुच्यति ।

इति सीताशिखावधापराधप्रायश्चित्ते लक्ष्मणमन्त्रप्रयोगः वाल्मीक्यर्षिशापान्वितोऽयं मन्त्रः । ओं अस्य श्री वाल्मीक्यर्षिशापप्रमोचनस्य शृंगर्षि पद्मा देवता कान्ति छन्दः मम वाल्मीक्यर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः । इति वाल्मीक्यर्षिशापमुक्ता भव: "चतुर्भिरञ्जलीः नीत्वा चतुर्दिक्षु विनिःक्षिपेत्" । इति वाल्मीक्यर्षिशापमोचनः ॥
अथ प्रतिमाविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्तः । वामनपुराणे—

चतुर्विंशे च दैवत्वे ब्रह्महत्याऽब्दद्वादशे । स्वरूपविघ्नकृल्लोको देवहत्याविधायकः ॥
चतुर्विंशाब्दमानेन गृहं ग्रामं परित्यजेत् । राधाकुंडविहीनानि द्वात्रिंशसंख्यकानि च ॥
शततीर्थकृतास्नानाद्देवहत्या विमुच्यति । पूर्वं द्वात्रिंशद्युन्यानि कृत्वा तीर्थानि ग्रामतः ॥
ततः श्रीकुण्डमागत्य षष्ठयाष्टतीर्थसंज्ञकं । स्नात्वा मन्त्रविधानेन व्रजयात्रां समाचरेत् ॥
ततस्तु वनयात्रां तु दैवहत्याविमुक्तये । शततीर्थे कृतं दानं शतगोदानसंज्ञकं ।
दशकर्षसुवर्णं तु नित्यदानं समाचरेत् ।

अथ वनयात्रा क्रम प्रसंगः—

व्रजयात्रा प्रसंगे तु वक्ष्ययाम्यनुमानतः । षड्त्रिंशद् वन्हिप्रमाणेन क्रोशसंज्ञाऽभिधीयते ॥

चतुर्मासान्तरेणैव ब्रजयात्रां समाचरेत् । नित्यं सार्द्धद्वयक्रोशं परिश्रमविवर्जितः ॥
चैत्रपूर्णे व्यतीयाय ह्यारम्भो प्रतिपद्दिनात् । वैशाखाच्छ्रावणं यावत् चातुर्मासप्रदक्षिणा ॥
वैशाखकृष्णपक्षस्य प्रतिपद्दिने संयुता । बुधवारसमायुक्ता आरम्भोऽत्र विधीयते ॥
श्रावणशुक्लपूर्णायां श्रवणार्च समन्विते । ब्रजयात्रां समाप्येत रक्षाबंधनमाचरेत् ॥
ऋषीणां तर्पणं कुर्यात् ब्राह्मणानपि भोजयेत् ॥ १ ॥
ब्रजयात्रा मर्य्यादाष्टकोण दिग्विदिक्सुप्रमाणं ।
आदिवाराहे-वनहास्यवनारभ्य पूर्वदक्षिणमध्यगे । एक कोणं समाख्यातं गोपानवनसंज्ञिकं ॥
ततो कोणं द्वितीयं च दक्षिणपश्चिमान्तरे । गोमयाख्यं वनं नाम गोपानातिर्यभागतः ॥
पश्चिमोत्तरयोर्मध्ये त्रिकोणं कमलावनं । पूर्वोत्तरान्तरे जातं चतुष्कोणं हरेर्वनं ॥

व्याख्या—हास्यवनजन्हुबनयो द्वयोरभ्यन्तरे गोपानवनं विश्राममेककोणमाग्नेयं । चतुरशीति क्रोशपरिमितं द्वयोरभ्यन्तरतः द्विचत्वारिंशतिर्यग्भागं प्रदक्षिणाप्रमाणं जन्हुबनपर्वतबनयोर्द्वयोरभ्यन्तरे गोमयाख्यं बनं द्वितीयविश्रामं नैऋतं कोणं चतुरशीतिक्रोशपरिमितं द्वयोरभ्यन्तरतः द्विचत्वारिंशतिर्य्यग्भागं प्रदक्षिणाप्रमाणं पर्वतबनजन्हुबनयो द्वयोरभ्यन्तरे कमलाबनं तृतीयविश्राम वायव्यकोणं चतुरशीतिक्रोश-परिमितं द्वयोरभ्यन्तरतः द्विचत्वारिंशक्रोशतिर्य्यग्भागं प्रदक्षिणाप्रमाणं सुह्मवनजन्हुबनयोरभ्यन्तरे हरिबनं चतुर्थविश्राममीशानकोणं चतुरशीति क्रोशपरिमितं द्वयोरभ्यन्तरतः द्विचत्वारिंशक्रोशतिर्य्यग्भागं प्रदक्षिणा प्रमाणं इति तिर्यग्भागप्रदक्षिणावर्त्त ब्रजमर्यादा षड्त्रिंश त्रिशतोत्तरक्रोशपरिमाणं विंशोत्तर शतसंख्याकप्रतिदिनेषु नित्यप्रत्यागममागमेषु ग्रामग्रामप्रतिप्रवासकेषु सार्द्धद्वयक्रोशपरिमितग्रामाभिधानेषु बृहद्ब्रजगुणोत्सवाख्ये ग्रन्थे समन्त्रमाहात्म्यं नाम्नः वक्ष्यन्ते ॥ २ ॥

ब्रजयात्रा प्रसंग में विचार पूर्वक अनुमान से ३३६ क्रोश परिमाण निर्णय करेंगे। चतुर्मास्य के बीच में ब्रजयात्रा का आचरण होता है। नित्य साढ़े दो क्रोश भ्रमण से परिश्रम नहीं होता है। चैत्र पूर्णिमा बीतने पर वैशाख कृष्णा प्रतिपदा तिथी बुधवार से लेकर श्रावण शुक्ल पूर्णिमा श्रवण नक्षत्र पर्य्यन्त चातुर्म्मास्य है। वैशाख कृष्ण प्रतिपदा से आरम्भ तथा श्रावण पूर्णिमा में समाप्ति करें। समापनान्ते रक्षा बंधन करें। ऋषियों को तर्प तथा ब्राह्मणों को भोजन देवें ॥ १ ॥

ब्रजयात्रा की मर्य्यादा अष्ट कोण विशिष्ट प्रमाणित है। चार दिशा और चार कोण अष्ट कोण हैं। आदिवाराह में—हास्यबन से आरंभ कर पूर्व और दक्षिण के बीच गोपन बन पर्य्यन्त एक कोण है। दक्षिण और पश्चिम के मध्य गोपन बन को तिरछा करके गोमय नामक बन द्वितीय कोण है। पश्चिम और उत्तर के बीच कमलाबन तृतीय कोण है। पूर्व और उत्तर के बीच हरिबन चतुर्थ कोण है। इसकी व्याख्या यथा—हास्यबन और जन्हुबन दोनों का मध्यस्थल गोपानबन एक कोण है। जो आग्नेय कोण है और विश्राम स्थान है ८४ क्रोश ब्रजमण्डल का अभ्यन्तर मध्यस्थल ४२ क्रोश तिरछे भाग से प्रदक्षिणा प्रमाण है। सुन्हबन और पर्वत बन के बीच गोमय नामक बन द्वितीय विश्राम स्थल नैऋत कोण है। ८४ क्रोश परि-माण से दोनों के ४२ क्रोश तिरछा भाव से प्रदक्षिणा है। पर्वतबन और सुन्हबन के अभ्यन्तर में कमला-बन तृतीय विश्राम स्थल वायव्य कोण है। ८४ क्रोश परिमाण से दोनों की ४२ क्रोश तिरछे भाव से प्रद-क्षिणा प्रमाण है। सुन्हबन और जन्हुबन का अभ्यन्तर हरिबन चतुर्थ विश्राम स्थल ईशान कोण है। ८४ क्रोश परिमाण से दोनों की ४२ क्रोश तिरछे भाव से प्रदक्षिणा प्रमाण हैं। इस प्रकार तिरछे भाग से

भविष्योत्तरे—

आदौ तु व्रजयात्रां च कुर्यात्पापविमुक्तये । ततस्तु वनयात्रां च कुर्यात्सर्वार्थसिद्धये ॥ ३ ॥
वनयात्राक्रमोऽत्रैव लिखितो नारदेन च । व्रजभक्तिविलासाख्ये ग्रन्थे सुफलदायके ॥
तथैव व्रजयात्रायाः क्रमो व्रजगुणोत्सवे । यथैव विधिना प्रोक्ता वनानां च प्रदक्षिणा ॥
व्रजभक्तिविलासाख्ये व्रजयात्रा तथैव च । बृहद्व्रजगुणोत्साहे षड्विंशाख्यसहस्रके ॥ ४ ॥

वनयात्रा क्रमं दर्शयेत् । विष्णुयामले—

वनयात्राप्रसंगस्तु त्रयोविंशदिनान्तरे । भाद्रे मास्यसिते पक्षे ह्यष्टमी बुधसंयुता ॥
रोहिण्यर्क्षसमायुक्ता योगहर्षणसंयुता । जन्माष्टमी समाख्याता कृष्णजन्मसमुद्भवा ॥
तद्दिने मथुरां प्राप्य कृष्णजन्मोत्सवं करोत् । तद्दिने वनयात्रायाः सुखसौभाग्यवर्द्धनः ॥
उषित्वा मथुरायां तु रात्रौ जन्मोत्सवं चरेत् । अष्टमीदिवसे चैव विधिरेषा उदाहृता ॥
प्रभातसमये प्राप्ते नवमीदिनसंभवे । नन्दगोपमहोत्साहं कुर्याद्ब्राह्मणभोजनं ॥
नानाविधान्नपक्वान्नमिच्छापूर्वं समाचरेत् । वनयात्राक्रमभङ्गं कदाचिन्नैव कारयेत् ॥
वनयात्राक्रमभंगो जायते च कदा ननु । द्विगुणं ह्यपराधं स्यात्पुण्यनाशस्तु जायते ॥
उषित्वा नवमीरात्रौ प्रभाते दशमीदिने । प्रदक्षिणां करोद्धीमान् मथुरायाः नवात्मिकां ॥ ५ ॥
उषित्वा दशमीरात्रौ दिने ह्येकादशीभवे । प्रभातसमये स्नात्वा वनं मधुवनं व्रजेत् ॥

प्रदक्षिणा रास्ता ३३६ कोश है, यह व्रज की मर्य्यादा है । १२० कोश ग्रामों का नित्य यातायात प्रतिवास से जानना क्योंकि २॥ कोश प्रमाण से ग्राम समूह हैं । बृहद्व्रजगुणोत्सव नामक मत्कर्तृक निर्म्मित ग्रन्थ में ग्रामों की महिमा नाम मन्त्र कहेंगे ॥ २ ॥

भविष्योत्तर में—पहिले पापों से विमुक्ति के लिये व्रजयात्रा करें । तदनन्तर सर्वार्थ सिद्धि के लिये वनयात्रा करें ॥ ३ ॥

सुन्दर फल को देने वाले व्रजभक्ति विलास नामक इस प्रस्तुत ग्रन्थ में नारदजी के आवेश स्वरूप हम वनयात्रा का क्रम लिखते हैं । उस प्रकार व्रजगुणोत्सव नामक ग्रन्थ में व्रजयात्रा का क्रम लिखते हैं । जिस प्रकार हमने विधि पूर्वक व्रजभक्तिविलास ग्रन्थ में वनों की प्रदक्षिणा कही है, उस प्रकार व्रजयात्रा २६ हजार श्लोक युक्त बृहद्व्रजगुणोत्साह नामक ग्रन्थ में कही है ॥ ४ ॥

विष्णुयामल में कहा है—वनयात्रा का प्रसंग २३ दिन के भीतर है । भाद्रमास कृष्णपक्ष अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र योगहर्षण दिवस जन्माष्टमी है । जो श्रीकृष्ण के जन्म के कारण से है । उस दिन मथुरा में जाकर श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव करें । उस दिन वनयात्रा का प्रारम्भ सुख सौभाग्य बढ़ाने वाला है । रात्रि में मथुरा वास पूर्वक जन्मोत्सव करने की विधि है, नवमी दिवस में प्रभात काल आने पर नन्द गोपों के महान् उत्सव, विविध प्रकार पकवान द्वारा इच्छा पूर्वक ब्राह्मण भोजन का आचरण करें । वनयात्रा में क्रमभंग कभी नहीं करें । यदि कभी क्रमभंग होवे तो द्विगुण अपराध और पुण्य समूह का नाश होता है । नवमी की रात्रि में वहाँ वास पूर्वक दशमी दिवस के प्रभात में ९ कोश परिमित मथुरा की प्रदक्षिणा करें ॥ ५ ॥

साद्धं क्रोश प्रमाणेन कुर्यात्पूर्णप्रदक्षिणां । मधुदानं विधानेन कांस्यपात्रं द्विजातये ॥
ततस्तालबनं गत्वा पादोनक्रोशसंज्ञिकां । प्रदक्षिणां करोत्यत्र भूमिदानं समाचरेत् ॥
कौमदाख्यं बनं गत्वा क्रोशार्द्धं च प्रदक्षिणां । कुर्याद्व्रतोपवासेन प्रतिपागमनं चरेत् ॥
पुनर्मधुबनमेत्य फलाहारं समाचरेत् । एकस्मिन्दिवसे कुर्याद्वनत्रयप्रदक्षिणां ॥
एकादशीदिने भाद्रे कृष्णेऽदितिसमन्विते । द्वादशीदिनसंभूते प्रभातसमये सुधीः ॥
बहुलाख्यं बनं गच्छेत्द्विक्रोशपरिमाणतः । प्रदक्षिणाविधानेन कुर्याच्छांगप्रदक्षिणां ॥
द्वादशीदिवसे रात्रौ उषित्वा प्राप्नुयात्सुखं । कन्यादानं करोत्यत्र फलमिच्छासमं लभेत् ॥
त्रयोदशीदिने जाते राधाकुंडं ब्रजेत्शुचिः । प्रवासं कृतवान् रात्रौ यत्र च नियतेन्द्रियः ॥६॥
प्रभाते च चतुर्द्दश्यां कुर्याद्गिरिप्रदक्षिणां । सप्तक्रोशप्रमाणेन लक्ष्मीवानपिजायते ॥
कृत्वा प्रदक्षिणां पूर्णां चतुर्दश्यां दिने शुभे । प्रवासं कृतवान्रात्रौ गिरौ गोवर्द्धनालये ॥
ततो भाद्रपदे मासि कृष्णपक्षे ह्यमादिने । परमन्दिरनामानं वनं गच्छेत्सुधीर्नरः ॥
एकक्रोशप्रमाणेन कुर्यात्सांगप्रदक्षिणां । प्रवासं कृतवान्रात्रौ राज्यं प्राप्नोति मानवः ॥
शुक्ले भाद्रपदे मासि प्रतिपद्बुधसंयुता । उत्तराफाल्गुणी युक्ता प्रभाते समयोद्भवे ॥
ब्रजेत्काम्यबनं तस्मात्कामसेनिविनिर्मितं । उषित्वा प्रतिपद्रात्रौ तत्र काम्ये बने शुभे ॥
भाद्रशुक्लद्वितीयायां प्रभातसमये यदि । वैमलाख्ये महातीर्थे स्नात्वा कुर्यात्प्रदक्षिणां ॥
सप्तक्रोशमयीं श्रेष्टामष्टाषष्टतीर्थगामिनीं । प्रदक्षिणां विधायात्र ब्राह्मणान्भोजयेत्सुधी. ॥
प्रवासं कृतवान्रात्रौ द्वितीयासंभवे दिने । उषितोदितग्रामेषु रात्रौ वासं न कारयेत् ॥
परिश्रमकृतायात्रा विफलत्वं प्रजायते ॥ ७ ॥
तृतीयादिनसंभूते प्रभाते हस्तासंयते । तस्माज्जगाम देवर्षे वृषभानुपुरं बनं ॥
द्विक्रोशसंज्ञकं यस्य कुर्यात्सांगप्रदक्षिणां । प्रवासं कृतवान्रात्रौ गौरीपूजा विधायिनी ॥

दशमी की रात्रि में वास पूर्वक एकादशी के प्रभात में स्नानादि कर मधुबन गमन करें । वहाँ १॥ कोश प्रमाण से परिक्रमा करे । विधि पूर्वक ब्राह्मणों को मधु दान और कांस्यपात्र का दान कर तालबन को गमन पूर्वक पौन कोश प्रमाण प्रदक्षिणा और भूमिदान करे । वहाँ से कुमुदबन जाकर आधा कोश प्रदक्षिणा पूर्वक फिर मधुबन में आकर व्रत-विधान, किम्वा फलाहारादि करे । एकादशी के दिन तीनों बनों की प्रदक्षिणा विधि है । द्वादशी के दिन सकाल बहुलाबन को जाकर २ कोश प्रमाण यथाविधि सांग प्रदक्षिणा करें और रात्रि में वास करे । यहाँ कन्यादान करने से इच्छा फल मिलता है । त्रयोदशी आने पर सवेरे राधाकुण्ड में गमन पूर्वक इन्द्रिय निग्रह द्वारा रात्रि वास करें ॥ ६ ॥

सवेरे चतुर्दशी के दिन गिरिराज की ७ कोश प्रमाण से परिक्रमा करे रात्रि में गोवर्द्धन में वास का विधान हैं । अमावस्या के दिन परमदिरा नामक वन के गमन पूर्वक १ कोश प्रमाण प्रदक्षिणा करें । रात्रि में वहाँ वास करने से राज्य फल मिलता है । भाद्रपद का शुक्लपक्ष प्रतिपदा तिथी बुधवार, उत्तरा फाल्गुनि नक्षत्र दिवस सवेरे कामसेनि निर्म्मित काम्यबन को गमन करे । वहाँ उस रात्रि में वास पूर्वक द्वितीया को दिन सवेरे विमल नामक महातीर्थ में स्नान कर ७ कोश की प्रदक्षिणा करें जिसमें ६८ तीर्थ हैं । प्रदक्षिणान्त ब्राह्मणों को भोजन करावें । रात्रि में वहाँ वास करे । जिस दिन जिस रात्रि में जहाँ वास का विधान है सो अवश्य पालन करे । नहीं तो परिश्रम से हुई यात्रा निष्फल होती है ॥ ७ ॥

चतुर्थीदिवसे प्राप्ते प्रभाते त्वाष्ट्रसंयुते । आदौ खदिरवनं गत्वा सपादक्रोशसंज्ञकां ॥
कुर्यात्प्रदक्षिणां प्रीत्या नन्दग्रामं ततो व्रजेत् । तिर्य्यग्मार्गप्रमाणेन जातापूर्णप्रदक्षिणा ॥
तत्रैव नन्दग्रामस्य प्रदक्षिणामथ कुर्य्यात् । क्रोशद्वयप्रमाणेन परिपूर्णं वरप्रदं ॥
प्रवासं कुरुते चात्र नन्दग्रामे शुभप्रदे । भाद्रं विनान्यमासेषु कुर्य्याद्यदि प्रदक्षिणां ॥
तद्दशांशफलं तस्य जायते नात्र संशयः । भाद्रशुक्ले च पञ्चम्यामृषिपूजाविधायिनी ॥
गच्छेद्भद्रवनं नाम प्रभाते श्रेयवर्द्धनं । पादोनद्वयक्रोशेन कुर्य्याद्भद्रप्रदक्षिणां ॥
प्रवासं कृतवान्रात्रौ समस्तं पञ्चमीदिने ॥ ८ ॥
भाद्रशुक्ले षु षष्ठयां तु ललिताजन्मसंज्ञिके । शेषस्य शयनस्थानं लक्ष्मीनारायणस्य च ॥
गच्छेत्प्रभातकाले तु पादोनद्वयक्रोशतः । तस्य प्रदक्षिणां कुर्य्यात्सर्वदा सौख्यमाप्नुयात् ॥
रात्रौ च कृतवान् वासं सर्वान्तकविवर्जितः । भाद्रशुक्ले च सप्तम्यां व्रजेच्छत्रवनं शुभं ॥
सपादद्वयक्रोशेन कुर्य्यात्सांगप्रदक्षिणां । प्रवासं कुरुते रात्रौ छत्रधारी नरो भवेत् ॥
भाद्रशुक्लाष्टमीजाते व्रजेद्वृन्दावनं शुभं । पञ्चक्रोशप्रमाणेन कुर्य्यात्सांगप्रदक्षिणां ॥
उषित्वात्र सुखेनापि परिपूर्णसुखं लभेत् । एतेषां दक्षिणस्थानां वनानां च प्रदक्षिणा ॥ ६ ॥
ततस्तूत्तरदिक्स्थानां वनानां च प्रदक्षिणा । भाद्रशुक्लनवम्यां तु महावनवनं व्रजेत् ॥
कुर्य्यात्प्रदक्षिणां सांगां चतुः क्रोशप्रमाणतः । प्रवासं कृतवान्रात्रौ पदवीं महतीं लभेत् ॥
दशमीदिनसंभूते प्रभातसमये यदि । बलदेवस्थलं गच्छेन्नानाभोगफलप्रदं ॥
सार्द्धक्रोशद्वयेनैव प्रदक्षिणामथाचरेत् । रात्रौ प्रवासमाचक्रे सर्वकामानवाप्नुयात् ॥
एकादशीदिनेजाते भाद्रमासे सितोद्भवे । व्रजेल्लोहवनं श्रेष्ठं लोहजंघानसंज्ञिकं ॥

तृतीया के दिन हस्तानक्षत्र योग प्रभात में वृषभानुपुर जावे । २ कोश प्रमाण से सांग प्रदक्षिणा कर रात्रि में वहाँ वास और गौरी पूजन करें । चतुर्थी दिवस त्वाष्ट्रनक्षत्र में खादरबन जाकर सवा कोश प्रदक्षिणा पूर्वक नन्दग्राम को जावें । तिरछा भाव से प्रदक्षिणा संपूर्ण होती है । अनन्तर २ कोश प्रमाण से नन्दगाँव की प्रदक्षिणा कर रात्रि में वहाँ वास करें । भाद्रमास के बिना अन्य मास में प्रदक्षिणा दशांश फल को देने वाली है । भाद्र शुक्ल पञ्चमी प्रभात में ऋषि पूजा विधान पूर्वक भद्रबन को जाकर १॥। कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें । समस्त रात्रि वहाँ वास करें ॥ ८ ॥

भाद्र शुक्ल षष्ठी ललिता जी की जन्म तिथि में प्रभात समय लक्ष्मीनारायण के शेषशयन स्थल को जाकर पौने दो कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें । रात्रि में शंका आतंक से निर्मुक्त होकर वहाँ वास करें । भाद्रपद शुक्ल सप्तमी में छत्रबन को गमन कर २। कोश प्रमाण से सांग प्रदक्षिणा करें । वहाँ रात्रि में वास करने से यात्री छत्रधारी राजा हो जाता है । भाद्र शुक्ला अष्टमी में वृन्दावन के गमन पूर्वक पाँच कोश प्रमाण से सांग प्रदक्षिणा करें । रात्रि में सुख पूर्वक वहाँ वास करें । यह सब दक्षिण भाग की परिक्रमा है ॥ ६ ॥

अब उत्तर भाग में स्थित बनों की प्रदक्षिणा कहते हैं । भाद्र शुक्ला नवमी में महाबन के गमन पूर्वक ४ कोश प्रमाण से सांग प्रदक्षिणा करें । रात्रि में वहाँ वास करने से महान् पदवी को प्राप्त होता है । दशमी के दिन प्रभात में नाना प्रकार के भोग फल को देने वाले बलदेव स्थल को जाकर २॥ कोश

सार्द्धक्रोशप्रमाणेन कुर्यात्सांगप्रदक्षिणां । प्रवासं कृतवान्रात्रौ निश्चलेन्द्रियसंयुतः ॥
भाद्रशुक्ले च द्वादश्यां श्रवणाक्षसमन्विते । गच्छेद्वटं च भाण्डीरं कुर्यात्तस्यप्रदक्षिणां ॥
क्रोशद्वयप्रमाणेन वनेन च समन्वितं । भाण्डीरं तु नमस्कारं कुर्यात्तत्रप्रदक्षिणां ॥
ततो विल्ववनं गच्छेदर्द्धक्रोशप्रमाणतः । प्रदक्षिणां करोत्तत्र रात्रौ वासं च कारयेत् ॥
त्रयोदशीदिने जाते शुक्ले भाद्रशुभप्रदे । पुनरागमनं कुर्यान्मथुरानगरेऽर्थदे ॥
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र रात्रौ वासं चकार ह । धनधान्यसमृद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥
भाद्रशुक्लचतुर्द्दश्यामनन्तव्रतसंज्ञके । पुनरागमनं कुर्याद्वने काम्यवने शुभे ॥
कृत्वानन्तव्रतं श्रेष्ठं रात्रौ गच्छेद्गढं वनं । तत्र रासोत्सवं दृष्ट्वा रात्रौ वासं चकार ह ॥
प्रभाते पूर्णिमायां तु भाद्रशुक्ले शुभे दिने । दृष्ट्वा कृष्णोत्सवं पूर्णं वनयात्रां समापयेत् ॥
समस्तांचिन्तितान् कामान्प्राप्नोत्यत्र न संशयः । संपूर्णफलदा भाद्रे त्रयोविंशदिनान्तरे ॥
समस्तवनयात्रा स्यात्तदर्द्धं ह्यूर्जमार्गयोः । गोपाष्टम्यां समारभ्य मार्गशीर्षे ह्यमादिने ॥
त्रयोविंशदिनेष्वेषु वनयात्रा समाचरेत् । अनेनैव क्रमेणैव भाद्रादर्द्धफलं भवेत् ॥
इति वनयात्राक्रमप्रसंगः ॥ ११ ॥

प्रतिमाविघ्नप्रायश्चित्ते दानस्नाननिर्णयः । ततो प्रतिमाविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्ते विश्वम्भरमन्त्रः । विष्णुयामले—

विश्वम्भराय देवाय देवदोषापहारिणे । नमो ब्रह्मण्यदेवाय देवानां हितकारिणे ॥

इति द्वात्रिंशाक्षरो विश्वम्भरमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्य मैत्रावरुणर्षिः विश्वम्भरो देवता गायत्री छन्दः मम प्रतिमाविघ्नकृदपराधविमुक्तये प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथध्यानं—

प्रमाण से परिक्रमा करे। रात्रि में वहाँ वास करने से समस्त कामना प्राप्त होती है। एकादशी के दिन लोहजंघान नामक लोहवन के गमन पूर्वक १॥ कोश प्रमाण से सांग प्रदक्षिणा करे। वहाँ शान्त चित होकर रात्रि में वास करे। भाद्र शुक्ला द्वादशी श्रवण नक्षत्र में भाण्डीरवट के गमन पूर्वक २ कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करे। भाण्डीरवट को नमस्कार करे। तदनन्तर बिल्ववन जाकर आधा कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा पूर्वक रात्रि वास करें ॥ १० ॥

त्रयोदशी तिथि आने पर फिर मथुरा नगर में आवे। वहाँ ब्राह्मणों को भोजन करावे और रात्रि वास करें तो धन, धान्य, समृद्धि लाभ होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है। भाद्र शुक्ला चतुर्दशी अनन्तव्रत के दिवस काम्यवन में आकर श्रेष्ठ अनन्त व्रत करें और रात्रि में गढ़वन को जावें। वहाँ रासोत्सव का दर्शन कर रात्रिवास करें। पूर्णिमा के दिन प्रभात में श्रीकृष्ण के उत्सव दर्शन कर वनयात्रा का समापन करें। यात्री चिन्तित फल समूह प्राप्त होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। भाद्र मास में जो यात्रा है सो सम्पूर्ण फल को देती है। इसका २३ दिन का विधान है, कार्तिक और मार्गशीर्ष में आधा फल मिलता है। गोपाष्टमी के दिन से आरम्भ पूर्वक मार्गशीर्ष अमावस्या पर्यन्त २३ दिन का विधान है। इति यह वनयात्रा का प्रसंग है ॥ ११ ॥

अब प्रतिमाविघ्नकारी अपराध का प्रायश्चित कहते हैं अध्याय समाप्ति पर्य्यन्त।

विश्वम्भरं जगन्मूर्त्तिं सच्चिदानन्दरूपिणं । स्वरूपदोषहन्तारं प्रणमामि कलामयं ॥
कदम्बनिकटे स्थित्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रकं । उत्तराभिमुखो भूत्वा ब्रह्मचर्य्यसमन्वितः ॥
पञ्चस्वरूपविघ्नाख्यं प्रतिमां पञ्च वेश्मप । स्थापयेत्पञ्चगोदानं ग्रन्थिसंज्ञाकमाचरेत् ॥
प्रायश्चित्तमितिप्रोक्तमपराधविमुक्तये ।

इति प्रतिमाविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्ते विश्वम्भरमन्त्रप्रयोगः । हिरण्यगर्भशापान्वितोऽयं मन्त्रः । ओं अस्य श्री हिरण्यगर्भर्षिशापप्रमोचनस्यार्चर्षिः कामो देवता पंक्ती छन्दः मम हिरण्यगर्भर्षिशापप्रमोचने जपे विनियोगः । इति हिरण्यगर्भर्षिशापमुक्ताभवः "विशांजलीः समादाय कोणं वायव्यमुद्दिपेत्" इति हिरण्यगर्भर्षिशापमोचनः ।

इति जपित्वा सकलांश्च दोषान्विमुक्तोऽहं प्रवदामि शान्तिं ।
तेषां स्वरूपो नरदेवसंभवो श्रीभट्टनारायणनामधेयः ॥

इति श्रीभट्टास्करात्मज श्रीनारायणभट्टगोस्वामि विरचिते व्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोद्धरणे व्रजमाहात्म्यनिरूपणे श्यामकुंडदृष्टान्ते गवादिवधप्रायश्चित्ताभिधानाख्याने सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ अष्टमोऽध्यायः ॥

अथ गरुडविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्तः । गारुडे—

गरुडध्वेऽपराधे च पदायोरुभयोरपि । मृत्युश्च भूयसी जाता शरीरो विघ्ननामियात् ॥
तद्दोषसमनार्थाय प्रायश्चित्तं समाचरेत् । मासमेकं गृहं त्यक्त्वा श्रीकुण्डे वासमाचरेत् ॥

गरुडविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्ते सौपर्णमन्त्राः । बौद्धायने—

"ओं ह्रीं श्रीं स्मैं सः डः सौपर्णाय स्वाहा" इत्येकादशाक्षरो सौपर्णमन्त्रः इत्यनेन मन्त्रेण प्राणायाम त्रयं कुर्य्यात् अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मर्षिः सौपर्णो देवता कात्यायनी छन्दः मम सौपर्णविघ्नकृदपराधमुक्त्यै प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः शिरसि ब्रह्मर्षये नमः मुखे कात्यायिनीछन्दसे नमः हृदये सौपर्णदेवतायै नमः इति न्यासः । अथ ध्यानं—

कुलपन्नगहंतारं गरुडं विष्णुवाहनं । त्वद्विघ्नकृतदोषघ्नं निवारय प्रसीद मे ॥
इति ध्यात्वा-नैऋताभिमुखो भूत्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रकं । दशप्रस्थप्रमाणेन दशघंटान् प्रदीयते ॥
तन्दुलं त्रिमणं दत्वा घंटादोषविमुक्तये । एवं कांस्यादिधातूनां घट्यादिपात्रसंभवाः ॥
हस्ताद्विघ्नाः भवन्तीह तेषां दोषविमुक्तये । तंदुलानां कृतं दानं यथाशक्त्यानुसारतः ॥
एवं पाषाणपात्राणि हस्ताद्विघ्नानि जायते । तदेव परिमाणेन दानं तन्दुलमाचरेत् ॥
पाषाणसंभवात्पापाद्विमुक्तो जायते नरः । लोभाद्दानं न कुर्वीत शरीरो विघ्नतां व्रजेत् ॥
शतधा संभवैः रोगैरथवा क्षतपीडया । षण्मासपूरिता पीडा जायते नात्र संशयः ॥

इति गरुडविघ्नकृत् कांस्यादिधातुपात्रविघ्नकृद्वा पाषाणपात्रविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्तदाने सौपर्णमन्त्रप्रयोगः । अस्य मन्त्रस्य शापो नास्ति ।

अथ शंखविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्तः । पाद्मे—

शंखविघ्ने यदा जाते वाक्यहीनो नरो भवेत् । रोगेन वन्हिना वापि क्षतेन कटिदंशतः ॥

जिह्वादन्तौ विनश्येत मूको दोषसमुद्भवः । तद्दोषशमनार्थाय शंखदानं समाचरेत् ॥
प्रस्थार्द्ध परिमाणेन रूकमशंखं तु कारयेत् । मध्ये कर्षसुवर्णं च धृत्वा विप्राय दापयेत् ॥
मासत्रयं गृहं त्यक्त्वा शोणभद्रं च गोमतीं । स्नात्वा शखापराधात्तु मुक्तो भवति मानवः ॥
ततः शंखविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्ते पांचजन्यमन्त्रः । अगस्त्यसंहितायां—
विघ्नदोषविमुक्ताय पांचजन्याय धीमते । कमलापतितोषाय नमो पापं प्रशाम्यतु ॥
इति द्वात्रिंशाक्षरो पांचजन्यमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात् अस्य मन्त्रस्य नारायणर्षिः कमला देवता गायत्री छन्दः मम शंखविघ्नकृदपराधमुक्तये प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—
ध्यायेत् क्षीरसमुद्रसंभवमयं शंखं हरेर्वल्लभं । विघ्नं पापप्रणाशनं कलिमलापघ्नं सुभद्राप्रियं ॥
सर्वव्याधिविनाशनं सुखकरं सर्वार्थकामप्रदं । माङ्गल्यं शुभवर्द्धनं हरिगुणालंकारभूषोज्वलं ॥
इति स्वरूपं ध्यात्वा—
द्विसहस्रमिदं जप्त्वा भास्कराभिमुखे विशन् । द्वितयं ग्रन्थिसंज्ञाकं गोदानं च द्विजातये ॥
लक्ष्मीनारायणस्थाने जपेन्मन्त्रं सुधीर्नरः । शंखविघ्नकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥
इति शंखविघ्नकृदपराधप्रायश्चित्ते पुण्डरीकाक्षमन्त्रप्रयोगः । अस्य मन्त्रस्य शापो नास्ति ।
अथ हरिद्वृक्षसमूलोत्पाटप्रायश्चित्ते पुण्डरीकाक्षमन्त्रः । वाधूलसंहितायां—
पुण्डरीकविशालाक्ष वृक्षपापप्रणाशक ! । कमलापतये तुभ्यं प्रणमामि प्रसीद मे ।
इति वृक्षहत्याप्रायश्चित्ते पुण्डरीकाक्षमन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्याथर्वणर्षिः पुण्डरीकाक्षो देवता त्रिष्टुप् छन्दः मम हरिद्वृक्षसमूलोत्पाटापराधविमोचने प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । ध्यानं—
पुण्डरीकं विशालाक्षं वन्दे नारायणं प्रभुं । समस्तवृक्षपापघ्नं रमाकान्तमजं हरिं ॥
इति ध्यात्वा-त्रिसहस्रमिदं जप्त्वा पूर्वाभिमुखतो विशन् । वटस्तले विधानेन मन्त्रं जप्त्वा सुधीर्नरः ॥
मासमेकं गृहं त्यक्त्वा प्रायश्चित्तं समाचरेत् । कूपदानं करोद्यस्तु वृक्षहत्यादिमुच्यते ॥
कृष्णलीलोद्भवान तीर्थान् व्रजमण्डलशोभितान् । तेषां स्नपनमात्रेण वृक्षहत्या विमुच्यते ॥
गोदानग्रन्थिसंज्ञकान् द्विजेभ्यो दानमाचरेत् । हस्त्यश्वरथदानं च वटाश्वत्थकदम्बकं ॥
त्रिवृक्षघ्ने त्रयं दानं सर्वद्रव्यार्थसंयुतं । प्रायश्चित्तं विना लोको समूलं च विनश्यति ॥
सहस्रपरिमाणेन धामांसं दन्तधावनं । द्विजेभ्यो नित्यदानं स्याद्वृक्षहत्या विमुच्यति ॥
इति समूलहरिद्वृक्षोत्पाटापराधप्रायश्चित्ते पुण्डरीकाक्षमन्त्रप्रयोगः ।
अथ पसह्यान् ग्रामभूमिगृहादिवस्तुद्रव्यादिहरणप्रायश्चित्तः । धर्मप्रदीपे—
बलान्मोहाच्च विद्वेषाद्ग्रामभूमिं समाददे । अथ वा गृहवस्तूनि द्रव्यादीनर्थसंचयान् ।
नारीभोजनपात्रांश्च लोभादाहरते नरः । तस्यैव जायते दोषस्तादृशं फलमीश्वरेत् ॥
छलेनाहरते द्रव्यं धान्यादिवस्तुसंचयान् । मासद्वयान्तरे शीघ्रं फलमाप्नोति मानवः ॥
मिथ्यापरात्मनश्चैव कल्पनं कारयेत् क्वचित् । दिनत्रयान्तरे दोषस्तादृशं फलमाप्नुयात् ॥
द्विगुणं त्रिगुणं हानिरेकादशगुणाभिधा । स्थानभ्रष्टं करोद्यस्तु त्रिलोकेष्वजयी भवेत् ॥
यत्र यत्र व्रजन् लोके तत्र तत्रापमानता । एतेषां दोषशान्ताय प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥
वनयात्रां करोद्यस्तु व्रजतीर्थान्समाचरेत् । वर्षमेकं गृहं त्यक्त्वा श्रीकुंडे वासमाचरेत् ॥

ग्रामदानं करोद्यस्तु ग्रामपापो विनश्यति । भूमीदानं करोद्धीमान् भूमिदोषप्रशान्तये ॥
गृहदानं करोद्यस्तु गृहदोषादिशान्तये ।

एतेषां दोषशांताय प्रायश्चित्ते पुरुषोत्तममन्त्रः । विष्णुयामले—

ओं ह्रां ह्रीं क्लीं सौ पुरुषोत्तमाय स्वाहा इति मन्त्रः अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्य कश्यपर्षिः पुरुषोत्तमो देवताष्टी छन्दः । मम ग्रामभूमिगृहादिसर्ववस्तु द्रव्यादिहरणपरद्रोहादिदोषपरिहारार्थं प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः । न्यासं पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

सर्वपापहरं देवं पुण्यं श्री पुरुषोत्तमं । कलाधरं कलाकान्तं प्रणमामि परेश्वरं ॥

१ इति ध्यात्वा-ईशानाभिमुखो भूत्वा द्विसहस्रमिदं जपेत् । दशगोदानसंज्ञाकं ग्रन्थिसंयुक्तशोभनं ॥

पलमाणसुवर्णं च नित्यदानं समाचरेत् । एकान्तरव्रतं कुर्य्यान्नक्तभोजनमाचरेत् ॥

इति गृहादिदोषप्रायश्चित्ते पुरुषोत्तममन्त्रप्रयोगः । अस्य मन्त्रस्य शापो नास्ति ।

अथ राक्षसाज्ञातसुनशिवासुतादिघातापराधप्रायश्चित्तः । भविष्योत्तरे—

अज्ञात बालजीवं च हन्यतेऽशुभरूपिणं । कुलघ्नी जायते हत्या मृतवत्सं करोन्नरः ॥
तद्दोपशमनार्थाय प्रायश्चित्तं समाचरेत् । त्रिवेण्यां क्रियते स्नानं श्रीकुण्डे वासमाचरेत् ॥
सार्द्धवर्षद्वयं गेहं त्यक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥

ततो ऽज्ञानशिवाबालवधापराधप्रायश्चित्ते नरकान्तकमन्त्रः । गोभिलसंहितायां—

ओं नरकान्तस्वरूपाय विष्णवेऽनन्तरूपिणे । अज्ञातबालपापघ्ने नमस्ते कमलासन ! ॥

इति मन्त्रः । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रय कुर्य्यात् । अस्य मन्त्रस्य सप्तर्षिः नरकान्तकस्वरूपो देवता अनुष्टुप् छन्दः । ममाज्ञातजीवबालापराधविमुक्तये प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः न्यासं पूर्ववत् ।

अथ ध्यानं-भौमादिनररूपाणां कुलघ्नं देवसेवितं । भजेऽहं नरकान्तं तं जीवदोषादिनाशनम् ॥ इति ध्यात्वा—

उत्तराभिमुखो भूत्वा सहस्रत्रितयं जपेत् । बिल्ववृक्षस्तले स्थित्वा गोदानं पञ्चकं ददौ ॥
पञ्चकर्षं सुवर्णस्य स्वरूपं जीवबाचकं । आच्छाद्य पीतवस्त्रेण गुप्तदानं समाचरेत् ॥
मुक्तो जीववधाद्दोषान् शिवारक्तकुलोद्भवः ॥ अस्य मन्त्रस्य शापोनास्ति—

अथ नीलकण्ठवधप्रायश्चित्तः । गौरीरहस्ये—

नीलकण्ठवधं कुर्य्यात् हत्या ह्यजयवर्धिनी । सर्वदा जयहीनं च सर्वमांगल्यवर्जितं ॥
सप्तमासान्तरे लोको कुरुते नात्रसंशयः । प्रायश्चित्तं विना लोको मृत्युर्वर्षमेकान्तरे ॥ इति निषेधः—

ततो प्रायश्चित्ते विश्वरूपमन्त्रः । त्रैलोक्यसंमोहनतन्त्रे—

ओं विश्वरूपाय देवाय नीलकण्ठापराधह । विश्वराट् रूपणेतुभ्यं नमामि प्रलयान्तक ॥

अनेन प्रा० त्र० अस्य मन्त्रस्य विभाण्डकर्षि विश्वरूपो देवता अनुष्टुप् छन्दः मम नीलकण्ठवधापराधविमोचने प्रायश्चित्ते ज० वि० न्यासं । पूर्ववत् । अथ ध्यानं—

विश्वरूप निराकारं निरञ्जनमजं हरिम् । प्रलयान्तकरं देवं प्रणमामि कलानिधिम् ॥

इति ध्यात्वा-पूर्वाभिमुखमाविश्य सहस्राख्यमिदं जपेत् । ग्रन्थसंख्यकगोदानं चतुर्थं दानमाचरेत् ॥

सार्द्ध मासद्वयं त्यक्त्वा श्रीकुण्डमावसेच्छुधीः । नीलकण्ठे कृतं दानं सामग्रीभिः समन्वितं ॥
पञ्चकर्षसुवर्णस्य नीलकण्ठस्वरूपकं । नीलकण्ठवधाद्दोषान्मुच्यते नात्र संशयः ॥
गुञ्जाचतुःप्रमाणेन स्वर्णं नित्यं प्रदापयेत् ॥ इति अस्य मन्त्रस्य शापोनास्ति—

अथ मयूरवधापराधप्रायश्चित्तः । स्कान्दे—

मयूरस्य कृता हत्या समूलगृहनाशनं । तद्दोपशमनार्थाय गंगावेत्रवतीञ्चरेत् ॥
मासत्रयं गृहं त्यक्त्वा श्रीकुण्डवासमाचरेत् । मयूरत्रितयं कृत्वा प्रस्थमानसुवर्णतः ॥
दश मुक्ताकृता माला त्रिमालात्रिंशसंख्यया । मयूराणां त्रयाणाञ्च कण्ठेषु मालिकान् क्षिपेत् ॥
पीतरक्तहरिद्वस्त्रैराच्छाद्य पटसम्भवैः । त्रिषु तीर्थेषु दानानि गुप्तसंज्ञानि यानि च ॥
मुक्तात्रयप्रबन्धेन नित्यदानं समाचरेत् । प्रायश्चित्तं विना हत्या कदाचिन्नैव मुंचति ॥

निर्णयतरंगे—

हत्या केषाञ्च जीवानां कदाचिन्नैव मुंचति । विना कन्याविवाहेन द्वारमार्गप्रवेशतः ॥
कन्योद्वाहं विना गेहो सदा हत्यासमाकुलः । सदा कपाटबद्धस्तु मध्ये हत्या च क्रीडति ॥
देवपित्रर्चनादिभ्यो वैमुख्यो जायते ग्रहः । विना कुलोद्भवा कन्या गोत्रान्यकुलसंभवाः ॥
तस्या वैवाहिकं यज्ञं स्वगृहे कुरुते यदि । नैव मुच्येत्तदा हत्या कृतं निष्फलतां व्रजेत् ॥
स्वगोत्रकुलसम्भूतं कन्याद्वाहं गृहेऽकरोत् । तदैव मुच्यते हत्या द्वारागमनसम्भवः ॥
यावद्द्वारप्रबन्धस्तु तावत्कन्याकुलेऽभवत् । तस्या वैवाहिकं कुर्यात् निःप्रबन्धो भवेत्तदा ॥
विना कन्याद्भवाद्वोढे विप्रो लोभसमन्वितः । भोजनं क्रियमाणस्तु गेहे हत्यान्वितस्य च ॥
षण्मासाभ्यन्तरे मृत्युमाप्नोत्यत्र न संशयः । भोजनं क्रियमाणस्य हत्यायां ब्राह्मणस्य च ॥
प्रतीपं जायते हत्या द्वितीया ब्राह्मणस्य च । राजाज्ञा परिमाणेन पञ्चानामाज्ञयापि वा ॥
हत्या विमुच्यते तस्माद्दशांश फलभागिनी ।

ततो मयूरवधापराधेऽनन्तमन्त्रः । शौनकीये—

नमस्त्वनन्तदेवाय शिखायाः पापहारिणे । त्रैलोक्यजगदानन्दहेतवे ब्रह्ममूर्तये ॥

इति अ० प्रा० त्र० अस्य मन्त्रस्यापस्तम्भर्षिरनन्तो देवता—अक्षरा पंक्ति छन्दः । मम मयूरवधापराधविमोचने प्रायश्चित्ते ज० वि० न्या० पू० । अथ ध्यानं—

अनन्तं सर्वपापघ्नं शंखचक्रगदाधरं । त्रैलोक्यमोहनं देवं नीलेन्दीवरलोचनं ॥

इति ध्यात्वा-पूर्वाभिमुखमाविश्य जपेन्मन्त्रं शतत्रयं । नाभिमात्रे जले स्थित्वा प्रायश्चित्तमिदं चरेत् ॥

गोदानं ग्रन्थिसंख्याकं दानं दद्याद्द्विजातये । मयूरवधपापस्य मुक्तये च तृतीयकं ॥
नक्तं व्रतं करोद्धीमान् शिखिहत्याद्विमुच्यते ॥

अथ चात्रगवधापराधप्रायश्चित्तः । विष्णुधर्मोत्तरे—

चात्रगस्य वध कार्ये हत्यास्यात् सुतपीडिनी । सदारोगसमायुक्ता प्रायश्चित्तं विनाशुभा ॥
एकं मासं गृहं त्यक्त्वा गंगां स्नात्वा विधानतः । कुर्याच्चात्रगदानञ्च हिरण्यं ह्यर्द्ध प्रस्थकं ॥
गुप्तदानमितीत्यातं चात्रग पापशान्तये ।

ततश्चात्रगवधापराधप्रायश्चित्ते मुकुन्दमन्त्रः—

ओं ह्रां क्रीं क्रीं क्ष्रौं मुकुन्दाय स्वाहा अनेन म० प्रा० त्र० अस्य मन्त्रस्य विभाण्डकर्षिर्मुकुन्दो देवता त्रिष्टुप् छन्दः । मम चात्रगवधापराधविमुक्तये प्रायश्चित्ते ज० वि० न्या० पू० । अथ ध्यानं—

ध्यायेद्देवं मुकुन्दाख्यं यशोदानन्दनं हरिं । बालक्रीडासुखासीनं चात्रगदोषनिवारणं ॥

इति ध्यात्वा—वायव्याभिमुखो भूत्वा ह्याम्रवृक्षतले विशन् । जपेन्मत्रं सहस्राख्यं सन्नियम्यजितेन्द्रियः ॥

चात्राग हत्यादिमुक्तस्तु सुखसौभाग्यमाप्नुयात् । एवं शुकसारिकापिकचर्मैनिकावकचिडीपण्डू प्रभृतयः ।
एतेषाञ्चैव जीवानां प्रयोगाश्रमुदाहृतः । तथापि सर्वजन्तूनां वधपापविमुक्तये ॥
प्रयोगविधिराख्याता प्रायश्चित्तानुसारतः ॥
इति चात्रगादिजन्तूनां वधापराधप्रायश्चित्ते मुकुन्दमन्त्रप्रयोगः ॥

अथगर्दभोष्ट्राजैडकवधापराधप्रायश्चित्तः । बृहत्पाराशरे—
गंगादि पञ्चतीर्थानि कालिन्दी यमुना नदी । कर्मनाशा च वेत्रा च स्नानाद्धत्या विमुच्यते ॥
चतुर्णां गर्दभादीनां चतुर्धातुस्वरूपिणः । पित्तलिस्ताम्रलोहाढ्याः निर्मिताः मणसंख्यया ॥
पीतरक्तासितश्वेतैर्वस्त्रैराच्छादयेत्क्रमात् । चणमाषतिलाजिका चतुर्द्धाष्टमणाः स्मृताः ॥
दद्याद्विप्राय दानं हि हत्यामुक्तो भवेन्नरः ।

एतेषामपराधप्रायश्चित्ते मुरारिमन्त्रः—
मुरान्तकाय देवाय वासुदेवाय धीमते । तीत्युष्ट्रगर्दभोच्छेदपापघ्नाय नमोस्तु ते ॥
अनेन मन्त्रेण प्रा० ऋ० अस्य मंत्रस्य वैमलर्षिर्मुरारिदेवता ज्योतिः छन्दः मम पञ्च प्रकारजीवगर्दभ तित्युष्ट्रछागमेषवधापराधमोचने प्रायश्चित्ते ज० न्या० पू० । अथ ध्यानं—
शंख चक्र गदा पद्मैः शोभितं मुरमर्दनं । ध्यायेद्देवं रमाकान्तं पञ्चपापापहारिणं ॥
इति ध्यात्वा-जलाशयेऽश्वत्थवृक्षे तले स्थित्वा जपेत्सुधीः । द्विसहस्रमिदं मन्त्रमुत्तराभिमुखोविशन् ॥
गोदानं तृतयं दद्यात् वृषग्रन्थिसमन्वितं । पञ्चहत्यापराधात्तु मुक्तो भवति मानवः ॥

अथ परद्रोहादिवैवाहादिकमांगल्ययज्ञविध्वंसनादि ताम्बूलादिफलाहरणमित्थ्यात्मकलपापराध प्रायश्चित्ते यज्ञपुरुषमन्त्रः । योगयाज्ञवल्के—ओं ह्रीं क्लीं लं ह्रैं यज्ञपुरुषाय विष्णवे नमः स्वाहा इति अनेन मन्त्रेण प्रा० ऋ० अस्य मन्त्रस्य साकलर्षि यज्ञपुरुषो देवता बृहती छन्दः । मम परद्रोहादिवैवाहिक मांगल्ययज्ञविध्वंसनादिताम्बूलफलहरणमिथ्यात्मकलपापराधविमोचने ज० वि० न्या० पू० शिरसि साकलर्षये नमः । मुखे बृहतीछन्दसे नमः । हृदये यज्ञपुरुषाय देवतायै नमः इति न्यासः । अथ ध्यानं—
विवाहयज्ञादिकदोषसम्भवपापघ्नमीशं कमलायताक्षं ।
वन्दे कृपासिन्धुमनन्तरूपं नारायणं यज्ञपुरापुरुषं ॥
इति ध्यात्वा-लक्ष्मीनारायणस्थाने द्विसहस्रमिदं जपेत् । पूर्वाभिमुखमाविश्य यज्ञपापाद्विमुच्यते ॥
गोदानं ग्रन्थिसंज्ञाकं गंगादिषु त्रयोदश । कन्यादानं करोत्तर्हि यज्ञहत्या विमुच्यति ॥
प्रायश्चित्तं विना पापाः मुक्तिमायान्ति केशव । यज्ञविध्वंसनारापाः सप्त जन्म प्रपीडिताः ॥
इतीव पापाः कथिताः प्रशस्ता प्रायश्चित्ताः जीवविघातसम्भवाः ।
विवाहयज्ञादिकभ्रंशनोद्भवाः परात्मद्रोहादिकशान्तये शुभाः ॥
वने काम्यवने तीर्थं तेषां मध्ये महत्स्थलं । श्यामकुण्डं समाख्यातं तद्दृष्टान्तमितीरितम् ॥

इति श्रीभास्करात्मज श्रीनारायणभट्टगोस्वामीविरचिते व्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे व्रजमाहात्म्यनिरूपणे श्यामकुण्डदृष्टान्ते नानाप्रकार पार्षदादिविघ्नप्रायश्चित्ताभिधायने अष्टमोऽध्यायः ॥

— —

॥ नवमोऽध्यायः ॥

अथातः सम्प्रवक्षामि तीर्थाः काम्यवनोद्भवाः। गोमहत्यादयो कुण्डास्तेषां मन्त्रमुदाहरेत् ॥
महात्म्यं दर्शये तादृक्फलमेतत्प्रकीर्त्तयेत्।

ततः काम्यबने गोमतीकुंडस्नानाचम प्रा० मंत्रः। आदिवाराहे-

धेनुकृत्तीर्थराजाय सर्वदा पुष्टिवर्धन ! । जयवाल्यप्रदस्तीर्थ सर्व्व बाधां निवारय ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य नवभिर्मज्जनाचमैः। यत्र तीर्थे कृतं दानं धेनुं सोपस्करैर्युतं ॥ १ ॥

धेनुदाननिर्णयः। गौडनिबन्धे—

सोपस्करयुतां धेनुं दद्याद्दानं द्विजातये। कृतकृत्यो भवेल्लोको वैष्णवीपदवीं लभेत् ॥
जीवन् यावन्नृलोकेस्मिन्नैश्चर्यपदवीं लभेत्। नानाद्रव्यधनैर्धान्यैर्वस्त्रालंकरणादिभिः ॥
वैवाहादिकमांगल्यैरिच्छापूर्वं सुखं लभेत्। सोपस्करं विना धेनुं दद्याद्विप्राय तुष्टये ॥
वस्त्रालंकारभूषादिपात्रं धान्यादिभिः क्रमात्। दुःखितो बहुदारिद्र्यं सदा संपीड्यते नरः ॥
द्वाभ्यां दानं तु विप्राभ्यामेकधेनोश्च कारयेत्। धेनुशापात्कृता ह्याशाखण्डत्वं च प्रजायते ॥
यत्र यत्रेच्छितं कामं तत्र तत्रैव नश्यतु। यतो धेन्वैकदानं हि एकस्मै तु प्रदापयेत् ॥
इच्छया तादृशं कामं परिपूर्णं तु जायते। विभागं तु कदा नैव कारयेच्च सुधीर्नरः ॥
निष्कं द्रव्यसमुद्भूतं विप्रेभ्यो दानमाचरेत्। तत्रैव नैव दोषः स्यात्सहस्रगुणितं फलं ॥
कन्यादानं यथा पुण्यं गोदाने च तथा फलं। सर्वालंकारसंयुक्तां कन्यां रूपगुणान्वितां ॥

वामनपुराणे—

तदा तस्यैव दानं तु कुर्य्यान्मोक्षाय दम्पती। तान्येव भूषणादीनि जामात्रे तु समर्पयेत् ॥
कन्यादानकृतात्पश्चाद्धेनुदानं समाचरेत्। धेनुदानं विना कन्यादानं सांगं न जायते ॥
कन्योद्वाहे च जामातुर्भूषणान् धारयेत्प्रियां। गौरीमूर्त्तिं गले न्यस्य मुक्तास्यामालमालकां ॥
तदा कन्या प्रिया जाता लक्ष्मीसौभाग्यवर्द्धिनी। गौर्य्यादिभूषणैर्हीनं कन्योद्वाहं यदा भवेत् ॥
सा प्रिया विभवा जाता ह्येकवर्षदिनान्तरे। विनोत्साहं विवाहादीन्मांगल्यान् कारयेत् क्वचित् ॥
सर्वदाऽमंगलान्येव जायंते सर्वदा चिरं। तस्य गेहे करोद्वासं शोको मृत्युसमुद्भवः ॥
गीतमांगल्यहीनेन वैवाहादीन् शुभान् चरेत्। अमंगलं गृहे तस्य सर्वदैव प्रजायते ॥

कन्योद्वाहे द्रव्यदाननिषेधः। स्कान्दे—

नग्नकन्याकृतं दानं सदा नग्नत्वसंप्रदं। मातृपित्रौ सदा दुःखौ वस्त्रधान्यादिभिर्विना ॥
यदि वा लोभमोहेन कन्यादत्तं समाददे। सर्वदा दुःखदारिद्रैः कदा तृप्तिं न गच्छति ॥
क्षुत्तृट् प्रपीडितो नित्यमपमानसदान्वितः। बहुधा ऋणसंपूर्णो यत्रस्थो विनिरादरः ॥

अब काम्यवन में उद्भव गोमहती प्रभृति कुण्डों के मन्त्र, महिमा, फल वर्णन करते हैं। गोमहती कुंड का स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा आदिवाराह में—हे गाभीगण कर्तृक रचित तीर्थराज गोमहती कुण्ड ! आपकी जय हो। आप सर्वदा पुष्टि को बढ़ाने वाले हैं और समस्त बाधा निवारण करने वाले हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार स्नान, आचमन, प्रदक्षिणा करें। यहाँ सोपस्कर के साथ धेनुदान की विधि है। निधि, फल बतलाते हैं—द्वारावती कुंड की बात उठाने के पर्यन्त ॥ १ ॥

कन्यार्थमागतं द्रव्यं चिन्तितं वापि याचितं । न तदर्थं करोत्यस्तु ह्यन्यकार्य्ये समापयेत् ॥
समूलं नश्यते कार्य्यो हानिः स्याद्द्विगुणाभिधा ।
कन्यार्थ-देवार्थ-द्विजार्थमेव गवार्थ-तीर्थार्थ-गृहार्थद्रव्यं ।
विचिन्तयित्वा नहि दातुमिच्छन्समूलनाशं द्विगुणान्यहानिः ॥

कौर्म्ये—एतद्देवालयं स्थानं गेहं तीर्थं ममलकं । कुलनाशं यदा हि स्यात्तमेव पुनरुद्धरेत् ॥
तस्यैव जायते पुण्यं सहस्रगुणितं फलं । प्रतिवासरसंभूता कुलवृद्धिः प्रजायते ॥
अखण्डपदवीं लब्ध्वा सराजा धार्म्मिको भवेत् । जीर्णोद्धारं प्रकुर्व्वन्ति पुस्तकादिस्थलेषु च ॥
असंख्या फलदं पुण्यं वैकुण्ठपदमाप्नुयात् । आविर्भावं करोत्स्थानमुच्छिन्नं गोप्यसंज्ञकं ॥
प्रतापस्तुत्कुले वृद्धो सहस्रगुणितोऽभिधः ।

हेमाद्रौ—लब्धद्रव्यादिधान्येभ्यो दशांशं दानमाचरेत् । वस्त्रालंकारधान्यादि गोपश्वादिसमागमे ॥
दशांशभागतः कुर्य्याद्दानं दशगुणप्रदं । बालकौमारपौगण्डबलदेवादिमूर्त्तिषु ॥
उपायनं यदा जातं तद्दशांशस्तु दक्षिणा । उपायनप्रमाणेन दशांशं दानमाचरेत् ॥
लोभान्नैवं दशांशस्य दानं यदि न कारयेत् । तत्समूलं विनश्यन्तु प्रतिमाविघ्नतामियात् ॥
द्विगुणं जायते हानिः प्रायश्चित्तं विना यदा । यथैव शतविप्राणां भोजनादीन्समाचरेत् ॥
एको वैमुख्यतां जातस्तस्य शापात्तु निष्फलाः । शतगोपानमाचक्रे ह्येका स्याच्च तृषार्दिता ॥
तस्यास्तु निष्फलाः जाताः शापाच्छलप्रपूरणाः । एवं राजादिलोकाश्च प्राप्तद्रव्यादिमध्यतः ॥
दशांशं कुरुते दानं सहस्रगुणितं भवेत् । लोभान्नैव कृतं दानं समूलं नाशमाप्नुयात् ॥
विप्राणामपमानेन यज्ञो विध्वंसनां नयेत् । अपराधकृतो विप्रो शूद्र द्वेषप्रचारकः ॥
कुलपूज्यो पितृपूज्यो दौहित्रस्तीर्थपूजकः । अयमाने च तस्यैव नैव दोषः प्रजायते ॥
मुक्तादिभूषणादाने विप्रेभ्यो दक्षिणां ददौ । सहस्रगुणिता वृद्धिर्जायते च दिने दिने ॥
इमां शान्तिं न कुर्व्वन्ति समूलं नाशमाप्नुयात् । शरीरव्याधिभिर्गेहे हानिश्च विपुला भवेत् ॥
इतिलाभादिके दशांशदाननिषेधः ॥
नारायणस्वरूपेषु बलदेवादिमूर्त्तिषु । सहस्रगुणितं जातमुपायनमिति स्मृतं ॥

पाद्मे—शंखरुक्ममयं कृत्वा प्रस्थमात्रं मनोहरं । कमलापतये कान्तमर्पयेत्कामनान्वितः ॥
सर्वदा विजयी भूयान्नैव तिष्टन्ति वैरिणः । घंटां च विष्णवे दद्यात्सदा मांगल्यमाप्नुयात् ॥
आरात्तिं हरये दद्यात्कांचनीं परिपूर्णकां । त्रैलोक्यसुखसम्पत्त्या धनधान्यादिसम्पदा ॥
संयुता वसते लक्ष्मी तस्य गेहे पतिव्रता । विनारात्तिंस्थितामूर्त्तिस्त्रैलोक्यसुखनाशिनी ॥
घटीं समर्पणे तस्य सर्वदा जयमंगलं । रुक्मस्नानमयं पात्रं ह्यर्पयेत् विष्णवेऽखिलं ॥
सहस्रगुणितं सौख्यं पात्रान्तरगृहं लभेत् । ताम्रपित्तलिपात्रेषु सामान्यफलमाप्नुयात् ॥
रुक्मे पानमये पात्रे हरेः सौख्यं करोति यः । तत्सुखं लभते शीघ्रं चिरायुःसुखमाप्नुयात् ॥
छत्रं स्वर्णमयं कृत्वा कमलापतये शुभं । तस्माल्लक्षगुणं छत्रं धारयेत्स्वयमुच्छ्रितं ॥
त्रैलोक्याधिपतिर्भूत्वा छत्रधारी नरो भवेत् । अर्पयेद्रुक्मछत्रं तु सहस्रगुणितं लभेत् ॥
छत्रधारी भवेद्राजा समस्तपृथिवीतले । अखण्डं कुरुते राज्यं नैव तिष्ठन्ति कंटकाः ॥
अन्यैर्नानाविधैर्वस्त्रै भूषणैर्बहुपार्पदैः । बहुधा कारयेत्सौख्यं हरये मूर्त्तिरूपिणे ॥

सदा लक्षगुणैः सौख्यं प्राप्नुयात्पृथिवीतले । रुक्मस्वर्णमयीं कृत्वा विष्णवेऽर्थचतुष्पथीं ॥
समर्पण करोद्धीमान् सर्वदा विजयी भवेत् । राजद्वारे च संग्रामे शत्रुपक्षविमर्द्दकः ॥
अजयं नैव पश्यन्ति कदाचिद्बहुसंकटे । यत्स्वरूपेषु नैवास्ति मनोज्ञासमयी पथी ॥
बालकौमारपौगण्डेष्वेषु सौख्यविवर्द्धिनी । उदासीना सदामूर्त्ति वसते ह्यजयप्रदा ॥
एवं मन्त्रमयीं कृत्वा विष्णवे च समर्पयेत् । राज्यवश्यकृतो लोको राज्यं निष्कंटकं करोत् ॥
सुबुद्धिर्जायते नित्यं मन्त्रविद्याविशारदः । यन्मन्दिरे सुबुद्धिस्तु जायते नात्र संशयः ॥
कुबुद्धेस्तु भवेन्नाशो सदा सौबुद्धिवर्द्धनः । पूजाविधानं कृष्णस्य कुर्य्याच्च विधिवन्नरः ॥

समयनिरूपणं-कृष्णार्च्चनचन्द्रिकायां—

विना चतुष्पथीं पूजांस्थापनं तु हरेश्चरेत् । बहु क्रोधमयो विष्णुः शपतेऽजयवर्द्धनः ॥

विष्णुधर्म्मोत्तरे—

विष्णुशापात्प्रजायते कुबुद्धिस्तु दरिद्रता । ऋणापमानव्याधिश्च बहुक्लेशसदान्वितः ॥
विना दर्शनकालेन हरेरीक्षणमाचरेत् । निष्कला जायते मूर्त्तिः स्थानभ्रष्टं चकार ह ॥
परिवारक्षयं जातं मिथ्याद्रोहकलंकता । ब्रह्महत्या फलं लब्ध्वा ह्यलक्ष्मीं भजते सदा ॥
तद्दोषशमनार्थाय प्रायश्चित्तं समाचरेत् । तदैव सकलामूर्त्तिर्जायते शुभवर्द्धिनी ॥
विष्णोश्च मन्दिरे दीपौ ज्योतिषौ दक्षिणोत्तरे । चतुर्दिक्षु भवेज्ज्योतिस्त्रैलोक्यजयमंगला ॥
एक दीपं स्थितं तत्र द्वि दिशोर्जयमंगलं । द्विदिशोऽन्धकारस्तु सर्वदा ह्यशुभं भयं ॥
एकपक्षे भवेल्लक्ष्मीरेकपक्षे दरिद्रता । वामदक्षिणयोर्भागे विष्णोरग्रे वरप्रदौ ॥
एकदीपं करोद्यस्तु नेत्रहीनो नरो भवेत् । यस्मात्कदा न कर्त्तव्यमेकदीपं सुरालये ॥
चामरं केशवायैव स्वर्णरौप्यविनिर्मितं । अर्पयेन्मनसेच्छाभिः परिपूर्णसुखं लभेत् ॥
तद्गृहे वसते पद्मा सदा क्लेशविवर्जितः । अलक्ष्मीं नैव पश्येत तद्गृहेषु च निर्मलं ॥
चमरेण विना मूर्त्तिरशुचिः सर्वदा स्थिता । मक्षिका स्पृशते मूर्त्तिं किञ्चिद्दोषं कलेवरे ॥
क्षीयते त कलंकश्च मक्षिकाभ्यस्तु रक्षयेत् ॥

धर्मप्रदीपे—मक्षिका सततं धारा भूमि रापो हुताशनः । शिशु मार्जारद्रव्यं च सप्तैते च पवित्रकाः ॥
उच्छिष्टं शिवनिर्म्माल्यं वमनं शवकर्पटं । काकविष्ठासमुत्पन्नं पंचैते च पवित्रकाः ॥

इति पवित्राभिधाः ॥ अगस्त्यसंहितायां—

भगवच्छपथं मिथ्या कारयेदधमो जनः । विशवृत्या धृत जन्म निरये पच्यते चिरं ॥
सपथस्य प्रभावं तु समक्षं शीघ्रमीक्षयेत् । पुत्रशोकमृणं व्याधिर्दारिद्रं क्लेशपीडनं ॥
पथहत्याऽभवत्तस्य सदा सौख्यविनाशिनी । मिथ्या सपथदोषेन प्रतिमा विघ्नतां ययौ ॥
षण्मासाभ्यन्तरे मिथ्या दर्शयेत्स्वकृतं फलं । एवं पुत्रादिजीवेषु मिथ्या सपथमाचरेत् ॥
गोविप्रादिषु जीवेषु मिथ्या सपथमाचरेत् । षण्मासाभ्यन्तरे तेषां मृत्युरेत्र न संशयः ॥
तेषां वधकृतोद्भूता हत्या स्यात्कुष्ठवर्द्धिनी । भक्ष्याभक्ष्यविवेकेन मिथ्यासपथमाचरेत् ॥
ब्रह्मत्वरहितो जातश्चाण्डालसदृशो द्विजः । प्रायश्चित्तं विना तस्य चतुर्मासे फलं दृशेत् ॥
पुत्रशोकजराव्याधिरतिदीर्घदरिद्रता । ऋणं कलहसन्तापं कुरुते ब्रह्मघातिनी ॥
स नरो देवपितृभ्यो लोकेभ्यो विमुखः स्मृतः । मिथ्याया सपथे कार्य्ये प्रायश्चित्तं विधीयते ॥

विष्णुयामले—गंगां च मानसीं स्नात्वा श्रीकुण्डे वासमाचरेत्। चातुर्मासं गृहं त्यक्त्वा सपथस्य प्रशान्तये॥
पञ्चकर्षसुवर्णं च ताम्रपात्रे निधाय च। तिलैश्च छादनं कृत्वा ब्राह्मणाय प्रदीयते॥
काले ब्राह्ममुहूर्त्तेऽस्मिन् नित्यदानं समापयेत्। मिथ्यासपथदोषात्तु मुक्तो भवति मानवः॥
मिथ्यासपथकारस्य कदा स्थानं न जायते॥

अथ मिथ्यासपथप्रायश्चित्ते वैकुण्ठमन्त्रः—

ओं ह्रीं क्लीं सौं श्रौं ग्लौं ब्रां वैकुण्ठाय नमः इति द्वादशाक्षरो वैकुण्ठमन्त्रः। अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्य्यात्। अस्य मन्त्रस्य सोम ऋषिः वैकुण्ठो देवता कात्यायिनी छन्दः मम मिथ्यासपथदोषविमुक्तये प्रायश्चित्ते जपे विनियोगः। न्यासं पूर्ववत्। अथ ध्यानं—

वैकुण्ठमीश्वरं विष्णुं मिथ्यासपददोषहं। वन्दे कलिमलापघ्नं चतुर्भुजस्वरूपिणं॥ इति ध्यात्वा—
उत्तराभिमुखो भूत्वा जपेन्मन्त्रं सहस्रकं; नक्तव्रतविधानेन नक्तभोजनमाचरेत्॥
मिथ्यासपथदोषात्तु मुक्तो भवति पातकी। सपथस्य द्वयोर्दोषो जायते फलदायकः॥
सपथं सत्यं वा मिथ्यां छायादे परिवर्जयेत्। सपथोद्भवदोषस्तु षण्मासे फलदोऽभवत्॥
मिथ्यासपथभावेन परधर्मं विनाशयेत्। जलादिभोजने पाने छादने स्पर्शकारके॥
धर्महत्या महत्पापं कृतकस्यैव जायते। विनादृष्टिप्रयोगेन दोषो नैव प्रजायते॥
धर्मप्रपालको विष्णुः किंचिद्भ्रान्तिमुपार्जयेत्। समूलं नाशमायाति धर्महत्या कृते यदि॥

इति मिथ्यासपथप्रायश्चित्ते वैकुण्ठमन्त्रप्रयोगः। संकुष्टिक ऋषिशापान्वितोऽयं मन्त्रः। तस्य मोचनप्रयोगः कौंडिन्यसंहितायां—अस्य श्री संकुष्टिकर्षिशापप्रमोचनस्य बुध ऋषिः विश्वेश्वरी देवता अनुष्टुप् छन्दः मम संकुष्टिकर्षिशापप्रमोचने ज० इति संकुष्टिकर्षिशापमुक्ताभवः "नवाञ्जलीः जलं नीत्वा वायव्यं कोणमुत्क्षिपेत्। इति संकुष्टिकर्षिशापमोचनप्रयोगः।

इत्यष्टषट् समाख्यातास्तीर्था श्रीकुण्डमागताः। नरादिदेवपितृणां गोपश्वादिप्रभृतीनां॥
हत्यापराधसंभूते श्रीकुण्डस्नानमात्रतः। मुच्यते नात्र सन्देहो ह्यमस्तीर्थगमे यदि॥
इति गोमहतीकुण्डे दृष्टान्तं समुदाहृतं। ततो द्वारावतीकुंडमाहात्म्यं च निरूप्यते॥

ततो द्वारिकाकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः। ब्रह्माण्डे—

गोपिकानाथ देवाय द्वारिकेशाय विष्णवे। तीर्थराज नमस्तुभ्यं द्वारिकाकुण्डसंज्ञक!
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिर्मज्जनाचमैः। नमस्कुर्याद्विधानेन वैष्णवीं पदवीं लभेत्॥ २॥

ततो मानकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः। ब्राह्मे—

मानवत्यै च राधायै नमः कृष्णाय केलिने। दम्पती सौख्यदस्तीर्थ मानकुंड नमोस्तु ते॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य दशभिर्मज्जनाचमैः। नमस्कारं प्रकुर्वीत सर्वदा प्रीतिमाप्नुयात्॥३॥

अनन्तर द्वारावती कुंड का महिमा वर्णन करते हैं—द्वारकाकुंड स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा-ब्रह्माण्ड में—हे गोपिकानाथ! हे देव! हे द्वारकेश! हे द्वारिकाकुंड नामक तीर्थराज! आपको नमस्कार! इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार स्नान, आचमन, नमस्कार करने से वैष्णवीपद को लाभ करता है॥२॥

अनन्तर मानकुंड है। स्नानाचमन मन्त्र यथा—ब्राह्म में—हे मानवती राधिके! हे केलिपरायण कृष्ण! हे दम्पती के सुख को देने वाले मानकुंड तीर्थ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक

ततो ललिताकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । वाराहे –

सर्वदा प्रीतिदे देवि ललिते कृष्णवल्लभे ! तीर्थराज नमस्तुभ्यं ललिताकुंडसंज्ञक ! ।।

इति मन्त्रं समुच्चार्य द्वादशैर्मज्जनाचमैः । प्रणमेत्कृतकृत्यस्तु परमोक्षपदं लमेत् ॥ ४ ॥

ततो विशाखाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । भविष्योत्तरे—

विशाखारमणतीर्थं नमो वैमल्यरूपिणे । श्रीकृष्णाय नमस्तुभ्यं यशोदानन्दनाय च ॥

इति चतुर्दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । अखंडपदवीं लेभे धनधान्यमवाप्नुयात् ॥ ५ ॥

ततो दोहनीकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । आदिपुराणे—

नन्दादिनिर्म्मिते तीर्थे दोहनीतीर्थसंज्ञके । सर्वदा पयःपूर्णाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं षडावृत्या मज्जनाचमनैं नमन् । सदा दोहप्रपूर्णस्तु लक्ष्मीवानपि जायते ॥ ६ ॥

ततो मोहनीकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । संमोहनतन्त्रे—

जगन्मोहकृते तीर्थे यशोदामोहकारके । मोहनीकुंडसंज्ञाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । प्रणमन् लभते मोहं जगत्सु ह्यखिलं सुखं ॥ ७ ॥

ततो बलभद्रकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । पाद्मे—

बलभद्रकृते तीर्थे सर्वदा बलवर्द्धने । तीर्थराज नमस्तुभ्यं प्रसीद वरदो भव ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैं नमन् । सर्वदा बलसंयुक्तो त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥ ८ ॥

---

१० बार स्नान, आचमन, नमस्कार करने से सर्वदा प्रीति को प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

अनन्तर ललिताकुंड का स्नानाचमन मन्त्र यथा वाराह में—हे सर्वदा प्रीति देने वाली देवि ललिते ! हे कृष्णवल्लभा ! हे ललिताकुंड ! तीर्थराज आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक स्नानाचमन मज्जन कर प्रणाम करने से कृत्य-कृत्य होकर परम मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अनन्तर विशाखाकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा भविष्योत्तर में—हे विशाखारमण-तीर्थ ! विमल रूप आपको नमस्कार । हे यशोदानन्दन श्रीकृष्ण ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान, नमस्कार करने से धन, धान्य से युक्त होकर अखण्ड पदवी को लाभ करता है ॥ ५ ॥

अनन्तर दोहनीकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा आदिपुराण में—हे नन्दादि के द्वारा निर्म्मित दोहनी कुंड नामक तीर्थराज ! आपको नमस्कार । आप सर्वदा दुग्ध से परिपूर्ण हैं । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक स्नानाचमन नमस्कार करे तो समस्त कामना से परिपूर्ण होकर लक्ष्मीवान् होता है ॥६॥

अनन्तर मोहनीकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा सम्मोहन तन्त्र में- हे जगत् मोहनकारी तीर्थ ! हे यशोदाजी को मोह करने वाले मोहनीकुंड ! हे तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन, आचमन स्नान, नमस्कार करने से अखिल मोहनकारी सुख को लाभ करता है ॥७॥

अनन्तर बलभद्रकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा पाद्म में—हे बलभद्र के द्वारा निर्म्मित सर्वदा बल बढ़ाने वाले बलभद्र कुंड ! हे तीर्थराज ! आपको नमस्कार । प्रसन्न होकर वर दीजिये । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नानाचमन प्रणाम करे तो सर्वदा बलवान् होकर तीन लोक में विजयी होता है ॥ ८ ॥

ततश्चतुर्भुजकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । आदिवाराहे—

चतुर्भुजस्वरूपेण विष्णुना निर्म्मितस्थले । चतुर्युगसमुत्पन्न तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य चतुर्दिक्षु मुखो भवन् । मज्जनाचमनैः षड्भिः परिपूर्णसुखं लभेत् ॥६॥

ततो सुरभीकुंडस्नानाचमन प्रार्थनामन्त्रः । मात्स्ये—

सुरभीकृततीर्थाय विष्णुप्रीतिप्रदाय च । पापांकुश स्वरूपाय सदा वैमल्यहेतवे ॥

इति त्रयोदशावृत्या मज्जनाचमनै र्नमन् । चामरै र्वीज्यमानस्तु नराणामधिपो भवेत् ॥ १० ॥

ततो वत्सकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । ब्राह्मे—

गोवत्सकृततीर्थाय यशोदाप्रीतिदायके । तीर्थराज नमस्तुभ्यं पुत्रपौत्रसुखप्रद ॥

विंशावृत्या पठन्मन्त्रं मज्जनाचमनै र्नमन् । पुत्रवान् जायते वंध्यो जगद्धारसत्यतामियात् ॥११॥

ततो गोविन्दकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । विष्णुरहस्ये—

शक्रादिनिर्म्मिते तीर्थेऽभिषेकसमुद्भव ! । गोविन्दकुंडसंज्ञाय तीर्थराज नमोस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिर्मज्जनाचमैः । प्रणमन् विजयी भूयात् सर्व्वदा प्रियवल्लभः ॥

इति काम्यबने तीर्थाः कुंडसंज्ञाभिधायिनः । एषु स्नानकृताल्लोकाः जायन्ते मुक्तिभागिनः ॥१२॥

ततो ऽक्षमीलनादिस्थानप्रार्थनमन्त्रः । आदित्यपुराणे—

विष्णुरूपेक्षणार्थाय चक्षुः शैतल्यवर्द्धन ! । दिव्यदृष्टिप्रदायैव निरन्धे दृष्टिदायिने ! ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य पञ्चभिः प्रणतीन् चरेत् । दिव्यदृष्टिसमायुक्तो नित्यं विष्णुं विलोकयेत्॥१३

अनन्तर चतुर्भुज कुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा आदिवाराह में—हे चतुर्भुज स्वरूप से विष्णु कर्तृक निर्म्मित स्थल ! हे चार युग में समुत्पन्न तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक चार ओर को मुख करके ६ बार मज्जन,आचमन,प्रणाम करने से परिपूर्ण सुख को प्राप्त होता है ॥६॥

अनन्तर सुरभीकुंड है । स्नानाचमन मन्त्र यथा-मात्स्य में—सुरभी कर्तृक निर्म्मित और विष्णु में प्रीति देने वाले सुरभीकुंड ! आप पाप के अंकुश स्वरूप हैं और सर्व्वदा पवित्रता के लिये हैं । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक स्नानाचमन करे तो विविध छत्र चमर से युक्त होकर तीन लोक का अधिपति होता है ॥ १० ॥

अनन्तर वत्सकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा ब्राह्म में—गोवत्स द्वारा रचित यशोदा प्रीतिदायी तीर्थराज ! आपको नमस्कार । आप पुत्र, पौत्र, सुख को देने वाले हैं । इस मन्त्र के २० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करने से बांझ भी पुत्रवान् होता है ॥ ११ ॥

अनन्तर गोविन्दकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा विष्णुरहस्य में—शक्रादि कर्तृक निर्म्मित अभिषेक से उत्पन्न तीर्थराज गोविन्दकुंड ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार स्नान, आचमन, नमस्कार करे तो सर्व्वदा विजयी होकर प्रिय हो जाता है । इति यह सब काम्यबन के तीर्थ कुण्ड हैं । इसमें स्नान करने से मनुष्य मुक्ति भाग हो जाता है ॥ १२ ॥

अनन्तर आँखमींचनी स्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा-आदित्यपुराण में—हे विष्णु के रूप के दर्शन के लिये अक्षमीलन स्थल ! आप नेत्रों में शीतलता देने वाले हैं, निरन्तर दिव्य दृष्टि के भी दाता हैं । महान्

ततो खिसलिनीशिलाप्रार्थनमन्त्रः। पुराणसमुच्चये—

कृष्ण गोपालरूपाय ललितावल्लभाय च। नमो गोपीभिरम्याय शिलातीर्थ स्थलाय च ॥

इति मन्त्रं दशावृत्त्या नमस्कारं समाचरेत्। सदा क्रीडासमायुक्तो कौटुम्बकुलनायकः ॥ १४ ॥

ततो गोमासुरगुफाप्रार्थनमन्त्रः। महाभारते—

कृष्णकृतार्थरूपाय सखिरूपाय ते नमः। मुक्ति गोमासुरस्थान घोरकल्मशनाशन ! ॥

इत्येकादशभिर्मन्त्रमुच्चरन् प्रणतीश्चरेत्। कृतकृत्यो भवेल्लोको वैष्णवं पदमाप्नुयात् ॥ १५ ॥

ततो भोजनस्थलप्रार्थनमन्त्रः। विष्णुधर्म्मोत्तरे—

अष्टवर्षस्वरूपाढ्य कृष्णपाणितलाङ्कित !। नमोऽस्तु भोजनस्थल सर्वदा भोगवर्द्धन !

इति षोडशभिर्मन्त्रमुदाहृत्य नमश्चरेत्। सदा सौभाग्यसंपन्नो नानाभोगसुखं लभेत् ॥

अत्रैव कुलदेवांश्च ब्राह्मणांश्चैव भोजयेत्। ईप्सिताः सकलाः कामाः जायन्ते परिपूर्णताम् ॥

सुभोजनस्थलं विष्णोः पूजाभिर्विमुखं चरेत्। क्षुधार्त्तो भवते नित्यमृणदारिद्रपीडितः ॥

वनप्रदक्षिणा जाता निष्फला दुःखभागिनी। दत्तं परात्मकं द्रव्यं मध्ये गोप्त्वा न दीयते ॥

चतुर्गुणं भवेद्धानिस्तत्समूलं विनश्यति ॥ १६ ॥

ततो ललितास्थलप्रार्थनमन्त्रः। नारदीय-पञ्चरात्रे—

भोजनस्य शिलायां तु भागपश्चिमभूषिते। ललितानिर्म्मिते स्थाने नमस्ते प्रियवल्लभे ! ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य नवधा प्रणतिश्चरेत्। सदा लालित्यसंयुक्तो धनधान्यसुखं लभेत् ॥ १७ ॥

अन्ध को भी नेत्र देने वाले हैं। इस मन्त्र के पाँच बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो दिव्यदृष्टि पाकर विष्णु-लोक को जाता है ॥ १३ ॥

अनन्तर खिसिलिनी शिला है। प्रार्थनामन्त्र यथा-पुराण समुच्चय में—हे श्री कृष्ण गोपालरूप हे खिसलिनीशिलास्थल ! हे ललिताजी के प्रिय ! हे गोपियों के मनोहरस्थल आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो सर्वदा कुटुम्बीगणों के साथ क्रीड़ा करता है ॥ १४ ॥

अनन्तर गोमासुर की गुफा है। प्रार्थनामन्त्र यथा-महाभारत में—हे श्री कृष्ण कर्तृक कृतार्थ रूप गोमासुर की गुफा आपको नमस्कार। आप श्रीकृष्ण के सखा रूप हैं और भयानक कल्मष के नाशक हैं। इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो मनुष्य कृतकृत्य होकर वैकुण्ठ पद को प्राप्त होता है ॥१५॥

अनन्तर भोजनस्थल है। प्रार्थनामन्त्र यथा-विष्णु धर्म्मोत्तर में—हे आठ वर्ष स्वरूप श्रीकृष्ण के हस्ततल से अंकित ! हे सर्वदा भोग को बढ़ाने वाले भोजनस्थल ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो सर्वदा नाना भोगों को प्राप्त होकर सौभाग्यवान होता है। यहाँ कुल के देवताओं को तथा ब्राह्मणों को भोजन देने से समस्त कामना परिपूर्ण हो जाती हैं। यह भोजन स्थल की पूजा न कर विमुख होकर चले जाने से नित्य क्षुधार्त्त होकर ऋणी व दरिद्र हो जाता है। वनप्रदक्षिणा निष्फल होकर दुःखदायी हो जाती है। यहाँ दानादि न करने से और स्थल में दिया हुआ दानादिक चतु-र्गुण हानि को पहुँचाते हैं और समस्त पुण्य विफल हो जाता है ॥ १६ ॥

अनन्तर ललितास्थल है। प्रार्थनामन्त्र यथा नारदीय और पञ्चरात्र में—भोजनशीला के पश्चिम भाग में भूषित ललिता कर्तृक निर्म्मित स्थल ! हे प्रिय ! हे वल्लभ ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र

ततो सुमनासखीविवाहस्थलप्रार्थनमन्त्रः । बृहद्गौतमीये—

रहस्यसंयुता देवी ललिता प्रियग्रन्थिदा । सुमनासखिमुद्राहरमणीकस्थले नमः ।

इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारान्समाचरेत् । सदा वैवाहिकोत्साहैश्चिरायुः सुखमाप्नुयात् ॥१८॥

ततो गरुडस्थलप्रार्थनमन्त्रः । गारुडे—

गरुडाधिष्ठिते स्थाने सर्वापद्विनिवारणे । नारायणकृतोत्साह तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या प्रणमेद्गरुडस्थलं । कदाचित् परेभ्यस्तु भयं नैव विलोकयेत् ॥ १६ ॥

ततः कपिलतीर्थस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । भविष्ये-

गुप्तयोगसमायुक्त कपिलाधिष्ठितस्थले । नमो ब्रह्मण्यरूपाय देवहूतीसुताय ते ॥

इति मन्त्रमुदाहृत्य द्विपंचाशनतींश्चरेत् । सर्वदा ज्ञानसंपन्नो लोकानां वश्यकारकः ॥ २० ॥

ततो लोहजंघर्षिस्थानप्रार्थनमन्त्रः । स्कान्दे—

लोहजंघर्षये तुभ्यं देव वज्रांगदायिने । आयुरारोग्यसौख्याय नैरुजं मां सदा कुरु ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तभिः प्रणतींश्चरेत् । सदा नैरोग्यमालभ्य त्रैलोक्ये रमते सुखं ॥२१॥

अथेन्दुलेखास्थानप्रार्थनमन्त्रः । वाराहे—

नानाचित्रांगरूपाय देवानां सुखहेतवे । इन्दुलेखामनोरम्य सुस्थलाय नमो नमः ॥

इति मन्त्रं पडावृत्या प्रणतीन् विधिवच्चरेत् । चित्रवैचित्र्यरूपाढ्यं हर्म्यसौख्यमवाप्नुयात् ॥२२॥

के पाठ पूर्वक ६ बार प्रणाम करने से सर्वदा धन, धान्य से सुखी होता है ॥ १७ ॥

अनन्तर सुमनासखी का विवाहस्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा-बृहद्गौतमीय में—हे रहस्यस्थल ! हे ललिता द्वारा रचित मनोहर गाँठ बन्धन ! हे सुमनासखी के विवाहस्थल ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से सर्वदा चिरायु सुखी होकर विवाह उत्सव सुख को प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

अनन्तर गरुडस्थल है । प्रार्थनामन्त्र गारुड में—हे गरुड कर्तृक अधिष्ठित स्थल ! हे समस्त विपत्ति नाश करने वाले ! हे नारायण कर्तृक उत्साहित स्थान ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र का १० बार पाठ करके स्थल को प्रणाम करने से कभी औरों से भय प्राप्त नहीं होता है ॥ १६ ॥

अनन्तर कपिलतीर्थ है । स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्र यथा-भविष्य में—हे गुप्तयोग से युक्त कपिल कर्तृक अधिष्ठित स्थल ! आपको नमस्कार । हे ब्रह्मण्यदेव ! हे देवहूतीपुत्र ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५२ बार नमस्कार करें । सर्वदा ज्ञान सम्पन्न होकर लोकों को वश में रखता है ॥२०॥

अनन्तर लोहजंघ ऋषि का स्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा स्कन्दपुराण में—हे लोहजंघऋषि ! हे देव ! हे वज्र अङ्ग को देने वाले ! आपको नमस्कार । आप आयु आरोग्य के लिये हैं मुझको सर्वदा निरोगी कीजिए । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार प्रणाम करें तो सर्वदा निरोगी होकर तीन लोक में विचरता है॥२१

अनन्तर इन्दुलेखा स्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा—वाराह में—हे नाना चित्र विचित्र अङ्ग वाले ! हे देवताओं के सुखरूप ! हे इन्दुलेखा सखी के मनोहर सुस्थल ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक यथा विधि से प्रणाम करें । चित्र विचित्र विविध गृह को प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

ततश्चन्द्रावलिस्थानप्रार्थनमन्त्रः । विष्णुयामले—

चन्द्रावलिकृतोत्साह कृष्णक्रीडामनोहरे । गन्धर्वकिन्नराकीर्णे रम्यभूमे नमोऽस्तु ते ॥

इति पञ्चदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । अखण्डपदवीं लब्ध्वा विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥२३॥

ततो ऽलक्ष्यस्थानप्रार्थनमन्त्रः । बृहत्पाराशरे—

गुप्तायेक्षणगोप्याय गुप्तधर्मार्थदायिने । नमः सौख्यकलाप्ताय ऽलक्ष्यवेश्म नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रमुदाहृत्य शतधा प्रणतींश्चरेत् । गुप्तधर्मार्थकामांश्च लभते नात्र संशयः ॥ २४ ॥

ततो विष्णुपादचिन्हस्थलप्रार्थनमन्त्रः । विष्णुपुराणे—

विष्णुपादतलोत्कीर्णचिन्हरम्यांगभूमये । नमस्ते विश्वरूपाय कलाकांत नमोस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य दशधा प्रणतींश्चरेत् । विष्णुलोकमवाप्नोति पुनर्जन्म न विद्यते ॥२५॥

ततो रासस्थलप्रार्थनमन्त्रः । कौर्म्ये—

नानाविमलरूपाय रासमण्डलनिर्मले । गोपिकाक्रीडकृष्णाय नमस्ते देवदुर्लभे ॥

चतुःषष्ठिभिराहृत्य मन्त्रं प्रणतिमाचरेत् । विमलांगसुखाविष्टो वैष्णवं पदमाप्नुयात् ॥ २६ ॥

ततो बलदेवस्थलप्रार्थनमन्त्रः । पाद्मे—

हलरेखाकृतार्थाय मध्यदीर्घप्रवर्त्तिते । बलदेवस्थलायैव नमस्ते धान्यवर्द्धन ! ॥

इति सप्तदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सर्वदा कृषधान्यानां समृद्धि र्बहुधा भवेत् ॥ २७ ॥

ततो कृष्णकूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । आदिपुराणे—

कृष्णस्नपनतीर्थाय कृष्णकूपाभिधायिने । यादवानां विमोक्षाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

अनन्तर चन्द्रावलीस्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा-विष्णुयामल में —हे चन्द्रावलि कर्तृक उत्साहित चन्द्रावलीस्थल ! आपको नमस्कार है । आप श्रीकृष्ण की क्रीडा से मनोहर हैं । गन्धर्व किन्नरगणों से युक्त मनोहर भूमि आपकी है । इस मन्त्र के १५ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे । अखण्ड पदवी लाभ पूर्वक विष्णु सायुज्य को प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

अनन्तर लक्ष्मस्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा बृहत्पाराशर में—हे गुप्तस्थल ! हे गुप्त धर्म्म अर्थ का देने वाले लक्ष्मगृह ! आपको नमस्कार । आप सुख कला को देने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १०० बार प्रणाम करे तो गुप्त धर्म्म, अर्थ, काम को लाभ करता है ॥ २४ ॥

अनन्तर विष्णुपादचिन्हस्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा-विष्णुपुराण में—हे विष्णुपाद तल से उठे हुए चिन्ह ! हे रम्यांगभूमिवाले ! आपको नमस्कार । आप विश्वरूप हैं और कलाओं में मनोहर हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार प्रणाम करने से विष्णु लोक को जाता है, उसका फिर जन्म नहीं है ॥२५॥

अनन्तर रासस्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा-कौर्म्य में—हे रासमण्डल ! आप निर्म्मल और विशुद्ध स्वरूप हैं । हे गोपियों का क्रीडनस्थल ! हे देवताओं को दुर्लभ ! हे श्रीकृष्ण ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६४ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो विमल अङ्ग तथा सुखी होकर वैष्णव पद को प्राप्त होता है ॥२६॥

अनन्तर बलदेवस्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा-पाद्म में—हे हलरेखा से निर्म्मित ! हे बलदेवस्थल ! आपको नमस्कार । आपका मध्यस्थल दीर्घ है । आप धन, धान्य को बढ़ाने वाले हैं । इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो सर्वदा खेती में वृद्धि होती है ॥ २७ ॥

पंचावृत्योच्चरन्मन्त्रं मज्जनाचमनैर्नमन् । सर्वपापविनिर्मुक्तो वैष्णवं पदमाप्नुयात् ॥२८॥
ततो संकर्षणकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । वायुपुराणे—
निर्झरोद्गारतीर्थाय कूरसंकर्षणाभिध ! । यादवानां कृतार्थाय धनधान्यप्रदायिने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । धनधान्यसुखादीनां समृद्धिस्तु प्रजायते ॥ २६ ॥
ततो गुह्यतीर्थस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । लैंगे—
लोकेश्वरसुखाप्ताय स्नानमुक्तिप्रदायिने । गुह्यतीर्थ नमस्तुभ्यं त्रैलोक्यसुखवर्द्धन ! ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य दशधा मज्जनाचमैः । प्रणमन् गुह्यविद्याभिः संपन्नो विजयी भवेत् ॥३०॥
ततो वाराहकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । वाराहे—
सर्वकल्मषनाशाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते । वाराहकृतरम्याय भूमेरुद्धरणाय च ॥
इति द्वादशभिर्मन्त्रामज्जनाचमनैर्नमन् । कृतार्थो जायते लोको राजविख्यातकीर्त्तिमान् ॥३१॥
ततो सीताकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । वायुपुराणे—
सीतास्नपनरम्याय विश्वकर्म्मविधायिने । तीर्थराज नमस्तुभ्यं सर्वदा पुण्यवर्द्धन ! ॥
इति मन्त्रं शतावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । कृतकृत्यो भवेल्लोको परमायुः स जीवति ॥३२॥
ततश्चन्द्रसिखिरिनीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । देवीपुराणे—
तापार्त्तिहरणे तीर्थे चक्षुशीतलदायिने । चन्द्रसिखिरिणि तुभ्यं तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

अनन्तर कृष्णकूप है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा-आदिपुराण में—हे कृष्णकूप नामक कृष्ण स्नपन से उत्पन्न तीर्थ ! हे यादवों की मोक्ष के लिये तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ५ बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन करे तो समस्त पापों से मुक्त होकर वैष्णव पद को प्राप्त होता है ॥ २८ ॥

अनन्तर संकर्षणकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा-वायुपुराण में-हे संकर्षण नामक तीर्थराज ! हे मनोहर झरणा उद्गार करने वाले ! आपको नमस्कार । आप यादवों के लिये हैं और धन, धान्य को देने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो धन, धान्य, समृद्धि के लाभ पूर्वक सुखी होना है ॥ २६ ॥

अनन्तर गुह्यतीर्थ है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा-लैंग में—हे तीन लोक का सुख देने वाले गुप्ततीर्थ ! आपको नमस्कार । आप देवताओं के सुख के लिये हैं और मुक्ति को देने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार मज्जन, आचमन, प्रणाम करें तो गुप्त विद्या को प्राप्त होता है ॥ ३० ॥

अनन्तर वाराहकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा-वाराह में—हे तीर्थराज ! समस्त कल्मष नाशकारी आपको नमस्कार है । आप पृथ्वी के उद्धार के लिये वराह भगवान् कर्तृक निर्म्मित है । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १२ बार मज्जन, आचमन, प्रणाम करने से कृतार्थ हो जाता है और राजख्याति का लाभ करता है ॥ ३१ ॥

अनन्तर सीताकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र वायुपुराण में—हे सीतादेवी के स्नान से रम्य ! हे विश्वकर्मा रचित तीर्थराज तुमको नमस्कार । तुम सर्वदा पुण्य को बढ़ाने वाले हो । इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो कृत्य-कृत्य होकर यावत् आयु जीता है ॥३२॥

अनन्तर चन्द्रसिखिरिनि है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा-देवीपुराण में—हे ताप, आर्त्ति को

इति मन्त्रं समुच्चार्य्यैकादशै र्मज्जनाचमैः । निष्पापो जायते स्नानात् सफला कामनाऽभवत् ॥३३॥
ततश्चन्द्रशेखराख्यरुद्रप्रार्थनमन्त्रः । स्कान्दे—

चन्द्रशेखरदेवाय सर्वदा प्रीतिदायिने । नमस्तुभ्यं महादेव प्रसीद वरदो भव ॥

इति षोडशभिर्मन्त्रमुच्चरन्प्रणतीश्चरेत् । शिवलोकमवाप्नोति शापानुग्रहणे क्षमः ॥ ३४ ॥
ततो शृंगारतीर्थप्रार्थनमन्त्रः । गौतमीये—

शृंगारेंगितभूषाय कृष्णाय परमात्मने । शृंगाररूपिणीभ्यस्तु गोपिकाभ्यो नमो नमः ।

इति मन्त्रमुदाहृत्य सप्तभिः प्रणतीश्चरेत् । सदा स्वर्णादिभूपाभिर्भूषितो वसनैः शुभैः ॥३५॥
ततो प्रभावल्लीवापीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । शौनकीये—

देवगन्धर्वरम्यायै प्रभावल्ल्यै नमो नमः । पुण्यसौख्यप्रदानायै तीर्थराज्ञ्यै नमो नमः ॥

इति मन्त्रं षडावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् : सर्वदा कांचनी कान्त्या भूषितो पृथिवीतले ॥३६॥
ततो भारद्वाजकूपस्नानाचमनप्रार्थनामन्त्रः । भारद्वाजसंहितायां—

तपसां सिद्धिरूपाय सदा दुग्धमयाय च । भारद्वाजकृतस्नानकूपतीर्थं नमोस्तु ते ॥

इत्यष्टादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनैर्नमन् । मन्त्रसिद्धिसमायुक्तो लोकपूज्योऽभिजायते ॥
एतयोः रामकृष्णयोरूभयोः कूपयोः पर्वतनिकटस्थयोः स्नानाचमनप्रार्थनं पूर्वमन्त्रेण कुर्यात् ॥३७॥
ततो भद्रेश्वरमहादेवप्रार्थनमन्त्रः । आग्नेये—

कल्याणरूपिणे तुभ्यं नमो भद्रेश्वराय ते । अभद्रं नाशये देव शिवं मे सर्व्वदा कुरु ॥

दूर करने वाले ! हे चक्षुः को शीतलता देने वाले चन्द्रसिखिरिनि नामक तीर्थराज ! तुमको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ११ बार नमस्कार मज्जन, स्नान करने से निष्पाप हो जाता है व फल कामना को प्राप्त होता है ॥ ३३ ॥

अनन्तर चन्द्रशेखर नामक रुद्र है । प्रार्थनामन्त्र यथा-स्कान्द में—हे चन्द्रशेखर देव ! हे निरन्तर प्रेम को देने वाले ! हे महादेव ! तुमको नमस्कार । आप प्रसन्न होकर और वर को दीजिये । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो शिवलोक की प्राप्ति और शाप देने में तथा अनुग्रह करने में समर्थ होता है ॥ ३४ ॥

अनन्तर शृंगारतीर्थ है । प्रार्थनामन्त्र यथा गौतमीय में—हे शृंगार की इंगित से भूषित ! हे परमात्मा श्रीकृष्ण ! हे शृंगार रूपिणी व्रजसुन्दरीयाँ आप सबको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार प्रणाम करें । सर्वदा स्वर्णादिक अलंकार तथा विविध वस्त्रों से भूषित होकर सुखी होत है ॥३५॥

अनन्तर प्रभावल्लीवापी स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा शौनकीय में—हे देवता गन्धर्वों के मनोहर प्रभावल्ली नामक तीर्थराज ! पुण्य, सुख देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करने से सुवर्ण सदृश कान्तिमान होता है ॥ ३६ ॥

अनन्तर भारद्वाज कूप है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा भारद्वाजसंहिता में—हे तपस्या के सिद्धि रूप ! हे सर्वदा दुग्धमय भारद्वाज कूप तीर्थ ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १८ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो मन्त्र साधना में सिद्धि प्राप्त होकर लोकपूज्य होता है । यह दोनों रामकृष्ण के कूप और पर्वत निकट में स्थित हैं । इनकी पूजा करें ॥ ३७ ॥

इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सदा कल्याणमाङ्गल्यैः सुखं भुंक्ते भुवस्तले ॥३८॥
ततो ऽलक्ष्यगरुडमूर्त्तिप्रार्थनमन्त्रः—

अलक्ष्यमूर्त्तये तुभ्यं गरुडाय नमोऽस्तु ते । पन्नगान्तक सौवर्णनगराहर्म्यरूपिणे ॥

इति मन्त्रं शतावृत्या साष्टांगप्रणतींश्चरेत् । सर्वबाधाविनिर्मुक्तो रमते पृथिवीतले ॥ ३६ ॥
ततो पिप्पलादाश्रमप्रार्थनमन्त्रः। नृसिंहपुराणे—

सर्वदा मुक्तिरूपाय सर्वक्लेशापहारिणे । संकटमोचनार्थाय पिप्पलादपदे नमः ॥

इति चतुर्दशावृत्या मन्त्रं त्वा नमश्चरेत् । सदा राजादिसंकष्टान्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४० ॥
ततो बुद्धस्थानप्रार्थनमन्त्रः । बौद्धायने—

बुद्धाय बुद्धरूपाय जगदानन्दहेतवे । तत्वज्ञानप्रदेशाय नमस्ते पापनाशन ! ॥

इति सप्तदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । धनधान्यादिसंपत्तिं भुंक्ते मोक्षपदं लभेत् ॥४१॥
ततो राधापुष्करिणीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः। ब्रह्मवैवर्त्ते राधाजन्मखण्डे—

वैमल्यरूपिणे तुभ्यं राधाकृष्णमनोहरे । तीर्थराज्यै कलाकान्त्यै पुष्करिण्यै नमो नमः ॥

इति चतुर्थषड्भिस्तु मज्जनाचमनं नमन् । कृष्णतुल्यसुखं लब्ध्वा शतनारीभिर्वेष्टितः ॥४२॥
ततो ललितापुष्करिणीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । बृहन्नारदीये—

ललितानिर्म्मिते तीर्थं सदा दुर्लभमनोऽर्थदे ! । पुष्करिण्यै नमस्तुभ्यं गोपीरमणसंभवे ॥

इति त्रिभिः पठन्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । कृतकृत्यो भवेल्लोको भ्रूणहत्याद्विमुच्यति ॥४३॥

अनन्तर भद्रेश्वर महादेव हैं । प्रार्थनामन्त्र आग्नेय में—हे कल्याणरूप भद्रेश्वर शिव ! आप अभद्र नाश करने वाले हैं आपको नमस्कार । मुझे सर्वदा कल्याण दीजिये । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो सर्वदा कल्याण प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥

अनन्तर अलक्ष्य गरुड़ मूर्त्ति है । प्रार्थनामन्त्र यथा-हे अलक्ष्य मूर्त्ति स्वरूप ! हे गरुड ! आप पन्नगों के अन्तक हैं व सुवर्ण नगर रूप हैं । इस मन्त्र के १०० बार पाठ कर साष्टांग प्रणाम करें तो सर्वदा निर्मुक्त होकर पृथ्वी में रमण करता है ॥ ३६ ॥

अनन्तर पिप्पलाद आश्रम है । प्रार्थनामन्त्र यथा-नृसिंहपुराण में—हे सर्वदा मुक्ति रूप ! हे सर्वदा समस्त क्लेश का नाश करने वाले ! कष्ट से मुक्त होने के लिये आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें । अराजकता दुःख से मुक्त हो जाता है ॥ ४० ॥

अनन्तर बुद्धस्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा-बौद्धायन में —हे बुद्धरूप ! हे बुद्ध ! हे जगत् में आनन्द देने के लिये तत्त्व ज्ञान प्रदर्शक ! पाप नाशक आपको नमस्कार है । इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो धन. धान्य से युक्त होकर मोक्ष पद का लाभ करता है ॥ ४१ ॥

अनन्तर राधापुष्करिणी है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा-ब्रह्मवैवर्त्त के राधाजन्मखण्ड में—हे विमलरूपिणी तीर्थराज्ञि ! हे कला कान्ति से परिपूर्ण पुष्करिणी ! हे राधाकृष्ण से मनोहरा ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६४ बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन, प्रणाम करे तो श्रीकृष्ण के तुल्य सुख को प्राप्त होता है । शत नारी उसकी होती हैं ॥ ४२ ॥

अनन्तर ललिता पुष्करिणी है । स्नानाचमन—प्रार्थनामन्त्र यथा-बृहन्नारदीय में—हे ललिता

ततो विशाखापुष्करिणीस्नानाचमनप्रार्थनामन्त्रः । विष्णुयामले—

रक्तपीतसिताभासे निर्म्मलपयःरूपिणि । पुष्करिण्यै नमस्तुभ्यं विशाखारचिते शुभे ॥

इत्येकादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । सदा नानाविधाद्रोगान्मुच्यते सौख्यमन्वभूत् ॥४४॥

ततश्चन्द्रावली पुष्करिणीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्माण्डे—

पीततोय समाकीर्णे शुभांगावयवप्रदे । पट्टराज्यै नमस्तुभ्यं कलातीर्थस्वरूपिणे ॥

इति द्वादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । गवादिसुखसंपत्ति मुक्तो भोगसमन्वितः ॥४५॥

ततश्चन्द्रभागापुष्करिणीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । मात्स्ये—

सदा चन्द्रकले तीर्थे नमस्ते घोरनाशने । पुण्यदे पुण्यरूपस्थे चन्द्रभागे नमोऽस्तु ते ॥

इत्यष्टभिः पठन्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । सर्वदा सुखसंपद्भिर्जायते विमलो नरः ॥ ४६ ॥

ततो लीलावती पुष्करिणी स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । पाद्मे—

नानालीलासमाकीर्णे लीलावत्यै नमो नमः । सर्वरी विमले तोये देवगन्धर्वशोभिने ॥

इत्येकोनदशावृत्या मज्जनाचमन नमन् । सदा लीलान्वितो लोको धनधान्यसुख लभेत् ॥४७॥

ततो प्रभावतीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । वायुपुराणे—

प्रभावति नमस्तुभ्यं तीर्थराज महाफले । प्रभावं वर्द्धये देवि ! प्रभावरदायिनि ! ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । राजा प्रतापसंयुक्तो लक्ष्मीवान जायते नरः ॥४८॥

निर्म्मित तीर्थ ! हे सर्वदा दुग्धरूपा ! हे अर्थ को देने वाली ! हे पुष्करिणी आपको नमस्कार । आप गोपियों के रमण के लिये हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नान, आचमन, प्रणाम करें तो मनुष्य भ्रूणहत्या से मुक्त होकर कृतकृत्य हो जाता है ॥ ४३ ॥

अनन्तर विशाखापुष्करिणी है । स्नानाचमनमन्त्र विष्णुयामल में—हे विशाखा रचित निर्म्मल पुष्करिणी ! आपको नमस्कार । आप रक्त, पीत, शुभ्र जल से कान्तिमयी हैं । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करे तो सर्वदा नाना प्रकार रोगों से मुक्त होकर सुखी होता है ॥ ४४ ॥

अनन्तर चन्द्रावली पुष्करिणी है । स्नानादि मन्त्र यथा-ब्रह्माण्ड में—हे पीले जल से व्याप्त ! हे शुभ अङ्ग को देने वाली ! हे पट्टराणि ! हे कलातीर्थ रूपिणि ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो गवादि सुख सम्पत्ति लाभ करता है ॥ ४५ ॥

अनन्तर चन्द्रभागा पुष्करिणी है । स्नानादि मन्त्र यथा-मात्स्य में—हे चन्द्रकला तीर्थे ! हे समस्त भयानक नाश करने वाली ! हे पुण्य को देने वाली ! हे पुण्य रूप में विराजित चन्द्रभागा तीर्थे ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करे तो सर्वदा विशुद्ध होकर सुख, सम्पत्ति का लाभ करता है ॥ ४६ ॥

अनन्तर लीलावती पुष्करिणी है । स्नानादि मन्त्र पाद्म में—हे नाना प्रकार की लीलाओं से व्याप्त लीलावती कुण्ड ! आपको नमस्कार । आप देव गन्धर्वों से शोभित हैं । आपका जल विशुद्ध है । इस मन्त्र के ९ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो सर्वदा लीला खेल में रत होकर धन, धान्य लाभ करता है ॥ ४७ ॥

अनन्तर प्रभावती कुण्ड स्नानाचमनमन्त्र यथा-वायुपुराण में—हे प्रभावति ! हे तीर्थराज ! आपको

ततश्चतुःषष्ठिपुष्करिणीध्यानपूर्वस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । शक्रयामले—

गोपिकाभ्यो नमस्तुभ्यं पुष्करिण्यै शुभप्रदे ! । तीर्थरूपे नमस्तुभ्यं कृष्णस्यात्यन्तवल्लभे ! ॥

इति मन्त्रं चतुःषष्ठिभिर्ध्यानपूर्वनमश्चरेत् । धनधान्यसमायुक्तो लक्ष्मीवान् जायते नरः ॥ ४६॥

ततो कुशस्थलीस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । कौर्म्ये—

ऋषिगन्धर्वदेवानां पुण्यतीर्थं नमोऽस्तु ते । कुशस्थली पयोरम्य वाञ्छितार्थप्रदायिने ॥

इति षोडशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । सदा मन्त्रतपोविद्याशापानुग्रहणे क्षमः ॥ ५० ॥

ततो शंखचूडवधस्थलप्रार्थनमन्त्रः । महाभारते—

कृष्णमुक्तिकृतस्तीर्थं शंखचूडवधस्थल ! नमो लक्ष्मीप्रदानाय धनधान्यप्रदाय च ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य सप्तत्रिंशावृतेन च । नमस्कृत्यास्य गेहे तु सुखं पद्मा वसेत्सदा ॥

यत्रैव लभ्यते शंखं विधिना तं गृहे न्यसेत् । तस्य गेहात् कदा लक्ष्मी नैव गन्तुं समीहयेत् ॥

सदा पुत्रकलत्रादियुक्ता लक्ष्मी स्थिरा भवेत् ॥ ५१ ॥

ततो कामेश्वरमहादेवप्रार्थनमन्त्रः । लैंगे—

कामेश्वराय देवाय कामनार्थप्रदायिने । महादेवाय ते तुभ्यं नमस्ते मुक्तिदो भव ॥

इत्येकादशभिर्मन्त्रं नत्वा प्रणतिमाचरेत् । सर्वार्थकामनाभिस्तु परिपूर्णोऽभिजायते ॥

कामेश्वरं विना लोके नैव सांगा प्रदक्षिणा ॥ ५२ ॥

नमस्कार । आप महाफल रूपा हैं व प्रभाव को बढ़ाने वाले हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नाना-चमन करें तो राजा प्रतापी होता है मनुष्य धनी हो जाता है ॥ ४८ ॥

अनन्तर ६४ पुष्करिणी के ध्यान पूर्वक स्नानाचमन करें मन्त्र यथा-शक्रयामल में—हे पुष्करिणी ! हे शुभ को देने वाली ! हे गोपिकाओं ! आप सब को नमस्कार । आप सब कृष्ण की अत्यन्त वल्लभा हैं। इस मन्त्रका ६४ बार पाठ कर ध्यान पूर्वक नमस्कार करे तो धन,धान्य से युक्त होकर लक्ष्मीवान् होताहै॥४६॥

अनन्तर कुशस्थली है । स्नानादि मन्त्र यथा-कौर्म्य में—हे ऋषि, गन्धर्व, देवताओं के पुण्यतीर्थ ! हे कुशस्थली ! आपको नमस्कार । आप वाञ्छित फल को देने वाली हैं और सुन्दर जल से पूर्ण हैं। इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो सर्वदा मन्त्र, तपस्या, विद्या, शाप, अनुग्रह में समर्थ होता है ॥ ५० ॥

अनन्तर शंखचूडवधस्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा-महाभारत में—हे कृष्ण कर्तृक किये गये शंखचूड वध स्थल ! लक्ष्मीप्रद आपको नमस्कार । आप धन, धान्य के दाता हैं । इस मन्त्र के ३७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से लक्ष्मी सर्वदा घर में रहती है । यहाँ से प्राप्त शंख को लेकर जो घर में स्थापना करे उसके गृह से कभी लक्ष्मी नहीं जाती हैं ॥ ५१ ॥

अनन्तर कामेश्वर महादेव है । प्रार्थनामन्त्र यथा-लैंग में—हे कामेश्वरदेव ! हे कामना देने वाले ! हे महादेव ! आपको नमस्कार । आप मुक्ति दीजिये । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करने से समस्त कामनाओं से परिपूर्ण होता है । बिना कामेश्वर महादेवजी के दर्शन से यात्रा, सांग प्रदक्षिणा सम्पूर्ण नहीं होती है ॥ ५२ ॥

ततो विमलेश्वरालोकप्रार्थनमन्त्रः । आग्नेये—

सदा वैमल्यरूपाय नमस्ते विमलेश्वर ! घोरकल्मषपापघ्ने सदैश्वर्य्यप्रदायिने ॥

इति त्रयोदशावृत्त्या साष्टांगप्रणतींश्चरेत् । सदा सौभाग्यसंयुक्तो परमायुः सजीवति ॥५३॥

ततो वाराहदर्शनप्रार्थनमन्त्रः । वाराहे—

पद्ममुद्राङ्कितोरस्थ वराहाकृतये नमः । क्रीडाकृतस्वरूपाय देवदेवाय ते नमः ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या साष्टांगप्रणतींश्चरेत् । कृतकृत्यो भवेल्लोके लक्ष्मीवान् जायते नरः ॥५४॥

ततो द्रौपदीसहितानां पंचपाण्डवानामालोकप्रार्थनमन्त्रः । वायुपुराणे—

धर्मपुत्रादिरूपेभ्यो पाण्डवेभ्यो नमोऽस्तु ते । द्रौपदीसहितेभ्यस्तु तपः सिद्धिस्वरूपिणः ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य षड्भिः प्रणतिमाचरेत् । धर्मवायु सुरादीनां सदा सन्तुष्टकारकः ॥

त्रैलोक्यविजयी भूयात्सदा धर्मपरायणः ॥ ५५ ॥

ततोऽष्टसिद्धिगणेशालोकनप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्मवैवर्त्ते—

अष्टसिद्धिप्रदायैव गणेशाय नमो नमः । सर्वार्थदाय देवाय संकटमुक्तये नमः ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य द्वादशावृत्तिभिर्नमन् । सदा संकष्टनिर्मुक्तो वैमल्यसुखमाप्नुयात् ॥५६॥

ततो वज्रपञ्जरहनुमद्दर्शनप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्माण्डे—

वज्रांगमूर्त्तये तुभ्यं वज्रपञ्जरसंभव ! । सर्वान्तकविनाशाय हनुमन्मूर्त्तये नमः ॥

इत्यष्टादशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । सर्वकामानवाप्नोति सर्वबाधाविवर्जितः ॥ ५७ ॥

अनन्तर विमलेश्वर दर्शन हैं । प्रार्थनामन्त्र यथा-आग्नेय में—हे सर्वदा विमल स्वरूप विमलेश्वर ! आपको नमस्कार । आप अघोर हैं, कल्मष नाशक हैं और ऐश्वर्य्य देने वाले हैं । इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक साष्टांग प्रणाम करें तो सर्वदा सौभाग्य को प्राप्त होकर यावत् आयु जीता हैं ॥ ५३ ॥

अनन्तर वाराह दर्शन हैं । प्रार्थना मन्त्र यथा-वाराह में—हे वराह आकार ! आपको नमस्कार ! आपके वक्षःस्थल में पद्मचिन्ह अंकित है । आपका क्रीडामय स्वरूप है । आप देवों के देव हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक साष्टांग प्रणाम करें तो मनुष्य कृत्य कृत्य होकर लक्ष्मीवान् होता है ॥५४॥

अनन्तर द्रौपदी जी के साथ पाँच पाण्डवों का दर्शन मन्त्र यथा-वायुपुराण में—हे धर्म्म पुत्रादि स्वरूप पाण्डवों आप सबको नमस्कार हैं । आप तपस्यासिद्धस्वरूप वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार प्रणाम करें तो धर्म, वायु व देवताओं का प्रसन्नकारक होता है व तीन लोक में विजयी होकर धर्म्म परायण रहता है ॥ ५५ ॥

अनन्तर अष्ट सिद्धिदाता गणेशजी हैं । प्रार्थनामन्त्र यथा-ब्रह्मवैवर्त्त में—हे अष्टसिद्धि को देने वाले ! हे गणेश ! आपको नमस्कार । आप समस्त अर्थ देने वाले हैं और कष्ट मोचन करने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १२ बार नमस्कार करने से संकट से मुक्त होकर विमल सुख को प्राप्त होता है ॥५६॥

अनन्तर वज्रपञ्जर हनुमद्दर्शन हैं । प्रार्थनामन्त्र यथा-ब्रह्माण्ड में—हे वज्रांग स्वरूप ! हे वज्र-पञ्जर से उत्पन्न ! हे समस्त आतंक विनाशकारी ! हे हनुमान स्वरूप ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से समस्त बाधा से रहित होकर समस्त कामना को प्राप्त होता है ॥५७॥

ततश्चतुर्भुजदर्शनप्रार्थनमन्त्रः । भविष्ये—

चतुर्युगसमुत्पन्न श्यामशुक्लस्वरूपिणे । चतुर्भुजाय देवाय नमस्ते कमलाप्रिय ! ॥

इत्येकविंशदावृत्या साष्टांगप्रणतिं चरेत् । कृतकृत्यो भवेल्लोको वैष्णवीं पदवीं लभेत् ॥५८॥

ततो वृन्दान्वितगोविन्दालोकप्रार्थनमन्त्रः । विष्णुयामले—

वृन्दादेवीसमेताय गोविन्दाय नमो नमः । मुक्तिरूपाय कृष्णाय वासुदेवाय केलिने ॥

इति मन्त्रं शतावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । मुक्तिभागी भवेल्लोको लक्ष्मीवान् जायते नरः ॥५९॥

ततो राधावल्लभालोकप्रार्थनमन्त्रः । ब्राह्मे—

राधावल्लभरूपाय विष्णवे व्रजकेलिने । नमः प्रगल्भकान्ताय सर्वार्थसुखदायिने ॥

इति चतुर्दशावृत्त्या नमस्कारं समाचरेत् । दम्पत्यो भूयसी प्रीतिर्जायते सुखसंयुता ॥६०॥

ततो गोपीनाथावलोकनप्रार्थनामन्त्रः । मात्स्ये—

सदा रासोत्सवक्रीडाविमलाय कृतार्थिने । गोपीनाथाय देवाय नमस्ते व्रजकेलिने ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिश्चरेत् । सदा विमलरूपाय रमते पृथिवीतले ॥६१॥

ततो नवनीतकेलिदर्शनप्रार्थनमन्त्रः । श्रीवत्ससंहितायां—

यशोदाविविधोत्साहैः परिपूर्णस्वरूपिणे । नवनीतप्रिय ! कृष्ण ! बालचेष्टान्वित ! हरे ! ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य चतुर्विंश नमश्चरेत् । सदा गोरसभोगादीन् लभते नात्र संशयः ॥ ६२ ॥

ततो गोकुलेश्वरावलोकनप्रार्थनमन्त्रः । विष्णुपुराणे -

पञ्चाब्दरूपिणे तुभ्यं नमस्ते गोकुलेश्वर ! नमः कैवल्यरूपाय नमस्ते बालरूपिणे ॥

अनन्तर चतुर्भुज दर्शन है । प्रार्थनामन्त्र यथा-भविष्य में—हे चतुर्भुज स्वरूप ! हे श्याम शुक्ल रूप ! हे कमलाप्रिय ! आपको नमस्कार है । आप चार युग में विद्यमान हैं । इस मन्त्र के २१ बार पाठ पूर्वक साष्टांग प्रणाम करें तो मनुष्य कृत्य कृत्य होकर वैष्णव पदवी का लाभ करता है ॥ ५८ ॥

अनन्तर वृन्दा के साथ गोविन्ददेव का दर्शन है । प्रार्थनामन्त्र यथा-विष्णुयामल में-हे वृन्दादेवी सहित श्रीगोविन्ददेव ! आपको नमस्कार । हे मुक्तिस्वरूप ! हे कृष्ण ! हे केलिपरायण ! हे वासुदेव ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र का १०० बार पाठ कर नमस्कार करें तो मनुष्य मुक्तिभागी होकर विविध लक्ष्मीवान् होता है ॥ ५९ ॥

अनन्तर राधावल्लभजी हैं । प्रार्थनामन्त्र यथा ब्राह्म में-हे राधावल्लभ स्वरूप विष्णुमूर्ति ! हे व्रजकेलिपरायण ! हे प्रगल्भता से मनोहर ! समस्त शुभदाता आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो दम्पत्ति की परम प्रीति रहती है ॥ ६० ॥

अनन्तर गोपीनाथ अवलोकन प्रार्थनामन्त्र-मात्स्य में-सर्वदा रासक्रीड़ा उत्सव करने वाले विमल स्वरूप आपको नमस्कार । हे गोपीनाथ ! हे देव ! व्रजक्रीड़ापरायण आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करें तो सर्वदा निमल स्वरूप से पृथिवी में विचरण करता है ॥६१॥

अनन्तर नवनीतकेलिदर्शन प्रार्थनामन्त्र यथा-श्रीवत्ससंहिता में—हे यशोदा के विविध उत्साह द्वारा परिपूर्ण स्वरूप ! हे नवनीत प्रिय ! हे कृष्ण ! हे बालचेष्टा से युक्त श्रीहरि ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २४ बार नमस्कार करे तो सर्वदा गोरस का भोग करता है ॥ ६२ ॥

इति त्रयोदशावृत्या मन्त्रं श्रुत्वा नमश्चरेत्। कृतार्थो जायते लोके देवतुल्यकलेवरः ॥ ६३ ॥
ततो रामचन्द्रदर्शनप्रार्थनमन्त्रः । पाद्मे पातालखण्डे—
नमस्ते रामचन्द्राय कौशल्यानन्ददायिने । नमस्ते कमलाकान्त त्रेतायुगस्वरूपिणे ॥
इति चतुर्दशावृत्या पठन्मन्त्रं नमश्चरेत् । राज्यवान् धनवान् लोको लक्ष्मीवान् जायतेऽखिलो॥६४॥
इतिभाद्रपदे शुक्ले द्वितीयायां समाचरेत् । तस्य काम्यबनस्यापि सप्तक्रोशप्रदक्षिणा ॥
चतुराशीतिदेवानां तीर्थानां च तथैव च । तथैव चतुराशीतिस्तम्भानां च विलोकनं ॥
सर्वकामानवाप्नोति कामसेनिरिवास्थितः । ततः शुक्लतृतीयायां प्रभाते ह्यरुणोदये ॥
बनाद्बहिर्विनिःसृत्य क्रोशार्द्धं तिष्ठते पथि । पश्चिमाभिमुखो भूत्वा प्रार्थनं कुरुते शुचिः ॥६५॥
ततो काम्यबनप्रार्थनमन्त्रः । स्कान्दे—
सर्वदा वरदो देव भगवदंगसम्भवः । नमो काम्यबन श्रेष्ठ पुनरागमनाय च ।
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । काम्यमिच्छतमाप्नोति सर्वदा विजयी भवेत् ॥
इति काम्यबनं प्रार्थ्य प्रतस्थे बनयात्रया । वृषभानुपुरं रम्यं क्रोशत्रयविनिर्मितं ॥
इतिमाहात्म्यपूर्वकाम्यबनप्रदक्षिणा ॥ ६६ ॥
अथ कोकिलाबनप्रदक्षिणा । आदिवाराहे—
भाद्रशुक्लर्षिपंचम्यां स्वातिनक्षत्रसंयुते । जगाम कोकिलायाश्च बनं कलमनोहरं ॥
ततो कोकिलाबनप्रार्थनमन्त्रः । नारदपञ्चरात्रे—
देवर्षिकिन्नराकीर्ण कोकिलानिर्मिताय च । बनायाल्हादपूर्णाय नमस्ते सुस्वरप्रद ! ॥
इति मन्त्रं षडावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । कोकिलास्वरवत्कण्ठं लभते रमते भुवि ॥६७॥

अनन्तर गोकुलेश्वर है। दर्शन प्रार्थनामन्त्र यथा-विष्णुपुराण में—हे पञ्चवर्षीय गोकुलेश्वर! आपको नमस्कार । हे कैवल्यनायक! बालरूपि आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य देवतुल्य कृतार्थ हो जाता है॥ ६३ ॥

अनन्तर रामचन्द्र दर्शन प्रार्थनामन्त्र यथा-पाद्मे पातालखण्ड में—हे रामचन्द्र! कौशिल्या को आनन्द देने वाले! हे कमलाकान्त! त्रेतायुग स्वरूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य राजवान्, धनवान्, लक्ष्मीवान होता है॥ ६४ ॥

इति यह भाद्रपद की शुक्ल द्वितीया तिथि में आचरण करे। काम्यबन की सात कोश परिक्रमा है। ८४ देवता ८४ तीर्थ ८४ खम्भ का दर्शन समस्त कामना को देने वाला है। अनन्तर शुक्ला तृतीया के दिन अरुण उदय के समय बन से अर्द्ध कोश बाहर जाकर मार्ग में ठहरे। पश्चिम मुख होकर प्रार्थना करें॥ ६५ ॥

प्रार्थनामन्त्र यथा-स्कान्द में—हे काम्यबन! हे श्रेष्ठ! फिर आने के लिये आपको नमस्कार! आप भगवान् के अङ्ग से उत्पन्न हैं और सर्वदा वर के देने वाले हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो कामना को प्राप्त होकर विजयी होता है। इस प्रकार काम्यबन की प्रार्थना कर व्रजयात्री तीन कोश परिमित बरसाना को जावें। इति महिमा पूर्वक काम्यबन प्रदक्षिणा॥ ६६ ॥

अनन्तर कोकिलाबन का वर्णन कहते हैं। आदिवाराह में—भाद्र शुक्ल ऋषि पञ्चमी में स्वाति

ततो रत्नाकरस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

सख्याः क्षीरसमुद्भूत रत्नाकरसरोवरे। नाना प्रकाररत्नानामुद्भवे वरदे नमः ॥

इति सप्तदशावृत्या मज्जनाचमनंनमन्। विविधै र्बहुधारत्नैः पूर्णस्तु रमते भुवि ॥६८॥

ततो रासमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—

रासक्रीडाप्रदीप्ताय गोपीरमणसुन्दर!। नमः सुखमनोरम्यस्थलाय सिद्धिरूपिणे ॥

इति त्रयोदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत्। कृतकृत्यो भवेल्लोको धनधान्यसमन्वितः ॥

ततो प्रदक्षिणां कुर्य्यात्कोकिलाख्यवनस्य च। पादोनद्वयक्रोशस्य परिपूर्णाभिधायिनी ॥

इति महात्म्यपूर्वं कोकिलाबनप्रदक्षिणा ॥ ६९ ॥

अथ तालबनमहात्म्यपूर्वप्रदक्षिणा। आदिपुराणे—

भाद्रेमास्यसिते पक्षे ह्येकादश्यां गतो बनं। तालनाम्नाऽसुरेणापि रचितं निर्मलं स्थलं ॥

ततस्तालबनप्रार्थनमन्त्रः—

मोक्षाय मुक्तिरूपाय हरिमुक्तिप्रदायिने। नमस्तालाय रम्याय तालशोभाविवर्द्धिने ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य दशधा प्रणतिं चरेत्। मुक्तिभागी भवेल्लोको वैष्णवं पदमाप्नुयात् ॥७०॥

ततो संकर्षणकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

संकर्षणकृतार्थाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते। क्षीरपूर्णाय रम्याय कलाकान्तसुखाय ते ॥

इति मन्त्रं षडावृत्या मज्जनाचमनं नमन्। वाञ्छितं फलमाप्नोति मन्दभागी भवेन्नरः ॥

ततो पादोनक्रोशेन कुर्य्यात्तालबनस्य च। प्रदक्षिणां शुभां पूर्णां सर्वारिष्टविनाशिनीं ॥

इति तालबनमहात्म्यप्रदक्षिणा ॥ ७१ ॥

नक्षत्र में शब्दों से मनोहर कोकिलाबन को गमन करें। कोकिलाबन प्रार्थनामन्त्र यथा-नारदपञ्चरात्र में—हे देवर्षि, किन्नर गणों से युक्त! हे कोकिला द्वारा निर्म्मित! आल्हाद से परिपूर्ण कोकिलाबन! सुन्दर स्वर को देने वाले आपको नमस्कार। इस मन्त्र का ६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से कोकिल के सदृश कण्ठ को प्राप्त होता है॥६७॥

अनन्तर रत्नाकरकुण्ड है। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा-हे सखियों के द्वारा लाये हुए दुग्ध से उत्पन्न रत्नाकर सरोवर! नाना प्रकार रत्नों के उद्भवस्थान वरदाता आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार स्नान करे तो नाना प्रकार रत्नों से रत्नवान् होता है ॥६८॥

अनन्तर रासमण्डल प्रार्थनामन्त्र—हे रासक्रीड़ा से प्रदीप्त मनोहर रासस्थल! हे गोपियों के रमण से सुन्दर! सिद्धिरूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से धन, धान्य से युक्त होकर कृत्य २ होता है। अनन्तर कोकिलाबन की १॥ कोश प्रदक्षिणा करें, जो परिपूर्णता को देने वाली है ॥ ६९ ॥

अनन्तर तालबन की प्रदक्षिणा महिमा कहते हैं। आदिपुराण में—भाद्रमास कृष्ण पक्ष एकादशी में तालबन में जावें। जो ताल नामक राक्षस कर्तृक निर्म्मित है। प्रा० मन्त्र यथा—हे मोक्षरूप तालबन! आपको नमस्कार। आप हरिरूप मोक्ष को देने वाले हैं। आप विविध तालों से सुन्दर हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक दश बार नमस्कार करने से मुक्तिभागी होकर वैकुण्ठ पदवी को प्राप्त होता है ॥ ७० ॥

अनन्तर संकर्षणकुण्ड स्नान आचमन प्रणाम मन्त्र—हे संकर्षण से रचित तीर्थराज! आपको

अथ कुमुदवनमहात्म्यप्रदक्षिणा । पाद्मे —

कुमुदाख्यं वनं गच्छेदेकादश्यां च भाद्रके । कृष्णायामेव तस्यां तु दर्शनं तु समाचरन् ॥

ततो कुमुदवनप्रार्थनमन्त्रः—

कुमुदाख्याय रम्याय नानाल्हादविधायिने । नानाकुमुदकल्हाररूपिणे ते नमो नमः ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य षोडश प्रणतिं चरेत् । विविधानन्दपूर्णस्तु जायते पृथिवीतले ॥७२॥

ततो पद्मकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

इन्द्रादिदेवगन्धर्वैराकीर्ण विमलार्थिने । पद्मकुण्डाय ते तुभ्यं नानासौख्यप्रदायिने ॥

इति सप्तदशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । सदा सौरभ्यसंयुक्तोऽनेकसौख्यार्थमन्त्रभूत् ॥

ततोऽर्द्धक्रोशसंख्येन प्रदक्षिणमथा करोत् । कुमुदाख्यवनस्यापि समस्तं सकलेष्टदं ॥

इति कुमुदवनमाहात्म्यपूर्वप्रदक्षिणा ॥ ७३ ॥

अथ भाण्डीरवनमाहात्म्यप्रदक्षिणा । स्कान्दे—

भाद्रशुक्ले च द्वादश्यां जन्म वामन सम्भवेत् । गच्छेद्भाण्डीरनामानं वनं सर्व्वार्थदायिनं ॥

ततो भाण्डीरवनप्रार्थनमन्त्रः—

चतुर्द्दशावताराणां लीलोद्भवस्वरूपिणे । नानाद्रव्योद्भवस्थान नमो भाण्डीरसञ्ज्ञिके ॥

इति चतुर्द्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । ध्रुवादिपदवीं लब्ध्वा ह्यखण्डसुखमाप्नुयात् ॥७४॥

ततोऽसिभाण्डतीर्थप्रार्थनमन्त्रः—

मनोर्थवरदे तीर्थे असिभाण्डह्रदाह्वये । नमो गोप्यजलाल्हादे तीर्थराज नमोस्तु ते ॥

नमस्कार । आप क्षीर, दुग्ध से परिपूर्ण हैं, सुन्दर हैं, सुख के लिये हैं । कलाओं से मनोहर हैं । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो मन्दभागी भी वाञ्छित फल को प्राप्त होता है। अनन्तर समस्त अरिष्ट नाशकारी तालवन की पौन कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥ ७१ ॥

अनन्तर कुमुदवन का महिमा, प्रदक्षिणा कहते हैं । पाद्म में—भद्रमास की कृष्णा एकादशी में वहाँ यात्रा विधि है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे नाना प्रकार के आल्हाद को देने वाले रम्य कुमुदवन! आपको नमस्कार । आप नाना प्रकार के कुमुद,कल्हार से परिपूर्ण रूप हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १६ बार प्रणाम करें तो विविध प्रकार के आनन्द से परिपूर्ण होकर पृथिवी में जन्म लेता है ॥ ७२ ॥

अनन्तर पद्मकुण्ड है । स्नानादि मन्त्र यथा-हे इन्द्रादि देवता, गन्धर्वों से व्याप्त विमल अर्थरूप पद्मकुण्ड! नाना सुखदाता आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, स्नान, प्रणाम करने से सर्वदा सुख का अनुभव करता है । अनन्तर अर्द्ध कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें जो समस्त इष्ट को देने वाले हैं । इति कुमुदवन की महिमा ॥ ७३ ॥

अनन्तर भाण्डीरवन का महिमा प्रदक्षिणा कहते हैं । स्कान्द में—भाद्रशुक्ला द्वादशी में वामन जयन्ती के दिवस पर समस्त अर्थ को देने वाले भाण्डीरवट को जावें । प्रा० मन्त्र यथा-हे २४ अवतारों की लीलाओं से उद्भव स्वरूप ! हे नाना प्रकार द्रव्यों के उद्भव स्थान भाण्डीर नामक स्थल ! आपको नमस्कार । इसके १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो ध्रुवादि अखण्ड पद को लाभ करता है ॥७४॥

अनन्तर असिभाण्डतीर्थ है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मन कामना वर को देने वाले असिभाण्ड

इति पंचदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । जन्मनीह परत्रे च याचितां योनिमाप्नुयात् ॥७५॥
ततो मत्स्यकूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः । मात्स्ये—

चतुर्दशावताराणां जन्मनुत्सववर्द्धिने । दुग्धोफानमयोद्भूत मत्स्यकूप नमोऽस्तु ते ॥
इति विंशावृत्तेनैव मज्जनाचमनं नमन् । चतुर्दशावताराणां प्रभाव इव राजते ॥ ७६ ॥
ध्रुवजन्मदिने कूपो दुग्धपूर्णोर्घमाचरेत् । दशावतारसंज्ञाभिर्विष्णुरवतरत्स्वयं ॥
मत्स्यादिदशरूपैस्तु क्रीडयमानो भुवस्तले । एवं चतुर्दशैः संख्यैरवताराः ध्रुवादयः ॥
भगवदंशसंभूताः चतुर्दशकलोद्भवाः । इत्येवं कथिताः विष्णोश्चतुर्विंशास्तु मूर्त्तयः ॥७७॥

अथ भगवदंगसमुद्भवाश्चतुर्दशकलाः व्याख्याः । भविष्योत्तरे—

परमा विमला मोदा वैष्णवी सिद्धिरूपिणी । कौमारी सुतला लक्ष्मी तापसी ब्रह्मरूपिणी ॥
सुभद्रा शुभगा धात्री सौरभैताश्चतुर्दशः । भगवदंगसंभूताः कलाः मुख्यविराजिताः ॥
मुखहृद्बाहुनेत्रोरुकटिकंठललाटजाः । पृष्ठि पाणि गुदा पाद स्तनोदरसमुद्भवाः ॥
ध्रुवश्च कपिलो व्यासः नारदो पृथु भार्गवः । धन्वन्तरि हयग्रीव दत्तात्रेयो हरिः प्रभुः ॥
ऋषभो हंस प्रल्हादो धनञ्जयश्चतुर्दशाः । चतुर्विंशावताराः ये मत्स्यादयः ध्रुवादयः ॥
परमाख्यकलोद्भूतो ध्रुवो नारायणः स्वयं । कलाविमलया जातो कपिलो मुनिसत्तमः ॥
मोदाख्यकलयाद्भूतो व्यासो नारायणोऽभवत् । वैष्णवीकलयोद्भूतो नारदो मुनिसत्तमः ॥
कलया सिद्धिरूपिण्या पृथुराजा समुद्भवः । कौमारीकलया जातो कविनामधिपो भृगुः ॥
लक्ष्माख्यकलया जातो धन्वन्तरिसमुद्भवः । तापसीकलया जातो हयग्रीवो हरिः स्वयं ॥
कलया ब्रह्मरूपिण्या दत्तात्रेयो महामुनिः । सुभद्राकलयोद्भूतो हरिश्चक्रगदाधरः ॥
शुभगाकलया जातो ऋषभो देवसंज्ञकः । धात्री नाम कलोद्भूतो हंसो परमसंज्ञकः ॥
सुतलाकलयोद्भूतो प्रल्हादो भगवान् हरिः । सौरभाकलया जातो पाण्डवानां धनञ्जयः ॥
इति चतुर्दशाख्याताश्चवताराः हरेः प्रभोः । चतुर्विंशा इति प्रोक्ताः मत्स्यादय इति शुभाः ॥७८॥

नामक तीर्थ ! गोपयजल से आल्हाद प्राप्त आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १५ वार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से इहकाल, परकाल में याचित अर्थ का प्राप्त होता है ॥ ७५ ॥

अनन्तर मत्स्यकूप है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा-मात्स्य में—हे चतुर्दश अवतारों का जन्म उत्सव बढ़ाने वाले ! हे दुग्धफेणमयस्वरूप ! हे मत्स्यतीर्थ ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के २० बार पठा पूर्वक मज्जन आचमन, स्नानादि करने से २४ अवतारों के प्रभाव के न्याय से प्रभावी होता है ॥७६॥

ध्रुवजी के जन्म दिवस मत्स्यकूप दुग्धों से परिपूर्ण होकर अर्घ्य को आचरण करता है । विष्णु भगवान् दशावतार नाम से स्वयं अवतीर्ण (प्रादुर्भूत) होते हैं, और मत्स्यादि दश प्रकार के अवतारों से क्रीड़ा करते हैं । चौदह कला से उत्पन्न यह ध्रुवादिक चतुर्दश अवतार भगवान् के अंशरूप हैं ॥७७॥

अब भगवान् के अंग से उत्पन्न चौदह कला की व्याख्या भविष्योत्तर में से कहते हैं । परमा, विमला, मोदा, वैष्णवी, सिद्धिरूपिणी, कौमारी, सुतला, लक्ष्मी, तापसी, ब्रह्मरूपा, सुभद्रा, शुभगा, धात्री, सौरभा यह चौदह कला हैं । यह सब भगवान् के मुख, हृदय, बाहु, नेत्र, कण्ठ, ललाट, पृष्ठ, हस्त, गुदा, पाद, स्तन, उदर से यथा क्रम उत्पन्न हैं । ध्रुव, कपिल, व्यास, नारद, पृथु, भार्गव, धन्वन्तरी, हयग्रीव,

अथ ध्रुवादि चतुर्दशावतार जन्म निर्णयः। ध्रुवजन्मप्रसंगात् तत्रादौ ध्रुव जन्मः। ध्रुवसंहितायाम्—

चतुर्दश्यां सिते पक्षे श्रावणे दक्षिणायने। रात्रिर्गता घटी त्रिंशाः वृषलग्नोदये यदि ॥
उत्तराषाढ़संयुक्ते सोमशोभनसंयुते। ध्रुवावतारसंज्ञोऽभिजायते भगवान् हरिः ॥

इति ध्रुवावतारजन्मः।

अथ कपिलावतारजन्म निर्णयः। ब्राह्मे—

कार्त्तिके कृष्णपक्षे तु पञ्चमी बुधसंयुता। शिवयोगार्द्रया युक्ता घटिजाताश्चतुर्दशः ॥
धनुलग्नोदये जातेऽवतरत् कपिलो मुनिः। देवहूतिमहोत्साहैः सत्यवरप्रदो हरिः ॥
योगविद्यासमायुक्तो सर्वशास्त्रविशारदः। जन्मनि कपिलस्यापि पुरश्चरणमारभेत् ॥
अचिरान्मन्त्रसिद्धिस्तु लोकानां वश्यकारकः। ईप्सितं वरमाप्नोति त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥

इति कपिलवरजन्मनिर्णयः।

अथ व्यासावतारजन्मनिर्णयः। पुराणसमुच्चये—

आषाढ़शुक्लपञ्चम्यां पूर्वफाल्गुनिसंयुते। वरीयान् भृगुसंयुक्तो नाडी पञ्चदशो गताः ॥
कन्यालग्नोदये जाते धर्म्माधर्मार्थहेतवे। सत्यावत्यां सुतो जातो व्यासो नारायणो हरिः ॥
तद्दिने यमुनादौ च नदीगंगादिषु तथा। तडागे ह्यथवा कूपे व्यासपूजां करोन्नरः ॥
दुग्धेन शीतलं कुर्य्यात् सिक्तमन्त्रं समुच्चरन्। ओं नमो निर्मलरूपाय लोकपावनहेतवे ॥
नमो व्यासस्वरूपाय विष्णवे वरदायिने। इति मन्त्रं दशावृत्या पूर्वाभिमुखनो विशन् ॥
दुग्धशीतां जलौ नीत्वा नद्यादौ दशभिः क्षिपेत्। सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञो ह्यागमागमतत्ववित् ॥
सदा कल्याणसंयुक्तो लक्ष्मीवान् जायते नरः। जडबुद्धिः कुशीलो वा पापिष्ठो भ्रूणहापि वा ॥
सर्वदोषविनिर्म्मुक्तो व्यासरूपो रमेद्भुवि। शुष्कतोयं भवेत् क्वापि कटुतोयसमुद्भवः ॥
क्षीरवत्तोयपूर्णस्तु सजलश्चिरमास्यते। कदाचिच्छुष्कतां नैव जायते नात्र संशयः ॥
नदीतडागकूपाश्च वापी सर्व्वजलाशयाः। व्यासपूजाविधानेन दुग्धवत् पयसंप्लुताः ॥

इति व्यासावतारजन्मनिर्णयः।

अथ नारदावतारजन्मनिर्णयः। नारदपञ्चरात्रे—

आश्विनस्य सितं पक्षे बुधयुक्ता त्रयोदशी। उत्तराभाद्रसंयुक्ता ध्रुवयोगसमन्विता ॥
घटिकात्रितयं जातं तुलालग्नमुपस्थितं। पृथ्वीपर्य्यटनार्थाय नारदः संज्ञको हरिः ॥
भूमेर्भारावताराय दैत्यनाशोद्यमाय च। अवतारः समुद्भूतो सर्व्वपापौघमुक्तये ॥
विष्णुक्रीडेक्षनार्थाय सर्व्वकल्याणहेतवे। नारदस्यावतारान्हौ कुर्य्याद्धरिप्रदक्षिणां ॥
अष्टोत्तरशतैः संख्यैः व्रजयात्राफलं लभेत्।

अथ पृथ्वावतारजन्मनिर्णयः। पाद्मे—

माघे मास्यसितपक्षे षष्ठी भौमयुतायदि। हस्तसुकर्म्मयोगाढ्या घटी जातास्त्रयोदश ॥

दत्तात्रेय, हरि, ऋषभ, हंस, प्रल्हाद, धनञ्जय, यह चौदह अवतार यथा क्रम से परमादि कला के साथ अवतार लेते हैं। परमा से ध्रुव, विमला से कपिल इस प्रकार क्रम से जानना। ध्रुव स्वयं नारायण है। मत्स्यादि २४ अवतार हैं। ध्रुवादि अवतारों का जन्म निर्णय कहते हैं। अर्थ सरल है॥ ७८॥

मीनलग्नोदये प्राप्ते ऽवतारश्च पृथो भवेत् । विमलावनिरम्याय समस्तपृथिवीतले ॥
पृथु जन्म दिने जाते गुडदानं समाचरेत् । भूमिग्रामादिदानं च सहस्रगुणितं फल ॥
सर्वदा सुखसम्पत्या रमते पृथिवीतले । अखण्डं पदवीं लब्ध्वा चक्रवर्त्ती भवेन्नृपः ॥
इतिपृथुराजावतारजन्म निर्णयः ॥

अथ भृग्ववतारजन्मनिर्णयः । वामनपुराणे—
ज्येष्ठ शुक्लाष्टमी जाता भृगुवारसमन्विता । मघा व्याघातयोगेन संयुता तपवर्द्धिनी ॥
पञ्चनाडीगते काले लग्ने च मिथुने स्थिते । सञ्जीवनीसमायुक्तोऽवतरद्भृगुनन्दनः ॥
कविराज इति ख्यातस्त्रैलोक्यविजयप्रदः । भृगुजन्मदिने जाते शस्यभूमिं प्रपूजयेत् ॥
चतुर्द्दश गुण धान्यं वर्द्धते नात्र संशय. । अतिवृष्टावनावृष्टौ न्यूनाधिक्यं न जायते ॥
इनि भृग्ववतारजन्मनिर्णयः ।

अथ धन्वन्तर्य्यवतार जन्म निर्णयः । स्कान्दे—
कार्तिकस्यासिते पक्षे ह्यमावस्या भृगुर्युता । विशाखा ऋक्षसंयुक्ता योगसौभाग्यसंयुता ॥
तस्यां पाणौ समाधाय ह्यौषधीं च हरितकीं । चतुर्दशाख्यरत्नानां मध्ये धन्वन्तरिःप्रभुः ॥
लोकसञ्जीवनार्थाय समुद्रमन्थनोद्भवः । भगवद्दवतारस्तु वैद्यराजोऽभवद्भुवि ॥

धन्वन्तरिरुव.च—
ग्रीष्मे तुल्यगुडांशसैंधवयुतां मेघावरुद्धेंबरे । तुल्यांशकेरया शरद्यमलया शुठ्या तुषारागमे ॥
पिपल्या शिशिरे वसन्तसमये क्षौद्रेण संसेव्यतां । राजन्प्राश्य हरितकीमिव गदाः नश्यन्तु ते शत्रवः॥
तस्मिन्नमादिने जाता रत्नानीव चतुर्दशाः । सूर्योदयात् समारभ्य शेषमेकघटीदिनं ॥
आदौ विष १ सुरा २ श्चन्द्रं ३ कामधेनु ४ श्च कौस्तुभः ५ । कल्पवृक्षो ६ धेनू ७ रम्भा ८ गजैरावतसंज्ञकः९॥
धन्वन्तरि १० हरेः शंखं ११ लक्ष्मी १२ रुच्चैःश्रवाहयः १३ । पीयूषममृतं ह्येते रत्नानीव चतुर्द्दशः ॥
अन्तरान्तरतो जाता रत्नानीव चतुर्दशः । अमावास्योद्भवे रात्रौ लक्ष्मीपूजनमाचरेत् ॥
लक्ष्मीनारायणस्यापि ह्यभिषेकं च जन्मनि । धनधान्यसमृद्धिस्तु सर्वदा सौख्यमाप्नुयात् ॥
चतुर्द्दशानां रत्नानामेतेषां पूजनं चरेत् ।

लक्ष्मीपूजाविधानं व्रजोत्सवाल्हादिन्यां—
लक्ष्मी कौस्तुभ पारिजातक सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः । गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो रंभा च देवांगनाः ॥
अश्वः सप्तमुखोः सुधा हरिधनुः शंखो विषं चांबुधेः । रत्नानीव चतुर्द्दशः प्रतिदिनं कुर्व्वन्तु वो मंगलं ॥
धन्वन्तरिप्रसगेन रत्नजन्मानि व्याख्याते ॥ इति धन्वन्तरी जन्म निर्णयः ॥

अथ हयग्रीवावतारजन्मनिर्णयः । हयग्रीवपञ्चरात्रे—
चैत्रमास्यसिते पक्षे पञ्चमी गुरुसंयुता । अनुराधा समायुक्ता सिद्धियोगसमन्विता ॥
एक विंश घटी जाता कर्कलग्नोदये यदि । हयग्रीवावतारस्तु भवेन्नारायणो हरिः ॥
इति हयग्रीवावतारजन्म निर्णयः ॥

अथ दत्तात्रेयावतारजन्मनिर्णयः । भविष्ये -
श्रावणस्यासिते पक्षे सप्तमी सोमसंयुता । शूलाश्विनी समायुक्ता घटी सप्त व्यतीयताः ॥
सिंहलग्नोदये जाते दत्तात्रेयोऽभवद्धरिः । अत्र्यषेर्वरदानेन ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः ॥

अनसूयाः समाजातास्त्रयो पुत्राः वरप्रदाः । ब्रह्मावतारसंभूतश्चन्द्रमाकलयान्वितः ॥
दत्तात्रेयोऽभवत् पुत्रः विष्णुरवतरन् स्वयं । विप्रादिपूजनार्थाय धर्म्माधर्म्मविवेकवित् ॥
शिवावतारसम्भूतो दुर्वासो मुनिसत्तमः ॥ इति दत्तात्रेयावतारजन्मनिर्णयः ॥

अथ हर्य्यवतारजन्मनिर्णयः । आदिपुराणे—
मार्गशिर्षेऽसिते पक्षे नवमी बुधसंयुता । उत्तरा फाल्गुनी ऋक्ष प्रतियोगसमन्विता ॥
सूर्योदयात् समारभ्य व्यतीता घटिका नव । धनुलग्नसमायातेऽवतारो हरिसंज्ञकः ॥
इति हर्य्यवतार जन्म निर्णयः ।

अथ ऋषभदेवावतार जन्म निर्णयः । वायुपुराणे—
पौषे मासि सिते पक्षे दशमी भृगुसंयुता । कृतिकाशुभयोगाढया घटी जाताश्च द्वादश ॥
कुंभलग्नोदये जाते ऽवतरदृषभो हरिः । लोकानां च हितार्थाय तत्वज्ञानार्थहेतवे ॥
संज्ञो ऋषभदेवाख्योऽवतारो विष्णुसंभवः ॥

अथ परमहंसावतारजन्मनिर्णयः । परमहंससंहितायां—
शुक्लपक्षे सहोमासे तृतीयाबुधसंयुता । पूर्वाषाढ़ा समायुक्ता वृद्धियोगसमन्विता ॥
घटी जातास्त्रयोविंशाः मेषलग्नोदये यदि । परमहंसावतारः जायते पृथिवीतले ॥
तत्वार्थदर्शनार्थाय हंसो नारायणो भवत् । जन्मोत्सवे च हंसस्य बलदेवादिमूर्त्तिषु ॥
श्वेतवस्त्रो परिधाय मुक्तामालां समर्पयेत् । सर्वदा सौख्यमाप्नोति सहस्रगुणितं फलं ॥
मुक्तादिबहुद्रव्याढ्यो धनाढ्यो जायते नरः ॥ इति परमहंसावतारजन्मनिर्णयः ॥

अथ प्रल्हादावतारजन्मनिर्णयः । प्रल्हादसंहितायां—
शुभे फाल्गुनमासे तु द्वितीया शुक्लपक्षगा । पूर्वभाद्रपदाविष्टा सिद्धियोग समन्विता ॥
गुरुवारेण संयुता घटी जाताश्चतुर्दशाः । मेषलग्नोदये जाते प्रल्हादोऽवतरद्धरिः ॥
दैत्यराजकुलोत्पन्नो जगदानन्दहेतवे । चक्रिरिन्द्रादयो देवाः पुष्पानां वृष्टिमायतीं ॥
समस्तपृथिवीलोके पुष्याख्या द्वितीया भवत् । प्रल्हादप्रभवोत्साहे ब्राह्मणान्भोजयेन्नरः ॥
कदा कष्टं न पश्येत नृहरे वैरमाप्नुयात् ॥ इति प्रल्हादावतारजन्मनिर्णयः ॥

अथ धनञ्जयावतारजन्मनिर्णयः । ब्रह्माण्डे—
एकादश्यां सिते पक्षे आश्विने विजयप्रदे । धनिष्ठा ऋक्षयुक्तायां भृगुणाधृतिसंयुते ॥
जाताः सप्तदशाः नाडयः लग्नगे मकरोदये । कौरवानां वधार्थाय हययुद्धार्थिने हरिः ॥
कुन्तीपुत्रोऽभवद्विष्णुरवतारोऽर्जुनोऽवनौ । धनंजयावतारे ऽन्हौ धनुः पूजां करोन्नृपः ॥
बहु संकष्टसंग्रामे विजयस्तस्य जायते ।. भगवत्कलया जाता अवताराश्चतुर्दशः ॥
चतुर्विंशावताराणां जन्मसंज्ञादिनेष्वपि । जायते नरलोकेऽस्मिन् सुतो वा कन्यकापि वा ॥
भगवत्कलयाजातस्तद्रूपं तत्पराक्रमं ॥ इति चतुर्विंशावतारजन्मनिर्णयः ॥

महार्णवे—
मत्स्यकूर्म्मवाराहवामनहरि रामोर्जुनो नारदो । बौद्धोव्यासपृथुर्भृगु हलधरो धन्वन्तरिर्भार्गवः ॥
दत्तात्रेयनृसिंहग्रीवकपिलो प्रल्हादहंसो ध्रुवः । कल्कीश्रीऋषभावतारगणनायायाञ्चतुर्विंशगाः ॥
दृष्टान्ते मत्स्यकूर्मस्य भाण्डीरस्य परिक्रमे । इत्येते च समाख्यातश्चतुर्विंशावतारगाः ॥

ततो भाण्डीरवनेऽशोकवृक्षप्रार्थनमन्त्रः । पाद्मे—

सीताशोकच्छिदे तुभ्यमशोकाय नमो नमः । सदानन्दस्वरूपाय पातिव्रतप्रदायिने ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य चतुर्दश नमश्चरेत् । सदानन्दाप्लुति लोको सौभाग्य सुखमन्वभूत् ॥७९॥

ततोऽशोकमालिनीवनदेवताप्रार्थनमन्त्रः—

अशोकमालिनीभ्यस्तु नमस्तुभ्यो वरप्रदे । अशोकवररक्षाभ्यो देवताभ्यो प्रसीद मे ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिः प्रणतिश्चरेत् । अधिष्टातावलोकानां लक्ष्मीवान् जायते नरः ॥८०॥

ततोऽघासुरवधस्थानप्रार्थनमन्त्रः-

मुक्तिस्वरूपिणे तुभ्यमघासुरवधस्थल । कृष्णमुक्तिकृते तीर्थे नमस्ते मोक्षदायिने ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥

ततो प्रदक्षिणां कुर्य्यात् क्रोशद्वयप्रमाणतः । इति भाण्डीरवनस्य माहात्म्यं परिकीर्त्तितं ॥

इति श्रीभास्करात्मजनारायणभट्टविरचिते व्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे व्रजमहात्म्यनिरूपणे नवमोऽध्यायः ॥

॥ दशमो ऽध्यायः ॥

अथ छत्रवनप्रदक्षिणा कौर्म्ये—

भाद्रशुक्लास्यसप्तम्यां ज्येष्ठाऋक्षसमन्विते । स्थित्वा छत्रवने लोकः प्रार्थनां कुरुते शुचिः ॥

प्रार्थनामन्त्रः—गोपिकान्वितकृष्णाय नमस्ते छत्रधारिणे । इन्द्रादिदेवताभ्यस्तु वरदाय नमो नमः ॥

इति मन्त्रं शतावृत्त्या नमस्कारं समाचरेत् । छत्रधारी भवेद्राजा मानवो नात्र संशयः ॥१॥

अनन्तर भाण्डीरवन में अशोकवृक्ष का प्रार्थनामन्त्र यथा-पाद्म में—हे सीतादेवी के शोक को नाश करने वाले अशोकवृक्ष ! सर्वदा आनन्दरूप आपको नमस्कार । आप पातिव्रत धर्म्म को देने वाले हैं । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से सर्वदा आनन्दयुक्त होकर सौभाग्य, सुख का अनुभव करता है ॥ ७९ ॥

अनन्तर अशोकमालिनी वनदेवता प्रार्थनामन्त्र यथा—हे अशोकमालिनि ! वर देने वाली आपको नमस्कार । हे अशोकवन के रक्षक देवताओं आप सबको नमस्कार। आप सब प्रसन्न होवें । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार नमस्कार करे तो मनुष्यों का अधिष्ठाता और लक्ष्मीवान् होकर जन्म लेता है ॥ ८० ॥

अनन्तर अघासुरवधस्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मुक्ति स्वरूप अघासुर के वधस्थल ! आप को नमस्कार । आप मोक्ष के देने वाले हैं ; कृष्ण कर्तृक आप मुक्त हुए हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो समस्त पापों से मुक्त होकर विष्णुसायुज्य लाभ करता है। अनन्तर २ कोश प्रमाण से भाण्डीरवन की परिक्रमा करें । इति यह भाण्डीरवन की महिमा का वर्णन हुआ है ॥ ८१ ॥

इति भास्करनन्दन नारायणभट्ट गोस्वामी विरचित व्रजभक्तिविलासग्रन्थ का व्रजमहिमानिरूपण नामक नवम अध्याय का अनुवाद समाप्त ।

अब छत्रवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । कौर्म्य में—भाद्र शुक्ला सप्तमी को ज्येष्ठा नक्षत्र के संयोग

ततो सूर्य्यकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

भास्कराय नमस्तुभ्यं प्रतिविंबस्वरूपिणे । रविपतनसंभूत तीर्थराज वरप्रद ! ॥
इत्येकादशभि र्मन्त्रमज्जनाचमनै र्नमन् । कृतकृत्य भवेल्लोको पुनर्जन्म न विद्यते ॥
ततो प्रदक्षिणां कुर्य्यात्सपादद्वयक्रोशजां । स्वर्णरुक्ममयं छत्रं कृत्वा च हरयेऽर्पयेत् ॥
छत्रधारी भवेल्लोको ह्यखण्डपदसंस्थितः । सहस्रगुनितं पुन्यं फलमाप्नोति मानवः ॥
इति छत्रवनस्यापि प्रदक्षिणमुदाहृतम् । इति छत्रवन प्रदक्षिणा ॥ २ ॥

अथ खदिरबनप्रदक्षिणा । आदिवाराहे—

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु गत्वा खद्रबनं शुभं । प्रार्थनां कुरुते यस्तु शुचिर्भूत्वा समाश्रितः ॥

ततो खदिरबनप्रार्थनमन्त्रः—

नमः खद्रबनायैव नानारम्यविभूतये । देवगन्धर्व्वलोकानां वरदाय नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । सर्वं कामानवाप्नोति मुक्तिमाप्नोति मानवः ॥३॥

ततो माधवकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

तीर्थराज नमस्तुभ्यं माधवस्तपनोद्भव ! । त्रिवर्गफलदायैव नमस्ते मोक्षदायिने ॥
इति द्वादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनै र्नमन् । परमैशं पदं लब्धा विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥
सपादक्रोशसंख्येन प्रदक्षिणमथाचरेत् । इति खद्रबनस्यापि कुर्य्यात् सांगप्रदक्षिणां ॥
इति खदिरबनप्रदक्षिणा ॥ ४ ॥

में छत्रबन में रहकर प्रार्थना करे । मन्त्र यथा—हे गोपिका युक्त श्रीकृष्ण ! छत्रधारी आपको नमस्कार । आप इन्द्रादि देवताओं को वर देने वाले हैं । इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से मनुष्य छत्रधारी राजा होता है इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ १ ॥

अनन्तर सूर्य्यकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे भास्करदेव ! प्रतिविम्ब स्वरूप आपको नमस्कार । हे सूर्य्य के पतन से उत्पन्न तीर्थराज ! आप वर को देने वाले हैं । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक स्नानाचमन प्रणाम करें तो मनुष्य कृतकृत्य होकर पुनर्जन्म से रहित होता है । अनन्तर २। कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करे । सुवर्ण, चाँदी का छत्र बनाकर हरि को अर्पण करने से छत्रधारी होकर अखण्ड पद को प्राप्त होता है तथा उसका पुण्य शतगुण होता है ॥ २ ॥

अब खदिरवन का प्रार्थनामन्त्र कहते हैं । आदिवाराह में—भाद्र शुक्ला चतुर्थी को खदिरबन जाकर शुद्ध भाव से प्रार्थना करे । मन्त्र यथा—हे नाना प्रकार मनोहर विभूति स्वरूप ! हे देवता,गन्धर्व, मनुष्यों को वर देने वाले खदिरवन ! आपको नमस्कार है । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार प्रणाम करे तो समस्त कामना प्राप्त करके मुक्तिभागी होता है ॥ ३ ॥

वहाँ माधवकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे तीर्थराज माधवकुण्ड ! आपको नमस्कार । आप माधव के स्वपन से उत्पन्न, त्रिवर्ग फल और मोक्ष को देने वाले हैं । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक मज्जन, स्नान, नमस्कार करें तो मनुष्य परम ऐश्वर्य्य के लाभ पूर्वक विष्णुसायुज्य का भागी होता है । १। कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥ ४ ॥

अथ लोहवनप्रदक्षिणा । वायुपुराणे -

एकादश्यां सिते पक्षे मासि भाद्रपदे शुभे । गत्वा लोहवनं श्रेष्ठं प्रार्थनं कुरुते नरः ॥

प्रार्थनामन्त्रः—

लोहजघानसम्भूत कलाकाष्ठास्वरूपिणे । सर्ववाधाविमुक्ताय नमस्ते लोहसंज्ञके ! ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य विंशसंख्या नतिंचरेत् । रोगस्य दर्शनं नैव कदाचित्तस्य जायते ॥५॥

ततो जरासन्धाक्षौहिणीपराजयस्थानप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णविजयिने तुभ्यं सूर्य्यकुंडसमाह्वय ! । नमस्ते तीर्थराजाय सर्वकल्मषनाशने ! ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य मज्जनाचमनैं र्नमन् । त्रैलोक्यविजयी भूयाद्धर्मपाल इव स्थितः ॥

इति लोहवनस्यापि प्रदक्षिणमुदाहृतम् ॥ ६ ॥

अथ भद्रवनप्रदक्षिणा । भविष्योत्तरे—भाद्र शुक्लर्षिपञ्चम्यां शुभं भद्रवनं गतः ।

प्रार्थनमन्त्रः—भद्राय भद्ररूपाय सदा कल्याणवर्द्धने । अमंगलच्छिदे तस्मै नमो भद्रवनाय च ॥

इत्येकोनशतावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । नानाविविधकल्याणैः परिपूर्णसुखं लभेत् ॥७॥

ततो भद्रसरः स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

यज्ञस्नानस्वरूपाय राज्याखंडपदप्रद ! । तीर्थराज नमस्तुभ्यं भद्राख्यसरसे नमः ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैं र्नमन् । अखंडपदराज्यं च लभते नात्र संशयः ॥ ८ ॥

ततो भद्रेश्वरमहादेवप्रार्थनमन्त्रः—

भद्रेश्वराय देवाय सर्वदा शुभदायिने । नमो भद्रस्वरूपाय वामदेव नमोस्तु ते ॥

इत्येकादशभिर्मन्त्रं गालिनी मुद्रया नमन् । सर्वकल्याणसंपन्नो शिवलोकमवाप्नुयात् ॥

पादोनद्वयक्रोशेन प्रदक्षिणमथाकरोत् । प्रदक्षिणा समाख्याता नामभद्रवनस्य च ॥

इति भद्रवनप्रदक्षिणा ॥ ९ ॥

अब लोहवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वायुपुराण में—भाद्रमास शुक्ल एकादशी तिथि में लोहवन में जाकर प्रार्थना करें । मन्त्र यथा—हे लोहजंघान से उत्पन्न कला की काष्ठा स्वरूप लोहवन ! समस्त बाधा से निर्मुक्त होने के लिये आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २० बार प्रणाम करे तो उसको कभी रोग नहीं दीखेगा ॥ ५ ॥

अनन्तर जरासन्ध की अक्षौहिणी सेना का पराजयस्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे कृष्ण-विजयस्थल ! हे सूर्यकुण्ड नाम से ख्यात समस्त कल्मष नाशकारी तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक मज्जन, स्नानादि करने से तीन लोक में विजय पाता है । अथ लोहवन की परिक्रमा करें ॥६॥

अब भद्रवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । भविष्योत्तर में—भाद्र शुक्ल ऋषि पञ्चमी में भद्रवन जावें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे भद्र स्वरूप भद्रवन ! सर्वदा कल्याणदाता अमंगल नाशक आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ९९ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से नाना प्रकार का कल्याण, सुख प्राप्त होता है ॥७॥

वहाँ भद्रसरोवर है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र—हे भद्र नामक सरोवर ! हे तीर्थराज ! आपको नमस्कार । आप यज्ञस्थान स्वरूप हैं व अखण्ड राज्य पद को देने वाले हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन करें तो अखण्ड राज्य पद को लाभ करता है ॥ ८ ॥

अथ बिल्वबनप्रदक्षिणा । भविष्योत्तरे—

द्वादश्यां शुक्लपक्षे तु मासि भाद्रपदे तिथौ । गत्वा बिल्वबनं श्रेष्ठं प्रार्थनं च समाचरेत् ॥

ततो बिल्वबनप्रार्थनमन्त्रः—

तपःसिद्धिप्रदायैव नमो बिल्वबनाय च । जनार्दन नमस्तुभ्यं बिल्वेशाय नमोस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । लोकानां जायते पूज्यो शिवतुल्यवरप्रदः ॥१०॥

ततो बकासुरवधस्थानप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णवरप्रसादाय बकासुरबधस्थल ! । नमस्ते मुक्तिरूपाय वैष्णवपददायिने ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य षोडश प्रणतींचरेत् । वैष्णवपदमालभ्य लोकानां वरदोऽभवत् ॥ ११ ॥

ततो नारदकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

नन्दादिसर्वगोपानां तीर्थस्नपनसंभवः । तीर्थराज ! नमस्तुभ्यं नन्दकुण्ड नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य दशभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत गोधनादिभिः संयुतः ॥१२॥

ततो मानमाधुरीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपीमानोद्भव क्रीडाजलकेलिसमुद्भव ! । माधुरीकृततीर्थाय नमस्ते वरदायिने ! ॥

इति सप्तदशावृत्या मज्जनाचमनैं नमन् । कलत्रगृहसौख्याद्यैः संयुतो सुखमन्वभूत् ॥

ततो बिल्वबनस्यापि क्रोशार्द्धं च प्रदक्षिणां । कुरुते लभते सौख्यं धनधान्यसमाकुलं ॥

इति बिल्वबनप्रदक्षिणा ॥ १३ ॥

वहाँ भद्रेश्वर महादेव हैं। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे भद्रेश्वर महादेव ! आप सर्वदा भद्र को देने वाले हैं। भद्ररूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक मालिनीमुद्रा दिखाकर नमस्कार करें तो समस्त कल्याणों से सम्पन्न होकर शि लोक को जाता है। अनन्तर १॥ कोश प्रमाण से भद्रबन की परिक्रमा करे ॥ ६ ॥

अब बिल्वबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। भविष्योत्तर में—भाद्रपद शुक्लपक्ष द्वादशी में बिल्वबन जाकर प्रार्थना करें। मन्त्र यथा-हे तपस्या सिद्धि के देने वाले बिल्वबन ! आपको नमस्कार। हे जनार्दन ! हे बिल्वबन के स्वामी ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करने से मनुष्यों में पूज्य और शिवजी के तुल्य वरदाता होता है ॥ १० ॥

अनन्तर बकासुरबधस्थान है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे बकासुरबधस्थल ! मुक्तिरूप, वैकुण्ठ पद के दाता आपको नमस्कार है। आप श्रीकृष्ण के प्रसाद के लिये हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १६ बार प्रणाम करे तो वैष्णवपद का लाभ और वरदाता होता है ॥ ११ ॥

अनन्तर नन्दकुण्ड है। स्नानाचमनमन्त्र यथा—हे नन्दादि समस्त गोपों के तीर्थ ! हे उन्हीं का स्नान से उत्पन्न ! हे तीर्थराज नन्दकुण्ड ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार स्नान, आचमन, नमस्कार करे तो गोधन से सुखी होता है ॥ १२ ॥

अनन्तर मानमाधुरीकुण्ड है। स्नानाचमनमन्त्र यथा-हे गोपियों के मान से उत्पन्न क्रीडारूप ! हे जलक्रीड़ा से उत्पन्न ! हे माधुरीकृत तीर्थ ! वर देने वाले आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करने से कलत्र, गृह से सुखी होता है। अनन्तर बिल्वबन की आधा कोश

अथ बहुलावनप्रदक्षिणा । मात्स्ये—

द्वादश्यां भाद्रकृष्णे तु बहुलाख्यं सखीवनं । गतस्तु प्रार्थनां कुर्य्यान्मन्त्रमेनं समुच्चरन् ॥

ततो बहुलावनप्रार्थनमन्त्रः—

बहुलासखीरम्याय बहुलाख्यवनाय च । नमः पुत्रप्रदायैव पद्मनाभेश्वराय च ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । पुत्रवान् धनवान् गोमान् लोकपूज्यो भवेन्नरः ॥१४॥

ततो संकर्षणकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

अग्रजस्नपनोद्भूत तीर्थसंकर्षणाह्वय ! । तीर्थराज नमस्तुभ्यं सर्वपापौघनाशनः ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । सर्वसंकष्टनिर्म्मुक्तो वाञ्छितं फलमाप्नुयात् ॥१५॥

ततो कृष्णकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णस्नपनसंजात कृष्णकुंड नमोऽस्तु ते । सप्तवर्णजलाल्हाद सर्वदा कृष्णवल्लभ ! ॥

इति त्रयोदशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । कृष्णतुल्यबलोद्भूतो शतनारीपतिर्भवेत् ॥

क्रोशद्वयप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् । बहुलायाः वनस्यापि धनधान्यसमाकुलः ॥

इति बहुलावनप्रदक्षिणा ॥ १६ ॥

अथ मधुबनप्रदक्षिणा । वाराहे—

एकादश्यां च भाद्रेऽस्मिन् कृष्णपक्षे व्रतोत्सवे । गच्छेन्मधुवनं श्रेष्ठं प्रार्थनां क्रियते शुचिः ॥

ततो मधुबनप्रार्थनमन्त्रः—

मधुदानसमुद्भूत सहस्रगुणितार्थदः । माधवेशाय रम्याय नमो मधुबनाय च ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य पंचभिःप्रणतीं चरेत् । नित्यैव माधवस्यापि स्वप्ने दर्शनमाप्नुयात् ॥१७॥

से परिक्रमा करें । धन, धान्य, सुख लाभ करता है ॥ १३ ॥

अब बहुलावन की प्रदक्षिणा कहते हैं । मात्स्य में—भाद्र कृष्णा की द्वादशी में बहुलावन को जाकर मन्त्र उच्चारण पूर्वक प्रार्थना करें । मन्त्र यथा-हे बहुलासखी द्वारा मनोहर बहुला नामक बन ! हे पुत्र, पौत्र को देने वाले आपको नमस्कार । हे पद्मनाभ ! हे ईश्वर ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करने से मनुष्य पुत्रवान् , धनवान् , गोमान् और लोकपूज्य होता है ॥१४॥

अनन्तर संकर्षणकुंड है । स्नानाचमन मन्त्र यथा-हे बड़े भैया बलदेव के स्नान से उत्पन्न संकर्षण नामक तीर्थराज ! समस्त पापों का नाश करने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नानाचमन प्रणाम करें तो समस्त क्लेशों से मुक्त होकर वाञ्छित फल को प्राप्त होता है ॥१५॥

अनन्तर कृष्णकुण्ड स्नान, आचमन, मन्त्र कहते हैं । हे श्रीकृष्ण के स्नान से उत्पन्न कृष्णकुण्ड ! आपको नमस्कार । आप सात प्रकार वर्णों से आल्हाद प्राप्त तथा कृष्ण के परमवल्लभ हैं । इस मन्त्र के १३ बार पाठ करके मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो मनुष्य कृष्ण के तुल्य शतनारी का पति होता है । अनन्तर २ कोश प्रमाण से बहुलावन की प्रदक्षिणा करे तो धनधान्य से सुखी होता है ॥१६॥

अब मधुबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वाराह में—भाद्रमास कृष्णा एकादशी में श्रेष्ठ मधुबन को जाकर प्रार्थना करें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मधुदानव से उत्पन्न ! हे सहस्रगुण अर्थ को देने वाले मधुबन ! आपको नमस्कार । हे माधव ! हे ईश ! हे मनोहर ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक

ततो विदुरस्थानप्रार्थनमन्त्रः—

विदुरस्थान रम्याय सर्वकामार्थदायिने । नमः काञ्चनवैडूर्य्यमणिमुक्तामयाय च ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । काञ्चनाद्यैः कृतैरम्यैः हर्म्याद्यैः सुखमन्वभूत् ॥१८॥

ततो मधुसूदनकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

मधुसूदनकुण्डाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते । पीतरक्तसितश्यामनिर्म्मलक्षीरपूरितः ॥

इति चतुर्द्दशावृत्या मज्जनाचमनै र्नमन् । विष्णुलोकमवाप्नोति कृतकृत्यो भवेन्नरः ॥

सार्द्धक्रोशप्रमाणेन कुर्य्यात्सांगप्रदक्षिणां । मधुदानं च विप्राय कांस्यपात्रे निधाय च ॥

कांस्यपात्रं प्रस्थमानं मधुपूर्णं मनोरमं । दानेन सर्वदेष्टं स यथा सौख्यमवाप्नुयात् ॥

लवणासुरबधस्थान लवणासुरगुफा शत्रुघ्नकुंड शत्रुघ्नमूर्त्तिप्रार्थनस्नानाचमनं पूर्वोक्तमन्त्रविधानेन कुर्य्यात्॥

इति मधुबनप्रदक्षिणा ॥ १६ ॥

अथ मृद्वनप्रदक्षिणा । वाराहे—

प्रार्थनामंत्रः-भद्रस्वरूपिणे तुभ्यं मृद्वनाय नमो नमः । आवाससुखदायैव परिपूर्णवरप्रद ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिः प्रणतिंचरेत् । सर्वार्थं परिपूर्णं तु गृहसौख्यमवाप्नुयात् ॥

यत्रैव गृहदानं स कुर्य्यात्पूर्णमनोरथैः । परस्मिन्निहलोकेऽस्मिन्सहस्रगुणितं फलं ॥२०॥

ततो प्रजापतिस्थानप्रार्थनमन्त्रः—

त्रैलोक्यसुखरम्याय प्रजापतिविनिर्म्मित ! । नमः कैवल्यनाथाय मुक्तये मुक्तरूपिणे ॥

इति मन्त्रं षडावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । धनधान्यसमृद्धिस्तु परिपूर्णसुखं लभेत् ॥

सार्द्धक्रोशत्रयेणैव प्रदक्षिणमथाकरोत् । मृद्वनस्य महाभाग कमभंगविवर्जितः ॥

इति मृद्वनप्रदक्षिणा ॥ २१ ॥

---

४ बार प्रणाम करें तो नित्य माधव के स्वप्न में दर्शन करता है ॥ १७ ॥

अनन्तर विदुरस्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे विदुरस्थान ! मनोहर आपको नमस्कार । आप समस्त काम, अर्थ को देने वाले हैं और आप सुवर्ण, वेडूर्य्य मणिमय स्वरूप हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार प्रणाम करें तो काञ्चनादि घर मिलता है ॥ १८ ॥

अनन्तर मधुसूदनकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मधुसूदनकुण्ड ! तीर्थराज आप को नमस्कार । आप पीले, रक्त व सफेद निर्म्मल दुग्ध से परिपूर्ण हैं । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो मनुष्य कृत्य २ होकर विष्णुलोक को जाता है । डेढ़ कोश प्रमाण से सांग प्रदक्षिणा कर प्रस्थ परिमाण काँसा पात्र में मधु परिपूर्ण द्वारा दान करें तो सर्वदा इष्ट प्राप्ति होती है । अनन्तर लवणासुरवधस्थान, लवणासुरगुफा, शत्रुघ्नकुण्ड, शत्रुघ्नमूर्त्ति की पहिले कहे गये मन्त्र के अनुसार प्रार्थनादि करें ॥ १६ ॥

अब मृद्वन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वाराह में—प्रार्थनामन्त्र यथा—हे सुभद्र रूपि मृद्वन ! आप को नमस्कार । आप वास सुख, और परिपूर्ण वर को देने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार प्रणाम करने से सर्वदा गृहसुख प्राप्त होता है । वहाँ गृहदान करने से इहलोक परलोक में सहस्रगुण फल का लाभ करता है ॥ २० ॥

अथ जन्हुवनप्रदक्षिणा । भविष्ये—

आषाढ़ कृष्णपञ्चम्यां व्रजयात्रापरिक्रमे । गच्छेज्जन्हुबनं श्रेष्ठं जन्हुना निर्म्मितं स्थलं ॥
प्रार्थनामन्त्रः-जन्हुर्षिनिर्म्मितावास रमणीकायभूमये । जान्हवीपावनार्थाय वनाय च नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । गंगास्नानजं पुण्यं नित्यमेव फलं लभेत् ॥२२॥

ततो वामनकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

वामनकृततीर्थाय जन्हुपूज्यवरप्रद । सदा पावनरूपाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य मज्जनाचमनं नमन् । त्रैलोक्यविजयीभूयात् लोकानामतिवल्लभः ॥
क्रोशद्वयप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् । जन्हुवत्सिद्धिमाप्नोति लोकपूज्यो भवेद्भुवि ॥
इति जन्हुवनप्रदक्षिणा व्रजयात्राप्रसंगे ॥ २३ ॥

अथ मेनिकावनप्रदक्षिणा । स्कान्दे—

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयायां व्रजयात्राप्रसंगके । मेनिकायाः वनं गत्वा प्रार्थनं च समाचरेत् ॥
नानाकल्हाररम्याय सख्या मेनिकया कृत । नमः परमकल्याण नमस्ते मेनिकाह्वय ! ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । मैनाकोद्भवरत्नैश्च परिपूर्णसुखं लभेत् ॥२४॥

ततो रम्भासरस्नानाचमनमन्त्रः—

रम्भास्नानहेलाढ्य रम्भायाः सरसे नमः । तीर्थराज नमस्तुभ्यं दिव्यरूपाभिधायिने ॥
इति चतुर्दशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । सदा दिव्यांगरूपत्वं विमलं जायते भुवि ॥

अनन्तर प्रजापतिस्थान है । प्रार्थनामन्त्र—हे तीनलोक में मनोहर प्रजापति कर्तृक विनिर्म्मित कैवल्य नायक प्रजापतिकुण्ड ! मुक्ति स्वरूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से धन, धान्य समृद्धि लाभ होता है । ३॥ कोश प्रमाण में प्रदक्षिणा करें । मृदङ्ग का क्रम भंग नहीं है ॥ २१ ॥

अब जन्हुवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । भविष्य में—आषाढ़ कृष्णा पञ्चमी में जन्हुवन की यात्रा करें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे जन्हु ऋषि द्वारा निर्मित रमणीय भूमिस्थल ! हे जन्हुवन ! आप गंगा के के तुल्य पावन हैं आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो नित्य गंगा स्नान का फल मिलता है ॥ २२ ॥

अनन्तर वामनकुण्ड है । स्नानाचमनमन्त्र यथा—हे वामन द्वारा रचित तीर्थ ! हे जन्हुपूज्य ! हे वरप्रद ! सर्वदा पवित्र रूप तीर्थराज आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक स्नान, आचमन करें तो तीन लोक में विजयी और लोकप्रिय होता है । २ कोश प्रमाण से परिक्रमा करें तो जन्हु के न्याय पूज्य होता है । यह व्रजयात्राप्रसंग में जन्हुवनयात्रा है ॥२३॥

अब मेनिकावन की प्रदक्षिणा कहते हैं । स्कान्द में—ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया में व्रजयात्रा प्रसंग से मेनिकाबन को जावे । प्रार्थनामन्त्र—हे मेनिका नामक सखी द्वारा रचितस्थल ! हे नाना प्रकार के कल्हार से परिपूर्ण मेनिकाकुण्ड ! हे परमकल्याण स्वरूप ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार प्रणाम करने से मैनाक उत्पन्न रत्नों से परिपूर्ण सुख का लाभ करता है ॥ २४ ॥

अनन्तर रम्भा सरोवर है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे रंभा के स्नान से उत्पन्न रम्भा

साद्धकोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् । चतुर्द्दशगुणं पुण्यं फलमाप्नोति मानवः ॥
इति व्रजयात्राप्रसंगे मेनिकाबनप्रदक्षिणा ॥ २५ ॥

अथ कजलीबनप्रदक्षिणा । लगे—
ज्येष्ठकृष्णचतुर्थ्यां च कजलीवनमाप्नुयात् । प्रार्थनां कुरुते यस्तु व्रजयात्राप्रसंगतः ॥
ततो कजलीबनप्रार्थनमन्त्रः—
शक्राय देवदेवाय वृत्रघ्ने शर्मदायिने । कजलीबनसंज्ञाय नमस्ते करिदायिने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य पञ्चभिः प्रणतिं चरेत् । हस्तिबंधो भवेल्लोको धनधान्यसमाकुलः ॥२६॥
ततो पुंडरीकसरः स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
पुण्डरीककृतोद्भूत तीर्थराज नमोऽस्तु ते । शक्रैश्वर्य्यप्रदायैव पीतवारिवरप्रदे ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । पुण्डरीककृताद् यज्ञात् स्नपनफलमाप्नुयात् ॥
कोशमेकं प्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् । हस्तिदानं करोत्यत्र सहस्रगुणितं फलं ॥
इति व्रजयात्राप्रसंगे कजलीबनप्रदक्षिणा ॥ २७ ॥

अथ बनयात्राप्रसंगे नन्दकूपबनप्रदक्षिणा । विष्णुपुराणे—
भाद्रशुक्लद्वितीयायां नन्दकूपवनं गतः । श्रेष्ठकाम्यवनस्यापि प्रदक्षिणप्रसंगतः ॥
ततो नन्दकूपबनप्रार्थनमन्त्रः—
नन्दकूपबनायैव गोपानां वरदायिने । तापार्त्तिहरये तुभ्यं नमस्त्वाल्हादवर्द्धिने ॥
इति मन्त्रं चतुर्भिस्तु नमस्कारं समाचरेत् । सकलेच्छाफलं लब्ध्वा अन्ते विष्णुपदं गतः ॥२८॥
ततो दीर्घनन्दकूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
अतिविस्तृतकूपाय नन्दादिरचिताय च । तीर्थराज नमस्तुभ्यं सर्वदा तृट्प्रशान्तये ॥

सरोवर ! दिव्य रूपधारी तीर्थराज आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो सर्वदा दिव्यांग रूप को प्राप्त होता है । साद्धकोश प्रमाण से परिक्रमा करने से चौदह गुणे फल को प्राप्त होता है । यह व्रजयात्राप्रसंग में मेनिकाबन है ॥ २५ ॥

अब कजलीबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । लैंग में—ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी में कजलीबन को प्राप्त करें। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे शक्र ! हे देवदेव ! हे सर्वदा वर को देने वाले कजलीबन ! आपको नमस्कार । आप हस्ती को देने वाले हैं, इस मन्त्र के पाठ पूर्वक पाँच बार प्रणाम करने से घर में हाथी बँधता है ॥२६॥

अनन्तर पुण्डरीकसरोवर है । प्रार्थनस्नानमन्त्र यथा—हे पुण्डरीक कर्तृक उत्पन्न तीर्थराज ! आपको नमस्कार । आप इन्द्र ऐश्वर्य्य को देने वाले हैं । आप में पीला जल है । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो पुण्डरीक कर्तृक किया हुआ यज्ञ का फल प्राप्त होता है । एक कोश प्रमाण से परिक्रमा विधि है । यहाँ हस्ती दान करने से सहस्रगुण फल को प्राप्त होता है । इति व्रजयात्रा प्रसंग में कजलीबन की प्रदक्षिणा ॥ २७ ॥

अब बनयात्राप्रसंग में नन्दकूप की प्रदक्षिणा कहते हैं । विष्णुपुराण में—भाद्रशुक्लद्वितीया में नन्दकूपबन को जावें । जो काम्यबन प्रदक्षिणाप्रसंग में है । प्रार्थनामन्त्र यथा- हे नन्दकूपबन ! हे गोपों के वरदाता ! तापहरणकारी और आल्हाद को देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ४ बार पाठ

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । आयुरारोग्यमाप्नोति विचरन् पृथिवीतले ॥२८॥
ततो गो गोपालप्रार्थनमन्त्रः—
गोगोपाल समेताय कृष्णाय वरदायिने । नानासुखोपवेष्टाय नमः केलिस्वरूपिणे ॥
इति पंच दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सर्वदा सुखसम्पत्या रमते पृथिवीतले ॥
पादोनत्रयक्रोशेन कुर्य्यात् सांगप्रदक्षिणां । नन्दकूपवनस्यापि गवामधिपतिर्भवेत् ॥
इति वनयात्राप्रसंगे कुशवनप्रदक्षिणा । ब्रह्मांडे—
ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां गत्वा कुशवनं शुभं । प्रार्थनां कुरुते यस्तु पितृणामक्षयप्रदं ॥
ततो कुशवनप्रार्थनमन्त्रः—
पुण्याय पुण्यरूपाय पावनाय नमो नमः । अक्षयफलदायैव नमः कुशवनाय ते ॥
इति त्रयोदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । अक्षयं प्रदमाप्नोति कृतकृत्यो भवेद्भुवि ॥ ३० ॥
ततो मानसरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
मानसिक्यघनाशाय मुक्तये मुक्तिरूपिणे । आल्हादमनसे तुभ्यं नमस्ते मानसाह्वये ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनै र्नमन् । कदा दुःखं न पश्येत सौमनस्यं रमेद्भुवि ॥३१॥
कुर्य्यात् कुशवनस्यापि सपादद्वयक्रोशजां । प्रदक्षिणां समासेन देवपितृवरं लभेत् ॥
इति व्रजयात्राप्रसंगे कुशवनप्रदक्षिणा ॥ ३२ ॥

पूर्वक नमस्कार करें तो समस्त वाञ्छितार्थ लाभ पूर्वक अन्त में विष्णुपद को जाता है ॥२८॥

अनन्तर दीर्घनन्दकूप स्नानप्रार्थनामन्त्र यथा—हे अत्यन्त विस्तृत नन्दादि कर्तृक रचित तीर्थराज आपको नमस्कार । आप तृष्णा को शान्ति करने वाले हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार आचमन, स्नान, प्रणाम करने से आयुष्मान निरोग होकर पृथिवी में विचरता है ॥२८॥

अनन्तर गो गोपालस्थान है । प्रार्थनामन्त्र यथा हे गो गोपाल सहित वरदाता श्रीकृष्ण ! नाना सुख से युक्त केलिरूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १५ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो सर्वदा सुख सम्पत्ति से परिपूर्ण होकर पृथ्वी में विचरता है । ३। कोश प्रमाण से सांग प्रदक्षिणा करें तो गौओं का मालिक होता है ॥ २९ ॥

अब व्रजयात्राप्रसंग मे कुशवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । ब्रह्माण्ड में—ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी में कुशवन को जाकर प्रार्थना करें जो पित्रों को अक्षय प्रद है । प्रार्थनामन्त्र—हे पुण्यरूप ! हे पवित्र स्वरूप ! हे अक्षय फलदाता कुशवन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से कृत्य २ होकर अक्षय फल को प्राप्त होता है ॥३०॥

अनन्तर मानसरोवर स्नान प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मानसिक अघ को नाश करने वाले मुक्तिरूप मानसरोवर ! आल्हाद मन वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो कभी दुःख को नहीं देखता है । २। कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें तो देवताओं का वर तथा पितरों का वर प्राप्त होता है ॥ ३१ ॥

अब ब्रह्मवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । ब्राह्म में—आषाढ़ कृष्ण षष्ठी में ब्रह्मवन को जाकर विधिवत् प्रार्थनादि पूर्वक ब्राह्मण कर्म्म का समाधान करें । प्रार्थनामन्त्र यथा-हे ब्रह्मरूप ! हे त्रिवर्ग फलदाता!

अथ ब्रह्मवनप्रार्थनमन्त्रः । ब्राह्मे—

आषाढ़कृष्णषष्ठयां च गत्वा ब्रह्मवनं शुभं । प्रार्थयेद्विधिपूर्वेण ब्रह्मकर्मवरप्रदः ॥

प्रार्थनमंत्रः-ब्रह्मणे ब्रह्मरूपाय त्रैवर्गफलदायिने । नमः ब्रह्मवनायैव मन्त्रसिद्धिस्वरूपिणे ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । ब्रह्मलोकमवाप्नोति ब्रह्मकर्मवरप्रदः ॥

ततो ब्रह्मयज्ञकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

ब्रह्मयज्ञकृतोद्भूत तीर्थराज नमोऽस्तु ते । देवर्षिमुनिगन्धर्वमनुजपावनाय ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य द्वादशैर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत यज्ञस्नपनजं फलं ॥

पादोनक्रोशमानेन प्रदक्षिणमथाचरेत् । तपःसिद्धिमवाप्नोति लोकानां वरदायकः ॥

इति व्रजयात्राप्रसंगे ब्रह्मवनप्रदक्षिणा ॥ ३३ ॥

अथाप्सरावनप्रदक्षिणा वनयात्राप्रसंगे । शक्रयामले—

भाद्रकृष्णचतुर्दश्यामप्सराणां वनं गतः । प्रार्थनां कुरुते यस्तु परिपूर्णसुखं लभेत् ॥

अप्सरावनप्रार्थनमन्त्रः—

सेन्द्राप्सरमनोरम्य देवावाससुखप्रद । नमो रम्यवनायैव सदानन्दस्वरूपिणे ॥

इति त्रिभिः पठन्मन्त्रं नमस्कारं त्रयं चरेत् । सर्वदा सुखसम्पत्या गृहसौख्यमवाप्नुयात् ॥३४॥

ततोऽप्सराकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

अप्सराहेलयोद्भूत कृष्णेन्द्रस्नपनोद्भव । कल्याणरूपिणे तुभ्यं तीर्थदेव नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं पठित्वा तु षोडशैर्मज्जनाचमैः । सर्वदा विमलो भूत्वा सर्वभोगान्भुनक्ति सः ॥३५॥

यथा चतुर्युगे शक्रः सुराणामधिपो भवत् । तथा चतुर्युगोद्भूताः मत्स्यादयः ध्रुवादयः ॥

अवताराश्चतुर्विंशाः क्रीडन्ते पृथिवीतले ॥ ३६ ॥

हे ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मवन ! मन्त्र सिद्धिरूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है ॥ ३२ ॥

अनन्तर ब्रह्मयज्ञकुण्ड है । स्नानादिमन्त्र यथा—हे ब्रह्मयज्ञ से उत्पन्न ! हे तीर्थराज ! हे देवता, मनुष्य, मुनि, गन्धर्वों के पवित्रकारक ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १२ बार मज्जन, आचमन करने से यज्ञ स्नान फल को प्राप्त होता है । पौन कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करने से सिद्धि को प्राप्त होता है ॥ ३३ ॥

अब अप्सरावन की प्रदक्षिणा कहते हैं । शक्रयामल में—भाद्रकृष्ण चतुर्दशी को अप्सरावन में जाकर प्रार्थना करने से परिपूर्ण सुख को प्राप्त होता है । मन्त्र—हे इन्द्र के साथ अप्सराओं से मनोहर ! हे वास सुखप्रद ! सर्वदा आनन्द स्वरूप रम्यवन आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो सर्वदा सुख सम्पत्ति का लाभ करता है ॥ ३४ ॥

अनन्तर अप्सराकुण्ड स्नानाचमनप्रार्थनामन्त्र कहते हैं । हे अप्सराओं की हेला भाव से उत्पन्न ! हे श्रीकृष्ण और इन्द्र के स्नान से उद्भव कल्याणरूप तीर्थदेव ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १६ बार मज्जन, आचमन, करें तो सर्वदा विशुद्ध होकर भोग समूह को भोगता है ॥ ३५ ॥

जिस प्रकार चार युग में इन्द्र देवताओं का मालिक होता है उस प्रकार मत्स्यादि, ध्रुवादि २४ अवतार चार युग में प्रकट होकर क्रीड़ा करते हैं ॥ ३६ ॥

विष्णुधर्मोत्तरे—

मत्स्य कूर्म्म वराह वामन हरि बौद्ध पृथुसंज्ञकः । प्रल्हादोऽथ नृसिंहव्यासभृगुजो धन्वन्तरिसंज्ञकः ॥
एते द्वादशावतार कथिताः सत्योद्भवाः पावना । क्रीडार्थं पृथिवीतलेऽशुभहराः पापौघनाशाय ते ॥
इति सत्ययुगोद्भूतावताराः हरेः स्वयं । प्रसंगतः समाख्याताः पृथिवीतलभूतये ॥ ३७ ॥
त्रेतोद्भवो भार्गवरामनाम पुनश्च रामो रघुवंशसंभवः ।
मुनिश्च जातो कपिलाभिधानस्त्रयोवताराः शुभदा भवंतु ॥ ३८ ॥
दत्तात्रेय ध्रुवश्च नारदमुनिः हंसावतारो हरिः । श्रीदेवो ऋषभावतारमनुजो ग्रीवोऽर्जुनो पाण्डवः ॥
शेषो श्रीबलदेवसंज्ञकहरिः कृष्णः यशोदासुतः । एते द्वापरसंभवाः नवभिधाः लोके सदा पावनाः ॥३९॥
कल्की संभरसंभवो हरिहयः कल्युद्भवो केशवः । इत्येता कथितावतारगणनाः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥
चतुर्विंशावताराणां कृष्णो क्रीडाविष्टो भवत् । इति चतुर्युगोद्भवाश्चतुर्विंशावताराः ॥४०॥

अथ प्रसंगाच्चतुर्युगोत्पन्नधान्यादयः । वायुपुराणे—

श्वेताभतंदुलाश्चैव मुद्गगोधूम शर्कराः । तिलशृंगाटकं चैव लवणं दुग्धगोलकं ॥
इत्येतत्कथितं सर्वं कार्य्यं सत्ययुगोद्भवं । रक्ततंदुलमाषश्च मुंटकं गूमसूरिका ॥
बज्रधान्यसितारक्ता समासर्करलड्डुकं । एतत् त्रेतायुगोत्पन्नं बटकं मापसंभवं ॥
विश्वामित्रप्रियं धान्यं रचितं सृष्टिहेतवे । यवचणकमाराही मंठी सर्करभद्रकं ॥
एतद्द्वापर संभूतं पक्वान्नं धान्यसंचयं । कोद्रवसर्षपार्पी च पुस्तमुस्तागुडं तथा ॥
पूपाभिधान पक्वान्नं कलिकाले समुद्भवं । इति चतुर्युगोत्पन्नधान्यानि ॥

अथ चतुर्युगोत्पन्नशाकादयः । भविष्ये—

कुष्मांड कर्कटी हाल्य तुंबराद्रकभूमिजः । मुरला कर्करा एते युगसत्यसमुद्भवाः ॥
सरदा कदलीवुंता चूकडांडम पर्पटं । कर्णदूर्वात्रनीकंदलवणाख्या उदाहृताः ॥
एते त्रेतायुगोद्भूताः शाकानैवेद्यसंज्ञकाः । सुवापालाग्निर्मिथीका तूर्या बिम्बावल्केङ्किका ॥
बर्डराफद्दकीख्यातः शाकाः द्वापरसंभवाः । मूर्या भिंडी करेला च रक्तकंडार्यचैंचिका ॥
आयोलेषु चतुःपर्णा गर्जरी दद्रु मद्दकाः । सटी कनकगाह्ये ते शाकाः कलिसमुद्भवाः ॥
इति चतुर्युगोद्भवाः शाकाभिधाः ।

विष्णुधर्म्मोत्तर में कहा है—मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, हरि, बुद्ध, पृथु, प्रल्हाद, नृसिंह, व्यास, भृगुज, धन्वन्तरि सत्ययुग उद्भव अवतार हैं। यह सब पाप नाश के लिये पृथिवी पर विविध क्रीड़ा करते हैं ॥ ३७ ॥

त्रेतायुग में परशुराम, राम, कपिल अवतीर्ण होते हैं ॥ ३८ ॥

दत्तात्रय, ध्रुव, नारद, हंस, हरिदेव ऋषभ, हयग्रीव, अर्जुन, बलदेव, श्रीकृष्ण द्वापर युग में अवतीर्ण होते हैं ॥ ३९ ॥

कलियुग में कल्की अवतीर्ण होता है। श्रीकृष्ण यह सब अवतार धारण करके क्रीडाविष्ट होते हैं। यह चारयुग में २४ अवतार कहे गये हैं ॥ ४० ॥

अब प्रसंग पूर्वक चार युग में उत्पन्न धान्यादि वस्तुओं का निर्णय करते हैं। मूल श्लोक देखें।

अथ चतुर्युगोद्भवपुष्पाण्याह । भविष्योत्तरे-

सत्योद्भवानि पुष्पाणि ह्येतानि कथितानि च । गुलदागैंदका चारु गुलाब गुड हर्दकः ॥
चंपा ह्येतानि पुष्पाणि त्रेतोद्भूतान्युदाहृताः । कदम्बकुसुमामोदशिरी द्वापरसंभवाः ॥
गुलाबांस गुला तूर्या स्वर्णाजूथी च नीरजः । कल्युद्भवानि पुष्पानि चतुः फलप्रदानि च ॥
इति चतुर्युगोद्भवानि पुष्पाणि ।

अथ चतुर्युगोद्भवाः धातवः । पाद्मे—

स्वर्णपैतलिजो धातु. युगसत्यसमुद्भवः । रुकमजस्तद्दढं लौहं त्रेतायुगसमुद्भवं ॥
कांस्यताम्रद्वयं धातुं युगद्वापरसंभवः । रंगधातुसमुत्पन्नं कलिकाले मनोरमं ॥
इति चतुर्युगोद्भवाः धातवः ।
सत्योद्भवे वसेल्लक्ष्मी स्त्रेतोद्भूते शिवो भवेत् । द्वापरोद्भवधान्यादौ परमानन्दमाप्नुयात् ॥
कल्युद्भवे च धान्यादौ समता फलमाप्नुयात् ॥ इति प्रासंगिकः ॥

अथ वनयात्राप्रसंगे विट्ठलवनप्रदक्षिणा । देवीपुराणे—

भाद्र शुक्ल चतुर्थ्यां च विट्ठलाख्यवनं गतः ।

विट्ठलवनप्रार्थनमन्त्रः—

कदम्बलतिकाकीर्ण वरविट्ठलदायिने । विट्ठलाख्याय रम्याय वनाय च नमो नमः ॥
इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा नमस्कारं समाचरेत् । सदा सौख्यमवाप्नोति धनधान्यसमाकुलः ॥४१॥

ततो विट्ठलकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

विट्ठलपरमाल्हाद तीर्थराज नमोऽस्तु ते । सर्वपापच्छिदे तस्मै कुण्डविट्ठलसंज्ञकः ॥
इति मन्त्रं षडावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । परमं संपदं लब्ध्वा सर्वदा सुखमासते ॥ ४२ ॥

ततो विट्ठलस्वरूपेक्षणप्रार्थनमन्त्रः—

कदम्बलतिकास्थाय ससख्ये हरये नमः । विशाखाललितायैव राधायै सततं नमः ॥
षड्भिस्तूच्चरते मन्त्रं प्रणामं षट् समाचरेत् । कृत्यकृत्यो भवेल्लोकस्त्रैलोक्यसुखमाप्नुयात् ॥४३॥

ततो संकेतेश्वर्य्यवीक्षणप्रार्थनमन्त्रः—

ललितावरदायैव नमस्ते परमेश्वरि ! संकेतप्रदक्षिण्यै सकलायै वरप्रदे ! ॥

अब वनयात्रा प्रसंग में विट्ठलवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । देवीपुराण में—भाद्र शुक्ला चतुर्थी में विट्ठलवन को जाकर प्रार्थना करे । मन्त्र यथा—हे कदम्ब लतिका से व्याप्त विट्ठल करने वाले विट्ठल नामक वन ! मनोहर आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से सर्वदा सुखी होता है॥४१

अनन्तर विट्ठलकुण्ड का स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे परम विट्ठल आल्हाद स्वरूप तीर्थराज ! विट्ठल नामक वन आपको नमस्कार है । आप समस्त पापों को नाश करने वाले हैं । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो परम ऐश्वर्य्य पद को लाभ कर सुखी होता है ॥ ४२ ॥

अनन्तर विट्ठल स्वरूप की प्रार्थना करें । मन्त्र यथा—हे कदम्बलता में विराजित सखियों के साथ श्रीहरि ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक ६ बार प्रणाम करें तो मनुष्य कृत्य कृत्य होकर त्रैलोक के सुख को पात्र होता है ॥ ४३ ॥

इति त्रयोदशावृत्या साष्टांगप्रणतिंचरेत् । परमायुश्चिरंजीवं लभते वल्लभं सुतं ॥४४॥
ततो सखीगोपिकागानभोजनस्थलमंडलप्रार्थनमन्त्रः—
नानाल्हादमनोरम्य भोजनस्थलसंज्ञके ! । नमो ज्ञानप्रदीप्ताय मंडलाय शुभप्रद ! ॥
इति षोडशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । नानाबहुविधैर्भोगैः परिपूर्णसुखं लभेत् ॥
कुमारीणां करोत्यत्र पूजनं वस्त्रभोजनैः । परिपूर्णसुखं लब्ध्वा रमते पृथिवीतले ॥
ततो प्रदक्षिणां कुर्याद्विह्वलाख्यवनस्य च । क्रोशार्द्ध परिमाणेन विमलो गृहसौख्यकैः ॥
इति वनयात्राप्रसंगे विह्वलवनप्रदक्षिणा ॥ ४५ ॥
अथ कदम्बवनप्रार्थनमन्त्रः—
कृष्णाल्हादस्वरूपाय गोगोपालवरप्रदे । मुरलीरवरम्याय कदम्बवनभूषिते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या पठंस्तु प्रणतिं चरेत् । वैमल्यसुखमालभ्य गवामधिपतिर्भवेत् ॥ ४६ ॥
ततो गोपिकासरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
कृष्णहेलासमुत्पन्न गोपिकासरसे नमः । वरप्रदाय लोकानां तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य मज्जनाचमनं नमन् । कृतकृत्यो भवेल्लोको बहुधा सुखसंचयैः ॥ ४७ ॥
ततो रासमंडलप्रार्थनमन्त्रः—
राधारमण रम्याय गोपिकावल्लभाय ते । रासमंडल गोष्ठाय नमस्ते केलिरूपिणे ॥
इत्यष्टादशभिर्मन्त्रमुच्चरन्प्रणतिं चरेत् । नित्यमेव सदानन्दपरिपूर्णसुखं लभेत् ॥
ततो प्रदक्षिणां कुर्यादेकक्रोशप्रमाणतः ॥ इति वनयात्राप्रसंगे कदम्बवनप्रदक्षिणा ॥ ४८ ॥

अनन्तर संकेत की ईश्वरी अम्बिका दर्शन प्रार्थनामन्त्र—हे परमेश्वरि ! हे ललिताजी को बर देने वाली ! संकेत पद को रक्षा करने वाली आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक साष्टांग प्रणाम करें तो चिरञ्जीवी होकर प्रिय पुत्र का लाभ करता है ॥ ४४ ॥

अनन्तर सखी गोपियों का गान भोजनस्थल मण्डल है । प्रार्थनमन्त्र—हे नाना प्रकार आल्हाद से मनोहर भोजनस्थल ! हे गानों से दीप्तिमान शुभ मण्डल ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र का १६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो बहु प्रकार भोग को प्राप्त होता है । यहाँ कुमारी कन्याओं को वस्त्र भोजन प्रदान करने से परिपूर्ण सुख को प्राप्त होता है । अनन्तर आधा कोश प्रमाण से विह्वलवन की प्रदक्षिणा करें । विमल गृह सुख प्राप्त होता है ॥ ४५ ॥

अब कदम्बवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वृहन्नारदीय में—भाद्रशुक्ला तृतीया में कदम्बवन को प्राप्त होवे । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे श्रीकृष्ण का आल्हादकारी कदम्ब समूहों से भूषित कदम्बवन ! आपको नमस्कार । आप मुरली शब्द से मनोहर हैं गोगोपालों का वरदाता हैं । इस मन्त्र का १० बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें । विमल सुख को प्राप्त होकर गौओं का अधीश्वर होता है ॥ ४६ ॥

अनन्तर गोपीकासरोवर है । स्नान, आचमन, प्रार्थनामन्त्र यथा—हे श्रीकृष्ण की हेला से उत्पन्न ! हे गोपीका सरोवर ! मनुष्यों को बर देने वाले तीर्थराज ! आपको नमस्कार है । इस मन्त्र का पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो मनुष्य बहु प्रकार सुख को पाकर कृत्य २ हो जाता है ॥४७॥

अनन्तर रासमण्डल है । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे राधारमण से मनोहर ! हे गोपिकावल्लभ ! हे

अथ स्वर्णवनप्रदक्षिणा । वाराहे—

भाद्रशुक्लतृतीयायां गत्वा स्वर्णवनं शुभं । प्रार्थनां कुरुते यस्तु काञ्चनैः सुखमन्वभूत् ॥

स्वर्णवनप्रार्थनमन्त्रः—

रत्नकाञ्चनवैडूर्य्य रमणीक मनोहर । नमः स्वर्णवनायैव तपः सिद्धिस्वरूपिणे ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिः प्रणतिं चरेत् । काञ्चनैं र्निर्म्मितां भूमिं हर्म्यादिसुखमाप्नुयात् ॥४६॥

ततो रासमंडलप्रार्थनमन्त्रः—

अष्टादश सखीयुक्त राधाकृष्णवरप्रद ! । नमः सौवर्णरम्याय रासगोष्ठि नमोऽस्तु ते ॥

विंशावृत्या पठन्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । कदा दुःखं न पश्येत सदानन्दपरिप्लुतः ॥

सपादक्रोशमानेन प्रदक्षिणमथाकरोत् । स्वर्णादीनां च धातूनां तद्गृहे पूजनं सदा ॥

इति वनयात्राप्रसंगे स्वर्णवनप्रदक्षिणा ॥ ५० ॥

अथ सुरभीवनप्रदक्षिणा वनयात्राप्रसंगे । विष्णुयामले—

भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां सुरभीवनमागतः । प्रार्थनं कुरुते यस्तु परमैशपदं लभेत् ॥

सुरभीवनप्रार्थनमन्त्रः—

सुरभीकृतरम्याय वनराजिविभूषिते । सौगन्ध्यपरिपूर्णाय सुरभीमोददायिने ॥

अखिलपदरम्याय नमस्ते सुखरूपिणे । इति मन्त्रं समुच्चार्य पञ्चभिः प्रणतिं चरेत् ॥

अखिलं पदसंज्ञं च धनधान्ययुतं लभेत् ॥५१॥

ततो गोविंदकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोविन्दस्नपनोद्भूत तीर्थराज नमोऽस्तु ते । अभिषेकजलैः रम्यः कुंडगोविन्दसंज्ञकः ॥

रासमण्डल गोष्ठि ! केलिरूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र का १८ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें । नित्य आनन्द सुख को प्राप्त होता है । अनन्तर १ कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥ ४८ ॥

अब स्वर्णवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वाराह में—भाद्रशुक्ला तृतीया में स्वर्णवन को जाकर प्रार्थनादि करें । सुवर्ण सुख को प्राप्त होता है । मन्त्र यथा—हे रत्न, काञ्चन, वैडूर्यों से मनोहर स्वर्णवन ! तपस्या सिद्धि रूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र का पाठ पूर्वक ७ बार प्रणाम करें । काञ्चन रचित गृहादिक प्राप्त होता है ॥ ४६ ॥

अनन्तर रासमण्डल प्रार्थनमन्त्र यथा—हे अष्टादश सखियों से युक्त राधाकृष्ण ! हे सुवर्ण से रम्य रासगोष्ठि ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र का २० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो कभी दुःख को नहीं प्राप्त होता है । सवा कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें तो गृह में सर्वदा सुवर्ण भरा रहता है ॥ ५० ॥

अब सुरभीवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । विष्णुयामल में—भाद्र कृष्ण चतुर्दशी में सुरभीवन को जाकर प्रार्थना करने से परम ऐश्वर्य्य पद को प्राप्त होता है । मन्त्र यथा—हे सुरभी कर्तृक मनोहर ! हे वन समूह से विभूषित ! हे सुगन्ध से परिपूर्ण सुरभी आनन्ददायी सुरभीवन ! आपको नमस्कार । आप अखिल पद को देने वाले हैं । इस मन्त्र का ५ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें । धन, धान्य, अखिल पद को प्राप्त होता है ॥ ५१ ॥

अनन्तर गोविन्दकुण्ड है । स्नानाचमन मन्त्र यथा—हे गोविन्द के स्नान से उत्पन्न तीर्थराज

इतिमन्त्रं शतावृत्या मज्जनाचमनैर्नरः। वैष्णवपदमालभ्य त्रैलोक्यसुखमन्वभूत् ॥५२॥
ततः गोवर्द्धननाथदधिभोजनस्थलप्रार्थनमन्त्रः—
नानास्वादसुखाविष्ट कृष्णगोपालरूपिणे। दधिभोजनरम्याय त्रैलोक्येश नमोऽस्तु ते ॥
इत्येकादशभिर्मंत्रमुच्चरन्प्रणतिंचरेत्। मन्त्रेणानेन गोपालराणिचिन्दं चुचुंब ह ॥
त्रैलोक्यपदभोगाद्यैरखिलं सुखमाप्तवान् ॥ ५३ ॥
ततो गोवर्द्धननाथेक्षणप्रार्थनमन्त्रः—
कृष्णाय वासुदेवाय गोवर्द्धनधृताय ते। नमो गोवर्द्धनाधीश नन्दगोपादिपालक ! ॥
इति मन्त्रं शतावृत्या साष्टांगप्रणतीं चरेत्। तस्यैव मस्तके स्थित्वा पालनं कुरुते हरिः ॥
ततो प्रदक्षिणं कुर्य्यात् पादोनक्रोशसंज्ञकं ॥ इति वनयात्राप्रसंगे सुरभीवनप्रदक्षिणा ॥५४॥
अथ प्रेमवनप्रदक्षिणा। ब्रह्मयामले—
भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां च गच्छेत् प्रेमाह्वयं वनं। प्रार्थयेद्विधिपूर्वेण वनयात्राप्रसंगतः ॥
प्रार्थनमंत्रः-प्रेमप्लुताय रम्याय परमोक्षस्वरूपिणे। कदम्बकुसुमाकीर्ण प्रेमाह्वयनमोऽस्तु ते ॥
इत्यष्टधा पठन्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत्। मुक्तिभागी भवेल्लोको सदानन्दपरिप्लुतः ॥५५॥
ततो प्रेमसरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
ललिताप्रेमसंभूते प्रेमाख्यसरसे नमः। प्रेमप्रदाय तीर्थाय कौटिल्यपदनाशक ! ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नरः। सदा कौटिल्यनिर्मुक्तो विष्णुप्रेमप्लुतोऽभवत् ॥५६॥

गोविन्दकुण्ड ! आपको नमस्कार। आप अभिषेक जल से रम्य हैं। इस मन्त्र का १०० बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन करें तो वैष्णवपदवी को प्राप्त होकर तीन लोक में सुखी होता है। ५२ ॥

अनन्तर गोवर्द्धननाथ दधिभोजन स्थल है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे नाना प्रकार स्वाद सुख में आविष्ट गोपालरूप श्रीकृष्ण ! हे तीन लोक के ईश ! हे दधिभोजन से रम्य ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो तीन लोक की पदवी तथा सुख, प्राप्त होता है ॥ ५३ ॥

अनन्तर गोवर्द्धननाथ का दर्शन प्रार्थनमन्त्र है। हे श्रीकृष्ण ! हे वासुदेव ! गोवर्द्धनधारी आप को नमस्कार है। हे गोवर्द्धननाथ ! हे नन्दादि गोपों के रक्षक ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो उसके माथे पर हरि रहकर पालन करते हैं। अनन्तर पौन कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥ ५४ ॥

अब प्रेमवन की प्रदक्षिणा कहते हैं। ब्रह्मयामल में—भाद्रशुक्ला चतुर्थी में प्रेमनामक वन को जाकर विधि पूर्वक प्रार्थना करें। मन्त्र यथा—हे प्रेम द्वारा परिप्लुत, मनोहर, मोक्षरूप प्रेमवन ! कदम्ब कुसुमों से व्याप्त आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य मुक्तिभागी होकर सर्वदा आनन्द में रहता है ॥ ५५ ॥

वहाँ प्रेम सरोवर है। स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्र यथा—हे ललिता के प्रेम से उत्पन्न प्रेमनामक सरोवर ! प्रेम देने वाले तीर्थराज ! आपको नमस्कार। आप कुटिलता को नाश करने वाले हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो सर्वदा छल, छिद्र से निर्मुक्त होकर विष्णु प्रेम से उन्मत्त रहता है ॥ ५६ ॥

ततो ललितामोहनेक्षणप्रार्थनमन्त्रः—

प्रेमप्लुताय कृष्णाय ललितामोहनाय ते। सदा प्रेमस्वरूपाय नमस्ते मोक्षदायिने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य त्रयस्त्रिंशन्नमश्चरेत्। सदैव जडताहीनो मोदपूर्णो सुखं भजेत् ॥५७॥

ततो रासमंडलेक्षणप्रार्थनमन्त्रः—

रासक्रीडोत्सवायैव ललितायुगलोत्सव !। नमस्ते रासगोष्ठाय मण्डलाय वरप्रद ॥
इति चतुर्दशावृत्या मण्डलं प्रणमेत्सुधीः। पातिव्रतसमायुक्तश्चिरजीवी भवेद्भुवि ॥५८॥

ततो हिण्डोलस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णवैमल्यदोलाय हिण्डोलसुखवर्द्धन !। नमः कलामय तुभ्यं श्रावणोत्सवसंभवः ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तविंश नतिं चरेत्। अव्दपूर्णसुखं लब्ध्वा सदानन्दैः भ्रमद्भुवि ॥
ततो प्रदक्षिणां कुर्य्यात्सार्द्धक्रोशप्रमाणकं। प्रेमपूर्णो हरिस्तस्य सर्वदा प्रीतिदोऽभवत् ॥

इति वनयात्राप्रसंगे प्रेमवनप्रदक्षिणा ॥५६॥

अथ मयूरवनप्रदक्षिणा। ब्राह्मे—

भाद्रशुक्लतृतीयायां मयूरवनमागतः। प्रार्थनां च समाचक्रे वनितासुखमाप्नुयात् ॥

प्रार्थनमंत्रः—नानाकल्हारसंयुक्त मयूरवनसंज्ञक !। नमो प्रियासुखाढ्याय मनोहरस्वरूपिणे ॥
इति मन्त्रं षडावृत्या नमस्कारं समाचरेत्। कर्णादिविषयसौख्यैश्चिरायुसुखमाप्नुयात् ॥६०॥

ततो मयूरकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णगोपीकृतस्नानसंभव तीर्थसंज्ञक !। नानासरसिजाकीर्ण देवतीर्थ नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं नवावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन्। देवयोनिमवाप्नोति कदा दुःखं न पश्यति ॥

अनन्तर ललितामोहन का दर्शन है। प्रार्थनमन्त्र यथा—हे प्रेम से परिप्लुत कृष्ण ! हे ललिता-मोहन ! सर्वदा प्रेम स्वरूप श्रद्धा को देने वाले आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ३३ बार पाठ करने से जड़ता नाश हो जाती है, श्रद्धा प्रेम का उत्पन्न होता है ॥ ५७ ॥

अनन्तर रासमण्डल है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे रासगोष्ठी ! हे रासमण्डल ! हे ललिता, मोहन दोनों का उत्सव स्वरूप ! आपको नमस्कार। आप रासक्रीड़ा उत्सव के लिये हैं। इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक मण्डल को प्रणाम करें तो पातिव्रत से युक्त होकर चिरञ्जीवी होता है ॥ ५८ ॥

अनन्तर हिण्डोलास्थल है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे हिण्डोलास्थल ! आप श्रीकृष्ण के मनोहर झूलने के लिये हैं आपको नमस्कार। आप सुख को बढ़ाने वाले हैं और कल्याणमय हैं, श्रावण मास के उत्सव से उत्पन्न हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २७ बार नमस्कार करने से सुख को प्राप्त होकर पृथ्वी में भ्रमण करता है। अनन्तर १॥ कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें। श्रीहरि सर्वदा प्रीति को देते हैं ॥ ५६ ॥

अब मयूरवन की प्रदक्षिणा कहते हैं। भाद्रशुक्लतृतीया में मयूरवन को जाकर प्रार्थनादि करने से स्त्री सुख को प्राप्त होता है। मन्त्र यथा—नाना प्रकार कल्हार से युक्त मनोहर मयूर नामक वन ! आप श्री पियाजी के सुख के लिये हैं आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से चिरायु तथा कर्णादि विषय में सुखी होता है ॥ ६० ॥

अनन्तर मयूरकुंड है। स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे श्री कृष्ण और गोपीगणों के स्नान से

पादक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत्। सर्वदा गीतवाद्याद्यैरखिलं सुखमाप्नुयात्॥
इति वनयात्राप्रसंगे मयूरवनप्रदक्षिणा ॥ ६१ ॥

अथ मानेंगितवनप्रदक्षिणा। आदिपुराणे—
भाद्रशुक्लतृतीयायां मानेंगितवनं ययौ। प्रार्थनं कुरुते यस्तु सखीवत्सुखमाप्नुयात्॥
प्रार्थनमंत्रः-मानप्रवृद्धनार्थाय मानेंगितवनाय ते। राधादिगोपिकामानहेलारूपाय ते नमः॥
इत्येकादशभिः मन्त्रमुच्चरन्प्रणतिं चरेत्। सदा मानविहारेण श्रीकृष्ण इव राजते ॥६२॥

ततो मानमन्दिरप्रार्थनमन्त्रः-
देवगन्धर्वरम्याय राधामानविधायिने। मानमन्दिरसंज्ञाय नमस्ते रत्नभूमये ॥
इति त्रयोदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत्। इच्छितं वरमालभ्य गृहसौख्यमवाप्नुयात् ॥६३॥

ततो हिंडोलप्रार्थनमन्त्रः—
राधोत्सवाय रम्याय नानारत्नादिभूषिते। कृष्णोत्सवाय काम्याय हिंडोलाय नमोऽस्तु ते ॥
इत्येकोनविंशत्या तु नमस्कारं समाचरेत्। बहुधा प्रीतिसंयुक्तो युगलसौख्यमन्वभूत् ॥६४॥

ततो रासमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—
गोपीक्रीडाभिरम्याय कृष्णनृत्याभिधायिने। नमो रत्नविभूषाय मण्डलाय कृतार्थिने ॥
इति मन्त्रं शतावृत्या नमस्कारं समाचरेत्। सकलेष्टमवाप्नोति रमते पृथिवीतले ॥ ६५ ॥

ततो रत्नकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
रत्नभूमिमये तीर्थे रत्नकुंडसमाह्वय। कृष्णस्नपनसम्भूत रत्नोद्भव नमोऽस्तु ते ॥

उत्पन्न देवतीर्थ मयूरकुण्ड! आपको नमस्कार। आप नाना प्रकार के कमलों से परिपूर्ण हैं। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो देवयोनि को प्राप्त होकर कभी दुःख को नहीं देखता है। पौन कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें तो सर्वदा गान, वाद्यादि द्वारा अखिल सुख का अनुभव करता है॥ ६१ ॥

अब मानेंगितवन की प्रदक्षिणा कहते हैं। आदिपुराण में—भाद्रशुक्लातृतीया में मानेंगितवन को जाकर प्रार्थना करने से सखी के न्याय सुख प्राप्त होता है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मान बढ़ाने के लिये मानेंगितवन! राधादि गोपियों का मान हेला स्वरूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो सर्वदा मान बिहार का अनुभव करता है॥ ६२ ॥

अनन्तर मानमन्दिर प्रार्थनामन्त्र—देवगन्धर्वों से रम्य! हे राधिका के मान बढ़ाने वाले मान-मन्दिर! रत्नरूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र का १३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो इच्छित वर को प्राप्त होकर सुखी होता है॥ ६३ ॥

अनन्तर हिण्डोला प्रार्थनमन्त्र यथा—हे राधिका के उत्सव के लिये नाना रत्नों से मनोहर हिण्डोला! हे कृष्ण के उत्सव के लिये सुन्दर! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १९ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो बहु प्रकार प्रीति सुख का अनुभव करता है॥६४॥

अनन्तर रासमण्डल प्रार्थनमन्त्र—हे गोपियों की क्रीड़ा से मनोहर! हे श्रीकृष्ण के नृत्यस्थल! नाना रत्नों से विभूषित मण्डलरूप आपको नमस्कार है। इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से समस्त इष्ट को प्राप्त होकर पृथ्वी में रमण करता है॥६५॥

इति चतुर्दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । नानारत्नोद्भवां भूमिं लभते नात्र संशयः ॥
क्रोशार्द्धपरिमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् । मुक्तिभागी भवेल्लोको पुनर्जन्म न विद्यते ॥
इति बनयात्राप्रसंगे मानेंगितवनप्रदक्षिणा ॥ ६६ ॥

अथ बनयात्राप्रसंगे शेषशयनवनप्रदक्षिणा । कौर्म्ये—
भाद्रशुक्लविपञ्चम्यां शेषशाय वनं गतः ।
प्रार्थनमंत्रः-कमलासुखरम्याय शेषशयनहेतवे ! नमः कमलकिञ्जल्कवाससे हरये नमः ॥
इत्येकादशभिः मन्त्रमुच्चरन् प्रार्थयेद्वनं । स्वप्ने वरमवाप्नोति दुःस्वप्नं नैव पश्यति ॥६७॥
ततो महोदधिकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
पञ्चामृतसमुत्पन्न पञ्चामृतमयाय ते । लक्ष्मीकृताय तीर्थाय नमो मुक्तिमहोदधे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य मज्जनाचमनैर्नमन् । पञ्चभिः क्रियमानस्तु परमां मुक्तिमाप्नुयात् ॥६८॥
ततो प्रौढ़लक्ष्मीनारायणेक्षणप्रार्थनमन्त्रः—
शयनस्थाय देवाय लक्ष्मीसेवापराय च । नमो प्रौढ़स्वरूपाय लक्ष्मीनारायणाय ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । तद्गृहे बसते लक्ष्मीरचलासंज्ञयाऽखिलं ॥
पादोनद्वयक्रोशेन प्रदक्षिणमथाचरेत् । भगवत्कृपयाविष्टो लोकपूज्यस्तु जायते ॥
इति बनयात्राप्रसंगे शेषशयनवनप्रदक्षिणा ॥ ६९ ॥

अथ बनयात्राप्रसंगे वृन्दावनयात्रा । प्रसंगे वृन्दावनप्रदक्षिणा । पाद्मे—
अष्टम्यां भाद्रशुक्ले तु वृन्दाबनमुपागतः । बनयात्राप्रसंगेन प्रार्थयेद्विधिवच्छुचिः ॥

अनन्तर रत्नकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे रत्नभूमिमय रत्नकुण्ड ! श्रीकृष्ण के स्नान से उत्पन्न आपको नमस्कार । आप रत्नोद्भव हैं । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करने से अवश्य रत्नमयी भूमी प्राप्त होता है । अर्द्ध कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करने से मुक्तिभागी होता है । उसका पुनर्जन्म नहीं है ॥ ६६ ॥

अब शेषशयनवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । कौर्म्य में—भाद्र शुक्ल अपि पञ्चमी में शेषशयनवन को जावें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे कमला के सुख से रम्य ! हे शेष के शयन के लिये शेषशयन नामक वन ! आपको नमस्कार ! हे कमल किञ्जल्क वस्त्र वाले हरि ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक वन की प्रार्थना करने से स्वप्न में वर प्राप्त होता है । दुःस्वप्न नहीं देखता है ॥६७॥

अनन्तर महोदधिकुंड है । स्नानाचमनमन्त्र यथा-हे पाँच प्रकार अमृत से समुत्पन्न पञ्चामृतमय मुक्ति महोदधिकुंड ! आपको नमस्कार । आप लक्ष्म कर्तृक रचित हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार मज्जनादि करें तो परमामुक्ति उसके वश में रहती है ॥ ६८ ॥

अनन्तर वहाँ प्रौढ़लक्ष्मीनारायण का दर्शन है । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे शयनस्थित देवता ! हे लक्ष्मी कर्तृक सेवित ! हे प्रौढ़ स्वरूप लक्ष्मीनारायण ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करने से लक्ष्मी उसके घर में सर्वदा रमण करती है । पौने दो कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करने से भगवान् की कृपा से आविष्ट होकर लोकमान्य होता है । इति यह बनयात्रा प्रसंग में शेषशयनवन की प्रदक्षिणा कही गई ॥ ६९ ॥

प्रार्थनमन्त्रः-वृन्दावविपिनरम्याय भगवद्दासहेतवे । परमाल्हादरूपाय वैष्णवाय नमो नमः ॥
इत्येकादशभिः मन्त्रमुच्चरन्प्रणतिं चरेत् । वैष्णवपदमाप्नोति पुनर्जन्म न विद्यते ॥७०॥
ततो कालीयह्रदस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
कालीस्तुतिप्रमोदाय ताण्डवनृत्यरूपिणे । नागपत्नीस्तुतिप्रीत गोपालाय नमो नमः ॥
इति मन्त्रं त्रिरावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । परमोक्षपदं लब्ध्वा सर्वदा सुखमासते ॥७१॥
ततो केशीघाटस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः-
केशीमुक्तिप्रदायैव केशवाय नमोऽस्तु ते । चतुर्भुजाय कृष्णाय केशितीर्थ नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । लक्ष्मीवान् जायते लोके मुक्तिमाप्नोति वैष्णवीं ॥७२॥
ततश्चिरघाटस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
अनेकवर्णवस्त्रैस्तु भूषिताय व्रजौकसे । नानाचीरप्रवेष्टाय नमस्ते गोपिवल्लभ ! ॥
इतिमन्त्रं षडावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । चीरं समर्पयेदत्र पीतरक्तसिताऽसितं ॥
सर्वदा विविधैः वस्त्रैः बहुधा सुखमाचरेत् ॥ ७३ ॥
ततो कृष्णपादचिन्हान्वितवंशीवटप्रार्थनमन्त्रः—
दशाब्दकृष्णपादांकलांछिताय नमो नमः । वंशीरवसमाकीर्ण वंशीवट नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या प्रणत्या पूजनं चरेत् । स्वर्णादिनिर्म्मितां वंशीं निवेदनमथाकरोत् ॥
जगन्मोहकृतं पुत्रं कृष्णतुल्यं लभेन्नरः ॥ ७४ ॥

अब वनयात्रा प्रसंग में वृन्दावन की प्रदक्षिणा कहते हैं। पाद्म में—अष्टमी भाद्रशुक्ला में वनयात्रा प्रसंग से वृन्दावन में उपस्थित होकर विधिवत् प्रार्थना करें। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे रम्य वृन्दाविपिन ! परम आल्हादरूप आपको नमस्कार। आप वैष्णव स्वरूप हैं। भगवान की सेवा सुख के लिये हैं। इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो वैष्णवपद को लाभ पूर्वक पुनर्जन्म से रहित होता है॥७०

अनन्तर कालियह्रद है। स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे काली स्तुति से आनन्द प्राप्त श्रीकृष्ण ! हे ताण्डव नृत्यकारी ! हे नागपत्नी स्तुति से प्रीत गोपाल। आपको नमस्कार है। इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो सर्वदा सुखी होकर परम मोक्ष को प्राप्त होता है ॥७१॥

अनन्तर केशीघाट है। स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे केशीदैत्य को मुक्ति देने वाले केशव ! हे चतुर्भुज स्वरूप ! हे श्रीकृष्ण ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो लक्ष्मीवान् होकर अन्त में वैष्णव पदवी को लाभ करता है ॥ ७२ ॥

अनन्तर चीरघाट है। स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे गोपीवल्लभ ! हे चीरघाट ! आपको नमस्कार। आप नाना वर्ण वस्त्रों से विभूषित हैं। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें। रक्त, पीला, सफेद, कृष्ण वर्ण नाना प्रकार वस्त्रखण्ड समर्पण करें तो सर्वदा विविध वस्त्रों से सुखी होता है ॥ ७३ ॥

अनन्तर वंशीवट है जो श्रीकृष्ण के चरण चिन्हों से युक्त है। प्रार्थनमन्त्र यथा—हे दश वर्ष अवस्था प्राप्त श्रीकृष्ण के चरण चिन्ह से अङ्कित ! आपको नमस्कार। हे वंशी शब्द से व्याप्त वंशीवट ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक प्रणाम के साथ पूजन करें। सुवर्ण की वंशी बनवाकर

ततो मदनगोपालदर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

यशोदानन्दनायैव श्रीमद्गोपालमूर्त्तये । कृष्णाय गोपीनाथाय नमस्ते कमलेक्षण ॥

इति सप्तदशावृत्त्या नमस्कारं समाचरेत् । लोकवल्लभतामेति चिरजीवी भवेद्भुवि ॥ ७५ ॥

ततो गोविन्ददर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

वृन्दादेवीसमेताय गोविन्दाय नमो नमः । लोककल्मषनाशाय परमात्मस्वरूपिणे ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । विष्णुसायोज्यमाप्नोति पुनरागमवर्जितः ॥७६॥

ततो यज्ञपत्नीस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

ब्रह्मयज्ञाय तीर्थाय यज्ञपत्नीकृताय च । यज्ञपत्नीमनोरम्य सुस्थलाय नमोऽस्तु ते ॥

इत्यष्टादशभिर्मन्त्रैं नमस्कारं समाचरेत् । यज्ञानावभृथस्नानराजसूयफलं लभेत् ॥७७॥

ततोऽक्रूरघाटस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

विष्णुलोकप्रदस्तीर्थ मुक्ताक्रूरप्रदायिने । कृष्णेक्षणप्रसादाय नमस्ते विष्णुरूपिणे ॥

इति द्वादशभिर्मंत्रै मज्जनाचमनै र्नमन् । वैकुंठपदमालभ्य नित्यजातं हरीक्षणं ॥७८॥

ततो रासमंडलप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकाशतकोटिभिः कृष्णरासोत्सवाय च । नमस्ते रासगोष्ठाय वैमल्यवरदायिने ॥

इति मन्त्रं शतावृत्त्या साष्टांगप्रणतिं चरेत् । हरेर्वल्लभतामेति चक्रवर्त्ती भवेन्नरः ॥

पञ्चक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् । मुक्तिभागी भवेल्लोको मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥७९॥

निवेदन करें तो जगत् मोहनकारी पुत्र का लाभ होता है ॥ ७४ ॥

अनन्तर मदनगोपाल के दर्शन हैं । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे यशोदा आनन्दकारी गोपालमूर्त्ति श्री मदनमोहन ! हे कमलनयन ! हे श्रीकृष्ण ! हे गोपीनाथ ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से चिरञ्जीवी और लोकप्रिय होता है ॥७५॥

अनन्तर गोविन्ददेव जी के दर्शन हैं । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे वृन्दादेवी के साथ श्री गोविन्द ! हे कल्मष नाशकारी परमात्मा ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करें तो विष्णु सायुज्य प्राप्त होता है । उसका पुनर्जन्म नहीं है ॥७६॥

अनन्तर यज्ञपत्नीस्थल प्रार्थनामन्त्र यथा—हे ब्रह्मयज्ञ रूप तीर्थराज ! आपको नमस्कार । आप यज्ञपत्नी कर्तृक निर्मित हैं और उन्हीं से मनोहर है इस मन्त्र के १८ बार पाठ कर नमस्कार करने से यज्ञ शेष का फल प्राप्त होता है ॥ ७७ ॥

अनन्तर अक्रूरघाट है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे विष्णुलोक को देने वाले अक्रूरतीर्थ ! आपको नमस्कार । हे अक्रूर को मुक्ति देने वाले ! कृष्ण के दर्शन तथा प्रसन्न के लिये विष्णु स्वरूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो वैकुण्ठ पद का लाभ तथा नित्य हरि का दर्शन होता है ॥ ७८ ॥

अनन्तर रासमण्डल है । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे शतकोटि गोपियों के साथ श्रीकृष्ण के रासविहार स्थल ! हे विमल वरदाता रासगोष्ठी स्थान ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १०० बार पाठ पूर्वक साष्टांग प्रणाम करें । श्रीहरिका प्रिय होकर चक्रवर्त्ती होता है ॥७९॥

इति वनयात्राप्रसंगे वृन्दावन प्रदक्षिणा—

इति यमुनायास्तु दक्षिणतटप्रदक्षिणा । माहात्म्यं च समाख्यातं सर्वकामार्थसिद्धये ॥ ८० ॥

इति श्रीभास्करात्मजनारायणभट्टविरचितव्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे व्रजमाहात्म्यनिरूपणे वनयात्राप्रसंगिके दशमोऽध्यायः ॥

॥ एकादश अध्यायः ॥

अथ वनयात्राप्रसंगे परमानन्दवनप्रदक्षिणा । आदिवाराहे—

भाद्रे मास्यसिते पक्षेऽमावास्यायां शुभे दिने । परमानन्दवनं गच्छेत्प्रार्थयेद्विधिपूर्वकं ॥

परमानन्दवनप्रार्थनमन्त्रः—

देवर्षिमुनिगन्धर्वलोकाल्हादस्वरूपिणे । नमस्ते परमानन्दवनसंज्ञाय ते नमः ॥

इति सप्तभिरावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सर्वदाल्हादसंयुक्तो परिपूर्णसुखं लभेत् ॥ १ ॥

आदिबद्रिकावेक्षणप्रार्थनमन्त्रः—

आदिबद्रिस्वरूपाय नारायणसुखात्मने । सदानंदप्रदायैव सर्वबाधाप्रशांतये ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य विंशत्या प्रणतिं चरेत् । सर्वदैश्वर्य्यसंयुक्तस्तपः सिद्धिप्रदो भुवि ॥ २ ॥

आनन्दसरः स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

आनन्दरूपिणे तुभ्यं सदानन्दप्रदायिने । सर्वदुःखहरस्तीर्थं आनन्दसरसे नमः ॥

इतिमन्त्रं नवावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । सदानन्दसमायुक्तो कदा कष्टं न पश्यति ॥

यथा सौभाग्यसंयुक्ता पितृस्वआयुवर्द्धिनी । धम्मिल्लडोरकेनेव वकलांगपीडनं क्षिपेत् ॥

एकक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् । मनमानंदपूर्णेन विमलो रमते भुवि ॥

इति वनयात्राप्रसंगेन परमानन्दवनप्रदक्षिणा ॥ ३ ॥

अनन्तर पाँच कोश प्रमाण से परिक्रमा करें तो समस्त व्याधि, बन्धन से मुक्त होकर मुक्तिभागी होता है । इति यह वनयात्रा प्रसंग में वृन्दावन की प्रदक्षिणा । यह समस्त वन यमुना के दक्षिण तट में है।।८०

इति श्रीनारायणभट्ट विरचित व्रजभक्तिविलास का दशम अध्याय अनुवाद ।

अब वनयात्रा प्रसंग में परमानन्दवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । आदिवाराह में—भाद्रमास कृष्णपक्ष की अमावास्या में परमानन्दवन को जाकर विधि पूर्वक प्रार्थना करें । मन्त्र यथा—हे देवर्षि, मुनि, गन्धर्व, मनुष्यों का आल्हादरूप परमानन्द नामक वन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो सर्वदा आल्हाद परिपूर्ण सुख को लाभ करता है ॥ १ ॥

अनन्तर आदिबद्रि दर्शन है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे आदिबद्रिस्वरूप ! हे सुखात्मा नारायण ! हे सर्वदा आनन्ददायक ! समस्त बाधा शान्ति के लिये आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २० बार प्रदक्षिणा करें तो समस्त ऐश्वर्य्ययुक्त तपस्या सिद्धि को प्राप्त होता है ॥२॥

अनन्तर आनन्दसरोवर स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे आनन्दरूप आनन्द सरोवर ! समस्त दुःख हर्त्ता तथा सर्वदा आनन्ददाता आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो सर्वदा आनन्द प्राप्त होता है । कभी उसको कष्ट नहीं होता है । सौभाग्य, पितृधन, आयु वृद्धि प्राप्त होती है । अनन्तर एक कोश प्रमाण से परिक्रमा करें तो आनन्द के साथ पृथ्वी में रमण करता है ॥३॥

अथ वनयात्राप्रसंगे रंकपुरबनप्रदक्षिणा । ब्रह्माण्डे—

भाद्रशुक्लतृतीयायां रंकपुरवनं गतः । प्रार्थयेद्विधिपूर्वेण कदा शत्रुं न पश्यति ॥

रंकपुरवनप्रार्थनमन्त्रः—

अरिदर्शननाशाय रंकपुरवनाय ते । नमः कौरवनाशाय सुभद्रानिर्म्मिताय च ॥

इति मन्त्रमुदाहृत्य नमस्कारत्रयं चरेत् । कदाचिद्वैरिमात्रं च स्वप्ने नैव विलोकयेत् ॥४॥

ततो सुभद्राकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

सुभद्रारूपिणे तुभ्यं ब्रह्मणे भद्रहेतवे । शक्तिशापसमुद्भूत प्रियावेशाय ते नमः ॥

इत्येकादशभिर्मन्त्रैः मज्जनाचमनैर्नमन् । सदा वैवाहिकाद्यैस्तु मांगल्यैर्भद्रसंयुता ॥

पादोनक्रोशमात्रेण रंकपुरप्रदक्षिणा ॥ इति यात्राप्रसंगे रंकपुरबनप्रदक्षिणा ॥५॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे वार्त्तावनप्रदक्षिणा । वृहत्पराशरे—

वैशाखशुक्लद्वादश्यां वार्त्तावनमुपागतः । प्रार्थयेन्मनमेकाभिः लोकवाक्यजयी भवेत् ॥

वार्त्तावनप्रार्थनमन्त्रः—

सत्याय सत्यरूपाय सत्यवाक्यप्रकाशिने । वार्तावनाय ते तुभ्यं नमो मिथ्याविनाशिने ॥

इतिमन्त्रं समुच्चार्य्य दशधा प्रणतिं चरेत् । मिथ्याभिशंसनात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥६॥

ततो मानसरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

मनोर्थसिद्धिरूपाय सरसे मानसाह्वये । नमस्ते तीर्थराजाय देववैमल्यरूपिणे ॥

इत्यष्टादशभिर्मन्त्रैः मज्जनाचमनैर्नमन् । सर्वपापविनिर्म्मुक्तो विमलो रमते भुवि ॥

क्रोशद्वयप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे वार्त्तावनप्रदक्षिणा ॥ ७ ॥

अब वनयात्रा प्रसंग में रंकपुरबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । ब्रह्माण्ड में—भाद्रशुक्ल तृतीया में रंकपुर बन में जाकर विधि पूर्वक प्रार्थनादि करने से कभी शत्रु का मुख नहीं देखता है । मन्त्र यथा—हे अरिदर्शन नाश के लिये सुभद्रा निर्म्मित रंकपुरबन ! कौरव नाशकारी आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो स्वप्न में भी वैरी का दर्शन नहीं करता है ॥ ४ ॥

अनन्तर सुभद्राकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे सुभद्रास्वरूप सुभद्राकुण्ड ! आप कल्याण के लिये हैं और शक्ति शाप से उत्पन्न हैं । आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमनादि करें तो सर्वदा वैवाहिक मंगलादियों से सुखी होता है । पौन कोश प्रमाण से रंकपुर की प्रदक्षिणा है ॥ ५ ॥

अब व्रजयात्राप्रसंग में वार्त्तावन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वृहत्पराशर में—वैशाख शुक्ला द्वादशी में वार्त्तावन में जाकर प्रार्थना करने से वाणी की जय होती है । मन्त्र यथा—हे सत्यरूप ! हे सत्य ! हे वाक्य के प्रकाश करने वाले वार्त्तावन ! मिथ्या नाशक आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार प्रणाम करने से मिथ्या द्वारा प्राप्त पाप से मोचन हो जाता है ॥ ६ ॥

अनन्तर मानसरः स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे मन के अर्थ सिद्धिरूप मानस नामक सरोवर ! देवताओं को विमल करने वाले तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १८ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो समस्त पापों से मुक्त होकर पृथ्वी में रमण करता है । दो कोश प्रमाण से वहाँ परिक्रमा करने की विधि है ॥ ७ ॥

अथ वनयात्राप्रसंगे करहपुरवनप्रदक्षिणा । भविष्योत्तरे—

भाद्रशुक्लतृतीयायां करहपुरमुपागत: ।

प्रार्थनमन्त्र:-त्रैलोक्यमोहनायैव नमस्ते करहाभिध ! । गन्धर्वसुखवासाय विश्वावसुवरप्रद ! ॥

इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । राजवश्यकृतो लोको गन्धर्व इव भूतले ॥८॥

ततो ललितासर: स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्र:—

ललितास्नानोद्भूत तीर्थराज नमोऽस्तु ते । ललितासरसे तुभ्यं सौभाग्यवरदायिने ॥

इति षड्भि: समुच्चार्य्य मज्जनाचमनैं नमन् । सर्वदा सुखसंपत्या पृथिव्यां सुखमन्वभूत् ॥९॥

ततो भानुकूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्र:—

देवामृतरूपाय मुक्तिरूपाय ते नम: । तीर्थराज नमस्तुभ्यमतितृड्शान्तिरूपिणे ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य त्रयस्त्रिंशावृतेन च । मज्जनाचमाद्यैश्च चिरजीवी भवेद्भुवि ॥१०॥

ततो रासमण्डलप्रार्थनमन्त्र:—

ललितामहदुत्साह गोपिकानृत्यरूपिणे । कृष्णक्रीडाभिरम्याय मंडलाय नमोऽस्तु ते ॥

इति चतुर्भिरुच्चार्य्य प्रदक्षिणानमश्चरेत् । रमते गृहसौख्याद्यै: कदा दु:खं न पश्यति ॥११॥

ततो कदम्बखंडप्रार्थनमन्त्र:—

कृष्णगोपालरूपाय गोपीगोभिरलंकृत: । कदम्बखंड गोष्ठाय सौख्यधाम्नै नमोऽस्तु ते ॥

इति षोडशभिर्मंत्रं नमस्कारं समाचरेत् । कृतार्थतामवाप्नोति विष्णुसायुज्यतां व्रजेत् ॥१२॥

अब करहपुर की प्रदक्षिणा कहते हैं । भविष्योत्तर में—भाद्रशुक्ला तृतीया में करहपुर की यात्रा है । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे गन्धर्वों के सुखवास ! हे विश्वावसु को वर देने वाले त्रैलोक मोहन करहा नामक स्थान ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य राजा को भी वश में लाकर गन्धर्व सदृश विचरण करता है ॥८॥

अनन्तर ललितासरोवर है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र—हे ललिताजी के स्नान से उत्पन्न तीर्थराज ! हे सौभाग्य वरदाता ललितासरोवर आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो सर्वदा सुख संपत्ति को प्राप्त होता है ॥९॥

अनन्तर भानुकूप है । स्नानाचमन मन्त्र यथा—हे देवताओं के अमृतरूप ! हे मुक्तिस्वरूप ! अत्यन्त तृष्णा शान्ति के लिये तीर्थराज आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ३३ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो मनुष्य चिरायु हो जाता है ॥१०॥

अनन्तर रासमण्डल है । प्रार्थनामन्त्र—हे ललिताजी के महान उत्सव स्वरूप ! हे गोपिकाओं के नृत्यरूप ! श्रीकृष्ण की क्रीड़ा से रम्य मण्डल रूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक प्रदक्षिणा करें तो सर्वदा गृह सुख का अनुभव करता है ॥११॥

अनन्तर कदम्बखण्डि है । प्रार्थनामन्त्र—हे गोपाल स्वरूप श्रीकृष्ण ! हे गोपियों से भूषित कदम्बखण्ड गोष्ठि ! सुखधाम आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य कृतार्थ होकर विष्णुसायुज्य को प्राप्त होता है ॥१२॥

ततो हिंडोलप्रार्थनमन्त्रः—

राधाकृष्णमहोत्साह ललितोत्सवहेतवे । ब्रह्मणा निर्मितायैव हिंडोलाय नमोऽस्तु ते ॥

इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सदा प्रियाभिःसंयुक्तो वैमल्यसुखमाप्नुयात् ॥१३॥

ततो विवाहस्थलप्रार्थनमन्त्रः—

भद्रदेवीसखीरम्य विवाहोत्सवमांगल्यैः । ललिताग्रन्थिदत्ताय नमो वैवाहरूपिणे ॥

इति सप्तदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सदा वैवाहिकोत्साहैश्चिराय सौख्यमाप्नुयात् ॥

दधिदानं करोत्यत्र कृष्णतोषसुखाय च । नानाविविधभोगाद्यै रनेकसुखमन्वभूत् ॥

सार्द्ध द्वितयक्रोशेन प्रदक्षिणमथाकरोत् । करहाख्यवनस्यापि माहात्म्यमिति कीर्त्तितं ॥

इति बनयात्राप्रसंगे भाद्रशुक्ल तृतीयायां करहपुरबनप्रदक्षिणा ॥ १४ ॥

अथ प्रसंगात् कामनाबनप्रदक्षिणा । भविष्ये—

तस्यां शुक्लतृतीयायां कामनाख्यबनं ययौ । प्रार्थयेद्विधिपूर्वेण कामनामीप्सितां लभेत् ॥

प्रार्थनमन्त्रः-सखीनां ललितादीनां कामनासिद्धिरूपिणे । कामनाख्यबनायैव नमस्ते कामनाप्रदः ॥

इति मन्त्रं नवावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सदैव कामनापूर्णो जायते नात्र संशयः ॥१५॥

ततो श्रीधरकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णस्नपनसंभूत लक्ष्मी प्रार्थ्य नवोद्भव । नमः श्रीधरकुंडाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति षड्भिः समुच्चार्य्य मज्जनाचमनं नमन् । दंपत्योर्भूयसीप्रीति युगलस्नपनाद्भवेत् ॥

सार्द्ध क्रोश प्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् । कामनाख्यबनस्यापि कामना सफला भवेत् ॥

इति बनयात्राप्रसंगे कामनाबनप्रदक्षिणा ॥ १६ ॥

अनन्तर हिण्डोला है । प्रार्थनामन्त्र—हे राधाकृष्ण के महान् सुखरूप ! हे ललिताजी के उत्सव के लिये ब्रह्मा कर्तृक निर्मित हिण्डोलास्थान ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से सर्वदा प्रिया के साथ विशुद्ध सुख का अनुभव करता है ॥१३॥

अनन्तर विवाहस्थल है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे भद्रदेवी सखी से रम्य ! हे ललिता ग्रन्थि बन्धन स्थल ! विविध विवाह उत्सव से सुखरूप विवाह स्थल आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करे तो सर्वदा विवाह सम्बन्धी उत्सव, आनन्द का अनुभव करता है । वहाँ श्रीकृष्ण की प्रसन्नता के लिये दधि का दान करें तो नाना प्रकार भोगों को प्राप्त होता है । २॥ कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥ १४ ॥

अब प्रसंग से कामनाबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । भाद्र शुक्ला तृतीया में कामनाबन की प्रदक्षिणा करें । विधि पूर्वक प्रार्थनादि करने से इच्छित कामना को प्राप्त होता है । मन्त्र—हे ललितादिक सखियों की कामना सिद्धिरूप ! कामना देने वाले कामनाबन आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ-पूर्वक नमस्कार करने से सर्वदा कामनाओं से निःसन्देह परिपूर्ण हो जाता है ॥१५॥

अनन्तर श्रीधरकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे श्रीकृष्ण के स्नान से तथा लक्ष्मी प्रार्थना द्वारा उत्पन्न श्रीधरकुण्ड ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो दम्पत्ति में प्रेम बढ़ता है । डेढ़ कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें तो समस्त कामना सफल होती है ॥१६॥

अथ बनयात्राप्रसंगेऽञ्जनपुरबनप्रदक्षिणा । कौर्म्ये-

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु गतोऽञ्जनपुरं वनं । वनितासुखलाभाय वैचित्रं सौख्यमाप्नुयात् ॥

ततोऽञ्जनपुरवनप्रार्थनमन्त्रः—

देवगन्धर्वलोकानां रम्यवैहाररूपिणे । वैचित्रमूर्त्तये तुभ्यमंजनपुरवनाह्वय ! ॥

इति मन्त्रं चतुर्वारं नमस्कारं पठन् चरेत् । सकलेप्रश्वर्यं लब्ध्वा सर्वदा यौवनान्वितः ॥१७॥

ततो किशोरीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

किशोरीस्नानरम्याय पीतरक्तजलाप्लुतः । तीर्थराज नमस्तुभ्यं कृष्णक्रीडाविधायिने ॥

इति त्रयोदशावृत्त्या मज्जनाचमने नमन् । किशोरीवत्समोन्नारी लोको कृष्णइवाऽभवत् ॥१८॥

कृष्णान्वितकिशोरीदर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

यशोदानन्दकृष्णाय प्रियायै सततं नमः । किशोररूपिणे तुभ्यं वल्लभायै नमोऽस्तु ते ॥

इत्येकादशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । कृतकृत्यो भवेल्लोको रमते पृथिवीतले ॥

कोशमात्रप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति वनयात्राप्रसंगेऽञ्जनपुरप्रदक्षिणा ॥ १९ ॥

अथ प्रसंगात् कर्णवनप्रदक्षिणा । स्कान्दे—

भाद्रशुक्लतृतीयायां गतो कर्णवनं शुभं ।

कर्णवनप्रार्थनमन्त्रः—

कर्णवासाय रम्याय यशः कीर्त्तिस्वरूपिणे । नमः कर्णवनायैव पुण्याख्याय वरप्रद ! ॥

इति षोडशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । देवयोनिमवाप्नोति विष्णुसायुज्यतां गतः ॥२०॥

ततो दानकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

दशभारसुवर्णादि कृतदानस्वरूपिणे । नमस्ते दानतीर्थाय कर्णदानसमाप्नुयात् ॥

सपादकोशमात्रेण प्रदक्षिणमथाकरोत् ॥२१॥

अब वनयात्रा प्रसंग में अञ्जनपुरवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । कूर्म्म पुराण में—भाद्रशुक्ला चतुर्थी में अञ्जनपुरवन की यात्रा करें तो विचित्र सुख का अनुभव प्राप्त होता है । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे देवता, गन्धर्व, मनुष्यों के सुन्दर विहारस्थल ! विचित्र मूर्त्तिरूप अञ्जनवन आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ४ बार पाठ कर नमस्कार करने से समस्त इष्ट को प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

अनन्तर किशोरीकुण्ड है । स्नानादि० मन्त्र—हे पीले रक्त जल से परिपूर्ण किशोरीजी के स्नान से मनोहर किशोरीकुण्ड ! श्रीकृष्ण के क्रीड़ा विधायक तीर्थराज आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करने से मनुष्य श्रीकृष्ण के तुल्य नारी किशोरी के तुल्य पराक्रमी होते हैं ॥१८॥

वहाँ श्रीकृष्ण के साथ किशोरी जी का दर्शन है । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे यशोदाजी को आनन्द देने वाले श्रीकृष्ण ! हे श्री प्रियाजी ! किशोरस्वरूप आप दोनों को निरन्तर नमस्कार है । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से मनुष्य कृत्य २ होकर पृथ्वी में रमता है ॥ १९ ॥

अब प्रसंग में कर्णवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । स्कान्द में—भाद्रशुक्ल तृतीया में कर्णवन की यात्रा करें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे कर्णजी के वास से रम्य यशः कीर्त्ति स्वरूप अक्षय पुण्य वर के देने वाले कर्णवन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो देवयोनि को प्राप्त होकर विष्णु सायुज्य को जाता है ॥ २० ॥

प्रणाम प्रार्थनप्रदक्षिणानिषेधः । धर्मकल्पद्रुमे—

देवगोविप्रपितृभ्यो हस्त्यश्वेभ्यो नतिः सदा । एकेन पाणिना कुर्य्याद्धन्ति पुण्यं पुराकृतं ॥
इति दक्षिणहस्ते च फलमेतदुदाहृतं । प्रणामं वामहस्तेन कुर्य्यादज्ञानतोऽधमः ॥
कुलक्षयप्रयोगेन ह्यपसव्यं सदा चरेत् । अन्तरान्तरतो मृत्युर्जायते कुलसंभवे ॥
देवादिभ्यो लभेच्छापं शोकसंतप्तमानसः । राजद्वारे सभामध्ये शालायां जन्नवेश्मनि ॥
देवालये न कुर्वीत हन्ति पुण्यं पुराकृतं । प्रणतिर्वैरभावेन कृता श्रेयःविनाशिनी ॥
ज्येष्ठस्तु प्रणतिं कुर्य्याल्लघुभ्रातादिबंधुषु । अकल्याणं द्वयोर्जातमायुः क्षीणः दरिद्रता ॥
द्विजो याञ्चार्थभावेन द्विजायाशिषमाचरेत् । दोषो नैव प्रजायेत द्वयो र्ब्राह्मणयोरपि ॥
ब्राह्मणो क्षत्रियादिभ्यस्त्वाशिषं प्रयुजेऽर्थदं । पूर्वनत्यादरेणैव ह्याशिषं भद्रकारणं ॥
विना नत्यादरेणैव ह्याशिषं शापसंज्ञकं । धनधान्यकलत्रादि पुत्रायुः क्षयकारणं ॥
विप्राय कुलपूज्याय तीर्थपूज्यार्थिनोऽपि वा । प्रणामं चैव कुर्वीत पूर्वमाशिषवर्जितः ॥
आशिषं शुभदं जातं यजमानवरप्रदं । आशिषं वामहस्तेन सर्वकल्याणनाशनं ॥
ब्राह्मणो ह्यभिमानेन विनासन्नतिं चरेत् । ब्रह्महत्या फलं तस्य परिवारक्षयं करं ॥

विनावधापराधः । धर्मनिबन्धे -

आज्ञाभंगो नरेन्द्राणां विप्राणां मानखंडनं । पृथक्शय्या वरस्त्रीणामशस्त्रवधमुच्यते ॥
एवं विप्रादिवर्णेषु प्रणामं समुदाहृतं । वामहस्ताशिषं दत्तं शापतुल्यमभद्रकं ॥
क्षत्रियादिकवर्णास्ते विप्रेभ्यो प्रणतिं चरेत् । परिवारक्षयं नीत्वा कुष्ठरोगान्भयेत्तदा ॥
वैष्णवाकृतिसंयुक्ताः विप्रेभ्यो नतिमाददुः । न विद्यते तदा दोषो ज्ञातिगुप्ताऽद्धदीपकं ॥
ज्ञातिगुप्ता च विप्राय भोजनं कारयेद्यदि । ब्रह्महत्या फलं तस्य समूलान्नाशकारकं ॥

भोजननिषेधः । शौनकोपनिषदि—

जलाग्निलवणी योगादपवित्रमुदाहृतं । एकेनान्नं फलं द्वाभ्यां त्रिभिः संसर्गतोऽशुचिः ॥
मृन्मयं जलसंयोगान्पिष्टं लवणयोगतः । तन्दुलं वन्हिसंयोगात्त्रिभिः फलमुदाहृतं ॥
निर्णयामृते—संलग्नानि च काष्ठानि संलग्नानि तृणानि च । संलग्ना पात्रतो धारा स्पर्शदोषो न जायते ॥
आविर्भावमितिख्यातं चतुर्युगसमुद्भवं । एकस्मिन् लिप्तभूमौ च मध्यरेखा समन्विते ॥
सभोज्यफलमाप्नोति धर्मतुल्यशिखण्डिनः । यज्ञे यज्ञोपवीतादौ वैवाहोत्सवमंगले ॥
रेखादोषो न विद्येत पित्र्यभद्रकृते यदि । अन्येषु गृहकार्य्येषु प्रिष्टं ह्यशुचि संज्ञकं ॥
रक्षितं मृन्मयं रत्नं गृहकार्य्ये पवित्रकं । कलिकालयुगोत्पन्नमाचारं मुनिभिः कृतं ॥

इति चतुर्युगोद्भवाचारनिर्णयः ॥ २२ ॥

अनन्तर दानकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे दशभार सुवर्ण दान से युक्त दानतीर्थ ! कर्ण जी के दान से उत्पन्न आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो सुवर्ण तुल्य रूप को धारण कर बैकुंठ को गमन करता है । सवा कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥२१॥

अब प्रणाम प्रदक्षिणा की निषेध विधि कहते हैं । धर्मकल्पद्रुम में—गौ, ब्राह्मण, देवता, पितर, हस्ति, अश्व प्रभृति को एक हाथ से प्रणाम करने से पहिले किये हुए पुण्य का नाश होता है । यह दक्षिण

अथ वनयात्राप्रसंगे क्षिपनकवनप्रदक्षिणा । विष्णुपुराणे—

भाद्रशुक्ले तृतीयायां गतो क्षिपनकं वनं । वृषभानुपुरस्यापि वनयात्राप्रसंगतः ॥

क्षिपनकवनप्रार्थनमन्त्रः—

नन्दानन्दविलोभाय कृष्णक्षिपनकाह्वय । नमस्ते शुभरूपाय सुखधाम्ने वरप्रदः ॥

इति मन्त्रं नवावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । मनसेष्टफलं लब्ध्वा व्यचरन्पृथिवीतले ॥२३॥

ततो गोपकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपकृष्णकृतस्नान संभवायोतस्वायते । तीर्थराज नमस्तुभ्यं गोपकामार्थदायिने ॥

इति षोडशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । कृतकृत्यो भवेल्लोको देवयोनिमवाप्नुयात् ॥

क्रोशार्द्धपरिमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् । बालक्रीडाभिःसंयुक्तो परिवारसुखं लभेत् ॥

इति वनयात्राप्रसंगे क्षिपनकवनप्रदक्षिणा ॥ २४ ॥

अथ प्रसंगान्नन्दनवनप्रदक्षिणा । भविष्योत्तरे—

भाद्रशुक्लतृतीयायामागतो नन्दनं वनं ।

नन्दनवनप्रार्थनमन्त्रः—

प्रचर्य्यान्वितदेवेश निर्म्मिताय वनाय ते । नन्दनाय नमस्तुभ्यं नन्दनाख्यवनोपम ॥

इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । देवेश इव विख्यातो पृथिव्यां सुखमन्वभूत् ॥२५॥

ततो नन्दनन्दनकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णाभिषेकरम्याय तीर्थराज नमोऽस्तु ते । नन्दनन्दनकुंडाय गोपानां वरदायिने ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । धनधान्यसमृद्धिस्तु लक्ष्मीवान् जायते नरः ॥

पादोनक्रोशमात्रेण प्रदक्षिणमथाकरोत् । मार्गागमप्रसंगेन तृतीयासंभवे दिने ॥

इति वनयात्राप्रसंगे नन्दनवनप्रदक्षिणा ॥२६॥

हाथ की बात है । वामहस्त से प्रणाम करने से कुल का नाश होता है इत्यादि । मूलश्लोकों को देखें ॥२२॥

अब वनयात्राप्रसंग में क्षिपनवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । विष्णुपुराण में—भाद्रशुक्ला तृतीया में क्षिपनवन को जावे । बरसाने की यात्रा प्रसंग में जानना । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे नन्द आनन्दन श्रीकृष्ण को भुलाने के लिये कृष्णक्षिपन नामक वन ! शुभ स्वरूप, सुखराशि, वरदाता आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ९ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से यथेष्ट लाभ प्राप्त करके पृथ्वी में रमता है ॥२३॥

अनन्तर गोपकुंड का स्नान, आचमन,प्रार्थना, नमस्कार मन्त्र कहते हैं । हे गोप श्रीकृष्ण द्वारा किये हुए स्नान स्थल ! गोपों की कामना देने वाले तीर्थराज आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो मनुष्य कृत्य २ होकर देवयोनि को प्राप्त होता है । आधा कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें तो बाल्यक्रीड़ा, परिवार सुख का अनुभव करता है ॥ २४ ॥

अब वनयात्राप्रसंग में नन्दनवन की प्रदक्षिणा कहते है । भविष्योत्तर में—भाद्रशुक्ल तृतीया को नन्दनवन को आवें । प्रार्थनामन्त्र—हे परिचर्य्या से युक्त देवेश इन्द्र द्वारा निर्म्मित नन्दनवन के तुल्य नन्दनवन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से तीन लोक में देवेश करके विख्यात होता है ॥ २५ ॥

अथ बनयात्राप्रसंगे इन्द्रबनप्रदक्षिणा । शक्रयामले—

भाद्रमासि सितेपक्षे प्रतिपद्यामथागमत् । श्रेष्ठमिन्द्रवनं श्रीमन् परमानन्दकं यथा ॥

इन्द्रवनप्रार्थनमन्त्रः—

देवगन्धर्वरम्याय नमः शक्रवनाय ते । त्रैलोक्यमोहरूपाय सर्वकामार्थदायिने ॥

इत्यष्टादशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । महेन्द्रपदवीं लब्ध्वा रमते पृथिवीतले ॥ २७ ॥

ततो देवताकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

इन्द्रादिदेवतास्नानसंभवाय नमोऽस्तु ते । देवताकुंडतीर्थाय चिरायुः सौख्यदायिने ॥

इति षोडशभिर्मन्त्रमज्जनाचमनै र्नरम् । देवयोनिं समालभ्य परिपूर्णसुखं करोत् ॥

सपादक्रोशमात्रेण प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति बनयात्राप्रसंगे इन्द्रबनप्रदक्षिणा ॥२८॥

अथ प्रसंगात् शीक्षाबनप्रदक्षिणा । अगस्त्यसंहितायां—भाद्रशुक्लतृतीयायां शीक्षावनमुपागतः ।

शीक्षावनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपीसीक्षाप्रसादाय वासुदेववरप्रद ! । नमः शीक्षाबनायैव सौबुद्धिवरदायिने ॥

इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा नमस्कारं समाचरेत् । सुबुद्धिर्वर्द्धते नित्यं मन्त्रविद्याविशारदः ॥२९॥

ततो कामसरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकाकामपूर्णाय कामाख्यसरसे नमः । देवगान्धर्वलोकानां कलाकामार्थदायिने ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिर्मज्जनाचमैः । प्रणमन् सौख्यमाप्नोति सर्वदा कामचेष्टितः ॥

कुर्य्यात्प्रदक्षिणां सांगामेकक्रोशप्रमाणतः ॥ इति बनयात्राप्रसंगे शीक्षावनप्रदक्षिणा ॥३०॥

वहाँ नन्दनकुंड है । स्नानाचमन मन्त्र यथा—हे श्रीकृष्ण के अभिषेक द्वारा रम्य, गोपों को वर देने वाले तीर्थराज नन्दनकुंड ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो धन, धान्य समृद्धि द्वारा परिपूर्ण होता है । पौन कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करे ॥२६॥

अब बनयात्राप्रसंग में इन्द्रबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । शक्रयामल में—भाद्रमास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि में श्रेष्ठ इन्द्रबन की यात्रा करें । प्रार्थनामन्त्र-हे देवता, गन्धर्वों से रम्य शक्रवन ! त्रैलोक्य मोहनरूप समस्त कामनार्थ देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १८ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से इन्द्रपद की प्राप्ति होता है ॥ २७ ॥

अनन्तर देवताकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे इन्द्रादि देवता कर्तृक स्नान से उत्पन्न देवताकुण्ड ! चिरायु सुख को देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो देवयोनि को लाभ होता है । सवा कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें ॥२८॥

अब प्रसंग से शिक्षाबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । अगस्त्यसंहिता में—भाद्रशुक्ल तृतीया में शिक्षा-वन की यात्रा करें । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे गोपिओं की शिक्षा से प्रसन्न ! हे वासुदेव वर को देने वाले शिक्षाबन ! आपको नमस्कार । आप सुबुद्धि को देने वाले हैं । इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से सुबुद्धि बढ़ती है और वह मन्त्र विद्या में विशारद हो जाता है ॥२९॥

अनन्तर कामसरोवर है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र—हे गोपियों की कामनापूर्णकारी, देव,गन्धर्व,

अथ प्रसंगाच्चन्द्रावलिवनप्रदक्षिणा । शौनकीये—

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां च गतश्चन्द्रावलीवनं । प्रार्थयेद्विधिपूर्वेण परिपूर्णसुखं लभेत् ॥

चन्द्रावलिवनप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णसौख्यमहोत्साह गुणरूपकलानिधे । चन्द्रावलिनिवासाय नमस्ते कृष्णवल्लभ ! ॥

इति मन्त्रं नवावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । कलायुक्तो हरिः साक्षाद्ददाति धनकांचनं ॥३१॥

ततश्चन्द्रावलिसरः स्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

पीतरक्तसितश्यामजलक्रीडामनोरमे ! । विमलोत्सवरूपाय चन्द्राभसरसे नमः ॥

इति षड्भिरुदाहृत्य मज्जनाचमनैर्नमन् । परिपूर्णसुखं लब्ध्वा रमते पृथिवीतले ॥

सार्द्धक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति वनयात्राप्रसंगे चन्द्रावलिवनप्रदक्षिणा ॥३२॥

अथ प्रसंगाल्लोहवनप्रदक्षिणा । वाराहे—

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां च गतो लोहवनं शुभं । प्रार्थयेद्विधिपूर्वेण लोहदानं समाचरेत् ॥

लोहवनप्रार्थनमन्त्रः—

लोहांगमुनिसंभूत तापसे ब्रह्मरूपिणे । यमालोकननाशाय नमो लोहवनाय ते ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । संकष्टदर्शनं तस्य नैव स्वप्नेऽपि जायते ॥३३॥

ततो गिरीशकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

नमो गिरीशकुण्डाय तीर्थराज वरप्रद ! । प्रवंशमोक्षिणे तुभ्यं सर्वदा शिवदायिने ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य पंचभिर्मज्जनाचमैः । प्रणमन् शिवमाप्नोति मंगलायुर्विवर्द्धनं ॥३४॥

मनुष्यों को कला काम देने वाले काम नामक सरोवर ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करने से सर्वदा सुख को प्राप्त होता है । १ कोश प्रमाण से परिक्रमा करें ॥३०॥

अब प्रसंग में चन्द्रावलीवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । शौनकीय में—भाद्रशुक्ल चतुर्थी में चन्द्रावलीवन को जाकर विधि पूर्वक प्रार्थनादि करने से परिपूर्ण सुख की प्राप्ति होती है । मन्त्र यथा—हे श्रीकृष्ण के सौख्य, उत्सव, गुण, रूप, कलाओं के राशि ! हे चन्द्रावली का निवासस्थल ! श्रीकृष्ण के प्रिय आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ९ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो कलायुक्त श्रीहरि साक्षात् धन, काञ्चनादि प्रदान करते हैं ॥ ३१ ॥

वहाँ चन्द्रावलीसरोवर है । स्नानादि मन्त्र यथा—हे पीला, रक्त, सफेद, श्याम रंग के जल वाले ! हे सुन्दर विशुद्ध उत्सव स्वरूप चन्द्र सरोवर ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो परिपूर्ण सुख का लाभ कर पृथ्वी में रमता है । डेढ़ कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें ॥३२॥

अब प्रसंग में लोहवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वाराह में—भाद्रशुक्ला चतुर्थी में लोहवन को जाकर विधि पूर्वक प्रार्थना करें । वहाँ लोहदान का विधान है । प्रार्थनामन्त्र—हे लोहांगमुनि से उत्पन्न लोहवन ! आपको नमस्कार । आप तापस ब्रह्मरूप हैं । यमलोक दर्शन का नाश करने वाले हैं । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो स्वप्न में भी उसको दुःख दर्शन नहीं है ॥३३॥

तदनन्तर गिरीशकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र—हे गिरीशकुण्ड ! हे तीर्थराज ! हे वरप्रद ! सर्वदा कल्याणदाता आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार मज्जनादि करें । शिवजी को प्रणाम

ततो वज्रेश्वरमहादेवेक्षणपाथ नमन्त्रः—

वज्रेश्वराय देवाय सर्वान्तकविमुक्तये । नमस्त्रैलोक्यपालाय नाथाय शिवरूपिणे ॥
इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । वज्रांगसदृशो लोकश्चिरजीवी भवेन्नरः ॥
क्रोशद्वयप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् । इति लोहवनस्यापि महात्म्यं समुदाहृतं ॥
इति वनयात्राप्रसंगे लोहवनप्रदक्षिणा ॥३५॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे तपोवनप्रदक्षिणा । भविष्योत्तरे—

लक्ष्मीकलाक्षयेऽन्हौ च तपोवनमुपागतः ॥ लक्ष्मीकलाक्षये उदाहरणं ।—
परमायुः प्रमाणेऽब्दे लक्ष्मीः क्षीणकलाऽभवत् । जयाख्ये वत्सरे जाते द्विषष्टि परिमाणतः ॥
स्वपिता पृथिवीलोके जनाः मृत्युमुपागताः । मृद्वत्सरी समुत्पन्ना चण्डी लोकानभक्षयत् ॥
तस्याः भयप्रकंपेन लक्ष्मीः गोप्यमुपाविशत् । त्रिभिः स्वर्णादिभिश्चैव त्रिभिर्धातुस्वरूपगैः ॥
यथा मणिभृताः सर्पाः बिलभूमौ निसीदंति । तथोद्योगविहीनाशा पुण्यव्यापारवर्जिता ॥
धनधान्यसमूहेन चौरस्त्रीव गृहे स्थिता । महर्घाणि च धान्यानि घृतादीनि रसानि च ॥
लवणं वर्जितान्येव वस्त्रपात्रादिधातवः । गंगायमुनयोर्मध्ये धान्यानां च महर्घता ॥
दुर्भिक्षकुपिताः लोकाः पातालमधितिष्ठंति । भाद्रे पयोःद्वयोश्चैव वर्षनाशः प्रजायते ॥
शस्यनाशोऽथ दुर्भिक्षं जनाश्चिन्ताकुलास्तु हि । इन्द्रप्रस्थसमीपे तु घोरयुद्धं बभूव ह ॥
व्रजमण्डललोकेशो राक्षसैर्मृत्युमाप्नुयात् । शस्यनाशो भवत्येव पीडितास्ते व्रजौकसः ॥
प्रवृत्ते चैव विंशाब्दे जनाः राजास्तथा प्रजाः । कुर्वन्त्यरिष्टनाशाय घृतदानं विशेषतः ॥
विंशाब्दे पूर्णतां याते एकविंशे समागमे । आर्द्रापुनर्वसूऋक्षौ वृष्टिशून्यौ बभूवतुः ॥
मन्मथे वत्सरे जाते चतुर्मासावलंघने । श्रावणे शुक्लपक्षे तु प्रतिपद्रविसंयुता ॥
मृतुयोगसमाविष्टा सार्प्यपातसमन्विता । सर्पारूढे रवौ जाते वक्रो जाते भृगोःसुते ॥
इन्द्रदुन्दुभिशब्दे च दुर्दिने समुपागते । यथान्तसमये प्राणी प्राणमन्तरतोऽक्षिपन् ॥
तथा गेहान्तरे लक्ष्मीः क्षिपते क्रन्दते मुहुः । सूर्योदयघटी जाताः पंचविंशा कुयोगगाः ॥
भौमे सवृश्चिके लग्ने हाहाकाररवैः सह । गोपुरोट्टालकैः सार्द्धं पाताले कंपते फणी ॥
भूमिर्विदीर्णभावेन कम्पते प्राणनाशिनी । घटीद्वयप्रमाणेन भूमिकंपो भयानकः ॥
पातालं गन्तुमिच्छन्त पापक्रान्ता वसुन्धरा । तत्क्षणे तु कलाः क्षीणाः कमलायाः भवन्तिहि ॥
तद्दिने मानवाः लोके चिरायुः वृद्धिमीप्सवः । दानं कुर्युर्विधानेन वस्त्राणां परिवर्त्तनं ॥
हिरण्यरूपिणी पृथ्वी वत्सगोभू हिरण्यकं । रुक्मपात्राणि हस्त्यश्व घृतादिकरसानि च ॥
गोधूमतन्दुलादीनि विप्रेभ्यो दानमाचरेत् । अरिष्टशमनार्थाय नूनं शान्तिमुपाचरेत् ॥

भी करें तो मंगल, आयु बढ़ता है ॥ ३४ ॥

अनन्तर वज्रेश्वर महादेव का दर्शन है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे वज्रेश्वर! हे समस्त आतंक निवारक! हे देव! हे शिवरूप! त्रैलोक्यनाशकारी आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य वज्र तुल्य शरीर के लाभ पूर्वक चिरायु होता है। दो कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें ॥ ३५ ॥

यद्गृहेतु नैव दानं स्या तत्समूलं विनश्यति । गेहे गेहे करोतुपूजां सायंकाले निशीथगे ॥
अभिषेकं च दुग्धेन दूर्वांपुंजयुतेन च । भूमिं प्रपूजयेद्यस्तु यथा राजास्तथा प्रजा: ॥
दानाशक्ये प्रजा: लोका: यथा शक्त्यनुसारत: । गेहगेहात् भवेत्पुण्यं सहस्रगुणितं भवेत् ॥
नैव कृत्वा यदा दानं चन्द्रसूत्रप्रमाणत: । सदैव ऋणदारिद्र्यै: बहुचिंताप्रपीडिता: ॥
द्विजादयश्च वर्णास्ते गेहे गेहे प्रयोगकं । कुर्यु:सर्वार्थसंपत्यै लक्ष्मीमन्त्रस्य सिद्धिदं ॥
चतुराणि दिनान्येव त्यक्त्वा कपर्दिनादपि । श्रावणशुक्लपंचम्यां प्रयोगस्यारम्भं चरेत् ॥
चतुर्मासावधिं यावत्त्रयोदशसहस्रकं । मार्गे च शुक्लपञ्चम्यां पूर्णसंख्यां समापयेत् ॥
शतमष्टोत्तरं नित्यमुत्तराभिमुखे विशत् । सिंहाजिनमुपाविश्य चन्दनोद्भवमालया ॥
लक्ष्मीमन्त्रं जपन्ति स्म गुप्तस्थाने जना: प्रजा: । जुहुयान्नित्यमेवैव घृतेन च दशांशकं ॥
इति पूजाविधि: प्रोक्ता नष्टपद्मोद्भवाय च ।
अथा : संप्रवक्ष्यामि राजमंत्रप्रयोगकं । द्वाविंशत्ब्राह्मणेभ्यस्तु द्विविंशति सहस्रकं ॥
कारयेद्विधिपूर्वेण ह्यखंडघृतदीपकं । स्वर्णमुद्राभि:संतोष्य भोजनैष्टप्रपूरकै: ॥
ब्राह्मणान्नित्यमेवैव दक्षिणाभि: प्रपूजयेत् । वस्त्रालंकारणाद्यैस्तु वर्णयेद्विधिपूर्वकं ॥
दशांशं क्रियते होमं रत्नगर्भा वसुन्धरा । घृतं मणप्रमाणं च नित्यदानं करोन्नृप: ॥
खखाभ्र नभपड्पड्भिरेकमासप्रयोगकं । ६६०००० ॥ एकमासे प्रयोगं यद्विधिपूर्वमुदाहृतं ॥
तथा चतुर्षु मासेषु प्रयोगं विधिवच्चरेत् । प्रयोगे पूर्णतां याते लक्ष्मीरवतरेद्भुवि ॥
स्वर्णादिधातुसर्वैस्तु पुन्यव्यापारसञ्चयै: । परमायु: प्रमाणेन गोदानं विधिवद्ददौ ॥
रत्नधान्यानि द्रव्याणि जायन्ते बहुधा भुवि । पूर्वलोका: मृयन्ते स्म नवोत्पन्ना: रमन्ति च ॥
समर्घाणि च धान्यानि मन्मथाब्दे प्रपूरणे । द्विविंशाब्दे यदाजाते छत्रधारी भविष्यति ॥
चतुर्दिग्मण्डलं जातं सुभिक्षं धर्मराजकं । सुराज्यमिन्द्रप्रस्थे स्याल्लक्ष्मीराविर्भवेद्भुवि ॥
सुवर्णरूपिणीं भूमिं दद्याद्विप्राय धीमते । राजा भूमिदशांशेन पुण्यदानं समाचरेत् ॥
इत्युत्पातमर्घां शान्तिं कुर्याद्राजा विधानत: ॥

अथ लक्ष्मीमन्त्रप्रयोग: । लक्ष्मीरहस्यं—

"ओं ऐं ह्रीं सौं क्लीं श्रीं कमलोद्भवायै स्वाहा" इति त्रयोदशाक्षरो नष्टकमलोद्भवमन्त्र: । अनेन मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कुर्यात् । अस्य मन्त्रस्य विष्णु ऋषिर्लक्ष्मी देवतास्त्रिष्टुप्छन्द: मम नष्टपद्मोद्भवार्थे जपे विनियोग: । अथ न्यास:—शिरसि विष्णवे ऋषये नम: मुखे त्रिष्टुप्छन्दसे नम: हृदये लक्ष्म्यै देवतायै नम: इति न्यास: । अथध्यानं—

विंशाब्दशंकाविपरीतनष्टगुप्तस्वरूपां भयविह्वलांगीं ।
महर्घधान्यार्थकरीं भजामि पुनर्भवां राज्यसुभिक्षरूपिणीं ॥
छत्रान्वितां छत्रविधायिनीं रमां वर्षद्वयाच्छादितबालसंज्ञां ।
इति पुनर्भवलक्ष्मीस्वरूपं ध्यात्वा प्रयोगस्य जपं कृत्वा कमलायै समर्पयेत् ॥
गुह्यातिगुह्यतरं देवि गृहाण परमेश्वरि ! । इति नष्टपद्मोद्भवमन्त्रप्रयोग: ॥

नृसिंहपुराणे—सीतया शापितो विष्णु: श्रियै शापं ददौ हरि: । विंशोत्तरशतेऽब्दे त्वं लोकनष्टा भविष्यसि ॥
विष्णु शापान्वितो मन्त्रस्तस्य मुक्तप्रयोगकं ।—

ॐ अस्य श्रीविष्णुशापप्रमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मर्षिः कौमारी देवता गायत्री छन्दः मम विष्णुशापप्रमोचने जपे विनियोगः। इति विष्णुशापमुक्ताभवः ॥

चतुर्भिरञ्जलीः नीत्वा चतुर्दिक्षु विनिःक्षिपेत्। धनधान्यसमृद्धिं च नानालक्ष्मीसुखं लभेत् ॥

इति विष्णुशापमोचनप्रयोगः ॥ ३६ ॥

ततस्तपोवनप्रार्थनमन्त्रः। पाद्मे—

नष्टसंवत्सरोद्भूत लक्ष्मीगुप्तप्रकाशिने। नमस्ते यौवनायैव सर्वारिष्टविनाशिने ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत्। सर्वारिष्टविनिर्मुक्तो सकलेष्टमवाप्नुयात् ॥३७॥

ततो विष्णुकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

विष्ण्वरिष्टकृतस्नान सर्वपापौघनाशिने। तीर्थराज नमस्तुभ्यं विष्णुकुंड वरप्रद ! ॥

इति द्वादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन्। कदारिष्टं न पश्येत विष्णुसायोज्यमाप्नुयात् ॥

एकक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे तपोवनप्रदक्षिणा ॥ ३८ ॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे जीवनवनप्रदक्षिणा। स्मृतिमयूखे—

आषाढकृष्णसप्तम्यामागतो जीवनं वनं। प्रार्थयेद्विधिपूर्वेण परमायुः सजीवति ॥

जीवनवनप्रार्थनमन्त्रः—

संजीवनस्वरूपाय भृगुणा निर्म्मिताय ते। वनाय जीवनाख्याय नमो वैकुंठरूपिणे ॥

इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत्। आयुरारोग्यमाप्नोति कदा क्लेशं न पश्यति ॥३६॥

ततो पीयूषकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

नमोऽमृतस्वरूपाय मृतामृतविधायिने। निःकल्मषाय तीर्थाय पीयूषवरदायिने ॥

इत्यष्टादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन्। देवना सदृशो लोको जायते पृथिवीतले ॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में तपोवन की प्रदक्षिणा कहते हैं। भविष्य भूमिखण्ड में—अनाचार होने पर लक्ष्मी जी दिन में तपोवन में पहुँची। कलाक्षय के उदाहरण में सुधी मूल श्लोकों को देखें। विस्तार होने का कारण अनुवाद नहीं किया गया है ॥ ३६ ॥

अनन्तर तपोवन का प्रार्थनामन्त्र पाद्म में—हे नष्ट सम्वत्सर में उत्पन्न ! लक्ष्मी द्वारा गुप्त प्रकाश तपोवन ! परम पवित्र, समस्त अरिष्ट नाशकारी आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य समस्त अरिष्ट से मुक्त होकर अभीष्ट लाभ करता है ॥ ३७ ॥

अनन्तर विष्णुकुण्ड है। स्नानाचमन मन्त्र यथा—हे विष्णु अरिष्ट से किये हुए स्नानकुण्ड ! समस्त पाप नाशक, वरद विष्णुकुण्ड नामक तीर्थराज ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो कभी अरिष्ट नहीं देखता है तथा विष्णुसायुज्य को प्राप्त होता है। १ कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें ॥ ३८ ॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में जीवनवन की प्रदक्षिणा कहते हैं। स्मृतिमयूख में—आषाढ़ शुक्लासप्तमी में जीवनवन को आकर विधिवत् प्रार्थनादि करने से यावत् आयु जीता है। प्रार्थनामन्त्र—हे संजीवनी स्वरूप ! हे भृगुकर्तृक निर्म्मित ! हे जीवन नामक वन ! वैकुण्ठ स्वरूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से आयु आरोग्य लाभ करता है। कभी क्लेश को नहीं प्राप्त होता है ॥३६॥

पादोनक्रोशमात्रेण प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे जीवनवनप्रदक्षिणा ॥४०॥
अथ वनयात्राप्रसंगेपिपासावनप्रदक्षिणा । सौपर्णसंहितायां—

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां च पिपासावनमागतः । प्रार्थयेन्मन्त्रपूर्वेण तृषा शान्तिमवाप्नुयात् ॥

पिपासावनप्रार्थनमन्त्रः—

प्रेततृड्मुक्तये तुभ्यं पिपासाख्यवनाय ते । नमः प्रेतत्वनाशाय तापार्त्तिहरये नमः ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । वैकुंठपदमाप्नोति बहुपापान्वितो मृतः ॥४१॥

ततो मन्दाकिनीकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

मन्दाकिनी वियत्पात संभवाय नमोऽतु ते । कृष्णक्रीडाविहारतृड्शान्तये मुक्तिदायिने ॥

इति मन्त्रं त्रिरावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । अश्वमेधफलं लब्ध्वा मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥४२॥

ततो रासमंडलप्रार्थनमन्त्रः—

विहारसुखरूपाय मंडलाय नमोऽस्तु ते । लोकानन्दप्रमोदाय गोपिकावल्लभाय च ॥

इत्यष्टभिः पठन्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । कृतार्थफलमलभ्य वैकुंठपदवीं लभेत् ॥

एकक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति वनयात्राप्रसंगे पिपासावनप्रदक्षिणा ॥४३॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे चात्रगवनपरिक्रमा । लैंगे—

ज्येष्ठशुक्लतृतीयायामागमच्चात्रगवनं । प्रार्थयेन्मन्त्रप्रोक्तेन परिपूर्णसुखं लभेत् ॥

चात्रगवनप्रार्थनमन्त्रः—

नमश्चात्रगरम्याय कृष्णानन्दप्रदायिने । गोपिकाविमलोल्लासपरिपूर्णसुखात्मने ॥

इति षड्भिरुदामन्त्रप्रणतिं विधिवच्चरेत् । सकलेष्टवरं लब्ध्वा रमते पृथिवीतले ॥४४॥

अनन्तर पीयूषकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे अमृत स्वरूप ! हे मृत को अमृत करने वाले ! कल्मषशून्य वरदाता पीयूषतीर्थ ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १८ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य देवतातुल्य होता है । पौन कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥४०॥

अब वनयात्राप्रसंग में पिपासावन की प्रदक्षिणा कहते हैं । सौपर्ण संहिता में—भाद्रशुक्ला चतुर्थी में पिपासावन की यात्रा करें । विधिवत् प्रार्थनादि करने से तृषा शान्त हो जाती है । मन्त्र यथा—हे प्रेत तृष्णा मुक्तकारी पिपासावन ! हे प्रेतत्व नाश करने वाले ! हे ताप तृष्णा दूर करने वाले ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कारादि करने से महापापी भी वैकुंठ को प्राप्त होता है ॥४१

अनन्तर मन्दाकिनीकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र—हे आकाश से गिरने के कारण उत्पन्न मन्दाकिनी तीर्थराज ! आप कृष्ण की विहारक्रीडा प्यास की शान्ति के लिये हैं । मुक्तिदाता आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ३ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य दशाश्वमेधी के फल को लाभ कर मुक्तिभागी होता है ॥ ४२ ॥

अनन्तर रासमंडल है । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे विहारसुखरूप ! हे मनुष्यों को आनन्द देने वाले रासमंडल ! गोपीवल्लभ आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य कृतकृत्य होकर वैकुंठ को जाता है । एक कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥ ४३ ॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में चात्रगबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । लैंग में—ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया में

ततो माहेश्वरीसरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

स्वर्णाभजलरम्याय पार्वतीसरसे नमः । रुद्रहेलासमुद्भूततीर्थराज वरप्रदे ! ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कुर्याद्विधानेन रुद्रलोकमवाप्नुयात् ॥

क्रोशार्द्ध परिमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् ॥ ४५ ॥

अथ ब्रजयात्राप्रसंगे कपिबनप्रदक्षिणा । वायुपुराणे—

ज्येष्ठकृष्णनवम्यां तु गतो कपिबनं शुभं ।

कपिबनप्रार्थनमन्त्रः—

नानाकपिसमाकीर्णं क्रीडाविमलरूपिणे । नमः कपिबनायैव गोपीरमणहेतवे ॥

इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । हरिवल्लभतामेति त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥४६॥

ततोऽञ्जनीकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

अंजनीस्नानसंभूत तपःसिद्धिस्वरूपिणे । वायुवैमल्यरूपाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति द्वादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । मन्त्रसिद्धिसमायुक्तो वरदो जायते भुवि ॥४७॥

ततो हनुमद्दर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

तपसां निधये तुभ्यं सर्वदारिष्टनाशिने । नमः कैवल्यनाथाय वज्रांग वरदायिने ॥

इति त्रयोदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । वज्रांगसदृशो जातः संग्रामविजयी भवेत् ॥

क्रोशद्वयप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति बनयात्राप्रसंगे कपिबनप्रदक्षिणा ॥४८॥

चात्रगवन में आकर विधि पूर्वक प्रार्थना करें । मन्त्र यथा—हे श्रीकृष्ण को आनन्द देने वाले मनोहर चात्रगबन ! हे गोपियों के पवित्र उल्लास द्वारा परिपूर्ण सुखरूप ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करने से समस्त इष्ट वर को प्राप्त होता है ॥४४॥

अनन्तर माहेश्वरीसरोवर है । स्नानादि मन्त्र—हे सुवर्ण रंग के जलवाले ! हे रुद्रजी की हेला से उत्पन्न मनोहर पार्वती सरोवर ! तीर्थराज आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ९ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें । विधि पूर्वक नमस्कार करने से रुद्रलोक को प्राप्त होता है । पौन कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥४५॥

अब ब्रजयात्रा प्रसंग में कपिबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वायुपुराण में—ज्येष्ठ कृष्णा नवमी में कपिबन की यात्रा करें । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे नाना बन्दरों से व्याप्त विशुद्ध क्रीड़ारूप कपिबन ! आपको नमस्कार । आप गोपियों के विहार के लिये हैं । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो हरि का प्रिय होकर तीन लोक में विजयी होता है ॥४६॥

अनन्तर अञ्जनीकुंड है । स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे अञ्जनी के स्नान से उत्पन्न तपस्या सिद्धिरूप तीर्थराज आपको नमस्कार । आप विशुद्ध वायु रूप हैं । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मन्त्र की सिद्धि को प्राप्त होकर वरदाता होता है ॥४७॥

वहाँ हनुमद्दर्शन प्रार्थनामन्त्र—हे तपस्या के राशि अरिष्टनाशक ! आपको नमस्कार । आप बज्रांग हैं वरदाता और कैवल्य नायक हैं । इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से बज्रांग सदृश होकर तीन लोक में विजयी होता है । २ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥४८॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे विह्स्यबनप्रदक्षिणा । पाद्मे—

आषाढ़कृष्णाष्टम्यां विह्स्यवनमागतः । प्रार्थनां कुरुते यस्तु विमलो जायतेऽवनौ ॥

विह्स्यबनप्रार्थनमन्त्रः—

रामेक्षणप्रसीदाय विहस्याख्यबनाय ते । कृष्णगोपीकृतोल्लास मंदहास्यसमुद्भव ! ॥

इति चतुर्भिरुच्चार्य्य चुष्टिकाभिर्नमस्करोत् । लोकपूज्यो नरो जातः प्रसीदाननसंज्ञकः ॥४६॥

ततो रामकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

संकर्षणकृतस्नान गोपीरमणहेतवे । रामकुंडाभिधानाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा मज्जनाचमनं नमन् । विक्रमेन समायुक्तो लोकानां वश्यकारकः ॥

सार्द्ध क्रोशद्वयेनैव प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे विह्स्यबनप्रदक्षिणा ॥५०॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे आहूतबनप्रदक्षिणा । आदिपुराणे—

ज्येष्ठकृष्णदशम्यां तु आहूतबनमागतः । गोपालवाहनोद्भूतं प्रार्थयेद्विधिपूर्वकं ॥

आहूतबनप्रदक्षिणाप्रार्थनमन्त्रः—

कृष्णवाक्यसमाहूत समागमविधायिने । गोगोपालसुखावासाहूतसंज्ञाय ते नमः ॥

इति सप्तदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सदा वाक्यवरश्रेष्ठफलं लोकेषु लभ्यते ॥५१॥

ततो ध्यानकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः –

गोपीध्यानसमाहूत कृष्णचेष्टाविधायिने । ध्यानकुंड नमस्तुभ्यं लोकानामिष्टदायिने ॥

इति मन्त्रं षडावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । चतुर्दिक्षु समुद्भूतं चिंतितेष्टफलं लभेत् ॥

पादोनद्वयक्रोशेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे आहूतबनप्रदक्षिणा ॥५२॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में विह्स्यबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। पाद्म में—आषाढ़ कृष्णा अष्टमी में विह्स्यवन को जाकर प्रार्थना करने से विशुद्ध हो जाता है। मन्त्र यथा—हे रामजी के दर्शन से प्रसन्न ! हे कृष्ण गोपियों के किये हुए उल्लास मन्दहास्य से उत्पन्न विहस्य नामक वन ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य लोकपूज्य हो जाता है ॥४६॥

अनन्तर रामकुण्ड है। स्नानादिमन्त्र यथा—हे संकर्षण द्वारा किये हुए स्नानस्थल ! आप गोपियों के रमण के लिये हैं। हे रामकुण्ड नामक तीर्थराज ! आपको नमस्कार है। इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो पराक्रमी होकर मनुष्यों को वश में लाता है। २॥ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥५०॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में आहूतबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। आदिपुराण में—ज्येष्ठ कृष्णा दशमी में आहूतबन को जाकर गोपाल के आवाहन से उत्पन्न बन की प्रार्थना करें। मन्त्र यथा—हे कृष्ण वाक्य से आह्वान किये गये आहूत बन ! आप गौ गोपालों के सुखावास स्वरूप हैं। इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्यों में वाक् सिद्धि को प्राप्त हो जाता है ॥५१॥

अनन्तर ध्यानकुण्ड है। स्नानादि मन्त्र—हे गोपियों के द्वारा ध्यान से आह्वान किये गये कृष्ण चेष्टा विधायक ध्यानकुंड ! आपको नमस्कार। आप मनुष्यों को इष्ट देने वाले हैं। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो चारों ओर से चिन्तित इष्ट को प्राप्त होता है। १॥ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥५२॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे कृष्णस्थितिबनप्रदक्षिणा । वामनपुराणे—

ज्येष्ठशुक्लनवम्यां तु कृष्णस्थितिबनं ययौ । प्रार्थनं कुरुते यस्तु स्त्रीसुखं चिन्तितं लभेत् ॥

ततो कृष्णस्थितिबनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपीक्षणकृता चिंता कृष्णस्थितिबनाय ते । नमः समागमसौख्यबनश्रेष्ठप्रदायिने ॥

इति मन्त्रं त्रिरावृत्या नमस्कारं करोन्नरः । इष्टसमागमोद्भूतवरमीप्सितमाप्नुयात् ॥५३॥

ततो हेलासरस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपीकृष्णकृतहेला स्नपनोद्भवकेलिने । हेलाख्यसरसे तुभ्यं तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति त्रयोदशावृत्या मज्जनाचमनैं र्नमन् । सदा क्रीडासुखं गेहे समस्तपरिचिन्तनैः ॥

सपादक्रोशमानेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे कृष्णस्थितिबनप्रदक्षिणा ॥५४॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे भूषणबनप्रदक्षिणा । विष्णुधर्म्मोत्तरे—

वैशाखशुक्लपक्षे तु प्रतिपद्दिनसंभवे । भूषणाख्यं बनं नाम गतो प्रार्थनमाचरेत् ॥

भूषणबनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपीसींजितशृंगार भूषणस्थल शोभिने । कृष्णेंगितस्वरूपाय नमस्ते सुखदायिने ॥

इति द्वादशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । स्वर्णमुक्तामणिरुक्माभूषणं लभते सदा ॥५५॥

ततो पद्मासरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

पद्मासखीकृतस्नान संभवोल्लासरूपिणे । पद्माख्यसरसे तुभ्यं नमः पद्मविभूषिते ॥

इत्यष्टादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनैं र्नमन् । सर्वदा विमलोद्भूतैः सुखैस्तु कमलां भजेत् ॥

पादोनक्रोशमानेण प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे भूषणबनप्रदक्षिणा ॥५६॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे वत्सबनप्रदक्षिणा । ब्राह्मे—वैशाखशुक्लसप्तम्यां व्रती वत्सबनं गतः ।

अब व्रजयात्राप्रसंग में कृष्णस्थितिबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। वामनपुराण में—ज्येष्ठ शुक्ला नवमी में कृष्णस्थितिबन को जाकर प्रार्थनादिक करें। मन्त्र यथा—हे गोपियों के ईक्षण से युक्त कृष्णस्थिति-बन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक नमस्कार करने से इच्छित वर को प्राप्त होता है ॥५३॥

अनन्तर हेलासरोवर स्नान, आचमन, मन्त्र यथा—हे गोपी कृष्ण के हेला से उत्पन्न ! हे दोनों के स्नान से उत्पन्न हेलासरोवर ! तीर्थराज आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करने से सर्वदा गृह में क्रीड़ासुख का अनुभव करता है। सवा कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥५४॥

अब व्रजयात्राप्रसंग में भूषणबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। विष्णुधर्म्मोत्तर में—वैशाख शुक्लपक्ष प्रतिपदा के दिन भूषण नामक बन को जाकर प्रार्थना करें। मन्त्र यथा—हे गोपियों के शृंगार भूषणों के मनोहर शब्द से शोभित कृष्ण की इङ्गितस्वरूप सुखदायी भूषणबन ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से सुवर्णादि विविध भूषण का प्राप्त होता है ॥५५॥

अनन्तर पद्मासरोवर है। स्नानादि मन्त्र यथा—हे पद्मा सखी के स्नान से उत्पन्न उल्लासरूप पद्मा नामक सरोवर आपको नमस्कार। आप पद्मों से भूषित हैं। इस मन्त्र के १८ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन करें तो सर्वदा विशुद्ध सुख तथा कमला को प्राप्त होता है। ॥। कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥ ५६ ॥

वत्सबनप्रार्थनमन्त्रः—

विरंचिलोभमोहोत्थवत्साहरणहेतवे । नमःकृतार्थरूपाय वत्साख्याय वनाय ते ॥

इतिमन्त्रं समुच्चार्य्य पञ्चभिः प्रणतिं चरेत् । कृतार्थ पदवीं लब्ध्वा ब्रह्मलोकमवाप्नुयात् ॥५७॥

ततो गोपालकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपालस्नपनोद्भूत बहुधा श्रमनाशिने । नमस्ते तीर्थराजाय गोधनसुखदायिने ॥

इति त्रयोदशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । धनधान्यसमृद्धिस्तु गोधनसुखमाप्नुयात् ॥

क्रोशद्वयप्रमाणेन वत्सवनप्रदक्षिणा ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे वत्सवनप्रदक्षिणा ॥५८॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे क्रीडाबनप्रदक्षिणा । मात्स्ये—ज्येष्ठकृष्णतृतीयायां क्रीडावनमुपागतः ।

क्रीडाबनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपीक्रीडासमुत्पन्न कृष्णचेष्टाविधायिने । सुखसारंगरूपाय क्रीडावन नमोऽस्तु ते ॥

इत्यष्टभिर्जपन्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । परिपूर्णसुखं लब्ध्वा लोकपूज्यो भवेन्नरः ॥५९॥

ततो भामिनीकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकाभामिनीरूप कृतस्नपनकेलिके । कृष्णसंभावनोद्भूत तीर्थराजाय ते नमः ॥

इत्येकादशभिर्मंत्रं मज्जनाचमनं नमन् । संभावनैच्छितं कार्य्यफलमाप्नोति नित्यशः ॥

सार्द्धक्रोशप्रमाणेन क्रीडाबनप्रदक्षिणा ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे क्रीडावनप्रदक्षिणा ॥६०॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे रुद्रवनप्रदक्षिणा । भविष्योत्तरे—वैशाखकृष्णद्वादश्यां महारुद्रवनं गतः ।

अब व्रजयात्राप्रसंग में वत्सवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । ब्राह्म में—वैशाख शुक्ला सप्तमी में बनयात्री वत्सबन को जावें । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे मोहप्राप्त ब्रह्माजी कर्तृक वत्सादि हरणस्थल ! कृतार्थरूप वत्सवन आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार प्रणाम करें तो कृत्य २ होकर ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है ॥५७॥

वहाँ गोपालकुण्ड है । स्नानादिमन्त्र यथा—हे गोपाल के स्नान से उत्पन्न बहु प्रकार श्रमनाशक गोपालकुण्ड ! तीर्थराज आपको नमस्कार । आप गो धन सुख के देने वाले हैं । इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो धन धान्य, समृद्धि, गोधन, सुख को प्राप्त होता है । २ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥ ५८ ॥

अब व्रजयात्राप्रसंग में क्रीडाबन की परिक्रमा कहते हैं । मात्स्य में—ज्येष्ठ कृष्णा तृतीया में क्रीड़ावन की यात्रा करें । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे गोपियों की क्रीड़ा से उत्पन्न श्रीकृष्ण की चेष्टा को धारण करने वाले क्रीड़ावन ! आपको नमस्कार । आप सुख के समुद्र हैं । इस मन्त्र के १८ बार जप पूर्वक नमस्कार करने से परिपूर्ण सुख को प्राप्त होकर लोकपूज्य होता है ॥ ५९ ॥

अनन्तर भामिनीकुण्ड है । स्नानादि मन्त्र यथा—हे गोपिकाभामिनी स्वरूप धारी श्रीकृष्ण के स्नान से उत्पन्न तीर्थराज भामिनीकुण्ड ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो भावना फल को प्राप्त होता है । १॥ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥ ६० ॥

रुद्रबनप्रार्थनमन्त्रः—

तपः समाधिसंभूत रुद्रसिद्धिप्रदायिने । नमो रुद्रबनाख्याय परिपूर्णकलात्मने ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्यैकादश प्रणतिं चरेत् । रुद्रस्वप्नवरं लब्ध्वा परिपूर्णसुखं लभेत् ॥६१॥

ततो गदाधरकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गदाधर विभुसाक्षाद्रुद्रार्थवरदायिने । तीर्थराज नमस्तुभ्यं गदाधरसमाह्वय ! ॥

इत्यष्टधा पठन्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । गदाधरो हरिःसाक्षात्तस्य क्लेशं निवारयेत् ॥

क्रोशार्द्धपरिमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति ब्रजयात्राप्रसंगे रुद्रबनप्रदक्षिणा ॥६२॥

अथ ब्रजयात्राप्रसंगे रमणबनप्रदक्षिणा । स्कान्दे—भाद्रशुक्लनवम्यां च गच्छेद्रमणकं बनं ।

रमणबनप्रार्थनमन्त्रः—

बालारामसुखाश्लिष्ट रमण कृष्णचेष्टिने । रमणाख्याय बनाय रम्याय च नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिः प्रणतिं चरेत् । बालोत्सवरसक्रीडां गृहसौख्यमवाप्नुयात् ॥६३॥

ततो कृष्णांघ्रिलाञ्छनप्रार्थनमन्त्रः—

पञ्चाब्दकृष्णरूपांघ्रिकमलचिन्हमूर्त्तये । नमस्ते शुक्तिरम्याय रजोछादितकांतये ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य पञ्चभिर्प्रणतिं चरेत् । हरिवत्क्रीडयन्ते बालास्तस्य गेहे न संशयः ॥६४॥

ततो ऽटलेश्वरकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

अटलेश्वर श्रीकृष्ण स्नपनतीर्थ संभवे । नमः कैवल्यनाथाय सर्वदा प्रीतिदायिने ॥

इति मन्त्रं नवावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । अटलां पदवीं लब्ध्वा तथा ध्रुवसमो नरः ॥

अब ब्रजयात्राप्रसंग में रुद्रबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। भविष्योत्तर में—वैशाख कृष्णा द्वादशी में महारुद्रबन को जावें। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे तपस्या समाधि से उत्पन्न ! हे रुद्रसिद्धिदाता ! परिपूर्ण कलास्वरूप रुद्रबन आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ११ बार प्रणाम करने से स्वप्न में रुद्रजी का वर मिलता है ॥६१॥

अनन्तर गदाधरकुण्ड है। स्नानाचमनमन्त्र यथा- हे गदाधर ! हे साक्षात् व्यापक ! हे रुद्रजी को वर देने वाले ! हे तीर्थराज गदाधरकुण्ड ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो गदाधर हरि उसका क्लेश निवारण करते हैं। अर्द्ध कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥६२॥

अब ब्रजयात्राप्रसंग में रमणबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे बालाओं के रमण सुख से संयुक्त श्रीकृष्ण के चेष्टास्थल ! हे रमण नामक रम्य बनराज ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ७ बार प्रणाम करने से बालिका क्रीडा से परिपूर्ण गृह को प्राप्त होता है ॥६३॥

अनन्तर श्रीकृष्ण के चरणचिन्ह हैं। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे पाँच वर्षीय श्रीकृष्ण की चरणचिह्न मूर्त्ति ! शुक्तिस्वरूप आपको नमस्कार। आप रज कणों से आच्छादित होकर सुन्दर शोभा को प्राप्त हैं। इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार प्रणाम करने से श्रीकृष्ण के गृह के न्याय बालिकागण उसके गृह में क्रीड़ा करते हैं ॥ ६४ ॥

अनन्तर अटलेश्वरकुण्ड है। स्नान, आचमन, प्रार्थनामन्त्र यथा—हे अटलेश्वर ! हे श्रीकृष्ण के स्नपन से उत्पन्न तीर्थराज अटलेश्वरकुण्ड ! सर्वदा प्रीति को देने वाले कैवल्यनायक आपको नमस्कार।

कोशद्वयप्रमाणेन रमणाख्यप्रदक्षिणा । कृतकृत्यो भवेल्लोके विष्णुसायोज्यमाप्नुयात् ॥६५॥
इति श्रीभास्करात्मजनारायणभट्टविरचिते व्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे
व्रजमाहात्म्यनिरूपणे समन्त्रबनयात्राव्रजयात्रोत्सवप्रसंगे एकादशोऽध्यायः ॥

॥ द्वादशोऽध्यायः ॥

अथ बनयात्राप्रसंगे ऽशोकबनप्रदक्षिणा । अगस्त्यसंहितायां—

अष्टम्यां भाद्रशुक्ले तु बृन्दावन समागमे । सांगे ऽशोकबनं नाम गत्वा प्रार्थनमाचरेत् ॥

प्रार्थनमंत्रः—क्रीडावानररम्याय वृक्षाशोकमनोरमे । सीतावास वृक्षश्रेष्ठ सौख्यरूपाय ते नमः ॥

इतिषोडशभिर्मन्त्रमुच्चरन्प्रणतिं चरेत् । सीतावरप्रसादेन राज्यमाप्नोति धार्म्मिकं ॥१॥

ततो सीताकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

जानकीस्नानसंभूत तीर्थराजाय ते नमः । नीलपीतकल्लोलाभ परमोक्षस्वरूपिणे ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । मुक्तिभागी भवेल्लोको ह्यावागमनवर्जितः ॥
चतुःक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥२॥

अथ बनयात्राप्रसंगे नारायणबनप्रदक्षिणा । आदिपुराणे—

भाद्रकृष्णस्यामावस्यां दिने नारायणं वनं । आगत्य प्रार्थनं कुर्य्यान्नारायणपदं लभेत् ॥

प्रार्थनमंत्रः—नारायणसुखावास परमात्मस्वरूपिणे । नमो नारायणाख्याय वनाय सुखदायिने ॥

इति मन्त्रं त्रिभिरुक्त्वा प्रणतिं विधिवच्चरेत् । लक्ष्मीवान्जायते लोको कलापूर्णो सुखं लभेत्॥३॥

इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य ध्रुव के न्याय अचल पदवी को प्राप्त होता है। २ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें तो कृत्य २ होकर विष्णु सायुज्य को प्राप्त होता है ॥६५॥

इति श्रीभास्करात्मज नारायणभट्ट गोस्वामीविरचित व्रजभक्तिविलास के एकादश अध्याय का अनुवाद समाप्त हुआ।

अब बनयात्राप्रसंग में अशोकबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। अगस्त्यसंहिता में—भाद्र शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथी में बृन्दावन के गमन में मार्गस्थित अशोकबन जाकर प्रार्थना करे। मन्त्र यथा—हे बन्दरों की क्रीड़ा से मनोहर! हे अशोकवृक्षों से सुन्दर! हे सीताजी के आवास से श्रेष्ठ! सौभाग्यरूप आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से सीतादेवी के प्रसाद से धार्मिक राज्य को प्राप्त होता है ॥१॥

अनन्तर सीताकुण्ड है। स्नानादिमन्त्र यथा—हे जानकी जी के स्नान से उत्पन्न तीर्थराज सीता-कुण्ड! आपको नमस्कार। आप नीले, पीले, जल के कलोल से व्याप्त तथा परम मोक्ष को देने वाले हैं। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य आवागमन से रहित होकर मुक्तिभागी होता है। ४ कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥ २ ॥

अब बनयात्राप्रसंग में नारायणबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। आदित्यपुराण में—भाद्र कृष्णा अमावस्या के दिवस नारायणबन में आकर प्रार्थना करने से नारायण पद को प्राप्त होते हैं। मन्त्र यथा—हे नारायण के सुखावास! हे परमात्मा स्वरूप! नारायण नामक सुखदायी बन आपको नमस्कार। इस मन्त्र के तीन बार पाठ पूर्वक विधि पूर्वक प्रणाम करें तो मनुष्य लक्ष्मीवान् और कलावान् होता है ॥३॥

ततो गोपकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

नन्दादिस्नपनोद्भूततीर्थ निर्मलवारिणे । गोपकुण्डसमाख्याय नमस्ते मुक्तिदायिने ॥
इति मन्त्रं नवावृत्त्या मज्जनाचमने नमन् । परमेशपदं लब्ध्वा मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥
एकक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति व०.नारायणवनप्र० ॥४॥

अथ व०सखावनप्रदक्षिणा । ब्रह्मयामले—

एकादश्यां सितपक्षे आषाढे स्वपिते हरौ । सखावनं समायातो प्रार्थयेद्विधिपूर्वकं ॥
मन्त्रः—गोपालसखिभिरम्यैः चेष्टित कृष्णशोभिने । नानाक्रीडामनोज्ञाय सखावन नमोऽस्तु ते ॥
इत्यष्टादशभिर्मन्त्रमुच्चरन्प्रणतिं चरेत् । सर्वदा परिवारेण संयुतो सुखमाप्नुयात् ॥
अष्टादशसखीभ्यस्तु भोजनं कारयेन्नरः । चतुर्विधं च पक्वान्नं लड्डुदुग्धफलेन्दुकीं ॥
चतुर्थं खुरमं प्रोक्तं चतुः पात्रेषु निक्षिपेत् । चतुर्धातुमयान्येव रुक्मादीनां चतुर्विधाः ॥
षट् पात्राणि च रुक्मस्य सार्द्ध प्रस्थप्रमाणतः । एवं ताम्रस्य चत्वारि पित्तल्याश्चतुराणि च ॥
धातुकांस्यस्य चत्वारि चतुर्द्धास्थालनिर्मिताः ; अष्टादशं करोन्मूर्त्ति नामाक्षरविलेखितं ॥
पलद्वयसुवर्णस्य पृथक्नामानि तस्य च । गलेषु विन्यसेत् पट्टसूत्रेण परिवेष्टयेत् ॥
सखानां विप्रबालानां नमस्कुर्याद्व्रजौकसां ।

अष्टादशसखिनामनि । विष्णुयामले—

मधुमंगल श्रीकृष्ण सुबल पद्ममोदकः । बलिराम सुभद्रश्च वल्लभो कमलाकरः ॥
मेघश्याम कलाकान्तःपद्माक्षो कृष्णवल्लभः । मनोरमो जगद्रामः शुभगो लोकपालकः ॥
कादम्बो विश्वभोगी च नवनीतप्रियवल्लभः । इत्यष्टादशसंख्यानां सखानां नामलांच्छितं ॥
मूर्त्तिं हेममयीं लोभाद्वही तस्त्वा विनाशयेत् । सप्तजन्म भवेत्कुष्ठी ऋणदारिद्र्यपीडितः ॥
व्याधिक्लेशसमायुक्तो क्षुधादुःखैः सदान्वितः । भगवद्मुखसंभूतं हिरण्यं पादमाचरेत् ॥
पादयोः कुष्ठमाप्नोति नरेषु कथिता विधिः । रामकृष्णादिमूर्त्तीनां पाददोषो न विद्यते ॥
ब्राह्मे—रुक्मादितुर्य्यधातूनां पात्रस्पर्शो यदा भवेत् । स्नानादिस्पर्शनेचैव मृतजीवसमन्विते ॥
उच्छिष्टजलसंसर्गेऽशौचस्पर्शेऽपवित्रके । पवित्रविधिराख्याता चतुर्धातुमयेषु च ॥
रुक्मपित्तलपात्राणि वन्ह्यद्ध शुद्धतां व्रजेत् । विनाशुद्धं कृतं पात्रं गृह्णीयाद्भोजनादिषु ॥
कृत्वा धर्मपरिभ्रष्टं समस्तं नाशमाप्नुयात् । दरिद्ररोगशोकश्च सर्वदा कलहं गृहे ॥
शौचादिकर्मणे पात्रं पित्तल्याश्च शुभप्रदं । पात्रतोऽद्रं जलेनैव पादप्रक्षालनं चरेत् ॥
अशुद्धं तज्जलं सर्वं पानाचमनवर्जितं । पित्तलं प्रचुरं पात्रं कल्पयेच्छौचकर्मणि ॥
नैवदोषोऽभिजायेत रुक्मपात्रं विवर्जयेत् ।

विष्णुधर्मोत्तरे—खण्डितं स्फुटितं पात्रं गृह्णीयाद्भोजनादिषु । नैवदोषोऽभिजायेत रुक्मपित्तलिपात्रयोः ॥
ताम्रपात्रमशुद्धं वा तुलसीस्वर्णसंस्कृतान् । सदा शुद्धमयं जातं भोजनोच्छिष्टवर्जितं ॥
ताम्रपात्रसमानीतं तज्जलं सर्वदा शुचिः । ताम्रपात्रकृतोच्छिष्टमृणदारिद्र्यरोगभाक् ॥
कल्पयेत्ताम्रपात्रं तु दुर्बुद्धिः शौचकर्मणि । सर्वांगकुष्ठमाप्नोति सप्तजन्मान्तरेष्वपि ॥
कदाचिन्नैव मुच्येत योनिः कुष्ठसमुद्भवाः । जीवन्कुष्ठीमृदांनीत्वाकुष्ठमुक्तिमवाप्नुयात् ॥
मृदां विना कदा योनिः नैवमुक्ति प्रजायते । कुष्ठयन्तसमये भूमौ लोकवाक्यं शृणोऽपि ॥

विदीर्णकुष्ठमाप्नोति सप्तजन्मान्तरेष्वपि । जीवन्मृदालभेन्मृत्युपुनर्योनिमवाप्नुयात् ॥
सन्नीकुष्ठिद्वयोर्वाक्ये षण्मासमृत्युदायकं । कांस्यपात्रमशुद्धं चेदश्वास्यरसनालिहात् ॥
शुद्धं भवेत्तदापात्रं भोजनादिषु श्रीप्रदं । खण्डितं स्फुटितं कांस्यं मृत्पात्रसमतां व्रजेत् ॥
मृत्पात्रभोजनात्पानान्नश्यतेऽस्याचलाध्रुवं । दरिद्ररोगसंतापमभद्रकलहं सदा ॥
मृत्पात्रजलसंस्कारादशुद्धमशिवप्रदं । अशुद्धं जायते पात्रं तत्स्पर्शं नैवमाचरेत् ॥
शौचाय मृन्मयं पात्रमेकावृत्या समाचरेत् । पुनर्नैव च गृह्णीयात्परित्याज्यं प्रयत्नतः ॥
गृहीते लोहपात्रे च नैवदोषोऽभिजायते । चतुर्वर्णगृहीतेऽस्मिन् लोहपात्रे च निर्मलैः ॥
श्यामतारहिते पात्रे मुखादर्शसमे यदि । पाकादिकर्म्मणि ग्राह्ये लोहे दोषो न विद्यते ॥
सूतिस्पर्शे मृतस्पर्शे जलसंसर्गतः शुचिः । श्वानकाकादिभिः स्पर्शेपात्रोष्ठे च न वस्तुनि ॥
परित्याज्यं प्रयत्नेन मृन्मयं पात्रवस्तुनः । अशुचिः संज्ञकं पात्रं चतुर्द्धमं विनाशयेत् ॥
इत्यशुद्धपात्रशुद्धनिर्णयः ॥ब्रह्मयामले ॥ ५ ॥

अथ नारायणकुण्डस्नानाचमन प्रार्थनमन्त्रः—
नारायणकृतस्नान महाफलविधायिने । तीर्थराज नमस्तुभ्यं कुण्डनारायणाह्वय ! ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । परमोक्षपदं लब्ध्वा सकलेष्टवरं लभेत् ॥
इति ब० सखा० प्र० ॥६॥

अथ बनयात्राप्रसंगे सखीवनप्रदक्षिणा । ब्राह्मे—
भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां सखीबनमुपागतः । प्रार्थयेद्विधिवत्पूर्वे गोवर्द्धनसमीपगं ॥
सखीबनप्रार्थनमन्त्रः—
चतुष्षष्ठि सखीनां च प्रवाससुखदायिने । सखीबन नमस्तुभ्यं सर्वदा कृष्णवल्लभ ! ॥

अनन्तर गोपकुण्ड है। स्नानादि मन्त्र यथा—हे नन्दादि के स्नान से उत्पन्न, निर्म्मल जलरूप, मुक्तिदाता गोपकुण्ड ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करे तो परमेश्वरपद के लाभ पूर्वक मुक्तिभागी होता है। १ कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करे ॥४॥

अब ब्रजयात्राप्रसग में सखावन प्रदक्षिणा कहते हैं। ब्रह्मयामल में—आषाढ़ शुक्लपक्ष एकादशी के दिन श्रीहरि की शयन होने पर सखावन को आकर विधि पूर्वक प्रार्थना करे। मन्त्र यथा—हे सखा गोपालों से मनोहर ! हे श्रीकृष्ण के द्वारा शोभित ! हे नाना प्रकार की क्रीड़ा से मनोहर सखावन ! आप को नमस्कार। इस मन्त्र के १८ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करे तो सर्वदा परिवार सुख का अनुभव करता है। मनुष्य १८ सखाओं को चतुर्विध पक्वान्न, लड्डू, दुग्ध, फलों से भोजन करावें। सखाओं का नाम यथा-विष्णुयामल में—मधुमंगल, श्रीकृष्ण, सुबल, पद्माक्ष, बलराम, सुभद्र, बल्लभ, कमलाकर, मेघश्याम, कलाकान्त, पद्माक्ष, कृष्णबल्लभ, मनोरम, जगद्राम, सुभग, लोकपालक, कंकोदरी, विश्वभोग, नवनीत प्रियबल्लभ। इन सब की प्रतिमा बनाकर मूलोक्त विधि से पूजा करें। यहाँ पण्डितगणमूलश्लोकों को देखें ॥५॥

अनन्तर नारायणकुण्ड है। स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—ब्रह्मयामल में—हे नारायण कर्तृक किये हुए स्नान ! हे महाफल के विधान करने वाले नारायण नामक तीर्थराज ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करने से परम मोक्ष तथा समस्त इष्ट को प्राप्त होता है ॥६॥

इतिमन्त्रं समुच्चार्य्य षष्ठयावृत्या नमश्चरेत् । भगवच्छखितां याति लोकपूज्यो भवेद्भुवि ॥७॥
ततो लीलावतीकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—
कृष्णलीलासमुत्पन्न लीलावतीकृताय ते । नमस्ते तीर्थराजाय सखीहेलोद्भवाय च ॥
इत्यष्टधा पठन्मन्त्रं मज्जनाचमनैर्नमन् । सदा क्रीडान्वितो राजा शतपत्नीसुखं लभेत् ॥
क्रोशार्द्धपरिमाणेन प्रदक्षिणामथाकरोत् ॥ इति ब० सखी० प्र० ॥८॥
अथ बन०कृष्णान्तर्ध्यानबनप्रदक्षिणा । आदिवाराहे—
सप्तम्यां ज्येष्ठकृष्णे तु कृष्णान्तर्ध्यानसंज्ञकं । आजगाम बनं यात्री प्रार्थयन्शुद्धचेतसा ॥
प्रा० मन्त्रः—गोपिकाप्रीतिनाशाय क्षणान्तर्ध्यानचेष्ठिने । नमोऽन्तर्ध्यानसंज्ञाय गोपीहरिस्वरूपिणे ॥
इति मन्त्रं षडावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । कृतार्थपदवीं लब्ध्वा गोपीवप्रीतिमाप्नुयात् ॥९॥
ततो कृष्णस्य कुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
कृष्णोद्भवस्वरूपाय गोपिकाप्रीतिदायिने । कृष्णकुण्डाय तीर्थाय नमस्ते पापशान्तये ॥
इति मन्त्रं द्वादशभिर्मज्जनाचमनैर्नमन् । कृतकृत्यो भवेल्लोको लक्ष्मीवान्धनवान्सदा ॥
क्रोशद्वयप्रमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति ॥१०॥
अथ बन०मुक्तिवनप्रदक्षिणा । आदिपुराणे—अष्टम्यां ज्येष्ठशुक्ले तु नाम मुक्तिबनं गतः ॥
प्रार्थनमन्त्रः—मुक्तये मुक्तिरूपाय मुक्तिसंभवनाय ते । देवगन्धर्वलोकानां मुक्तिदायनमो नमः ॥
इति चतुर्दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । मुक्तिभागी भवेल्लोको विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥११॥

अब बनयात्रा प्रसंग में सखीबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । ब्राह्म में—भाद्र कृष्णा चतुर्दशी में गोवर्द्धन के निकट सखीबन को जाकर विधिवत् प्रार्थना करें । मन्त्र यथा—हे चौंसठि सखियों को आवास सुख देने वाले कृष्णवल्लभ सखीबन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६४ बार नमस्कार करें तो भगवान के सखी स्वरूप को प्राप्त होकर लोकपूज्य होता है ॥ ७ ॥

अनन्तर लीलावती कुण्ड है । स्नानादि मन्त्र यथा—हे श्रीकृष्ण की लीलाओं से लीलावती कर्तृक स्थापित लीलावतीकुण्ड ! तीर्थराज आपको नमस्कार । आप सखियों की हेला से उत्पन्न हैं । इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो राजा सर्वदा शत पत्नी का सुख लाभ करता है । अर्द्ध कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥ ८ ॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में कृष्णान्तर्द्धानबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । आदिवाराह में—ज्येष्ठ कृष्णा सप्तमी में कृष्णान्तर्द्धान बन को आकर बनयात्री शुद्धभाव से प्रार्थना करें । मन्त्र यथा—हे गोपिका प्रीति बाधक क्षणार्द्ध अन्तर्द्धान चेष्टा करने वाले ! हे अन्तर्द्धान नामक गोपिका तथा हरिस्वरूप बन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो कृतार्थ पदवी का लाभ कर गोपियों के तुल्य प्रेमी होता है ॥ ९ ॥

अनन्तर कृष्णकुण्ड है । स्नानाचमन मन्त्र यथा—हे कृष्ण के द्वारा उत्पन्न स्वरूप ! हे गोपिका प्रीति को देने वाले तीर्थराज कृष्णकुण्ड ! पाप शान्ति के लिये आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य कृत्य २ होकर लक्ष्मीवान् होता है । २ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥१०॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में मुक्तिबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । आदिपुराण में—ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी

ततो मधुमंगलकुंडस्नानाचमन प्रार्थनमन्त्रः—

मधुमंगलकुण्डाय कृष्णकेलिविधायिने । गोपीश्रमविनिर्धौत पीताम्भाय नमोऽस्तु ते ॥

इति सप्तदशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । कृतार्थपदवीं लब्ध्वा सखीत्वमाप्नुयाद्धरेः ॥

पादोनद्वयक्रोशेन प्रदक्षिणामथाचरेत् । यद्यशौचं लभेन्मृत्युं मुक्तिभागी भवेन्नरः ॥१२॥

अथ वन०वियोगवनप्रदक्षिणा -वैशाखशुक्लद्वादश्यां वियोगवनमागतः ।

प्रा०मन्त्रः—वियोगगोपिकानित्यकृष्णचिन्ताभिधायिने । वियोगशमनार्थाय नमस्ते हरिवल्लभ ॥

इति मन्त्रं नवावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । वियोगं नैव पश्येत कदाचित्पापभाक् यदि ॥१३॥

ततो उद्धवकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

उद्धवस्नपनोद्भूत तीर्थराज नमोऽस्तु ते । गोपिरक्षणमोदाय तत्वज्ञानप्रदायिने ॥

इत्यष्टाभिर्पठन्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । बुद्धिमान्नीतिवाल्लोके जायतेऽस्य प्रसादतः ॥

क्रोशार्द्धपरिमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति ॥१४॥

अथ वनयात्राप्रसंगे गोदृष्टिवनप्रदक्षिणा । वामनपुराणे—

भाद्रे मासि सिते पक्षेऽमावस्यादिनोत्सवे । गोदृष्टिवनमायातः प्रार्थनं कारयेत्सुधीः ॥

प्रा०मंत्रः—गोकृष्णेक्षणसंभूत गोदृष्ट्याख्यवनाय ते । गोपालवचनारम्य मोक्षरूपाय ते नमः ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य नमस्कारं समाचरेत् । दिव्यदृष्टिमवाप्नोति मोक्षाख्यपदवीं लभेत् ॥ १५ ॥

में मुक्तिवन की यात्रा करें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मुक्ति के लिये मुक्तिस्वरूप मुक्तिवन ! आपको नमस्कार है । आप देवता, गन्धर्व, मनुष्यों को मुक्ति देने वाले हैं । इस मन्त्र के १४ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य मुक्तिभागी होकर विष्णुसायुज्य को प्राप्त होता है ॥ ११ ॥

वहाँ मधुमंगलकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मधुमंगल से किये हुए स्नान ! हे कृष्णकेलि देने वाले ! हे गोपियों का श्रम को दूर करने वाले ! आपको नमस्कार । आपका पीला जल है । इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो कृतार्थ पदवी को प्राप्त होकर सखी रूप को धारण करता है । १॥। कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें । यदि अशौच अवस्था में मृत्यु हो जाय तो भी मुक्तिभागी होता है ॥१२॥

अब वनयात्रा प्रसंग में वियोगवन की यात्रा करें । प्रार्थनामन्त्र यथा-हे वियोगिनी गोपिकाओं के नित्य श्रीकृष्ण स्वरूप चिन्तन स्थल ! वियोग नाश के लिये हरिवल्लभ आपको नमस्कार करता हूँ । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से कभी पाप भागी भी वियोग नहीं देखता है ॥१३॥

वहाँ उद्धवकुण्ड है । स्नानादि मन्त्र यथा-हे उद्धवजी के स्नपन से उत्पन्न तीर्थराज ! हे उद्धव-कुण्ड ! गोपिका रक्षण में आनन्दित तत्त्वज्ञान देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य बुद्धिमान् व नीतिवान् होता है । अर्द्ध कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें॥१४॥

अब वनयात्रा प्रसंग में गोदृष्टिवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वामनपुराण में-भाद्रकृष्णा अमावस्या में गोदृष्टिवन को जाकर प्रार्थना करें । मन्त्र यथा-हे गौ कृष्ण की ईक्षण से उत्पन्न गोदृष्टि नामक वन ! हे गोपाल के वचन से रम्य ! हे मोक्षरूप ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ९ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो मनुष्य दिव्यदृष्टि के लाभ पूर्वक मुक्तिभागी होता है ॥ १५ ॥

ततो गोपालकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपालश्रमनाशाय गोपालवरदायिने । चिरायुर्वर्द्धनार्थाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनैर्नमन् । गृहबालसुखं लब्ध्वा नानाभोगसमाप्नुयात् ॥१६॥

ततो स्वप्नेश्वराय महादेवेक्षणप्रार्थनमन्त्रः—

स्वप्नेश्वराय देवाय हिंसवृक्षाधिवासिने । सुस्वप्नवरदायै च नमस्तेऽर्थप्रदायिने ॥

इत्येकादशाभिर्मन्त्रं जपित्वा प्रणतिं चरेत् । दुःस्वप्नं नश्यते तस्य सुस्वप्नवरमाप्नुयात् ॥

सार्द्धक्रोशत्रयेणैव प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति ॥१७॥

अथ बन० स्वप्नबनप्रदक्षिणा । मात्स्ये—

आषाढ़े कृष्णपक्षे तु नवम्यां भृगुसंयुते । नामस्वप्नबनं श्रेष्ठमाजगाम मुनीश्वर ॥

प्रा०मन्त्रः—सुस्वप्नदर्शनार्थाय दुःस्वप्नशमनाय ते । अक्रूरवरद श्रेष्ठ स्वप्नाख्याय नमो नमः ॥

इत्यष्टधा जपन्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । स्वप्ने लक्ष्मीवरं लब्ध्वा परिपूर्णसुखं लभेत् ॥१८॥

ततोऽक्रूरकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

क्रूराक्रूरकृतार्थाय दुर्बुद्धिशमनाय ते । अक्रूरस्नपनोद्भुत तीर्थराज नमोऽस्तु ते ॥

इति मन्त्रं समुच्चार्य्य दशभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत सुखचरममाप्नुयात् ॥

क्रोशार्द्धपरिमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति ब्रजयात्राप्रसंगे स्वप्नबनप्रदक्षिणा ॥

स्वप्नशुभाशुभयोगं ब्रजोत्सवाल्हादिन्यां ॥ १६ ॥

अथ ब्रज० शुकबनप्रदक्षिणा । ब्रह्माण्डे ॥ नीतिप्रस्तावे--ज्येष्ठशुक्लदशम्यां तु शुकनामबनं गतः ॥

वहाँ गोपालकुण्ड है । स्नानादि मन्त्र यथा-हे गोपाल के श्रमनाश के लिये गोपालकुण्ड ! आप गोपाल को वर देने वाले हैं । हे तीर्थराज चिरायु होने के लिये आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करने से गृह, बालक, सुख और भोग प्राप्त होता है ॥ १७ ॥

अनन्तर वहाँ स्वनेश्वर महादेव के दर्शन हैं । प्रार्थनामन्त्र यथा-हे हींस वृक्षों के बीच वास करने वाले स्वनेश्वर महादेव ! आप दुःस्वप्न का नाश करने वाले हैं । समस्त अर्थ को देने वाले हैं । इस मन्त्र के ११ बार जपपूर्वक प्रणाम करें तो दुःस्वप्न का नाश और सुस्वप्न की प्राप्ति होती है । ३॥ कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें ॥ १७ ॥

अब ब्रजयात्रा प्रसंग में स्वप्नबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । मात्स्य में—आषाढ़ कृष्णपक्ष की नवमी भृगुवार के दिन हे मुनीश्वर स्वप्नबन की यात्रा करें । प्रार्थनामन्त्र यथा--हे सुस्वप्न के दाता ! हे दुःस्वप्न के नाशक ! हे अक्रूर को वर देने वाले श्रेष्ठ स्वप्न नामक बन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ८ बार जपपूर्वक प्रणाम करने से स्वप्न में लक्ष्मीवर को प्राप्त होता है ॥ १८ ॥

अनन्तर अक्रूरकुंड है । स्नानादि मन्त्र यथा--हे क्रूर अक्रूर को कृतार्थ करने वाले ! हे मन्दबुद्धि को नाश करने वाले ! हे अक्रूरजी के स्नान से उत्पन्न अक्रूरकुंड ! तीर्थराज आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार मज्जनादि करें तो सुन्दर बुद्धि को प्राप्त होता है । आधा कोश प्रमाण से परिक्रमा करें । इति यह ब्रजयात्रा प्रसंग में स्वप्नबन की प्रदक्षिणा । स्वप्न का शुभ, अशुभ प्रयोग मत्कर्तृक रचित ब्रजोत्सवल्हादिनी नामक ग्रन्थ में है ॥ १६ ॥

प्रा० म०—गोपिकाहितरूप कृष्णस्य वासहेतवे । नमः शुकवनाय च षट्शास्त्रवरदायिने ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । ज्ञानवान्नीतिवान्लोको धार्मिको नृपति र्भवेत् ॥
द्विजदानसमं पुण्यं कृष्णस्तु प्रीतिदोऽभवत् ॥ २० ॥

ततो द्वारिकाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
कृष्णसंभावनोद्भूत गोपिकाप्रीतिदायक । द्वारिकाकुण्डतीर्थाय नमस्ते गोपीवल्लभ ! ॥
इतिमन्त्रं समुच्चार्य्य पञ्चभिर्मज्जनाचमैः । नमस्कारं प्रकुर्वीत द्वारिकास्नानजं फलं ॥
पादक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति ॥२१॥

अथ बन०प्र० लघुशेषशयनबनप्रदक्षिणा । पाद्मे—
भाद्रशुक्लर्षिपञ्चम्यां शेषाख्यशयनं बनं । जगाम प्रार्थनं कुर्य्यात्सर्वकामवाप्नुयात् ॥

प्रा०म०—शेषशयनश्रीकृष्णसुखावासस्व रूपिणे । लक्ष्मीपादांह्रि सेव्याय नमस्ते कमलाप्रिये ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभिः प्रणतिं चरेत् । सर्वदा सुखवासेन परिपूर्णसुखं लभेत् ॥२२॥

ततो लक्ष्मीकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
कमलास्नपनोद्भूतपीतांभसलिलाय ते । नमः कैवल्यनाथाय त्रैवर्गफलदायिने ॥
इति षोडशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनै र्नमन् । कलाकाष्ठामुहूर्त्तेन लक्ष्मीवान्जायते नरः ॥२३॥

अथ व्रज०दोलाबनप्रदक्षिणा । स्कान्दे—श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दोलाबनमुपागतः ॥

अब ब्रजयात्रा प्रसंग में शुकबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । ब्रह्माण्ड में—नीतिप्रस्तावपर-ज्येष्ठ शुक्ला दशमी में शुक नामक बन को जावे । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपियों के हितकारक रूप वाले ! हे कृष्ण वास के लिये शुकबन ! षट्शास्त्र वर को देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य ज्ञानवान् नीतिवान् और राजा धार्म्मिक होता है । ब्राह्मण को दान देने से जो पुण्य होता है वह उसको प्राप्त होता है और श्रीकृष्ण सर्वदा प्रसन्न होते हैं ॥२०॥

अनन्तर द्वारिकाकुंड है । स्नानादिमन्त्र यथा—हे कृष्ण की संभावना से उत्पन्न गोपियों को प्रीति देने वाले द्वारिकाकुंड ! गोपीबल्लभ आपको नमस्कार है । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ५ बार मज्जनादि करें तो द्वारिका स्नान का फल प्राप्त होता है । पाव कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥२१॥

अब ब्रजयात्रा प्रसंग में लघुशेषशयन बन की प्रदक्षिणा कहते हैं । पाद्म में—भाद्र शुक्ल ऋषि पंचमी में शेषाख्य शयन बन को जाकर प्रार्थना करने से समस्त कामना मिलती है । मन्त्र यथा—हे शेष शयनकारी श्रीकृष्ण के सुखवास स्वरूप ! हे लक्ष्मी कर्तृक श्रीहरि के चरण कमल सेवन स्थल ! हे कमला-प्रिय ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ९ बार प्रणाम करें तो सर्वदा परिपूर्ण सुख को प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

वहाँ लक्ष्मीकुंड है । स्नानादि मन्त्र यथा—हे कमलाजी के स्नान से उत्पन्न पीले जल वाले कमलाकुंड ! कैवल्य नायक, त्रैवर्ग फल के दाता आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य कलाकाष्ठा मुहूर्त्त द्वारा लक्ष्मीवान् होता है । १॥ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥२३॥

अब ब्रजयात्रा प्रसंग में दोलाबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । स्कान्द में—श्रावण शुक्ल पञ्चमी में

प्रा०म०—दोलोत्साहसखीरम्य कृष्णोल्लासविधायिने । दोलाबन नमस्तुभ्यं सर्वदा सुखदायिने ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य चतुर्विंशावृतेन च । नमस्कुर्य्याद्विधानेन परिपूर्णसुखं लभेत् ॥२४॥
ततो विशाखाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
चतुःषष्ठिसखीरम्यस्नपनोद्भवकेलिने । नमस्ते तीर्थराजाय विशाखाकृतशोभिने ॥
इत्यष्टधापठन्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । सर्वदा रमणीभिस्तु सकलार्थसुखं लभेत् ॥
क्रोशार्द्धपरिमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति ॥२५॥
अथ बन०प्रसगे हाहाबनप्रदक्षिणा । भविष्योत्तरे—ज्येष्ठशुक्ले च द्वादश्यां हाहाबनमुपागतः ।
प्रार्थनमंत्रः—गोपिकाक्षोभकृत्कृष्णनानानृत्यविधायिने । विमलोत्सवरूपाय हाहाबन नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य दशधाप्रणतिं चरेत् । सर्वदा विमलोत्साहचीरंजीवसुखं लभेत् ॥२६॥
ततो रतिकेलिकूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
रतिकेलिसखास्नानकूपतीर्थ नमोऽस्तु ते । गंगाबेत्रवतीगोदात्रिधाजलस्वरूपिणे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तविंशावृतेन च । मज्जनाचमनात्प्राप्य रतिकेलिसुखं लभेत् ॥
पादक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति ॥२७॥
अथगानबनप्रदक्षिणा । कौर्म्ये—प्रतिपज्ज्येष्ठकृष्णे तु गानसंज्ञं बनं गतः ।
प्रार्थनमन्त्रः—गोप्युत्साहकृतोद्गान कृष्णेंगितविधायिने । सर्वदोत्सवरूपाय नमो गानबनाय ते ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । वैवाहादिकमांगल्यैः सर्वदासुखमन्वभूत् ॥२८॥

दोलाबन में उपस्थित होवें । प्रार्थनमन्त्र—हे दोलोत्सव परायण सखियों से रम्य ! हे श्रीकृष्ण को उल्लास देने वाले दोलाबन ! सर्वदा सुख दाता आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २४ बार नमस्कार करें तो परिपूर्ण सुख की प्राप्ति होती है ॥२४॥

अनन्तर विशाखाकुंड है । स्नानादि मन्त्र यथा—हे चौषठी सखीयों के स्नान द्वारा उत्पन्न ! हे केलिरूप तीर्थराज ! विशाखा कर्तृक शोभा प्राप्त आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो सर्वदा रमणियों के साथ समस्त अभीष्ट को प्राप्त होता है । आधा कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥ २५ ॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में हाहाबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । भविष्योत्तर में—ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी में हाहाबन में उपस्थित होवें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपियों की क्षोभकारी श्रीकृष्ण के नाना प्रकार नृत्य करने के स्थल ! हे विशुद्ध उत्सवरूप हाहाबन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १० बार प्रणाम करें तो सर्वदा उत्साही होकर चिरञ्जीवी होता है ॥२६॥

वहाँ रतिकेलिकूप है । स्नानाचमन मन्त्र यथा—हे रतिकेलि सखी के स्नान से उत्पन्न ! हे गंगा, गोदावरी, बेत्रवती के जलरूप ! आपको नमस्कार है । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २७ बार मज्जनादि करें तो रतिकेलि सुख को प्राप्त होता है । पाव कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥२७॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में गानबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । कौर्म्य में—ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा के दिन गान नामक वन को गमन करें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपियों के द्वारा उत्साह पूर्वक किये गये गान जिसमें ! हे श्रीकृष्ण की इंगित का विधान करने वाले गानबन ! सर्वदा उत्सव स्वरूप आपको नमस्कार ।

ततो गन्धर्वकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—

शुभारत्यभिरामाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते । विश्वावसुकृतस्नान सुकण्ठवरदायिने ॥

इत्येकादशभिर्मंत्रं मज्जनाचमनै र्नमन् । कटुवाक्यो सुवाक्योऽभूल्लोकवल्लभतां व्रजेत् ॥

सपादक्रोशमात्रेण प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ इति ॥२६॥

अथ वन०प्रसंगे लेपनवनप्रदक्षिणा । नृसिंहपुराणे—भाद्रशुक्लद्वितीयायां लेपनाख्यवनं ययौ ।

प्रा० मंत्रः—गोपिकागोमयोत्साहलिप्तभूमिवनाय ते । कृष्णपूर्णसुखाल्हाद लेपनाख्याय ते नमः ॥

इत्येकविंशदावृत्या मन्त्रमुक्त्वा नमश्चरेत् । रमणीकगृहाद्यं स्तु समस्तसुखमाप्नुयात् ॥३०॥

वैवाहपुत्रकोत्साहे वस्तु नीत्वा पथि व्रजन् । कोपि विक्रयवाक्येन तं ब्रवीद्वचनं भ्रमात् ॥

षड्मासाभ्यन्तरे तस्य फलमाप्नोति तादृशं । शवस्य दहनार्थाय काष्टं नीत्वा पथि व्रजन् ॥

पथिको पृच्छते वाक्यं सहसा विक्रयाय च । षड्मासाभ्यन्तरे स मृत्युमाप्नोति न संशयः ॥

इन्धनादिं समादाय प्राणी संख्याविधायकं । पञ्चाशत्प्रातरे चैव विनापात्रादिभिर्युतः ॥

तस्यैव भवते नूनं मृत्युसंस्कारजं फलं । तस्मात्परित्यजेद्यत्नाद्धस्तेंधनपरिग्रहं ॥

दीपसंस्कारजावन्हिः शवाग्निरिव जायते । मृत्सूतकाऽन्तरेऽस्नायात्पुनर्भूः सूतकं लभेत् ॥

विनामृद्गोमयालिप्ताद्यशुभाशुभवर्द्धिनी ॥ इति गोमयलिप्तभूमिदृष्टान्तः ॥३१॥

ततो नरहरिकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

गोपिकाभयकृद्रूपकृष्णस्नपनसम्भव । तीर्थराज नमस्तुभ्यं सर्वबाधा प्रशान्तये ॥

इतिमन्त्रं समुच्चार्य्य द्वाविंशैर्मज्जनाचमैः । प्रणतिं कुरुते धीमान् सर्वबाधाद्विमुच्यते ॥

सार्द्धक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ इति ॥३२॥

अथ वनयात्राप्रसंगे परस्परवनप्रदक्षिणा । वाराहे—भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां परस्परवनं गतः ।

इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो विवाह सम्बन्धी मांगल्यों से सर्वदा सुख का अनुभव करता है ॥ २८ ॥

अनन्तर गन्धर्वकुण्ड है । स्नान, आचमन, प्रार्थनामन्त्र यथा- हे सुन्दर वाणी से अभिराम तीर्थराज ! हे विश्वावसुकृत स्नान स्थल ! सुकण्ठ वर को देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो कटुवाक्य मीठा वाक्य हो जाता है और मनुष्य लोकप्रिय होता है । १। कोश प्रमाण से प्रदक्षिणा करें ॥२६॥

अब वनयात्रा प्रसंग में लेपनवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । नृसिंहपुराण में—भाद्र शुक्ल द्वितीया में लेपन नामक वन को जावें । प्रार्थनामन्त्र यथा-हे गोपिका कर्तृक गोमय द्वारा लिप्त स्थल ! हे श्रीकृष्ण के परिपूर्ण सुखाल्हादकारी लेपनवन ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के २१ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो रमणीय गृहादि से सुखी होता है ॥३०॥ अनुवाद सरल है । मूल श्लोक देखें ॥३१॥

ततो नरहरिकुंड स्नानाचमन मन्त्र—हे गोपिकाओं को भय देने वाले रूप को धारण करके श्रीकृष्ण कर्तृक स्नान द्वारा उत्पन्न तीर्थराज ! सर्वदा बाधा शान्ति देने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक २२ बार मज्जनादि करें । प्रणाम से समस्त बाधा दूर हो जाती है । १॥ कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें ॥३२॥

प्रा०मंत्र:—परस्परोद्भवप्रीति राधाकृष्णविहारिणे । परस्परबनायैव नमस्तुभ्यं प्रसीद मे ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य नवभि: प्रणतिञ्चरेत् । युगले बहुधाप्रीतिश्चिरायुर्वरदायिनी ॥
अत्रैवपूजनं कुर्याद्युगलस्य विधानत: । यथेष्टफलमाप्नोति प्रतिमापूजनाद्धरे: ॥ ३३ ॥
अष्टप्रकारमूर्त्तीनां बलदेवप्रभृतिनां । बालपौगण्डकौमारं युगलैकस्वरूपिणां ॥
तेषां पूजाफलं ब्रूहि तादृशं देवकीसुत ! ॥ पूजनप्रकारं भिन्नभिन्नत्वेन कृष्णार्च्चनचन्द्रिकायां ॥
व्रजभक्तिविलासाख्ये ग्रन्थपूजाफलं लिखेत् । अरिष्टदर्शनं शान्तिर्वृहद्व्रजगुणोत्सवे ॥
आगमागममुत्पातमष्टादशपरिच्छेदे । कलिकालप्रमाणेन ह्युत्पातं लिखितं मया ॥
सप्तग्रन्थान्तरे सोऽयं व्रजभक्तिविलासक: । इष्टो कृष्णांगसंज्ञस्तु नित्यपूजाविधायक: ॥
रंगनाथकुलोद्भूता: प्रयत्नेन च गोपयेत् । न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ॥
लिखित्वा न्यस्यते कंठे वाहौ वा विनिबंधयेत् । व्रजमण्डलभूगोलं यन्त्रं विष्णुकलेवरं ॥
अष्टसिद्धिमवाप्नोति ज्येष्ठो भास्करसंभव: ॥३४॥ इति श्रीभट्टोक्ति: ॥

अथ स्वरूपाणां पूजनफलमाह । विष्णुयामले—
गोकुलचन्द्रमादीनां वालसंज्ञाभिधायिनां । परिचर्य्याकृते यस्तु विंशप्राकारकं सुखं ॥
प्रतापैश्वर्य्यधर्म्मश्च विजयं धर्म्मकर्म्मण: । अर्थकर्मसुखं मोक्षं धनधान्यकलत्रता ॥
उत्सवोत्साहवैहारलक्ष्मीकेलिरति: शुभं ! रमणं मंगलं ह्येतानेकविंशान् लभेत्सदा ॥
बालमूर्त्तौ च पाषाणे ह्यथवा धातुसंज्ञके । कृष्णक्रीडामये मूर्त्तौ मुकुन्दादिप्रभृतिनि ॥
लाडिलेयं समभ्यर्च्य फलमेतदवाप्नुयात् । श्रीगोवर्द्धननाथादिसंज्ञाकौमारकेषु च ॥
पाषाणरूपश्रीकृष्णहरिदेवादिषु क्रमात् । परिचर्य्याकृते यस्तु द्विवेदाप्त ४२ सुखं लभेत् ॥

अत्र बनयात्रा प्रसंग में परस्परबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वाराह में—भाद्र कृष्णा चतुर्दशी में परस्परबन को जावें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे परस्पर प्रेम से उत्पन्न राधाकृष्ण विहार स्थल ! हे परस्पर नामक वन आपको नमस्कार । आप प्रसन्न हों । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक ६ बार प्रणाम करें तो दम्पति में वहुत प्रकार से प्रेम होकर मनुष्य चिरायु होता है । यहाँ यथा विधि युगल की पूजा करें तो यथेष्ट फल को प्राप्त होता है ॥३३॥

बलदेव स्वरूप प्रभृति बाल्य, पौगण्ड, कौमार की युगल रूप की सेवा पूजा करें । पूजा का प्रकार अलग २ कृष्णार्च्चनचन्द्रिका नामक ग्रन्थ में है । इस व्रजभक्तिविलास ग्रन्थ में ग्रन्थ पूजा का फल लिखते हैं । अरिष्ट दर्शन, शान्ति प्रभृति वृहद्व्रजगुणोत्सव में १८ अध्याय लिखे हैं । कलिकाल प्रमाण से उत्पात प्रभृति का वर्णन मैंने किया है । सात ग्रन्थों के बीच यह व्रजभक्तिविलास, नामक ग्रन्थ है, जो श्रीकृष्ण के अंग रूप तथा नित्य पूजा करने के योग्य है । रंगनाथ कुलोद्भव वैष्णव गण इस ग्रन्थ को यत्नपूर्वक रखें । कभी अवैष्णवों को दान न करे । विष्णु के अंग स्वरूप व्रजमण्डल भूगोल यन्त्र बनाकर कण्ठ में अर्पण पूर्वक वाहु में बाँधे तो अष्टसिद्धि को प्राप्त होता है ॥३४॥

अब स्वरूप के पूजन का फल कहते हैं । विष्णुयामल में- गोकुलचन्द्रमा प्रभृति बाल मूर्त्ति की परिचर्या में प्रतापादि २० प्रकार सुख को प्राप्त होता है । पाषाण किम्बा धातुमय मुकुन्द प्रभृति बाल मूर्त्ति और लाडिलेय मूर्त्ति के पूजन से उक्त २० प्रकार फल को ही प्राप्त होता है । श्रीगोवर्द्धननाथ, हरिदेव प्रभृति

भोगमांगल्यदातृत्व सुखसिद्धिविहारकं । तपः सिद्धिश्च भांडारसम्पत्तिः कोशराज्यकं ॥
कलानिधित्वं सौभाग्यवस्त्राभूषणवैभवं । सुखसद्मसुखारामगोधनं श्रेयःधान्यकं ॥
मोक्षार्थधर्मकर्मायुरैश्वर्य्यं विक्रमं धनं । लक्ष्मीप्रतापवैहाररतिकेलिकलत्रता ॥
उत्साहोत्सवकामांश्च लोकेषु विजयं लभेत् । मूर्त्तौ एकाकिनिसंस्थे फलमेतत्प्रकीर्त्तितं ॥
इति कौमारसंज्ञानां पूजाफलमुदाहृतं । बलदेवादिपौगण्डधातुपाषाणरूपिणां ॥
सदा युगलसंस्थानां रेवत्यादिप्रभृत्तिनां । मूर्त्तिनां रामकृष्णाणां पूजायां फलमीरितं ॥
पंचषष्ठिसुखान् लब्ध्वा लोकपूज्यो भवेन्नरः । भोगैश्वर्य्यप्रतापश्च विजयार्थकलासुखं ॥
दातृत्वधर्मकर्माणि मोक्षसिद्धिश्च विक्रमं । तपःसिद्धिर्धनधान्यं राज्यं भाण्डारकोषकं ॥
गोधनं श्रेयःसौभाग्यं वस्त्राभरणसद्म च । पद्मारामकलत्रं च रतिकेलिश्च मंगलं ॥
उत्साहोत्सववैहाररमणं निर्भयं सुखं । वापीकूपतडागानामधिपो धर्मशीलवान् ॥
कीर्त्तिवान् यशसंयुक्तो देशग्रामाधिपो भवेत् । सुबुद्धिज्ञानसम्पन्नः गुणज्ञो सत्यवाक् सदा ॥
प्रशंसया समायुक्तो विष्णुलोकमवाप्नुयात् । प्रभुशक्तिसमायुक्तो रमणीवश्यकारकः ॥
राज्यवश्यकृतः पूज्यो लोकानां वश्यकारकः । एतत्फलमवाप्नोति युगले पूजिते यदि ॥
अयशारिष्टदुर्बुद्धिरोगशोकदरिद्रता । क्लेशोपद्रवशंका च पराजयममंगलं ॥
असिद्ध्यज्ञानदुःखं च द्रव्यवस्त्रापहारकः । एतद्दोषकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥
बालसेवादिके कार्य्ये भ्रूणहत्याद्विमुच्यते । गर्भहत्यानीव हत्या पशुहत्या दरिद्रता ॥
ऋणं स्वानादिहत्या च ब्रह्महत्याद्विमुच्यते । बालसेवादिके कार्य्ये एते दोषा व्यपोहति ॥
ब्रह्मलोकमवाप्नोति बालसेवारतो सुधीः । कौमारसंज्ञके सेवाकृते मुक्तिमवाप्नुयात् ॥
अज्ञातपातकाद्दोषादगम्यागम्यापराधतः । निर्दोषवधदंडाच्च भक्ष्याभक्ष्यापराधतः ॥
इति धातुमये मूर्त्तौ पाषाणे ह्यथवास्थिते । बालकौमारपौगण्डे फलमेतत्प्रकीर्त्तितं ॥

इति शैले धातुमये त्रिविधस्वरूपपूजनफलं ॥

अथ दारुमयीमूर्त्तौ भानुनंदांविकाहरौ । पूजिते द्वादशान् कामान् तादृशं फलमाप्नुयात् ॥
भोगैश्वर्य्यप्रतापश्च मुक्तिमांगल्यश्रेयसं । विक्रमं धनधान्यं च कमलोत्सवराज्यकं ॥
एतद्द्वादशसंख्याकं फलमाप्नोति पूजकः । भ्रूणहत्यादिकं पापं मुच्यते नात्र संशयः ॥

इतिदारुमयस्वरूपपरिचर्य्याफलं ॥

अथारिष्टविनाशाय मूर्त्ति लोहमयीं यजेत् ॥

स्कान्दे—अमंगलमकल्याणं पराजयभयं रुजः । असिद्ध्यज्ञानविद्वेषक्लेशोपद्रवनाशनं ॥
कुदृशोद्भवनाशाय व्याधिबाधाप्रशांतये । सर्वकामानवाप्नोति लोहमूर्त्तौ प्रपूजके ॥

इति लोहमूर्त्तिपूजनफलं ॥

अथ लिप्तमयीं मूर्त्ति यजेत्कामार्थसिद्धये ॥

पाद्मे—गोप्यकामधनं धान्यं यशः कीर्त्तिं च निर्भयं । दातृत्वसुखसम्पत्तिः श्रेयसौभाग्यमीप्सितं ॥
वस्त्राभरणलक्ष्मी च परिपूर्णसुखं लभेत् । इति लिप्तमये मूर्त्तौ पूजिते फलमाप्नुयात् ॥

इति लिप्तमयीपूजनफलं ॥

अथ चित्रमयीं मूर्त्तिं लिखित्वा पूजयेन्नरः ॥

ब्राह्मे—सुबुद्धिमंगलं भद्रं वस्त्रालंकारमुत्सवं । सुखसम्पत्तिधान्यानि लक्ष्मीसौभाग्यराज्यकं ॥

क्रीडाविमलकेलिश्च तपः सिद्धिरतिः कलाः । एतच्चित्रस्वरूपे च पूजने फलमाप्नुयात् ॥
इति चित्रस्वरूपपूजनफलं ॥

अथ सैंकतीप्रतिमार्च्चनफलं । ब्रह्माण्डे—

मृन्मयीप्रतिमार्चायां फलं ब्रूहि विधानतः । धनधान्यसमृद्धिश्च लक्ष्म्यैश्वर्य्यकलत्रता ॥
सुखं प्रतापसौभाग्यं श्रेयमंगलवाञ्छितं । जगन्मोहनवश्यत्वं नानाभोगजयं यशः ॥
एतत्फलमवाप्नोति मृन्मयीप्रतिमार्च्चने । व्याधिदुःखभयद्वेषकल्मषान्मुच्यते नरः ॥
रुद्रलोकमवाप्नोति तपसां सिद्धिदायकः ॥ इति सैंकतीप्रतिमार्चनफलं ॥

अथ मनोमयीप्रतिमार्चनफलं । रामार्च्चनचन्द्रिकायां—

मनसोद्भवजामूर्त्तिपूजने फलमीरितं । भोगैश्वर्य्यधनं धान्यं सुखं सौभाग्यमेव च ॥
यशः कीर्तिप्रतापश्च विजयं धर्ममोक्षकं । राज्यवश्यं जगद्वश्यं सर्वदा लोकपूजितः ॥
मनोमये स्वरूपेऽर्च्ये फलमेतदवाप्नुयात् । ब्रह्महत्यादिपापात् मुच्यते नात्र संशयः ॥
विष्णुलोकमवाप्नोति त्रैलोक्यविजयी नरः ॥ इति मनोमयीप्रतिमार्चनफलं ॥

अथ मणिमयस्वरूपार्चनफलं । आदिपुराणे—

मणिमयप्रतिमायां फलमेतदुदाहृतं । कलत्रसुखसम्पत्तिः सल्लक्ष्मीधनधान्यकं ॥
भोगैश्वर्य्ययशो कीर्तिमंगलं श्रेयराज्यकं । सौभाग्यरतिकेलिश्च गोधनं विक्रमं शुभं ॥
तपःसिद्धिश्च मोक्षश्च धर्मकामार्थसंपदः । नैरोग्यविजयं लाभं सभायां विजयं लभेत् ॥
मणिकांचनरत्नाद्यं गृहहर्म्यादिकं लभेत् । ब्रह्महत्यादिकात्पापात् मुच्यते नात्र संशयः ॥
विष्णुलोकमवाप्नोति विष्णुसायोज्यतां गतः । परमायुः प्रमाणेन चिरंजीवी भवेन्नरः ॥
नवप्रकारमूर्तीनामर्च्चने कीर्त्तितं फलं ॥ इति नवप्रकारस्वरूपार्चनफलं ॥ ३५ ॥

ततो परस्परवने कलाकेलिविवाहस्थलप्रार्थनमन्त्रः । ब्रह्मयामले—

चन्द्रावलिकृतोत्साह ग्रन्थिबंधनरूपिणे । कलाकेलिविवाहाख्यस्थलाय च नमोऽस्तु ते ॥
इति मन्त्रं षडावृत्त्या नमस्कारं समाचरेत् । सर्वदा मंगलोत्साहैः परिपूर्णसुखं लभेत् ॥३६॥

ततो सुमनाकुण्डस्नानाचमन प्रार्थनमन्त्रः—

सुमनास्नपनोद्भूत तीर्थराज नमोऽस्तु ते । देवर्षिमुनिगन्धर्वविमलोत्सवदायिने ! ॥
इति षोडशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । सदानन्दसुखैः पूर्णो लोकपूज्यसुखं लभेत् ॥३७॥

कौमार मूर्त्ति के पूजन से ४२ प्रकार का सुख मिलता है। बलदेव प्रभृति पौगण्ड युगल मूर्त्ति के पूजन से ६४ प्रकार का सुख प्राप्त होता है और अयश, अरिष्टादि दोष समूह नाश होता है। इस प्रकार दारुमयी-मूर्त्ति, लोहमयीमूर्त्ति, लिखमयीमूर्त्ति, चित्रमयी, सैंकतीमयी, मनोमयी, मणिमयी ६ प्रकार के भेद प्राप्त मूर्त्ति के युगलरूप पूजन के फल अलग २ हैं। मूल श्लोकों में फलों की गणना है। सरल अर्थ है। अनुवाद नहीं किया है ॥३५॥

अब परस्परवन में कलाकेलिविवाहस्थल है। प्रार्थनामन्त्र-ब्रह्मयामल में—हे चन्द्रावली कर्तृक उत्साह पूर्वक कलाकेलीसखी की विवाहलीला के गांठ-बन्धन स्थल ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो सर्वदा मंगल उत्साह से परिपूर्ण सुख को प्राप्त होता है ॥३६॥

ततो रासमण्डलप्रार्थनमन्त्रः—

नमो रासस्थलायैव सर्वानन्दप्रदायक । सुमनाकृष्णरूपाय नमो रासविहारिणे ॥३८॥

सकलव्रजपुरादीन् तीर्थदेवश्च ग्राम कथित व्रजविलासे गोकुलं रम्य धाम ॥

सुरगणमुनिपूज्यं धाम गोलोक नाम । परमरसिकभक्त्या निर्म्मितं नारदेन ॥३६॥

इति श्रीमद्भास्करात्मज श्रीनारायणभट्टगोस्वामिविरचिते व्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे व्रजमाहात्म्यनिरूपणे द्वादशोऽध्यायः ॥

॥ त्रयोदशो ऽध्यायः ॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे रुद्रवीर्य्यस्खलनवन प्रार्थनमन्त्रः । आदिपुराणे—

वैशाखस्यासिते पक्षे दशम्यां व्रजयात्रया । रुद्रवीर्य्यस्खलनाख्यं वनमभ्यायर्यौ सुधीः ॥

प्रा०म०—रुद्रवीर्य्यपतद्रम्य वनाख्याय नमो नमः । देवर्षिमुनिगन्धर्वलोकानां वरदायिने ॥

इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । पुत्रवान् धनवान् लोके लक्ष्मीवान् जायते नरः ॥१॥

ततो मोहनीकुंडस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

मोहनीधृतरूपाढय कृष्णस्नपनसंभवे । मोहनीकुंडतीर्थाय जगन्मोहनरूपिणे ॥

इति मन्त्रं नवावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । लोकानां वश्यकृल्लोको जायते नात्र संशयः ॥२॥

ततो रुद्रकूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

रुद्रशांतस्वरूपाय रुद्रकूपाय ते नमः । देवगन्धर्वलोकार्त्तिहर उमापते नमः ॥

अनन्तर सुमनाकुण्ड है। स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र यथा—हे सुमना के स्नान से उत्पन्न ! देवर्षि मुनि, गन्धर्वों को विमल उत्सव देने वाले तीर्थराज ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १६-बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो सर्वदा आनन्द सुख के लाभ पूर्वक लोक पूज्य होता है ॥३७॥

वहाँ रासमण्डल है। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे रासस्थल ! हे सर्वानन्द प्रदायक ! हे सुमना तथा कृष्णरूप ! हे रासविहारी आपको नमस्कार। यह प्रार्थनमन्त्र है ॥३-॥

यह व्रजविलास नामक ग्रन्थ में समस्त व्रजपुर, तीर्थ, देवता, ग्राम कहे गये हैं। जो सुरगण, मुनिगण, देवतागणों के पूज्य गोलक नामक मनोहर परम गोकुल धाम हैं। परम रसिकगणों की भक्ति से नारदरूप मैंने इस ग्रन्थ का निम्मांण किया है ॥ ३६ ॥

इति श्रीमद्भास्करात्मज श्रीनारायणभट्ट गोस्वामी विरचित व्रजभक्तिविलास के द्वादश अध्याय समाप्त हुआ।

अब व्रजयात्रा प्रसंग में रुद्रवीर्यस्खलन वन की प्रदक्षिणा कहते हैं। आदिपुराण में—वैशाख कृष्णपक्ष दशमी में व्रजयात्री रुद्रवीर्यस्खलन नामक वन को जावे। प्रार्थनामन्त्र यथा—हे रुद्र के वीर्यपतन से रम्य ! हे देवर्षि. मुनि, गन्धर्व, मनुष्यों को वर देने वाले ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो मनुष्य पुत्रवान् , लोकवान्, धनवान, लक्ष्मीवान् होता है ॥१॥

वहाँ मोहनीकुण्ड है। स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मोहिनी रूपधारी श्रीकृष्ण के स्नान से उत्पन्न जगन्मोहकारी मोहिनीकुण्ड ! आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्यों को वश में करता है ॥२॥

इत्यष्टभिर्जपन्मन्त्रं मज्जनाचमनै र्नमन् । रुद्रलोकमवाप्नोति तपोनिधिरिवाभवत् ॥ ३ ॥

ततो श्रमितमहादेवप्रार्थनमन्त्रः —

भूम्यर्द्धशयलिंगाय महादेवाय ते नमः । मोहनीदर्शनार्थाय परिश्रमितमूर्त्तये ॥

इति त्रयोदशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । विष्णुसायुज्यमाप्नोति जगन्मोहनशीलवान् ॥

क्रोशद्वयप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् ॥ इति व्रजयात्राप्रसंगे रुद्रवीर्य्यस्खलनवनप्रदक्षिणा ॥४॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे मोहनीवनप्रदक्षिणा । संमोहनतन्त्रे—

एकादश्यां च वैशाखे कृष्णपक्षे व्रतोत्सवे । मोहनीवनमायातो प्रार्थयेद्विधिपूर्वकं ॥

प्रा०म०—मोहनीवेशधृक्‌विष्णूद्भवनैर्मिक्तिहेतवे । त्रैलोक्यमोहरूपाय नमस्ते मोहनीवन ! ॥

इति षोडशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । जगन्मोहनतां लब्ध्वा सर्वकामानवाप्नुयात् ॥५॥

ततः कमलासरःस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—

कमलास्नपनतीर्थे पद्माकर सुशोभने । नमस्ते सरसे तुभ्यं लक्ष्मीबुद्ध्युत्सवाय च ॥

इत्यष्टभिर्जपन्मन्त्रं मज्जनाचमनै र्नमन् । लक्ष्मीवान जायते लोको धनधान्यादिभिर्युतः ॥६॥

ततो मोहनीस्वरूपभगवद्दर्शनप्रार्थनमन्त्रः—

मोहनीपरमाल्हाद दैत्यप्राणविनाशिने । नमस्ते विष्णवे तुभ्यं मनसेष्टप्रदायिने ॥

इत्येकादशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । जगन्मोहनतां लभ्य परिपूर्णसुखं लभेत् ॥

सार्द्धक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ ७ ॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे विजयवनप्रदक्षिणा । भविष्योत्तरे—

वैशाखशुक्लपक्षे तु चतुर्थ्यां व्रजयात्रया । विजयाख्यवनं प्राप्य प्रार्थयेद्विधिपूर्वकं ॥

अनन्तर रुद्रकुण्ड है। स्नान, आचमन, मन्त्र यथा—हे रुद्र के शान्त स्वरूप रुद्रकूप ! हे उमापति ! देवता, गन्धर्व मनुष्यों की आत्तिको नाश करने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के आठ बार जप पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य तपोनिधि होकर रुद्रपद को प्राप्त होता है ॥३॥

अनन्तर श्रमित महादेव हैं । प्रार्थनामन्त्र—हे भूमि अर्द्धशायी लिंग स्वरूप ! हे महादेव ! आप को नमस्कार । आप मोहिनी स्वरूप को देखकर परिश्रम को प्राप्त मूर्ति हैं । इस मन्त्र के १३ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो विष्णुसायुज्य को प्राप्त होता है तथा उसका स्वभाव जगन्मोहनकारी होता है। २ कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करे ॥ ४ ॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में मोहिनीवन की प्रदक्षिणा कहते हैं। सन्मोहनतन्त्र में—वैशाख कृष्णा एकादशी में मोहिनीवन को आकर यथा विधि प्रार्थना करें । मन्त्र यथा—हे मोहनी वेशधारी विष्णु के द्वारा उत्पन्न ! त्रैलोक्य मोह रूप मोहनीवन आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १६ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से जगन्मोहनत्व लाभ पूर्वक समस्त कामनाओं को प्राप्त होता है ॥५॥

अनन्तर कमलासरोवर है। स्नानादि मन्त्र यथा—हे कमला के स्नान तीर्थ ! हे पद्म समूह से सुशोभित कमलासरोवर ! लक्ष्मी की वृद्धि को उत्सुक करने वाले आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ८ बार जप पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य धनधान्य से युक्त होकर लक्ष्मीवान् होता है ॥६॥

अनन्तर मोहनी स्वरूप भगवान का दर्शन है। प्रार्थनामन्त्र—हे मोहनी के परम आल्हाद ! हे

प्रा०म०—पराजयजरासन्ध कृष्णाय विजयार्थिने । त्रैलोक्यजयदायैव सदा तुभ्यं नमाम्यहं ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । सर्वदा विजयं तस्य जायते नात्र संशयः ॥८॥
ततः मायाकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
मायामोहनरूपाय विष्णुचेष्टाविधायिने । नमस्ते तीर्थराजाय मायाकुण्डाभिधानक ! ॥
इत्यष्टभिः पठन्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । लक्ष्मीवान् पुत्रवान् लोके कलावान् जायते भुवि ॥
एकक्रोशप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ ९ ॥
अथ बनयात्राप्रसंगे निम्बबनप्रदक्षिणा । पाद्मे—भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां नाम निंबवनं गतः ॥
प्रा०म०—गोपिकारमणोल्लास सौभाग्यसुखदायिने । कृष्णवैमल्यसंज्ञाय निम्बनाम्ने नमोऽस्तु ते ॥
इति द्वादशभिर्मन्त्रं नमस्कारं समाचरेत् । सर्वदा रमणोत्साहवैमल्यसुखमाप्नुयात् ॥१०॥
ततो गोपिकाकूपस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
प्रपूर्णदुग्धतीर्थाय गोपिकातृड्प्रशान्तये । नमस्ते गोपिकाकूप देवर्षिमुनिमुक्तये ॥
इति मन्त्रं षडावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । सर्वबाधाविनिर्मुक्तो परमायुः स जीवति ॥११॥
ततो धेनुकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
गोक्रीडाविमलोत्साह कृष्णसौख्यप्रदायिने । नमस्ते धेनुकुण्डाय वारिशैत्यरूपिणे ॥
इति सप्तदशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । सहस्रसंख्यकानां च गवामधिपतिर्भवेत् ॥
सपादक्रोशमात्रेण प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥१२॥

दैत्यप्राण विनाशकारी ! हे मन का इष्ट देने वाले विष्णु आपको नमस्कार। इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से मनुष्य जगत् मोहनकारी होकर परम सुख को प्राप्त होता है । १॥ कोश प्रमाण से बन की परिक्रमा करें ॥ ७ ॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में विजयबन की प्रदक्षिणा कहते हैं। भविष्योत्तर में—वैशाख शुक्ल पक्ष चतुर्थी में व्रजयात्री विजय नामक बन को जावे । प्रार्थनामन्त्र—हे जरासिन्धु कर्तृक पराजित विजयार्थी श्रीकृष्ण ! हे त्रैलोक्य के जयदाता ! हे विजयबन आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें तो सर्वदा निसन्देह उसकी विजय होती है ॥८॥

अनन्तर वहाँ मायाकुण्ड है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे मायामोहन स्वरूप ! हे विष्णु की चेष्टा विधान करने वाले तीर्थराज मायाकुण्ड ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ८ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो मनुष्य लक्ष्मीवान्, पुत्रवान, कलावान् होता है । १ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥९॥

अब बनयात्रा प्रसंग में निम्बबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । पाद्म में—भाद्र कृष्णा चतुर्दशी में निंबबन की यात्रा करें । प्रार्थनामन्त्र—हे गोपिकारमण से उल्लास प्राप्त सौभाग्य सुख के दाता ! हे कृष्ण विशुद्ध संज्ञा प्राप्त निंबबन आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक नमस्कार करने से सर्वदा विमल सुख को प्राप्त होता है ॥१०॥

अनन्तर गोपिकाकूप है । स्नानाचमन प्रार्थनामन्त्र यथा—हे गोपियों की तृष्णा शान्ति के लिये दुग्ध से परिपूर्ण तीर्थराज ! हे देवर्षि, मुनियों की मुक्ति के लिये गोपिकाकूप आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ६ बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो समस्त बाधाओं से मुक्त होकर यावत् आयु जीता है ॥११॥

अनन्तर धेनुकुंड है । स्नानादि मन्त्र यथा—हे गौओं की विशुद्ध क्रीडा से उत्साहित ! हे श्रीकृष्ण को सुख देने वाले धेनुकुंड आपको नमस्कार । आप परम शीतल जल से युक्त हैं । इस मन्त्र के १७ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो हजार गौओं का अधीश्वर होता है । १। कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥१२॥

अथ व्रजयात्राप्रसंगे गोपानवनप्रदक्षिणा । ब्रह्माण्डे—अमायां ज्येष्ठकृष्णे तु गोपानवनमागतः ।
प्रा० म०—गोपानवनश्रेष्ठाय कृष्णाल्हादविधायिने । गोपालरमणक्रीडासुखधाम्ने नमो नमः ॥
इतिमन्त्रं समुच्चार्य्य शक्रावृत्या नमश्चरेत् । गोधनं परिपूर्णेन सर्वदा सुखमासते ॥१३॥
ततो यमुनायां गोपानतीर्थस्नानाच नप्रार्थनमन्त्रः—
ओं गोगोपालतृषाशान्त रम्यवारिकल्लोलिने । नमस्ते तीर्थराजाय यमुनावरदायिने ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या मज्जनाचमनं नमन् । पुत्रपौत्रकलत्राद्यैः समस्तसुखमाप्नुयात् ॥
सार्द्धक्रोशद्वयेनैव प्रदक्षिणमथाचरेत् ॥ १४ ॥
अथाग्रवनप्रदक्षिणा । वामनपुराणे—भाद्रकृष्णचतुर्दश्यामग्रनामवनं गतः ।
प्रा०म०—गोपालविमलोल्लास कृष्णायाग्रसराय ते । अग्रनाम्ने वनायैव नमस्ते रम्यभूमये ॥
इति मन्त्रं दशावृत्या नमस्कारं समाचरेत् । संग्रामविजयी लोको जनानामधिपो भवेत् ॥१५॥
ततो नारदकुण्डस्नानाचमनप्रार्थनमन्त्रः—
नारदस्नपनोद्भूत ! तीर्थराज नमोऽस्तु ते । कुण्डनारदसंज्ञाय गोपालेक्षणकांक्षिणे ॥
इति द्वादशभिर्मन्त्रं मज्जनाचमनं नमन् । परमोक्षमवाप्नोति सकलेष्टसुखैर्युतः ॥
क्रोशद्वयप्रमाणेन प्रदक्षिणमथाकरोत् ॥१६॥
अथ कामरूवनप्रदक्षिणा । कौर्म्ये—सप्तम्यां भाद्रशुक्ले तु कामरूवनमागतः ॥
प्रा० म०—गन्धर्व्वाप्सरसाल्हाद देवर्षिसुखवर्द्धिने । कामरूसुखधाम्ने च नमस्ते रम्यभूमये ॥
इति मन्त्रं समुच्चार्य्य सप्तभिः प्रणतिं चरेत् । सकलेष्टवरं लब्ध्वा विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥१७॥
ततो विश्वेश्वरकुण्डस्नानप्रार्थनमन्त्रः—
विश्वेश्वरहरिस्नान तीर्थसंज्ञाय ते नमः । त्रैलोक्यवरदायैवाखण्डसौख्यप्रदायिने ॥

अब व्रजयात्रा प्रसंग में गोपानवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । ब्रह्माण्ड में—ज्येष्ठा अमावस्या तिथी में गोपालवन को आवें । प्रार्थनामन्त्र यथा—हे श्रेष्ठ ! हे श्रीकृष्ण को आल्हाद देने वाले गोपानवन ! आपको नमस्कार । आप गोपालरमण की क्रीडा तथा सुख के धाम हैं । इस मन्त्र के पाठ पूर्वक १४ बार नमस्कार करें तो परिपूर्ण सुख तथा गोधन को प्राप्त होता है ॥ १३ ॥

अनन्तर यमुनाजी में गोपानतीर्थ का स्नानाचमन प्रार्थनमन्त्र कहते हैं । हे गोगोपाल की तृष्णा शान्तिकारी मनोहर जलतरंग से परिपूर्ण तीर्थराज ! आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक स्नानादि करें तो पुत्र,पौत्र, कलत्रादि समस्त सुख मिलता है । २॥ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥१४

अब अग्रवन की प्रदक्षिणा कहते हैं । वामनपुराण में—भाद्र कृष्णा चतुर्दशी में अग्रवन की यात्रा करें । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे गोपालों के विशेष उल्लासकारी श्रीकृष्ण के आगे सरने के कारण उत्पन्न अग्रनामक वन ! रम्यमूर्ति आपको नमस्कार । इस मन्त्र के १० बार पाठ पूर्वक नमस्कार करें । मनुष्य संग्राम में विजयी तथा लोकेश्वर होता है ॥१५॥

अनन्तर नारदकुण्ड है । स्नानादि मन्त्र यथा—हे नारदजी के स्नान से उत्पन्न तीर्थराज नारद-कुंड ! आपको नमस्कार । आप गोपालजी के दर्शनाकांक्षी हैं । इस मन्त्र के १२ बार पाठ पूर्वक मज्जनादि करें तो परम मोक्षफल तथा समस्त इष्ट को प्राप्त होता है । २ कोश प्रमाण से बन की प्रदक्षिणा करें ॥१६॥

अब कामरुबन की प्रदक्षिणा कहते हैं । कौर्म्य में—भाद्र शुक्ला सप्तमी में कामरुबन की यात्रा करें । प्रार्थनमन्त्र यथा—हे गन्धर्व,अप्सरों से आल्हाद प्राप्त ! देवर्षि सुख बढ़ाने वाले कामरु नामक सुख-धाम बन ! रम्यमूर्ति आपको नमस्कार । इस मन्त्र के ७ बार पाठ पूर्वक प्रणाम करें तो समस्त इष्ट लाभ पूर्वक विष्णुसायुज्य को प्राप्त होता है ॥१७॥

इत्येकादशभिर्मन्त्रमज्जनाचमनैर्नमन् । त्रैलोक्यसुखमालभ्य अन्ते विष्णुपदं लभेत् ॥
क्रोशत्रयप्रमाणेन प्रदक्षिणामथाचरेत् ॥ १८ ॥

इत्येवं व्रजमण्डलं शुभवरं संदायिनी शोभना, नानारण्यप्रदक्षिणासुखप्रदा कामार्थदामोदनी ।
द्वारषोडशनिर्मिताखिलसुखाल्हादा मनोर्थाभिधा, ख्याता मुक्तिप्रदायिनी हरिरतिक्रीडोत्सवा वल्लभा ॥
श्रीमन्नारदनिर्मिता व्रजवनसौख्या रमावल्लभा, श्रीनारायणभट्टनिर्मितगुणा यात्रा समस्ताभिधा ।
संख्याविश्व१३सहस्रका गुणनिधियथेष्टपूर्णार्थिनी, पत्रं षट्नवशच्चा(१६६)पूज्यमनघं श्रीरंगनाथोद्भवं॥१६

इदं गोप्यं महाग्रन्थं व्रजभक्तिविलासकं । त्रैलोक्यसुखदं श्रेष्ठं श्रीकृष्णस्य कलेवरं ॥
अतिगुह्यप्रकारेण नित्यमेव प्रपूजयेत् । रंगनाथकुलोद्भूताः व्रजमण्डलवासिनः॥
विधिपूर्वविधानेन षोडशावृत्त्यनुक्रमात् । सर्वदा सुखसंपद्भिर्लोकपूज्याः भवन्ति हि ॥
इदं तु पुस्तकं न्यस्य गुह्यस्थाने मनोरमे । पीयपट्टमयेनैव वाससाच्छाद्य पूजयेत् ॥२०॥

तत्रादौ ग्रन्थपूजनं नित्यमेव षोडशोपचारमन्त्रानुक्रमः—

षोडशांगहरेर्मन्त्रैर्व्रजयन्त्रं प्रपूजयेत् । उदङ्मुखोपविश्याथ संकेताभिमुखस्तथा ॥

विहारस्वरूपश्रीकृष्णध्यानं—

गोगोपालमहोत्सवादिसकलैरावेष्टितं सुन्दरं, रासक्रीडनतत्परं हरिहरब्रह्मादिभिः संस्तुतं ।
वन्दे केशवनन्दसूनुमनघं विश्वेश्वरं मोहनं, गोपीनां नयनोत्पलार्च्चिततनुं रामानुजं केलिनं ॥
इत्येकपादस्थो भूत्वा ध्यायेत् ।

"ओं ह्रीं श्रीराधावल्लभाय नमः" इति मन्त्रेणार्घ्यं दद्यात् । ओं ह्रौं विहारिणे नमः इति मन्त्रं चतुर्भिःपठन् द्वौ पार्श्वौ पाद्यं दद्यात् । ओं ह्रं मदनगोपालाय नमः इति मन्त्रमुच्चार्य्य पुष्पाञ्जलिना पुष्पं दद्यात् । ओं ह्रां केशवाय नमः इति मन्त्रं पञ्चभिरुच्चरन् सघंटास्वनेन शंखोदके स्नपनं कुर्य्यात् । ओं ह्रैं व्रजोत्सवाय नमः इति मन्त्रं दशधा पठन् चन्दनेनार्चयेत् । ओं ह्र कृष्णाय नमः इति मन्त्रं पठन् शतधा प्रदक्षिणेनैकेनैकपृथक् तुलसीपत्रं समर्पयेत् । ओं क्लीं रामानुजाय नमः इति मन्त्रं शतधा पठन् धूपं दद्यात् । ओं त्रीं यशोदानन्दनाय नमः इति मन्त्रं चतुर्भिरुच्चरन् द्वयोः पार्श्वयोरुभौ दीपौ निधारयेत् । ओं क्रीं पुण्डरीकाक्षाय नमः इति मन्त्रमुच्चरन् नैवेद्यं समर्पयेत् । ओं ग्लीं पद्मनाभाय नमः इति मन्त्रं पठन् ताम्बूलं

वहाँ विश्वेश्वर कुंड है । स्नान, मज्जन, प्रणाम मन्त्र यथा- हे विश्वेश्वर हरि के स्नान से उत्पन्न विश्वेश्वर नामक कुंड ! आपको नमस्कार । आप तीनलोक के वर दाता तथा अखण्ड सुख को देने वाले हैं । इस मन्त्र के ११ बार पाठ पूर्वक मज्जन, आचमन, नमस्कार करें तो त्रैलोक्य सुख को प्राप्त होकर अन्त में विष्णुपद का लाभ करता है । ३ कोश प्रमाण से वन की प्रदक्षिणा करें ॥ १८ ॥

यह अत्यन्त शुभ व्रजमण्डल को बताने वाली समस्त यात्रा विधि है । जो शोहन तथा नाना अरण्य की प्रदक्षिणा द्वारा सुखप्रद है । जो काम अर्थ को देने वाली तथा मोदपरायण है, षोडश द्वार से जो निर्म्मिता है तथा अखिल सुख, आल्हाद, मनोर्थ देने वाली है । जो मुक्तिदातृ तथा श्रीहरि की रतिक्रीड़ा उत्सव से परम प्रिया है । जो नारदजी से निर्म्मिता है, व्रजवन सम्बन्धी सुख जिसमें है तथा जो लक्ष्मी की भी परम प्रिया है । नारायणभट्ट मुख से निर्म्मित गुण समूह जिसका, जो १३ हजार श्लोकों से तथा १६६ पत्रात्मक ग्रन्थ से परिपूर्ण है ॥ १६ ॥

यह गोप्य व्रजभक्तिविलास नामक ग्रन्थ तीन लोक में सुखद तथा श्रीकृष्ण के साक्षात् अंग है । रंगनाथ कुलोत्पन्न व्रजमण्डलवासी वैष्णवगण यथा विधि १६ बार ग्रन्थ की आवृत्ति करें । सर्वदा सुख सम्पत्ति लाभ पूर्वक लोकपूज्य होते हैं । पीताम्बर से ग्रन्थ को ढाककर गोपनस्थल में रखें तथा षोडशोपचार विधि से पूजन करें ॥ २० ॥

समर्पयेत्। ओं ग्लां वासुदेवाय नमः इति मन्त्रं नवभिः पठन् आचमनं दद्यात् । ओं ग्लैं किरीटिने नमः इति मन्त्रं शतधा पठन् नमस्कारं कुर्य्यात् । ओं ग्लैं व्रजकिशोराय नमः इतिमन्त्रमेकविंशत्या पठन्नेकवर्त्तिसंयुक्तारात्तिकं कुर्य्यात्। ओं क्लैं दामोदराय नमः इति मन्त्रेण विंशसंख्याकाखंडपीताक्षतान्नीत्वा पुस्तकयन्त्रं निवेद्य समर्पयेत् । "नारायण रमाकान्त त्रैलोक्याधिपते नमः । ऐश्वर्य्यंविजयं देहि धनधान्यं प्रदेहि मे ॥" इति मन्त्रं शतावृत्त्या हृदये ह्युच्चरन् पृथक् । पीताक्षतं च प्रत्येकं नीत्वा शिरसि धारयेत् ॥

नमस्कृत्वा विधानेन सकलेष्टवरं लभेत् । रंगनाथकुलोद्भूतो जयश्रीं लभते सदा ॥
धनधान्यसमृद्धिं च श्रेयमांगल्यमुत्सवं । प्राप्नोति मनसेच्छाभिः रंगनाथकुलोद्भवः ॥२१॥
अनेनैवंविधानेन पूजयन्ति दिने दिने । पद्मा सदा वसेद्गेहे परमायुः स जीवति ॥
अनेनैव प्रकारेण संकेटवटमर्च्चयेत् । कृष्णक्रीडास्थलं रम्यं व्रजद्वारं सुखप्रदं ॥
सर्व्वसौभाग्यसम्पत्तिं लभते नात्र संशयः । व्रजमण्डलभूगोलं व्रजभक्तिविलासकं ॥
यन्त्रं प्रपूजयन्ति स्म व्रजपूजाफलं लभेत् । इति पुस्तकपूजायाः विधानं कथितं शुभं ॥
रंगनाथकुलोद्भूते सर्वदा वरदायकं। इदं गुह्यप्रकारेण पंचमं गोप्यग्रन्थकं ॥
रक्षयेच्च प्रयत्नेन लक्ष्मीवान् जायते सदा ॥ इति पुस्तकपूजाविधानमाहात्म्यं ॥२२॥

इतीरितं भास्करनन्दनेन हरेरनुज्ञाद्भवनारदेन । पूर्णं चकारात्र मनोरमं शुभं सुगोप्यग्रन्थं व्रजभक्तिविलासं ॥ श्रीकुंडमास्थाय मनोहरस्थलं नवोत्तरं षोडशशाब्द वत्सरे । महात्म्यपूर्वं च परिक्रमं शुभं ग्रन्थःप्रपूर्णो व्रजभक्तिनामः

इति श्रीमद्भास्करात्मज श्रीनारदावतार श्रीनारायणभट्टगोस्वामिविरचिते व्रजभक्तिविलासे परमहंससंहितोदाहरणे व्रजमाहात्म्यनिरूपणे वनयात्राव्रजयात्राप्रसंगिके त्रयोदशोऽध्यायः ॥ (१३) ग्रन्थ संपूर्णं ॥

षोडशांग हरि के मन्त्र द्वारा व्रजयन्त्र का भी पूजन करें । संकेत किंवा उत्तर मुख होकर विहारशील श्रीकृष्ण का ध्यान करें । ध्यान यथा—महोत्सव परायण, गोगोपाल समूह से वेष्टित, सुन्दर, रास क्रीड़ा परायण, हरि हर ब्रह्मादिओं से स्तुत, विश्वेश्वर नन्दनन्दन केशव को वन्दना करता हूं । अ... गोपियों के नयन कमलों से अर्चित विग्रह, क्रीड़ा परायण, रामानुज हैं । इति यह ध्यान को ... पाद में ठहर कर करें । १६ उपचार से पूजन विधि मूलश्लोकों से देखें ॥२१॥

इस प्रकार विधि से नित्य पूजन करने से लक्ष्मी सर्वदा गृह में ठहरती है और यावत् आयु जीता है । इस प्रकार संकेत वट की भी अर्च्चना करें । जो कृष्ण के क्रीडास्थल तथा व्रज का द्वार है और सुखप्रद है । मनुष्य निःसन्देह समस्त सौभाग्य को प्राप्त होता है । व्रजमण्डल का भूगोल स्वरूप व्रजभक्तिविलास ग्रन्थ और यत्र का पूजन से व्रजपूजा का फल मिलता है । यह पुस्तकपूजा की विधि मैंने कही है । रंगनाथ कुल में यह सर्वदा वर का देने वाला है । यह पाँचवाँ गोप्य ग्रन्थ का यत्न पूर्वक अवैष्णवों से गुप्त रखें ॥२२॥

इति यह व्रजभक्तिविलास नामक ग्रन्थ श्रीहरि के आदेशानुसार नारायणभट्ट रूप से उत्पन्न श्रीनारदजी के द्वारा (श्रीनारायणभट्टजी के द्वारा) संपूर्ण हुआ है ।

नारायणभट्ट मैं १६०९ संवत् में श्रीराधाकुण्ड के मनोहर स्थल पर ठहरकर महिमा से परिपूर्ण, परिक्रमा से शुभ, व्रजभक्तिविलास नामक यह ग्रन्थ की संपूर्ती करता हूँ ॥२३॥

इति श्रीमद्भास्करात्मज नारदावतार श्रीनारायणभट्ट गोस्वामी विरचित व्रजभक्तिविलास का अनुवाद समाप्त हुआ ।

समय—शुभ नृसिंहचतुर्दशी संवत् २००४ । स्थान—दाऊजी का मन्दिर, कृष्णगंगा, मथुरा ।

अनुवादक—कृष्णदास, कुसुमसरोवर, गोवर्द्धन ।

श्रीहरिग्रन्थगौरव:—

व्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१—गदाधरभट्टजी की बाणी
२—सूरदास मदनमोहनजी की बाणी
३—माधुरीबाणी (माधुरीजी कृता)
४—वल्लभरसिकजी की बाणी
५—गीतगोविन्दपद (श्रीरामराथजी कृत)
६—गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजीकृत)
७—हरिलीला (ब्रह्मगोपालजीकृता)
८—श्रीचैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजीकृत)
९—वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दावनदासजीकृता)
१०—विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजीकृता)
११—प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दावनदासजीकृता)
१२—प्रियादासजी की ग्रंथावली
१३—गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजीकृता)
१४—राधारमणरससागर (मनोहरजीकृत)
१५—श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजीकृता)

सानुवाद संस्कृतभाषा में—

१—अर्चाविधि: (संगृहित)
२—प्रेमसम्पुट: (श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्तीजीकृत)
३—भक्तिरसतरंगिणी (श्रीनारायणभट्टजीकृता)
४—गोवर्द्धनशतक (विष्णुस्वामी संप्रदायाचार्य्य श्रीकेशवाचार्य्यकृत)
५—चैतन्यचन्द्रामृत और संगीतमाधव (श्रीप्रबोधानन्दसरस्वतीजीकृत)
६—नित्यक्रियापद्धति (संगृहित)
७—व्रजभक्तिविलास (श्रीनारायणभट्टजीकृत)

यह पुस्तक तथा प्रकाशित अन्य पुस्त॰
मिलने का पता—

१—श्रीराम-निवास खेतान का दूकान सवामनशालग्रामजी मन्दिर नीचे (लोई बाजार) वृन्दावन।

२—बाबा महन्त उद्धारणदास जी, कुसुमसरोवर, गवालियर-मन्दिर राधाकुण्ड, (मथुरा)

३—चन्द्रभान शर्मा, भारतीय पुस्तक भंडार, गुड़हाई बाजार, मथुरा।

४—श्रीरामदास शास्त्री जी, भक्तभारत कार्य्यालय, चारसम्प्रदायआश्र वृंदावन।

समर्पण—पत्रं

श्री श्री राधारमण चरणदास देवस्यानुचर प्रवरस्य, सकल देश प्रसिद्ध कीर्त्तिराशेः, प्रेम मात्र सर्वस्व कृतस्य, निरंतर सात्विक भावा-वल्या विभूषितस्य, दीनतासागरस्य, मधुर स्वरालापैः सर्वदा गौर कीर्त्तनकर्त्तुः, श्रीरामदासेति नाम्ना प्रसिद्धस्य, मदीय आराध्यदेवस्य, श्रीगुरुदेवस्य, बाबाजीमहा राजस्य प्रीत्यर्थे समर्पितेदं ग्रन्थरत्नं।

मुद्रक—रामनारायण अग्रवाल, प्रबन्ध-निर्देशक, लोकसाहित्य प्रेस, मथुरा।